PRKASHAN SAMACHAR 1958 G.K.V.

Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

112146

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वर्ष ५ जुलाई १९५८ अंक ११

प्रकाशन समाचार

वार्षिक रु० ३.०० एक प्रति ३१ नये पैसे

प्रति मास नियमित रूप से हिन्दी प्रकाशनों की सूचना पुस्तक विक्रेताओं और पुस्तकालयों तक पहुचाने वाला मासिक

इस मास के नये प्रकाशन

फ्रायड

महान् मनोविज्ञानवेत्ता
सिगमंड फ्रायड की अमर कृति

मनोविश्लेषण

'ए जनरल इंट्रोडक्शन टु साइकोनेलसिस' का पूर्ण और प्रामाणिक हिन्दी अनुवाद

रहस्यमयी

हेनरी राइडर हैगर्ड के अमर उपन्यास 'शी' का अनुवाद

अनुवादक—रामनाथ 'सुमन'

मूल्य—पांच रुपये

राजपाल एण्ड सन्ज़, कश्मीरी गेट, दिल्ली-६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी साहित्य कोश

के प्रकाशन की महत्त्वपूर्ण घोषणा

हिन्दी-साहित्य के अध्ययन, अध्यापन तथा अनुशीलन में प्रत्येक विद्यार्थी, अध्यापक, अनुसन्धानकर्ता और पाठक को एक ऐसे ग्रन्थ की आवश्यकता का अनुभव निरन्तर होता है, जिसकी सहायता से हिन्दी में प्रयुक्त अनेकानेक प्राचीन और नवीन साहित्यिक, पारिभाषिक शब्दों का प्रामाणिक अर्थ, साहित्य की गतिविधि को संचालित एवं प्रभावित करने वाले वादों और प्रवृत्तियों का ऐतिहासिक और शास्त्रीय परिचय, साहित्यिक भाषा और बोलियों का भाषा-वैज्ञानिक विवेचन तथा शिष्ट और लोक-साहित्य के विभिन्न अंगों की उपयोगी जानकारी प्राप्त हो सके। सभी उन्नत साहित्यों में इस प्रकार के दर्जनों छोटे-बड़े विश्व कोश हैं, जो भाषा और साहित्य के सभी श्रेणी के अध्येताओं और पाठकों के लिए उपयोगी ज्ञानभण्डार तात्कालिक रूप से उपलब्ध करते हैं। हिन्दी के इसी भारी अभाव की पूर्ति के लिए हिन्दी साहित्य कोश की आयोजना हमने पिछले वर्ष प्रस्तुत की थी, जो अब पूर्ण हो चुकी है। आशा है कि १५ अगस्त सन् १९५८ तक कोश प्रकाशित हो जायगा।

इस हिन्दी साहित्य कोश को वैज्ञानिक रूप देने के लिए प्रयत्न किया गया है कि उसमें दी गई सामग्री साहित्य के सामयिक वाद-विवादों का परिचय देते हुए भी उनसे अप्रभावित रह कर शुद्ध बौद्धिक स्तर पर यथासम्भव तटस्थ रूप में उपस्थित की जाय तथा उसकी प्रामाणिकता यथासम्भव सर्वमान्य और स्थायित्वपूर्ण हो। इस उद्देश्य की पूर्ति को ध्यान में रखते हुए इस कोश-रचना के लिए एक सम्पादक-मण्डल संघटित किया गया था, जिसने हिन्दी के अस्सी से अधिक विशेषज्ञ और अधिकारी विद्वानों द्वारा विभिन्न विषयों पर लेख और टिप्पणियां लिखवाकर उन्हें कोशबद्ध किया है। उक्त सम्पादक-मण्डल के सदस्य हैं—डा० धीरेन्द्र वर्मा (प्रधान) डा० व्रजेश्वर वर्मा, डा० धर्मवीर भारती, रास्वरूप चतुर्वेदी तथा डा० रघुवंश (संयोजक)। प्रस्तुत साहित्य कोश में निम्नलिखित विषयों में प्रयुक्त होने वाले पारिभाषिक शब्द संकलित किये गए हैं—

१. प्राचीन साहित्यशास्त्र—रस, ध्वनि, अलंकार, छन्द आदि
२. पाश्चात्य साहित्यशास्त्र
३. साहित्य के विविध रूप
४. साहित्य में प्रयुक्त दार्शनिक, मनोवैज्ञानिक तथा समाजशास्त्रीय सिद्धान्त
५. साहित्य के विविध वाद तथा प्रवृत्तियाँ—प्राचीन और आधुनिक
६. लोक साहित्य
७. हिन्दी भाषा, उसकी जनपदीय बोलियाँ, प्राचीन तथा आधुनिक भारतीय आर्य-भाषाओं तथा सम्बद्ध आर्य-भाषाओं का परिचयात्मक विवरण।

कोश की सामग्री प्रस्तुत करने वाले लेखकों के नाम कोश में यथास्थान दिये गए हैं। इस महत्वपूर्ण आयोजन में हिन्दी के सभी मान्य तथा प्रतिष्ठित लेखकों का सहयोग प्राप्त हुआ।

हमारे अन्य कोश

बृहत् हिन्दी कोश	२५)	**ज्ञान शब्द कोश**	१५)
पारिभाषिक शब्द कोश	४)	**बृहत् अंग्रेजी हिन्दी कोश**	(प्रेस में)

प्रकाशक : ज्ञान मण्डल लिमिटेड, वाराणसी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

112146
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
रु० 6.00

प्रकाशन समाचार

: वर्ष ५ :
: अंक ११ :

सम्पादक : ओं प्रकाश, डायरेक्टर इंचार्ज, राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड

112146

हिन्दी का प्रकाशन इधर पिछले दस वर्षों में तीव्रता से बढ़ा है। लेकिन इन प्रकाशनों को पाठकों तक पहुँचाने वाली कड़ी—पुस्तक-विक्रेता—मजबूत नहीं हुई है। पुस्तक-विक्रेताओं को अपनी पूँजी और श्रम से उचित लाभ नहीं मिल रहा है। बीसवीं सदी के आरंभिक वर्षों में इंगलैण्ड के प्रकाशकों ने पुस्तक-विक्रेताओं के इस स्वार्थ को अपना स्वार्थ समझ लिया था और उसी दिन से मानो वहाँ के पुस्तक-व्यवसाय ने बेहतरी की ओर मजबूत और तेज कदम बढ़ाने शुरू किये। इंगलैण्ड के प्रकाशकों ने वहाँ के पुस्तक-विक्रेताओं को मजबूर किया कि वे छपे हुए दामों से कम दामों पर पुस्तकें नहीं बेचें और जो लाभांश प्रकाशक उन तक पहुँचाना चाहते हैं उसे अवश्य प्राप्त करें। पुस्तक-विक्रेताओं की इस प्रकार आर्थिक परिस्थिति सुधरने के साथ ही जगह-जगह पुस्तकों की दुकानें खुलने लगीं और नई पूँजी भी इस व्यवसाय की ओर आकर्षित हुई।

यह प्रसन्नता की बात है कि दिल्ली के कुछ प्रकाशक प्रकाशित मूल्य पर पुस्तकें बेचने पर पुस्तक-विक्रेताओं को विवश करने के लिए और उन्हें इस प्रकार अपनी मेहनत और पैसे से उचित लाभ उठाने के लिए कदम उठाने की सोच रहे हैं। हिन्दी के ये प्रकाशक अपने सामयिक हितों की अपेक्षा अपने स्थायी हितों को पहचानने की क्षमता रखते हैं, यह कदम इस बात का प्रमाण होगा। यदि देश के दस प्रमुख प्रकाशक भी मिलकर इस बात का दृढ़ निश्चय कर सके, कि वे किसी ऐसे पुस्तक-विक्रेता को अपनी पुस्तकें नहीं बेचेंगे, जो उन्हें निश्चित कमीशनों का उल्लंघन न करने का आश्वासन नहीं देगा तो हिन्दी-पुस्तक-व्यवसाय की धारा को अविकल रूप से बहने का सुअवसर मिल सकेगा।

हिन्दी-प्रकाशन-व्यवसाय के इस पहलू पर हम कई बार रोशनी डाल चुके हैं कि हिन्दी पुस्तकों की खरीदारी आज मुख्यतः उन पुस्तकालयों पर निर्भर है, जिन्हें देश की स्वतन्त्रता के बाद भरपूर सरकारी समर्थन मिलने लगा है। अन्य प्रगतिशील और सुशिक्षित देशों में ऐसा नहीं है। उदाहरण के लिए इंगलैण्ड में पुस्तकों की खरीद का लगभग दसवाँ अंश ही पुस्तकालयों के हिस्से आता है। अन्य देशों में ही नहीं, देश की कुछ अन्य भाषाओं के क्षेत्र में भी पुस्तकों की खरीद अधिकांशतः पाठकों द्वारा होती है और इसी तथ्य को पुस्तक-व्यवसाय की नींव को मजबूत करने वाला कह सकते हैं। हिन्दी-साहित्य जगत् में परिस्थिति इसके विपरीत है। अच्छे साहित्य की पाठकों द्वारा खुदरा खरीद प्रायः नगण्य है। स्पष्ट है कि पुस्तकालयों द्वारा खरीद के ढीला पड़ने पर हिन्दी-प्रकाशन-व्यवसाय के कदम लड़खड़ाने लगेंगे।

जिस हिसाब से और जिस परिमाण में आज पुस्तकालयों और सरकारी विभागों द्वारा पुस्तकें खरीदी जाती हैं, वह स्तर अधिक वर्षों तक टिका नहीं रह सकता। आज की व्यापारिक तेजी बहुत दिन नहीं रहेगी। आवश्यकता यह थी कि इस बीच पाठकों को अधिकाधिक सीधी बिक्री को और उस बिक्री के माध्यम—पुस्तक-विक्रेताओं की स्थिति को—हिन्दी के प्रकाशक मिलजुल कर पुख्ता और देरपा बनाने का प्रबन्ध कर लेते। खेद है कि वर्षों के प्रयत्नों के बावजूद भी ऐसा कोई कदम नहीं उठाया जा सका है और केवल सामयिक लाभ उठाने में हम प्रकाशक इतना व्यस्त रहे हैं कि भविष्य के खतरे को भाँप नहीं सके, न उसके प्रतिकार के उपायों पर सामूहिक ध्यान ही दे सके हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दो सुप्रसिद्ध लेखकों की
दो नवीन रचनाएँ

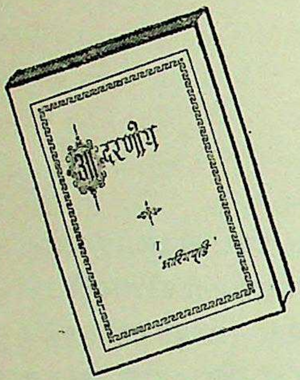

आदरणीय
(उपन्यास)
मू० ४)

मेरी पसन्द
(नाटक)
मू० २॥)

ले० श्री ए० रमेश चौधरी आरिगपूडि

ले० श्री गुरुदत्त

दोनों रचनाएँ छपकर तैयार हैं।

हमारे प्रकाशन

श्री आरिगपूडि साहित्य		१०. आवरण	(उपन्यास)	५)
१. भूले-भटके (उपन्यास)	३)	११. मानव	,,	५)
२. खरे-खोटे ,,	५)	१२. गुण्ठन	,,	५)
३. आदरणीय ,,	४)	१३. विलोम गति	,,	५)
श्रीमती शांति सिंहल		१४. वाम मार्ग	,,	७)
४. अलका (कविता-संग्रह)	२।।।)	१५. देश की हत्या	,,	५॥)
श्री गुरुदत्त साहित्य		१६. विडम्बना	,,	६)
५. मेरी पसन्द (नाटक)	२॥)	१७. विश्वासघात	,,	५॥)
६. धरती और धन (उपन्यास)	६)	१८. बहती रेता	,,	५)
७. पत्रलता ,,	७)	१९. भावुकता का मूल्य	,,	६)
८. दासता के नए रूप ,,	६)	२०. विकृत छाया	,,	४॥)
९. कला ,,	५)	२१. अन्तिम यात्रा	,,	१)

भारती साहित्य सदन

३०/९० कनॉट सरकस, नई दिल्ली-१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देश-विदेश से

दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी ने पाठक-वर्ग की पढ़ने की रुचियों और पढ़ने के दौरान की आदतों का विशेष अध्ययन करने की योजना बनाई है, जिस पर २२ हज़ार रुपये का व्यय होगा। लाइब्रेरी का उपयोग करने वाले दो सौ नियमित पाठकों का अगले सप्ताहों में रिकार्ड रखा जायगा कि वे क्या-क्या किताबें पढ़ने के लिए ले जाते हैं। लाइब्रेरी में आकर पढ़ने वाले लोगों के शारीरिक व्यवहार का निरीक्षण भी किया जायगा।

* * *

२५ से ३० सितम्बर, ५८ तक फ्रेंकफर्ट, जर्मनी, में पुस्तकों की अन्तर्राष्ट्रीय प्रदर्शनी आयोजित हो रही है।

* * *

इंगलैण्ड के पुस्तक-विक्रेता संघ ने एक प्रस्ताव द्वारा कई प्रकाशकों की सीधी पाठकों को पुस्तकें बेचने की प्रवृत्ति की निन्दा की है और कहा है कि यह "तरीका परचून वितरण को पुख्ता करने और उसकी संवृद्धि करने का कतई नहीं है जिस पर अन्ततः सब प्रकाशकों को निर्भर रहना पड़ता है।"

* * *

१९५७ में इंग्लैण्ड में प्रकाशित पुस्तकों का ३७·४ प्रतिशत भाग देश से निर्यात किया गया। प्रकाशित पुस्तकों का कुल मूल्य ४८ करोड़ रुपये से अधिक था।

* * *

भारत सरकार के केन्द्रीय मन्त्रिमण्डल ने अब तक विभिन्न विषयों के १८, ८१८ वैज्ञानिक और पारिभाषिक शब्दों को स्वीकृति दी है। अस्थायी रूप से ४० विषयों के अब तक १ लाख १० हज़ार शब्दों का निर्माण हो चुका है। द्वितीय पंचवर्षीय योजना में तीन लाख शब्दों को स्वीकृति देने का लक्ष्य है लेकिन प्रयत्न किया जा रहा कि एक वर्ष पूर्व ही यह कार्य समाप्त हो जाय।

* * *

केन्द्रीय वैज्ञानिक अनुसन्धान और संस्कृति-विषयक मन्त्रालय की ओर से सितम्बर, ५८ के मास से एक त्रैमासिक पत्रिका का प्रकाशन होगा जिसमें देश की सांस्कृतिक समस्याओं तथा गतिविधियों का उल्लेख रहा करेगा यह पत्रिका अंग्रेज़ी तथा हिन्दी में प्रकाशित की जायगी। सांस्कृतिक विषयों के अतिरिक्त वैज्ञानिक प्रगति का भी संक्षिप्त विवरण रहेगा।

लेखकीय मंच

श्री मुनीन्द्र नारायणसिंह, पीर मुहानी, पटना-३ सूचित करते हैं कि उन्हें अपने एक गद्य-गीत संग्रह, दो कविता-संग्रह और एक उपन्यास के लिए किसी अच्छे प्रकाशक की आवश्यकता है। इच्छुक प्रकाशक पत्र-व्यवहार करें।

* * *

श्री प्रेमचन्द्र, साहित्यिक मित्र मण्डल, मुज़फ्फ़र नगर के पास एक खण्डकाव्य और एक 'कुरु जनपद की लोक-गाथाओं' का संग्रह प्रकाशनार्थ प्रस्तुत है। प्रकाशन के इच्छुक प्रकाशक पत्र-व्यवहार करें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फोटो-प्रणाली द्वारा

पुस्तकों का मुद्रण

ले० सुरेन्द्रपालसिंह

अब तक भारत में किसी बड़े पैमाने पर छपाई में फोटो-प्रणाली का प्रयोग नहीं हुआ है। इस लेख में आकर्षक मुद्रण के लिए इस प्रणाली पर प्रकाश डाला गया है।

मुद्रण-कला के आविष्कार से ज्ञान-विज्ञान के प्रचार-प्रसार में जैसा महत्त्वपूर्ण योग मिला है वह अपने-आपमें ही अत्यन्त आश्चर्यजनक है। प्रस्तर-पटों और काठ के ठप्पों के बाद जब धातुनिर्मित मुद्रणाक्षरों का प्रचलन आरम्भ हुआ तो मुद्रण-कला के विकास का द्वार पूर्ण रूप से उन्मुक्त हो गया। आज विश्व के लगभग समस्त सभ्य देशों में धातुनिर्मित मुद्रणाक्षरों का प्रयोग पुस्तकों तथा पत्र-पत्रिकाओं आदि की छपाई के लिए व्यापक रूप से होता है। लेकिन मुद्रण-कला के विशेषज्ञों को इतने से ही संतोष नहीं हुआ, उनके सामने अनेक समस्याएँ विद्यमान रही हैं और उनके समाधान का प्रयास भी निरन्तर होता रहा है। मुद्रण के क्षेत्र में सबसे बड़ी समस्या जो आज भी किसी-न-किसी रूप में विद्यमान है वह है धातुनिर्मित मुद्रणाक्षरों को वांछित क्रम में संयोजित करने की। इस सम्बन्ध में सामान्य प्रणाली जो आज भी व्यापक रूप से काम में लाई जाती है वह है 'हाथ से' इन 'मुद्रणाक्षरों' को संयोजित करने की! इस ढंग से काम करने में एक तो मानव-श्रम तथा समय अधिक लगता है दूसरे शिथिल ढंग से संयोजित होने के कारण छपाई के समय आपस में रगड़ और धक्के खाने से कुछ मुद्रणाक्षर टूट जाते हैं या छिटक-कर निकल जाते हैं जिससे मुद्रित की जाने वाली सामग्री अशुद्ध छप जाती है। इसके अतिरिक्त इस प्रकार सुमुद्रणा-क्षरों का उपयोग काफ़ी खर्चीला भी है क्योंकि वे जल्दी ही घिसकर खराब हो जाते हैं।

धातुनिर्मित मुद्रणाक्षरों का प्रयोग ५०० वर्षों से भी अधिक से होता आ रहा है लेकिन इतनी लम्बी अवधि में इसके संयोजन की विधि में केवल दो ही महत्त्वपूर्ण सुधार हुए हैं। पहला है 'पटल प्रणाली' (Stereotype Process) द्वारा मुद्रण की विधि का विकास। इस विधि में संयोजित मुद्रणाक्षर के पृष्ठों की छाप लेकर धातु का एक पतला पटल तैयार कर लिया जाता है और उसीसे छपाई की जाती है। एक पटल जब घिस जाता है तो इसी तरह दूसरा पटल तैयार कर लिया जाता है। इस विधि के दो महत्त्व-पूर्ण लाभ हैं। एक तो धातुनिर्मित मुद्रणाक्षरों में घिसावट केवल नाम-मात्र को ही होती है, दूसरे एक बार मुद्रणाक्षरों को शुद्ध क्रम में संयोजित कर लिया जाय तो फिर मुद्रण के समय अशुद्धि होने का खतरा नहीं रह जाता। घिसे हुए पटल गलाकर उसी धातु से फिर नये पटल तैयार कर लिये जाते हैं। इस प्रकार मुद्रण कम खर्चीला भी हो जाता है और कम त्रुटिपूर्ण भी। इस विधि का आविष्कार विलियम गेड नामक एडिनबर्ग के एक सुनार ने अठारहवीं शताब्दी के लगभग मध्य में किया, और लार्डस्टैनहॉप के सद्प्रयासों से उन्नीसवीं सदी के आरम्भ में यह सफलता-पूर्वक व्यावसायिक उपयोग में आने लगी।

इस सम्बन्ध में दूसरी महत्त्वपूर्ण विधि का विकास १८८० ई० में हुआ, जब मुद्रणाक्षरों को संयोजित करने के यन्त्र का आविष्कार हुआ। इस विधि में टाइपराइटर की तरह के एक बड़े की-बोर्ड (Key-board) वाले यन्त्र से एक विशेष प्रकार के काग़ज़ पर अक्षरों को वांछित-क्रम में अलग-अलग या एक साथ मिले हुए रूप में ('Mono-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरल विज्ञान माला

जगपति चतुर्वेदी

- स्तनपोषी जन्तु २)
- जन्तु बिल कैसे बनाते हैं २)
- जन्तुओं का गृहनिर्माण २)
- शिकारी पक्षी २)
- जलचर पक्षी २)
- उथले जल के पक्षी २)
- वन-उपवन के पक्षी २)
- विलुप्त जन्तु (प्रेस में) २)
- ज्वालामुखी २)
- जीने के लिए २)
- बिजली की लीला २)
- वनस्पति की कहानी २)
- समुद्री जीव-जन्तु (प्रेस में) २)
- भूगर्भ विज्ञान (प्रेस में) २)
- वैज्ञानिक आविष्कार (१) २)
- वैज्ञानिक आविष्कार (२) २)
- पेन्सिलीन की कहानी २)
- कोयले की कहानी २)
- परमाणु के चमत्कार २)
- तत्वों की खोज में (प्रेस में) २)
- विलुप्त वनस्पति (प्रेस में) २)
- कीटाणुओं की कहानी २)
- शल्य-विज्ञान की कहानी २)
- आविष्कारकों की कहानी २)
- अद्भुत जन्तु २)
- चींटी-चींटों की कहानी २)
- मकड़ी-मकड़ों की कहानी २)

प्रौढ़ोपयोगी-किशोरोपयोगी
अपनी तरह की
अनूठी पुस्तकमाला
पुरस्कृत तथा बहुप्रशंसित
सुगम, रोचक तथा ज्ञानवर्द्धक
उत्कृष्ट पुस्तकें

- वन-वाटिका के पक्षी २)
- विलक्षण जन्तु २)
- हिंसक पशु २)
- खुर वाले जानवर २)
- संसार के सरीसृप ४)
- कीट-पतंगों का संसार ४)
- जीव-जन्तुओं की बुद्धि ४)
- संसार के सर्प ४)
- सृष्टि का इतिहास ४)
- मछलियों की दुनिया ४)
- जन्तुओं की जन्म-कहानी ४)

अन्य लेखकों द्वारा लिखित

- धरती का राजा २)
- पशु जीवन का मानवीय रूप २)
- घड़ी की कहानी २)
- चन्द्रलोक की यात्रा २॥)
- राकेश की मंगल-यात्रा २)
- धरती माता २)
- विज्ञान प्रवेशिका ३॥)
- आकाश की झांकी १)
- सामान्य ज्ञान परिचय १॥)
- नवीन सामान्य ज्ञान १॥।)
- रंग-बिरंगी मछलियाँ १)
- विचित्र जन्तु १)
- सूर्य की कहानी ॥।)
- मंगल और अन्य ग्रह १॥)
- चाँद की यात्रा और राकेट ॥।)

किताब महल

जीरो रोड, इलाहाबाद • फ़ैज़ बाज़ार, दिल्ली • हार्नबी रोड, बम्बई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उत्तर प्रदेश बोर्ड, मध्य भारत बोर्ड तथा

उत्तर प्रदेश बोर्ड

इण्टरमीडियेट

हिन्दी

१. मधुपर्क : श्री नरोत्तमदास स्वामी २॥)
२. कथा कुसुमाञ्जलि : डॉ० गुलाब राय २)
३. संस्कृत बोध कलिका : डॉ० सत्यव्रतसिंह ।=)

English

४. **Winning of Damyanti** : Edwin Arnold Ed. By Prof. B.B.L. Gupta -/12/-

गणित

५. प्रारम्भिक स्थिति विज्ञान : प्रो० आनन्द स्वरूप सिन्हा ५)
६. प्रारम्भिक गति विज्ञान : प्रो० आनन्द स्वरूप सिन्हा ४)
७. नियामक ज्यामिति : डॉ० एम० रे० शर्मा व चतुर्वेदी ३)
८. समतल त्रिकोणमिति : डॉ० एम० रे० शर्मा व चतुर्वेदी ३॥)

हाई स्कूल

हिन्दी

९. गद्य प्रभा : डॉ० गुलाब राय १॥)
१०. विद्यार्थी जीवन : डॉ० गुलाब राय १॥)
११. संस्कृत बोध मंजरी : डॉ० सत्यव्रत सिंह ।=)

नागरिक शास्त्र

१२. नागरिक विज्ञान तथा भारतीय शासन : डॉ० आशीर्वादीलाल तथा सालिगराम २॥)

गणित

१३. आधुनिक हाई स्कूल ज्यामिति : प्रो० आनन्द स्वरूप सिन्हा २)

विज्ञान

१४. रसायन परिचय : श्री नन्दलाल श्रीवास्तव व श्री रामकृष्ण श्रीवास्तव ३।)

मध्य भारत बोर्ड

इण्टरमीडियेट

हिन्दी

१५. गद्य सरोज : श्री कृष्णचन्द्र शुक्ल २।)
१६. इण्टर काव्य संग्रह : श्री सी० डब्ल्यू० डेविड २।)
१७. अन्तरप्रान्तीय भारती : श्री भालचन्द्र जोशी व श्री मोतीलाल गुप्ता १।)

संस्कृत

१८. काव्योन्मेष : श्री आर० डी० लद्दू ३)
१९. वाण चरित सार : श्री आर० डी० लद्दू २॥)

English

२०. **Intermediate Prose** : Jagdish Prasad M. A. 2/-/-
२१. **Life and Adventure** : Dr. S. Murari Sinha M. A. 1/8/-

Mathematics

२२. **An Introduction to Calculus** : Narain Singh 3/-/-

हाई स्कूल

हिन्दी

२३. काव्य कलाधर : श्री रायकृष्णदास १॥।)
२४. निबन्ध पारिजात : श्री भारतभूषण त्यागी व डॉ० गुलाब राय एम० ए० २॥)

संस्कृत

२५. कर्णविदानम् : डॉ० सत्यव्रत सिंह ॥)
२६. काव्य किरणावलि : श्री आर० डी० लद्दू १॥)

ग या प्र सा द

आगरा
बाँके विलास

आगरा
हास्पिटल रोड

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजस्थान विश्वविद्यालय द्वारा स्वीकृत पुस्तकें

English

२७. **Simple English Poems :**
Bharat Bhushan Tyagi -/12/-

नागरिक शास्त्र

२८. सरल नागरिक शास्त्र : प्रो० इन्दु मेहता २।)

विज्ञान

२९. प्रारम्भिक भौतिक शास्त्र :
श्री जी० आर० जैन ३।।)

३०. प्रारम्भिक रसायन शास्त्र :
डॉ० बा० वि० भागवत ३)

भूगोल

३१. संसार का नवीन भूगोल : पी० सी० बनर्जी ४।।)

३२. भारतवर्ष का भूगोल : पी० सी० अग्रवाल ३)

राजस्थान विश्वविद्यालय

उच्च कक्षाओं के निमित्त

हिन्दी

३३. हिन्दी काव्य में छायावाद :
श्री दीनानाथ 'शरण' ५)

३४. हिन्दी साहित्य में निबन्ध : प्रो० ब्रह्मदत्त शर्मा २।।)

भूगोल

३५. संसार का आर्थिक और वाणिज्य भूगोल :
श्री सी० बी० मैमोरिया १५)

३६. भारत का आर्थिक और वाणिज्य भूगोल :
डॉ० तुलसीराम शर्मा व डॉ० रघुराजसिंह ६)

इण्टरमीडियेट

हिन्दी

३७. हिन्दी निबन्ध विहार : श्री माधो प्रसाद व्यास
व श्री अक्षय चन्द्र शर्मा २)

English

३८. **Simple Short Stories (For Ajmer Board) :** P. C. Agrawal 1/8/-

३९. **An Approach to General English :** Sri L. Chaturvedi 2/8/-

हाई स्कूल

हिन्दी

४०. निबन्ध पारिजात (अजमेर बोर्ड से भी स्वीकृत)
श्री भारतभूषण त्यागी,
श्री गुलाब राय, एम० ए० २।।)

English

४१. **High School Prose Selection :**
B. S. Paul 1/-/-

४२. **Progressive Gen. English :**
L. Chaturvedi 2/8/-

भूगोल

४३. संसार का नवीन भूगोल (नवीन संस्करण,
अजमेर बोर्ड से भी स्वीकृत) :
पी० सी बनर्जी ४।।)

४४. भारतवर्ष का भूगोल (नवीन संस्करण,
अजमेर बोर्ड से भी स्वीकृत) :
पी० सी० अग्रवाल ३)

४५. व्यावहारिक भूगोल : श्री रामचन्द्र २।।)

इतिहास

४६. भारतवर्ष का सरल इतिहास :
श्री जे० सी० तालुकेदार २।।)

४७. भारतवर्ष का इतिहास :
डॉ० बी० एन० मेहता (प्रेस में) ४)

विज्ञान

४८. प्रारम्भिक भौतिक शास्त्र :
श्री जी० आर० जैन ३।।)

४९. प्रारम्भिक रसायन शास्त्र
डॉ० बा० वि० भागवत ३)

वाणिज्य

५०. माडर्न हाईस्कूल बुक कीपिंग :
श्री आर० पी० सिंघल ३)

ए राड स न्स,

कानपुर	जैपुर	ग्वालियर
४०।७८ परेड	चौड़ा रास्ता	पाटनकर बाजार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

type' or 'Linotype') टंकित कर दिया जाता है जिससे काग़ज़ में छोटे-छोटे बहुत से सूराख बन जाते हैं। फिर उस टंकित काग़ज़ को एक दूसरे यन्त्र में लगा दिया जाता है और फिर यन्त्र को चलाने पर वांछित क्रम में धातु (सीसा) के मुद्रणाक्षरों की पंक्ति-की पंक्ति निकलती चली जाती है।

इन दोनों विधियों के विकास के बावजूद भी यह आवश्यकता शेष ही रह गई कि धातु के मुद्रणाक्षर ढाले जायँ। लेकिन अभी हाल ही में मुद्रण की एक नई प्रणाली का विकास यूरोप में हुआ है जिसने धातुनिर्मित मुद्रणाक्षरों के उपयोग की आवश्यकता को बिलकुल समाप्त कर दिया है। इस ढंग से क्रमशः अमरीका, फ्रांस और इंगलैण्ड में कुछ पुस्तकें छापी भी गई हैं। इस नई विधि का नाम है 'अक्षर संयोजन की फोटो-प्रणाली', जिसमें धातु के अक्षर नहीं ढालने पड़ते। मुद्रण के क्षेत्र में निश्चित रूप से यह क्रान्तिकारी आविष्कार है। इस ढंग से छपाई करने के लिए दो तरह की मशीनों का आविष्कार हुआ।

पहली है लुमि टाइप (Lumitype) मशीन जिसका आविष्कार १९४४ ई० में फ्रांस के दो इन्जीनियरों हिगोनेट (M.M.Higonnet) और मेराउड (Moyroud) ने किया और उन्होंने अपना यह आविष्कार 'ग्रैफ़िक आर्ट्स रिसर्च फाउण्डेशन, कैम्ब्रिज' को बेच दिया। उस संस्था ने इसे विकसित करके १९४९ में 'फ़ोटन' नाम दिया। यह मशीन प्रकाश के माध्यम से पहले अक्षरों को फ़िल्म पर अंकित करती है, जो लगातार घूमते हुए चक्र में से होकर गुज़रती रहती है। इस चक्र पर १६ आकार के ९०-९० तरह के प्रत्येक अक्षर बने होते हैं। बारह ताल (Lens) लगे हुए एक यन्त्र से यह सम्भव है कि १९२ भिन्न-भिन्न प्रकार के तथा (५ से लेकर २८ प्वांइट तक) १७,२८० आकार के मुद्रणाक्षर अंकित किये जा सकते हैं। फ़िल्म पर इस मशीन द्वारा एक सैकण्ड में आठ प्रकार के अक्षर अंकित हो सकते हैं।

फ़ोटन मशीन से सबसे पहली पुस्तक जो छापी गई वह है १९५३ में अमरीका की राइन हार्ट एण्ड कम्पनी, न्यूयार्क द्वारा मुद्रित कराई गई पुस्तक 'वन्डरफुल वर्ल्ड आफ़ इन्सेक्ट्स'। यद्यपि इस पुस्तक का ऐतिहासिक महत्त्व है लेकिन छपाई या मुद्रणाक्षरों की दृष्टि से इसमें कोई विशेषता नहीं है। इसके मुकाबिले में लुमिटाइप (Lumitype) मशीन से फ्रांस में छपी पुस्तक नितान्त भिन्न है। यह एक नाटक-पुस्तक है जिसमें इस मशीन के लिए विशेष रूप से योजित एक सुन्दर मुद्रणाक्षर के साथ-साथ रंगमंच-संकेतों को अधिक स्पष्ट बनाने के लिए एक ही पंक्ति में कई-कई तरह के मुद्रणाक्षरों का उपयोग किया गया है। इसके अतिरिक्त मुद्रित पृष्ठों की छपाई भी बहुत साफ़ है क्योंकि इसके लिए ताँबे तथा क्रोमियम की तह चढ़ाये गए एक विशेष प्रकार के लीथो-मुद्रण-पटल का उपयोग भी किया गया था।

फ़ोटन मशीन से पहली पुस्तक छपने के एक वर्ष पूर्व फिलेडेल्फिया में इसी तरह की 'फ़ोटो सेटर' नामक एक मशीन से 'ए हैण्ड बुक आफ़ बेसिक माइक्रोटेक्नीक' नामक पुस्तक छप चुकी थी। इस मशीन का निर्माण 'इन्टरटाइप कार्पोरेशन' नामक एक संस्था ने किया है और १९४९ से लेकर अब तक इस तरह की लगभग २०० मशीनें संयुक्त राष्ट्र अमरीका में लगाई जा चुकी हैं। इसकी साधारण किस्म वाला यन्त्र 'इन्टरटाइप लाइन-कास्टिंग मशीन' का सीधा-सादा रूपान्तर -मात्र है, जो १९१३ ई० में बनी थी। इसमें मुद्रणाक्षर पट (Matrix) की जगह फ़ोटो पट (Photomat) लगा दिया जाता है जिस पर

भूल सुधार

"प्रकाशन समाचार" के जून '५८ के अंक में पृष्ठ ३८५ पर छपे विज्ञापन में "बीसवीं शताब्दी के महाकाव्य" की पुरस्कृत राशि १००) को पाठक कृपया १०००) पढ़ें।

रणधीर सिनहा की रचनाएँ

कविताएँ, कहानियाँ, नाटक, रिपोर्ताज, निबन्ध, डायरी, आत्मालाप, संस्मरण, व्यंग-चित्र तथा लघु कथाएँ आदि कुल २३ रचनाओं का अनुपम संग्रह।

मूल्य २ रुपये ५० नये पैसे

प्रकाशक — श्रेष्ठ साहित्यागार, पटना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चित्र उभर आते हैं। फ़ोटोसेटर मशीन में चार कोष (Magazines) और बारह ताल (Lenses) लगाकर ३२ प्रकार के तथा विभिन्न आकार के (४ प्वाइंट से लेकर ३६ प्वाइंट तक के) मुद्रणाक्षरों का उपयोग किया जा सकता है।

इंग्लैण्ड, अमरीका तथा फ्रान्स में जितनी पुस्तकें इन मशीनों से छपी हैं उनमें इनकी पूरी क्षमताओं का तो क्या, थोड़ी-बहुत का भी उपयोग नहीं किया गया है। आगे चलकर आकर्षक छपाई के लिए ये मशीनें वरदान सिद्ध होंगी, इसमें सन्देह नहीं। किसी उपन्यास या नाटक के मुद्रण में इन मशीनों के विभिन्न मुद्रणाक्षरों का कमाल नहीं दिखाया जा सकता। इनका उपयोग तो कोई कुशल मुद्रक, संश्लिष्ट सूचियों, तालिकाओं, विज्ञापनों तथा शब्दकोषों आदि के मुद्रण में ही कर सकता है। कहने का तात्पर्य यह है कि इन मशीनों की क्षमताओं का सम्यक् उपयोग उन्हीं चीजों की छपाई में किया जा सकता है जिनमें विभिन्न आकार-प्रकार के मुद्रणाक्षरों के उपयोग की गुञ्जाइश हो। यदि इन नई मशनों से छपाई की लागत में कुछ कमी करना अभीष्ट हो तो लेखकों के लिए यह आवश्यक होगा कि वे टाइप की हुई पाण्डुलिपियों को अन्तिम रूप से तैयार करके दें। इन मशीनों के उपयोग में बड़ी ही सतर्कता तथा सूझ-बूझ से काम लेने की आवश्यकता है।

धीरे-धीरे पाश्चात्य देशों में इनका प्रचार-प्रसार बढ़ता जा रहा है। आशा है शीघ्र ही भारत के भी कुछ विशेष नगरों में इन मशीनों द्वारा छपाई सम्भव हो सकेगी।

हमारा नवीन प्रकाशन

सटक सीताराम

लेखक—प्रो० संसारचन्द्र एम० ए०

लेखक के व्यंग्य-निबन्धों का संकलन। प्रत्येक पृष्ठ पर आप व्यंग्य की अपूर्व अभिव्यञ्जना से प्रभावित हुए बिना न रहेंगे। हिन्दी साहित्य के इस उपेक्षित अंग की श्रीवृद्धि कर लेखक ने महान् कार्य किया है।

मूल्य ३)

गुरुदत्त के दो उपन्यास पुनर्मुद्रित

मायाजाल मूल्य ५)
उमड़ती घटाएँ मूल्य ६)

गुरुदत्त द्वारा रचित हमारा अन्य उपन्यास-साहित्य

सहस्रबाहु ६)
लुढ़कते पत्थर ५।।)
नगर परिमोहन ५।।)

गुरुदत्त का सम्पूर्ण साहित्य हमारे यहाँ से प्राप्त करें।

हमारे प्रकाशनों का नया सूचीपत्र छप गया है, मंगवाएँ—

ओरिएण्टल बुक डिपो,

नई सड़क, दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशकीय गद्य

मध्यप्रदेश में राष्ट्रीयकृत पुस्तकें पुस्तक-विक्रेताओं को सरकार से १० प्रतिशत कमीशन तथा फ्री डिलिवरी की सुविधा से प्राप्त हो सकेंगी। पुस्तकों का कुल मूल्य कमीशन काटकर सरकारी कोषागार में पहले जमा कराना होगा। पुस्तकों के आर्डर अधीक्षक, पाठ्य-पुस्तक, मध्यप्रदेश, भोपाल, उप-अधीक्षक, गवर्नमेण्ट रिजनल प्रेस, ग्वालियर, एवं उप-अधीक्षक, गवर्नमेण्ट रिजनल प्रेस, इन्दौर को भेजा जा सकता है।

* * *

मई ५८ के अन्तिम सप्ताह में मद्रास में मद्रास राज्य की ४८वीं एजुकेशनल कॉन्फ्रेंस का वार्षिक जलसा हुआ। साउथ इण्डियन टीचर्स यूनियन के अध्यक्ष श्री टी० पी० श्रीनिवासवर्धन एम० एल० सी० अध्यक्ष थे। एक प्रस्ताव द्वारा इस सम्मेलन ने मद्रास सरकार की पुस्तकों के राष्ट्रीयकरण की नीति की भर्त्सना की।

* * *

भारत सरकार के उद्योग और वाणिज्य मन्त्रालय ने घोषणा की है कि पाठ्य पुस्तकों अथवा सामान्य पुस्तकों का प्रकाशन करने वाले प्रकाशकों को अपने उपयोग के लिए नेपा मिल्ज़ का कागज़ बिना आबकारी टैक्स के मिल सकेगा।

* * *

बिहार विधान सभा की एस्टिमेट कमेटी विचार-विमर्श के बाद इस नतीजे पर पहुँची है कि बिहार की टेक्स्टबुक एण्ड एजुकेशन लिटरेचर कमेटी की सक्रियताएँ उन उद्देश्यों की पूर्ति नहीं कर पा रहीं जिनके लिए इस कमेटी का आयोजन किया गया था।

* * *

जामिया मिलिया, दिल्ली को "ज्ञान सरोवर" के प्रथम भाग के दूसरे संस्करण के सम्बन्ध में भारत सरकार के शिक्षा-मन्त्रालय ने २६,७१३ रुपये प्रदान किये।

* * *

बालोपयोगी पुस्तकों की वार्षिक प्रतियोगिताओं में भेजी गई पुस्तकों के चुनाव में सहायता देने के लिए केन्द्रीय शिक्षा मन्त्रालय ने एक चिल्ड्रेन्स लिटरेचर कमेटी की स्थापना की है।

* * *

यदि आप अब तक

प्रकाशन समाचार

के ग्राहक नहीं हैं

तो आज ही ३) तीन रुपये मनीआर्डर से भेजकर एक वर्ष के लिए ग्राहक बनें।

पोस्टल आर्डर स्वीकार नहीं किये जाते।

प्रबन्ध विभाग

प्रकाशन समाचार

राजकमल प्रकाशन प्रा० लि०

८ फैज़ बाज़ार, दिल्ली

राजस्थान में प्रकाशकों व पुस्तक-विक्रेताओं की हड़ताल

राजस्थान के प्रकाशक व पुस्तक-विक्रेताओं ने बोर्ड ऑफ नैशनलाइजेशन ऑफ टैक्स्ट बुक्स के इस निर्णय के विरुद्ध अनिश्चित समय के लिए हड़ताल की घोषणा की है कि भविष्य में बोर्ड द्वारा प्रकाशित पुस्तकें हैडमास्टरों व डिप्टी इंस्पैक्टर ऑफ स्कूल्स के माध्यम से ही बेची जायँगी, न कि पुस्तक-विक्रेताओं के माध्यम से। यह निर्णय राज्य के सभी पुस्तक-विक्रेताओं की एक सभा में ३ जुलाई, १९५८ को जयपुर में किया गया। सभा में राज्य सरकार के निर्णय को पुस्तक-व्यवसाय पर भारी प्रहार कहा गया।

जोधपुर के पुस्तक-विक्रेताओं का एक प्रतिनिधि-मण्डल शिक्षा-विभाग के सेक्रेटरी से मिला और उनसे अनुरोध किया गया कि पुस्तकों का वितरण विक्रेताओं के माध्यम से ही होना चाहिए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तक-परिचय

उपन्यास

बुढ़िया की गाय, : भारत के विश्वविख्यात कथाकार श्री मुल्कराज आनन्द का नवप्रकाशित उपन्यास है। लेखक ने होशियारपुर तथा उसके आसपास के दो पहाड़ी गाँवों को कथा का। घटना-क्षेत्र बनाया है और घटना-काल है १९४७ के बाद का। लेखक ने अपने इस उपन्यास में स्पष्ट रूप से यह दिखाने की कोशिश की है कि आज भी पहाड़ी इलाकों की हालत कुछ बहुत सुधरी हुई नहीं है। कर्ज़ और गरीबी के बोझ से दबे हुए इन्सानों की जिन्दगी पशुओं से भी गई बीती है जहाँ पेट के लिए आबरू बेचना पाप नहीं समझा जाता और जहाँ एक बूढ़ी माँ के सामने अपने पेट के सहारे 'गाय' और इज़्ज़त की प्रतीक विवाहित 'बेटी' में से किसी एक को बेचने का प्रश्न उपस्थित हो तो वह किसी साठ साल के बूढ़े और नपुंसक सेठ के हाथ अपनी 'बेटी' को ही बेच देना पसन्द करेगी। उसमें माँ की ममता है लेकिन गरीबी और भुखमरी की आग ने उसे चेतनाहत बना दिया है। वर्णन की स्वाभाविकता तो है ही, कथा-प्रसंगों की बुनावट तथा चरित्र-चित्रण की दृष्टि से भी यह कृति अत्यन्त उत्कृष्ट बन पड़ी है, पंछी, गौरी, केसरो, लक्ष्मी, अमरू, रफीक चाचा आदि कुछ ऐसे पात्र हैं जो मन पर अपनी अमिट छाप छोड़ जाते हैं। हिन्दी कथा-साहित्य को यह उपन्यास एक महत्त्वपूर्ण देन है, इसमें सन्देह नहीं। इसका प्रकाशन हुआ है, **राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, इलाहाबाद, बम्बई, पटना, मद्रास** से और मूल्य है ५·५० न० पै०।

* * *

टेढ़ी लकीर : उर्दू की प्रसिद्ध प्रगतिशील लेखिका इस्मत चुग़ताई के उपन्यास का रूपान्तर। उपन्यास की नायिका एक मुस्लिम घराने की शिक्षित नवयुवती है जिसे जीवन के कटुतम अनुभवों ने प्रताड़ित किया है। नायिका का सम्बन्ध कालेज में शिक्षा पाने के दिनों में प्रगतिशील आन्दोलन से हुआ और इस नाते उपन्यास में लेखिका का उस आन्दोलन के प्रति दृष्टिकोण भी स्पष्ट हुआ है जो काफ़ी रोचक है। भाषा हिन्दी न होकर नागरी लिपि में उर्दू ही है जो उर्दू न जानने वालों के लिए सुबोध नहीं है। प्रकाशक हैं अदबी पब्लिशर्स, बम्बई। क्राउन आकार के ४६४ पृष्ठ। अजिल्द।

* * *

कहानी

'रश्मियाँ' : श्री प्रमोदकुमार की २१ लघु-कथाएँ और गद्य-गीत संकलित हैं, प्रायः सभी कृतियाँ भाव-प्रधान हैं। भाषा, शैली तथा शिल्प के नये प्रयोग श्री प्रमोदकुमार ने इनमें प्रस्तुत किये हैं। कहानी में जितनी कल्पना की आवश्यकता होती है, उतनी इनमें नहीं है। यथार्थ की अनुभूति ने उनकी कल्पना को जो निखार दिया है, वह अद्भुत है। डिमाई साइज़ के ९२ पृष्ठ की यह सजिल्द पुस्तक **आदित्य प्रकाशन, गया** ने प्रकाशित की है और वहीं से २ रुपये ७५ नये पैसे में मिल सकती है।

* * *

'अभ्यास' : में श्री प्रमोदकुमार की 'रश्मियाँ' के बाद लिखी हुई १४ कहानियों का संग्रह है। इनमें उनकी कुछ पुरानी कहानियाँ भी हैं। इस संग्रह पर 'अभिमत' देते हुए आचार्य शिवपूजन सहाय ने यह ठीक ही लिखा है कि "लेखक के हृदय और मस्तिष्क में अपने देश और समाज के कल्याण के लिए बड़े उत्सुक भाव एवं अनन्त कल्पनाएँ हैं, जिन्हें वह बड़े कौशल के साथ अपनी वाणी और लेखनी द्वारा व्यक्त कर देता है।" क्राउन साइज़ १५२ पृष्ठ की यह सजिल्द पुस्तक भी आदित्य प्रकाशन, गया ने ही प्रकाशित की है और ३ रुपये २५ नये पैसे में प्राप्य है।

* * *

112146

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे नये प्रकाशन

लाल कनेर

रवीन्द्रनाथ ठाकुर की अमर नाट्य रचना जिसमें आज की सांघातिक जड़वादी सभ्यता के विरुद्ध मानवी नन्दिनी द्वारा कवि ने मर्मस्पर्शी सन्देश दिया है। मूल बंगला से अनुवादक हैं आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी। मूल्य २.०० मात्र

दूध-गाछ

देवेन्द्र सत्यार्थी का नया उपन्यास। पृष्ठभूमि में संगीत की मधुर झंकार आदि से अन्त तक पाठक का मन मोहने में समर्थ है। लय और गति इस उपन्यास की अपनी विशेषताएँ हैं। भाषा प्रवाहयुक्त; प्रत्येक शब्द सार्थक। मूल्य ६.०० मात्र

हिन्दी भाषा का सरल व्याकरण

डॉ० भोलानथ तिवारी द्वारा लिखी यह पुस्तक हिन्दी के एक बड़े अभाव की पूर्ति करती है। निश्चय ही अहिन्दी प्रदेशों में हिन्दी के प्रचार-प्रसार से इस व्याकरण से पर्याप्त सहायता मिलेगी, हालाँकि यह पुस्तक हिन्दी भाषी विद्यार्थियों के लिए भी कम उपयोगी सिद्ध न होगी। मूल्य ३.५० मात्र

कविताएँ

कीर्ति चौधरी की १९५३ और १९५७ के बीच लिखी गईं भाव-गहन कविताएँ। मूल्य ३ ५० मात्र

प्राचीन भारतीय [वि]भूतियाँ

विद्वान् इतिहासज्ञ ... मुकर्जी द्वा... पुस्तक का हिन्दी ... पुस्तक ... विशिष्ट विभूतियों ... तम बुद्ध ... और हर्ष की जी[वनी] ... हुए तत... व्यवस्था का अपूर्व ... गया है। गौरवपूर्ण विचार ... करनेवाले ... के लिए यह पुस्त... [उप]योगी।

रोड़े और पत्थर

डॉ० देवराज का ... [उप]न्यास। एक आदर्शवादी ... [ना]यक का ... सुविधा जुटाने ... कान' व... तदनन्तर परिस्थि... करने ... इस दौरान में अ... सामाजिक ... इस मनोवैज्ञानिक ... तन्तु हैं। ... में एक नया प्रयो[ग] ...

कवि प्रसाद

प्रसाद के काव्य-... [ग्र]न्थ ति... [आलो]चनात्मक अध्ययन ... अब तक ... विद्यार्थियोपयोगी ... भिन्न।

राजकमल प्रकाशन

दिल्ली : इलाहाबाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तीय भूतियाँ

तिहासज्ञ मुकर्जी द्वारा लिखित अंग्रेजी हिन्दी पुस्तक में भारत की पाँच विभूतियाँ गौतम बुद्ध, अशोक, समुद्रगुप्त की जीव हुए तत्कालीन सामाजिक का अपूर्व गया है। प्राचीन भारत की विचार करनेवाले किसी भी विद्यार्थी यह पुस्त गी। मूल्य ३.५० मात्र

पत्थर

राज का न्यास। जीवन-संघर्ष में रत दर्शवादी वक का पठन-पाठन की जुटाने कान' बनाने की लालसा; परिस्थि करने की मजबूरी, और न में आ सामाजिक-आर्थिक अनुभव वैज्ञानिक तन्तु हैं। उपन्यास-साहित्य या प्रयो मूल्य २.२५ मात्र

ह

काव्य-नाथ तिवारी द्वारा आलो- अध्ययन अब तक लिखी गई अन्य योपयोगी भिन्न। मूल्य ४.०० मात्र

पुनर्मुद्रण

१.	हिन्दू सभ्यता : डॉ० राधाकुमुद मुकर्जी। अनुवादक, डॉ० वासुदेव शरण अग्रवाल, संशोधित द्वितीय संस्करण	७.५०
२.	भारतीय संस्कृति : प्रो० शिवदत्त ज्ञानी	५.५०
३.	हिन्दी गद्य की प्रवृत्तियाँ : मूल्यांकन माला	२.००
४.	हिन्दी काव्य की प्रवृत्तियाँ : मूल्यांकन माला	२.००
५.	सरल मनोविज्ञान : प्रो० हंसराज भाटिया	४.००

कुछ आगामी प्रकाशन

१. मध्यकालीन हिन्दी गद्य : प्राचीन गद्य का आलोचनात्मक अध्ययन : हरिमोहन श्रीवास्तव।
२. अजन्ता के चित्रकूट : प्रौढ़ोपयोगी : रायकृष्णदास, राय आनन्द कृष्ण।
३. लोक-परलोक : उपन्यास : उदयशंकर भट्ट
४. अकेले कण्ठ की पुकार : कविता : अजितकुमार
५. जानने की बातें : बाल-प्रौढ़ोपयोगी संदर्भ ग्रन्थ : देवी प्रसाद चट्टोपाध्याय (दस भागों का सेट)
६. आधी रात का सूरज : कहानी-संग्रह : शमशेरसिंह नरूला

ा प्राइवेट लिमिटेड

ाद : पटना : मद्रास

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'आटे के सिपाही' : में श्री आनन्दप्रकाश जैन की 'देवताओं की चिता', 'कवि का पाप', 'प्रणय की भीख', 'अन्तिम नग', 'बन्धक पुत्र' और 'आटे के सिपाही' शीर्षक छः ऐतिहासिक कहानियाँ सम्मिलित हैं। आनन्दप्रकाश जैन ऐतिहासिक कथाकार के रूप में अच्छी ख्याति अर्जित कर चुके हैं। इन कहानियों में भी उनका यही रूप उभरकर सामने आया है। 'देवताओं की चिता' उनका लघु उपन्यास है। इसका प्रकाशन प्रकाशन प्रतिष्ठान, मेरठ ने किया है। क्राउन साइज के १५६ पृष्ठ की यह पुस्तक २ रुपये २५ नये पैसे में मिल सकती है।

* * *

कविता

'कणिका' : श्री शंकरलाल माहेश्वरी के नवीनतम गीतों का संकलन है। प्रायः सभी गीतों में उनकी अनुभूति झाँकती-सी लगती है। भाषा, भाव और कल्पना की त्रिवेणी इन सभी गीतों की विशेषता है। गेयात्मकता के तत्व भी इन गीतों में प्रचुर मात्रा में विद्यमान हैं। डिमाई साइज़ के ८८ पृष्ठों की इस सजिल्द पुस्तक का प्रकाशन जुही कुंज, कलकत्ता ने किया है और २ रुपये ५० नये पैसे में प्राप्य है।

* * *

गीत में कैसे लिखूँ : तरुण-कवि श्री जगदीश शर्मा के ५४ भावाकुल गीतों का संग्रह है। सजिल्द पुस्तक की पृष्ठ-संख्या क्राऊन आकार में १११, मूल्य दो रुपये पचास नये पैसे, प्रकाशक **ऐलोरा पब्लिशिंग हाउस, मथुरा।**

* * *

तात्या टोपे : १६५७ के जगत् विख्यात अमर सेनानी के जीवन पर आधारित एक ओजपूर्ण महाकाव्य है। इसके ३१ सर्गों में श्री लक्ष्मीनारायण कुशवाहा एम० ए० ने तात्या टोपे के जन्मकाल से लेकर उनके जीवन की प्रायः समस्त महत्त्वपूर्ण घटना-प्रसंगों का अत्यन्त रोमांचक तथा सजीव वर्णन किया है। बीच-बीच में झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई नाना साहब आदि की जीवन-घटनाएँ तथा १८५७ की क्रान्ति के विविध प्रसंग भी आ गए हैं। विषय-वस्तु की दृष्टि से यह महाकाव्य सराहनीय है, छपाई का स्तर कुछ और ऊँचा होता तो अच्छा होता। इसका प्रकाशन हुआ है **केशव प्रकाशन, केशव मन्दिर, काशीपुर (नैनीताल) उ० प्र०** से और मूल्य है ५)।

* * *

सेतु बन्ध : प्राकृत भाषा के अमर रचनाकार, महाकवि प्रवर सेन की विख्यात कृति है। इसके काव्य-सौष्ठव तथा शिल्प-सौन्दर्य को देखकर ही अनेक आलोचकों तथा विद्वानों को इस भ्रामक धारणा पर विश्वास करने के लिए विवश होना पड़ा कि यह महाकाव्य कविकुलगुरु महाकवि कालिदास की रचना है जबकि कासिदास वास्तव में इस ग्रन्थ के लिपिक का नाम था। इस महाकाव्य में बालिवध-से लेकर रावण-वध के बाद तक की रामकथा का वर्णन है, बीच में सेतु बाँधने के प्रसंग को अधिक विस्तार दे देने के कारण ही इसका नामकरण सेतुबन्ध हुआ, वैसे इसका 'रावण-वध', 'रामसेतु' तथा 'दशमुख वध' के नाम से भी उल्लेख किया जाता है। इस अनुपम महाकाव्य का सफल हिन्दी अनुवाद प्रस्तुत करके डॉ० रघुवंश ने वास्तव में एक सराहनीय कार्य किया है। अनुवाद करते समय इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि कवि की कल्पना, तथा काव्य-चित्रों को बिना खण्डित भाषान्तरित कर दिया जाय। इस महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ का प्रकाशन राजकमल अमर साहित्य पुस्तकमाला के अन्तर्गत **राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, इलाहाबाद, बम्बई, पटना, मद्रास** से हुआ है और मूल्य है ४.५० न० पै०।

* * *

चक्रवाल : दिनकरजी की उत्कृष्ट कविताओं का प्रतिनिधि संकलन है। 'रेणुका' से लेकर 'नील कुसुम' तक उनकी प्रत्येक काव्य-पुस्तक से चुनी हुई कुछ सौ कविताएँ इसमें संकलित हैं। आरम्भ में दी गई लगभग अस्सी पृष्ठों की भूमिका में रीतियुग से लेकर प्रयोगवाद तक हिन्दी की समस्त काव्य-प्रवृत्तियों का सम्यक् विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। इसका प्रकाशन **उदयाचल, पटना-४** से हुआ है और मूल्य है १०) रु०। सफ़ाई-छपाई सभी कुछ सुन्दर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और सुरुचिपूर्ण है ।

*　　　*　　　*

भग्न मूर्ति : मराठी के विख्यात कवि आत्माराम रावजी देशपांडे 'अनिल' की बहुप्रशंसित काव्य-कृति का डॉ० प्रभाकर माचवे द्वारा प्रस्तुत किया गया सफल हिन्दी रूपान्तर है । भग्न मूर्ति एक बिलकुल नये ढंग का खण्ड-काव्य है जो कथात्मक न होकर विश्लेषणात्मक है । एक खण्डित मूर्ति पर विचार करते-करते कवि साँची, अजन्ता, वेरूल, मथुरा म्यूज़ियम और वहाँ से हमारी सम्पूर्ण संस्कृति के ह्रास की बृहद् और विशद कारण-मीमांसा तक पहुँचकर यह मौलिक निष्कर्ष निकालता है कि "रक्षण-तन्त्र की उपेक्षा के कारण हमारी संस्कृति आज ऐसी खण्डहरनुमा हालत में है । बृहदाकार काफ़ी नहीं है, उसके साथ-साथ बौद्धिक विकास भी अत्यन्त आवश्यक है ।" इस प्रकार यह छोटा-सा काव्य हमारे इतिहास, कला, दर्शन और समूची जीवन-पद्धति पर एक नया भाष्य है । अनुवादक ने अत्यन्त सतर्कता बरतते हुए इस बात का प्रशंसनीय प्रयास किया कि मूल के शब्द तथा शैली की विशेषताओं का निर्वाह हो । **साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली** की ओर से **राजकमल प्रकाशन (प्रा०) लि०, दिल्ली, इलाहाबाद, बम्बई, पटना, मद्रास** ने इसे प्रकाशित किया है और मूल्य है १) रु० मात्र ।

*　　　*　　　*

उदयाचल, पटना–४ ने इधर दिनकरजी की सभी नई और पुरानी कृतियों के नये संस्करण प्रकाशित किये हैं । 'प्रकाशन समाचार' में समीक्षार्थ दिनकरजी की नई-पुरानी आठ काव्य-कृतियाँ प्राप्त हुई हैं । **'नील कुसुम'** उनकी नई कविताओं का बहुप्रशंसित संग्रह है जिसे वर्ष की सर्वश्रेष्ठ काव्य-कृति मानकर बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद् ने पुरस्कृत भी किया है । इस दर्शनीय, पठनीय तथा संग्रहणीय पुस्तक का मूल्य है ३) रु० । इससे भी नई काव्यकृति है **'सीपी और शंख'** । इसमें कुल पचास कविताएँ संग्रहीत हैं जो भाव, भाषा, शैली तथा छन्द-विधान आदि सभी दृष्टियों से विश्व की आधुनिक काव्य-चेतना से अनुप्राणित तथा बौद्धिक-रस से परिपूर्ण हैं । **नये सुभाषित** अपनी तरह की एक निराली ही रचना है । सैकड़ों विषयों के विस्तार

हमारे अनमोल हिन्दी प्रकाशन

(हमारी पुस्तकों को देखकर लोग कह उठते हैं कि ये हिन्दी में अपने विषय की बेजोड़ और अद्वितीय हैं ।)

(१) **हिन्दी के श्रेष्ठ साहित्यकार**—लेखक सिंहासन राय 'सिद्धेश' । इसमें हिन्दी के सर्वश्रेष्ठ साहित्यकारों की प्रामाणिक जीवनी, उनकी साहित्य-सेवा और भाषा-शैली का सुन्दर वर्णन है । मूल्य २॥)

(२) **वादविवाद और व्याख्यान प्रवेशिका**—लेखक तिवारी और राय । इसमें हाईस्कूलों और कॉलेजों में होने वाले वादविवाद (पक्ष और विपक्ष) और व्याख्यान-विषयों का ओजपूर्ण आकर्षक शैली में वर्णन है । मूल्य ३) मात्र

(३) **निबन्ध-भारती**—लेखक प्रो० 'सिद्धेश ।' हाई-स्कूलों और हायर सेकण्ड्री स्कूलों की उच्च कक्षाओं के छात्रों के लिए हिन्दी निबन्ध की सर्वश्रेष्ठ पुस्तक । आधुनिक विषयों पर निबन्ध । मूल्य ३)

(४) **आर्थिक और व्यापारिक निबन्ध**—लेखक प्रोफेसर रूपनारायण उपाध्याय एम० ए० । कालेज के छात्रों के लिए । मूल्य ४)

(५) **निबन्धालोक**—लेखक प्रो० 'कमलेश' । मौलिक साहित्यिक निबन्ध । मूल्य ३)

प्राप्ति-स्थान

आदर्श पुस्तक भण्डार

५८, अपर चितपुर रोड, कलकत्ता-७

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को समेटने वाले ये लगभग दो सौ पद इतने चुटीले और सारगर्भित हैं कि पढ़कर कवि की निराली सूझ-बूझ पर चमत्कृत रह जाना पड़ता है। मूल्य है २) रु०। व्यंग्य-काव्य का उत्कृष्ट उदाहरण दिनकरजी ने **नीम के पत्ते** में प्रस्तुत किया है। इस संग्रह की कविताओं में ऐसा तीखा और लक्ष्यवेधी व्यंग्य प्रस्तुत किया है जिसका वार अचूक है। यही कारण है कि काया में लघु होते हुए भी आत्मा की गुरुता ने इसे इतना लोकप्रिय बना दिया है। मूल्य १) रु० मात्र है। **इतिहास के आंसू** दिनकरजी की सबसे अधिक लोकप्रिय तथा भावना-प्रधान कविताओं का संग्रह है। भारत के अतीत का ऐसा मार्मिक चित्र कवि ने प्रस्तुत किया है कि पढ़कर मन मसोसने लगता है। मूल्य है ३) रु०। ऐसी ही काव्य-कृति है **दिल्ली** जिसमें कवि ने अपनी चार लम्बी कविताओं में दिल्ली का अतीत और वर्तमान साकार कर दिया है—उस दिल्ली का जो युगों से महलों और खण्डहरों की महानगरी रही है, जो बस-बसकर उजड़ी है और उजड़-उजड़कर फिर बसी है, जिसने भारत के भाग्य के जाने कितने चढ़ाव-उतार देखे ही नहीं स्वयं भी अनुभव किये हैं। मूल्य है मात्र रु० १)। तीन लम्बी कविताओं का संग्रह है **बापू** जो गांधी के जीवन पर आधारित एक मार्मिक खण्डकाव्य-सा बन गया है। अपनी ओर से श्रद्धामिश्रित करुणापूर्ण अनुभूतियों की इन तीन अंजलियों के माध्यम से कवि ने बापू के प्रति अपने हृदय में संचित उद्गारों को व्यक्त करने का सफल प्रयास-मात्र किया है। मूल्य है १.५० न० पै०। उपर्युक्त काव्य-कृतियों में से अधिकांश अपेक्षाकृत नई ही हैं केवल **रेणुका** ही एक पुरानी रचना है। यह दिनकरजी की कविताओं का प्रथम कविता संग्रह है। दिनकरजी को ख्याति के शिखर पर पहुँचाने में इन कविताओं का बहुत बड़ा हाथ है। यौवन के उद्दाम उल्लास एवं उत्साह से प्रेरित होकर लिखी गई इन कविताओं में भारत के अतीत की गौरवपूर्ण झांकी, वर्तमान की आकुल वेदना तथा अकुण्ठित संघर्ष एवं भविष्य के उज्ज्वल स्वप्न अंकित हैं। मूल्य है ३) रु०।

इन सभी पुस्तकों की सफाई-छपाई सुन्दर है तथा मुखचित्र आदि सुरुचि पूर्ण एवं आकर्षक हैं। व्यक्तिगत पाठकों तथा पुस्तकालयों के लिए ये काव्य-कृतियां संग्रहणीय हैं।

* * *

आलोचना, निबन्ध

'कविप्रसाद' : डॉक्टर भोलानाथ तिवारी की नवीनतम समीक्षा-कृति है। इसमें विद्वान् लेखक ने प्रारम्भ में कवि प्रसाद के काव्य की पृष्ठभूमि देकर उनके जीवन पर भी उपयोगी प्रकाश डाला है। इसकी 'प्रारम्भिक कविताएँ और मान्यताएँ', 'चित्राधार', कानन कुसुम', 'प्रेम पथिक', 'करुणालय', 'महाराणा का महत्त्व', 'झरना', 'आंसू', 'लहर' तथा 'कामायनी' आदि अध्यायों में तिवारीजी ने उनके काव्य तथा उसकी विशेषताओं पर विशद प्रकाश डाला है। अन्त में 'छायावाद', 'रहस्यवाद', 'नियतिवाद', 'गीति-काव्य', 'प्रकृति चित्रण', 'भाषा और कलाकार' तथा 'छन्द' आदि अध्यायों में उनके काव्यवादों का विवेचन करके उनकी भाषा तथा छन्द-सम्बन्धी मान्यताओं का मार्मिक निरूपण किया है। डिमाई साइज़ के १६६ पृष्ठ की यह पुस्तक राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड दिल्ली ने प्रकाशित की है और वहीं से चार रुपये में प्राप्य है।

* * *

संस्कृत और उसका साहित्य, : भारतीय साहित्य परिचय नामक पुस्तकमाला की सद्यःप्रकाशित पुस्तक है। इसके विद्वान् लेखक डॉ० शान्तिकुमार नानूराम व्यास ने इस नन्हे से ग्रन्थ में संस्कृत भाषा की उत्पत्ति और विकास पर विचार करते हुए उसके वैदिक साहित्य, इतिहास-पुराण, महाकाव्य, लघु-काव्य, नाटक, गद्य साहित्य, शास्त्रीय साहित्य, जैन और बौद्ध साहित्य आदि संस्कृत-वाङ्मय की लगभग समस्त शाखाओं का एक सरल, रोचक, सुगठित और सोदाहरण विश्लेषण उपस्थित किया है। उपसंहार में आधुनिक संस्कृत-साहित्य के कतिपय ग्रन्थों और ग्रन्थ-कारों पर भी यत्किंचित् प्रकाश डाल दिया गया है। इस प्रकार सामान्य पाठकों तथा विश्वविद्यालय के प्रारम्भिक छात्रों को समस्त संस्कृत साहित्य का विशद सिंहावलोकन कराने और उन्हें उसके विस्तृत अध्ययन की ओर प्रेरित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रत्येक पुस्तकालय के लिए अनुपम प्रकाशन

इसी मास के प्रकाशन

उपन्यास

सूखे पेड़, सब्ज़ पत्ते	: गुलशन नन्दा	४।।)
आँचल में दूध आंखों में पानी :	यादवेन्द्र शर्मा चन्द्र	४।।।)
ग़ज़ाला	: शौकत थानवी	३।।)

काव्य

उर्दू की सर्वश्रेष्ठ ग़ज़लें	: सं० नूरनबी अब्बासी	२।।)

विज्ञान

चन्द्रलोक (सचित्र)	: बसन्तकुमार चटर्जी	२।।)

आगामी मास के आकर्षण

जीवन-दर्शन

आपका व्यक्तित्व	: आनन्द कुमार	४।।)

उपन्यास

तन के उजले मन के काले	: जमनादास 'अख्तर'	४)
नसीम	: शौकत थानवी	३।।)

कहानियाँ

दो गज़ ज़मीन	: टालस्टाय	३)

अन्य महत्त्वपूर्ण प्रकाशन

काव्य—

दीवाने ग़ालिब (उर्दू काव्य)	: सं० मुग़नी अमरोहवी नूरनबी अब्बासी	६)

राजनीतिक व ऐतिहासिक—

मेवाड़	: टॉड	३।।।)
बाचा खान	: फ़ारिग बुखारी	६)
नेहरू विश्व-शान्ति की खोज में	: ओमप्रकाश गुप्ता	४।।)

आध्यात्मिक—

जीना सीखो	: देसराज व गन्धर्व	३)

नाटक—

जब पर्दा उठा : हास्य एकांकी	: प्रकाश पण्डित	४।)
मेरे नाटक	: रवीन्द्रनाथ टैगोर	३।।)
डाकघर	: रवीन्द्रनाथ टैगोर	।।=)

कहानियाँ—

उड़ानें	: कृष्णचन्द्र	३।।)
एक खत एक खुशबू	: कृष्णचन्द्र	३।)
सीमान्त	: रवीन्द्रनाथ टैगोर	२।।)
आँचल और आँसू	: शिक्षा रानी निगम	३।।)
पागल	: ख़लील जिब्रान	१।।)
लायसेंस	: मिन्टो	३।।)

उपन्यास—

एक नदी दो पाट	: गुलशन नन्दा	४।)
पत्थर के होंठ	: गुलशन नन्दा	३।।।)
बादल छँट गए	: कृष्णचन्द्र	३)
ललिताङ्गी	: यादवचन्द्र जैन	३।।।)
इन्शा अल्लाह	: शौकत थानवी	३)
कुतिया	: शौकत थानवी	४)
कार्टून	: शौकत थानवी	४।)
चार सौ बीस	: शौकत थानवी	३।)
साँच को आँच	: शौकत थानवी	३।।।)
मिट्टी का कलंक	: यादवेन्द्र शर्मा चन्द्र	३)
तूलिका	: सोमर सेट मॉम	५।)
धरती की बेटी	: कमल शुक्ल	३।।)
राख की परतें	: कमल शुक्ल	३।)
एक ही पतवार	: शिवब्रतलाल वर्मन	३।)
शाही लकड़हारा	: शिवब्रतलाल वर्मन	३।।)
प्रेम पुजारिन	: पं० सुदर्शन	२।)
कौन किसी का ?	: रवीन्द्रनाथ टैगोर	२।)
समाज का अत्याचार	: शरत् चन्द्र चटर्जी	२।।)
काश्मीर की बेटी	: जमनादास 'अख्तर'	२।।।)
आग	: जमनादास 'अख्तर'	२।।)
आँसू	: जमनादास 'अख्तर'	३।)
बुर्दा फरोश	: जमनादास 'अख्तर'	२।)
क्रान्तिकारी रमणी	: अनु० तीर्थराम	४।।)
शैतान पुजारी	: अनु० तीर्थराम	२।।)

विज्ञान—

वैज्ञानिक चाँद	: बसन्तकुमार चटर्जी	१।।)
विज्ञान का चमत्कार	: देसराज व गन्धर्व	।।=)
विज्ञान के मनोरंजन	: श्री शरण	।।=)

कालिदास साहित्य—(अनु० श्री शरण)

रघुवंश, मेघदूत, विक्रमोर्वशी, कुमारसम्भव, अभिज्ञान शाकुन्तल, मालविकाग्निमित्र, नलोदय

मूल्य प्रत्येक का १।)

व्यापारियों और लायब्रेरियों को विशेष सुविधा, बड़े सूचीपत्र और विवरण के लिए लिखिये।

नारायण दत्त सहगल एण्ड सन्ज़, दरीबा कलां, देहली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रत्येक पुस्तकालय में संग्रह करने योग्य पुस्तकें

कोश

बृहत् हिन्दी कोश	सम्पादक कालिकाप्रसाद : लेदर क्लाथ राजवल्लभ सहाय जिल्द मू० २५.०० मुकुन्दीलाल श्रीवास्तव चमड़े की जिल्द	३२.००
ज्ञान शब्दकोश	सम्पा० मुकुन्दीलाल श्रीवास्तव	१५.००
पारिभाषिक शब्दकोश	सम्पा० मुकुन्दीलाल श्रीवास्तव	४.००

राजनीतिक पुस्तकें

भारतीय राजनीति—विक्टोरिया से नेहरू तक	रामगोपाल एम० ए०	११.००
राष्ट्रीयता और समाजवाद	आचार्य नरेन्द्रदेव	११.००
अन्तर्राष्ट्रीय विधान	डॉ० सम्पूर्णानन्द	११.००
चीन कल और आज	के० एम० पणिक्कर	५.००
राजनीतशास्त्र	प्राणनाथ विद्यालंकार	४.५०
जापान की राजनीतिक प्रगति	अनु० लक्ष्मणनारायण गर्दे	५.५०
चीन और भारत	अम्बिकाप्रसाद वाजपेयी	१.५०

धर्म और दर्शन

सूफ़ीमत साधना और साहित्य	रामपूजन तिवारी	११.००
विश्व के धर्म प्रवर्तक	रघुनाथसिंह एम० पी०	६.५०
वैज्ञानिक अद्वैतवाद	स्व० रामदास गौड़ एम० ए०	२.२५
चिद्विलास	डॉ० सम्पूर्णानन्द	५.००
दर्शन का प्रयोजन	डॉ० भगवानदास	३.५०
नीतिशास्त्र	सुश्री शान्ति जोशी	८.००

पत्रकारिता

पत्र और पत्रकार	माननीय पं० कमलापति त्रिपाठी तथा पुरुषोत्तमदास टण्डन 'पत्रकार'	६.५०
भारतीय पत्रकार कला	सम्पादक रौलैण्ड ई० वूलसले	६.५०
समाचारपत्रों का इतिहास	पं० अम्बिकाप्रसाद वाजपेयी	६.५०
आधुनिक पत्रकार कला	रा० र० खाडिलकर	४.००

मनोविज्ञान

शिक्षा मनोविज्ञान	हंसराज भाटिया	४.५०

भ्रमण

हालैण्ड में पचीस दिन	रा० र० खाडिलकर	३.००
आर्याना	रघुनाथसिंह एम० पी०	३.००

इतिहास

भारतवर्ष का इतिहास	एक इतिहास प्रेमी	८.००
पश्चिमी यूरोप प्रथम भाग	अनुवादक छबिनाथ पाण्डेय एम० ए० एल-एल० बी०	४.५०
गांधी हत्याकाण्ड	सम्पादक विहंगम	५.००
आजाद हिन्द फौज और उसके तीन अफ़सरों का मुक़दमा	३५० पृष्ठों की ऐतिहासिक पुस्तक	२.००

संस्मरण

जेल के वे दिन	विजयालक्ष्मी पंडित	२.५०
कुछ स्मरणीय मुक़दमे	श्री कैलाशनाथ काटजू	८.००
मेरे बचपन की कहानी	श्रीमती नयनतारा सहगल	६.००

साहित्य

वक्रोक्ति और अभिव्यंजना	रामनरेश वर्मा एम० ए०	४.५०
गीतिकाव्य	प्रो० रामखेलावन एम० ए०	५.५०
तुलसीदास और उनका युग	डॉ० राजपति दीक्षित	८.००
सामयिकी	शान्तिप्रिय द्विवेदी	४.००
धरातल	शान्तिप्रिय द्विवेदी	२.७५
कल्पलता	आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी	२.५०

कथा साहित्य

उलूकतन्त्र	बलदेवप्रसाद मिश्र	२.००
शव साधन	बलदेवप्रसाद मिश्र	२.५०
तूफान	सर्वश्रेष्ठ कहानी-लेखकों की कहानियों का संग्रह	२.५०

उपन्यास

पुनर्जीवन	महात्मा टालस्टाय	६.५०
कर्त्तव्याघात	देवनारायण द्विवेदी	४.५०
नूतन ब्रह्मचारी	स्वर्गीय पं० बालकृष्ण भट्ट	०.६३
देशभक्त और देशद्रोही		२.५०
बयालीस	प्रतापनारायण श्रीवास्तव	४.५०
गेंजी की कहानी	मुरासाकी शिकाबू	४.५०

आदर्श जीवन चरित्र

सरदार पृथ्वीसिंह	राहुल सांकृत्यायन	४.००

विज्ञान

विज्ञान की प्रगति	भगवतीप्रसाद श्रीवास्तव	३.५०
विज्ञान के नमस्कार	भगवतीप्रसाद श्रीवास्तव	२.७५
परमाणु शक्ति	भगवतीप्रसाद श्रीवास्तव	२.७५
घरेलू बिजली	भगवतीप्रसाद श्रीवास्तव	४.००
सरल विज्ञान	भगवतीप्रसाद श्रीवास्तव	१.०६

ज्ञानमण्डल लिमिटेड, वाराणसी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करने में यह पुस्तक पूर्ण समर्थ है। इसका प्रकाशन हुआ है **राजकमल प्रकाशन (प्रा०) लि० दिल्ली, इलाहाबाद, बम्बई, पटना तथा मद्रास** से और मूल्य है रु० २.२५।

* * *

पालि व्याकरण : भिक्षु धर्मरक्षित द्वारा विद्यार्थियों के लिए विशेष रूप से लिखा गया पालि भाषा का व्याकरण। पालि का पठन-पाठन देश के अनेक विद्यालयों में आज हो रहा है और इसका कोई सरल व्याकरण फ़िलहाल सुलभ नहीं था।

क्राऊन आकार की १८७ पृष्ठों की इस पुस्तक का प्रकाशन **ज्ञान मण्डल लि०, वाराणसी** ने किया है, मूल्य दो रुपया पच्चीस नये पैसे है।

* * *

रेती के फूल : दिनकरजी के लोकप्रिय निबन्धों का संग्रह है। इसमें कुल पन्द्रह निबन्ध हैं जिनमें से कुछ व्यक्तिगत निबन्ध हैं, कुछ उद्बोधनात्मक और अधिकांश विचार-प्रधान हैं। जीवन और जगत्; धर्म और विज्ञान; कला और संस्कृति; व्यक्ति और राष्ट्र आदि विभिन्न विषयों पर इन निबन्धों में मूल्यवान विचार मिल जायँगे। तरुण पाठकों के लिए पुस्तक अत्यन्त उपयोगी है। इसका प्रकाशन हुआ है **उदयाचल, पटना–४** से और मूल्य है रु० २.७५ न० पै०।

* * *

देश-विदेश में दिनकरजी द्वारा इधर हाल की देश तथा विदेश के विभिन्न प्रदेशों की यात्राओं के संस्मरण संकलित हैं। यह संस्मरणात्मक यात्रा-वर्णन जितना रोचक है उतना ही ज्ञानवर्द्धक तथा प्रेरणाप्रद भी है। पुस्तक पढ़कर लगता है जैसे हम कोई डाक्युमेन्ट्री फिल्म' देख रहे हैं। इसका प्रकाशन हुआ है **उदयाचल, पटना–४** से और मूल्य है २) रु०।

* * *

बालोपयोगी

श्री एस० एल० प्रकाशन, दिल्ली ने बालोपयोगी अनेक छोटी-छोटी कई रंगों में छपी हुई पुस्तकों का प्रकाशन किया है। इधर ७ नई पुस्तकें छपी हैं जिनका नाम है: (१) **मोहन की चिट्ठी**, (२) **मुन्ने का सपना**, (३) **चोर**, (४) **डॉक्टर तोताराम**, (५) **सावधान**, (६) **टिट्टू बिट्टू** तथा (७) **कुतुब मीनार**। इन सातों पुस्तकों में शिक्षाप्रद और ज्ञानवर्द्धक कहानियाँ हैं। प्रत्येक का मूल्य १५ नये पैसे है।

* * *

हमारा देश में श्री मन्मथनाथ गुप्त ने भारत-विषयक लगभग समस्त जानकारी संक्षिप्त रूप में प्रस्तुत कर दी है। भारत की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, प्रादेशिक राज्य, प्रशासनिक ढांचा, शासन-व्यवस्था, स्वायत्त शासन की संस्थाएँ, सेना, वैदेशिक सम्बन्ध तथा पंचवर्षीय योजनाओं आदि के सम्बन्ध में ऐसी जानकारी प्रस्तुत की गई है जो रोचक तथा ज्ञानवर्द्धक होने के साथ-साथ प्रेरणाप्रद भी है। भाषा सरल तथा शैली सुगम होने के कारण कम पढ़े-लिखे लोगों के लिए इसकी उपयोगिता स्वतः सिद्ध है। इसका प्रकाशन हुआ है **उदयाचल, पटना–४** से और मूल्य है रु० १.५० न० पै०।

* * *

राजनीति, इतिहास

उदयाचल, पटना–४ से इधर दिनकरजी की दो नई कृतियाँ प्रकाशित हुई हैं। एक तो है **राष्ट्रभाषा और राष्ट्रीय एकता** और दूसरी है **हमारी सांस्कृतिक एकता**। पहली पुस्तक में दिनकरजी के कुछ लेखों तथा भाषणों का संग्रह है। भाषा की समस्या ने भारत में उग्र रूप धारण कर लिया है जिसके कारण कुछ लोगों का विचार है कि देश की एकता के लिए भी खतरा उत्पन्न हो गया है। दिनकरजी ने अपने इन भाषणों तथा लेखों में इस जटिल समस्या का विश्लेषण बड़े संयत ढंग से प्रस्तुत किया है। राष्ट्रीय समस्याओं में रुचि रखने वाले प्रत्येक व्यक्ति के लिए पुस्तक पठनीय एवं संग्रहणीय है। मूल्य है ३) रु०। दूसरी पुस्तक में दिनकरजी ने यह दिखाया है कि भारतीय समाज में भाषा, धर्म, जाति आदि के जो

(शेष पृष्ठ ४३४ पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे दो अनमोल नवीन प्रकाशन

शान्ति निकेतन—गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर, सजिल्द ६.००

जीवन की समस्याओं पर गुरुदेव के औपनिषदिक बंगला प्रवचनों का प्रथम हिन्दी अनुवाद।

"......यह प्रकाशन खरा सोना है।......यह सामग्री उपनिषदों का मथा हुआ मक्खन है और मेरा विचार है कि हिन्दी का प्रत्येक पाठक इसकी सराहना किये बिना न रहेगा। अवश्य ही इसकी गणना इस वर्ष के श्रेष्ठ प्रकाशनों में की जायगी।"

—*वासुदेव शरण अग्रवाल*

अणु और आत्मा—डॉ० जे० सी० ट्रस्ट, सजिल्द ४.००

विज्ञान तथा आत्मा का अद्भुत मेल। अणु-आभा-विज्ञान पश्चिम के विज्ञान तथा पूर्व के अध्यात्मवाद का सुन्दर समन्वय है। यूरोप तथा अमरीका में एक छोर से दूसरे छोर तथा धार्मिक क्रान्ति फैला देने वाली प्रथम पुस्तक।

"......जेम्स एलन और ओरिजन स्वेट मार्डन की प्रसिद्ध पुस्तकों के पश्चात् डॉ० ट्रस्ट की यह अपने विषय की अच्छी पुस्तक है, जिसे आरम्भ करने के पश्चात् छोड़ने को मन नहीं चाहता। डॉ० ट्रस्ट अपने काम के लिये अमरीका में प्रसिद्ध थीं। वह संसार के बहुत-से देशों में भी घूमीं तथा मानसिक रोगियों को अणु-आभा-विज्ञान द्वारा निरोग किया।...पुस्तक की छपाई, कागज, आवरण तथा गेट-अप आदि सब सराहनीय हैं। यह अपने विषय की अत्यन्त उपयोगी पुस्तक है। सुख, सफलता, शान्ति तथा निरोगता के इच्छुक हर शिक्षित स्त्री-पुरुष तथा देश के धर्म-प्रचारकों को इसे अवश्य पढ़ना चाहिए। प्रकाशक इस पुस्तक को हिन्दी में लाने के लिये बधाई के पात्र हैं।"

—*'हिन्दुस्तान', दिल्ली*

हमारे कुछ और नये प्रकाशन

उठती दीवारें हिलती नींव :		
स्कॉट निअरिंग : हेलन निअरिंग	सजिल्द	५.५०
महाकवि अकबर और उनका उर्दू काव्य :		
	उमरावसिंह कारुणिक ,,	३.५०
उसने कहा	: खलील जिब्रान ,,	२.००
आत्माएँ बोलती हैं	: डी० ओ० राबर्ट्स ,,	३.७५
चिर यौवन	: डॉ० जान एच० मानस	१.५०
जीवन-रहस्य	: डॉ० जान एच० मानस	१.५०
नृत्य और स्वास्थ्य	: डॉ० जान एच० मानस	१.५०
हाज़िर जवाबी और विनोद	: शिवनाथसिंह शाण्डिल्य	०.८५
धूम्रपान : समस्या और उपाय :		
	डॉ० जान एच० मानस सजिल्द	३.००
धार्मिक चरित्र (१)	: डॉ० ज्वालाप्रसाद सिंहल	२.५०
धार्मिक चरित्र (२)	: डॉ० ज्वालाप्रसाद सिंहल	२.५०
धार्मिक व्याख्या	: डॉ० ज्वालाप्रसाद सिंहल	२.००
धार्मिक सिद्धान्त	: डॉ० ज्वालाप्रसाद सिंहल	१.५०
धार्मिक तत्त्व	: डॉ० ज्वालाप्रसाद सिंहल	१.५०
ग्राम सुधार	: शंकर सहाय वर्मा	०.५०
तारिका	: कृष्णचन्द्र मुद्गल	१.२५
सावन का गीत—कविताएँ	: शान्तिदेवी सिंहल	१.२५

अन्तर्राष्ट्रीय आधुनिक कविता सीरीज़ के अन्तर्गत प्रकाशित पुस्तकें :

झुकी पलकें गहरे शोले (ग्रीस साहित्य) • अणु की ओर (अमरीकी साहित्य)

गाते हुए जंगल (आस्ट्रेलियन साहित्य)—डिमाई साइज़ में, प्रत्येक का मूल्य २.००

नारी की कहानी (उपन्यास)—मोपासां • कास्टर ब्रिज का मेयर (उपन्यास)—थामस हार्डी (प्रेस में)

भारती एसोसिएशन पब्लिकेशन्स

हिन्दी में अन्तर्राष्ट्रीय भाषा साहित्य के प्रकाशक

गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आगामी मास के प्रकाशन

आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली

—**प्रेमी का उपहार**, रवीन्द्रनाथ टैगोर, अनु० दयाल कृष्ण शर्मा
—**पढ़ाने की कला**, गिलबर्ट हाईट
—**समाज मनोविज्ञान**, कुमारी पद्मा त्यागी
—**अन्तर्ध्वनि**, श्री नीरज, कविता-संग्रह
—**संघर्ष**, श्री नीरज
—**दो गीत**, श्री नीरज

ओरिएण्टल बुक डिपो, दिल्ली

—**उमड़ती घटाएँ**, पु० मु०, श्री गुरुदत्त
—**हिन्दी गद्य का आविर्भाव और विकास**, पु० मु०, प्रो० धर्मचन्द्र सन्त

ऐलोरा पब्लिशिंग हाउस, मथुरा

—**अलसाई आँखें**, श्री राजेश दीक्षित

दिल्ली पुस्तक सदन, नई दिल्ली

—**कुंवरसिंह**, श्री चतुर्भुज, नाटक

वंगीय हिन्दी परिषद्, कलकत्ता

—**'नवीन' दर्शन**, श्री केशवदेव उपाध्याय, आलोचनात्मक
—**सुबह होती है शाम होती है**, श्री गंगाधर शुक्ल, प्रहसन
—**मेघदूत**, सम्पा० श्री ललिता प्रसाद सुकुल
—**भारतेन्दु के दो नाटक**, सम्पा० श्री ललिता प्रसाद सुकुल

भारतीय प्रकाशन मण्डल, वाराणसी

—**धरती का स्वर्ग**, उपन्यास
—**दोस्तों की शायरी**, शायरी

लक्ष्मीनारायण अग्रवाल, आगरा

—**अर्थशास्त्र की सरल रूपरेखा**, श्री सत्यदेव
—**गृह तथा स्वास्थ्य विज्ञान** २ भाग, डॉ० डी० एन० पण्ड्या तथा श्री सुधीरा श्रीवास्तव
—**स्कूल स्वास्थ्य विज्ञान**, डॉ० सरयू प्रसाद चौबे
—**पाश्चात्य शिक्षा का संक्षिप्त इतिहास**, पु० मु०, डॉ० सरयू प्रसाद चौबे
—**माध्यमिक बैंकिंग**, प्रो० विजेन्द्र पाल सिंह

राजकमल प्रकाशन, दिल्ली

—**मध्यकालीन हिन्दी गद्य**, हरिमोहन श्रीवास्तव
—**लोक-परलोक**, श्री उदयशंकर भट्ट, उपन्यास
—**आधी रात का सूरज**, शमशेरसिंह नरूला, कहानी-संग्रह
—**अकेले कंठ की पुकार**, अजित कुमार, कविता

राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली

—**परिवर्तन**, शेक्सपियर, अनु० डॉ० रांगेय राघव
—**निष्फल प्रेम**, शेक्सपियर, अनु० डॉ० रांगेय राघव
—**भूल भुलैयां**, शेक्सपियर, अनु० डॉ० रांगेय राघव
—**कोलम्बस**, अनु० महावीर अधिकारी
—**ज्वालामुखी और भूचाल की कहानी**, फ्रेडरिक एच० एफ०, अनु० श्री रमेश वर्मा
—**समुद्र की कहानी**, फर्डिनेण्ड सी० लेन, अनु० श्री रमेश वर्मा
—**रसायन की कहानी**, इरा एम० फ्रीमैन, अनु० श्री रमेश वर्मा

(शेष पृष्ठ ४३४ पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जून मास के प्रकाशन

आलोचना-निबन्ध-व्याकरण-संस्कृति

कान्ति मोहन शर्मा, **कुरुक्षेत्र-मीमांसा**, २४८, डि०, साहित्य प्रकाशन मण्डल, नई दिल्ली ५.५०

भोलानाथ तिवारी डॉ०, **हिन्दी भाषा का सरल व्याकरण**, १६७, क्रा०, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, इलाहाबाद, बम्बई ३.५०

रणवीर सिंह, **काव्यादर्श**, १३८, क्रा०, ओरिएण्टल बुक डिपो, दिल्ली ४.००

राधाकुमुद मुकर्जी डॉ०, **प्राचीन भारतीय विचार और विभूतियाँ**, १७३, क्रा०, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, इलाहाबाद, बम्बई ३.५०

सोमनाथ गुप्त डॉ०, **पूर्व भारतेन्दु नाटक साहित्य**, १८६, डि०, हिन्दी भवन, जालन्धर ५.००

इतिहास

के० आर० कानूनगो, **दारा शिकोह**, २०३, डि०, गया प्रसाद एण्ड सन्स, आगरा ८.००

जी० पी० गूच अनु० पी० एस० मथुर, **हमारे युग का इतिहास**, डि०, गया प्रसाद एण्ड सन्स, दिल्ली ५.००

उपन्यास

इ० तुर्गनेव, अनु० प्रभुनन्दन गुप्त, **जिनैदा**, १३२, क्रा०, ऐलोरा पब्लिशिंग हाउस, मथुरा २.५०

गुरुदत्त, **मायाजाल**, पु० मु०, २१५, क्रा०, ओरिएण्टल बुक डिपो, दिल्ली ५.००

गोविन्द सिंह, **तिरस्कृत**, १६०, क्रा०, सुरेन्द्र एण्ड कं०, इलाहाबाद २.५०

जसवन्त सिंह कंवल, **पूर्णमासी**, २८०, क्रा० साहित्य संगम, लुधियाना ४.००

देवराज डॉ०, **रोड़े और पत्थर**, १२८, क्रा०, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, इलाहाबाद, बम्बई २.२५

देवेन्द्र सत्यार्थी, **दूध गाछ**, ४१६, क्रा०, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, इलाहाबाद, बम्बई ६.००

बंकिम, अनु० प्रेम अग्रवाल, **कृष्णकान्त का वसीयतनामा**, १४४, क्रा०, सुरेन्द्र एण्ड कं०, इलाहाबाद २.२५

शिवनारायण श्रीवास्तव, **धुआँ, आग और इन्सान**, १८४, ड० क्रा०, दिल्ली पुस्तक सदन, नई दिल्ली ३.००

शिरीष, **मुट्ठी भर फूल**, १२०, ड० क्रा०, दिल्ली पुस्तक सदन, नई दिल्ली २.२५

शौकत थानवी, अनु० प्रेम अग्रवाल, **सपने**, ६६, सुरेन्द्र एण्ड कं०, इलाहाबाद १.५०

सुरेश, **रोटी, रोजी और प्यार**, १००, क्रा० सुरेन्द्र एण्ड कं०, इलाहाबाद १.५०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कविता

जगदीश शर्मा, **गीत मैं कैसे लिखूं**, १२०, क्रा०, ऐलोरा पब्लिशिंग हाउस, मथुरा	२.५०
भारत भूषण, **सागर के सीप**, ११२, डि०, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली	२.५०
रामनरेश पाठक, **क्वार की साँझ**, ६०, क्रा०, श्रेष्ठ साहित्यागार, पटना	२.५०
शिवशंकर वशिष्ठ्य, **गीली आँखें, गीले गीत**, ६२, डि०, दिल्ली पुस्तक सदन, नई दिल्ली	३.००
संकलित, **आषाढ़ के बादल**, १००, क्रा०, नवीन लेखक संघ, आगरा	१.५०
सिद्धनाथ कुमार, **टूटा हुआ आदमी**, ८०, डि०, दिल्ली पुस्तक सदन, नई दिल्ली	३.००

कहानी

करतार सिंह दुग्गल, **अमानिशा**, पु० मु०, १६०, क्रा०, साहित्य संगम, लुधियाना	३.००
मण्टो, **मेरा नाम राधा है**, ३२५, ड० क्रा०, दिल्ली पुस्तक सदन, नई दिल्ली	५.५०
शौकत थानवी, **शादी का इश्तहार**, १२०, क्रा०, साहित्य संगम, लुधियाना	२.५०

नाटक

इन्द्रसेन भावुक, **परिवार के शत्रु**, ११६, ड० क्रा०, दिल्ली पुस्तक सदन, नई दिल्ली	२.२५
उदयशंकर भट्ट, **पार्वती**, ६८, क्रा०, हिन्दी भवन, जालन्धर	१.२५
हरिकृष्ण प्रेमी, **विदा**, १३०, हिन्दी भवन, जालन्धर	१.७५

बाल साहित्य—प्रौढ़ साहित्य

उर्मिला कुमारी, **छल का फल**, ४८, क्रा०, हिन्दी साहित्य संसार, दिल्ली	०.७५
जगपति चतुर्वेदी, **भाप का इंजन कैसे बना**, ६४, क्रा० हिन्दी भवन, जालन्धर	१.००
ज्ञानेन्द्र कुमार भटनागर, **केरल की लोक कथाएँ**, ६८, कापी साइज, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली	१.५०
जे० डी० वैश्य, **साहसी बालक**, ४०, कापी साइज, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली	१.००
पुरुषोत्तम दास गौड़ 'कोमल', **धरती के लाल**, ११२, क्रा० सुरेन्द्र एण्ड क०, इलाहाबाद	१.५०
राजबहादुर सिंह, **पुराणों की कहानियाँ**, १२४, कापी साइज, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली	२.००
सन्त गोकुलचन्द्र, **राम जीवन की झांकियां**, ५८, कापी साइज, ओरिएण्टल बुकडिपो, दिल्ली	१.५०
सुरेशचन्द्र गुप्त, **कांच का महल**, ३२, क्रा०, हिन्दी साहित्य संसार, दिल्ली	०.५०
सुरेशचन्द्र गुप्त, **मनोरंजक कहानियां**, ३२, क्रा०, हिन्दी साहित्य संसार, दिल्ली	०.५०

विविध

एम० एस० अग्रवाल डॉ०, **हमारी आँखें**, ३००, क्रा०, डॉ० अग्रवाल आई इंस्टीट्यूट, दिल्ली	५.००
एस० आर० शर्मा, **आधुनिक भारत का निर्माण**, ५०८, डि० लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, आगरा	८.५०
कृपाराम बम्बवाल, **भारतीय प्रशासन**, २२२, डि०, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली	५.००
योगेन्द्र विज्ञानी, **महायोग विज्ञान**, ६५०, क्रा०, विज्ञान मन्दिर, ऋषिकेष	६.००
रणधीर सिनहा की रचनाएँ, १२८, क्रा०, श्रेष्ठ साहित्यागार, पटना	२.५०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रामप्रसाद बिस्मिल, **बिस्मिल की आत्मकथा**, १६०, क्रा०, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली ३.००
स्वामी विष्णु तीर्थ, **देवात्म शक्ति**, ३५०, क्रा०, विज्ञान मन्दिर, ऋषिकेश ४.००
स्वामी विष्णु तीर्थ, **प्राण तत्व**, ८०, क्रा०, विज्ञान मन्दिर, ऋषिकेश १.००
स्वामी विष्णु तीर्थ, **वैदिक योगपरिचय**, २५०, क्रा०, विज्ञान मन्दिर, ऋषिकेश ३.५०
स्वामी विष्णु तीर्थ, **शक्तिपात**, पु० मु०, ६६, क्रा०, विज्ञान मन्दिर, ऋषिकेश १.००
हरिशंकर शर्मा, **पिंजरा पोल**, १३२, क्रा०, गयाप्रसाद एण्ड सन्स, आगरा २.५०
हरिशंकर शर्मा, **मन की मौज**, १३२, क्रा०, गयाप्रसाद एण्ड सन्स, आगरा २.५०

शिक्षा-वाणिज्य

बल्दुआ व कटियार, **उच्च लेखा कर्म**, २४८, रायल, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, आगरा ८.५०
मनमोहन सहगल, **शिक्षा दर्शन**, ३२०, ड० क्रा०, दिल्ली पुस्तक सदन, दिल्ली ५.००
शर्मा, जैन एवं पुरोहित, **माध्यमिक बहीखाता एवं लेखा कर्म**, ४८८, ड० क्रा०, लक्ष्मीनारायण अग्रवाल, आगरा ८.००
सरयू प्रसाद चौबे डॉ०, **प्रा० शिक्षा मनोविज्ञान**, २६०, क्रा०, लक्ष्मीनारायण अग्रवाल, आगरा, ३.००
सरयू प्रसाद चौबे डॉ०, **शिक्षा के सिद्धान्त और आधुनिक विकास**, २६४, क्रा०, लक्ष्मीनारायण अग्रवाल, आगरा ३.००

(पृष्ठ ४३१ का शेष)

—उत्तरी और दक्षिणी ध्रुव, अनु० श्री हंसराज रहबर
—मौसम की कहानी, अनु० श्री हरिश्चन्द्र विद्यालंकार
—हवाई जहाज़ की कहानी
—सितारों की कहानी

साहित्य सङ्गम, लुधियाना
—पिशाच, श्री सत्यपाल आनन्द, नाटक

सुरेन्द्र एण्ड कं०, इलाहाबाद
—शमा बुझ गई, श्री शंकर दयाल श्रीवास्तव
—नई ज़िन्दगी नई सुबह, श्री सुरेश
—इन्दरा, बंकिम, अनु०, श्री प्रेम अग्रवाल
—सीताराम, बंकिम, अनु०, श्री प्रेम अग्रवाल

(पृष्ठ ४२९ का शेष)

भेद-भाव दिखाई देते हैं वे वास्तव में मौलिक नहीं हैं। इस अनेकता में एकता की भावना किस प्रकार छिपी हुई है इसे सुगम-सरल भाषा-शैली में रोचक ढंग से स्पष्ट करने का सफल प्रयास इस पुस्तक में किया गया है। सामान्य पाठकों के लिए पुस्तक उपयोगी सिद्ध होगी, सन्देह नहीं। मूल्य इसका भी ३) रुपये ही है।

* * *

गद्यकाव्य तथा बोध-कथाएँ

उजली आग : दिनकरजी की गद्य-कविताओं, बोध-कथाओं तथा लघु-निबन्धों का नवप्रकाशित संग्रह है। इसमें उनकी विभिन्न प्रकार की कुल मिलाकर छोटी-बड़ी ४६ रचनाएँ संग्रहीत हैं। लेखक के गाम्भीर्य, चिन्तन, अनुभूति एवं तत्त्वदर्शन-सामर्थ्य का आभास इन रचनाओं में मिलता है। प्रायः सभी रचनाएँ रोचक, ज्ञानवर्द्धक और शिक्षाप्रद हैं। इसका प्रकाशन हुआ है **उदयाचल, पटना-४** से और मूल्य है ३)।

* * *

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशन-समाचार

के

विशेषांक की घोषणा

"प्रकाशन-समाचार" का अगस्त १९५८ का अंक विशेषांक होगा जिसमें १९४७ से लेकर मार्च '५८ के अन्त तक के हिन्दी के उन सब प्रकाशनों का सविवरण उल्लेख रहेगा जिन्हें भारत सरकार, राज्यों की सरकारों अथवा सम्मानित साहित्य-संस्थाओं ने पुरस्कृत किया है।

पुस्तकालयों की उपयोगिता की दृष्टि से अन्य विवरण के साथ प्रत्येक पुस्तक का ड्यूयी के सिद्धान्तों के अनुसार क्लासिफिकेशन नम्बर भी दिये जाने की व्यवस्था की जा रही है।

प्रकाशकों से प्रार्थना

प्रकाशकों से इस विज्ञप्ति के माध्यम से आग्रह है कि १९४७ से अब तक उनकी जिन किन्हीं भी पुस्तकों को पुरस्कृत किया गया है, उसकी सूचना लेखक के नाम, पुस्तक के आकार, पृष्ठ-संख्या, विषय, पुरस्कार के वर्ष तथा पुरस्कार देने वाली संस्था या सरकार के नाम हमें अविलम्ब इलाहाबाद के पते पर भेजने की कृपा करें।

विज्ञापकों के लिए सुअवसर

"प्रकाशन-समाचार" के अब तक पाँच विशेषांक प्रकाशित हो चुके हैं और उन्हें उपयोगिता और महत्त्व की दृष्टि से खूब सराहा गया है। प्रकाशक-बन्धुओं से प्रार्थना है कि इस विशेषांक में अपने विज्ञापनों के लिए स्थान शीघ्र ही सुरक्षित करवा लें।

सम्पादन-कार्यालय :

प्रकाशन-समाचार

राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड,

१५-ए महात्मा गांधी मार्ग,

इलाहाबाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Regd. No. D.—594

भारत सरकार द्वारा

शिक्षण संस्थाओं, ग्राम पंचायतों, स्कूल लायब्रेरियों, कम्यूनिटी प्रोजेक्टों, टैकनिकल इन्स्टीट्यूटों, सामाजिक व शासकीय संस्थाओं द्वारा अपनाया जाने वाला उच्चतम साहित्य यहाँ से लीजिए।

देहली में पुस्तकों की बड़ी दुकान

हमारी प्रकाशित टैकनिकल, इण्डस्ट्रियल तथा अन्य सभी प्रकार के साहित्य की पुस्तकों के अतिरिक्त

भारत के प्रायः सभी प्रमुख हिन्दी प्रकाशकों द्वारा प्रकाशित उत्कृष्ट तथा उपयोगी समीक्षात्मक साहित्य, उपन्यास, कहानी, नाटक, एकांकी, जीवन-चरित्र, आदर्श-कथाएँ, ग्रामोपयोगी, महिलोपयोगी, नवयुवकोपयोगी, समाज-शिक्षण, प्रौढ़-साहित्य, मनोविज्ञान, शिक्षा-विज्ञान, इतिहास, राजनीतिक विज्ञान, वनस्पति-विज्ञान, जन्तु-विज्ञान, भौतिक-विज्ञान, रसायन-विज्ञान, नीति-विज्ञान, संगीत-विज्ञान, तर्क-शास्त्र, समाज-शास्त्र, धार्मिक तथा अध्यात्म साहित्य और ज्योतिष सम्बन्धी, तिजारती, तिब्बी, डाक्टरी, आयुर्वेदिक, होम्योपैथिक, जन्त्र-मन्त्र-तन्त्र, पूजापाठ, बालोपयोगी और स्त्रियोपयोगी तथा साथ-साथ हर प्रकार के उपन्यास, कहानियाँ आदि आकर्षक पुस्तकें आपको हमारे यहाँ सुविधा से मिलेंगी। हिन्दी में हर एक विषय की पुस्तक के लिए हमें लिखें।

हमारे प्रकाशन के बिना आपकी लायब्रेरी निश्चित रूप से अधूरी और आपका साहित्य विशेष रूप से अधूरा है और विशेषकर टैकनिकल, इण्डस्ट्रियल तथा एग्रीकल्चरल साहित्य, जिसकी आज के समय में सबसे अधिक आवश्यकता है, विशेष रूप से प्रकाशित किया गया है। आप अपने संग्रह को पूर्ण और साहित्य-रुचि को पूर्ण करने के लिए अपने शहर के मुख्य पुस्तक-विक्रेता से हमारे निश्चित मूल्य पर हमारे प्रकाशन प्राप्त करें, इसके अतिरिक्त हमें सीधा भी लिख सकते हैं—

हिन्दी की पुस्तकों का वृहद् सूचीपत्र केवल पच्चीस नये पैसे के टिकट डाक खर्च के लिए भेजकर मुफ्त मँगाइये

आवश्यक सूचना—हिन्दी के साथ-साथ हमारे यहाँ उर्दू तथा गुरुमुखी की भी हर प्रकार की पुस्तकें हर समय तैयार मिलती हैं।

लायब्रेरियों तथा पुस्तक-विक्रेताओं को पर्याप्त कमीशन

गवर्नमेण्ट आर्डर सप्लायर

देहाती पुस्तक भण्डार, चावड़ी बाजार, दिल्ली

PHONE : 20030

लोकल ग्राहकों को फोन द्वारा माल सप्लाई करने का पूरा प्रबन्ध है।

श्री देवराज, मैनेजिंग डाइरेक्टर, राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, दिल्ली के लिए
श्री गोपीनाथ सेठ द्वारा नवीन प्रेस, दिल्ली में मुद्रित।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

वर्ष ५ जुलाई १९५८ अंक ११

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशन समाचार

वार्षिक रु० ३.०० एक प्रति ३१ नये पैसे

प्रति मास नियमित रूप से हिन्दी प्रकाशनों की सूचना पुस्तक विक्रेताओं और पुस्तकालयों तक पहुंचाने वाला मासिक

इस मास के नये प्रकाशन

फ्रायड

महान मनोविज्ञानवेत्ता सिगमंड फ्रायड की अमरकृति

मनोविश्लेषण

'ए जनरल इंट्रोडक्शन टु साइकोनेलसिस' का पूर्ण और प्रामाणिक हिन्दी अनुवाद

रहस्यमयी

हेनरी राइडर हैगर्ड के अमर उपन्यास 'शी' का अनुवाद

अनुवादक—रामनाथ 'सुमन'

मूल्य—पांच रुपये

राजपाल एण्ड सन्ज़, कश्मीरी गेट, दिल्ली-६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी साहित्य कोश
के प्रकाशन की महत्त्वपूर्ण घोषणा

हिन्दी-साहित्य के अध्ययन, अध्यापन तथा अनुशीलन में प्रत्येक विद्यार्थी, अध्यापक, अनुसन्धानकर्ता और पाठक को एक ऐसे ग्रन्थ की आवश्यकता का अनुभव निरन्तर होता है, जिसकी सहायता से हिन्दी में प्रयुक्त अनेकानेक प्राचीन और नवीन साहित्यिक, पारिभाषिक शब्दों का प्रामाणिक अर्थ, साहित्य की गतिविधि को संचालित एवं प्रभावित करने वाले वादों और प्रवृत्तियों का ऐतिहासिक और शास्त्रीय परिचय, साहित्यिक भाषा और बोलियों का भाषा-वैज्ञानिक विवेचन तथा शिष्ट और लोक-साहित्य के विभिन्न अंगों की उपयोगी जानकारी प्राप्त हो सके। सभी उन्नत साहित्यों में इस प्रकार के दर्जनों छोटे-बड़े विश्व कोश हैं, जो भाषा और साहित्य के सभी श्रेणी के अध्येताओं और पाठकों के लिए उपयोगी ज्ञानभण्डार तात्कालिक रूप से उपलब्ध करते हैं। हिन्दी के इसी भारी अभाव की पूर्ति के लिए हिन्दी साहित्य कोश की आयोजना हमने पिछले वर्ष प्रस्तुत की थी, जो अब पूर्ण हो चुकी है। आशा है कि १५ अगस्त सन् १९५८ तक कोश प्रकाशित हो जायगा।

इस हिन्दी साहित्य कोश को वैज्ञानिक रूप देने के लिए प्रयत्न किया गया है कि उसमें दी गई सामग्री साहित्य के सामयिक वाद-विवादों का परिचय देते हुए भी उनसे अप्रभावित रह कर शुद्ध बौद्धिक स्तर पर यथासम्भव तटस्थ रूप में उपस्थित की जाय तथा उसकी प्रामाणिकता यथासम्भव सर्वमान्य और स्थायित्वपूर्ण हो। इस उद्देश्य की पूर्ति को ध्यान में रखते हुए इस कोश-रचना के लिए एक सम्पादक-मण्डल संघटित किया गया था, जिसने हिन्दी के अस्सी से अधिक विशेषज्ञ और अधिकारी विद्वानों द्वारा विभिन्न विषयों पर लेख और टिप्पणियां लिखवाकर उन्हें कोशबद्ध किया है। उक्त सम्पादक-मण्डल के सदस्य हैं—डा० धीरेन्द्र वर्मा (प्रधान) डा० ब्रजेश्वर वर्मा, डा० धर्मवीर भारती, रास्वरूप चतुर्वेदी तथा डा० रघुवंश (संयोजक)। प्रस्तुत साहित्य कोश में निम्नलिखित विषयों में प्रयुक्त होने वाले पारिभाषिक शब्द संकलित किये गए हैं—

१. प्राचीन साहित्यशास्त्र—रस, ध्वनि, अलंकार, छन्द आदि
२. पाश्चात्य साहित्यशास्त्र
३. साहित्य के विविध रूप
४. साहित्य में प्रयुक्त दार्शनिक, मनोवैज्ञानिक तथा समाजशास्त्रीय सिद्धान्त
५. साहित्य के विविध वाद तथा प्रवृत्तियाँ—प्राचीन और आधुनिक
६. लोक साहित्य
७. हिन्दी भाषा, उसकी जनपदीय बोलियाँ, प्राचीन तथा आधुनिक भारतीय आर्य-भाषाओं तथा सम्बद्ध आर्य-भाषाओं का परिचयात्मक विवरण।

कोश की सामग्री प्रस्तुत करने वाले लेखकों के नाम कोश में यथास्थान दिये गए हैं। इस महत्वपूर्ण आयोजन में हिन्दी के सभी मान्य तथा प्रतिष्ठित लेखकों का सहयोग प्राप्त हुआ।

हमारे अन्य कोश

बृहत् हिन्दी कोश	२५)	**ज्ञान शब्द कोश**	१५)
पारिभाषिक शब्द कोश	४)	**बृहत् अंग्रेजी हिन्दी कोश**	(प्रेस में)

प्रकाशक : ज्ञान मण्डल लिमिटेड, वाराणसी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशन समाचार

: वर्ष ५ :
: अंक ११ :

सम्पादक : ओं प्रकाश, डायरेक्टर इंचार्ज, राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड

हिन्दी का प्रकाशन इधर पिछले दस वर्षों में तीव्रता से बढ़ा है। लेकिन इन प्रकाशनों को पाठकों तक पहुँचाने वाली कड़ी—पुस्तक-विक्रेता—मजबूत नहीं हुई है। पुस्तक-विक्रेताओं को अपनी पूँजी और श्रम से उचित लाभ नहीं मिल रहा है। बीसवीं सदी के आरंभिक वर्षों में इंगलैण्ड के प्रकाशकों ने पुस्तक-विक्रेताओं के इस स्वार्थ को अपना स्वार्थ समझ लिया था और उसी दिन से मानो वहाँ के पुस्तक-व्यवसाय ने बेहतरी की ओर मजबूत और तेज कदम बढ़ाने शुरू किये। इंगलैण्ड के प्रकाशकों ने वहाँ के पुस्तक-विक्रेताओं को मजबूर किया कि वे छपे हुए दामों से कम दामों पर पुस्तकें नहीं बेचें और जो लाभांश प्रकाशक उन तक पहुँचाना चाहते हैं उसे अवश्य प्राप्त करें। पुस्तक-विक्रेताओं की इस प्रकार आर्थिक परिस्थिति सुधरने के साथ ही जगह-जगह पुस्तकों की दुकानें खुलने लगीं और नई पूँजी भी इस व्यवसाय की ओर आकर्षित हुई।

यह प्रसन्नता की बात है कि दिल्ली के कुछ प्रकाशक प्रकाशित मूल्य पर पुस्तकें बेचने पर पुस्तक-विक्रेताओं को विवश करने के लिए और उन्हें इस प्रकार अपनी मेहनत और पैसे से उचित लाभ उठाने के लिए कदम उठाने की सोच रहे हैं। हिन्दी के ये प्रकाशक अपने सामयिक हितों की अपेक्षा अपने स्थायी हितों को पहचानने की क्षमता रखते हैं, यह कदम इस बात का प्रमाण होगा। यदि देश के दस प्रमुख प्रकाशक भी मिलकर इस बात का दृढ़ निश्चय कर सके, कि वे किसी ऐसे पुस्तक-विक्रेता को अपनी पुस्तकें नहीं बेचेंगे, जो उन्हें निश्चित कमीशनों का उल्लंघन न करने का आश्वासन नहीं देगा तो हिन्दी-पुस्तक-व्यवसाय की धारा को अविकल रूप से बहने का सुअवसर मिल सकेगा।

हिन्दी-प्रकाशन-व्यवसाय के इस पहलू पर हम कई बार रोशनी डाल चुके हैं कि हिन्दी पुस्तकों की खरीदारी आज मुख्यतः उन पुस्तकालयों पर निर्भर है, जिन्हें देश की स्वतन्त्रता के बाद भरपूर सरकारी समर्थन मिलने लगा है। अन्य प्रगतिशील और सुशिक्षित देशों में ऐसा नहीं है। उदाहरण के लिए इंगलैण्ड में पुस्तकों की खरीद का लगभग दसवाँ अंश ही पुस्तकालयों के हिस्से आता है। अन्य देशों में ही नहीं, देश की कुछ अन्य भाषाओं के क्षेत्र में भी पुस्तकों की खरीद अधिकांशतः पाठकों द्वारा होती है और इसी तथ्य को पुस्तक-व्यवसाय की नींव को मजबूत करने वाला कह सकते हैं। हिन्दी-साहित्य जगत् में परिस्थिति इसके विपरीत है। अच्छे साहित्य की पाठकों द्वारा खुदरा खरीद प्रायः नगण्य है। स्पष्ट है कि पुस्तकालयों द्वारा खरीद के ढीला पड़ने पर हिन्दी-प्रकाशन-व्यवसाय के कदम लड़खड़ाने लगेंगे।

जिस हिसाब से और जिस परिमाण में आज पुस्तकालयों और सरकारी विभागों द्वारा पुस्तकें खरीदी जाती हैं, वह स्तर अधिक वर्षों तक टिका नहीं रह सकता। आज की व्यापारिक तेजी बहुत दिन नहीं रहेगी। आवश्यकता यह थी कि इस बीच पाठकों को अधिकाधिक सीधी बिक्री को और उस बिक्री के माध्यम—पुस्तक-विक्रेताओं की स्थिति को—हिन्दी के प्रकाशक मिलजुल कर पुख्ता और देरपा बनाने का प्रबन्ध कर लेते। खेद है कि वर्षों के प्रयत्नों के बावजूद भी ऐसा कोई कदम नहीं उठाया जा सका है और केवल सामयिक लाभ उठाने में हम प्रकाशक इतना व्यस्त रहे हैं कि भविष्य के खतरे को भाँप नहीं सके, न उसके प्रतिकार के उपायों पर सामूहिक ध्यान ही दे सके हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दो सुप्रसिद्ध लेखकों की
दो नवीन रचनाएँ

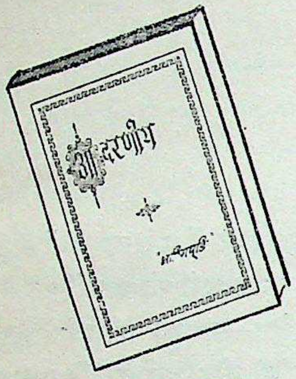

आदरणीय
(उपन्यास)
मू० ४)

लें० श्री ए० रमेश चौधरी आरिगपूडि

मेरी पसन्द
(नाटक)
मू० २॥)

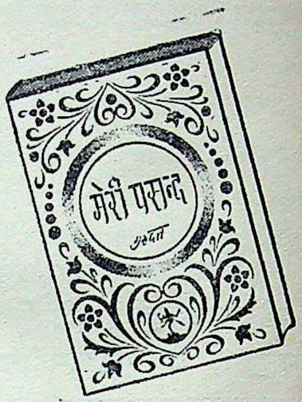

लें० श्री गुरुदत्त

दोनों रचनाएँ छपकर तैयार हैं।

हमारे प्रकाशन

श्री आरिगपूडि साहित्य

१. भूले-भटके (उपन्यास) ३)
२. खरे-खोटे ,, ५)
३. आदरणीय ,, ४)

श्रीमती शांति सिंहल

४. अलका (कविता-संग्रह) २॥।)

श्री गुरुदत्त साहित्य

५. मेरी पसन्द (नाटक) २॥)
६. धरती और धन (उपन्यास) ६)
७. पत्रलता ,, ७)
८. दासता के नए रूप ,, ६)
९. कला ,, ५)
१०. आवरण (उपन्यास) ५)
११. मानव ,, ५)
१२. गुण्ठन ,, ५)
१३. विलोम गति ,, ५)
१४. वाम मार्ग ,, ७)
१५. देश की हत्या ,, ५॥)
१६. विडम्बना ,, ६)
१७. विश्वासघात ,, ५॥)
१८. बहती रेता ,, ५)
१९. भावुकता का मूल्य ,, ६)
२०. विकृत छाया ,, ४॥)
२१. अन्तिम यात्रा ,, १)

भारती साहित्य सदन
३०/९० कनॉट सरकस, नई दिल्ली-१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देश-विदेश से

दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी ने पाठक-वर्ग की पढ़ने की रुचियों और पढ़ने के दौरान की आदतों का विशेष अध्ययन करने की योजना बनाई है, जिस पर २२ हज़ार रुपये का व्यय होगा। लाइब्रेरी का उपयोग करने वाले दो सौ नियमित पाठकों का अगले सप्ताहों में रिकार्ड रखा जायगा कि वे क्या-क्या किताबें पढ़ने के लिए ले जाते हैं। लाइब्रेरी में आकर पढ़ने वाले लोगों के शारीरिक व्यवहार का निरीक्षण भी किया जायगा।

* * *

२५ से ३० सितम्बर, ५८ तक फ्रेंकफर्ट, जर्मनी, में पुस्तकों की अन्तर्राष्ट्रीय प्रदर्शनी आयोजित हो रही है।

* * *

इंगलैण्ड के पुस्तक-विक्रेता संघ ने एक प्रस्ताव द्वारा कई प्रकाशकों की सीधी पाठकों को पुस्तकें बेचने की प्रवृत्ति की निन्दा की है और कहा है कि यह "तरीका परचून वितरण को पुख्ता करने और उसकी संवृद्धि करने का कतई नहीं है जिस पर अन्ततः सब प्रकाशकों को निर्भर रहना पड़ता है।"

* * *

१९५७ में इंग्लैण्ड में प्रकाशित पुस्तकों का ३७·४ प्रतिशत भाग देश से निर्यात किया गया। प्रकाशित पुस्तकों का कुल मूल्य ४८ करोड़ रुपये से अधिक था।

* * *

भारत सरकार के केन्द्रीय मन्त्रिमण्डल ने अब तक विभिन्न विषयों के १८, ८१८ वैज्ञानिक और पारिभाषिक शब्दों को स्वीकृति दी है। अस्थायी रूप से ४० विषयों के अब तक १ लाख १० हज़ार शब्दों का निर्माण हो चुका है। द्वितीय पंचवर्षीय योजना में तीन लाख शब्दों को स्वीकृति देने का लक्ष्य है लेकिन प्रयत्न किया जा रहा कि एक वर्ष पूर्व ही यह कार्य समाप्त हो जाय।

* * *

केन्द्रीय वैज्ञानिक अनुसन्धान और संस्कृति-विषयक मन्त्रालय की ओर से सितम्बर, ५८ के मास से एक त्रैमासिक पत्रिका का प्रकाशन होगा जिसमें देश की सांस्कृतिक समस्याओं तथा गतिविधियों का उल्लेख रहा करेगा यह पत्रिका अंग्रेज़ी तथा हिन्दी में प्रकाशित की जायगी। सांस्कृतिक विषयों के अतिरिक्त वैज्ञानिक प्रगति का भी संक्षिप्त विवरण रहेगा।

लेखकीय मंच

श्री मुनीन्द्र नारायणसिंह, पीर मुहानी, पटना-३ सूचित करते हैं कि उन्हें अपने एक गद्य-गीत संग्रह, दो कविता-संग्रह और एक उपन्यास के लिए किसी अच्छे प्रकाशक की आवश्यकता है। इच्छुक प्रकाशक पत्र-व्यवहार करें।

* * *

श्री प्रेमचन्द्र, साहित्यिक मित्र मण्डल, मुज़फ़्फ़र नगर के पास एक खण्डकाव्य और एक 'कुरु जनपद की लोक-गाथाओं' का संग्रह प्रकाशनार्थ प्रस्तुत है। प्रकाशन के इच्छुक प्रकाशक पत्र-व्यवहार करें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फोटो-प्रणाली द्वारा

पुस्तकों का मुद्रण

ले० सुरेन्द्रपालसिंह

अब तक भारत में किसी बड़े पैमाने पर छपाई में फोटो-प्रणाली का प्रयोग नहीं हुआ है। इस लेख में आकर्षक मुद्रण के लिए इस प्रणाली पर प्रकाश डाला गया है।

मुद्रण-कला के आविष्कार से ज्ञान-विज्ञान के प्रचार-प्रसार में जैसा महत्त्वपूर्ण योग मिला है वह अपने-आपमें ही अत्यन्त आश्चर्यजनक है। प्रस्तर-पटों और काठ के ठप्पों के बाद जब धातुनिर्मित मुद्रणाक्षरों का प्रचलन आरम्भ हुआ तो मुद्रण-कला के विकास का द्वार पूर्ण रूप से उन्मुक्त हो गया। आज विश्व के लगभग समस्त सभ्य देशों में धातुनिर्मित मुद्रणाक्षरों का प्रयोग पुस्तकों तथा पत्र-पत्रिकाओं आदि की छपाई के लिए व्यापक रूप से होता है। लेकिन मुद्रण-कला के विशेषज्ञों को इतने से ही संतोष नहीं हुआ, उनके सामने अनेक समस्याएँ विद्यमान रही हैं और उनके समाधान का प्रयास भी निरन्तर होता रहा है। मुद्रण के क्षेत्र में सबसे बड़ी समस्या जो आज भी किसी-न-किसी रूप में विद्यमान है वह है धातुनिर्मित मुद्रणाक्षरों को वांछित क्रम में संयोजित करने की। इस सम्बन्ध में सामान्य प्रणाली जो आज भी व्यापक रूप से काम में लाई जाती है वह है 'हाथ से' इन 'मुद्रणाक्षरों' को संयोजित करने की! इस ढंग से काम करने में एक तो मानव-श्रम तथा समय अधिक लगता है दूसरे शिथिल ढंग से संयोजित होने के कारण छपाई के समय आपस में रगड़ और धक्के खाने से कुछ मुद्रणाक्षर टूट जाते हैं या छिटक-कर निकल जाते हैं जिससे मुद्रित की जाने वाली सामग्री अशुद्ध छप जाती है। इसके अतिरिक्त इस प्रकार सुमुद्रणा-क्षरों का उपयोग काफ़ी खर्चीला भी है क्योंकि वे जल्दी ही घिसकर खराब हो जाते हैं।

धातुनिर्मित मुद्रणाक्षरों का प्रयोग ५०० वर्षों से भी अधिक से होता आ रहा है लेकिन इतनी लम्बी अवधि में इसके संयोजन की विधि में केवल दो ही महत्त्वपूर्ण सुधार हुए हैं। पहला है 'पटल प्रणाली' (Stereotype Process) द्वारा मुद्रण की विधि का विकास। इस विधि में संयोजित मुद्रणाक्षर के पृष्ठों की छाप लेकर धातु का एक पतला पटल तैयार कर लिया जाता है और उसीसे छपाई की जाती है। एक पटल जब घिस जाता है तो इसी तरह दूसरा पटल तैयार कर लिया जाता है। इस विधि के दो महत्त्व-पूर्ण लाभ हैं। एक तो धातुनिर्मित मुद्रणाक्षरों में घिसावट केवल नाम-मात्र को ही होती है, दूसरे एक बार मुद्रणाक्षरों को शुद्ध क्रम में संयोजित कर लिया जाय तो फिर मुद्रण के समय अशुद्धि होने का खतरा नहीं रह जाता। घिसे हुए पटल गलाकर उसी धातु से फिर नये पटल तैयार कर लिये जाते हैं। इस प्रकार मुद्रण कम खर्चीला भी हो जाता है और कम त्रुटिपूर्ण भी। इस विधि का आविष्कार विलियम गेड नामक एडिनबर्ग के एक सुनार ने अठारहवीं शताब्दी के लगभग मध्य में किया, और लार्डस्टैनहॉप के सद्प्रयासों से उन्नीसवीं सदी के आरम्भ में यह सफलता-पूर्वक व्यावसायिक उपयोग में आने लगी।

इस सम्बन्ध में दूसरी महत्त्वपूर्ण विधि का विकास १८८० ई० में हुआ, जब मुद्रणाक्षरों को संयोजित करने के यन्त्र का आविष्कार हुआ। इस विधि में टाइपराइटर की तरह के एक बड़े की-बोर्ड (Key-board) वाले यन्त्र से एक विशेष प्रकार के काग़ज़ पर अक्षरों को वांछित-क्रम में अलग-अलग या एक साथ मिले हुए रूप में ('Mono-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरल विज्ञान माला

जगपति चतुर्वेदी

स्तनपोषी जन्तु	२)
जन्तु बिल कैसे बनाते हैं	२)
जन्तुओं का गृहनिर्माण	२)
शिकारी पक्षी	२)
जलचर पक्षी	२)
उथले जल के पक्षी	२)
वन-उपवन के पक्षी	२)
विलुप्त जन्तु (प्रेस में)	२)
ज्वालामुखी	२)
जीने के लिए	२)
बिजली की लीला	२)
वनस्पति की कहानी	२)
समुद्री जीव-जन्तु (प्रेस में)	२)
भूगर्भ विज्ञान (प्रेस में)	२)
वैज्ञानिक आविष्कार (१)	२)
वैज्ञानिक आविष्कार (२)	२)
पेन्सिलीन की कहानी	२)
कोयले की कहानी	२)
परमाणु के चमत्कार	२)
तत्वों की खोज में (प्रेस में)	२)
विलुप्त वनस्पति (प्रेस में)	२)
कीटाणुओं की कहानी	२)
शल्य-विज्ञान की कहानी	२)
आविष्कारकों की कहानी	२)
अद्भुत जन्तु	२)
चींटी-चींटों की कहानी	२)
मकड़ी-मकड़ों की कहानी	२)
वन-वाटिका के पक्षी	२)
विलक्षण जन्तु	२)
हिंसक पशु	२)
खुर वाले जानवर	२)
संसार के सरीसृप	४)
कीट-पतंगों का संसार	४)
जीव-जन्तुओं की बुद्धि	४)
संसार के सर्प	४)
सृष्टि का इतिहास	४)
मछलियों की दुनिया	४)
जन्तुओं की जन्म-कहानी	४)

प्रौढ़ोपयोगी-किशोरोपयोगी
अपनी तरह की
अनूठी पुस्तकमाला
पुरस्कृत तथा बहुप्रशंसित
सुगम, रोचक तथा ज्ञानवर्द्धक
उत्कृष्ट पुस्तकें

अन्य लेखकों द्वारा लिखित

धरती का राजा	२)
पशु जीवन का मानवीय रूप	२)
घड़ी की कहानी	२)
चन्द्रलोक की यात्रा	२॥)
राकेश की मंगल-यात्रा	२)
धरती माता	२)
विज्ञान प्रवेशिका	३॥)
आकाश की झाँकी	१)
सामान्य ज्ञान परिचय	१॥)
नवीन सामान्य ज्ञान	१॥।)
रंग-बिरंगी मछलियाँ	१)
विचित्र जन्तु	१)
सूर्य की कहानी	॥।)
मंगल और अन्य ग्रह	१॥)
चाँद की यात्रा और राकेट	॥।)

किताब महल

जीरो रोड, इलाहाबाद • फ़ैज़ बाज़ार, दिल्ली • हार्नबी रोड, बम्बई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उत्तर प्रदेश बोर्ड, मध्य भारत बोर्ड तथा

उत्तर प्रदेश बोर्ड

इण्टरमीडियेट

हिन्दी

१. मधुपर्क : श्री नरोत्तमदास स्वामी २॥)
२. कथा कुसुमाञ्जलि : डॉ० गुलाब राय २)
३. संस्कृत बोध कलिका : डॉ० सत्यव्रतसिंह ।≈)

English

४. **Winning of Damyanti** : Edwin Arnold Ed. By Prof. B.B.L. Gupta -,12/-

गणित

५. प्रारम्भिक स्थिति विज्ञान : प्रो० आनन्द स्वरूप सिन्हा ५)
६. प्रारम्भिक गति विज्ञान : प्रो० आनन्द स्वरूप सिन्हा ४)
७. नियामक ज्यामिति : डॉ० एम० रे० शर्मा व चतुर्वेदी ३)
८. समतल त्रिकोणमिति : डॉ० एम० रे० शर्मा व चतुर्वेदी ३॥)

हाई स्कूल

हिन्दी

९. गद्य प्रभा : डॉ० गुलाब राय १॥)
१०. विद्यार्थी जीवन : डॉ० गुलाब राय १॥)
११. संस्कृत बोध मंजरी : डॉ० सत्यव्रत सिंह ।≈)

नागरिक शास्त्र

१२. नागरिक विज्ञान तथा भारतीय शासन : डॉ० आशीर्वादीलाल तथा सालिगराम २॥)

गणित

१३. आधुनिक हाई स्कूल ज्यामिति : प्रो० आनन्द स्वरूप सिन्हा २)

विज्ञान

१४. रसायन परिचय : श्री नन्दलाल श्रीवास्तव व श्री रामकृष्ण श्रीवास्तव ३।)

मध्य भारत बोर्ड

इण्टरमीडियेट

हिन्दी

१५. गद्य सरोज : श्री कृष्णाचन्द्र शुक्ल २।)
१६. इण्टर काव्य संग्रह : श्री सी० डब्ल्यू० डेविड २।)
१७. अन्तरप्रान्तीय भारती : श्री भालचन्द्र जोशी व श्री मोतीलाल गुप्ता १।)

संस्कृत

१८. काव्योन्मेष : श्री आर० डी० लड्डू ३)
१९. वाण चरित सार : श्री आर० डी० लड्डू २॥)

English

२०. **Intermediate Prose** : Jagdish Prasad M. A. 2/-/-
२१. **Life and Adventure** : Dr. S. Murari Sinha M. A. 1/8/-

Mathematics

२२. **An Introduction to Calculus** : Narain Singh 3/-/-

हाई स्कूल

हिन्दी

२३. काव्य कलाधर : श्री रायकृष्णदास १॥।)
२४. निबन्ध पारिजात : श्री भारतभूषण त्यागी व डॉ० गुलाब राय एम० ए० २॥।)

संस्कृत

२५. कर्णविदानम् : डॉ० सत्यव्रत सिंह ॥।)
२६. काव्य किरणावलि : श्री आर० डी० लड्डू १॥)

ग या प्र सा द

आगरा बाँके विलास — आगरा हास्पिटल रोड

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजस्थान विश्वविद्यालय द्वारा स्वीकृत पुस्तकें

English

२७. **Simple English Poems :**
Bharat Bhushan Tyagi -/12/-

नागरिक शास्त्र

२८. सरल नागरिक शास्त्र : प्रो० इन्दु मेहता २।)

विज्ञान

२९. प्रारम्भिक भौतिक शास्त्र :
श्री जी० आर० जैन ३।।)

३०. प्रारम्भिक रसायन शास्त्र :
डॉ० बा० वि० भागवत ३)

भूगोल

३१. संसार का नवीन भूगोल : पी० सी० बनर्जी ४।।)

३२. भारतवर्ष का भूगोल : पी० सी० अग्रवाल ३)

राजस्थान विश्वविद्यालय

उच्च कक्षाओं के निमित्त

हिन्दी

३३. हिन्दी काव्य में छायावाद :
श्री दीनानाथ 'शरण' ५)

३४. हिन्दी साहित्य में निबन्ध : प्रो० ब्रह्मदत्त शर्मा २।।)

भूगोल

३५. संसार का आर्थिक और वाणिज्य भूगोल :
श्री सी० बी० मैमोरिया १५)

३६. भारत का आर्थिक और वाणिज्य भूगोल :
डॉ० तुलसीराम शर्मा व डॉ० रघुराजसिंह ६)

इण्टरमीडियेट

हिन्दी

३७. हिन्दी निबन्ध विहार : श्री माधो प्रसाद व्यास
व श्री अक्षय चन्द्र शर्मा २)

English

३८. **Simple Short Stories (For Ajmer Board)** : P. C. Agrawal 1/8/-

३९. **An Approach to General English** : Sri L. Chaturvedi 2/8/-

हाई स्कूल

हिन्दी

४०. निबन्ध पारिजात (अजमेर बोर्ड से भी स्वीकृत)
श्री भारतभूषण त्यागी,
श्री गुलाब राय, एम० ए० २।।)

English

४१. **High School Prose Selection :**
B. S. Paul 1/-/-

४२. **Progressive Gen. English :**
L. Chaturvedi 2/8/-

भूगोल

४३. संसार का नवीन भूगोल (नवीन संस्करण, अजमेर बोर्ड से भी स्वीकृत) :
पी० सी बनर्जी ४।।)

४४. भारतवर्ष का भूगोल (नवीन संस्करण, अजमेर बोर्ड से भी स्वीकृत) :
पी० सी० अग्रवाल ३)

४५. व्यावहारिक भूगोल : श्री रामचन्द्र २।।)

इतिहास

४६. भारतवर्ष का सरल इतिहास :
श्री जे० सी० तालुकेदार २।।)

४७. भारतवर्ष का इतिहास :
डॉ० बी० एन० मेहता (प्रेस में) ४)

विज्ञान

४८. प्रारम्भिक भौतिक शास्त्र :
श्री जी० आर० जैन ३।।)

४९. प्रारम्भिक रसायन शास्त्र
डॉ० बा० वि० भागवत ३)

वाणिज्य

५०. माडर्न हाईस्कूल बुक कीपिंग :
श्री आर० पी० सिंघल ३)

ए गड स न्स,

कानपुर
४०/७८ परेड

जैपुर
चौड़ा रास्ता

ग्वालियर
पाटनकर बाजार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

type' or 'Linotype') टंकित कर दिया जाता है जिससे काग़ज़ में छोटे-छोटे बहुत से सूराख बन जाते हैं। फिर उस टंकित काग़ज़ को एक दूसरे यन्त्र में लगा दिया जाता है और फिर यन्त्र को चलाने पर वांछित क्रम में धातु (सीसा) के मुद्रणाक्षरों की पंक्ति-की पंक्ति निकलती चली जाती है।

इन दोनों विधियों के विकास के बावजूद भी यह आवश्यकता शेष ही रह गई कि धातु के मुद्रणाक्षर ढाले जायँ। लेकिन अभी हाल ही में मुद्रण की एक नई प्रणाली का विकास यूरोप में हुआ है जिसने धातुनिर्मित मुद्रणाक्षरों के उपयोग की आवश्यकता को बिलकुल समाप्त कर दिया है। इस ढंग से क्रमशः अमरीका, फ्रांस और इंगलैण्ड में कुछ पुस्तकें छापी भी गई हैं। इस नई विधि का नाम है 'अक्षर संयोजन की फोटो-प्रणाली', जिसमें धातु के अक्षर नहीं ढालने पड़ते। मुद्रण के क्षेत्र में निश्चित रूप से यह क्रान्तिकारी आविष्कार है। इस ढंग से छपाई करने के लिए दो तरह की मशीनों का आविष्कार हुआ।

पहली है लुमि टाइप (Lumitype) मशीन जिसका आविष्कार १९४४ ई० में फ्रांस के दो इन्जीनियरों हिगोनेट (M.M.Higonnet) और मेराउड (Moyroud) ने किया और उन्होंने अपना यह आविष्कार 'ग्रैफ़िक आर्ट्स रिसर्च फाउण्डेशन, कैम्ब्रिज' को बेच दिया। उस संस्था ने इसे विकसित करके १९४९ में 'फ़ोटन' नाम दिया। यह मशीन प्रकाश के माध्यम से पहले अक्षरों को फ़िल्म पर अंकित करती है, जो लगातार घूमते हुए चक्र में से होकर गुज़रती रहती है। इस चक्र पर १६ आकार के ९०-९० तरह के प्रत्येक अक्षर बने होते हैं। बारह ताल (Lens) लगे हुए एक यन्त्र से यह सम्भव है कि १९२ भिन्न-भिन्न प्रकार के तथा (५ से लेकर २८ प्वांइट तक) १७,२८० आकार के मुद्रणाक्षर अंकित किये जा सकते हैं। फ़िल्म पर इस मशीन द्वारा एक सैकण्ड में आठ प्रकार के अक्षर अंकित हो सकते हैं।

फ़ोटन मशीन से सबसे पहली पुस्तक जो छापी गई वह है १९५३ में अमरीका की राइन हार्ट एण्ड कम्पनी, न्यूयार्क द्वारा मुद्रित कराई गई पुस्तक 'वन्डरफुल वर्ल्ड आफ़ इन्सेक्ट्स'। यद्यपि इस पुस्तक का ऐतिहासिक महत्त्व है लेकिन छपाई या मुद्रणाक्षरों की दृष्टि से इसमें कोई विशेषता नहीं है। इसके मुकाबिले में लुमिटाइप (Lumitype) मशीन से फ्रांस में छपी पुस्तक नितान्त भिन्न है। यह एक नाटक-पुस्तक है जिसमें इस मशीन के लिए विशेष रूप से योजित एक सुन्दर मुद्रणाक्षर के साथ-साथ रंगमंच-संकेतों को अधिक स्पष्ट बनाने के लिए एक ही पंक्ति में कई-कई तरह के मुद्रणाक्षरों का उपयोग किया गया है। इसके अतिरिक्त मुद्रित पृष्ठों की छपाई भी बहुत साफ़ है क्योंकि इसके लिए ताँबे तथा क्रोमियम की तह चढ़ाये गए एक विशेष प्रकार के लीथो-मुद्रण-पटल का उपयोग भी किया गया था।

फ़ोटन मशीन से पहली पुस्तक छपने के एक वर्ष पूर्व फिलेडेल्फिया में इसी तरह की 'फ़ोटो सेटर' नामक एक मशीन से 'ए हैण्ड बुक आफ़ बेसिक माइक्रोटेक्नीक' नामक पुस्तक छप चुकी थी। इस मशीन का निर्माण 'इन्टरटाइप कार्पोरेशन' नामक एक संस्था ने किया है और १९४९ से लेकर अब तक इस तरह की लगभग २०० मशीनें संयुक्त राष्ट्र अमरीका में लगाई जा चुकी हैं। इसकी साधारण किस्म वाला यन्त्र 'इन्टरटाइप लाइन-कास्टिंग मशीन' का सीधा-सादा रूपान्तर -मात्र है, जो १९१३ ई० में बनी थी। इसमें मुद्रणाक्षर पट (Matrix) की जगह फ़ोटो पट (Photomat) लगा दिया जाता है जिस पर

भूल सुधार

"प्रकाशन समाचार" के जून '५८ के अंक में पृष्ठ ३८५ पर छपे विज्ञापन में "बीसवीं शताब्दी के महाकाव्य" की पुरस्कृत राशि १००) को पाठक कृपया १०००) पढ़ें।

रणधीर सिनहा की रचनाएँ

कविताएँ, कहानियाँ, नाटक, रिपोर्ताज, निबन्ध, डायरी, आत्मालाप, संस्मरण, व्यंग-चित्र तथा लघु कथाएँ आदि कुल २३ रचनाओं का अनुपम संग्रह।

मूल्य २ रुपये ५० नये पैसे

प्रकाशक—श्रेष्ठ साहित्यागार, पटना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चित्र उभर आते हैं। फ़ोटोसेटर मशीन में चार कोप (Magazines) और बारह ताल (Lenses) लगाकर ३२ प्रकार के तथा विभिन्न आकार के (४ प्वाइंट से लेकर ३६ प्वाइंट तक के) मुद्रणाक्षरों का उपयोग किया जा सकता है।

इंग्लैण्ड, अमरीका तथा फ्रान्स में जितनी पुस्तकें इन मशीनों से छपी हैं उनमें इनकी पूरी क्षमताओं का तो क्या, थोड़ी-बहुत का भी उपयोग नहीं किया गया है। आगे चलकर आकर्षक छपाई के लिए ये मशीनें वरदान सिद्ध होंगी, इसमें सन्देह नहीं। किसी उपन्यास या नाटक के मुद्रण में इन मशीनों के विभिन्न मुद्रणाक्षरों का कमाल नहीं दिखाया जा सकता। इनका उपयोग तो कोई कुशल मुद्रक, संश्लिष्ट सूचियों, तालिकाओं, विज्ञापनों तथा शब्दकोषों आदि के मुद्रण में ही कर सकता है। कहने का तात्पर्य यह है कि इन मशीनों की क्षमताओं का सम्यक् उपयोग उन्हीं चीजों की छपाई में किया जा सकता है जिनमें विभिन्न आकार-प्रकार के मुद्रणाक्षरों के उपयोग की गुन्जाइश हो। यदि इन नई मशनों से छपाई की लागत में कुछ कमी करना अभीष्ट हो तो लेखकों के लिए यह आवश्यक होगा कि वे टाइप की हुई पाण्डुलिपियों को अन्तिम रूप से तैयार करके दें। इन मशीनों के उपयोग में बड़ी ही सतर्कता तथा सूझ-बूझ से काम लेने की आवश्यकता है।

धीरे-धीरे पाश्चात्य देशों में इनका प्रचार-प्रसार बढ़ता जा रहा है। आशा है शीघ्र ही भारत के भी कुछ विशेष नगरों में इन मशीनों द्वारा छपाई सम्भव हो सकेगी।

हमारा नवीन प्रकाशन

सटक सीताराम

लेखक—प्रो० संसारचन्द्र एम० ए०

लेखक के व्यंग्य-निबन्धों का संकलन। प्रत्येक पृष्ठ पर आप व्यंग्य की अपूर्व अभिव्यञ्जना से प्रभावित हुए बिना न रहेंगे। हिन्दी साहित्य के इस उपेक्षित अंग की श्रीवृद्धि कर लेखक ने महान् कार्य किया है।

मूल्य ३)

गुरुदत्त के दो उपन्यास पुनर्मुद्रित

मायाजाल मूल्य ५)
उमड़ती घटाएँ मूल्य ६)

गुरुदत्त द्वारा रचित हमारा अन्य उपन्यास-साहित्य

सहस्रबाहु ६)
लुढ़कते पत्थर ५।।)
नगर परिमोहन ५।।)

गुरुदत्त का सम्पूर्ण साहित्य हमारे यहाँ से प्राप्त करें।

हमारे प्रकाशनों का नया सूचीपत्र छप गया है, मंगवाएँ—

ओरिएण्टल बुक डिपो,
नई सड़क, दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशकीय जगत्

मध्यप्रदेश में राष्ट्रीयकृत पुस्तकें पुस्तक-विक्रेताओं को सरकार से १० प्रतिशत कमीशन तथा फ्री डिलिवरी की सुविधा से प्राप्त हो सकेंगी। पुस्तकों का कुल मूल्य कमीशन काटकर सरकारी कोषागार में पहले जमा कराना होगा। पुस्तकों के आर्डर अधीक्षक, पाठ्य-पुस्तक, मध्यप्रदेश, भोपाल, उप-अधीक्षक, गवर्नमेण्ट रिजनल प्रेस, ग्वालियर, एवं उप-अधीक्षक, गवर्नमेण्ट रिजनल प्रेस, इन्दौर को भेजा जा सकता है।

* * *

मई ५८ के अन्तिम सप्ताह में मद्रास में मद्रास राज्य की ४८वीं एजुकेशनल कॉन्फ्रेंस का वार्षिक जलसा हुआ। साउथ इण्डियन टीचर्स यूनियन के अध्यक्ष श्री टी० पी० श्रीनिवासवर्धन एम० एल० सी० अध्यक्ष थे। एक प्रस्ताव द्वारा इस सम्मेलन ने मद्रास सरकार की पुस्तकों के राष्ट्रीयकरण की नीति की भर्त्सना की।

* * *

भारत सरकार के उद्योग और वाणिज्य मन्त्रालय ने घोषणा की है कि पाठ्य पुस्तकों अथवा सामान्य पुस्तकों का प्रकाशन करने वाले प्रकाशकों को अपने उपयोग के लिए नेपा मिल्ज़ का कागज़ बिना आबकारी टैक्स के मिल सकेगा।

* * *

बिहार विधान सभा की एस्टिमेट कमेटी विचार-विमर्श के बाद इस नतीजे पर पहुँची है कि बिहार की टेक्स्टबुक एण्ड एजुकेशन लिटरेचर कमेटी की सक्रियताएँ उन उद्देश्यों की पूर्ति नहीं कर पा रहीं जिनके लिए इस कमेटी का आयोजन किया गया था।

* * *

जामिया मिलिया, दिल्ली को "ज्ञान सरोवर" के प्रथम भाग के दूसरे संस्करण के सम्बन्ध में भारत सरकार के शिक्षा-मन्त्रालय ने २६,७१३ रुपये प्रदान किये।

* * *

बालोपयोगी पुस्तकों की वार्षिक प्रतियोगिताओं में भेजी गई पुस्तकों के चुनाव में सहायता देने के लिए केन्द्रीय शिक्षा मन्त्रालय ने एक चिल्ड्रेन्स लिटरेचर कमेटी की स्थापना की है।

* * *

यदि आप अब तक

प्रकाशन समाचार

के ग्राहक नहीं हैं

तो आज ही ३) तीन रुपये मनीआर्डर से भेजकर एक वर्ष के लिए ग्राहक बनें।

पोस्टल आर्डर स्वीकार नहीं किये जाते।

प्रबन्ध विभाग

प्रकाशन समाचार

राजकमल प्रकाशन प्रा० लि०

८ फैज़ बाज़ार, दिल्ली

राजस्थान में प्रकाशकों व पुस्तक-विक्रेताओं की हड़ताल

राजस्थान के प्रकाशक व पुस्तक-विक्रेताओं ने बोर्ड ऑफ नेशनलाइजेशन ऑफ टैक्स्ट बुक्स के इस निर्णय के विरुद्ध अनिश्चित समय के लिए हड़ताल की घोषणा की है कि भविष्य में बोर्ड द्वारा प्रकाशित पुस्तकें हैडमास्टरों व डिप्टी इंस्पैक्टर ऑफ स्कूल्स के माध्यम से ही बेची जायँगी, न कि पुस्तक-विक्रेताओं के माध्यम से। यह निर्णय राज्य के सभी पुस्तक-विक्रेताओं की एक सभा में ३ जुलाई, १९५८ को जयपुर में किया गया। सभा में राज्य सरकार के निर्णय को पुस्तक-व्यवसाय पर भारी प्रहार कहा गया।

जोधपुर के पुस्तक-विक्रेताओं का एक प्रतिनिधि-मण्डल शिक्षा-विभाग के सेक्रेटरी से मिला और उनसे अनुरोध किया गया कि पुस्तकों का वितरण विक्रेताओं के माध्यम से ही होना चाहिए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तक-परिचय

उपन्यास

बुढ़िया की गाय, : भारत के विश्वविख्यात कथाकार श्री मुल्कराज आनन्द का नवप्रकाशित उपन्यास है। लेखक ने होशियारपुर तथा उसके आसपास के दो पहाड़ी गाँवों को कथा का। घटना-क्षेत्र बनाया है और घटना-काल है १९४७ के बाद का। लेखक ने अपने इस उपन्यास में स्पष्ट रूप से यह दिखाने की कोशिश की है कि आज भी पहाड़ी इलाकों की हालत कुछ बहुत सुधरी हुई नहीं है। कर्ज और गरीबी के बोझ से दबे हुए इन्सानों की जिन्दगी पशुओं से भी गई बीती है जहाँ पेट के लिए आबरू बेचना पाप नहीं समझा जाता और जहाँ एक बूढ़ी माँ के सामने अपने पेट के सहारे 'गाय' और इज्जत की प्रतीक विवाहित 'बेटी' में से किसी एक को बेचने का प्रश्न उपस्थित हो तो वह किसी साठ साल के बूढ़े और नपुंसक सेठ के हाथ अपनी 'बेटी' को ही बेच देना पसन्द करेगी। उसमें माँ की ममता है लेकिन गरीबी और भुखमरी की आग ने उसे चेतनाहत बना दिया है। वर्णन की स्वाभाविकता तो है ही, कथा-प्रसंगों की बुनावट तथा चरित्र-चित्रण की दृष्टि से भी यह कृति अत्यन्त उत्कृष्ट बन पड़ी है, पंछी, गौरी, केसरो, लक्ष्मी, अमरू, रफीक चाचा आदि कुछ ऐसे पात्र हैं जो मन पर अपनी अमिट छाप छोड़ जाते हैं। हिन्दी कथा-साहित्य को यह उपन्यास एक महत्त्वपूर्ण देन है, इसमें सन्देह नहीं। इसका प्रकाशन हुआ है, **राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, इलाहाबाद, बम्बई, पटना, मद्रास** से और मूल्य है ५·५० न० पै०।

* * *

टेढ़ी लकीर : उर्दू की प्रसिद्ध प्रगतिशील लेखिका इस्मत चुग़ताई के उपन्यास का रूपान्तर। उपन्यास की नायिका एक मुस्लिम घराने की शिक्षित नवयुवती है जिसे जीवन के कटुतम अनुभवों ने प्रताड़ित किया है। नायिका का सम्बन्ध कालेज में शिक्षा पाने के दिनों में प्रगतिशील आन्दोलन से हुआ और इस नाते उपन्यास में लेखिका का उस आन्दोलन के प्रति दृष्टिकोण भी स्पष्ट हुआ है जो काफ़ी रोचक है। भाषा हिन्दी न होकर नागरी लिपि में उर्दू ही है जो उर्दू न जानने वालों के लिए सुबोध नहीं है। प्रकाशक हैं अदबी पब्लिशर्स, बम्बई। क्राऊन आकार के ४९४ पृष्ठ। अजिल्द।

* * *

कहानी

'रश्मियाँ : श्री प्रमोदकुमार की २१ लघु-कथाएँ और गद्य-गीत संकलित हैं, प्रायः सभी कृतियाँ भाव-प्रधान हैं। भाषा, शैली तथा शिल्प के नये प्रयोग श्री प्रमोदकुमार ने इनमें प्रस्तुत किये हैं। कहानी में जितनी कल्पना की आवश्यकता होती है, उतनी इनमें नहीं है। यथार्थ की अनुभूति ने उनकी कल्पना को जो निखार दिया है, वह अद्भुत है। डिमाई साइज़ के ९२ पृष्ठ की यह सजिल्द पुस्तक **आदित्य प्रकाशन, गया** ने प्रकाशित की है और वहीं से २ रुपये ७५ नये पैसे में मिल सकती है।

* * *

'अभ्यास' : में श्री प्रमोदकुमार की 'रश्मियाँ' के बाद लिखी हुई १४ कहानियों का संग्रह है। इनमें उनकी कुछ पुरानी कहानियाँ भी हैं। इस संग्रह पर 'अभिमत' देते हुए आचार्य शिवपूजन सहाय ने यह ठीक ही लिखा है कि "लेखक के हृदय और मस्तिष्क में अपने देश और समाज के कल्याण के लिए बड़े उत्सुक भाव एवं अनन्त कल्पनाएँ हैं, जिन्हें वह बड़े कौशल के साथ अपनी वाणी और लेखनी द्वारा व्यक्त कर देता है।" क्राउन साइज़ १५२ पृष्ठ की यह सजिल्द पुस्तक भी आदित्य प्रकाशन, गया ने ही प्रकाशित की है और ३ रुपये २५ नये पैसे में प्राप्य है।

* * *

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे नये प्रकाशन

लाल कनेर

रवीन्द्रनाथ ठाकुर की अमर नाट्य रचना जिसमें आज की सांघातिक जड़वादी सभ्यता के विरुद्ध मानवी नन्दिनी द्वारा कवि ने मर्मस्पर्शी सन्देश दिया है। मूल बंगला से अनुवादक हैं आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी। मूल्य २.०० मात्र

दूध-गाछ

देवेन्द्र सत्यार्थी का नया उपन्यास। पृष्ठभूमि में संगीत की मधुर झंकार आदि से अन्त तक पाठक की मन मोहने में समर्थ है। लय और गति इस उपन्यास की अपनी विशेषताएँ हैं। भाषा प्रवाहयुक्त; प्रत्येक शब्द सार्थक। मूल्य ६.०० मात्र

हिन्दी भाषा का सरल व्याकरण

डॉ० भोलानथ तिवारी द्वारा लिखी यह पुस्तक हिन्दी के एक बड़े अभाव की पूर्ति करती है। निश्चय ही अहिन्दी प्रदेशों में हिन्दी के प्रचार-प्रसार से इस व्याकरण से पर्याप्त सहायता मिलेगी, हालाँकि यह पुस्तक हिन्दी भाषी विद्यार्थियों के लिए भी कम उपयोगी सिद्ध न होगी। मूल्य ३.५० मात्र

कविताएँ

कीर्ति चौधरी की १९५३ और १९५७ के बीच लिखी गई भाव-गहन कविताएँ। मूल्य ३.५० मात्र

राजकमल प्रका

दिल्ली : इलाहाबाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रतीयमूर्तियाँ

इतिहासकर्जी द्वारा लिखित अंग्रेजी
का हिस्तक में भारत की पाँच
विभूतिम बुद्ध, अशोक, समुद्रगुप्त
की हुए तत्कालीन सामाजिक
का ाया है। प्राचीन भारत की
र्ण विचरनेवाले किसी भी विद्यार्थी
यह पुगी। मूल्य ३.५० मात्र

पत्थर

राज ास। जीवन-संघर्ष में रत
ादर्शवक का पठन-पाठन की
जुटाकन' बनाने की लालसा;
र पूर्ति करने की मजबूरी, और
रान मेंसामाजिक-आर्थिक अनुभव
नोवैज्ञानिन्तु हैं। उपन्यास-साहित्य
नया मूल्य २.२५ मात्र

द

के काथ तिवारी द्वारा आलो-
क अब तक लिखी गई अन्य
भिन्न। मूल्य ४.०० मात्र

पुनर्मुद्रण

१. हिन्दू सभ्यता : डॉ० राधाकुमुद मुकर्जी। अनुवादक, डॉ० वासुदेव शरण अग्रवाल, संशोधित द्वितीय संस्करण ७.५०
२. भारतीय संस्कृति : प्रो० शिवदत्त ज्ञानी ५.५०
३. हिन्दी गद्य की प्रवृत्तियाँ : मूल्यांकन माला २.००
४. हिन्दी काव्य की प्रवृत्तियाँ : मूल्यांकन माला २.००
५. सरल मनोविज्ञान : प्रो० हंसराज भाटिया ४.००

कुछ आगामी प्रकाशन

१. मध्यकालीन हिन्दी गद्य : प्राचीन गद्य का आलोचनात्मक अध्ययन : हरिमोहन श्रीवास्तव।
२. अजन्ता के चित्रकूट : प्रौढ़ोपयोगी : रायकृष्णदास, राय आनन्द कृष्ण।
३. लोक-परलोक : उपन्यास : उदयशंकर भट्ट
४. अकेले कण्ठ की पुकार : कविता : अजितकुमार
५. जानने की बातें : बाल-प्रौढ़ोपयोगी संदर्भ ग्रन्थ : देवी प्रसाद चट्टोपाध्याय (दस भागों का सेट)
६. आधी रात का सूरज : कहानी-संग्रह : शमशेरसिंह नरूला

...का प्राइवेट लिमिटेड

...बाद : पटना : मद्रास

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'आटे के सिपाही' : में श्री आनन्दप्रकाश जैन की 'देवताओं की चिता', 'कवि का पाप', 'प्रणय की भीख', 'अन्तिम नग', 'बन्धक पुत्र' और 'आटे के सिपाही' शीर्षक छः ऐतिहासिक कहानियाँ सम्मिलित हैं। आनन्दप्रकाश जैन ऐतिहासिक कथाकार के रूप में अच्छी ख्याति अर्जित कर चुके हैं। इन कहानियों में भी उनका यही रूप उभरकर सामने आया है। 'देवताओं की चिता' उनका लघु उपन्यास है। इसका प्रकाशन प्रकाशन प्रतिष्ठान, मेरठ ने किया है। क्राउन साइज़ के १५६ पृष्ठ की यह पुस्तक २ रुपये २५ नये पैसे में मिल सकती है।

* * *

कविता

'कणिका' : श्री शंकरलाल माहेश्वरी के नवीनतम गीतों का संकलन है। प्रायः सभी गीतों में उनकी अनुभूति झाँकती-सी लगती है। भाषा, भाव और कल्पना की त्रिवेणी इन सभी गीतों की विशेषता है। गेयात्मकता के तत्त्व भी इन गीतों में प्रचुर मात्रा में विद्यमान हैं। डिमाई साइज़ के ८८ पृष्ठों की इस सजिल्द पुस्तक का प्रकाशन जुही कुंज, कलकत्ता ने किया है और २ रुपये ५० नये पैसे में प्राप्य है।

* * *

गीत मैं कैसे लिखूँ : तरुण-कवि श्री जगदीश शर्मा के ५४ भावाकुल गीतों का संग्रह है। सजिल्द पुस्तक की पृष्ठ-संख्या क्राऊन आकार में १११, मूल्य दो रुपये पचास नये पैसे, प्रकाशक **ऐलोरा पब्लिशिंग हाउस, मथुरा**।

* * *

तात्या टोपे : १६५७ के जगत् विख्यात अमर सेनानी के जीवन पर आधारित एक ओजपूर्ण महाकाव्य है। इसके ३१ सर्गों में श्री लक्ष्मीनारायण कुशवाहा एम० ए० ने तात्या टोपे के जन्मकाल से लेकर उनके जीवन की प्रायः समस्त महत्त्वपूर्ण घटना प्रसंगों का अत्यन्त रोमांचक तथा सजीव वर्णन किया है। बीच-बीच में झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई नाना साहब आदि की जीवन-घटनाएँ तथा १८५७ की क्रान्ति के विविध प्रसंग भी आ गए हैं। विषय वस्तु की दृष्टि से यह महाकाव्य सराहनीय है, छपाई का स्तर कुछ और ऊँचा होता तो अच्छा होता। इसका प्रकाशन हुआ है **केशव प्रकाशन, केशव मन्दिर, काशीपुर (नैनीताल) उ० प्र०** से और मूल्य है ५)।

* * *

सेतु बन्ध : प्राकृत भाषा के अमर रचनाकार, महाकवि प्रवर सेन की विख्यात कृति है। इसके काव्य-सौष्ठव तथा शिल्प-सौन्दर्य को देखकर ही अनेक आलोचकों तथा विद्वानों को इस भ्रामक धारणा पर विश्वास करने के लिए विवश होना पड़ा कि यह महाकाव्य कविकुलगुरु महाकवि कालिदास की रचना है जबकि कालिदास वास्तव में इस ग्रन्थ के लिपिक का नाम था। इस महाकाव्य में बालिवध से लेकर रावण-वध के बाद तक की राम कथा का वर्णन है। बीच में सेतु बाँधने के प्रसंग को अधिक विस्तार देने के कारण ही इसका नामकरण सेतुबन्ध हुआ, वैसे इसका 'रावण-वध', 'रामसेतु' तथा 'दशमुख वध' के नाम से भी उल्लेख किया जाता है। इस अनुपम महाकाव्य का सफल हिन्दी अनुवाद प्रस्तुत करके डॉ० रघुवंश ने वास्तव में एक सराहनीय कार्य किया है। अनुवाद करते समय इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि कवि की कल्पना, तथा काव्य-चित्रों को बिना खण्डित भाषान्तरित कर दिया जाय। इस महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ का प्रकाशन राजकमल अमर साहित्य पुस्तकमाला के अन्तर्गत **राजकमल प्रकाशन, दिल्ली इलाहाबाद, बम्बई, पटना, मद्रास** से हुआ है और मूल्य है ४·५० न० पै०।

* * *

चक्रवाल : दिनकरजी की उत्कृष्ट कविताओं का प्रतिनिधि संकलन है। 'रेणुका' से लेकर 'नील कुसुम' तक उनकी प्रत्येक काव्य-पुस्तक से चुनी हुई कुछ सौ कविताएँ इसमें संकलित हैं। आरम्भ में दी गई लगभग अस्सी पृष्ठों की भूमिका में रीतियुग से लेकर प्रयोगवाद तक हिन्दी की समस्त काव्य-प्रवृत्तियों का सम्यक् विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। इसका प्रकाशन **उदयाचल, पटना–४** से हुआ है और मूल्य है १०) रु०। सफ़ाई-छपाई सभी कुछ सुन्दर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और सुरुचिपूर्ण है ।

* * *

भग्न मूर्ति : मराठी के विख्यात कवि आत्माराम रावजी देशपांडे 'अनिल' की बहुप्रशंसित काव्य-कृति का डॉ० प्रभाकर माचवे द्वारा प्रस्तुत किया गया सफल हिन्दी रूपान्तर है । भग्न मूर्ति एक बिलकुल नये ढंग का खण्ड-काव्य है जो कथात्मक न होकर विश्लेषणात्मक है । एक खण्डित मूर्ति पर विचार करते-करते कवि साँची, अजन्ता, वेरूल, मथुरा म्यूज़ियम और वहाँ से हमारी सम्पूर्ण संस्कृति के ह्रास की बृहद् और विशद कारण-मीमांसा तक पहुँचकर यह मौलिक निष्कर्ष निकालता है कि "रक्षण-तन्त्र की उपेक्षा के कारण हमारी संस्कृति आज ऐसी खण्डहरनुमा हालत में है । बृहदाकार काफ़ी नहीं है, उसके साथ-साथ बौद्धिक विकास भी अत्यन्त आवश्यक है ।" इस प्रकार यह छोटा-सा काव्य हमारे इतिहास, कला, दर्शन और समूची जीवन-पद्धति पर एक नया भाष्य है । अनुवादक ने अत्यन्त सतर्कता बरतते हुए इस बात का प्रशंसनीय प्रयास किया कि मूल के शब्द तथा शैली की विशेषताओं का निर्वाह हो । **साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली** की ओर से **राजकमल प्रकाशन (प्रा०) लि०, दिल्ली, इलाहाबाद, बम्बई, पटना, मद्रास** ने इसे प्रकाशित किया है और मूल्य है १) रु० मात्र ।

* * *

उदयाचल, पटना—४ ने इधर दिनकरजी की सभी नई और पुरानी कृतियों के नये संस्करण प्रकाशित किये हैं । 'प्रकाशन समाचार' में समीक्षार्थ दिनकरजी की नई-पुरानी आठ काव्य-कृतियाँ प्राप्त हुई हैं । **'नील कुसुम'** उनकी नई कविताओं का बहुप्रशंसित संग्रह है जिसे वर्ष की सर्वश्रेष्ठ काव्य-कृति मानकर बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद् ने पुरस्कृत भी किया है । इस दर्शनीय, पठनीय तथा संग्रहणीय पुस्तक का मूल्य है ३) रु० । इससे भी नई काव्यकृति है **'सीपी और शंख'** । इसमें कुल पचास कविताएँ संग्रहीत हैं जो भाव, भाषा, शैली तथा छन्द-विधान आदि सभी दृष्टियों से विश्व की आधुनिक काव्य-चेतना से अनुप्राणित तथा बौद्धिक रस से परिपूर्ण हैं । **नये सुभाषित** अपनी तरह की एक निराली ही रचना है । सैकड़ों विषयों के विस्तार

हमारे अनमोल हिन्दी प्रकाशन

(हमारी पुस्तकों को देखकर लोग कह उठते हैं कि ये हिन्दी में अपने विषय की बेजोड़ और अद्वितीय हैं ।)

(१) हिन्दी के श्रेष्ठ साहित्यकार—लेखक सिंहासन राय 'सिद्धेश' । इसमें हिन्दी के सर्वश्रेष्ठ साहित्यकारों की प्रामाणिक जीवनी, उनकी साहित्य-सेवा और भाषा-शैली का सुन्दर वर्णन है । मूल्य २।।)

(२) वादविवाद और व्याख्यान प्रवेशिका—लेखक तिवारी और राय । इसमें हाईस्कूलों और कॉलेजों में होने वाले वादविवाद (पक्ष और विपक्ष) और व्याख्यान-विषयों का ओजपूर्ण आकर्षक शैली में वर्णन है । मूल्य ३) मात्र

(३) निबन्ध-भारती—लेखक प्रो० 'सिद्धेश ।' हाई-स्कूलों और हायर सेकण्ड्री स्कूलों की उच्च कक्षाओं के छात्रों के लिए हिन्दी निबन्ध की सर्वश्रेष्ठ पुस्तक । आधुनिक विषयों पर निबन्ध । मूल्य ३)

(४) आर्थिक और व्यापारिक निबन्ध—लेखक प्रोफेसर रूपनारायण उपाध्याय एम० ए० । कालेज के छात्रों के लिए । मूल्य ४)

(५) निबन्धालोक—लेखक प्रो० 'कमलेश' । मौलिक साहित्यिक निबन्ध । मूल्य ३)

प्राप्ति-स्थान

आदर्श पुस्तक भण्डार

५८, अपर चितपुर रोड, कलकत्ता-७

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को समेटने वाले ये लगभग दो सौ पद इतने चुटीले और सारगर्भित हैं कि पढ़कर कवि की निराली सूझ-बूझ पर चमत्कृत रह जाना पड़ता है। मूल्य है २) रु०। व्यंग्य-काव्य का उत्कृष्ट उदाहरण दिनकरजी ने **नीम के पत्ते** में प्रस्तुत किया है। इस संग्रह की कविताओं में ऐसा तीखा और लक्ष्यवेधी व्यंग्य प्रस्तुत किया है जिसका वार अचूक है। यही कारण है कि काया में लघु होते हुए भी आत्मा की गुरुता ने इसे इतना लोकप्रिय बना दिया है। मूल्य १) रु० मात्र है। **इतिहास के आंसू** दिनकरजी की सबसे अधिक लोकप्रिय तथा भावना-प्रधान कविताओं का संग्रह है। भारत के अतीत का ऐसा मार्मिक चित्र कवि ने प्रस्तुत किया है कि पढ़कर मन मसोसने लगता है। मूल्य है ३) रु०। ऐसी ही काव्य-कृति है **दिल्ली** जिसमें कवि ने अपनी चार लम्बी कविताओं में दिल्ली का अतीत और वर्तमान साकार कर दिया है—उस दिल्ली का जो युगों से महलों और खण्डहरों की महानगरी रही है, जो बस-बसकर उजड़ी है और उजड़-उजड़कर फिर बसी है, जिसने भारत के भाग्य के जाने कितने चढ़ाव-उतार देखे ही नहीं स्वयं भी अनुभव किये हैं। मूल्य है मात्र रु० १)। तीन लम्बी कविताओं का संग्रह है **बापू** जो गांधी के जीवन पर आधारित एक मार्मिक खण्डकाव्य-सा बन गया है। अपनी ओर से श्रद्धामिश्रित करुणापूर्ण अनुभूतियों की इन तीन अंजलियों के माध्यम से कवि ने बापू के प्रति अपने हृदय में संचित उद्गारों को व्यक्त करने का सफल प्रयास-मात्र किया है। मूल्य है १.५० न० पै०। उपर्युक्त काव्य-कृतियों में से अधिकांश अपेक्षाकृत नई ही हैं केवल **रेणुका** ही एक पुरानी रचना है। यह दिनकरजी की कविताओं का प्रथम कविता-संग्रह है। दिनकरजी को ख्याति के शिखर पर पहुँचाने में इन कविताओं का बहुत बड़ा हाथ है। यौवन के उद्दाम उल्लास एवं उत्साह से प्रेरित होकर लिखी गई इन कविताओं में भारत के अतीत की गौरवपूर्ण झाँकी, वर्तमान की आकुल वेदना तथा अकुण्ठित संघर्ष एवं भविष्य के उज्ज्वल स्वप्न अंकित हैं। मूल्य है ३) रु०।

इन सभी पुस्तकों की सफाई-छपाई सुन्दर है तथा मुखचित्र आदि सुरुचि पूर्ण एवं आकर्षक हैं। व्यक्तिगत पाठकों तथा पुस्तकालयों के लिए ये काव्य-कृतियाँ संग्रहणीय हैं।

* * *

आलोचना, निबन्ध

'कविप्रसाद' : डॉक्टर भोलानाथ तिवारी की नवीनतम समीक्षा-कृति है। इसमें विद्वान् लेखक ने प्रारम्भ में कवि प्रसाद के काव्य की पृष्ठभूमि देकर उनके जीवन पर भी उपयोगी प्रकाश डाला है। इसकी 'प्रारम्भिक कविताएँ और मान्यताएँ', 'चित्राधार', कानन कुसुम', 'प्रेम पथिक', 'करुणालय', 'महाराणा का महत्त्व', 'झरना', 'आँसू', 'लहर' तथा 'कामायनी' आदि अध्यायों में तिवारीजी ने उनके काव्य तथा उसकी विशेषताओं पर विशद प्रकाश डाला है। अन्त में 'छायावाद', 'रहस्यवाद', 'नियतिवाद', 'गीति-काव्य', 'प्रकृति चित्रण', 'भाषा और कलाकार' तथा 'छन्द' आदि अध्यायों में उनके काव्यवादों का विवेचन करके उनकी भाषा तथा छन्द-सम्बन्धी मान्यताओं का मार्मिक निरूपण किया है। डिमाई साइज़ के १६९ पृष्ठ की यह पुस्तक राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड दिल्ली ने प्रकाशित की है और वहीं से चार रुपये में प्राप्य है।

* * *

संस्कृत और उसका साहित्य, : भारतीय साहित्य परिचय नामक पुस्तकमाला की सद्यःप्रकाशित पुस्तक है। इसके विद्वान् लेखक डॉ० शान्तिकुमार नानूराम व्यास ने इस नन्हे से ग्रन्थ में संस्कृत भाषा की उत्पत्ति और विकास पर विचार करते हुए उसके वैदिक साहित्य, इतिहास-पुराण, महाकाव्य, लघु-काव्य, नाटक, गद्य साहित्य, शास्त्रीय साहित्य, जैन और बौद्ध साहित्य आदि संस्कृत-वाङ्मय की लगभग समस्त शाखाओं का एक सरल, रोचक, सुगठित और सोदाहरण विश्लेषण उपस्थित किया है। उपसंहार में आधुनिक संस्कृत-साहित्य के कतिपय ग्रन्थों और ग्रन्थकारों पर भी यत्किंचित् प्रकाश डाल दिया गया है। इस प्रकार सामान्य पाठकों तथा विश्वविद्यालय के प्रारम्भिक छात्रों को समस्त संस्कृत साहित्य का विशद सिंहावलोकन कराने और उन्हें उसके विस्तृत अध्ययन की ओर प्रेरित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रत्येक पुस्तकालय के लिए अनुपम प्रकाशन

इसी मास के प्रकाशन

उपन्यास

सूखे पेड़, सब्ज़ पत्ते : गुलशन नन्दा ४।।)
आँचल में दूध आँखों में पानी : यादवेन्द्र शर्मा चन्द्र ४।।।)
गज़ाला : शौकत थानवी ३।।)

काव्य

उर्दू की सर्वश्रेष्ठ गज़लें : सं० नूरनबी अब्बासी २।।)

विज्ञान

चन्द्रलोक (सचित्र) : बसन्तकुमार चटर्जी २।।)

आगामी मास के आकर्षण

जीवन-दर्शन

आपका व्यक्तित्व : आनन्द कुमार ४।।)

उपन्यास

तन के उजले मन के काले : जमनादास 'अख्तर' ४)
नसीम : शौकत थानवी ३।।)

कहानियाँ

दो गज़ जमीन : टालस्टाय ३)

अन्य महत्त्वपूर्ण प्रकाशन

काव्य—

दीवाने गालिब (उर्दू काव्य) : सं० मुग़नी अमरोहवी नूरनबी अब्बासी ६)

राजनीतिक व ऐतिहासिक—

मेवाड़ : टॉड ३।।।)
बाचा खान : फ़ारिग बुखारी ६)
नेहरू विश्व-शांन्ति की खोज में : ओमप्रकाश गुप्ता ४।।)

आध्यात्मिक—

जीना सीखो : देसराज व गन्धर्व ३)

नाटक—

जब पर्दा उठा : हास्य एकांकी : प्रकाश पण्डित ४।)
मेरे नाटक : रवीन्द्रनाथ टैगोर ३।।)
डाकघर : रवीन्द्रनाथ टैगोर ।।=)

कहानियाँ—

उड़ानें : कृष्णचन्द्र ३।।)
एक खत एक खुशबू : कृष्णचन्द्र ३।)
सीमान्त : रवीन्द्रनाथ टैगोर २।।)
आँचल और आँसू : शिक्षा रानी निगम ३।।)
पागल : खलील जिब्रान १।।)
लायसेंस : मिन्टो ३।।)

उपन्यास—

एक नदी दो पाट : गुलशन नन्दा ४।)
पत्थर के होंठ : गुलशन नन्दा ३।।।)
बादल छंट गए : कृष्णचन्द्र ३)
ललिताङ्गी : यादवचन्द्र जैन ३।।।)
इन्शा अल्लाह : शौकत थानवी ३)

कुतिया : शौकत थानवी ४)
कार्टून : शौकत थानवी ४।)
चार सौ बीस : शौकत थानवी ३।)
साँच को आँच : शौकत थानवी ३।।।)
मिट्टी का कलंक : यादवेन्द्र शर्मा चन्द्र ३)
तूलिका : सोमर सेट मॉम ५।)
धरती की बेटी : कमल शुक्ल ३।।)
राख की परतें : कमल शुक्ल ३।)
एक ही पतवार : शिवव्रतलाल वर्मन ३।)
शाही लकड़हारा : शिवव्रतलाल वर्मन ३।।)
प्रेम पुजारिन : पं० सुदर्शन २।)
कौन किसी का ? : रवीन्द्रनाथ टैगोर २।)
समाज का अत्याचार : शरत् चन्द्र चटर्जी २।।)
काश्मीर की बेटी : जमनादास 'अख्तर' २।।)
आग : जमनादास 'अख्तर' २।।)
आँसू : जमनादास 'अख्तर' ३।)
बर्दा फरोश : जमनादास 'अख्तर' २।)
क्रान्तिकारी रमणी : अनु० तीर्थराम ४।।)
शैतान पुजारी : अनु० तीर्थराम २।।)

विज्ञान—

वैज्ञानिक चाँद : बसन्तकुमार चटर्जी १।।)
विज्ञान का चमत्कार : देसराज व गन्धर्व ।।=)
विज्ञान के मनोरंजन : श्री शरण ।।=)

कालिदास साहित्य—(अनु० श्री शरण)

रघुवंश, मेघदूत, विक्रमोर्वशी, कुमारसम्भव, अभिज्ञान शाकुन्तल, मालविकाग्निमित्र, नलोदय
मूल्य प्रत्येक का १।)

व्यापारियों और लायब्रेरियों को विशेष सुविधा, बड़े सूचीपत्र और विवरण के लिए लिखिये।

नारायण दत्त सहगल एण्ड सन्ज़, दरीबा कलां, देहली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रत्येक पुस्तकालय में संग्रह करने योग्य पुस्तकें

कोश

बृहत् हिन्दी कोश	सम्पादक कालिकाप्रसाद : लेदर क्लाथ राजवल्लभ सहाय जिल्द मू० २५.०० मुकुन्दीलाल श्रीवास्तव चमड़े की जिल्द	३२.००
ज्ञान शब्दकोश	सम्पा० मुकुन्दीलाल श्रीवास्तव	१५.००
पारिभाषिक शब्दकोश	सम्पा० मुकुन्दीलाल श्रीवास्तव	४.००

राजनीतिक पुस्तकें

भारतीय राजनीति— विक्टोरिया से नेहरू तक	रामगोपाल एम० ए०	११.००
राष्ट्रीयता और समाजवाद	आचार्य नरेन्द्रदेव	११.००
अन्तर्राष्ट्रीय विधान	डॉ० सम्पूर्णानन्द	११.००
चीन कल और आज	के० एम० पणिक्कर	५.००
राजनीतिशास्त्र	प्राणनाथ विद्यालंकार	४.५०
जपान की राजनीतिक प्रगति	अनु० लक्ष्मणनारायण गर्दे	५.५०
चीन और भारत	अम्बिकाप्रसाद वाजपेयी	१.५०

धर्म और दर्शन

सूफीमत साधना और साहित्य	रामपूजन तिवारी	११.००
विश्व के धर्म प्रवर्तक	रघुनाथसिंह एम० पी०	६.५०
वैज्ञानिक अद्वैतवाद	स्व० रामदास गौड़ एम० ए०	२.२५
चिद्विलास	डॉ० सम्पूर्णानन्द	५.००
दर्शन का प्रयोजन	डॉ० भगवानदास	३.५०
नीतिशास्त्र	सुश्री शान्ति जोशी	८.००

पत्रकारिता

पत्र और पत्रकार	माननीय पं० कमलापति त्रिपाठी तथा पुरुषोत्तमदास टण्डन 'पत्रकार'	६.५०
भारतीय पत्रकार कला	सम्पादक रौलेण्ड ई० वूल्सले	६.५०
समाचारपत्रों का इतिहास	पं० अम्बिकाप्रसाद वाजपेयी	६.५०
आधुनिक पत्रकार कला	रा० र० खाडिलकर	४.००

मनोविज्ञान

शिक्षा मनोविज्ञान	हंसराज भाटिया	४.५०

भ्रमण

हालैण्ड में पचीस दिन	रा० र० खाडिलकर	३.००
आर्याना	रघुनाथसिंह एम० पी०	३.००

इतिहास

भारतवर्ष का इतिहास	एक इतिहास प्रेमी	८.००
पश्चिमी यूरोप प्रथम भाग	अनुवादक छबिनाथ पाण्डेय एम० ए० एल-एल० बी०	४.५०
गांधी हत्याकाण्ड	सम्पादक विहंगम	५.००
आजाद हिन्द फौज और उसके तीन अफसरों का मुकदमा	३५० पृष्ठों की ऐतिहासिक पुस्तक	२.००

संस्मरण

जेल के वे दिन	विजयालक्ष्मी पंडित	२.५०
कुछ स्मरणीय मुकदमे	श्री कैलाशनाथ काटजू	८.००
मेरे बचपन की कहानी	श्रीमती नयनतारा सहगल	६.००

साहित्य

वक्रोक्ति और अभिव्यंजना	रामनरेश वर्मा एम० ए०	४.५०
गीतिकाव्य	प्रो० रामखेलावन एम० ए०	५.५०
तुलसीदास और उनका युग	डॉ० राजपति दीक्षित	८.००
सामयिकी	शान्तिप्रिय द्विवेदी	४.००
धरातल	शान्तिप्रिय द्विवेदी	२.७५
कल्पलता	आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी	२.५०

कथा साहित्य

उलूकतन्त्र	बलदेवप्रसाद मिश्र	२.००
शव साधन	बलदेवप्रसाद मिश्र	२.५०
तूफान	सर्वश्रेष्ठ कहानी-लेखकों की कहानियों का संग्रह	२.५०

उपन्यास

पुनर्जीवन	महात्मा टालस्टाय	६.५०
कर्त्तव्याघात	देवनारायण द्विवेदी	४.५०
नूतन ब्रह्मचारी	स्वर्गीय पं० बालकृष्ण भट्ट	०.६३
देशभक्त और देशद्रोही		२.५०
बयालीस	प्रतापनारायण श्रीवास्तव	४.५०
गेंजी की कहानी	मुरासाकी शिकाबू	४.५०

आदर्श जीवन चरित्र

सरदार पृथ्वीसिंह	राहुल सांकृत्यायन	४.००

विज्ञान

विज्ञान की प्रगति	भगवतीप्रसाद श्रीवास्तव	३.५०
विज्ञान के चमत्कार	भगवतीप्रसाद श्रीवास्तव	२.७५
परमाणु शक्ति	भगवतीप्रसाद श्रीवास्तव	२.७५
घरेलू बिजली	भगवतीप्रसाद श्रीवास्तव	४.००
सरल विज्ञान	भगवतीप्रसाद श्रीवास्तव	१.०६

ज्ञानमण्डल लिमिटेड, वाराणसी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करने में यह पुस्तक पूर्ण समर्थ है। इसका प्रकाशन हुआ है राजकमल प्रकाशन (प्रा०) लि० दिल्ली, इलाहाबाद, बम्बई, पटना तथा मद्रास से और मूल्य है रु० २ २५।

* * *

पालि व्याकरण : भिक्षु धर्मरक्षित द्वारा विद्यार्थियों के लिए विशेष रूप से लिखा गया पालि भाषा का व्याकरण। पालि का पठन-पाठन देश के अनेक विद्यालयों में आज हो रहा है और इसका कोई सरल व्याकरण फ़िलहाल सुलभ नहीं था।

क्राऊन आकार की १८७ पृष्ठों की इस पुस्तक का प्रकाशन **ज्ञान मण्डल लि०, वाराणसी** ने किया है, मूल्य दो रुपया पच्चीस नये पैसे है।

* * *

रेती के फूल : दिनकरजी के लोकप्रिय निबन्धों का संग्रह है। इसमें कुल पन्द्रह निबन्ध हैं जिनमें से कुछ व्यक्तिगत निबन्ध हैं, कुछ उद्बोधनात्मक और अधिकांश विचार-प्रधान हैं। जीवन और जगत्; धर्म और विज्ञान; कला और संस्कृति; व्यक्ति और राष्ट्र आदि विभिन्न विषयों पर इन निबन्धों में मूल्यवान विचार मिल जायँगे। तरुण पाठकों के लिए पुस्तक अत्यन्त उपयोगी है। इसका प्रकाशन हुआ है **उदयाचल, पटना–४** से और मूल्य है रु० २.७५ न० पै०।

* * *

देश-विदेश में दिनकरजी द्वारा इधर हाल की देश तथा विदेश के विभिन्न प्रदेशों की यात्राओं के संस्मरण संकलित हैं। यह संस्मरणात्मक यात्रा-वर्णन जितना रोचक है उतना ही ज्ञानवर्द्धक तथा प्रेरणाप्रद भी है। पुस्तक पढ़कर लगता है जैसे हम कोई डाक्युमेन्ट्री फिल्म' देख रहे हैं। इसका प्रकाशन हुआ है **उदयाचल, पटना–४** से और मूल्य है २) रु०।

* * *

बालोपयोगी

श्री एस० एल० प्रकाशन, दिल्ली ने बालोपयोगी अनेक छोटी-छोटी कई रंगों में छपी हुई पुस्तकों का प्रकाशन किया है। इधर ७ नई पुस्तकें छपी हैं जिनका नाम है : **(१) मोहन की चिट्ठी, (२) मुन्ने का सपना, (३) चोर, (४) डॉक्टर तोताराम, (५) सावधान, (६) टिटू बिटू** तथा **(७) कुतुब मीनार**। इन सातों पुस्तकों में शिक्षाप्रद और ज्ञानवर्द्धक कहानियाँ हैं। प्रत्येक का मूल्य १५ नये पैसे है।

* * *

हमारा देश में श्री मन्मथनाथ गुप्त ने भारत-विषयक लगभग समस्त जानकारी संक्षिप्त रूप में प्रस्तुत कर दी है। भारत की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, प्रादेशिक राज्य, प्रशासनिक ढांचा, शासन-व्यवस्था, स्वायत्त शासन की संस्थाएँ, सेना, वैदेशिक सम्बन्ध तथा पंचवर्षीय योजनाओं आदि के सम्बन्ध में ऐसी जानकारी प्रस्तुत की गई है जो रोचक तथा ज्ञानवर्द्धक होने के साथ-साथ प्रेरणाप्रद भी है। भाषा सरल तथा शैली सुगम होने के कारण कम पढ़े-लिखे लोगों के लिए इसकी उपयोगिता स्वतः सिद्ध है। इसका प्रकाशन हुआ है **उदयाचल, पटना–४** से और मूल्य है रु० १.५० न० पै०।

* * *

राजनीति, इतिहास

उदयाचल, पटना–४ से इधर दिनकरजी की दो नई कृतियाँ प्रकाशित हुई हैं। एक तो है **राष्ट्रभाषा और राष्ट्रीय एकता** और दूसरी है **हमारी सांस्कृतिक एकता**। पहली पुस्तक में दिनकरजी के कुछ लेखों तथा भाषणों का संग्रह है। भाषा की समस्या ने भारत में उग्र रूप धारण कर लिया है जिसके कारण कुछ लोगों का विचार है कि देश की एकता के लिए भी खतरा उत्पन्न हो गया है। दिनकरजी ने अपने इन भाषणों तथा लेखों में इस जटिल समस्या का विश्लेषण बड़े संयत ढंग से प्रस्तुत किया है। राष्ट्रीय समस्याओं में रुचि रखने वाले प्रत्येक व्यक्ति के लिए पुस्तक पठनीय एवं संग्रहणीय है। मूल्य है ३) रु०। दूसरी पुस्तक में दिनकरजी ने यह दिखाया है कि भारतीय समाज में भाषा, धर्म, जाति आदि के जो

(शेष पृष्ठ ४३४ पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे दो अनमोल नवीन प्रकाशन

शान्ति निकेतन—गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर, सजिल्द ६.००

जीवन की समस्याओं पर गुरुदेव के औपनिषदिक बंगला प्रवचनों का प्रथम हिन्दी अनुवाद।

"……यह प्रकाशन खरा सोना है।……यह सामग्री उपनिषदों का मथा हुआ मक्खन है और मेरा विचार है कि हिन्दी का प्रत्येक पाठक इसकी सराहना किये बिना न रहेगा। अवश्य ही इसकी गणना इस वर्ष के श्रेष्ठ प्रकाशनों में की जायगी।"

—*वासुदेव शरण अग्रवाल*

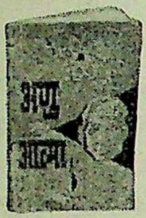

अणु और आत्मा—डॉ० जे० सी० ट्रस्ट, सजिल्द ४.००

विज्ञान तथा आत्मा का अद्भुत मेल। अणु-आभा-विज्ञान पश्चिम के विज्ञान तथा पूर्व के अध्यात्मवाद का सुन्दर समन्वय है। यूरोप तथा अमरीका में एक छोर से दूसरे छोर तथा धार्मिक क्रान्ति फैला देने वाली प्रथम पुस्तक।

"……जेम्स एलन और ओरिजन स्वेट मार्डन की प्रसिद्ध पुस्तकों के पश्चात् डॉ० ट्रस्ट की यह अपने विषय की अच्छी पुस्तक है, जिसे आरम्भ करने के पश्चात् छोड़ने को मन नहीं चाहता। डॉ० ट्रस्ट अपने काम के लिये अमरीका में प्रसिद्ध थीं। वह संसार के बहुत-से देशों में भी घूमीं तथा मानसिक रोगियों को अणु-आभा-विज्ञान द्वारा निरोग किया।…पुस्तक की छपाई, कागज, आवरण तथा गेट-अप आदि सब सराहनीय हैं। यह अपने विषय की अत्यन्त उपयोगी पुस्तक है। सुख, सफलता, शान्ति तथा निरोगता के इच्छुक हर शिक्षित स्त्री-पुरुष तथा देश के धर्म-प्रचारकों को इसे अवश्य पढ़ना चाहिए। प्रकाशक इस पुस्तक को हिन्दी में लाने के लिये बधाई के पात्र हैं।"

—*'हिन्दुस्तान', दिल्ली*

हमारे कुछ और नये प्रकाशन

उठती दीवारें हिलती नींव :			धूम्रपान : समस्या और उपाय :		
स्कॉट निअरिंग : हेलन निअरिंग	सजिल्द	५.५०		डॉ० जान एच० मानस सजिल्द	३.००
महाकवि अकबर और उनका उर्दू काव्य :			धार्मिक चरित्र (१)	: डॉ० ज्वालाप्रसाद सिंहल	२.५०
उमरावसिंह कारुणिक	,,	३.५०	धार्मिक चरित्र (२)	: डॉ० ज्वालाप्रसाद सिंहल	२.५०
उसने कहा : खलील जिब्रान	,,	२.००	धार्मिक व्याख्या	: डॉ० ज्वालाप्रसाद सिंहल	२.००
आत्माएँ बोलती हैं : डी० ओ० राबर्ट्स	,,	३.७५	धार्मिक सिद्धान्त	: डॉ० ज्वालाप्रसाद सिंहल	१.५०
चिर यौवन : डॉ० जान एच० मानस		१.५०	धार्मिक तत्त्व	: डॉ० ज्वालाप्रसाद सिंहल	१.५०
जीवन-रहस्य : डॉ० जान एच० मानस		१.५०	ग्राम सुधार	: शंकर सहाय वर्मा	०.५०
नृत्य और स्वास्थ्य : डॉ० जान एच० मानस		१.५०	तारिका	: कृष्णचन्द्र मुद्गल	१.२५
हाज़िर जवाबी और विनोद : शिवनाथसिंह शाण्डिल्य		०.८५	सावन का गीत—कविताएँ	: शान्तिदेवी सिंहल	१.२५

अन्तर्राष्ट्रीय आधुनिक कविता सीरीज़ के अन्तर्गत प्रकाशित पुस्तकें :

झुकी पलकें गहरे शोले (ग्रीस साहित्य) • अणु की ओर (अमरीकी साहित्य)

गाते हुए जंगल (आस्ट्रेलियन साहित्य)—डिमाई साइज़ में, प्रत्येक का मूल्य २.००

नारी की कहानी (उपन्यास)—मोपासां • कास्टर ब्रिज का मेयर (उपन्यास)—थामस हार्डी (प्रेस में)

भारती एसोसिएशन पब्लिकेशन्स

हिन्दी में अन्तर्राष्ट्रीय भाषा साहित्य के प्रकाशक

गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आगामी मास के प्रकाशन

आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली

—प्रेमी का उपहार, रवीन्द्रनाथ टैगोर, अनु० दयाल कृष्ण शर्मा
—पढ़ाने की कला, गिलबर्ट हाईट
—समाज मनोविज्ञान, कुमारी पद्मा त्यागी
—अन्तर्ध्वनि, श्री नीरज, कविता-संग्रह
—संघर्ष, श्री नीरज
—दो गीत, श्री नीरज

ओरिएण्टल बुक डिपो, दिल्ली

—उमड़ती घटाएँ, पु० मु०, श्री गुरुदत्त
—हिन्दी गद्य का आविर्भाव और विकास, पु० मु०, प्रो० धर्मचन्द्र सन्त

ऐलोरा पब्लिशिंग हाउस, मथुरा

—अलसाई आँखें, श्री राजेश दीक्षित

दिल्ली पुस्तक सदन, नई दिल्ली

—कुंवरसिंह, श्री चतुर्भुज, नाटक

वंगीय हिन्दी परिषद्, कलकत्ता

—'नवीन' दर्शन, श्री केशवदेव उपाध्याय, आलोचनात्मक
—सुबह होती है शाम होती है, श्री गंगाधर शुक्ल, प्रहसन
—मेघदूत, सम्पा० श्री ललिता प्रसाद सुकुल
—भारतेन्दु के दो नाटक, सम्पा० श्री ललिता प्रसाद सुकुल

भारतीय प्रकाशन मण्डल, वाराणसी

—धरती का स्वर्ग, उपन्यास
—दोस्तों की शायरी, शायरी

लक्ष्मीनारायण अग्रवाल, आगरा

—अर्थशास्त्र की सरल रूपरेखा, श्री सत्यदेव
—गृह तथा स्वास्थ्य विज्ञान २ भाग, डॉ० डी० एन० पण्ड्या तथा श्री सुधीरा श्रीवास्तव
—स्कूल स्वास्थ्य विज्ञान, डॉ० सरयू प्रसाद चौबे
—पाश्चात्य शिक्षा का संक्षिप्त इतिहास, पु० मु०, डॉ० सरयू प्रसाद चौबे
—माध्यमिक बैंकिंग, प्रो० विजेन्द्र पाल सिंह

राजकमल प्रकाशन, दिल्ली

—मध्यकालीन हिन्दी गद्य, हरिमोहन श्रीवास्तव
—लोक-परलोक, श्री उदयशंकर भट्ट, उपन्यास
—आधी रात का सूरज, शमशेरसिंह नरूला, कहानी-संग्रह
—अकेले कंठ की पुकार, अजित कुमार, कविता

राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली

—परिवर्तन, शेक्सपियर, अनु० डॉ० रांगेय राघव
—निष्फल प्रेम, शेक्सपियर, अनु० डॉ० रांगेय राघव
—भूल भुलैयां, शेक्सपियर, अनु० डॉ० रांगेय राघव
—कोलम्बस, अनु० महावीर अधिकारी
—ज्वालामुखी और भूचाल की कहानी, फ्रेडरिक एच० एफ०, अनु० श्री रमेश वर्मा
—समुद्र की कहानी, फर्डिनेण्ड सी० लेन, अनु० श्री रमेश वर्मा
—रसायन की कहानी, इरा एम० फ्रीमैन, अनु० श्री रमेश वर्मा

(शेष पृष्ठ ४३४ पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जून मास के प्रकाशन

आलोचना-निबन्ध-व्याकरण-संस्कृति

कान्ति मोहन शर्मा, **कुरुक्षेत्र-मीमांसा**, २४८, डि०, साहित्य प्रकाशन मण्डल, नई दिल्ली ५.५०

भोलानाथ तिवारी डॉ०, **हिन्दी भाषा का सरल व्याकरण**, १९७, क्रा०, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, इलाहाबाद, बम्बई ३.५०

रणवीर सिंह, **काव्यादर्श**, १३८, क्रा०, ओरिएण्टल बुक डिपो, दिल्ली ४.००

राधाकुमुद मुकर्जी डॉ०, **प्राचीन भारतीय विचार और विभूतियाँ**, १७३, क्रा०, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, इलाहाबाद, बम्बई ३.५०

सोमनाथ गुप्त डॉ०, **पूर्व भारतेन्दु नाटक साहित्य**, १८६, डि०, हिन्दी भवन, जालन्धर ५.००

इतिहास

के० आर० कानूनगो, **दारा शिकोह**, २०३, डि०, गया प्रसाद एण्ड सन्स, आगरा ८.००

जी० पी० गूच अनु० पी० एस० मथुर, **हमारे युग का इतिहास**, डि०, गया प्रसाद एण्ड सन्स, दिल्ली ५.००

उपन्यास

इ० तुर्गनेव, अनु० प्रभुनन्दन गुप्त, **जिनैदा**, १३२, क्रा०, ऐलोरा पब्लिशिंग हाउस, मथुरा २.५०

गुरुदत्त, **मायाजाल**, पु० मु०, २१५, क्रा०, ओरिएण्टल बुक डिपो, दिल्ली ५.००

गोविन्द सिंह, **तिरस्कृत**, १६०, क्रा०, सुरेन्द्र एण्ड कं०, इलाहाबाद २.५०

जसवन्त सिंह कंवल, **पूर्णमासी**, २८०, क्रा० साहित्य संगम, लुधियाना ४.००

देवराज डॉ०, **रोड़े और पत्थर**, १२८, क्रा०, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, इलाहाबाद, बम्बई २.२५

देवेन्द्र सत्यार्थी, **दूध गाछ**, ४१६, क्रा०, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, इलाहाबाद, बम्बई ६.००

बंकिम, अनु० प्रेम अग्रवाल, **कृष्णकान्त का वसीयतनामा**, १४४, क्रा०, सुरेन्द्र एण्ड कं०, इलाहाबाद २.२५

शिवनारायण श्रीवास्तव, **धुआँ, आग और इन्सान**, १८४, ड० क्रा०, दिल्ली पुस्तक सदन, नई दिल्ली ३.००

शिरीष, **मुट्ठी भर फूल**, १२०, ड० क्रा०, दिल्ली पुस्तक सदन, नई दिल्ली २.२५

शौकत थानवी, अनु० प्रेम अग्रंवाल, **सपने**, ९६, सुरेन्द्र एण्ड कं०, इलाहाबाद १.५०

सुरेश, **रोटी, रोजी और प्यार**, १००, क्रा० सुरेन्द्र एण्ड कं०, इलाहाबाद १.५०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कविता

जगदीश शर्मा, गीत मैं कैसे लिखूँ, १२०, क्रा०, ऐलोरा पब्लिशिंग हाउस, मथुरा	२.५०
भारत भूषण, सागर के सीप, ११२, डि०, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली	२.५०
रामनरेश पाठक, क्वार की साँझ, ९०, क्रा०, श्रेष्ठ साहित्यागार, पटना	२.५०
शिवशंकर वशिष्ठ्य, गीली आँखें, गीले गीत, ९२, डि०, दिल्ली पुस्तक सदन, नई दिल्ली	३.००
संकलित, आषाढ़ के बादल, १००, क्रा०, नवीन लेखक संघ, आगरा	१.५०
सिद्धनाथ कुमार, टूटा हुआ आदमी, ८०, डि०, दिल्ली पुस्तक सदन, नई दिल्ली	३.००

कहानी

करतार सिंह दुग्गल, अमानिशा, पु० मु०, १६०, क्रा०, साहित्य संगम, लुधियाना	३.००
मण्टो, मेरा नाम राधा है, ३२५, ड० क्रा०, दिल्ली पुस्तक सदन, नई दिल्ली	५.५०
शौकत थानवी, शादी का इश्तहार, १२०, क्रा०, साहित्य संगम, लुधियाना	२.५०

नाटक

इन्द्रसेन भावुक, परिवार के शत्रु, ११६, ड० क्रा०, दिल्ली पुस्तक सदन, नई दिल्ली	२.२५
उदयशंकर भट्ट, पार्वती, ९८, क्रा०, हिन्दी भवन, जालन्धर	१.२५
हरिकृष्ण प्रेमी, विदा, १३०, हिन्दी भवन, जालन्धर	१.७५

बाल साहित्य—प्रौढ़ साहित्य

उर्मिला कुमारी, छल का फल, ४८, क्रा०, हिन्दी साहित्य संसार, दिल्ली	०.७५
जगपति चतुर्वेदी, भाप का इंजन कैसे बना, ६४, क्रा० हिन्दी भवन, जालन्धर	१.००
ज्ञानेन्द्र कुमार भटनागर, केरल की लोक कथाएँ, ६८, कापी साइज, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली	१.५०
जे० डी० वैश्य, साहसी बालक, ४०, कापी साइज, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली	१.००
पुरुषोत्तम दास गौड़ 'कोमल', धरती के लाल, ११२, क्रा० सुरेन्द्र एण्ड क०, इलाहाबाद	१.५०
राजबहादुर सिंह, पुराणों की कहानियाँ, १२४, कापी साइज, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली	२.००
सन्त गोकुलचन्द्र, राम जीवन की झांकियाँ, ५८, कापी साइज, ओरिएण्टल बुकडिपो, दिल्ली	१.५०
सुरेशचन्द्र गुप्त, कांच का महल, ३२, क्रा०, हिन्दी साहित्य संसार, दिल्ली	०.५०
सुरेशचन्द्र गुप्त, मनोरंजक कहानियां, ३२, क्रा०, हिन्दी साहित्य संसार, दिल्ली	०.५०

विविध

एम० एस० अग्रवाल डॉ०, हमारी आँखें, ३००, क्रा०, डॉ० अग्रवाल आई इंस्टीट्यूट, दिल्ली	५.००
एस० आर० शर्मा, आधुनिक भारत का निर्माण, ५०८, डि० लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, आगरा	८.५०
कृपाराम बम्बवाल, भारतीय प्रशासन, २२२, डि०, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली	५.००
योगेन्द्र विज्ञानी, महायोग विज्ञान, ६५०, क्रा०, विज्ञान मन्दिर, ऋषिकेष	६.००
रणधीर सिनहा की रचनाएँ, १२८, क्रा०, श्रेष्ठ साहित्यागार, पटना	२.५०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रामप्रसाद बिस्मिल, **बिस्मिल की आत्मकथा**, १६०, क्रा०, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली ३.

स्वामी विष्णु तीर्थ, **देवात्म शक्ति**, ३५०, क्रा०, विज्ञान मन्दिर, ऋषिकेश ४.

स्वामी विष्णु तीर्थ, **प्राण तत्व**, ८०, क्रा०, विज्ञान मन्दिर, ऋषिकेश १.

स्वामी विष्णु तीर्थ, **वैदिक योगपरिचय**, २५०, क्रा०, विज्ञान मन्दिर, ऋषिकेश ३.

स्वामी विष्णु तीर्थ, **शक्तिपात**, पु० मु०, ९६, क्रा०, विज्ञान मन्दिर, ऋषिकेश १.

हरिशंकर शर्मा, **पिंजरा पोल**, १३२, क्रा०, गयाप्रसाद एण्ड सन्स, आगरा २.

हरिशंकर शर्मा, **मन की मौज**, १३२, क्रा०, गयाप्रसाद एण्ड सन्स, आगरा २.

शिक्षा-वाणिज्य

बल्दुआ व कटियार, **उच्च लेखा कर्म**, २४८, रायल, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, आगरा ८.

मनमोहन सहगल, **शिक्षा दर्शन**, ३२०, ड० क्रा०, दिल्ली पुस्तक सदन, दिल्ली ५.

शर्मा, जैन एवं पुरोहित, **माध्यमिक बहीखाता एवं लेखा कर्म**, ४८८, ड० क्रा०, लक्ष्मीनारायण अग्रवाल, आगरा ८.

सरयू प्रसाद चौबे डॉ०, **प्रा० शिक्षा मनोविज्ञान**, २६०, क्रा०, लक्ष्मीनारायण अग्रवाल, आगरा, ३.

सरयू प्रसाद चौबे डॉ०, **शिक्षा के सिद्धान्त और आधुनिक विकास**, २६४, क्रा०, लक्ष्मीनारायण अग्रवाल, आगरा ३.

●

(पृष्ठ ४३१ का शेष)

—**उत्तरी और दक्षिणी ध्रुव**, अनु० श्री हंसराज रहबर

—**मौसम की कहानी**, अनु० श्री हरिश्चन्द्र विद्यालंकार

—**हवाई जहाज़ की कहानी**

—**सितारों की कहानी**

साहित्य सङ्गम, लुधियाना

—**पिशाच**, श्री सत्यपाल आनन्द, नाटक

सुरेन्द्र एण्ड कं०, इलाहाबाद

—**शमा बुझ गई**, श्री शंकर दयाल श्रीवास्तव

—**नई ज़िन्दगी नई सुबह**, श्री सुरेश

—**इन्दिरा**, बंकिम, अनु०, श्री प्रेम अग्रवाल

—**सीताराम**, बंकिम, अनु०, श्री प्रेम अग्रवाल

(पृष्ठ ४२९ का शेष)

भेद-भाव दिखाई देते हैं वे वास्तव में मौलिक नहीं है इस अनेकता में एकता की भावना किस प्रकार छिपी है इसे सुगम-सरल भाषा-शैली में रोचक ढंग से स्पष्ट क का सफल प्रयास इस पुस्तक में किया गया है। सामा पाठकों के लिए पुस्तक उपयोगी सिद्ध होगी, सन्देह नही मूल्य इसका भी ३) रुपये ही है।

* * *

गद्यकाव्य तथा बोध-कथा

उजली आग : दिनकरजी की गद्य-कविताओं, बोध-कथा तथा लघु-निबन्धों का नवप्रकाशित संग्रह है। इसमें उन विभिन्न प्रकार की कुल मिलाकर छोटी-बड़ी ४६ रचन संग्रहीत हैं। लेखक के गाम्भीर्य, चिन्तन, अनुभूति तत्त्वदर्शन-सामर्थ्य का आभास इन रचनाओं में मिलता है प्रायः सभी रचनाएँ रोचक, ज्ञानवर्द्धक और शिक्षाप्रद है इसका प्रकाशन हुआ है **उदयाचल, पटना–४** से और मू है ३)।

* * *

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशन-समाचार
के
विशेषांक की घोषणा

"प्रकाशन-समाचार" का अगस्त १९५८ का अंक विशेषांक होगा जिसमें १९४७ से लेकर मार्च '५८ के अन्त तक के हिन्दी के उन सब प्रकाशनों का सविवरण उल्लेख रहेगा जिन्हें भारत सरकार, राज्यों की सरकारों अथवा सम्मानित साहित्य-संस्थाओं ने पुरस्कृत किया है।

पुस्तकालयों की उपयोगिता की दृष्टि से अन्य विवरण के साथ प्रत्येक पुस्तक का ड्यूयी के सिद्धान्तों के अनुसार क्लासिफिकेशन नम्बर भी दिये जाने की व्यवस्था की जा रही है।

प्रकाशकों से प्रार्थना

प्रकाशकों से इस विज्ञप्ति के माध्यम से आग्रह है कि १९४७ से अब तक उनकी जिन किन्हीं भी पुस्तकों को पुरस्कृत किया गया है, उसकी सूचना लेखक के नाम, पुस्तक के आकार, पृष्ठ-संख्या, विषय, पुरस्कार के वर्ष तथा पुरस्कार देने वाली संस्था या सरकार के नाम हमें अविलम्ब इलाहाबाद के पते पर भेजने की कृपा करें।

विज्ञापकों के लिए सुअवसर

"प्रकाशन-समाचार" के अब तक पाँच विशेषांक प्रकाशित हो चुके हैं और उन्हें उपयोगिता और महत्त्व की दृष्टि से खूब सराहा गया है। प्रकाशक-बन्धुओं से प्रार्थना है कि इस विशेषांक में अपने विज्ञापनों के लिए स्थान शीघ्र ही सुरक्षित करवा लें।

सम्पादन-कार्यालय :

प्रकाशन-समाचार

राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड,
१५-ए महात्मा गांधी मार्ग,
इलाहाबाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Regd. No. D.—594

भारत सरकार द्वारा

शिक्षण संस्थाओं, ग्राम पंचायतों, स्कूल लायब्रेरियों, कम्यूनिटी प्रोजेक्टों, टैकनिकल इन्स्टीट्यूटों, सामाजिक व शासकीय संस्थाओं द्वारा अपनाया जाने वाला उच्चतम साहित्य यहाँ से लीजिए।

देहली में पुस्तकों की बड़ी दुकान

हमारी प्रकाशित टैकनिकल, इण्डस्ट्रियल तथा अन्य सभी प्रकार के साहित्य की पुस्तकों के अतिरिक्त

भारत के प्रायः सभी प्रमुख हिन्दी प्रकाशकों द्वारा प्रकाशित उत्कृष्ट तथा उपयोगी समीक्षात्मक साहित्य, उपन्यास, कहानी, नाटक, एकांकी, जीवन-चरित्र, आत्म-कथाएँ, ग्रामोपयोगी, महिलोपयोगी, नवयुवकोपयोगी, समाज-शिक्षण, प्रौढ़-साहित्य, मनोविज्ञान, शिक्षा-विज्ञान, इतिहास, राजनीतिक विज्ञान, वनस्पति-विज्ञान, जन्तु-विज्ञान, भौतिक-विज्ञान, रसायन-विज्ञान, नीति-विज्ञान, संगीत-विज्ञान, तर्क-शास्त्र, समाज-शास्त्र, धार्मिक तथा अध्यात्म साहित्य और ज्योतिष सम्बन्धी, तिजारती, तिब्बी, डाक्टरी, आयुर्वेदिक, होम्योपैथिक, जन्त्र-मन्त्र-तन्त्र, पूजापाठ, बालोपयोगी और स्त्रियोपयोगी तथा साथ-साथ हर प्रकार के उपन्यास, कहानियाँ आदि आकर्षक पुस्तकें आपको हमारे यहाँ सुविधा से मिलेंगी। हिन्दी में हर एक विषय की पुस्तक के लिए हमें लिखें।

हमारे प्रकाशन के बिना आपकी लायब्रेरी निश्चित रूप से अधूरी और आपका साहित्य विशेष रूप से अधूरा है और विशेषकर टैकनिकल, इण्डस्ट्रियल तथा एग्रीकलचरल साहित्य, जिसकी आज के समय में सबसे अधिक आवश्यकता है, विशेष रूप से प्रकाशित किया गया है। आप अपने संग्रह को पूर्ण और साहित्य-रुचि को पूर्ण करने के लिए अपने शहर के मुख्य पुस्तक-विक्रेता से हमारे निश्चित मूल्य पर हमारे प्रकाशन प्राप्त करें, इसके अतिरिक्त हमें सीधा भी लिख सकते हैं—

हिन्दी की पुस्तकों का बृहद् सूचीपत्र केवल पच्चीस नये पैसे के टिकट डाक खर्च के लिए भेजकर मुफ्त मँगाइये

आवश्यक सूचना—हिन्दी के साथ-साथ हमारे यहाँ उर्दू तथा गुरुमुखी की भी हर प्रकार की पुस्तकें हर समय तैयार मिलती हैं।

लायब्रेरियों तथा पुस्तक-विक्रेताओं को पर्याप्त कमीशन

गवर्नमेण्ट आर्डर सप्लायर

देहाती पुस्तक भण्डार, चावड़ी बाजार, दिल्ली

PHONE : 20030

लोकल ग्राहकों को फोन द्वारा माल सप्लाई करने का पूरा प्रबन्ध है।

श्री देवराज, मैनेजिंग डाइरेक्टर, राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, दिल्ली के लिए श्री गोपीनाथ सेठ द्वारा नवीन प्रेस, दिल्ली में मुद्रित।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वर्ष ५ अगस्त, १९५८ अंक १२

प्रकाशन समाचार

वार्षिक रु० ३.०० इस अंक का १)

पुरस्कृत पुस्तक सूची विशेषांक

सत्तर श्रेष्ठ कहानियाँ

उपेन्द्र नाथ 'अश्क'

*'अश्क' प्रेमचन्द के ज़माने से कहानी लिख हैं, लेकिन जहाँ अन्य कथाकार वहीं-के-वहीं रह ग 'अश्क' नयी प्रेरणाओं और विचार-धाराओं, नवी दृष्टिकोण और शिल्प-विधान अपनाते हुए निरन्त प्रगति करते रहे।

*प्रेमचन्द के बाद की लगभग चौथाई सदी हिन्दी कहानी ने जो प्रगति की है, 'अश्क' कहानियाँ उसका प्रतीक हैं और प्रस्तुत संग्रह पाठकों को उस विकास का बिम्ब देखने को मिलेग

*संग्रह में भूमिका-स्वरूप लेखक का एक अ मनोरंजक संस्मरण भी संकलित है, जिसमें लेखक अपने बत्तीस वर्षों के कहानी-लेखन की कहा कही है।

*आज की कहानी पर 'अश्क' की गहरी छ है। संग्रह में 'अश्क' की चुनी हुई सत्तर कहानि संकलित हैं, जिन्हें लेखक ने स्वयं अपनी डेढ़-दो कहानियों में से चुना है।

*चार रंग का मुख पृष्ठ, डबल डिमाई एंटि काग़ज़, मोनो की छपाई, रेक्सिन की जिल्द मूल्य १५)

नीलाभ प्रकाशन

५ खसरो बाग रोड, इलाहाबाद—१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सप्त सिन्धु प्रकाशन
का आयोजन

आपकी जेब की पहुँच में ही—

हिन्दी में प्रथम बार देशीय तथा विदेशीय भाषाओं का सुन्दर, सरस एवं सर्वोत्कृष्ट साहित्य—

सस्ते **जेबी सीरीज़** **में**

साहित्य के बिना हमारा जीवन अधूरा है। किन्तु हमारे देश में सस्ते मूल्य पर अच्छे साहित्य की नितान्त आवश्यकता होते हुए भी अभी तक हिन्दी में इसका पूर्ण रूप से अभाव रहा है। 'सप्त सिन्धु' ने इस अभाव को पूर्ण कर हिन्दी को नया जीवन दिया है। अब प्रत्येक हिन्दी पाठक अपनी जेब की सामर्थ्य में ही (बहुत सस्ते दामों पर) श्रेष्ठ-से-श्रेष्ठ **'सप्त सिन्धु'** के **'जेबी सीरीज़'** की पुस्तकें खरीदकर पढ़ सकता है, और इस प्रकार नगण्य मूल्य में ही साहित्य निकुञ्ज की अनमोल कलियाँ आपके विचारों का शृंगार बन सकती हैं।

इस सीरीज़ की प्रत्येक पुस्तक छपाई तथा गेट-अप में अंग्रेजी पाकेट बुक्स की तरह सुन्दर तथा जिल्द में उनसे कहीं अधिक मजबूत है।

इस सीरीज़ में अनेक भाषाओं से चुने हुए 'दस' उपन्यास अब प्रेस में हैं? प्रत्येक का मूल्य केवल रु० १·७५ मात्र। विशेष जानकारी के लिए कृपया तुरन्त लिखें।

भारत-भर के लिए एकमात्र वितरक

भारती एसोसिएशन पब्लिकेशन्स

हिन्दी में अन्तर्राष्ट्रीय भाषा साहित्य के प्रकाशक

गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश

भारती एसोसिएशन पब्लिकेशन्स का नवीन प्रकाशित साहित्य

शान्तिनिकेतन	: रवीन्द्रनाथ ठाकुर सजिल्द	६·००	अणु और आत्मा	: डॉ० जे० ट्रस्ट सजिल्द	४·००
उठती दीवारें हिलती नींव	: डॉ० स्कॉट निअरिंग ,,	५.५०	धूम्रपान : समस्या और उपाय	: डॉ० मानस ,,	३.००
महाकवि अकबर और उनका उर्दू काव्य :	उमरावसिंह कारुणिक ,,	३.५०	धार्मिक चरित्र (१)	: डॉ० ज्वालाप्रसाद सिंहल	२.५०
			धार्मिक चरित्र (२)	: डॉ० ज्वालाप्रसाद सिंहल	२.५०
उसने कहा	: खलील जिब्रान ,,	२.००	धार्मिक व्याख्या	: डॉ० ज्वालाप्रसाद सिंहल	२.००
आत्माएँ बोलती हैं	: डी० ओ० राबर्ट्स ,,	३.७५	धार्मिक सिद्धान्त	: डॉ० ज्वालाप्रसाद सिंहल	१·५०
चिर यौवन	: डॉ० जान एच० मानस	१.५०	धार्मिक तत्त्व	: डॉ० ज्वालाप्रसाद सिंहल	१.५०
जीवन-रहस्य	: डॉ० जान एच० मानस	१.५०	ग्राम सुधार	: शंकरसहाय वर्मा	०.५०
नृत्य और स्वास्थ्य	: डॉ० जान एच० मानस	१.५०	तारिका (कहानी-संग्रह)	: कृष्णचन्द्र मुद्गल	१.२५
हाज़िरजवाबी और विनोद	: शिवनाथसिंह शाण्डिल्य	०.८५	सावन का गीत—कविताएँ	: शान्तिदेवी सिंहल	१.२५

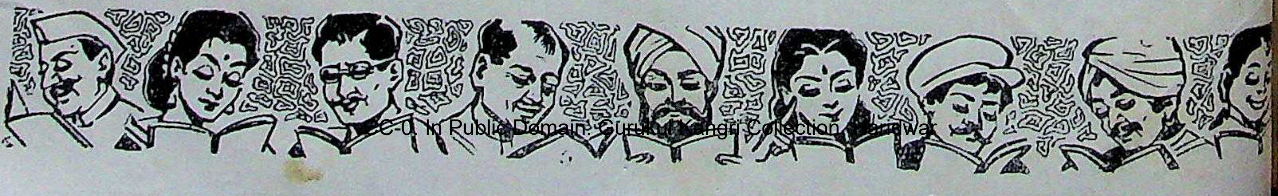

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशन समाचार

: वर्ष ५ :
: अंक १२ :

सम्पादक : ओं प्रकाश, डायरेक्टर इंचार्ज, राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड

इस विशेषांक के साथ **प्रकाशन समाचार** के जीवन के पाँच वर्ष पूरे हो रहे हैं। सितम्बर १९५३ में पहले अंक के अग्रलेख में इस पत्र के उद्देश्यों की घोषणा की गई थी : प्रकाशकीय समस्याओं पर सामूहिक रूप से विचार करने के लिए एक मंच उपस्थित करना तथा प्रकाशकों, पुस्तक-विक्रेताओं तथा पुस्तकालयों के परस्पर सम्बन्धों को दृढ़तर बनाना। इन्हीं उद्देश्यों की पूर्ति के प्रयासों में अब तक हम चार विशेषांक प्रकाशित कर चुके हैं : (१) **साहित्य सूची विशेषांक**, सितम्बर १९५४, जिसमें हिन्दी के उपन्यास, कहानी और नाटक आदि की पुस्तकों को छोड़कर अन्य प्रायः सब विषयों की पुस्तकों की सविवरण सूची एकत्र की गई थी, (२) **उपन्यास-कहानी-नाटक विशेषांक**, फरवरी १९५५ (३) **उत्कृष्टतम पुस्तक सूची परिशिष्टांक**, जनवरी १९५६, जिसमें एक विशेष सम्पादन-समिति द्वारा हिन्दी की १२२४ श्रेष्ठतम पुस्तकों का व्योरा दिया गया था, तथा (४) **बाल-किशोर और प्रौढ़ साहित्य विशेषांक**, सितम्बर १९५६। इन विशेषांकों की सामग्री का चयन प्रामाणिक और वैज्ञानिक था और इनकी उपयोगिता आज भी किसी कद्र कम नहीं हुई।

प्रस्तुत अंक **पुरस्कृत पुस्तक सूची विशेषांक** है। इसमें १९४७ से १९५८ तक की हिन्दी की पुरस्कृत पुस्तकों का विषयानुसार वर्गीकृत संक्षिप्त परिचय दिया गया है। प्रत्येक पुस्तक का विवरण प्रस्तुत करते समय सूचीकरण की वैज्ञानिक विधि के अनुसार विषय, मूल लेखक, सम्पादक, अनुवादक, पुस्तक का नाम, खण्ड, भाग, प्रकाशन स्थान, प्रकाशक, प्रकाशन वर्ष, पृष्ठ संख्या, चित्र, आकार, मूल्य, पुरस्कर्ता, वर्ष जिसमें पुरस्कार दिया गया, एवं प्रतिपाद्य विषय का संक्षिप्त परिचय, इन १६ अंशों का समावेश एवं निर्देश किया गया है।

केन्द्रीय तथा राज्य सरकारों के शिक्षा मंत्रालयों एवं हिन्दी की कतिपय मान्य संस्थाओं से प्राप्त सूचनाओं के अनुसार १९४७ से १९५८ तक की हिन्दी की १०६१ पुस्तकों के लेखक पुरस्कार प्राप्त कर चुके हैं। विभिन्न सरकारों व संस्थाओं द्वारा स्वतन्त्रता-प्राप्ति के बाद के पहले दशक में निम्नलिखित संख्याओं में पुरस्कार वितरित किये गए : केन्द्रीय सरकार—८१, साहित्य अकादेमी—३, उत्तर प्रदेश सरकार—७५२, विन्ध्य प्रदेश सरकार—१२६, राजस्थान सरकार—८, महाकोशल शासन साहित्य परिषद्—१८, नागरी प्रचारिणी सभा—२२, हिन्दी साहित्य सम्मेलन—१६, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्—२५, हरजीमल डालमिया पुरस्कार—१०।

पुरस्कार प्रकाशित पुस्तकों पर ही नहीं, पाण्डुलिपियों पर भी दिये जाते रहे हैं, और कई पुस्तकें ऐसी हैं जिन पर एकाधिक स्रोत से पुरस्कार दिये गए हैं। इस प्रकार छँट-कर इस विशेषांक में सम्मिलित पुस्तकों की संख्या ९८० रह गई है। ५२ पुस्तकों के विषय में हम केवल उनका नाम और पुरस्कृत संस्था व सरकार का नाम ही जान सके; इन पुस्तकों की सूची विशेषांक के परिशिष्ट में दी गई है। ८० ऐसी अन्य पुस्तकें थीं जो हमें विवरण के उल्लेख के लिए प्राप्त नहीं हो सकीं; उनका वर्गीकरण तो कर दिया गया है, लेकिन उनका परिचय नहीं जा सका। बाल और प्रौढ़ोपयोगी पुस्तकों का उल्लेख भी सम्बन्धित विषय के वर्गीकृत शीर्ष के अन्तर्गत दिया गया है, अलग से नहीं।

इन ९८० पुरस्कृत पुस्तकों का विषयानुसार विश्लेषण रोचक होगा। उपन्यास, कहानी, नाटक तथा निबन्ध,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आलोचना आदि की ५६०, समाजशास्त्र और इतिहास के विभिन्न अंगों से सम्बन्धित विषयों की ३२४ तथा विज्ञान आदि विषयों की ४४ पुस्तकें पुरस्कृत हुई हैं। कहा जा सकता है कि पुरस्कारदातृ सरकारें और संस्थाएँ विज्ञान आदि विषयों की पुस्तकों के लेखकों को पुरस्कार आदि देकर प्रोत्साहित नहीं करना चाहतीं, अथवा विज्ञान सम्बन्धी साहित्य का विशेष समर्थन अभी राजकीय अथवा हिन्दी की प्रमुख संस्थाओं की नीति का भाग नहीं बना है; या यह भी कि विज्ञान-साहित्य के उल्लेखनीय लेखक अभी हिन्दी में नहीं हैं। यह भी हो सकता है कि पुरस्कार देने का आयोजन मुख्यतया ललित और कुछ हद तक समाजशास्त्र के विभिन्न अंगों के साहित्य के लिए ही किया गया है। यहाँ किसी सरकारी अथवा संस्थागत नीति की टिप्पणी करना अभीष्ट नहीं है, हिन्दी-साहित्य के अत्यन्त महत्त्वपूर्ण—रचनात्मक, वैज्ञानिक—साहित्य के अभाव को स्पष्ट करके दिखाना ही है। न हमारा कर्तव्य या प्रयोजन साहित्य की उन अधिकांश पुरस्कृत पुस्तकों की ओर संकेत करते हुए यह बताना ही है कि हिन्दी में बहुत बड़ी संख्या उन पुस्तकों की है जिनके लेखक असंदिग्धतापूर्वक पुरस्कार पाने के अधिकारी थे, लेकिन जो पुरस्कार-प्रतियोगिताओं में पड़ना सम्मान की बात नहीं समझते और पुरस्कार देने की वर्तमान नीति और कार्यकलाप को भी संशय की दृष्टि से देखते हैं। बहुत लोगों को इन पुरस्कारों का प्रयोजन स्पष्ट नहीं है, और शायद स्वयं पुरस्कार देने वालों को भी। जिस लेखक को पुरस्कार दिया जाता है, उसकी कृति को अवश्य ही उत्तम समझा जाता होगा। लेकिन केन्द्रीय सरकार के शिक्षा-मन्त्रालय के अतिरिक्त अन्य सब सरकारें अपने ही शिक्षा विभागों द्वारा पुरस्कृत और श्रेष्ठ घोषित पुस्तकों को उपेक्षा की दृष्टि से देखती हैं; सरकारी अनुदान प्राप्त करने वाले पुस्तकालयों द्वारा इनकी खरीद आवश्यक नहीं समझी जाती। न किसी अन्य सरकार अथवा केन्द्र द्वारा पुरस्कृत पुस्तकों के प्रति किसी अन्य क्षेत्र में रुचि ही दिखाई पड़ती है। पुरस्कृत पुस्तकें श्रेष्ठ साहित्य की हैं—इनका अधिकाधिक प्रचार होना चाहिए—यह तर्क कहीं कार्यान्वित होता नहीं दीखता। स्वयं सरकार की ऐसी उपेक्षा से पाठकवर्ग में भी पुरस्कृत पुस्तकों के प्रति कोई खास लगाव पैदा नहीं हो सका।

इस विशेषांक को प्रकाशित करने का हमारा एक उद्देश्य इन श्रेष्ठ मानी गई पुस्तकों की ओर विशेष रूप से पुस्तकालयों और पाठक-वर्ग का ध्यान आकर्षित करना है।

प्रस्तुत विशेषांक के पूर्व विज्ञापनों में हम इस ओर संकेत कर रहे थे कि इसमें संकलित प्रत्येक पुस्तक का ड्यूयी दशमलव पद्धति के अनुसार विषय-वर्गांक भी दिया जायगा, किन्तु कुछ कारणों से वैसा नहीं किया जा सका। वर्गीकरण की उक्त पद्धति बहुत विस्तृत है और विशेषांक की पुस्तकें थोड़ी हैं, एवं कुछ प्रमुख विषयों पर ही लिखी हुई हैं। ऐसी स्थिति में दशमलव वर्गीकरण पद्धति के अनुसार पच्चीस प्रतिशत मुख्य शीर्षकों के अतिरिक्त अन्य सभी शीर्षक कोरे छूट जाते। फिर यदि सूक्ष्म वर्गीकरण कर भी दिया जाता तो अधिकांश शीर्षकों के अन्तर्गत तो एक-एक पुस्तक ही आ पाती और शीर्षकों एवं उपशीर्षकों की अधिकता से विशेषांक का आकार व्यर्थ ही बढ़ जाता। फलतः यह विशेषांक व्यावहारिक कम रह जाता और टैकनिकल अधिक हो जाता।

अंक में सम्मिलित पुस्तकों के उसी संस्करण का उल्लेख है जो अब प्राप्य हैं। जिस संस्करण पर पुरस्कार दिया गया था, उसका निश्चयपूर्वक जानना कठिन था।

पुरस्कृत पुस्तक सूची विशेषांक के लिए सम्बन्धित पुस्तकों का विवरण स्थानीय पुस्तक-विक्रेताओं के स्टॉक के अतिरिक्त हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग के हिन्दी संग्रहालय, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी के पुस्तकालय एवं लखनऊ की अमीनुद्दौला पब्लिक लाइब्रेरी से प्राप्त किया गया है। हम इनसे प्राप्त सहयोग के प्रति आभार प्रकट करते हैं।

इस अंक के सम्पादक—श्री ओं प्रकाश, श्री द्वारकाप्रसाद शास्त्री

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुरस्कृत पुस्तक सूची विशेषांक में प्रयुक्त

सांकेतिक शब्दावली

उ० प्र० = उत्तर प्रदेश सरकार, लखनऊ।

के० = केन्द्रीय सरकार, नई दिल्ली।

के० स० प्र० वि० पु० प्रति० = केन्द्रीय सरकार प्रथम विशिष्ट पुस्तक प्रतियोगिता।

के० स० ज० सा० प्रति० = केन्द्रीय सरकार जन साहित्य प्रतियोगिता।

के० स० बा० सा० प्रति० = केन्द्रीय सरकार बाल साहित्य प्रतियोगिता।

ड० क्रा० = डबल क्राउन।

डि० = डिमाई।

ना० प्र० स० = नागरी प्रचारिणी सभा, काशी।

फु० स्के० = फुल स्केप।

बि० रा० प० = बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना।

म० = मध्य भारत सरकार (अब मध्य प्रदेश)।

महा० शा० सा० प० = महाकोशल शासन साहित्य परिषद्, भोपाल।

रॉ० = रॉयल।

रा० = राजस्थान सरकार, जयपुर।

रा० प्र० प० = राष्ट्रभाषा प्रचार परिषद्, वर्धा।

वि० प्र० = विन्ध्य प्रदेश सरकार (अब मध्य प्रदेश)।

सा० अ० = साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली।

ह० डा० = हरजीमल डालमिया पुरस्कार, दिल्ली।

हि० सा० स० = हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विज्ञापन-सूची

आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली ४३४
आदर्श पुस्तक भण्डार, कलकत्ता ४८९
आराधना प्रकाशन, वाराणसी ५०६, ५२६
ओरिएण्टल बुक डिपो, दिल्ली ५०३
कल्याणदास एण्ड ब्रदर्स, वाराणसी ५०१
किताबिस्तान, इलाहाबाद ५२४
गुप्ता स्टोर्स, जमशेदपुर ४९५
छात्र हितकारी पुस्तकालय, इलाहाबाद ४८८
देशमुख आणि कम्पनी, पूना ४४९
देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली कवर
न्यू लिटरेचर, इलाहाबाद ४३३
नारायणदत्त सहगल एण्ड सन्स, दिल्ली ५१८
नीलाभ प्रकाशन, इलाहाबाद कवर
नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, दिल्ली ४४५, ४७०, ५२१
बम्बई प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, बम्बई ४३७
भारती एसोसिएशन पब्लिकेशन्स, गाजियाबाद कवर
भारती प्रेस प्रकाशन, इलाहाबाद ४९२
भारतीय ज्ञानपीठ, वाराणसी ४९१
भारती साहित्य सदन, नई दिल्ली ४६१
मञ्जीत पब्लिशर्स, जालन्धर ४५२
मोहिनी प्रकाशन, देहरादून ४५६
राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, इलाहाबाद, बम्बई, पटना, मद्रास ४४१, ४६२, ४७५–८०, ५०४, कवर
राजकिशोर पब्लिकेशन्स, इलाहाबाद ५१४
राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली ४५९, ४८५, ५१७, ५२०
विजय प्रकाशन, भोपाल ४४६
विश्व विद्यालय प्रकाशन, गोरखपुर ४३९, ४६५, ४९४, ५२७
वोरा एण्ड कम्पनी, बम्बई ५१५, ५३१
श्रेष्ठ साहित्यागार, पटना ५२६
संगीत कार्यालय, हाथरस ४५०
सरस्वती पुस्तक सदन, आगरा ५०७
सुरुचि प्रकाशन, हैदराबाद ४७१
हिन्दी भवन, जालन्धर, इलाहाबाद ४५७, ५१०
हिन्दी साहित्य भण्डार, लखनऊ ४३८, ४५३, ४८४, ५२३
हिन्दी साहित्य संसार, दिल्ली ४३६
हिन्दुस्तानी एकेडेमी, इलाहाबाद ४४७, ४६६–६७
ज्ञानमण्डल लिमिटेड, वाराणसी ४४२, ५०९
ज्ञान मन्दिर प्रकाशन, लश्कर (ग्वालियर) ५३३

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषय सूची

सामान्य विषय

पुस्तकालय-विज्ञान - - ४३५
समाचार-पत्र, सम्पादन कला - - ४३५

दर्शन

दर्शन, सामान्य - - ४३५
मनोविज्ञान का क्षेत्र, स्वप्न - - ४३५
सामान्य मनोविज्ञान - - ४३५
तर्कशास्त्र - - ४३८
नीतिशास्त्र, आचार - - ४३८
भारतीय दर्शन - - ४३८
अन्य दर्शन - - ४३९

धर्म, सामान्य, समाज-शास्त्र

धर्म, सामान्य - - ४३९
समाजशास्त्र, सामान्य - - ४४३
संख्यातत्त्व - - ४४४
राजनीति - - ४४४
अर्थशास्त्र - - ४४६
दण्डविधि - - ४४८
समाज-कल्याण - - ४४८
शिक्षा - - ४५१
वाणिज्य, व्यापार - - ४५१
प्रथाएँ, परम्पराएँ - - ४५१

भाषा-शास्त्र

भाषा-शास्त्र, सामान्य - - ४५२

शुद्ध विज्ञान

शुद्ध विज्ञान, सामान्य - - ४५४
गणित - - ४५४
ज्योतिष - - ४५५
पदार्थ विज्ञान - - ४५५
रसायन-शास्त्र - - ४५५
भू-विज्ञान - - ४५५
पुरातन जीव-विज्ञान - - ४५५
वनस्पति विज्ञान - - ४५५
जन्तु विज्ञान - - ४५५

व्यावहारिक विज्ञान

चिकित्सा - - ४५८
इंजीनियरिंग - - ४६४
कृषि (गोपालन उद्यान विज्ञान आदि सहित) ४६४
व्यापार एवं व्यापार-प्रणाली - - ४६५
वास्तुशास्त्र - - ४६५

कलाएँ एवं मनोरंजन

कला, सामान्य - - ४६५
भास्कर्य (स्कलप्चर) - - ४६८
अंकन, विभूषण (ड्राइंग, डेकोरेशन, डिज़ाइन) ४६८
चित्रकला - - ४६८
संगीत - - ४६८
मनोरंजन - - ४६८

साहित्य

साहित्य, सामान्य - - ४६९
हिन्दी-साहित्य, सामान्य - - ४६९
साहित्यिक कोष - - ४७०
हिन्दी काव्यशास्त्र - - ४७१
हिन्दी साहित्य, इतिहास - - ४७३

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आलोचना : सिद्धान्त - -	४७४
हिन्दी काव्य - -	४७४
काव्य, अनूदित - -	४८७
हिन्दी नाटक - -	४८७
हिन्दी नाटक, एकांकी - -	४९०
हिन्दी कथा-साहित्य, उपन्यास - -	४९३
अनूदित उपन्यास - -	४९९
हिन्दी कथा-साहित्य, कहानियाँ - -	५००
कहानी अनूदित, - -	५०५
हिन्दी आलोचनात्मक निबन्ध, कवि और काव्य	५०५
आलोचना, मत साहित्य - -	५११
आलोचना, काव्य सामान्य - -	५११
आलोचना, नाटक - -	५१३
आलोचना, कथा-साहित्य - -	५१४
हिन्दी निबन्ध, सामान्य - -	५१५
पत्र-साहित्य - -	५१६
हास्य-व्यंग्य साहित्य - -	५१९
लोक-साहित्य - -	५२०
लोक-गीत - -	५२०
लोक-कथाएँ - -	५२१
उर्दू-साहित्य - -	५२२
उर्दू साहित्य-काव्य - -	५२२
संस्कृत, पालि एवं प्राकृत साहित्य -	५२५
अन्य साहित्य - -	५२५

इतिहास

इतिहास, सामान्य - -	५२५
भूगोल - -	५२६
यात्रा और भ्रमण - -	५२७
जीवनी, आत्मकथा - -	५२८
जीवनी - -	५२८
भेंट, साक्षात्कार - -	५३०
संस्मरण - -	५३०
प्राचीन इतिहास एवं संस्कृति - -	५३०
इतिहास, यूरोप - -	५३३
इतिहास, एशिया - -	५३३
इतिहास, भारत - -	५३३
इतिहास, नेपाल - -	५३५
बृहत्तर भारत - -	५३५

परिशिष्ट ५३५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१९५५-५६ में

उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा पुरस्कृत

श्री विद्यानिवास मिश्र का बहुप्रशंसित निबन्ध-संग्रह

कदम की फूली डाल

मूल्य : ३'०० रुपये

और हमारे ये प्रकाशन जिन्हें पाठकों ने हाथों-हाथ
खरीदकर अपनी गुणग्राहकता से पुरस्कृत किया

स्काउटिंग

कोमल पद शिक्षा (गाइडस के लिए)	१)
गुरुपद शिक्षण	२)
कोमल पद शिक्षण	१॥)
ध्रुव पद शिक्षण	१)
सिंह शावक (कब) नायक	१)
सिंह शावक (कब)	१)
खेल	२॥।)
स्काउट ड्रिल	१॥)
खेल पचासा	१)
आग बुझाने का हुनर	१।)
ध्वज शिष्टाचार	॥)
कैम्प-फायर	१)
रसोइया	।=)
राष्ट्रीय झण्डा	॥)
हमारे बारह गीत और सोलह सिंहनाद	=)

बाल साहित्य

सम्पादक जी	।=)
काठ का घोड़ा	।=)
ननिहाल को	।=)
बहादुर राजकुमार	।=)
मेरी चिट्ठी	।=)
भयानक सपना	।=)
मुन्नू की चिट्ठी	।=)
हीरे का पेड़	।=)
सेवाग्राम चित्रावली	१।)
अमर बापू	१।)

महिलोपयोगी साहित्य

अच्छी बुनाई	३)
घर की लक्ष्मी	२॥।)
नई नारी	१॥)

कुछ साहित्यिक प्रकाशन

आशु कवि मोहन	: पं० जगमोहन नाथ अवस्थी	५॥)
प्रतिध्वनि	: पं० जगमोहन नाथ अवस्थी	४॥)
अन्धकार का अन्त	: हरीशंकर मेहरोत्रा	१॥।)
प्लाट का मोर्चा	: शमशेर बहादुर सिंह	१॥)
नीराजना	: नर्मदा प्रसाद 'खरे'	१॥।)
धूल के बादल	: ब्रह्मदत्त सिंह	२)
संघमित्रा और सिंहल विजय	: रामवृक्ष बेनीपुरी	१॥)
बिखरे मोती (भाग १-२)	: राजकुमार जौहरी	२)

विविध

ग्राम विज्ञान	: रामसुमेर त्रिपाठी	॥=)
ग्राम विज्ञान (भाग १-२)	: रामसुमेर त्रिपाठी	१।)
लोक गीत संग्रह	: वाचस्पति गैरोला	।)

उत्तर प्रदेश माध्यमिक विद्यालयों के पुस्तकालयों तथा ग्राम-पंचायत पुस्तकालयों के लिए विभागीय अधिकारियों द्वारा स्वीकृत। हमारे इन प्रकाशनों को राजस्थान के उप-शिक्षा संचालक महोदय ने राजस्थान की समस्त शिक्षण संस्थाओं में खरीदे जाने के उपयुक्त बताते हुए इनकी भूरि-भूरि प्रशंसा की है।

विशेष जानकारी के लिए हमारा बृहत् 'सूचीपत्र' मँगावें

न्यू लिटरेचर

२५७ चक, जीरो रोड, इलाहाबाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केन्द्रीय सरकार, विभिन्न राज्यों तथा संस्थाओं द्वारा

हमारे पुरस्कृत प्रकाशन

उपन्यास		
इन्सान	यज्ञदत्त शर्मा	४.५०
जल-समाधि	गोविन्दवल्लभ पंत	४.००
पर्णा	,,	४.००
डूबते मस्तूल	नरेश मेहता	४.५०
युगपुरुष राम (सचित्र)	अक्षयकुमार जैन	५.००
नाटक		
विषपान	हरिकृष्ण 'प्रेमी'	२.००
स्वप्न-भंग	,,	२.००
उद्धार	,,	२.००
शपथ	,,	२.५०
समर्पण	जगन्नाथप्रसाद 'मिलिन्द'	२.००
यशस्वी भोज	देवराज 'दिनेश'	२.००
वितस्ता की लहरें	लक्ष्मीनारायण मिश्र	२.००
नये हाथ	विनोद रस्तोगी	२.००
अपूर्व बंगाल	भा० वि० वरेरकर	१.५०
भूमिकन्या सीता	,,	१.५०
कला के लिए	,,	१.५०
कोरी करामात	,,	२.००
एकांकी		
आनन्द का राजपथ	सीताचरण दीक्षित	२.२५
भगवान् मनु तथा अन्य एकांकी	लक्ष्मीनारायण मिश्र	२.५०
कविता		
दर्द दिया है	'नीरज'	४.५०
रूप दर्शन (सचित्र)	हरिकृष्ण 'प्रेमी'	६.००
बलिपथ के गीत	जगन्नाथप्रसाद 'मिलिन्द'	४.००
गीत-गोविन्द	विनयमोहन शर्मा	६.००
रावण (महाकाव्य)	हरदयालुसिंह वर्मा	६.००
दमयन्ती (महाकाव्य)	ताराचन्द हारीत	८.००
नारी (महाकाव्य)	अतुलकृष्ण गोस्वामी	१०.००
चन्देरी का जौहर (खण्ड-काव्य)	आनन्द मिश्र	२.००
शिकार		
शिवालक की घाटियों में (सचित्र)	श्रीनिधि	५.००
वनराज के राज में (सचित्र)	विराज एम० ए०	४.००

मनोरंजन		
सचित्र गृह-विनोद	अरुण एम० ए०	८.००
मैंने कहा (सचित्र)	गोपालप्रसाद व्यास	५.००
विज्ञान		
विज्ञान और सभ्यता	रामचन्द्र तिवारी	५.००
सरल रेडियो विज्ञान	रमेशचन्द्र विजय	५.००
चन्दामामा का देश	सन्तोष नौटियाल	४.००
आदमी का जन्म	मन्मथनाथ गुप्त	१.२५
लोक-साहित्य		
रूसी लोक साहित्य	वीर राजेन्द्रऋषि	४.००
विन्ध्यभूमि की लोक-कथाएँ	श्रीचन्द्र जैन	१.२५
आन्ध्र की लोक-कथाएँ	के० राजशेष गिरि	१.५०
राजस्थान की लोक-कथाएँ	पुरुषोत्तम मेनारिया	१.२५
भ्रमण		
नेपाल की कहानी	काशीप्रसाद	८.००
गृहोपयोगी		
आपका मुन्ना	सावित्रीदेवी वर्मा	१३.५०
पारिवारिक समस्याएँ	,,	७.५०
विविध		
अध्ययन और आस्वाद	गुलाबराय	७.५०
मन की बातें	,,	३.५०
रेडियो नाटक	हरिश्चन्द्र खन्ना	६.५०
आधुनिक शिक्षा मनोविज्ञान	ईश्वरचन्द्र शर्मा	५.००
हिन्दी कविता में युगान्तर	डॉ० सुधीन्द्र	८.००
मध्यकालीन हिन्दी कवयित्रियाँ	डॉ० सावित्री सिन्हा	८.००
साहित्यानुशीलन	शिवदानसिंह चौहान	६.००
सूफ़ी मत और हिन्दी साहित्य	डॉ विमलकुमार जैन	८.००
साहित्य विवेचन	सुमन-मल्लिक	७.००
प्राचीन भारतीय परम्परा और इतिहास	डॉ० रांगेय राघव	१२.००
भूगोल के भौतिक आधार	रामस्वरूप वशिष्ठ	६.००
हिन्दी काव्यालंकार-सूत्र	आचार्य विश्वेश्वर	१२.००
हिन्दी वक्रोक्तिजीवितम्	,,	१६.००

आत्माराम एण्ड सन्स, काश्मीरी गेट, दिल्ली-६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुरस्कृत पुस्तक सूची

सामान्य विषय

पुस्तकालय-विज्ञान

—द्वारकाप्रसाद शास्त्री, (भूमिका ले० डॉ० जगदीशशरण शर्मा) : **पुस्तकालय संगठन और संचालन** : प्रयाग, लहर प्रकाशन, १९५६, पृ० १४०, (सचित्र), ड० क्रा०, ३ रु०, उ० प्र०, (५६-५७)।

विशेषतः स्कूल और कालेज पुस्तकालयों तथा सामान्यतः अन्य पुस्तकालयों के संगठन एवं संचालन के लिए लिखित।

—द्वारकाप्रसाद शास्त्री : **पुस्तकालय विज्ञान** : प्रयाग, लेखक द्वारा, १९५७, पृ० २४०, (सचित्र), डि०, ५ रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

पुस्तकालय विज्ञान की प्रामाणिक पुस्तक। ३३ चित्रों, रेखाचित्रों, उदाहरणों एवं पारिभाषिक शब्दावली सहित।

—द्वारकाप्रसाद शास्त्री : **भारत में पुस्तकालयों का उद्भव और विकास** : वाराणसी, हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, १९५७, पृ० १७६, (सचित्र), डि०, ५ रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

सिन्धु-सभ्यता काल से लेकर द्वितीय पंचवर्षीय योजना तक भारत में पुस्तकालयों के विकास का ऐतिहासिक विवेचन।

समाचार-पत्र, सम्पादन-कला

—अम्बिकाप्रसाद वाजपेयी : **समाचार-पत्रों का इतिहास** : बनारस, ज्ञान मण्डल लि०, २०१० वि०, पृ० ३६४, ड० क्रा०, ६·५० रु०, उ० प्र०, (५५)।

भारतीय समाचार-पत्रों के (१८२६ से १९२५) सौ वर्षों का इतिहास।

—रामकृष्ण रघुनाथ खाडिलकर : **आधुनिक पत्रकार कला** : बनारस, ज्ञान मण्डल लि०, १९५३, पृ० २४०, ड० क्रा०, ४ रु०, बि० रा० प०, (५७-५८)।

पत्रकारिता के सभी अंगों का संक्षिप्त विवेचन।

—वेंकटलाल ओझा : **हिन्दी समाचार-पत्र सूची (भाग १)**: हैदराबाद, हिन्दी समाचार-पत्र संग्रहालय, १९५०, पृ० ८२, ड० क्रा०, १·२५ रु०, उ० प्र०, (५१)।

दर्शन

दर्शन, सामान्य

—चन्द्रधर शर्मा (डॉ०) : **पाश्चात्य दर्शन** : बनारस, भार्गव बुक डिपो, १९५४, पृ० २१९, डि०, ४ रु०, उ० प्र०, (५५)।

पाश्चात्य दर्शन के उद्भव और विकास का संक्षिप्त इतिहास (थेलीज़ से हेगल तक), परिशिष्ट में पारिभाषिक शब्दावली।

—फ्रेंक थिली (मू० ले०), अनु० मधुकर : **पाश्चात्य दर्शन का इतिहास** : इलाहाबाद, सेंट्रल बुक डिपो, १९५४, पृ० १८२, ड० क्रा०, ५ रु०, उ० प्र०, (५५)।

पाश्चात्य दर्शन का संक्षिप्त इतिहास।

मनोविज्ञान का क्षेत्र, स्वप्न

—राजाराम शास्त्री : **स्वप्न दर्शन** : बनारस, काशी विद्यापीठ, २००४ वि०, पृ० २२०, ड० क्रा०, ३ रु०, ना० प्र० स०, (२००७ वि०)।

स्वप्न सम्बन्धी पाश्चात्य खोज का संक्षिप्त परिचय। स्वप्नावस्था का मनोविज्ञान। पारिभाषिक पदावली सहित।

सामान्य मनोविज्ञान

—अर्जुन चौबे काश्यप : **बाल मनोविज्ञान** : गया, भारती,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तकालय योग्य हमारे अनुपम ग्रंथ

आलोचनात्मक

हिन्दी साहित्य में हास्य रस : डा० बरसाने लाल		७·५०
कबीर एक विवेचन : डा० सरनामसिंह		१०·००
सरल भाषा विज्ञान : डा० मनमोहन गौतम		५·७५
महादेवी वर्मा और उनका 'आधुनिक कवि' : सुरेशचन्द्र		७·१३
प्रबन्ध प्रदीप : भारत भूषण सरोज		५·००
हिन्दी साहित्य का इतिहास : "		२·५०
भाषा विज्ञान एवं हिन्दी भाषा का इतिहास : भारत भूषण सरोज		२·५०
साहित्यालोचन-सिद्धान्त : डा० मनमोहन गौतम		२ ००
अलंकार विवेचन : तिलकधर शास्त्री		१·१२
चन्द्रगुप्त-समीक्षा : भारतभूषण सरोज		१·२५
नाटक की रूपरेखा : दशरथ झा		३·००
प्राचीन कवि और काव्य : डा० मनमोहन गौतम		३·००
साहित्यरत्न निबन्ध माला : भारतभूषण सरोज		४·५०
जायसी की काव्य-साधना : दानबहादुर पाठक		३·५०
हिन्दी गद्य साहित्य : सुरेशचन्द्र गुप्त		२·५०
कबीर : भारतभूषण सरोज		२·५०
मित्रलाभ सटीक : आदित्येश्वर कौशिक		१·५०
रघुवंशम त्रयोदश सर्ग=सटीक : इन्द्रकुमार विद्यार्थी		१·००
अशोक हिन्दी शब्दकोष : आदित्येश्वर कौशिक		३·७५

उपन्यास

वंश-वल्लरी : उर्मिला कुमारी एम० ए०	३·७५
धरती की पुकार : बलदेवदत्त शर्मा	३·००
पठान का हृदय : "	२·७५

बाल-साहित्य

सुन्दर कहानियाँ : उर्मिला कुमारी	०·७५
छल का फल : "	०·७५
मनोरंजक कहानियाँ : सुरेशचन्द्र गुप्त	०·५०
काँच का महल : सुरेशचन्द्र गुप्त	०·५०

हिन्दी-साहित्य संसार
नई सड़क, दिल्ली

पुस्तक भण्डार, १९५०, पृ० ५०४, ड० क्रा०, ६ रु०, उ० प्र०, (५२)।

कालेज तथा विश्वविद्यालयों के मनोविज्ञान के विद्यार्थियों के लिए बाल-मनोविज्ञान विषयक पाठ्य-पुस्तक। विषय का सारगर्भित प्रतिपादन।

—अर्जुन चौबे काश्यप : **सामान्य मनोविज्ञान :** गया, राजेश्वरी पुस्तकालय, १९५१, पृ० ५६८, ड० क्रा०, उ० प्र०, (५२)।

मन:शास्त्र के तत्त्वों का सरल विवेचन।

—गुलाबराय : **मन की बातें** : दिल्ली, आत्माराम एण्ड सन्स, १९५४, पृ० १७३, ड० क्रा०, ३.५० रु०, उ० प्र०, (५५-५६)।

मन का विश्लेषण। अनुक्रमणिका में पारिभाषिक पदों का हिन्दी-पर्याय एवं व्याख्या।

—निर्मला शेरजंग (सुश्री) : **बाल विकास और समस्याएं** : बनारस, जगत शंखधर, १९५६, पृ० ९४, (सचित्र), फु० स्कै०, ५ रु०, उ० प्र०, (५६-५७)।

माता-पिता तथा छोटे बच्चों के अध्यापकों के लिए लिखित बालकों के प्रतिदिन की समस्याओं के आधार पर मनोविज्ञान का परिचय।

—निर्मला शेरजंग (श्रीमती) : **मनोविज्ञान** : बनारस, जगत शंखधर, १९५४, पृ० २७९, ड० क्रा०, ४ रु०, उ० प्र०, (५५-५६)।

मनोविज्ञान विषय का संक्षिप्त विवेचन, शब्दकोष एवं पारिभाषिक शब्दसूची सहित।

—पद्मा अग्रवाल(डॉ०) : **मनोविज्ञान और मानसिक क्रियाएं** बनारस, संसार प्रेस, १९५१, पृ० २२२, ड० क्रा० ४.५० रु०, उ० प्र०, (५२)।

मनोविश्लेषण विषयक प्रतिपादन, पारिभाषिक शब्दावली सहित।

—पुरुषोत्तमलाल चोपड़ा : **बाल विकास :** वि० प्र० (५३-५४)।

—मधुकर : **नवीन मनोविज्ञान** : इलाहाबाद, सेन्ट्रल बुक डिपो, १९५४, पृ० २२२, (सचित्र), ड० क्रा०, ४.५० रु० उ० प्र०, (५५)।

प्रयोगात्मक खोजों के आधार पर तथा शरीर-विज्ञान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एवं समाज-विज्ञान के आधार पर मनोविज्ञान की व्याख्या।

—मधुकर, डी० एस० : **मनोविज्ञान प्रकृत और अप्रकृत** : इलाहाबाद, सेन्ट्रल बुक डिपो, १९५७, पृ० ४४७, डि०, (सचित्र), ९ रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

मनुष्य के व्यवहार के प्रकृत और अप्रकृत दोनों पक्षों का अध्ययन।

—मेरी एण्ड लारेंस के० फ्रैंक (मू० ले०), अनु० सीताराम जायसवाल : **बाल विकास और शिक्षण** : बनारस, नन्दकिशोर एण्ड ब्रदर्स, १९५६, पृ० २७९, डि०, ५ रु०, उ० प्र०, (५६-५७)।

'हाऊ टू हेल्प योर चिल्ड्रेन ऐट स्कूल' का अनुवाद।

—यदुनाथ सिह्ना (मूल ले०), अनु० गोवर्द्धनप्रसाद भट्ट : **समाज का मनोविज्ञान** : आगरा, लक्ष्मीनारायण अग्रवाल, १९५२, पृ० ५३८, ड० क्रा०, ७.५० रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

बी० ए० पाठ्य-ग्रन्थ के रूप में लिखित सामान्य मनोविज्ञान का प्रतिपादन।

—लालजीराम शुक्ल : **मनोविज्ञान और जीवन** : ना० प्र० स०।

—शिवानन्द शर्मा : **समाज मनोविज्ञान** : इलाहाबाद, फ्रेंड्स बुक डिपो, १९५४, पृ० २७८, ड० क्रा०, ४.५० रु०, उ० प्र०, (५५)।

समाज-मनोविज्ञान का संक्षिप्त परिचय।

—सावित्री देवी वर्मा, (भू० ले० अमृतकौर, राजकुमारी) : **आपका मुन्ना (तीन भागों में)** : दिल्ली, आत्माराम एण्ड सन्स, (सचित्र), १३.५० रु०, वि० प्र०, (५५-५६), ना० प्र० स० तथा उ० प्र० से भी ५५ में पुरस्कृत।

प्रथम भाग—१९५३, पृ० २०१, डि०, ३.५० रु०, बच्चों का पालन-पोषण।

द्वितीय भाग—१९५३, पृ० २७८, डि०, ५ रु०, बच्चों की समस्याएँ।

तृतीय भाग—१९५३, पृ० ३२२, डि०, ५ रु०, बच्चों का शिक्षण।

बाल-मनोविज्ञान सम्बन्धी भारतीय ग्रन्थ।

—हेमांकिनी जोशी (सुश्री) : **आपका शिशु** : बनारस, हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, १९५६, पृ० १३२, ड० क्रा०, (सचित्र),

हमारे प्रकाशन

उपन्यास :

जब खेत जागे : कृष्ण चन्द्र	३·००
अँधेरा-उजाला : ख्वाजा अहमद अब्बास	२·२५
यात्रा : साने गुरुजी	४·००
जहाँ बर्फ़ गिरती है : ए० हमीद	३·५०
झील और कंवल : ए० हमीद, अनु० श्यामू संन्यासी	६·००

कहानियाँ :

यहाँ से वहाँ तक : महेन्द्रनाथ	२·२५
निशानियाँ : उपेन्द्रनाथ 'अश्क'	३·००
मम्मी : सआदत हसन मण्टो	२·५०

नाटक :

बाबू : आचार्य आत्रेय	२·००
नेपथ्य : आरिगपूडि	३·००

किशोर साहित्य : (रंगीन चित्रों के साथ)

सयाना मूरख : कृष्ण चन्द्र	१·२५
मौत की मौत : कृष्ण चन्द्र	०·९०
सोने की सन्दूकची : कृष्ण चन्द्र	१·२५

जीवनियाँ : (रंगीन चित्रों के साथ)

अमर ज्योति : मोहन	१·२५
बापू की कहानी : कृष्णा हठीसिंह	२·२५
हमारे ज्योतिर्धर : चन्द्रवदन शाह, मगन लाल नायक	२·२५

बम्बई प्रकाशन प्राइवेट लि.
मनु मन्शन, १६ ओल्ड कस्टम हाउस रोड
बम्बई-१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

३.५० रु०, उ० प्र०, (५६-५७)।

शिशु की उत्पत्ति एवं उसके बौद्धिक विकास का अध्ययन।

तर्कशास्त्र

—केशव मिश्र (मू० ले०), विश्वेश्वर, आचार्य, व्याख्या० **: तर्क भाषा :** बनारस, चौखम्भा संस्कृत सीरीज, २०१० वि०, पृ० २६४, डि०, ४.५० रु०, विं प्र०, (५४-५५)।

तर्क भाषा की हिन्दी व्याख्या मूल सहित।

नीतिशास्त्र, आचार

—आनन्दकुमार **: आत्म विकास :** दिल्ली, राजपाल एण्ड सन्स, १९४९, पृ० ३९४, ड० क्रा०, ५ रु०, उ० प्र०, (५१)।

लोक-व्यवहार और जीव-कला पर व्यावहारिक ज्ञान से परिपूर्ण पुस्तक।

—फिलिप ह्वील, राइट (मू० ले०), अनु० मधुकर **: नीतिशास्त्र का आलोचनात्मक परिचय :** इलाहाबाद, सेन्ट्रल बुक डिपो, १९५३, पृ० २४७, ड० क्रा०, ५ रु०, उ० प्र०, (५५)।

नीतिशास्त्र के सिद्धांतों का आलोचनात्मक परिचय।

—लालजीराम शुक्ल **: नीतिशास्त्र :** बनारस, नन्दकिशोर एण्ड ब्रदर्स, १९५६, पृ० ४००, ड० क्रा०, ५ रु०, उ० प्र०, (५२)।

पाश्चात्य नीति की विचार-शैली पर लिखित उच्चतर कक्षाओं के योग्य पाठ्य-ग्रन्थ।

—शिवानन्द शर्मा **: नीति विज्ञान :** इलाहाबाद, फ्रेंड्स बुक डिपो, १९५६, पृ० ३६३, डि०, ६.७५ रु०, उ० प्र०, (५६-५७)।

प्रथम भाग (१-२०८) में ऐतिहासिक अध्ययन और द्वितीय भाग (२०९-३६३) में आचार सम्बन्धी समस्याओं का विश्लेषण।

—शान्ति जोशी (सुश्री) **: नीतिशास्त्र :** बनारस, ज्ञान मण्डल लि०, २०१३ वि०, पृ० ६१७, ड० क्रा०, ८ रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

पाश्चात्य यूनानी विचारकों से लेकर आधुनिक पाश्चात्य नीतिज्ञों तक के नैतिक दर्शन के विविध पक्षों का एकत्र अध्ययन एवं उनके विचारों की तुलनात्मक आलोचना।

भारतीय दर्शन

—आनन्द झा **: पदार्थ शास्त्र :** बनारस, लेखक द्वारा, २००७ वि०, पृ० २४१, ड० क्रा०, २.५० रु०, उ० प्र०, (५२)।

वैशेषिक दर्शन के सिद्धान्तों के आधार पर लिखित एक परिचयात्मक ग्रन्थ।

—उदयवीर शास्त्री **: सांख्य दर्शन का इतिहास :** ज्वालापुर (सहारनपुर), विरजानन्द वैदिक संस्थान, १९५०, पृ० ५३६, रॉ०, ३० रु०, बि० रा० प०, (५१-५२), डालमिया पुर०, (५१)।

सांख्य विषयक बहिरंग परीक्षात्मक मौलिक ग्रन्थ।

—चन्द्रधर शर्मा (डॉ०) **: बौद्ध दर्शन और वेदान्त :** इलाहाबाद, स्टूडेन्ट्स फ्रेंड्स, १९४९, पृ० ३०९, ड० क्रा०, ३.७५ रु०, उ० प्र०, (५१)।

प्रयाग विश्वविद्यालय द्वारा डी० फिल० के लिए स्वीकृत थीसिस का हिन्दी रूपान्तर। बौद्ध-दर्शन और वेदान्त दोनों के विकास-क्रम के विभिन्न रूपों की आलो-

द्विवेदी-युग तथा आधुनिक युग के सुप्रसिद्ध
कवि और सफल अनुवादक-लेखक

स्व० श्री रूपनारायण पांडेय

की अन्तिम काव्य-कृति

श्रीकृष्ण चरित

सरल लयपूर्ण छन्दों में लिखी गई इस पुस्तक को **पं० भरतलाल गौड़ कथावाचक** ने प्रकाशित-प्रचारित किया है। बहु-प्रशंसित।

मू० ४॥), डाक-व्यय माफ

पता—

हिन्दी-साहित्य भण्डार
गंगाप्रसाद रोड, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रचनात्मक मौलिक गवेषणा ।

—नरेन्द्रदेव, आचार्य, (भू० ले० म० म० पं० गोपीनाथ कविराज) : **बौद्ध दर्शन** : पटना, बि० रा० प०, १९५६, पृ० ६१६, (प्राक्कथन पृ० ७२, परिशिष्ट पृ० ७६), रॉ०, सजिल्द १७ रु०, अजिल्द १५ रु०, उ० प्र०, (५६-५७) तथा सा० अ०, (१९५७) ।

५ खण्डों और २० अध्यायों में पालि और संस्कृत में वर्णित बौद्ध धर्म और दर्शन का सांगोपांग वर्णन, डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल द्वारा ग्रन्थकार प्रशस्ति, श्री श्रीप्रकाशजी की प्रस्तावना, आचार्यजी की संक्षिप्त आत्मकथा तथा ७२ पृष्ठ की शब्दानुक्रमणी सहित ।

—फतहसिंह : **वैदिक दर्शन** : कोटा, संस्कृति सदन, २००६ वि०, पृ० २४७, ड० क्रा०, ६ रु०, डा० पु० ।

आध्यात्मिक दृष्टिकोण से वेदों का अध्ययन ।

—बलदेव उपाध्याय, (भूमिका ले० कविराज गोपीनाथ) : **बौद्ध दर्शन मीमांसा** : बनारस, शारदा मन्दिर, १९४६, पृ० ५२५, ड०क्रा०, ६ रु०, डा०पु० (२००२-०३वि०)।

बौद्ध धर्म तथा तत्त्व-ज्ञान का सांगोपांग प्रामाणिक विवेचन ।

—मदन मिश्र : **मीमांसा दर्शन** : उ० प्र०, (५५) ।

—महेन्द्रकुमार जैन, (प्राक्कथन—मंगलदेव शास्त्री) : **जैन दर्शन** : काशी, गणेशप्रसाद जैन ग्रन्थमाला, १९५५, पृ० ६५१, ड० क्रा०, ७ रु०, उ० प्र०, (५५-५६) ।

व्यापक और तुलनात्मक विधि से जैन दर्शन का विवेचनात्मक अध्ययन ।

—विद्यासागर शास्त्री (डॉ०) : **चारवाक दर्शन** : डा० पु० ।

—सम्पूर्णानन्द : **चिद्विलास** : वाराणसी, ज्ञान मण्डल लि०, २००१ वि०, पृ० २७२, ड० क्रा०, २.५० रु०, हि० सा० स०, मंगला० (२००५ वि०) ।

अद्वैतवाद पर एक मौलिक चिन्तन । आधार खण्ड, ज्ञान खण्ड और धर्म खण्ड नामक तीन खण्डों में विभक्त १९ पृष्ठों की सारगर्भित भूमिका सहित ।

अन्य दर्शन

—देवराज (डॉ०) : **योरोपीय दर्शन (द्वितीय भाग)** : मुजफ्फरपुर, सिंह ब्रदर्स, २००३ वि०, पृ० ३३१, ड० क्रा०, ४ रु०, उ० प्र०, (५०) ।

आधुनिक काल, कार्लमार्क्स के दर्शन पर एक अध्ययन, पारिभाषिक पदावली सहित ।

—भूपेन्द्रनाथ सान्याल : **मार्क्स दर्शन** : प्रयाग, इंडियन प्रेस, १९४५, पृ० १५५, ड० क्रा०, २ रु०, हि० सा० स० मुरारका पुर०, (२००७ वि०) ।

मार्क्स की दार्शनिक विचारधारा का परिचय । पारिभाषिक शब्दावली सहित ।

धर्म सामान्य

—अलगूराय शास्त्री : **ऋग्वेद रहस्य** : उ० प्र०, आर्य प्रतिनिधि सभा, १९५१, पृ० ७२०, ड० क्रा०, ५ रु०, उ० प्र०, (५२) ।

ऋग्वेद के सम्बन्ध में विद्वानों की प्रतिकूल-अनुकूल सभी स्थापनाओं और धारणाओं का विशद विवेचन ।

—गंगाप्रसाद उपाध्याय, अनु० : **ऋग्वेदीय ऐतरेय ब्राह्मण** : प्रयाग, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, २००६ वि०, पृ० ५७३, ड० क्रा०, ५ रु०, उ० प्र०, (५२) ।

भारतीय संस्कृति

लेखक

डॉ० व्रजनाथसिंह यादव, एम० ए०, डी० फिल०

डॉ० लल्लनजी गोपाल, एम० ए०, डी० फिल०

प्राध्यापक, प्राचीन इतिहास एवं संस्कृति विभाग, प्रयाग विश्वविद्यालय, प्रयाग ।

● प्रस्तुत कृति गोरखपुर विश्वविद्यालय की बी० ए० परीक्षा के भारतीय संस्कृति के अनिवार्य प्रश्नपत्र तथा सागर, विक्रम, लखनऊ, इलाहाबाद, काशी, आगरा आदि विश्वविद्यालयों की बी० ए० परीक्षा के लिए पाठ्य-ग्रन्थ ।

● पुस्तक के आरम्भ में गोरखपुर विश्वविद्यालय के प्राचीन इतिहास एवं संस्कृति विभाग के अध्यक्ष डॉ० गोविन्द चन्द्र पांडे ने 'संस्कृति के मूल तत्त्व' विषय पर महत्वपूर्ण भूमिका लिखी है ।

● पुस्तक साधारण पाठकों के लिए भी अत्यन्त उपयोगी है ।

पृष्ठ संख्या—३०० मूल्य ६·२५

प्रकाशक

विश्वविद्यालय प्रकाशन

नखास चौक, गोरखपुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऐतरेय ब्राह्मण का केवल हिन्दी अनुवाद मन्त्र सूची तथा परिचयात्मक शब्दावली सहित।

—राजगोपालाचार्य, चक्रवर्ती (मू० ले०), अनु० सोमसुन्दरम् : **महाभारत कथा** : दिल्ली, सस्ता साहित्य मण्डल, १९५६, पृ० ४९४, ड० क्रा०, ५ रु०, के० स० प्र० वि० पु० प्रति०।

महाभारत की कथाएँ।

—चाउसिंग्रांगकुग्रांग (डॉ०) (मू० ले०), अनु० आत्मनू, (भू० ले० सुनीतिकुमार चाटुर्ज्या) : **चीनी बौद्ध धर्म का इतिहास** : प्रयाग, भारती भण्डार, २०१३ वि०, पृ० २९८, डि०, (सचित्र), ७·५० रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

बौद्ध-साहित्य के प्रसार से सम्बद्ध आवश्यक सामग्री, लेखक की १६ पृष्ठों की और श्री चाटुर्ज्या की ११ पृष्ठों की भूमिका द्रष्टव्य।

—ज्ञानेश्वर सन्त (मू० ले०), अनु० रामचन्द्र वर्मा : **हिन्दी ज्ञानेश्वरी** : बनारस, हिन्दी साहित्य कुटीर, २०१३ वि०, पृ० ७१६, ड० क्रा०, ५ रु०, के० स० प्र० वि० पु० प्रति०।

श्रीमद्भगवद्गीता के मूल श्लोकों सहित सन्त ज्ञानेश्वर जी की मराठी टीका का हिन्दी अनुवाद।

—धर्मपाल शास्त्री : **हमारे त्योहार** : दिल्ली, राजपाल एण्ड सन्स, १९५६, पृ० ३६, फु० स्के०, (सचित्र), ७५ न० पै०, के० स० जन सा० प्रति०, (५७)।

१३ सामाजिक एवं राष्ट्रीय त्योहारों का अशिक्षित प्रौढ़ों के लिए सरल परिचय।

—परशुराम चतुर्वेदी : **उत्तरी भारत की सन्त परम्परा** : प्रयाग, भारती भण्डार, २००८ वि०, पृ० ७७८, डि०, १० रु०, बि० रा० प०, पटना, (५१-५२), महा० शा० प० से भी।

उत्तरी भारत की सन्त-परम्पराओं का ७ अध्यायों में ऐतिहासिक विवेचन।

—बलदेव उपाध्याय : **भागवत सम्प्रदाय** : काशी, नागरी प्रचारिणी सभा, २०१० वि०, पृ० ६८०, ड० क्रा०, ६ रु०, उ० प्र०, (५५)।

भारतवर्ष के मुख्य वैष्णव सम्प्रदायों का एक गम्भीर अध्ययन।

—बुद्धघोष, आचार्य (मूल ले०), अनु० धर्मरक्षित भिक्षु : **विशुद्धि मार्ग, भाग १** : वाराणसी, महाबोधि सभा, १९५६, पृ० ३७७, रॉ०, १० रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

शील निर्देश से समाधि निर्देश तक ११ परिच्छेदों का अनुवाद। उपमा सूची, कथा सूची, ग्रन्थ सूची, नाम अनुक्रमणिका एवं शब्द अनुक्रमणिका सहित।

—धर्मरक्षित भिक्षु : **विशुद्ध मार्ग, भाग २** : उ० प्र०, (५७-५८)।

—भरतसिंह उपाध्याय : **गौतम बुद्ध और उनके उपदेश** : दिल्ली, सस्ता साहित्य मण्डल, १९५७, पृ० ३२, (सचित्र), ड० क्रा०, ३१ न० पै०, के० स० जन सा० प्रति०, (५४)।

गौतम बुद्ध की कहानी और उनके उपदेशों का बालोपयोगी संग्रह।

—मन्मथराय, (भूमिका ले० गोपीनाथ कविराय) : **हमारे कुछ प्राचीन लोकोत्सव** : प्रयाग, साहित्य भवन लिमिटेड, १९५३, पृ० १७३, ड० क्रा०, २·५० रु०, उ० प्र०, (५३-५४)।

कुछ ऐतिहासिक महत्त्वपूर्ण उत्सवों का रोचक एवं शिक्षाप्रद वर्णन।

—मोती बाबू : **हिन्दू विवाह विधि** : इलाहाबाद, रामनारायणलाल, पृ० १३७, ३ रु०, उ० प्र०, (५५)।

अक्टूबर १९५४ तक के न्यायालयों के निर्णयों, अधिनियमों तथा धर्मशास्त्र-ग्रन्थों के आधार पर विवाह सम्बन्धी वर्तमान हिन्दू विधि का विवेचन।

—राजबली पाण्डेय (डॉ०) : **हिन्दू संस्कार** : वाराणसी, चौखम्भा विद्या भवन, २०१४ वि०, पृ० ३९३, डि०, १५ रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

सोलह हिन्दू संस्कारों का सामाजिक तथा धार्मिक अध्ययन। काशी विश्वविद्यालय से डी० लिट्० की उपाधि के लिए स्वीकृत मूल अंग्रेजी ग्रन्थ का स्वतन्त्र परिवर्तित हिन्दी रूप।

—रामगोविन्द त्रिवेदी : **वैदिक साहित्य** : काशी, भारतीय ज्ञानपीठ, १९५०, पृ० ५१२, ड० क्रा०, ६ रु०, उ० प्र०, (५२)।

वैदिक साहित्य का साङ्गोपाङ्ग विशद् विवेचन।

—रामलगन त्रिपाठी : **महाभारत प्रकाश** : उ० प्र०, (५१)।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजनीतिज्ञ, संस्कृत मानव और महान् स्वप्नद्रष्टा

श्री जवाहरलाल नेहरू

के विभिन्न व्यक्तित्वों को ठीक-ठीक समझने के लिए और भावी भारत तथा भावी विश्व के निर्माण के सम्बन्ध में उनके विचारों और कार्य-व्यापारों का मूल्यांकन करने में सहायक अपने समय का अप्रतिम प्रकाशन

मैं नेहरू से मिला

फ्रांसीसी लेखक श्री तिबौर माँड पेरिस की इंस्टीच्यूट ऑफ़ पॉलिटिकल स्टडीज़ में प्राध्यापक हैं। विभिन्न मसलों पर उनके विचार जानने के उद्देश्य से श्री माँड श्री नेहरू से बातचीत करने के लिए हिन्दुस्तान आये और उनसे चार लम्बी मुलाकातें कीं। इन मुलाकातों के दौरान की बातचीत के प्रत्येक शब्द को ऑल इण्डिया रेडियो के टेप रिकार्डर पर उतार लिया गया था और इस पुस्तक में उन्हीं चार मुलाकातों की कुल बातचीत का समावेश है।

"......इस पुस्तक को श्री नेहरू की अपनी ही एक नवीन कृति माना जा सकता है।"

पुस्तक अगस्त के अन्त तक प्रकाशित होगी !

आकर्षक गेट-अप, बढ़िया कार्टरिज कागज़, पक्की जिल्द, मूल्य तीन रुपये पचास नये पैसे

राजकमल

राजकमल

प्रकाशन प्राइवेट लि:

दिल्ली इलाहाबाद बम्बई पटना मद्रास

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी साहित्य कोश
के प्रकाशन की महत्त्वपूर्ण घोषणा

हिन्दी-साहित्य के अध्ययन, अध्यापन तथा अनुशीलन में प्रत्येक विद्यार्थी, अध्यापक, अनुसन्धानकर्ता और पाठक को एक ऐसे ग्रन्थ की आवश्यकता का अनुभव निरन्तर होता है, जिसकी सहायता से हिन्दी में प्रयुक्त अनेकानेक प्राचीन और नवीन साहित्यिक, पारिभाषिक शब्दों का प्रामाणिक अर्थ, साहित्य की गतिविधि को संचालित एवं प्रभावित करने वाले वादों और प्रवृत्तियों का ऐतिहासिक और शास्त्रीय परिचय, साहित्यिक भाषा और बोलियों का भाषा-वैज्ञानिक विवेचन तथा शिष्ट और लोक-साहित्य के विभिन्न अंगों की उपयोगी जानकारी प्राप्त हो सके। सभी उन्नत साहित्यों में इस प्रकार के दर्जनों छोटे-बड़े विश्व कोश हैं, जो भाषा और साहित्य के सभी श्रेणी के अध्येताओं और पाठकों के लिए उपयोगी ज्ञानभण्डार तात्कालिक रूप से उपलब्ध करते हैं। हिन्दी के इसी भारी अभाव की पूर्ति के लिए हिन्दी साहित्य कोश की आयोजना हमने पिछले वर्ष प्रस्तुत की थी, जो अब पूर्ण हो चुकी है। आशा है कि १५ अगस्त सन् १९५८ तक कोश प्रकाशित हो जायगा।

इस हिन्दी साहित्य कोश को वैज्ञानिक रूप देने के लिए प्रयत्न किया गया है कि उसमें दी गई सामग्री साहित्य के सामयिक वाद-विवादों का परिचय देते हुए भी उनसे अप्रभावित रहकर शुद्ध बौद्धिक स्तर पर यथासम्भव तटस्थ रूप में उपस्थित की जाय तथा उसकी प्रामाणिकता यथासम्भव सर्वमान्य और स्थायित्वपूर्ण हो। इस उद्देश्य की पूर्ति को ध्यान में रखते हुए इस कोश-रचना के लिए एक सम्पादक-मण्डल संघटित किया गया था, जिसने हिन्दी के अस्सी से अधिक विशेषज्ञ और अधिकारी विद्वानों द्वारा विभिन्न विषयों पर लेख और टिप्पणियां लिखवाकर उन्हें कोशबद्ध किया है। उक्त सम्पादक-मण्डल के सदस्य हैं—डॉ० धीरेन्द्र वर्मा (प्रधान), डॉ० ब्रजेश्वर वर्मा, डॉ० धर्मवीर भारती, श्री रामस्वरूप चतुर्वेदी तथा डॉ० रघुवंश (संयोजक)। प्रस्तुत साहित्य कोश में निम्नलिखित विषयों में प्रयुक्त होने वाले पारिभाषिक शब्द संकलित किये गए हैं—

१. प्राचीन साहित्यशास्त्र—रस, ध्वनि, अलंकार, छन्द आदि
२. पाश्चात्य साहित्यशास्त्र
३. साहित्य के विविध रूप
४. साहित्य में प्रयुक्त दार्शनिक, मनोवैज्ञानिक तथा समाजशास्त्रीय सिद्धान्त
५. साहित्य के विविध वाद तथा प्रवृत्तियाँ—प्राचीन और आधुनिक
६. लोक-साहित्य
७. हिन्दी भाषा, उसकी जनपदीय बोलियाँ, प्राचीन तथा आधुनिक भारतीय आर्य-भाषाओं तथा सम्बद्ध आर्य-भाषाओं का परिचयात्मक विवरण।

मूल्य बीस रुपये मात्र

कोश की सामग्री प्रस्तुत करने वाले लेखकों के नाम कोश में यथास्थान दिये गए हैं। इस महत्वपूर्ण आयोजन में हिन्दी के सभी मान्य तथा प्रतिष्ठित लेखकों का सहयोग प्राप्त हुआ।

हमारे अन्य कोश

बृहत् हिन्दी कोश	२५)	**ज्ञान शब्द कोश**	१५)
पारिभाषिक शब्द कोश	४)	**बृहत् अंग्रेजी हिन्दी कोश**	(प्रेस में)

प्रकाशक : ज्ञानमण्डल लिमिटेड, वाराणसी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

—वासुदेवशरण अग्रवाल, (डॉ०) : **भारत सावित्री** : नई दिल्ली, सस्ता साहित्य मण्डल, १९५७, पृ० ३४७, ड० क्रा०, ३ रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

महाभारत का एक नवीन एवं सारगर्भित अध्ययन (आदि पर्व से विराट् पर्व तक)।

—शशिभूषणदास गुप्त : **श्री राधा का क्रम-विकास** : वाराणसी, हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, १९५६, पृ० ३१३, डि०, ८ रु०, उ० प्र०, (५६-५७)।

जीवन द्वारा ग्राह्य होने के लिए श्री राधा के परम तत्त्व रूप की मर्त्यलोक में अभिव्यक्ति का क्रम-विकास। भारतीय दर्शन और साहित्य के विभिन्न स्तरों में व्याप्त श्री राधा के चिरंतन क्रम-विकास का इतिहास।

—सत्यभक्त (स्वामी) : **धर्म सम्भाव** : वर्धा, सत्याश्रम, पृ० ७४, ड० क्रा०, ७५ न० पै०, उ० प्र०, (५२-५३)।

धर्म सम्भाव पर वैज्ञानिक, ऐतिहासिक और व्यावहारिक दृष्टि से विचार।

—सत्यव्रत विद्यालंकार : **एकादशोपनिषद्** : देहरादून, विद्या विहार, १९५४, पृ० ६२७, डि०, (सचित्र), १२ रु०, उ० प्र०, (५५)।

प्रसिद्ध एकादशोपनिषदों का मूल सहित हिन्दी में अनुवाद।

—सत्यव्रत, (स्वामी) : **सत्यामृत** : वर्धा, सत्याश्रम,
१. दृष्टिकाण्ड, १९४०, पृ० २११, रॉ० अठपेजी, १·२५ रु०
२. आचारकाण्ड, पृ० २१२–४४०, रॉ० ", १·७५ रु०
३. व्यवहार काण्ड, पृ० ४४१–७९१, रॉ० ", ५ रु०
मानव धर्मशास्त्र।

—हजारीप्रसाद द्विवेदी : **नाथ सम्प्रदाय** : इलाहाबाद, हिन्दुस्तानी एकेडेमी, १९५०, पृ० २१२, रॉ०, ४·५० रु०, उ० प्र०, (५१)।

प्रामाणिक आधार पर नाथ-सम्प्रदाय का प्रथम क्रमबद्ध विस्तृत विवेचन।

—हरिदास माणिक : **महाभारत के महारथी** : काशी, माणिक कार्यालय, १९५७, पृ० ३५९, ड० क्रा०, ५ रु०, उ० प्र०, (५२)।

महाभारत के शौर्यपूर्ण प्रसङ्गों का चयन।

—हरिभाऊ उपाध्याय : **भागवत धर्म** : दिल्ली, सस्ता साहित्य मण्डल, १९५१, पृ० ३९९, रॉ०, ६.५० रु०, उ० प्र०, (५२)।

श्रीभागवत् के एकादश स्कन्ध का लोक-सुलभ अनुवाद एवं टीका।

समाजशास्त्र

समाजशास्त्र, सामान्य

—कमलापति त्रिपाठी : **बापू और मानवता** : बनारस, सरस्वती मन्दिर, १९४८, पृ० ४०६, ड० क्रा०, ५ रु०, हि० सा० स० मंगला०, (२००४ वि०)।

गांधीजी के विचारों और उनकी पद्धति का अध्ययन।

—क्षितिमोहन सेन (आचार्य) : **संस्कृति संगम** : प्रयाग, साहित्य भवन लि०, १९५०, पृ० १८०, ड० क्रा०, ३ रु०, रा० प्र० स० वर्धा, (५३-५४) तथा हि० सा० स० मुरारका पुर०, (२००८ वि०)।

लेखक के १२ सांस्कृतिक निबन्धों का संग्रह।

जैनेन्द्र कुमार : **जड़ की बात** : प्रयाग, हिन्दी मन्दिर, १९४६, पृ० २१५, ड० क्रा०, २ रु०, उ० प्र०, (५०)।

लेखक के १९ सामाजिक, सांस्कृतिक निबन्धों का संकलन।

—नरेन्द्रकुमार जैन : **अछूत कोई नहीं** : वि० प्र०, (५५-५६)।

—पंचानन मिश्र : **समाज की भूमिका** : पटना, अजन्ता प्रेस लि०, २०१३ वि०, पृ० २२६, डि०, ४ रु०, बि० रा० प०, (५६-५७)।

—विनोबा भावे : **गांव सुखी हम सुखी** : दिल्ली, सस्ता साहित्य मण्डल, १९५७, पृ० ३२, (सचित्र), ड० क्रा०, ३१ न० पै०, के० स० जन सा०, (५४)।

विनोबाजी का गाँव के लोगों के लिए उपयोगी प्रवचन, प्रौढ़ोपयोगी साहित्य।

—भागीरथ प्रसाद : **भारतीय समाज विमर्श** : उ० प्र०, (५७-५८)।

—सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार : **समाज के मूल तत्त्व** : देहरादून, विजय कृष्ण लखनपाल एण्ड कं०, १९५७, पृ० ५९४, ड० क्रा०, १० रु०, उ० प्र०, (५५)।

समाजशास्त्र के सभी विषयों का सुन्दर एवं सरल विवेचन। विश्वविद्यालय कक्षाओं में समाजशास्त्र विषयक एक सहायक ग्रन्थ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

—भगवानदास केला : **मनुष्य जाति की प्रगति** : इलाहाबाद, भारतीय ग्रन्थ माला, १९५३, पृ० ३८२, ड० क्रा०, ३·५० रु०, उ० प्र०, (५०)।

मानव-जीवन के अधिक-से-अधिक पहलुओं पर उसकी प्रगति का प्रतिपादन।

संख्यातत्त्व

—महेन्द्रप्रतापसिंह : **सांख्यिकी सिद्धान्त और प्रयोग** : उ० प्र०, (५५-५६)।

राजनीति

—अनन्तसदाशिव अल्तेकर : **प्राचीन भारतीय शासन पद्धति** : प्रयाग, भारती भण्डार, २००४ वि०, पृ० २७६, डि०, ५ रु०, बि० रा० प०, पटना, (५२-५३), ना० प्र० सभा, काशी तथा उ० प्र०, (५०)।

भारत की प्राचीन शासन-पद्धति का मौलिक दृष्टिकोण से प्रामाणिक विवेचन।

—कन्हैयालाल वर्मा : **पाश्चात्य राजनीतिक विचारों का इतिहास** : बनारस, नन्दकिशोर एण्ड ब्रदर्स, १९५२, पृ० ३२१, डि०, ८·५० रु०, उ० प्र०, (५२-५३)।

प्राचीन और मध्यकालीन पाश्चात्य राजनीतिक विचारों का विवरण।

—कन्हैयालाल वर्मा : **भारतीय राजनीति और शासन-पद्धति** : बनारस, एजूकेशनल पब्लिशिंग हाउस, १९५२, पृ० ५१०, डि०, ८ रु०, उ० प्र०, (५५)।

भारत के राष्ट्रीय उत्थान का इतिहास सन् १८५८ से १९३५ तक।

—केदारनाथप्रसाद (प्रो०) : **नागरिक और राज्य (नागरिकशास्त्र)** : पटना, पुस्तक भण्डार, १९५१, पृ० ४९४, डि०, ८ रु०, उ० प्र०, (५२)।

भारतीय गणतन्त्र संविधान की विशद् पृष्ठभूमि में लिखित नागरिकशास्त्र का ग्रन्थ।

—गंगाप्रसाद उपाध्याय : **कम्युनिज़्म** : इलाहाबाद, कला प्रेस, १९५०, पृ० २२०, ड० क्रा०, १·५० रु०, उ० प्र०, (५१)।

कम्युनिज़्म के सिद्धान्तों की आलोचना।

—जयनारायण पांडेय : **प्रमुख राजनैतिक विचारों की चिन्तनधारा** : जबलपुर, लोक चेतना प्रकाशन, १९५६, पृ० ४३०, डि०, ७ रु०, उ० प्र०, (५६-५७)।

बारह पाश्चात्य और तीन भारतीय राजनीतिक विचारकों की विचारधाराओं का प्रतिपादन।

—त्रिलोचन पन्त : **इंगलैण्ड का संविधानिक इतिहास** : बनारस, नन्दकिशोर एण्ड ब्रदर्स, १९५५, पृ० ३२१, डि०, ५ रु०, उ० प्र०, (५५-५६)।

इंगलैण्ड की आंग्ल-सैक्सन काल से ट्यूडर काल के अन्त तक की संविधानिक व्यवस्था का इतिहास। डिग्री कक्षाओं के विद्यार्थियों के लिए लिखित।

—फिशर एच० (श्रीमती) तथा कस्तूरचन्द गुप्ता, सम्पादक रामतेलंग : **हम सरकार हैं** : इलाहाबाद, लिटरेसी हाउस, १९५५, पृ० ५४, (सचित्र), ३१ न० पै०, के० स० जन सा० प्रति०, (५५)।

नागरिकों के अधिकार और कर्तव्य की बोधक पुस्तक। निरक्षर प्रौढ़ों के लिए लिखित।

—बैजनाथसिंह 'विनोद' : **भारतीय जीवन की समाजवादी समीक्षा** : इलाहाबाद, किताब महल, १९५५, पृ० १९६, ड० क्रा०, २ रु०, उ० प्र०, (५५-५६)।

भारत की सम्पूर्ण सामाजिक स्थिति का समाजवादी दृष्टिकोण से अध्ययन।

—ब्रजमोहन शर्मा, डॉ० (प्राक्कथन श्री चन्द्रभान गुप्त): **प्रमुख देशों की शासन प्रणालियाँ** : चन्दौसी, जी० आर० भार्गव एण्ड सन्स, १९५२, पृ० ५२०, डि०, १२ रु०, उ० प्र०, (५१)।

संसार के प्रमुख देशों की शासन-प्रणालियों का विवेचन। विश्वविद्यालय कक्षाओं के लिए उपयोगी ग्रन्थ।

—ब्रजमोहन शर्मा, डॉ० : **राजशास्त्र के मूल सिद्धान्त** : उ० प्र०, (५१)।

—प्लातौन (मू० ले०), अनु० भोलानाथ शर्मा : **आदर्श नगर व्यवस्था** : प्रयाग, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, २००७ वि०, पृ० ७१२, ड० क्रा०, १० रु०, के० स० प्र० वि० पु० प्रति०।

विश्व-साहित्यिकों से समादृत प्लातौन (प्लेटो) के 'पोलितेइया' (रिपब्लिक) ग्रन्थ का मूल ग्रीक भाषा से हिन्दी अनुवाद।

—मनरो लीफ (मू० ले०) : **सच्ची नागरिकता** : दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजकमल प्रकाशन, १९५३, पृ० ८८, रॉ०, (सचित्र), २ रु०, के० स० बा० सा० प्रति०, (५४)।

बालकों के लिए नागरिकता के सिद्धान्तों की बोधक प्रसिद्ध पुस्तक।

—महादेवप्रसाद शर्मा (डॉ०) : **राजनीति के सिद्धान्त :** प्रयाग, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, २००६ वि०, पृ० ३८७, डि०, ८ रु०, उ० प्र०, (५१)।

राजनीतिक सिद्धान्त सम्बन्धी सभी आवश्यक और उपयोगी तथ्यों का समावेश। पारिभाषिक शब्दावली सहित।

—महेन्द्रप्रकाश अग्रवाल : **संयुक्तराज्य अमरीका का शासन :** प्रयाग, किताब महल, १९५६, पृ० ३३३, डि०, ४.७५ रु०, उ० प्र०, (५६-५७)।

विश्वविद्यालयों के राजशास्त्र के विद्यार्थियों के लिए लिखित पारिभाषिक शब्दावली, मानचित्रों एवं प्रश्नपत्रों सहित।

—महेन्द्रप्रकाश अग्रवाल : **स्वीटज़रलैण्ड का शासन :** इलाहाबाद, किताब महल, १९५६, पृ० १८१, ड० क्रा०, २.५० रु०, उ० प्र०, (५६-५७)।

स्वीटज़रलैण्ड की शासन-प्रणाली का परिचय।

—महेन्द्रप्रकाश अग्रवाल : **सोवियत संघ का शासन :** इलाहाबाद, किताब महल, १९५६, पृ० २६४, ड० क्रा०, ३.७५ रु०, उ० प्र०, (५६-५७)।

सामाजिक और आर्थिक पृष्ठभूमि को ध्यान में रखते हुए सोवियत शासन-प्रणाली का सरल अध्ययन।

—राजनारायण गुप्त और राधानाथ चतुर्वेदी : **पाश्चात्य राजदर्शन का इतिहास :** इलाहाबाद, किताब महल, १९५४, पृ० ६६८, डि०, ८.७५ रु०, उ० प्र०, (५५)।

सोक्रेटीज़ से हिटलर और मुसोलनी तक का पाश्चात्य राजदर्शन का विवेचन। बी० ए० कक्षा के लिए लिखित।

—रामगोपाल : **भारतीय राजनीति :** बनारस, ज्ञान मण्डल लि०, २०११ वि०, पृ० ४७२, रॉ०, १० रु०, उ० प्र०, (५५)।

विक्टोरिया से नेहरू (१८५८-१९४७) तक भारतीय राजनीति का विवेचन। १०० वर्षों की राजनीति का इतिहास।

—रामायणप्रसाद : **हमारा संविधान :** वि०प्र०, (५३-५४)।

—लीलाधर शर्मा : **संयुक्त राष्ट्र संघ :** लखनऊ, वीणा प्रकाशन, १९५४, पृ० २१४, ड० क्रा०, २.५० रु०, उ० प्र०, (५५)।

संयुक्त राष्ट्र संघ और उससे संचालित संस्थाओं की सभी ज्ञातव्य बातों का संक्षिप्त प्रतिपादन।

—विश्वनाथ प्रसाद वर्मा (डॉ०) : **राजनीति और दर्शन :** पटना, बिहार राष्ट्र भाषा परिषद्, १९५६, पृ० ५५५, (अनुक्रमणिका पृ० ३०), सजिल्द १४ रु०, अजिल्द १२.५० रु०, बि० रा० प० (५५-५६) तथा उ० प्र० (५६-५७)।

चौदह अध्यायों में राजनीतिशास्त्र का दार्शनिक विवेचन।

—विष्णु प्रभाकर : **हमारे पड़ोसी :** नई दिल्ली, सस्ता साहित्य मण्डल, १९५७, पृ० ३२, ड० क्रा०, (सचित्र), ३६ न० पै०, के० स० अ० जन सा० प्रति०, (५७)।

नागरिकता का एक पाठ। पड़ोसी धर्म की शिक्षा।

—श्यामलाल पांडेय (डॉ०) : **जनतन्त्रवाद :** लखनऊ, अवध

मैथिलीशरण गुप्त :

कवि और भारतीय संस्कृति के आख्याता

ले० डॉ० उमाकान्त

एम० ए०, पी-एच० डी०

यह ग्रन्थ दिल्ली विश्वविद्यालय द्वारा पी-एच० डी० की उपाधि के लिए स्वीकृत शोध-प्रबन्ध है। इसमें गुप्त जी का सर्वाङ्गीण अध्ययन प्रस्तुत किया है। लेखक ने कई वर्ष के अनवरत परिश्रम के पश्चात् इस ग्रन्थ का प्रणयन किया है। अपने विषय के ग्रन्थों में यह सर्वोत्कृष्ट ग्रन्थ है।

नयनाभिराम आवरण, सुन्दर मुद्रण, मूल्य १५)

नेशनल पब्लिशिंग हाउस

नई सड़क, दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हिन्दी के सभी मूर्धन्य समालोचकों की दृष्टि में श्री सत्यप्रकाश संगर एक प्रतिभासम्पन्न कुशल कलाकार हैं। अभिव्यक्ति में प्रवाह, धारणा में मौलिकता, तथा शैली और कथोपकथन में प्रवीणता के कारण श्री संगर की गणना हिन्दी के कुछ प्रमुख लेखकों में अनायास ही आ जाती है।" **—हिन्दुस्तान टाइम्ज़**

"संगर की कहानियों में यथार्थता का पुट हर कहीं परिलक्षित है, घटनाओं का चुनाव बड़ा ही आकर्षक है। चलती भाषा, फबती शैली, सरल विचार शायद उनकी रचनाओं के विशेष आकर्षण हैं।" **—दक्षिण भारत**

"कहानियों की भाषा अत्यन्त सरल तथा बोलचाल की है। प्रवाहशील शैली है, कथोपकथन रोचक, मार्मिक एवं भावपूर्ण हैं।" **—सम्मेलन पत्रिका**

हिन्दी-संसार के सुप्रसिद्ध लेखक
डॉ० सत्यप्रकाश संगर
की
मौलिक, रोचक एवं अनुपम कृतियाँ

उपन्यास

१. कली मुसकराई **२. घर की आन**
३. चाँद रानी

कहानी-संग्रह

४. अवगुण्ठन **५. कितना ऊँचा कितना नीचा**
६. नया मार्ग **७. लम्बे दिन जलती रातें**
८. अफ्रीका का आदमी [उ० प्र० सरकार द्वारा पुरस्कृत]

प्रकाशक : **विजय प्रकाशन**
१३६/१ कालेज कलोनी, भोपाल

मुख्य वितरक : **राजकमल प्रकाशन**
दिल्ली, इलाहाबाद, बम्बई, पटना, मद्रास

पब्लिशिंग हाउस, २००७ वि०, पृ० ३१४, डि०, ५ रु०, उ० प्र०, (५७)।

रामायण और महाभारतकालीन जनतन्त्रवाद विवेचन। लखनऊ वि० वि० से पी-एच० डी० की उपा के लिए स्वीकृत निबन्ध का परिवर्द्धित रूप।

—सत्यकेतु विद्यालंकार : **राजनीतिशास्त्र, प्रथम भाग** मसूरी, सरस्वती सदन, १९५४, (सं० सो० स०), पृ० ३६ डि०, १०.७५ रु०, उ० प्र०, (५२)।

राज्य और राज्य-शासन। बी० ए० प्रथम वर्ष लिए पाठ्य-ग्रन्थ। पारिभाषिक पदावली सहित।

—सत्यकेतु विद्यालंकार : **राजनीतिशास्त्र, द्वितीय भाग** मसूरी, सरस्वती सदन, १९५७, (तृ० सं०), पृ० ४०२ ७५२ तक, डि०, ५ रु०, उ० प्र०, (५२)।

बी० ए० द्वितीय वर्ष के लिए पाठ्य-ग्रन्थ। राज्य औ राज्य-शासन।

—सत्यभक्त (स्वामी) : **राजनीति समस्या** : वर्धा, सत्याश्र १९५२, पृ० ९२, ड० क्रा०, ८८ नं० पै०, उ० प्र (५२-५३)।

विभिन्न राजनीतिक वादों का संक्षिप्त परिचय राजनीति विषयक कुछ प्रश्नोत्तर।

—सुशीलचन्द्र सिंह : **महत्त्वपूर्ण शासन प्रणालियाँ** उ० प्र०, (५५-५६)।

—सुशीलचन्द्र सिंह : **राजनीति, दो भागों में** : मे एस० डी० त्यागी द्वारा, १९५४, पृ० ४४८, डि०, ८ र उ० प्र०, (५५)।

राजनीति के सिद्धान्त और राजनीतिक विचारधारा का विवेचन।

—हरीमोहन जैन : **संयुक्त राज्य अमेरिका की शास प्रणाली** : इलाहाबाद, चैतन्य पब्लिशिंग हाउस, १९५ पृ० २९८, डि०, ५.२५ रु०, उ० प्र०, (५५-५६)।

संयुक्त राज्य अमेरिका की शासन-प्रणाली का विश्ले षण। भारतीय विश्वविद्यालयों के स्तर पर लिखित।

अर्थशास्त्र

—अजमेरा, बी० एल० : **भारतीय आर्थिक लेख** : रा० ह (५५-५६)।

—ओमप्रकाश केला : **भारतीय अर्थशास्त्र का विवेचन**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इलाहाबाद, भारतीय ग्रंथ माला १९५१, पृ० ५४४, रा०, १० रु०, उ० प्र० (५२-५३)।

विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रमानुसार बी० ए० कक्षा के अर्थशास्त्र विषय के लिए लिखित। भारतीय अर्थशास्त्र का विस्तृत प्रतिपादन आँकड़ों एवं तालिकाओं सहित।

—आनन्दस्वरूप गर्ग : **अर्थशास्त्र के सिद्धान्त** : उ० प्र०, (५५)।

—कपिलदेव उपाध्याय (डॉ०) : **अर्थशास्त्र, सिद्धान्त और विश्लेषण** : आगरा, लक्ष्मीनारायण अग्रवाल, १९५४, पृ० ५७३, डि०, १० रु०, उ० प्र०, (५५)।

विश्वविद्यालयों की बी० ए० अथवा समानान्तर कक्षाओं के लिए अर्थशास्त्र का सैद्धान्तिक विवेचन (प्रश्न-पत्रों सहित)।

—ओमप्रकाश शर्मा : **भारतीय सहकारिता आन्दोलन** : महां० शा०।

—कालकाप्रसाद भटनागर तथा सुरेशचन्द्र : **भारतीय अर्थशास्त्र** : मसूरी, सरस्वती सदन, १९५७, (द्वि० सं०), पृ० ५६०, डि०, ८·५० रु०, उ० प्र०, (५६-५७)।

विश्वविद्यालयों की बी० ए० कक्षाओं के पाठ्यक्रम के अनुसार लिखित पाठ्य-ग्रन्थ। परिशिष्ट में आगरा वि० वि० के चुने हुए कुछ प्रश्न-पत्र।

—कृष्णकुमार शर्मा : **भारतीय मुद्रा विनिमय अधिकोषण तथा राजस्व** : आगरा, आगरा बुक स्टोर, १९५४, पृ० ४५४, डि०, ७ रु०, उ० प्र०, (५५)।

अधिकोषण, मुद्रा तथा राजस्व सम्बन्धी सिद्धान्तों का स्पष्टीकरण तथा तत्सम्बन्धी भारतीय निरूपण।

—केदारनाथ प्रसाद (प्रो०) : **आधुनिक अर्थशास्त्र** : पटना, पुस्तक भण्डार, १९५१, पृ० ६९४, डि०, १० रु०, उ० प्र०, (५२)।

अर्थशास्त्र के सैद्धान्तिक पक्ष का विशद विवेचन, आँकड़ों एवं रेखाचित्रों सहित। उच्चतम कक्षाओं के लिए लिखित।

—चन्द्रदेवप्रसाद श्रीवास्तव : **राजस्व एवं भारतीय वित्त-व्यवस्था** : कानपुर, गौतम ब्रदर्स, २०१० वि०, पृ० २६७, डि०, ४·५० रु०, उ० प्र०, (५५)।

आँकड़ों एवं तथ्यों से युक्त राजस्व के मूल सिद्धान्तों

हिन्दुस्तानी एकेडेमी, उत्तर प्रदेश, इलाहाबाद

की

खोज और विवेचनपूर्ण त्रैमासिक पत्रिका

हिन्दुस्तानी

जनवरी '५८ से पुनः प्रकाशित हो रही है।

प्रधान सम्पादक : डॉ० माता प्रसाद गुप्त, एम० ए०, डी० लिट्०।

सहायक सम्पादक : डॉ० सत्यव्रत सिन्हा, एम० ए०, डी० फिल०।

सम्पादक मंडल

डॉ० धीरेन्द्र वर्मा, एम० ए०, डी० लिट्०

डॉ० वासुदेव शरण अग्रवाल, एम० ए०, डी० लिट्०

डॉ० हजारी प्रसाद द्विवेदी, पद्म विभूषण

डॉ० दीन दयालु गुप्त, एम० ए०, डी० लिट्०

डॉ० सत्य प्रकाश, एम० एस-सी०, डी० एस-सी०

द्वितीय अंक के प्रमुख लेख एवं लेखक

स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी काव्य की दिशा : डॉ० रघुवंश

सौराष्ट्री : डॉ० विनयमोहन शर्मा

ब्रजभाषा काव्य में नायक-नायिका-भेद : डॉ० जगदीश गुप्त

निघंटु (संस्कृत कोषविद्या) का इतिहास : श्री बलदेव उपाध्याय

मोमिन एक परिचय : श्री एम० मसीहुज्जमा

कबीर बीजक की पाठ-परंपरा : डॉ० पारसनाथ तिवारी

कन्नड वचन साहित्य परिचय : श्री बाबूराम कुमठेकर

एक प्रति २.५० वार्षिक शुल्क १०.००

हिन्दुस्तानी एकेडेमी, उत्तर प्रदेश, इलाहाबाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एवं भारतीय वित्त-व्यवस्था की आलोचनात्मक व्याख्या।

—देवदत्त शास्त्री : **कौटिल्य अर्थशास्त्र की भूमिका :** इलाहाबाद, किताब महल, पृ० १०४, ड० क्रा०, २·५० रु० उ० प्र०, (५५)।

कौटिल्य के व्यक्तित्व और उनके नाम-उपनामों, जीवन-तथ्य एवं जन्मभूमि सम्बन्धी कुछ मौलिक विचार।

—देवर्षि तथा सोलंकी : **राजस्थान का आर्थिक विकास :** रा०, (५४-५५)।

—एन० डी० टंडन और वीरेन्द्र टंडन : **अर्थशास्त्र के सिद्धान्त :** प्रयाग, इंडियन प्रेस लि०, १९५५, पृ० ८३९, रॉ०, ११ रु०, उ० प्र०, (५५)।

बी० ए० और बी० काम० के विद्यार्थियों के लिए पाठ्य-ग्रंथ के रूप में लिखित। अर्थशास्त्र के सैद्धान्तिक पक्ष का विस्तृत विवेचन।

—प्यारेलाल रावत : **भारत का आर्थिक विकास :** आगरा, आगरा बुक स्टोर, १९५४, पृ० ६३१, डि०, ८ रु०, उ० प्र०, (५५)।

भारतीय विश्वविद्यालयों के अर्थशास्त्र विषय की उच्च कक्षाओं के लिए पाठ्य-ग्रंथ के रूप में लिखित, आँकड़ों एवं तथ्यों से परिपूर्ण। अन्त में कुछ प्रश्न-पत्र भी।

—भगवानदास केला : **सर्वोदय अर्थशास्त्र :** इलाहाबाद, भारतीय ग्रंथमाला, १९५६, पृ० ३३५, ड० क्रा०, ४ रु०, बि० रा० प०, (५६-५७)।

सर्वोदय की दृष्टि से अर्थशास्त्र की रूपरेखा प्रस्तुत करने वाला ग्रंथ।

—मुरलीधर जोशी तथा सेवाराम शर्मा : **अर्थशास्त्र :** लखनऊ, अपर इण्डिया पब्लिशिंग हाउस लि०, १९५१, पृ० ४३२, डि०, १० रु०, उ० प्र०, (५२)।

अर्थशास्त्र के सैद्धान्तिक पक्ष का विवेचन।

—मुरलीधर जोशी : **द्रव्य शास्त्र :** प्रयाग, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, २००५ वि०, पृ० ११७, ड० क्रा०, २.२५ रु०, उ० प्र०, (५२)।

द्रव्य, बैंक और देशी विनिमय के सिद्धान्तों का निरूपण, पारिभाषिक पदावली सहित।

—शंकरसहाय सक्सेना : **भारतीय ग्राम्य अर्थशास्त्र :** प्रयाग, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, २००५ वि०, पृ० ४९२, डि०, ७ रु०, उ० प्र०, (५१)।

बी० काम० तथा एम० ए० परीक्षा के लिए ग्रा... अर्थशास्त्र विषयक प्रश्न-पत्र के लिए लिखित भार... अर्थशास्त्र का सरल विवेचन।

—श्रीगोपाल तिवारी (डॉ०) : **भारतीय अर्थशास्त्र** कानपुर, गौतम ब्रदर्स, १९५३, पृ० ६८३, डि०, १०... उ० प्र०, (५५)।

भारतीय अर्थ-व्यवस्था के विभिन्न पहलुओं... अध्ययन तथा तत्सम्बन्धी समस्याओं का विवेचन।

—श्रीगोपाल तिवारी और रामचन्द्र द्विवेदी : **हमारे भो... की समस्या :** काशी, लेखक द्वारा, १९४९, पृ० ९६, डि... १·५० रु०, उ० प्र०, (५२)।

उत्पादन के दृष्टिकोण से खाद्य-समस्या पर विचा... कुछ मौलिक सुझावों सहित।

—सुधाकर पाण्डेय : **मुद्रा और बैंक :** वाराणसी, हि... प्रचारक पुस्तकालय, १९५५, पृ० ५८४, डि०, ६ ... उ० प्र०, (५५-५६)।

आधुनिक मुद्राशास्त्र तथा अधिकोष प्रणाली ... सम्यक् परिचय एवं विश्लेषण।

—हृषिकेशनारायण : **मुद्रा एवं मौद्रिक संस्थाओं का विश्लेषणात्मक अध्ययन :** पटना, पुस्तक भण्डार, १९... पृ० ३४१, डि०, ८ रु०, उ० प्र०, (५२)।

तीन खण्डों में मुद्रा एवं मौद्रिक संस्थाओं का विश्लेषण। पारिभाषिक पदावली एवं पटना यूनिवर्सिटी प्रश्न-पत्रों सहित। डिग्री कक्षाओं के लिए लिखित।

दण्ड-विधि

परिपूर्णानन्द वर्मा : **प्राणदण्ड :** झाँसी, मयूर प्रकाश... १९५४, पृ० २९२, ड० क्रा०, ५ रु०, उ० प्र०, (५५)।

प्राणदण्ड की प्रथा का इतिहास, समीक्षा तथा विवेचन।

—सिराजुद्दीन सिद्दिकी : **आंगुल्य छाप विमर्श :** वि० प्र... (५५-५६)।

समाज-कल्याण

—प्रेमचन्द्र श्रीवास्तव : **भारतीय औद्योगिक श्रमिकों ... सामाजिक बीमा :** महा० स०।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

न या आ क र्ष ण

संस्कार और स्फूर्तिदायी साहित्य

श्री खांडेकरजी की दो नवीन रचनाएँ

प्रकाशित हुई

१. सुख की खोज : (उपन्यास) मूल्य साढ़े चार रुपये

सुख किसमें है ?
सुख निरपेक्ष सेवा में है ।
सुख प्राण के लिये प्राण देने वाले मनुष्य से प्रेम करने में है ।
मनुष्य का सारा बल प्रेम देने और प्रेम लेने में है ।

२. तीसरा पहर : (लघुनिबन्ध-संग्रह) मूल्य चार रुपये

दिन के तीसरे पहर मनुष्य यदि क्षण-भर के लिए अन्तर्मुख हो जाय, तो बाढ़ आई नदी में तैरने वाले की भावनाओं का खासकर आधे से अधिक अन्तर तय कर लेने पर उस तैराक के मन में उठने वाले विविध विचारों का अल्लोल अपने हृदय में भी प्रतिध्वनित हो रहा है, ऐसा विश्वास होगा।

◆ ◆ ◆ ◆ ◆ ◆

खांडेकरजी की अन्य प्रकाशित रचनाएँ

१. उल्का	(उपन्यास)	रु० ६·००	**रूपक कथा**	
२. दो ध्रुव	,,	,, ६·००	कलिका	६·००
३. हरा चंपा	,,	,, ६·००		
४. दो मन	,,	,, ६·००	**ललित निबन्ध**	
५. सूना मन्दिर	,,	,, ४·५०	कल्पलता	५·००
६. महला प्रेम	,,	,, ४·५०	चाँदनी	६.००
७. झुलसी मंजरी	,,	,, ५·००	तीसरा पहर	५·००
८. रुपहले बादल	,,	,, ५·००		
९. क्रौंचवध	,,	,, ६·००	**कहानियाँ**	
१०. आँसू	,,	,, ६·००	प्रीति की खोज	५·००
११. ययाति	,,	(प्रेस में)	संध्यादीप	३·००

प्रकाशक—**देशमुख आणि कम्पनी, २२ कसबा, पूना—२**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संगीत के प्रकाशन

बाल संगीत शिक्षा भाग १ : अपर प्राइमरी सैक० के लिए ०·५०
बाल संगीत शिक्षा भाग २ : पाँचवीं, छठी कक्षा के लिए ०.७५
बाल संगीत शिक्षा भाग ३ : सातवीं, आठवीं कक्षा के लिए १.००
संगीत किशोर : नवीं, दसवीं कक्षा के लिए १.५०
संगीत शास्त्र : इण्टर तक की थ्योरी १.००
क्रमिक पुस्तक मालिका भाग १ : इण्टर तक के लिए १.००
क्रमिक पुस्तक मालिका भाग २, ३, ५ या ६ : आगामी कक्षाओं के लिए ८.००
क्रमिक पुस्तक मालिका भाग ४ : १०.००
संगीत सोपान : हाई स्कूल के प्रश्नोत्तर ३.००
संगीत विशारद : प्रथम से चौथे वर्ष की थ्योरी ५.००
संगीत सीकर : इण्टर स्टैण्डर्ड के प्रश्नोत्तर ५.००
संगीत अर्चना: क्रमिक पुस्तक भाग तीन की तानें ५.००
संगीत कादम्बिनी : क्रमिक पुस्तक भाग चार की तानें ५.००
भातखण्डे संगीत शास्त्र भाग १ : शास्त्रीय विवेचन ५.००
भातखण्डे संगीत शास्त्र भाग २ : शास्त्रीय विवेचन ६.००
भातखण्डे संगीत शास्त्र भाग ३ : शास्त्रीय विवेचन ६.००
भातखण्डे संगीत शास्त्र भाग ४ : शास्त्रीय विवेचन १५.००
मारिफुन्नगमात भाग १ : इण्टर की थ्योरी व प्रेक्टीकल ६.००
मारिफुन्नगमात भाग २ : विशारद की थ्योरी व प्रेक्टीकल ६.००
संगीत सागर : गायन, वादन, नृत्य शिक्षा ६.००
बेला विज्ञान : सचित्र वायलिन शिक्षा ४.००
सितार शिक्षा : सचित्र, सितार बजाने की शिक्षा २.५०
कलावन्तों की गायकी : शास्त्रीय रिकार्डों की स्वरलिपि ३.००
हमारे संगीत रत्न : ३४० कलाकारों की जीवनी १५.००

सहगल संगीत : सहगल के रिकार्डों की स्वरलिपि २.५०
बैंजो मास्टर : बैंजो बजाने की शिक्षा १.००
संगीत पद्धतियों का तुलनात्मक अध्ययन २.५०
सूर संगीत भाग१ : मय स्वरलिपि के ६० पद १.५०
सूर संगीत भाग २ : मय स्वरलिपि के ६० पद १.५०
ताल अंक : सचित्र ताल शिक्षा ४.००
ठुमरी अंक : ऊँचे कलाकारों की ठुमरियाँ २.५०
सन्त संगीत अंक : भजनों की स्वरलिपियाँ २.५०
राष्ट्रीय संगीत अंक : देश-प्रेम के गीतों की स्वरलिपि २.५०
राग अंक : सोदाहरण राग विवरण २.५०
वाद्य संगीत अंक : कई साजों को बजाना ३.००
बिलावल ठाठ अंक : ४० रागों के उदाहरण २.५०
कल्याण ठाठ अंक : २५ रागों के उदाहरण २.५०
भैरव ठाठ अंक : ३३ रागों के उदाहरण २.५०
पूर्वी ठाठ अंक : २७ रागों का उदाहरण २.५०
खमाज ठाठ अंक : ३३ रागों का उदाहरण २.५०
काफी ठाठ अंक : ५८ रागों का उदाहरण २.५०
नृत्य अंक : नृत्य विवरण ३.००
नृत्यशाला : नृत्य शिक्षा २.००
कथकलि नृत्यकला २.५०
नृत्य भारती : हाई स्कूल व इण्टर के लिए नृत्य शिक्षा ३.००
म्यूजिक मास्टर : हारमोनियम, तबला, बंशी शिक्षा २.००
महिला हारमोनियम गाइड १.५०
संगीत पारिजात : हिन्दी टीका सहित ४.००
स्वरमेल कलानिधि : हिन्दी टीका सहित १.००
संगीत दर्पण : हिन्दी टीका सहित २.००
फिल्म संगीत भाग २७वाँ : फिल्मी गाने की स्वरलिपि ४.००
आवाज सुरीली कैसे करें ? २.००
अप्रकाशित राग भाग १, २ ३ ४.५०
पिल्ला : 'काका' कवि की हास्य कविताएँ २.००
म्याऊँ " " २.००
काका की कचहरी " " ३.००

'संगीत' मासिक पत्र सन् १९३५ से बराबर निकल रहा है, वार्षिक मूल्य ६ रु०

पुस्तकों पर डाक खर्च अलग लगेगा

प्रकाशक : संगीत कार्यालय, हाथरस (उ० प्र०)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

—सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार : **समाज कल्याण तथा सुरक्षा** : देहरादून, विद्या विहार, १९५७, पृ० ५५२, डि०, १० रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

समाज-सेवकों के लिए प्रामाणिक विचारधारा देने एवं विश्वविद्यालयों में निर्धारित समाज-कल्याण विषय का अध्यापकों एवं विद्यार्थियों को बोध कराने के लिए लिखित ग्रंथ। श्रीमती दुर्गाबाई देशमुख के प्राक्कथन सहित।

शिक्षा

—ईश्वरचन्द्र शर्मा : **आधुनिक शिक्षा मनोविज्ञान** : दिल्ली, आत्माराम एण्ड सन्स, १९५३, पृ० १८८, डि०, ५ रु०, उ० प्र० तथा रा०, (५४-५५)।

शिक्षा-मनोविज्ञान के विभिन्न अंगों तथा नवीनतम सिद्धान्तों का सम्यक् विश्लेषण।

—रामखेलावन चौधरी : **शिक्षणविधियों की रूपरेखा** : लखनऊ, हिन्दी साहित्य भण्डार, १९५८, पृ० ६२४, ड० क्रा०, ८·७५ रु०, बि० रा० प०, पटना, (५७-५८)।

शिक्षा-जगत् में होने वाली प्राचीन और अर्वाचीन शिक्षण-विधियों एवं प्रयोगों का विस्तार से दिग्दर्शन।

—रामप्रसाद भटनागर : **शिक्षा में आँकड़ों का प्रयोग** : मुरादाबाद, मीनाक्षी प्रकाशन मन्दिर, १९५४, पृ० ९९, ड० क्रा०, ४.५० रु०, उ० प्र०, (५५)।

—वेणीमाधव शर्मा : **प्रौढ़ शिक्षा के प्रयोग और विधान** : बनारस, नन्दकिशोर एण्ड ब्रदर्स, १९५२, पृ० २६०, ड० क्रा०, ३.५० रु०, उ० प्र०, (५२-५३)।

एम० एड्० परीक्षा के दृष्टिकोण से लिखित प्रौढ़ों की शिक्षा के सम्बन्ध में कुछ मौलिक सुझावों सहित।

—वेणीमाधव शर्मा, (भूमिका लेखक माननीय सम्पूर्णानन्द) : **बच्चों की शिक्षा, एक जटिल समस्या** : काशी, पुस्तक भवन, २००१ वि०, पृ० ९६, ड० क्रा०, उ० प्र०, (५२)।

बालकों की शिक्षा-सम्बन्धी अनेक महत्त्वपूर्ण पहलुओं पर विचार।

—वेणीमाधव शर्मा : **रचनात्मक शिक्षा** : बनारस, नन्दकिशोर एण्ड ब्रदर्स, १९५०, पृ० २७७, ड० क्रा०, ३.५० रु०, उ० प्र०, (५२)।

१९ अध्यायों में रचनात्मक शिक्षा का संक्षिप्त सर्वांगीण विवेचन।

—वेणीमाधव शर्मा : **सामाजिक शिक्षा** : बनारस, नन्दकिशोर एण्ड ब्रदर्स, १९५०, पृ० २११, ड० क्रा०, २.५० रु०, उ० प्र०, (५२)।

—शम्भूनाथ झा : **भारतीय शिक्षा की प्रगति** : इलाहाबाद, रामनारायणलाल, १९५१, पृ० १५७, ड० क्रा०, २.५० रु०, उ० प्र०, (५२)।

भारतीय शिक्षा के क्रमिक विकास का संक्षिप्त विवरण। प्रशिक्षण कक्षाओं के पाठ्य-ग्रन्थ के रूप में लिखित।

—श्रीकृष्ण देव सरे : **बेसिक कलाकौशल** : वि० प्र०, (५४-५५)।

—सीताराम जायसवाल : **पश्चिमी शिक्षा का इतिहास** : बनारस, नन्दकिशोर एण्ड ब्रदर्स, १९५१, पृ० ६५०, (सचित्र), ड० क्रा०, ७.५० रु०, उ० प्र०, (५२)।

पश्चिमी देशों की शिक्षा का क्रमबद्ध इतिहास।

—सीताराम जायसवाल : **शिक्षाशास्त्र** : बनारस, नन्दकिशोर एण्ड ब्रदर्स, १९५७, पृ० ६७६, ड० क्रा०, ७ रु०, उ० प्र०, (५१)।

शिक्षाशास्त्र का सर्वांगीण विस्तृत विवेचन।

वाणिज्य-व्यापार

—कृष्णदत्त वाजपेयी : **भारतीय व्यापार का इतिहास** : मथुरा, राष्ट्रभाषा प्रकाशन, १९५१, पृ० ४१२, डि०, ७ रु०, बि० रा० प०, (५६-५७) तथा ना० प्र० स० काशी से भी पुरस्कृत।

भारतीय व्यापार के विकास, प्रसार और ह्रास का प्रामाणिक अद्यतन विवेचन।

प्रथाएँ, परम्पराएँ

—ब्रह्मदत्त दीक्षित तथा कृष्णा दीक्षित : **बनवासी भारत** : नागन्दा, पर्ण कुटीर प्रकाशन, २००४ वि०, पृ० १०४, डि०, (सचित्र), २.२५ रु०, वि० प्र०, (५४-५५)।

भारत की बनवासी जातियों के जीवन का सुन्दर चित्रण, आचार्य नरेन्द्र देव की भूमिका सहित।

—भगवानदास केला तथा अखिल विनय : **हमारी आदिम जातियाँ** : इलाहाबाद, भारतीय ग्रन्थमाला, १९५०, पृ० ३५४, ड० क्रा०, ३.५० रु०, उ० प्र०, (५२)।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विभिन्न ग्रादिम जातियों की सभ्यता, भाषाएँ, लोक-साहित्य, लोक-नृत्य, धर्म एवं त्योहार, संस्कार तथा संगठन ग्रादि की संक्षिप्त सारगभित विवेचना।

—सरोजनी देवी वैद्या (श्रीमती) : **महिला जीवन** : मेरठ, लेखिका द्वारा, १६४८, पृ० ११६०, ड० क्रा०, १६ रु०, उ० प्र०, (५०)।

स्त्री-जीवन को सफल व स्वस्थ बनाने का मार्ग-दर्शक एक महान् ग्रन्थ।

—सावित्री देवी वर्मा (श्रीमती) : **नारी का रूप-शृंगार** : दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, १६५५, पृ० २५६, (सचित्र), डि०, ६ रु०, उ० प्र०, (५६-५७)।

नारी के बाह्य रूप सँवारने के साथ ही उसके व्यक्तित्व, मानसिक एवं शारीरिक स्वास्थ्य एवं ग्राचरण के सौन्दर्य के महत्त्व का प्रतिपादक ग्रन्थ।

—सावित्रीदेवी वर्मा (श्रीमती) : **पारिवारिक समस्याएँ** : दिल्ली, ग्रात्माराम एण्ड सन्स, १६५७, पृ० ३६०, (सचित्र), डि०, ७·५० रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

ग्रसन्तुलित गार्हस्थ्य-जीवन में सामञ्जस्य लाने के लिए लेखिका के कुछ लिखित, व्यावहारिक सुझावों सहित। पारिवारिक जीवन को सफल बनाने के लिए सहायक पुस्तक।

पंजाबी के विख्यात नाटककार

हरसरणसिंह

के एकांकियों का हिन्दी में सर्वप्रथम प्रकाशन

जोत से जोत जले

इन नाटकों के विषय में श्री हरिकृष्ण प्रेमी कहते हैं—"मैंने जब पुस्तक को पढ़ना प्रारम्भ किया उस समय मैं समझता था कि नाटकों में कोई विशेष बात न होगी; किन्तु एक के बाद एक पृष्ठ पढ़ता गया ग्रौर मुझे उनमें रस मिला।···मैंने इन्हें काफी ग्रच्छा पाया। इन नाटकों में लेखक ने जो चरित्र उठाए हैं, जो घटनाएँ ग्रंकित की हैं ग्रौर जो प्रभाव डालना चाहा है, उसमें उन्हें पूर्ण सफलता मिली है। मैं पंजाबी के नाटककार हरसरणसिंह का हिन्दी भाषा के क्षेत्र में ग्रागमन ग्रभिनन्दनीय समझता हूँ।"

मूल्य २·५०

मञ्जीत पब्लिशर्स

माई हीराँ गेट, जालंधर

भाषाशास्त्र

भाषाशास्त्र (सामान्य)

—कपिलदेव द्विवेदी : **ग्रर्थ विज्ञान ग्रौर व्याकरण दर्शन** : इलाहाबाद, हिन्दुस्तानी एकेडेमी, १६५१, पृ० ३६७, रॉ०, १२ रु०, उ० प्र०, (५२)।

वाक्तत्त्व, ग्रर्थतत्त्व एवं उसके सम्बन्ध के विषय में ग्रत्यन्त सूक्ष्म एवं स्पष्ट ग्रभिव्यक्ति। प्रयाग विश्वविद्यालय द्वारा डी० फिल्० के लिए स्वीकृत प्रबन्ध।

—कपिलदेव सिंह (डॉ०) : **व्रजभाषा बनाम खड़ीबोली** : ग्रागरा, विनोद पुस्तक मन्दिर, १६५६, पृ० ३४०, डि०, ८ रु०, उ० प्र०, (५६-५७)।

कविता के माध्यम से गत सौ वर्षों में व्रजभाषा ग्रौर खड़ीबोली सम्बन्धी विवाद की रूपरेखा। ग्रागरा विश्वविद्यालय द्वारा पी-एच० डी० के लिए स्वीकृत प्रबन्ध।

—कान्ति श्रीवास्तव (श्रीमती) : **ग्रर्थ ध्वनि एवं विचार** : (५४-५५)।

—किशोरीदास वाजपेयी : **राष्ट्रभाषा का प्रथम व्याकरण** : कलकत्ता, जनवाणी प्रकाशन, १६४६, पृ० १६८, ड० क्रा०, ४ रु०, उ० प्र०, (५१)।

विशेषत: ग्रहिन्दी-भाषियों के लिए हिन्दी-व्याकरण की प्रामाणिक पुस्तक।

—किशोरीदास वाजपेयी : **हिन्दी निरुक्त** : कलकत्ता, जनवाणी प्रकाशन, २००६ वि०, पृ० १२४, ड० क्रा०, २·२५ रु०, उ० प्र०, (५१)।

हिन्दी में शब्द-विकास के नियमों का प्रथम मौलिक प्रयास।

—तेस्सितोरी, एल० पी०, डॉ०, (मू० ले०), ग्रनु० नामवर सिंह : **पुरानी राजस्थानी** : काशी, नागरी प्रचारिणी सभा, २०१२ वि०, पृ० २१२, डि०, ४ रु०, उ० प्र०, (५५-५६)।

डॉ० तेस्सितोरी के पुरानी राजस्थानी पर खोजपूर्ण निबन्ध का भाषान्तर, लेखक के संक्षिप्त परिचय सहित।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

—बालगोविन्द मिश्र : **हिन्दी भाषा और नागरी लिपि का विकास** : उ० प्र०, (५७-५८)।

—ब्रजराज चौधरी : **चित्रों में १, २, ३, ४** : के० स०, (५८)।

—भोलानाथ तिवारी : **शब्दों का जीवन** : दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, पृ० ११५, डि० क्रा०, २ रु०, उ० प्र०, (५५)।

शब्दों के आन्तरिक और बाह्य परिवर्तनों से सम्बन्धित भाषा-वैज्ञानिक तथ्यों का मनोरंजक अध्ययन।

—भोलाशंकर व्यास (डॉ०) : **संस्कृत भाषा का शास्त्रीय अध्ययन** : वाराणसी, भारतीय ज्ञानपीठ, १९५७, पृ० ३३८, डि० क्रा०, ५ रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

भाषा-विज्ञान की दृष्टि से आदि भाषा संस्कृत का सम्यक् अध्ययन। साथ-साथ भारोपीय भाषा-विज्ञान का तुलनात्मक अध्ययन भी।

—युधिष्ठिर मीमांसक : **संस्कृत व्याकरण का इतिहास** : देहरादून, वैदिक साधन आश्रम, २००७ वि०, पृ० ४५८, डि०, १० रु०, उ० प्र०, (५२)।

१७ अध्यायों में संस्कृत व्याकरण के इतिहास का प्रामाणिक विवेचन।

—रामचन्द्र वर्मा : **कोश कला** : बनारस, साहित्यरत्न माला कार्यालय, २००६ वि०, पृ० १५६, डि० क्रा०, १.५० रु०, उ० प्र०, (५५)।

शब्द-कोश-रचना की कार्य-प्रणाली, नियम एवं सिद्धान्त।

—रामचन्द्र वर्मा, (प्रस्तावना—श्रीप्रकाश राज्यपाल): **शब्द साधना** : बनारस, साहित्य रत्नमाला कार्यालय, २०१२ वि०, पृ० ३७६, डि० क्रा०, ५ रु०, उ० प्र०, (५५-५६)।

आधुनिक दृष्टिकोण से हिन्दी के कुछ शब्दों के पर्यायों के सूक्ष्म प्रयुक्त शब्दों के अर्थ-भेदों का निरूपण, उदाहरण एवं व्याख्या सहित। ४१ पृष्ठों की अनुक्रमणिका अंग्रेज़ी पर्याय सहित। हिन्दी शब्दों के समानार्थ अंग्रेजी शब्दावली भी।

—सत्यभक्त, स्वामी : **मानव भाषा** : वर्धा, सत्याश्रम, १९४७, पृ० १९४, डि० क्रा०, २ रु०, उ० प्र०, (५२-५३)।

मनुष्य-मात्र के लिए सरल और नई भाषा का प्रतिपादन।

—सरयूप्रसाद अग्रवाल (डॉ०) : **प्राकृत विमर्श** : लखनऊ, लखनऊ विश्वविद्यालय, २००९ वि०, पृ० १०९, डि० क्रा०, ४.५० रु०, उ० प्र० (५३)।

प्राकृत भाषाओं का संक्षिप्त परिचय।

—सुनीतिकुमार चाटुर्ज्या (डॉ०) : **भारतीय आर्य भाषा और हिन्दी** : दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, १९५७, पृ० २६४ डि०, ७.२५ रु०, उ० प्र०, (५५)।

भारत में आर्य भाषा के विकास और भारत की राष्ट्र-भाषा हिन्दी के रूप में हिन्दी पर क्रमशः चार-चार व्याख्यानों का पुनर्निरीक्षित एवं विस्तृत संकलन।

—सुनीतिकुमार चाटुर्ज्या : **राजस्थानी भाषा** : उदयपुर, राजस्थान विश्व विद्यापीठ, १९४९, पृ० ८९, डि० क्रा०, २.५० रु०, ना० प्र० सभा, (२००७ वि०)।

राजस्थानी भाषा सम्बन्धी लेखक के तीन भाषणों का संग्रह।

—हरिहरनिवास द्विवेदी, (भू० ले० वासुदेवशरण अग्रवाल) : **मध्यदेशीय भाषा** : ग्वालियर, विद्या मन्दिर प्रकाशन,

अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति-प्राप्त हिन्दी प्रकाशन

मानस की (रूसी) भूमिका

मूल लेखक—स्व० प्रोफेसर ए० पी० वरान्निकोव
अनुवादक—डॉ० केसरी नारायण शुक्ल, डी० लिट्०

भूमिका लेखक—महापण्डित राहुल सांकृत्यायन

'रामचरितमानस' के रूसी रूपान्तर के भूमिका भाग का हिन्दी अनुवाद।

इस पर उत्तर प्रदेशीय सरकार ने अनुवादक को ५००) का पुरस्कार दिया है। **मूल्य ६.००**

आज ही मँगाइए।

पता—

हिन्दी-साहित्य भण्डार,
गंगाप्रसाद रोड, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२०१२ वि०, पृ० २४३, डं० क्रा०, ५ रु०, उ० प्र०, (५५-५६)।

मध्यदेशीय भाषा 'ग्वालियरी हिन्दी' का विश्लेषणात्मक अध्ययन।

शुद्ध विज्ञान

शुद्ध विज्ञान, सामान्य

—ओमप्रकाश : **आकाश की बातें** : नई दिल्ली, सस्ता साहित्य मण्डल, १९५७, पृ० ३६, डं० क्रा०, (सचित्र), ३७ न० पै०, के० स० जन सा० प्रति०, (५७)।

तारों और नक्षत्रों आदि के विषय में सरल रोचक वर्णन।

—उमाशंकर : **साइंस की कहानियां** : इलाहाबाद, किताबिस्तान, १९४८, पृ० १३३, फु० स्के०, (सचित्र), ३.७५ रु०, के० स० बाल सा० प्रति०, (५६)।

कहानियों के रूप में दुनिया और उसके जीवन, बनावट और नियमों का परिचय।

—गणपति चतुर्वेदी : **जीने के लिए** : इलाहाबाद, किताब महल, १९५२, पृ० १८८, डं० क्रा०, २ रु०, उ० प्र०, (५३)।

भयानक, संक्रामक एवं छूत के रोगों से बचने के लिए वैज्ञानिकों की विविध खोजों का वर्णन।

—जगपति चतुर्वेदी : **पेनिसिलिन की कहानी** : प्रयाग, किताब महल, १९५७, पृ० १७८, डं० क्रा०, २ रु०, उ० प्र०, (५३)।

रसायन-चिकित्सा के विकास तथा पेनिसिलिन के आविष्कार की कथा।

—जगपति चतुर्वेदी : **वैज्ञानिक आविष्कार, प्रथम भाग** : प्रयाग, किताब महल, १९५३, पृ० २१०, डं० क्रा०, (सचित्र), २ रु०, उ० प्र०, (५३)।

पुरातन तथा नूतन विविध वैज्ञानिक खोजों की विशद कहानियां।

—जगपति चतुर्वेदी : **वैज्ञानिक आविष्कार, द्वितीय भाग** : इलाहाबाद, किताब महल, १९५६, पृ० १८८, (सचित्र), डं० क्रा०, २ रु०, उ० प्र०, (५३)।

पुरातन तथा नूतन कुछ वैज्ञानिक खोजों की विशद कहानियाँ।

—मन्मथनाथ गुप्त : **आदमी का जन्म** : दिल्ली, आत्माराम एण्ड संस, १९५५, पृ० ५२, फु० स्के०, (सचित्र), १.२५ रु०, के० स०।

बालकों के लिए विज्ञान के सरल ज्ञान का परिचय।

—रामचन्द्र तिवारी तथा सिद्धि तिवारी (श्रीमती) : **विज्ञान और सभ्यता** : दिल्ली, आत्माराम एण्ड सन्स, १९५६, पृ० १९१, (सचित्र), डि०, ५ रु०, उ० प्र०, (५६-५७)।

विज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों एवं प्रमुख आविष्कारों के विकास का सरल संक्षिप्त परिचय।

—लालकृष्ण अग्रवाल : **मानव और मशीन** : प्रथम खण्ड, बनारस, लेखक द्वारा, १९५३, पृ० ३१९, डं० क्रा०, २.५० रु०, उ० प्र०, (५५)।

मशीन के क्रम-विकास का विवेचन एवं उसका मानव पर प्रभाव।

—सत्यप्रकाश (डॉ०) : **कुछ आधुनिक आविष्कार** : इलाहाबाद, हिन्दुस्तानी एकेडेमी, १९५४, पृ० २९४, डं० क्रा०, (सचित्र), ५ रु०, उ० प्र०, (५५-५६)।

१९ शीर्षकों के अन्तर्गत प्रमुख आधुनिक आविष्कारों का रोचक परिचय।

—सत्यप्रकाश (डॉ०) : **वैज्ञानिक विकास की भारतीय परम्परा** : पटना, विहार राष्ट्रभाषा परिषद्, २०१० वि०, पृ० २६८, रॉ०, ८ रु०, उ० प्र०, (५५)।

वैदिक काल से अब तक के भारतीय विज्ञान के विभिन्न अंगों में प्राप्य सामग्री का समन्वित रूप। गणित, ज्योतिष, रसायन, आयुर्वेद आदि का सर्वाङ्गीण अध्ययन।

—हरिभगवानन : **दैनिक जीवन में विज्ञान** (रसायन शास्त्र) : लखनऊ, अशोक प्रकाशन, १९५६, पृ० २०६, डं० क्रा०, ३.५० रु०, उ० प्र०, (५६-५७)।

रसायन के जीवन सम्बन्धी उपयोगों का सरल भाषा में प्रतिपादन।

गणित

—व्रजमोहन (डॉ०) : **गणितीय कोश** : बनारस, चौखम्भा विद्या भवन, १९५४, पृ० ६८९, डं० क्रा०, ९ रु०, उ० प्र०, (५५-५६)।

गणितीय परिभाषा और शब्दावली।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज्योतिष

—गोरखप्रसाद (डॉ०) : **नीहारिकाएं** : पटना, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, २०११ वि०, पृ० ७१, रॉ०, (सचित्र), ४.२५ रु०, उ० प्र०, (५५-५६)।

नीहारिकाओं और विश्व-रचना के सम्बन्ध में आधुनिक खोजों एवं निर्माण का संक्षिप्त परिचय।

—गोरखप्रसाद (डॉ०) : **सरल गणित ज्योतिष** : उ० प्र०, (५६-५७)।

—नेमिचन्द्र शास्त्री : **भारतीय ज्योतिष** : काशी, भारतीय ज्ञानपीठ, १९५३, पृ० ६२२, ड० क्रा०, ६ रु०, उ० प्र० (५३)।

भारतीय ज्योतिष का सर्वाङ्गीण अध्ययन।

—सन्तोषनारायण नौटियाल : **चन्दा मामा का देश** : दिल्ली, आत्माराम एण्ड सन्स, १९५५, पृ० १०६, फु० स्के०, (सचित्र), ४ रु०, के० स० बाल सा० प्रति०, (५४)।

चन्द्रमा तथा अन्य ग्रह, नक्षत्र, नदी, झील, सागर तथा अन्य ग्रहों के विषय में बालोपयोगी सरल भाषा एवं सुन्दर शैली में विवेचन।

पदार्थ विज्ञान

—जगपति चतुर्वेदी : **बिजली की लीला** : इलाहाबाद, किताब महल, १९५१, पृ० १६८, ड० क्रा०, २ रु० उ० प्र०, (५२)।

बिजली के सम्बन्ध में एक परिचयात्मक पुस्तक।

—निहालकरण सेठी : **प्रकाश विज्ञान** : दिल्ली, प्रीमियर पब्लिशिंग कम्पनी, १९५५, पृ० ५२३, डि०, (सचित्र), १० रु०, बि० रा० प०, (५६-५७)।

'प्रकाश विज्ञान' पर बी० एस-सी० कक्षा के लिए पाठ्य-ग्रन्थ के रूप में उपयोगी ग्रन्थ।

—ब्रह्मानन्द गुप्त तथा नरेश वेदी : **प्रकाश की बातें** : दिल्ली, सस्ता साहित्य मण्डल, १९५७, पृ० ४४, फु० स्के०, (सचित्र), १.५० रु०, के० स० बाल सा० प्रति०, (५८)।

प्रकाश के विषय में जानने योग्य आवश्यक बातें। बालोपयोगी सरल भाषा और रोचक शैली।

—भगवतीप्रसाद श्रीवास्तव : **घरेलू बिजली** : वाराणसी, ज्ञान मण्डल लि०, २०१४ वि०, पृ० १०५, फु० स्के०, (सचित्र), ४ रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

प्रत्येक नागरिक के लिए बिजली के सम्बन्ध में साधारण जानकारी के लिए लिखित।

रसायनशास्त्र

—सत्यप्रकाश (डॉ०) : **सामान्य रसायनशास्त्र** : प्रयाग, भारती भण्डार, २००८ वि०, पृ० ११६४, डि०, १४ रु०, हि० सा० स० द्वारा गोविन्दराम सेक्ससरिया विज्ञान पुर०, (२००८ वि०)

भारतीय विश्वविद्यालयों की बी० एस-सी० कक्षा के विद्यार्थियों के लिए लिखित, अकार्बनिक रसायन पर प्रामाणिक ग्रन्थ।

भू-विज्ञान

—जगपति चतुर्वेदी : **ज्वालामुखी** : प्रयाग, किताब महल, १९५२, पृ० २१६, ड० क्रा०, २ रु०, उ० प्र०, (५२-५३)।

ज्वालामुखी सम्बन्धी ज्ञातव्य बातों का रोचक वर्णन।

—जगपति चतुर्वेदी : **भूगर्भ विज्ञान** : प्रयाग, किताब महल, १९५२, पृ० २४०, ड० क्रा०, (सचित्र), २ रु०, उ० प्र०।

धरती के निर्माण, अन्तर्भाग तथा पपड़ी की रचना एवं अनेक युगों से होते आने वाले परिवर्तन आदि का रोचक वर्णन।

पुरातन जीव-विज्ञान

—ऋषिदेव विद्यालंकार : **मानव विज्ञान** : बि० रा० प०, (५४-५५)।

—दयानन्द पन्त : **विकासवाद** : इलाहाबाद, हिन्दुस्तानी एकेडेमी, १९५१, पृ० १२०, ड० क्रा०, २.२५ रु०, उ० प्र०, (५२)।

डार्विन के विकासवाद का संक्षिप्त परिचय, पारिभाषिक वैज्ञानिक पदावली सहित।

वनस्पति विज्ञान

—जगपति चतुर्वेदी : **वनस्पति की कहानी** : प्रयाग, किताब महल, १९५१, पृ० २३९, ड० क्रा०, (सचित्र), २ रु०, उ० प्र०, (५२-५३)।

वनस्पति-जगत् का संक्षिप्त रोचक वर्णन।

जन्तु विज्ञान

—जगपति चतुर्वेदी : **कीट-पतंगों का संसार** : इलाहाबाद,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे नये प्रकाशन

डॉ० गोविन्द चातक के लोक-साहित्य सम्बन्धी दो संचयन

गढ़वाली लोक-गाथाएं ५)

मूल, हिन्दी अनुवाद, टिप्पणियों और विशद भूमिका सहित पवाड़े, धार्मिक, पौराणिक तथा सामाजिक कथा-गीत

सपना मुस्कराया १)

गढ़वाल की सरस और सजीव लोक-कथाओं का बालकों, वयस्कों और लोक-साहित्य के रसज्ञों के लिए अनुपम संकलन

"चातकजी ने गढ़वाल के लोक-गीतों के संकलन, सम्पादन और अध्ययन में बहुत समय लगाया है। उनकी कृतियों से लोक-साहित्य के प्रेमियों को बहुत लाभ हुआ है। उन्हीं जैसे सहृदय साहित्यकार लोक भारती के सच्चे पारखी हो सकते हैं।" —**राहुल सांकृत्यायन**

"आपका संग्रह लोक-गीतों के प्रति नई आस्था प्रदान करता है।" —**डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल**

उपन्यास : तूफ़ान के बाद

ले० राजेन्द्रकुमार मू० ४)

आज़ादी के बिगुल की आवाज़ उन गाँवों में भी गूँज उठी है, जहाँ पुरानी मान्यताएँ हैं, गन्दे रस्मो-रिवाज हैं, जिन्हें अभी इस युग की हवा तक नहीं लग पाई।

प्रस्तुत उपन्यास ग्रामीण वातावरण पर एक सफल कृति है।

ह मा रे अ न्य प्र मु ख प्र का श न

● उपन्यास—

भटकती आत्मा : कंचनलता सब्बरवाल ३॥)
स्वतन्त्रता की ओर : कंचनलता सब्बरवाल ३)
ममता : १) **मीठा जहर :** १)

● कविता :

सुरभि १।) **नया स्वर्ग** १) **विभूति** १॥)

● बाल साहित्य :

नई कहानियाँ [चीनी लोक-कथाएँ] १)

● अन्य :

श्रीमद्वाल्मीकि रामायण, तीन खण्ड १६॥)
महिला सुबोधिनी : राजबहादुरसिंह २॥)

मोहिनी प्रकाशन

१७, राजपुर रोड, देहरादून

किताब महल, १९५७, पृ० १९५, (सचित्र), डि०, ४ रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

संसार के कीड़े-मकोड़ों की विविध जातियों का वर्णन।

—जगपति चतुर्वेदी : **चींटी-चींटों की दुनियाँ** : इलाहाबाद, किताब महल, १९५५, पृ० १५०, ड० क्रा०, (सचित्र), २ रु०, उ० प्र०, (५५-५६)।

चींटी-चींटों की अद्भुत जीवन की कहानी।

—जगपति चतुर्वेदी : **जन्तुओं का गृह-निर्माण** : इलाहाबाद, किताब महल, १९५५, पृ० १६०, ड० क्रा०, (सचित्र), २ रु०, उ० प्र०, (५५-५६)।

विविध जन्तुओं, कीड़े-मकोड़ों, पक्षियों आदि द्वारा सन्तानोत्पादन या निवास के लिए गृह बनाने का वर्णन।

—जगपति चतुर्वेदी : **जन्तु बिल कैसे बनाते हैं** : प्रयाग, किताब महल, १९५५, पृ० १५९, ड० क्रा०, २ रु०, उ० प्र०, (५५-५६)।

अपने रहने या शिशु उत्पन्न करने के लिए जन्तुओं द्वारा विविध प्रकार के बिल बनाने का वर्णन।

—जगपति चतुर्वेदी : **जलचर पक्षी** : इलाहाबाद, किताब महल, १९५४, पृ० १६४, ड० क्रा०, (सचित्र), २ रु०, उ० प्र०, (५५)।

हंस, बगुला, बत्तख, आदि पक्षियों के आकार-प्रकार, रंग-रूप आदि का वर्णन।

—जगपति चतुर्वेदी : **जीव-जन्तुओं की बुद्धि** : इलाहाबाद, किताब महल, १९५७, पृ० १९२, डि०, ४ रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

वैज्ञानिकों की खोजों के आधार पर जन्तुओं की बुद्धि के सम्बन्ध में कुछ ज्ञातव्य बातों की चर्चा।

—जगपति चतुर्वेदी : **वन-उपवन के पक्षी** : इलाहाबाद, किताब महल, १९५४, पृ० १७२, ड० क्रा०, (सचित्र), २ रु०, उ० प्र०, (५५)।

—जगपति चतुर्वेदी : **वन-वाटिका के पक्षी** : इलाहाबाद, किताब महल, १९५४, पृ० १४३, ड० क्रा०, (सचित्र), २ रु०, उ० प्र०, (५५)।

—जगपति चतुर्वेदी : **उथले जल के पक्षी** : इलाहाबाद, किताब महल, १९५४, पृ० १४७, ड० क्रा०, २ रु०, उ० प्र०, (५५)।

—जगपति चतुर्वेदी : **लुप्त जन्तु** : इलाहाबाद, किताब महल,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१९५४, द्वि० सं०, पृ० १६०, डि० क्रा०, (सचित्र), २ रु०, उ० प्र०, (५१-५२)।

५० करोड़ वर्ष से पूर्व आज तक के उन जन्तुओं का वर्णन जो अब विलुप्त हो चुके हैं।

—जगपति चतुर्वेदी : **संसार के सरीसृप** : इलाहाबाद, किताब महल, १९५७, पृ० २००, डि०, (सचित्र), ४ रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

रेंगने वाले जानवरों—कछुए, मगर, सांप, गोह, गिरगिट, सांड़ा आदि—का सचित्र वर्णन।

—जगपति चतुर्वेदी : **संसार के सर्प** : इलाहाबाद, किताब महल, १९५७, पृ० १९२, डि०, ४ रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

संसार के विभिन्न प्रदेशों में पाए जाने वाले सांपों के वंश और मुख्य जातियों-प्रजातियों का सामान्य एवं सचित्र वर्णन।

—जगपति चतुर्वेदी : **स्तनपोषी जन्तु** : इलाहाबाद, किताब महल, १९५५, पृ० २१६, डि० क्रा०, २ रु०, उ० प्र०, (५५-५६)।

शिशु-जीवन में माता का दूध पीकर पोषण पाने वाले जन्तुओं की कहानी।

—जगपति चतुर्वेदी : **हिंसक पशु** : इलाहाबाद, किताब महल, १९५५, पृ० १७५, डि० क्रा०, (सचित्र), २ रु०, उ० प्र०, (५५-५६)।

विविध हिंसक स्तनपोषी जन्तुओं का वर्णन।

—महेश्वरसिंह सूद (डॉ०) : **जन्तु विज्ञान शब्दकोष** : आगरा, आगरा बुक स्टोर, १९५६, पृ० ५८५, डि० क्रा०, १२ रु०, बि० रा० प०, (५६-५७)।

वनस्पति, चिकित्सा तथा विज्ञान आदि के पारिभाषिक शब्द।

—रुद्रदत्त : **हमारे पक्षी** : दिल्ली, राजपाल एण्ड सन्स, पृ० २४, फु०स्के०, (सचित्र), ७५ न०पै०, के० स० बाल सा० प्रति०, (५८)।

कुछ भारतीय पक्षियों पर बालोपयोगी कविताएँ।

—सुरेशसिंह कालाकांकर : **हमारे जानवर** : कालाकांकर प्रकाशन गृह, १९५४, पृ० ३०३, फु०स्के०, ४ रु०, उ० प्र०, (५५)।

विभिन्न वर्गों के जानवरों का सुन्दर परिचय।

इस मास के प्रकाशन

१. पार्वती

श्री उदयशंकर भट्ट का नवीनतम सामाजिक नाटक, जिसमें एक आधुनिक नारी तथा एक ग्रामीण माता का चरित्र बड़े ही स्वाभाविक ढंग से चित्रित किया गया है।

मूल्य १·२५

२. विदा

प्रसिद्ध नाटककार श्री हरिकृष्ण प्रेमी का नवीनतम ऐतिहासिक नाटक। नाट्यकला की दृष्टि से प्रेमीजी के पहले नाटकों से बहुत उत्कृष्ट। **मूल्य १·७५**

३. पूर्व-भारतेन्दु नाटक-साहित्य

डॉ० सोमनाथ गुप्त का नवीन खोजपूर्ण ग्रन्थ : अपने विषय की एकमात्र पुस्तक, जिसमें लेखक ने हिन्दी के प्रथम मौलिक नाटक से लेकर भारतेन्दु-युग के प्रारम्भ तक के नाटक-साहित्य का आलोचनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया है। **मूल्य ५·००**

४. प्रसाद काव्य विवेचन

लेखक डॉ० हरदेव बाहरी। पुस्तक में प्रसाद की समस्त काव्य-कृतियों का सर्वाङ्गीण परिचय तथा विवेचन दिया गया है। प्रसाद-काव्य-सम्बन्धी लेखक का दृष्टिकोण अपना है, जो पुस्तक की विशेषता है।

मूल्य २·५०

५. चांद से नीचे

श्री रामावतार चेतन की सीधी-सादी भाषा में चुभती हुई प्रयोगवादी कविताएँ। **मूल्य ३·००**

मिलने का पता :

हिन्दी भवन

जालन्धर, इलाहाबाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यावहारिक विज्ञान

चिकित्सा

—अत्रिदेव विद्यालंकार, : **क्लीनिकल मेडिसन** : बनारस, मोतीलाल बनारसीदास, १९५४, पृ० ९१५, ड० क्रा०, १२.५० रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

आधुनिक चिकित्सा-विज्ञान के आधार पर भारतीय दृष्टिकोण से लिखा गया, रोगों की पहचान, पूर्व-कथन, और निदान सम्बन्धी उत्कृष्ट ग्रन्थ।

—अत्रिदेव विद्यालंकार : **चरकसंहिता का अनुशीलन** : बनारस, भार्गव पुस्तकालय, १९५५, पृ० १७९, ड० क्रा०, २ रु०, उ० प्र०, (५५-५६)।

स्नातकोत्तर परीक्षा एवं अनुसंधान के लिए उपयोगी ग्रन्थ।

—अत्रिदेव गुप्त : **भैषज्य कल्पना** : प्रयाग, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, २००८ वि०, पृ० १७५, ड० क्रा०, १.७५ रु०, उ० प्र०, (५२)।

आयुर्वेद के पाठ्य-क्रम में निर्धारित 'भैषज्य कल्पना' विषय पर स्वतन्त्र पुस्तक।

—अत्रिदेव गुप्त : **स्त्रियों का स्वास्थ्य व रोग** : काशी विश्वविद्यालय, लेखक द्वारा, १९५१, पृ० १७२, ड० क्रा०, ३ रु०, उ० प्र०, (५२)।

स्त्रियों के स्वास्थ्य एवं रोगों के सम्बन्ध में अनेक ज्ञातव्य बातें।

—अत्रिदेव गुप्त, (भू० ले० डॉ० राजेन्द्रप्रसाद) : **हमारे भोजन की समस्या** : बम्बई, निर्णय सागर प्रेस, १९४८, पृ० १०२, ड० क्रा०, १.७५ रु०, उ० प्र०, (५२) तथा भारतीय विद्या भवन बम्बई से भी पुरस्कृत।

स्वास्थ्य की दृष्टि से खाद्य-पदार्थों के गुणागुण पर विचार।

—अत्रिदेव विद्यालंकार, (भू० ले० हजारीप्रसाद द्विवेदी) : **संस्कृत साहित्य में आयुर्वेद** : काशी, भारतीय ज्ञानपीठ, १९५६, पृ० २४०, ड० क्रा०, ३ रु०, उ० प्र०, (५६-५७)।

आयुर्वेद के दृष्टिकोण से संस्कृत साहित्य का अध्ययन। संस्कृत साहित्य में वनस्पतियों एवं आयुर्वेद साहित्य में काव्य का वर्णन।

—अन्नपूर्णा देवी : **स्वास्थ्य प्रवेशिका** : वि० प्र०, (५४-५५)।

—अवधबिहारी अग्निहोत्री : **पंचविध कषाय कल्पना विज्ञान** : बनारस, चौखम्भा विद्या भवन, पृ० १०६, ड० क्रा०, १.५० रु०, उ० प्र० आयुर्वेद तथा तिब्बी एकेडेमी, (५८)।

पंचविध कषायों एवं उनके अन्तर्भूत उपकषायों का प्राच्य, पाश्चात्य तथा यूनानी मतानुसार विवेचन।

—फुंदनलाल (डॉ०) : **आयुर्वेद प्राकृतिक चिकित्सा** : उ० प्र०, (५५-५६)।

—चतुरसेन शास्त्री : **हमारा शरीर** : दिल्ली, राजपाल एण्ड सन्स, १९५६, पृ० ३२, फु० स्के०, ७५ न० पै०, के० स० अ० जन सा० प्रति०, (५७)।

सरल भाषा में शरीर और उसकी क्रियाओं का परिचय (प्रौढ़ों के लिए उपयोगी)।

—तरुण भाई : **सफाई विज्ञान और शास्त्र** : वाराणसी, सर्वोदय साहित्य प्रकाशन, १९५७, पृ० १२८, ड० क्रा०, १ रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

सफाई के सम्बन्ध में वैज्ञानिक अध्ययन, गांधीजी एवं विनोबाजी के सफाई सम्बन्धी विचारों सहित।

—नेकीराम गुप्ता : **मानव शरीर** : के० स०, (५४)।

—पुरुषोत्तमलाल चोपड़ा : **संतति निग्रह क्यों और कैसे** : वि० प्र०।

—प्रकाशचन्द्र यादव : **स्वास्थ्य शिक्षा और व्यक्तिगत व्यायाम** : प्रयाग, प्रमोद पुस्तक माला, १९५१, पृ० ३४४, ड० क्रा०, (सचित्र), ६ रु०, उ० प्र०, (५१)।

स्वास्थ्य एवं व्यायाम विषयक सचित्र एवं सुबोध वर्णन।

—प्रभाकर जनार्दन देशपांडे : **शल्यतन्त्र में रोगी परीक्षा** : बनारस, विजय कुमार एण्ड ब्रदर्स, १९५५, पृ० २१६, डि०, ७ रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

शल्यतंत्र की कई पुस्तकों का, लेखक के गहन अनुभवों का तथा शल्य परीक्षा के कुछ व्याख्यानों का एक प्रतिरूप। पारिभाषिक शब्दावली सुश्रुत के आधार पर।

—प्रियव्रत शर्मा : **अभिनव शरीर क्रिया विज्ञान** : बनारस, चौखम्भा विद्या भवन, पृ० ६४१, ड० क्रा०, ७.५० रु०,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उ० प्र०, आयुर्वेद तथा तिब्बी एकेडेमी, लखनऊ, (५५)।

आधुनिक शरीर-क्रिया-विज्ञान के सम्पूर्ण विषयों का वैज्ञानिक संकलन।

—प्रियव्रत शर्मा : **द्रव्य गुण विज्ञान :** बनारस, चौखम्भा विद्या भवन, पृ० ११८६, डि०, १८ रु०, उ० प्र० आयुर्वेद तथा तिब्बी एकेडेमी, लखनऊ, (५१)।

आयुर्वेदीय द्रव्य-शास्त्र के मौलिक सिद्धांतों का वैज्ञानिक विवेचन एवं औषध द्रव्यों की व्याख्या।

—प्रियव्रत शर्मा : **रोगी परीक्षा विधि :** बनारस, चौखम्भा संस्कृत विद्या भवन, १९५७, पृ०४४८, ड०क्रा०,(सचित्र), उ० प्र० आयुर्वेद तथा तिब्बी एकेडेमी (५८)।

रोगी-परीक्षा-विधियों का विस्तृत विवेचन।

—फुन्दनलाल (डॉ०) : **यज्ञ चिकित्सा :** जबलपुर, यज्ञ चिकित्सा सेनीटोरियम, १९४६, पृ० ३२८, ड० क्रा०, ५ रु०, उ० प्र०, (५१)।

क्षय रोग की प्राकृतिक चिकित्सा का प्रतिपादन।

—बालकृष्ण मिश्र : **होमियोपैथिक चिकित्सा विज्ञान :** बनारस, श्रीकृष्ण होमियोपैथिक औषधालय, ड० क्रा०, उ० प्र०, (५१)।

होमियोपैथिक का चिकित्सा-विज्ञान का ग्रन्थ।

—भास्कर गोविन्द घाणेकर : **औपसर्गिक रोग, २ भागों में :** काशी वि० वि०, लेखक द्वारा, १९९४ वि०, पृ० ७६८, ड० क्रा०, प्र० भा० ३.५० रु०, द्वि० भा० ४ रु०, ना० प्र० सभा, काशी।

औपसर्गिक रोगों का सर्वाङ्गीण विवेचन। टिप्पणी एवं समश्लोकी आयुर्वेद सहित।

—भास्कर गोविन्द घाणेकर : **मूत्र के रोग :** बनारस, लेखक द्वारा, २०११ वि०, पृ० ५२७, ड० क्रा०, ६ रु०, उ० प्र०, (५५)।

मूत्र, मूत्र-संस्थान तथा उससे सम्बन्धित रोगों का निदान एवं निवारण। पृ० ५१५ से ५२७ तक पारिभाषिक शब्दावली।

—महेन्द्रनाथ पाण्डेय : **रोगी सुश्रूषा :** प्रयाग, छात्रहितकारी

हिन्दी में एक महत्त्वपूर्ण प्रकाशन !

फ्रायड

महान मनोविज्ञानवेत्ता सिगमंड फ्रायड की अमरकृति

मनोविश्लेषण

मूल्य : दस रुपये

फ्रायड की अमर कृति 'ए जनरल इंट्रोडक्शन टु साइकोनेलसिस' का प्रामाणिक हिन्दी अनुवाद

राजपाल एण्ड संज़, कश्मीरी गेट, दिल्ली-६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तक माला, १९५३, पृ० २७२, डि० क्रा०, २.५० रु०, उ० प्र०, (५५)।

रोगी की सेवा सम्बन्धी एलोपैथिक एवं आयुर्वेदिक पद्धति के सिद्धान्तों एवं उपकरणों का समन्वयात्मक अध्ययन।

—रघुवीरप्रसाद द्विवेदी : **अभिनव विकृति विज्ञान** : चौखम्भा विद्या भवन, १९५७, पृ० १११३, डि०, (सचित्र), २५ रु०, उ० प्र० आयुर्वेद तथा तिब्बी एकेडेमी, लखनऊ, (५८)।

पाश्चात्य तथा आयुर्वेदीय वैकारिकी का पाठ्य-ग्रन्थ।

—रघुवीरप्रसाद द्विवेदी : **कौमार भृत्य नव्य बाल रोग सहित** : बनारस, चौखम्भा विद्या भवन, २००५ वि०, पृ० ६३४, डि० क्रा०, ९ रु०, आयुर्वेद महा सम्मेलन, दिल्ली, (४९)।

बाल-रोग सम्बन्धी प्रामाणिक ग्रन्थ।

—रघुवीरशरण शर्मा : **भारतीय जीवाणु विज्ञान** : बुलन्दशहर, लेखक द्वारा, २००५ वि०, पृ० ११६, डि० क्रा०, १.५० रु०, उ० प्र०, (५१)।

आधुनिक चिकित्साशास्त्र के एक महत्त्वपूर्ण अंग जीवाणु-विज्ञान पर भारतीय दृष्टिकोण से विचार।

—रमानाथ द्विवेदी : **अगदतन्त्र** : बनारस, चौखम्भा विद्या भवन, पृ० ७६, डि० क्रा०, ७५ नये पैसे, उ० प्र० आयु० एवं तिब्बी एके०, (५४)।

विष-प्रयोग से उत्पन्न स्थिति का निदान और उपशमन।

—रमानाथ द्विवेदी : **प्रसूति विज्ञान** : बनारस, चौखम्भा विद्या भवन, पृ० ७३८, डि० क्रा०, ९ रु०, उ० प्र० आयु० तथा तिब्बी एके०, (५५)।

प्रसूति विषयक पाठ्य-क्रम के अनुसार तुलनात्मक विधि से लिखित पुस्तक।

—रमानाथ द्विवेदी : **शालाक्य तन्त्र-निमितन्त्र** : बनारस, चौखम्भा विद्या भवन, १९५२, पृ० ६५४, डि० क्रा०, ९ रु०, उ० प्र० आयु० तथा तिब्बी एके०, (५३)।

नाक, कान, गला और शिर-सम्बन्धी रोगों का आयुर्वेदीय ग्रन्थों के आधार पर विस्तृत तुलनात्मक अध्ययन।

—रमानाथ द्विवेदी, (प्रस्ता० द० अ० कुलकर्णी) : **सौश्रुति** : बनारस, चौखम्भा विद्या भवन, २००६ वि०, पृ० ५५८, डि० क्रा०, ८.५० रु०, उ० प्र०, तथा आयु० एवं तिब्बी एके० लखनऊ से भी, (५२-५३)।

'सुश्रुतसंहिता' के आधार पर आयुर्वेदीय शल्य-तन्त्र विषयक ग्रन्थ, प्राचीन यन्त्र-शस्त्रों के चित्र सहित।

—रमानाथ द्विवेदी : **स्त्री रोग विज्ञान** : बनारस, चौखम्भा विद्या भवन, पृ० २२८, डि० क्रा०, ३ रु०, उ० प्र०, आयु० तथा तिब्बी एके० लखनऊ, (५८)।

प्राचीन सिद्धान्तों तथा आधुनिक नवीनतम आविष्कारों के अनुसार स्त्री-रोगों का निदान एवं चिकित्सा विषयक विवेचन।

—रामेश वेदी : **सोंठ** : लाहौर, हिमालय हर्बल इन्स्टीट्यूट, १९४७, पृ० १०७, डि० क्रा०, १ रु०, उ० प्र०, (५२)।

अदरक तथा सोंठ के गुण तथा उनसे लाभ उठाने के उपाय।

—रामेश वेदी ? : **तुलसी** : हरिद्वार, हिमालय हर्बल इन्स्टीट्यूट, २००५ वि०, पृ० १७८, २ रु०, डि० क्रा०, उ० प्र०, (५२)।

तुलसी के पौदों का वैज्ञानिक विवेचन तथा उससे लाभ उठाने के उपाय।

—रामेश वेदी : **प्याज व लहसुन** : हरिद्वार, हिमालय हर्बल इन्स्टीट्यूट, २००५ वि०, पृ० २२०, २.५० रु०, डि० क्रा०, उ० प्र०, (५२)।

लहसुन और प्याज के गुण और उनके उपयोग की विधियाँ।

—रामेश वेदी : **शहद** : हरिद्वार, हिमालय हर्बल इन्स्टीट्यूट, २००६ वि०, पृ० २१०, डि० क्रा०, ३ रु०, उ० प्र०, (५२)।

मधुमक्खियों द्वारा पैदा किये गए शहद और मोम का विस्तृत वैज्ञानिक विवेचन और उससे लाभ उठाने की विधियां।

—रामेश वेदी : **मिर्च** : हरिद्वार, हिमालय हर्बल इन्स्टीट्यूट, २००७ वि०, पृ० ९०, डि० क्रा०, १ रु०, उ० प्र०, (५२)।

काली, सफेद और लाल मिर्च के अनेक रोगों में उपयोग करने के लिए विस्तृत तरीके।

—रामेश वेदी : **देहात की दवाएं** : हरिद्वार, हिमालय हर्बल इन्स्टीट्यूट, पृ० ५०, डि० क्रा०, उ० प्र०, (५७)।

घरेलू इलाज के लिए उपयोगी पुस्तक।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

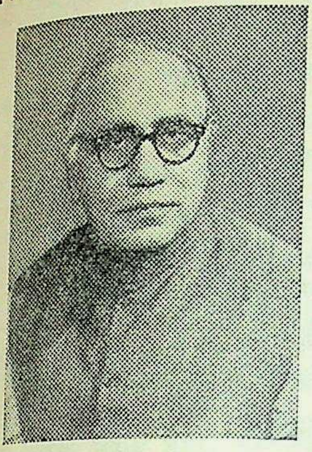

सुन्दर छपाई एवं आकर्षक रूपरेखा ।

श्री गुरुदत्त की चिर-प्रतीक्षित रचना

छलना

मूल्य ६)

कुछ लोग कम्यूनिज्म को केवल मात्र आर्थिक अव्यवस्था दूर करने का उपाय समझते हैं । वास्तव में ऐसा नहीं है । यदि ऐसा होता तो मानव-इतिहास के नवीन अर्थ, शिक्षा की रूपरेखा में परिवर्तन और विवाहादि सभी विषयों पर नवीन आचरण न किया जाता । प्रस्तुत पुस्तक में उक्त विषय की युक्तियुक्त विवेचना पढ़िए । उपन्यास रोचकता में अन्यतम है ।

हमारे दो अन्य प्रकाशन

१. **मेरी पसन्द (नाटक)**—हिन्दी-जगत् के सर्वप्रसिद्ध उपन्यासकार श्री गुरुदत्त का यह प्रथम प्रकाशित नाटक है । रोचकता में उपन्यासों से किसी प्रकार भी कम नहीं ।

२. **आदरणीय (उपन्यास)**—दक्षिण भारत के प्रथम हिन्दी उपन्यासकार, 'खरे-खोटे' के ख्याति-प्राप्त, अन्य कई रचनाओं के रचयिता श्री आरिगपूडि का यह नवीन उपन्यास है । सरल भाषा, रोचक शैली श्री आरिगपूडि की विशेषता है ।

हमारे प्रकाशन

१.	विकृत छाया	मू० ४॥)	१२.	कला	मू० ५)
२.	भावुकता का मूल्य	,, ६)	१३.	दासता के नए रूप	,, ६)
३.	बहती रेता	,, ५)	१४.	पत्रलता	,, ७)
४.	विश्वासघात	,, ५॥)	१५.	धरती और धन	,, ६)
५.	विडम्बना	,, ६)	१६.	छलना	,, ६)
६.	देश की हत्या	,, ५॥)	१७.	मेरी पसन्द (नाटक)	,, २॥)
७.	वाम मार्ग	,, ७)	१८.	अन्तिम यात्रा	,, १)
८.	विलोम गति	,, ५)	१९.	आदरणीय	,, ४)
९.	गुण्ठन	,, ५)	२०.	भूले-भटके	,, ३)
१०.	मानव	,, ५)	२१.	खरे-खोटे	,, ५)
११.	आवरण	,, ५)	२२.	अलका (कविता-संग्रह)	,, २।।।)

भारती साहित्य सदन

३०/९० कनॉट सरकस, नई दिल्ली–१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजकमल प्रकाशन
द्वारा प्रकाशित एवं प्रचारित
पुरस्कृत पुस्तकों की सूची

उपन्यास
मैला आंचल : फणीश्वरनाथ रेणु ६·५०
जहाज का पंछी : इलाचन्द्र जोशी ७·५०
बाबा बटेसरनाथ : नागार्जुन २·००
बाहर-भीतर : डॉ० देवराज ३·००
स्वप्नमयी : विष्णु प्रभाकर २·००
दूर के ढोल : ए० रमेश चौधरी 'आरिगपूडि' ४·००
सागर, लहरें और मनुष्य : उदयशंकर भट्ट ५·००
एक था : श्रीमती शीला शर्मा २·००

कविता
सूर्य का स्वागत : दुष्यन्त कुमार ३·५०

कहानियाँ
लम्बे दिन जलती रातें : सत्यप्रकाश संगर २·२५
वीरभद्र की गोष्ठी : रावी ३·५०

नाटक
नया समाज : उदयशंकर भट्ट २·००
शक विजय : ,, ,, २·२५
पर्दे के पीछे : ,, ,, अभी अप्राप्य

आलोचना, साहित्य, भाषाशास्त्र
आलोचना इतिहास तथा सिद्धान्त :
डॉ० एस० पी० खत्री १२·००
पृथ्वीराज रासो में कथानक रूढ़ियाँ :
ब्रजविलास श्रीवास्तव ३·५०
भारतीय प्रेमाख्यान की परम्परा :
परशुराम चतुर्वेदी ४·००
हिन्दी रीति-साहित्य : डॉ० भगीरथ मिश्र ४·००
हिन्दी साहित्य के अस्सी वर्ष :
शिवदानसिंह चौहान ३.५०
उर्दू साहित्य का इतिहास : डॉ० एजाज हुसेन ६·००
अवधी और उसका साहित्य :
डॉ० त्रिलोकीनारायण दीक्षित २·२५
भोजपुरी और उसका साहित्य :
डॉ० कृष्णदेव उपाध्याय २·२५
मालवी और उसका साहित्य : श्याम परमार २·२५
भारतीय आर्यभाषा और हिन्दी :
डॉ० सुनीतिकुमार चाटुर्ज्या ७·२५
शब्दों का जीवन : डॉ० भोलानाथ तिवारी
अभी अप्राप्य
चन्द्रसखी और उनका काव्य :
पद्मावती 'शबनम' २·००

लोक-साहित्य, सांस्कृतिक
पाषाण नगरी : शिवसहाय चतुर्वेदी अभी अप्राप्य
प्राचीन भारतीय मनोरंजन : मन्मथ राय ५·२५
हमारी नाट्य-परम्परा : श्रीकृष्णदास १०·००

स्त्रियोपयोगी
नारी का रूप शृंगार : सावित्रीदेवी वर्मा ६·००

बाल-साहित्य
नन्हे लंगूर की कहानियाँ : वेलरी मैजिल अभी अप्राप्य
पंचतन्त्र की कहानियाँ (३ भाग) :
शकुन्तलादेवी ३·००
सच्ची नागरिकता : मनरो लीफ़ २·००
आदर्श माता-पिता : सावित्रीदेवी वर्मा १·२५

राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड
दिल्ली : इलाहाबाद : बम्बई : पटना : मद्रास

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

—रामसुशील सिंह, (भूमिका ले०) भास्कर गोविन्द घाणेकर) : **पाश्चात्य द्रव्य गुण विज्ञान मेटेरियामेडिका, भाग १** : चुनार, श्री दलजीतसिंह द्वारा, २००६ वि०, पृ० ६१२, डि०, १२ रु०, उ० प्र०, (५२-५३)।

प्राच्य-पाश्चात्य उभय चिकित्सा-क्रम के अध्ययन-अध्यापन का उपयोगी ग्रन्थ।

—शारदाचरण मुकर्जी : **हमारा भोजन** : के० स०, (५४)।

—शिवदयाल गुप्त : **एलोपैथिक मेटेरियामेडिका** : बनारस, मेडिकल पुस्तक भवन, १९५५, पृ० १३००, ड० क्रा०, १२ रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

सरल, सुबोध भाषा एवं एक निश्चित वैज्ञानिक क्रम में विषय का संकलन एवं स्पष्टीकरण, सभी औषधियों के सम्बन्ध में आधुनिकतम सूचना, एवं १०० पृष्ठों की पारिभाषिक पदावली सहित।

—शिवदयाल गुप्त : **धात्री विज्ञान** : उ० प्र०, (५६-५७)।

—शिवनाथ खन्ना : **रोग-निवारण** : वाराणसी, थियोसोफिकल सोसाइटी, १९५६, पृ० ८४८, ड० क्रा०, १४ रु०, उ० प्र०, (५६-५७)।

आधुनिक चिकित्सा-पद्धति के अनुसार रोगों की चिकित्सा का विस्तृत वर्णन तथा आयुर्वेदिक चिकित्सा का संक्षिप्त परिचय।

—शिवनाथ खन्ना : **रोग-परिचय** : बनारस, थियोसोफिकल सोसाइटी, १९५२, पृ० ६५६, ड० क्रा०, १२·७५ रु०, उ० प्र०, (५२-५३)।

व्याधि विज्ञान का परिचय। रोग के लक्षणों का विशेष रूप से परिचय। पारिभाषिक शब्दकोश पृष्ठ ५१, परि० पृष्ठ १३४।

—शिवानाथ शर्मा : **रोग परीक्षा** : बनारस, थियोसोफिकल सोसाइटी, १९५१, पृ० ३२०, ड० क्रा०, ६ रु०, उ० प्र०, (५२-५३)।

नवीन वैज्ञानिक पद्धति के आधार पर रोगी-परीक्षा की विधियों का विस्तारपूर्वक वर्णन उनके चित्रों एवं तालिकाओं सहित।

—सावित्रीदेवी वर्मा : **आदर्श माता-पिता** : दिल्ली, अरुणोदय प्रकाशन, १९५७, पृ० ६४, फु० स्के०, (सचित्र), १·२५ रु०, के० स० जन सा० प्रति०, (५५)।

शिशु-पालन के विषय में वैज्ञानिक सुझाव एवं तौर-तरीकों का वर्णन।

—सुरेन्द्रनाथ (डॉ०) : **सन्तति-निरोध, कब, क्यों और कैसे** : कालपी, स्वास्थ्य सन्देश प्रकाशन, १९५२, पृ० १५२, ड० क्रा०, (सचित्र), २ रु०, उ० प्र०, (५२-५३)।

संतति-निरोध विषय का सर्वांगीण संक्षिप्त विवेचन, ४१ चित्रों सहित।

—सुरेन्द्रनाथ गुप्ता (डॉ०) : **विटामिन और हीनता-जनित रोग** : उ० प्र०, (५७-५८)।

—सुरेन्द्रनाथ (डॉ०) : **यौन-विकार, कारण और निवारण** : उ० प्र०, (५२-५३)।

—सेमुअल हेनीमैन (मू० ले०), (अनु० सुरेन्द्रप्रसाद वर्मा) : **आर्गेनन** : बनारस, मेडिकल पुस्तक भवन, पृ० ३८८, ड० क्रा०, ४ रु०, उ० प्र०, (५२-५३)।

होमियोपैथिक चिकित्सा के आधारभूत उक्त ग्रन्थ का हिन्दी अनुवाद, ५६ पृष्ठों के अतिरिक्त आलोचनात्मक विचार।

—सुरेशप्रसाद शर्मा : **एलोपैथिक चिकित्सा** : बनारस, मेडिकल पुस्तक भवन, १९५३, पृ० ८२५, ड० क्रा०, ८ रु०, उ० प्र०, (५२-५३)।

सरल ढंग से एलोपैथिक चिकित्सा का प्रतिपादन, आधुनिकतम अनुसन्धानों और अनुभव-सिद्ध योगों सहित।

—सुरेशप्रसाद शर्मा : **प्रिन्स मेटेरियामेडिका** : बनारस, मेडिकल पुस्तक भवन, १९५२, पृ० १२६१, ड० क्रा०, ८ रु०, उ० प्र०, (५२-५३)।

होमियोपैथिक मेटेरियामेडिका फर्माकोपिया और थेराप्युटिक्स सहित।

—सुरेशप्रसाद शर्मा : **रोगी की सेवा और पथ्य** : बनारस, मेडिकल पुस्तक भवन, १९५१, पृ० २३४, ड० क्रा०, ३ रु०, उ० प्र०, (५२)।

रोगी की सेवा एवं पथ्यापथ्य का प्रतिपादन।

—सुरेशप्रसाद शर्मा : **बायोकेमिक चिकित्सा** : बनारस, मेडिकल पुस्तक भवन, १९५१, पृ० ४४६, ड० क्रा०, ४ रु०, उ० प्र०, (५२)।

बायोकेमिक चिकित्सा पर हिन्दी में एक प्रामाणिक पुस्तक, पारिभाषिक पदावली सहित।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

—हरिस्वरूप कुलश्रेष्ठ : **अभिनव शवच्छेद विज्ञान** : बनारस, मेडिकल पुस्तक भवन, १९५६, पृ० १०१८, ड० क्रा०, (सचित्र), १५ रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

राष्ट्रभाषा में लिखी शवच्छेद विज्ञान पर एक नवीन सफल पुस्तक। ग्रन्त में ४२ पृष्ठों की पारिभाषिक पदावली सहित।

इंजीनियरिंग

—दयास्वरूप (डॉ०), ग्रादि : **ग्रौद्योगिक ईंधन** : काशी, नागरी प्रचारिणी सभा, २००६ वि०, पृ० ३४८, डि०, (सचित्र), ८ रु०, ना० प्र० सभा द्वारा पु०।

ईंधन विज्ञान (फ्युग्रल टेकनॉलॉजी) से सम्बन्धित सभी बातों पर संक्षिप्त विवेचन। इस विषय का एक पाठ्य-ग्रन्थ।

—दयास्वरूप (डॉ०) : **धातु विज्ञान** : काशी, नागरी प्रचारिणी सभा, २००८ वि०, पृ० ३१०, डि०, (सचित्र), ६ रु०, उ० प्र०, (५२) तथा ना० प्र० स०, काशी द्वारा भी पुरस्कृत।

धातुग्रों के सम्बन्ध में ज्ञानवर्द्धक ग्रन्थ, धातु-विज्ञान के विद्यार्थियों के लिए लिखित।

—रामेशचन्द्र विजय : **सरल रेडियो विज्ञान** : दिल्ली, ग्रात्माराम एण्ड सन्स, १९५७, पृ० १८१, डि०, (सचित्र), ५ रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

रेडियो विज्ञान का सरल एवं संक्षिप्त परिचय।

कृषि (गोपालन, उद्यान विज्ञान ग्रादि सहित)

—ग्रमरनाथ बिन्दल : **भारत में उद्यानकारी** : इलाहाबाद, किताब महल, १९५३, पृ० २०४, ड० क्रा०, (सचित्र), ३ रु०, उ० प्र०, (५१)।

उद्यानकारी का संक्षिप्त सर्वाङ्गीण विवेचन।

—कालीचरण गुप्त : **पोलट्री फार्मिंग (कामयाब मुर्गीखाना)** : दिल्ली, देहाती पुस्तक भण्डार, १९५६, पृ० १८८, ड० क्रा०, (सचित्र), ४ रु०, उ० प्र०, (५६-५७)।

मुर्गियों की जातियों, पक्षियों की छँटनी का ग्रालेखन; निवासन, प्रजनन, बन्दम ग्रादि का वर्णन।

—चन्द्रावती राधारमण : **सन्तुलित गोपालन** : पीलीभीत, गोसेवा सदन, १९४९, पृ० ३१०, फु० स्कै०, ५ रु०, हि० सा० स० द्वारा मंगला० पारि०, (२००७ वि०)।

—जयरामसिंह तथा जी० एस० लवानियाँ : **मिट्टी का प्रारम्भिक ग्रध्ययन** : वाराणसी, हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, १९५२, पृ० १६८, ड० क्रा०, २.७५ रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

कृषि-कार्य के लिए मिट्टी का प्रारम्भिक ग्रध्ययन। पारिभाषिक पदावली सहित।

—नज़ीर ग्रहमद खाँ : **बागवानी का परिणाम** : उ० प्र०, (५१)।

—फूलदेवसहाय वर्मा : **ईख ग्रौर चीनी** : पटना, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, १९५५, पृ० ४४०, रॉ०, (सचित्र), सजिल्द १३.५० रु०, बि० रा० प०, पटना, (५५-५६) तथा उ० प्र०, (५६-५७)।

ईख ग्रौर चीनी सम्बन्धी विषयों ग्रौर समस्याग्रों पर हिन्दी में प्रथम प्रामाणिक पुस्तक। ग्रावश्यक ग्राँकड़ों, चित्रों से युक्त विस्तृत दोहरी पारिभाषिक पदावली सहित।

—फूलदेवसहाय वर्मा : **रबड़** : पटना, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, २०११ वि०, पृ० २६६, रॉ०, (सचित्र), ६ रु०, उ० प्र०, (५५-५६)।

रबर के विज्ञान एवं व्यवसाय से सम्बन्धित समग्र विषयों का प्रतिपादन, पारिभाषिक वैज्ञानिक शब्दावली सहित।

—फूलदेवसहाय वर्मा : **प्लास्टिक** : उ० प्र०, (५७-५८)।

—मोतीलाल सेठ : **कृषि हानिकारक कीट पतंग** : इलाहाबाद, देश सेवा मण्डल, १९५३, पृ० ८६, रॉ०, (सचित्र), १.५० रु०, उ० प्र०, (५५)।

३४ प्रमुख कृषि-हानिकारक कीट-पतंगों का विवरण।

—रावत, बी० एस० : **शहद की खेती** : दिल्ली, सस्ता साहित्य मण्डल, १९५७, पृ० ३६, (सचित्र), ड० क्रा०, ३१ न० पै०, के० स० जन सा० प्रति०, (५६)।

शहद की मक्खियाँ पालने ग्रौर शहद निकालने की सरल विधि (प्रौढ़ोपयोगी सरल भाषा एवं रोचक शैली में)।

—रामसागर राय तथा रामप्रसाद सिंह : **उद्यान कृषि दर्शन** : पटना, कला निकेतन, १९५५, पृ० ४७८, डि०, (सचित्र), ७ रु०, बि० रा० प०, (५६-५७) तथा उ० प्र०, (५६-५७)।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उद्यान-विज्ञान का सर्वाङ्गीण विस्तृत विवेचन। अन्त में ५ पृष्ठों में पारिभाषिक पदावली।

—लालबिहारी सिंह तथा रामनाथ सिंह : **फलों की खेती :** पटना, अजन्ता प्रेस लि०, १९५६, पृ० ३५४, डि०, (सचित्र), ७ रु०, उ० प्र०, (५६-५७)।

फलों की कृषि का विवेचन।

—सोहनलाल गुप्ता : **भारतीय कृषि की समस्याएँ :** प्रयाग, सरोज प्रकाशन, १९५५, पृ० ४३६, डि०, ५ रु०, वि० प्र०, (५४-५५)।

कृषि एवं अर्थशास्त्र लेने वाले विद्यार्थियों के लिए एक आवश्यक पुस्तक।

व्यापार एवं व्यापार प्रणाली

—घनानन्द फुलारा : **आशु लिपि बोध :** देहरादून, लेखक द्वारा, १९५०, पृ० २२२, ड० क्रा०, ४.५० रु०, उ० प्र०, (५२)।

आशुलिपि (शार्टहैंड) के सिद्धान्तों की विवेचना तथा विविध अभ्यासों का संकलन। लेखक की अपनी मौलिक प्रणाली का प्रतिपादन, पिटमैन प्रणाली पर आधारित।

—रामप्रसाद टण्डन : **व्यापार, उसकी कठिनाइयाँ और उपाय :** इलाहाबाद, लेखक द्वारा, १९५५, पृ० ३३६, ड० क्रा०, ३.२५ रु०, उ० प्र०, (५५)।

प्रचलित व्यापार सम्बन्धी कठिनाइयाँ और उनको दूर करने के उपायों का प्रतिपादन।

वास्तुशास्त्र

—द्विजेन्द्रनाथ शुक्ल : **भारतीय वास्तुशास्त्र :** लखनऊ, वास्तुवाङ्मय प्रकाशनशाला, २०१२ वि०, पृ० २५४, रॉ०, (सचित्र), ८.५० रु०, उ० प्र०, (५५-५६)।

भारतीय वास्तुशास्त्र के सर्वाङ्गपूर्ण अधिकृत और वैज्ञानिक ग्रन्थ धाराधिप महाराज भोजदेव विरचित 'समरांगण सूत्रधार' पर आधारित लेखक का अनुसन्धान ग्रन्थ। लखनऊ वि० वि० द्वारा स्वीकृत थीसिस का परिवर्द्धित वृहद्रूप—वास्तुविद्या (पृ० १-८०), पुरनिवेश (पृ० ८१-२१४), परिशिष्ट (पृ० २१५—२५४ तक)।

—परमेश्वरीलाल गुप्त : **भारतीय वास्तुकला :** काशी, नागरी प्रचारिणी सभा, २००३ वि०, पृ० १५०, ड० क्रा०, २ रु०, (सचित्र), ना० प्र० सभा।

भारतीय वास्तुकला के इतिवृत्त के साथ-साथ उसकी तात्त्विक व्याख्या, सिद्धान्त, सौन्दर्य-प्रेक्षण एवं आलोचना आदि का समावेश।

कलाएँ एवं मनोरंजन

कला, सामान्य

—बालचन्द्र जैन : **विन्ध्य प्रदेश के प्राचीन कलाकेन्द्र और कलाकृतियां :** कटनी, महाकोशल सिण्डीकेट, १९५४, पृ० ५६, ड० क्रा०, (सचित्र), १.५० रु०, वि० प्र०, (५३-५४)।

विन्ध्य प्रदेश के प्राचीन कलाकेन्द्रों और उनकी कलाकृतियों का संक्षिप्त परिचय।

—शचीरानी गुर्टू (श्रीमती) : **कला-दर्शन :** दिल्ली, साहनी प्रकाशन, १९५६, पृ० ५६३, डि०, (सचित्र), २० रु०, उ० प्र०, (५६-५७)।

विश्व के समस्त देशों की कला-समीक्षा।

श्री विनोदचन्द्र पांडेय, एम० एस-सी०, एम० ए०, आई० ए० एस० की दो नई कृतियाँ

वसन्त और पतझर
(कविता-संग्रह)

ये कविताएँ शब्दों की परिमितता में एजरापौंड का और भावों की तीव्रता एवं गहनता में इलियट का स्मरण कराती हैं। कलापूर्ण आवरण, सुन्दर मुद्रण। मूल्य १.५०

स्वयंवर
(कहानी-संग्रह)

इन कहानियों के पात्र—लगता है—जाने-पहचाने हैं, फिर भी कितने अलग हैं! लेखक ने उनके चरित्र का चित्रण करके उनके मन का स्पर्श तो किया ही है, पाठकों के मन को भी वे छू लेते हैं। मूल्य तीन रुपये

कला का अनुवाद

एक भारतीय आत्मा—पं० माखनलाल चतुर्वेदी का कहानी-संग्रह

ये कहानियाँ नहीं सच्ची घटनाएँ हैं। मुहब्बत का रंग, कच्चा रास्ता, बरसता सावन बैसाख हो गया, कला का अनुवाद आदि इस संग्रह की प्रमुख कहानियाँ हैं।

पुस्तक मध्यप्रदेश शासन द्वारा पुरस्कृत है। मूल्य रु० २.२५

प्रकाशक
विश्वविद्यालय प्रकाशन
नखास चौक, गोरखपुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दुस्तानी एकेडेमी, उत्तर प्रदेश, इलाहाबाद के महत्वपूर्ण प्रकाशन

हिन्दी भाषा और साहित्य

१. तुलसी शब्दसागर — मूल्य १२.००
२. अवधी कोष — मूल्य ७.५०
३. हिन्दी कथा कोष — मूल्य ३.००
४. दक्खिनी हिन्दी — डॉ० बाबूराम सक्सेना, एम० ए०, डी० लिट्० मू० ३.००
५. हिन्दी भाषा और लिपि — डॉ० धीरेन्द्र वर्मा, एम० ए०, डी० लिट्० मूल्य १.००
६. हिन्दी भाषा का इतिहास — डॉ० धीरेन्द्र वर्मा, एम० ए०, डी० लिट्० मूल्य १०.००
७. नाथ सम्प्रदाय — डॉ० हजारी प्रसाद द्विवेदी मूल्य ५.००
८. गोस्वामी तुलसीदास — स्व० डॉ० श्यामसुन्दरदास, स्व० डॉ० पीताम्बरदत्त बड़थ्वाल मूल्य ४.००
९. विद्यापति ठाकुर — डॉ० उमेश मिश्र, एम० ए०, डी० लिट्० मूल्य १.७५
१०. मराठी साहित्य का इतिहास — श्री कृष्णलाल शरसोदे मूल्य ४.५०
११. उर्दू साहित्य का इतिहास — (मूल लेखक) डॉ० रामबाबू सक्सेना; अनुवादक— श्री रामचन्द्र टण्डन तथा श्री शालिग्राम श्रीवास्तव मू० ७.२५
१२. हिन्दी, उर्दू और हिन्दुस्तानी — स्व० श्री पद्मसिंह शर्मा मूल्य २.५०
१३. उर्दू काव्य की एक नई धारा — श्री उपेन्द्रनाथ 'अश्क' मूल्य २.५०
१४. हिन्दुई साहित्य का इतिहास — (मूल लेखक) गार्सा-द-तासी; अनुवादक— डॉ० लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय, एम०ए०, डी०लिट्० मूल्य ७.००
१५. अर्थविज्ञान और व्याकरण दर्शन — डॉ० कपिलदेव द्विवेदी, एम०ए०, डा०फिल्० मूल्य १२.००
१६. बेलि क्रिसन रुक्मणी री — सम्पादक—ठाकुर रामसिंह, एम० ए०, श्री सूर्यकरण पारीक, एम० ए० मूल्य १५.००
१७. सतसई सप्तक — सम्पादक—डॉ० श्यामसुन्दरदास मूल्य १२.००
१८. प्रेम दीपिका — ,, स्व० लाला सीताराम मूल्य १.००
१९. तुलसी ग्रन्थावली भाग १, खण्ड १,२ — ,, डॉ० माताप्रसाद गुप्त, एम० ए०, डी० लिट्० मूल्य १५.००
२०. जायसी ग्रन्थावली — ,, ,, ,, ,, ,, ,, ,, ,, मूल्य १२.००
२१. केशव ग्रन्थावली, भाग १,२ — ,, श्री विश्वनाथ प्रसाद मिश्र प्रति खण्ड मूल्य ५.००
२२. रामचरितमानस — ,, डॉ० माताप्रसाद गुप्त, एम० ए०, डी० लिट्० मूल्य ४.००
२३. हिन्दी संत काव्य संग्रह — स्व० श्री गणेशप्रसाद द्विवेदी तथा श्री परशुराम चतुर्वेदी मूल्य ५.००
२४. हिन्दी प्रेमगाथा काव्य संग्रह — सम्पादक—स्व० गणेशप्रसाद द्विवेदी, श्री गुलाबराय मूल्य ६.००
२५. हिन्दी वीर काव्य संग्रह — सम्पादक—स्व० गणेशप्रसाद द्विवेदी, डॉ० उदयनारायण तिवारी मूल्य १२.००
२६. कवि रहस्य — स्व० महामहोपाध्याय डॉ० गंगानाथ झा, एम० ए०, डी० लिट्० मूल्य २.००
२७. आधुनिक हिन्दी काव्य में नारी भावना — डॉ० शैल कुमारी, एम० ए०, डी० फिल्० मूल्य ७.००
२८. हिन्दी वीर काव्य — डॉ० टीकमसिंह तोमर, एम०ए०, डी०फिल्० मूल्य १२.००
२९. चन्दबरदाई और उनका काव्य — डॉ० विपिन बिहारी त्रिवेदी, एम०ए०, डी०फिल्० मू० ८.००
३०. भारतेन्दु हरिश्चन्द्र — श्री ब्रजरत्नदास, बी० ए०, एल-एल० बी० मूल्य ५.००
३१. घाघ और भड्डरी — सम्पादक—श्री रामनरेश त्रिपाठी मूल्य १.५०
३२. भोजपुरी लोकगाथा — डॉ० सत्यव्रत सिन्हा, एम० ए०, डी० फिल्० मूल्य ८.००

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इतिहास

३३. हिन्दुस्तान की पुरानी सभ्यता — स्व० डॉ० बेनीप्रसाद, एम० ए०, पी-एच० डी०, (लंदन) डी० एस-सी०

३४. हर्षवर्द्धन — स्व० श्री गौरीशंकर चटर्जी, एम० ए० — मूल्य ७.५०

३५. राजा भोज — श्री विश्वेश्वरनाथ रेऊ — मूल्य १०.००

३६. पाटलीपुत्र की कथा — डॉ० सत्यकेतु विद्यालंकार, डी० लिट्० — मूल्य १०.००

३७. अरब और भारत के सम्बन्ध — (मूल लेखक) मौ० सैय्यद सुलेमान नदवी, अनुवादक—बाबू रामचन्द्र वर्मा मूल्य ८.००

३८. मध्यकालीन भारतीय संस्कृति — स्व० महामहोपाध्याय पं० गौरीशंकर हीराचन्द्र ओझा मूल्य ३.००

३९. सिन्धु सभ्यता — श्री सतीशचन्द्र काला — मूल्य ५.००

४०. अयोध्या का इतिहास — स्व० अवधवासी लाला सीताराम — मूल्य ६.००

४१. प्रयाग प्रदीप — श्री शालिग्राम श्रीवास्तव — मूल्य ६.००

दर्शन

४२. भारतीय-दर्शन शास्त्र का इतिहास — डॉ० न० के० देवराज, डी० फिल्०, डॉ० रामानन्द तिवारी, डी० फिल्० मूल्य ६.५०

४३. विकासवाद — श्री दयानन्द पंत — मूल्य २.२५

४४. विचार विज्ञान — डॉ० हरद्वारीलाल शर्मा

४५. मनस्तत्व — श्री यशदेव शल्य — मूल्य ८.००

४६. जीव वृत्ति विज्ञान — डॉ० महाजोत सहाय, एम०ए०, पी-एच० डी० मू० १.५०

अर्थशास्त्र

४७. ग्रामीण अर्थशास्त्र — स्व० ब्रजगोपाल भटनागर, एम० ए० — मूल्य ४.००

४८. राजस्व — स्व० भगवानदास केला — मूल्य १.५०

४९. अर्थशास्त्र के मूल सिद्धान्त — श्री भगवानदास अवस्थी, एम० ए० — मूल्य ३.००

५०. औद्योगिक तथा व्यापारिक भूगोल — प्रो० शंकर सरन सक्सेना, एम० ए० — मूल्य ७.००

विज्ञान

५१. कुछ आधुनिक आविष्कार — डॉ० सत्यप्रकाश, एम०एस-सी०, डी०एस-सी० मू० ५.००

जीवनी

५२. शंकराचार्य — श्री बलदेव उपाध्याय — मूल्य ७.५०

५३. रणजीतसिंह — श्री सीताराम कोहली

हिन्दुस्तानी पत्रिका

(त्रैमासिक)

प्रधान सम्पादक
डॉ० माताप्रसाद गुप्त, एम० ए०, डी० लिट्०

सहायक सम्पादक
डॉ० सत्यव्रत सिन्हा, एम० ए०, डी० फिल्०

सम्पादक मण्डल
१. डॉ० धीरेन्द्र वर्मा, एम० ए०, डी० लिट्०
२. डॉ० हजारीप्रसाद द्विवेदी, (पद्म विभूषण)
३. डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल, एम० ए०, डी० लिट्०
४. डॉ० दीनदयाल गुप्त, एम० ए०, डी० लिट्०
५. डॉ० सत्यप्रकाश एम० एस-सी०, डी० एस-सी०

हिन्दुस्तानी एकेडेमी, उत्तर प्रदेश, इलाहाबाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भास्कर्य (स्कल्पचर)

—द्विजेन्द्रनाथ शुक्ल (डॉ०) : **प्रतिमा विज्ञान :** लखनऊ, वास्तुवाङ्मय प्रकाशनशाला, १९५६, पृ० ३४२, रॉ०, १५ रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

धार्मिक दृष्टिकोण एवं स्थापत्य दृष्टिकोण से प्रतिमा विज्ञान की मीमांसा, आवश्यक रेखाचित्रों सहित।

अंकन, विभूषण (ड्राइंग, डैकोरेशन, डिज़ाइन आदि)

—जगदीश मित्तल और कमला मित्तल : **भारतीय कसीदा :** हैदराबाद, सुरुचि प्रकाशन, १९५४, पृ० ११३, रॉ०, (सचित्र), १५ रु०, उ० प्र०, (५५) तथा वि० प्र०, (५४-५५)।

भारतीय कसीदे का परिचय और उसके नमूने।

—प्रेमकुमारी ठाकुर : **सिलाई, बुनाई और कटाई :** उ० प्र०, (५७-५८)।

चित्रकला

—इकबाल बहादुर देवसरे : **भारतीय चित्रकला :** बनारस, नन्दकिशोर एण्ड ब्रदर्स, १९५२, पृ० १८८, ड० क्रा०, ३·५० रु०, उ० प्र०, (५२-५३) तथा वि० प्र०, (५३-५४)।

इतिहास, विधान और मूर्तिकला नामक तीन खण्डों में भारतीय चित्रकला का विवेचन।

—कलावती बेबी (श्रीमती) : **बेल-बूटे (पहली पुस्तक) :** उ० प्र०, (५७-५८)।

—कलावती बेबी (श्रीमती) : **बेल-बूटे (दूसरी पुस्तक) :** उ० प्र०, (५७-५८)।

—घूलिया, डी० पी०, (भू० ले० डॉ० अमरनाथ झा) : **चित्र-दर्शन :** प्रयाग, इंडियन प्रेस, १९५५, पृ० २६, रॉ०, (सचित्र), १० रु०, उ० प्र०, (५५-५६)।

भारतीय चित्रकला के आदि काल का सोदाहरण ऐतिहासिक निरूपण।

—रामगोपाल विजयवर्गीय : **राजस्थानी चित्रकला :** रा०, (५४)।

—शैलेन्द्रनाथ दे : **भारतीय चित्रकला पद्धति :** जयपुर, लेखक द्वारा, १९५१, पृ० ९६, ड० क्रा०, (सचित्र), २·५० रु०, उ० प्र०, (५५)।

छात्रों के दृष्टिकोण से भारतीय चित्रकला-पद्धति का संक्षिप्त परिचय।

संगीत

—उमेश जोशी : **भारतीय संगीत का इतिहास :** फिरोजाबाद, मानसरोवर प्रकाशन महल, १९५७, पृ० ५१४, डि०, १२·५० रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

भारतीय संगीत की विकास-परम्परा का विशद विवेचन।

—ललितकिशोर सिंह : **ध्वनि और संगीत :** काशी भारतीय ज्ञानपीठ, १९५५, पृ० ३०९, ड० क्रा०, ४ रु० उ० प्र०, (५५-५६)।

मुख्यतः उत्तरीय पद्धति एवं प्रसंगतः दाक्षिणात्य पद्धति का प्रतिपादन, संगीत विषयक ग्रन्थों के आधार पर ध्वनि विज्ञान के तथ्यों तथा मौलिक सिद्धान्तों का स्पष्टीकरण अध्याय १ से १२ तक। सभी भारतीय स्वर-ग्रामों का वैज्ञानिक विश्लेषण अध्याय १३ से अन्त तक।

—हरिहर निवास द्विवेदी : **मानसिंह और भानु कुतूहल :** मुरार, विद्या मन्दिर प्रकाशन, २०१० वि०, पृ० १९६ ५ रु०, उ० प्र०, (५५)।

महाराज मानसिंह का परिचय एवं 'राग-दर्पण' नामक ग्रन्थ का अनुवाद। संगीत-शास्त्र का उपयोगी ग्रन्थ।

मनोरंजन

—अरुण : **सचित्र गृह विनोद :** दिल्ली, आत्माराम एण्ड सन्स, १९५४, पृ० ४११, डि०, (सचित्र), ८ रु०, उ० प्र० (५५)।

२० शीर्षकों के अन्तर्गत विविध प्रकार के मनोरंजन एवं खेलों की विधियाँ।

—प्रेमनाथ चतुर्वेदी : **डाक टिकट संग्रह कला :** दिल्ली लेखक द्वारा, १९५६, पृ० ११६, ड० क्रा०, २ रु० उ० प्र०, (५६-५७)।

डाक-टिकटों के संग्रह के ढंग तथा इस सम्बन्ध में विशेष जानकारी प्रदान करने वाली पुस्तक।

—मन्मथराय (मू०ले०), (सम्पा० चंद्रभान अग्रवाल) : **प्राचीन भारतीय मनोरंजन :** इलाहाबाद, भारतीय विद्या भवन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(वि० राजकमल प्रकाशन), २०१३ वि०, पृ० ३३६, ड० क्रा०, ५ रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

भारत के इतिहास के भिन्न-भिन्न कालों में प्रचलित मनोरंजन के विविध साधनों का धारावाहिक विवरण।

—मन्मथराय : **देश-विदेश में मनोरंजन** : प्रयाग, साहित्य भवन लिमिटेड, १९५६, पृ० २५४, ड० क्रा०, ४ रु०, उ० प्र०, (५६-५७)।

देश-विदेश के विविध मनोरंजनों का परिचय। 'प्राचीन भारतीय मनोरंजन' की परिपूरक पुस्तक।

—विराज : **बनराज के राज में** : दिल्ली, आत्माराम एण्ड सन्स, १९५६, पृ० १९१, (सचित्र), डि०, ४ रु०, उ०प्र०, (५६-५७)।

वन-पर्वतों और उनमें निवास करने वाले पशु-पक्षियों के प्रति अनुराग प्रकट करने तथा आकृष्ट कराने के उद्देश्य से लिखित २६ लेख।

साहित्य

साहित्य, सामान्य

—किशोरीदास वाजपेयी : **साहित्य निर्माण** : कलकत्ता, जनवाणी प्रकाशन, २००७ वि०, पृ० १४४, ड० क्रा०, २ रु०, उ० प्र०, (५२)।

—गुलाबराय : **सिद्धान्त और अध्ययन** : दिल्ली, प्रतिभा प्रकाशन, १९५५, पृ० ३१४, डि०, ६ रु०. उ०प्र०, (५१)।

भारतीय तथा पाश्चात्य समीक्षा-सिद्धान्तों का प्रसाद-पूर्ण शैली में विवेचन।

—जैनेन्द्रकुमार : **साहित्य का श्रेय और प्रेय** : दिल्ली, पूर्वोदय प्रकाशन, १९५३, पृ० ४५६, ड० क्रा०, ७ रु०, उ० प्र०, (५५)।

साहित्य के हर पहलू पर अपने दृष्टिकोण से लिखे गए लेखक के मौलिक निबन्धों का संकलन।

—बुद्धिनाथ झा 'कैरव' : **साहित्य साधना की पृष्ठभूमि** : पटना, ज्ञानपीठ लि०, १९५३, पृ० २१६, रॉ०, ६ रु०, बि० रा० प०, (५४-५५)।

साहित्य के सभी अंगों का आलोचनात्मक विधान (साहित्य तत्त्व विमर्श, काव्य तत्त्व विमर्श एवं अलंकार तत्त्व विमर्श)।

—भगवतशरण उपाध्याय (डॉ०) : **विश्व साहित्य की रूपरेखा** : दिल्ली, राजपाल एण्ड सन्स, १९५७, पृ० ५५८, डि०, १२ रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

विश्व की प्रसिद्ध २८ भाषाओं के साहित्य और उनके साहित्यकारों का विवेचनात्मक दिग्दर्शन।

—शंकरदेव अवतरे : **साहित्य** : काशी, लेखक द्वारा, १९५७, पृ० ३१७, ड० क्रा०, ६ रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

आधुनिक आलोचनात्मक पद्धति एवं शास्त्रीय दृष्टिकोण से साहित्य का अध्ययन।

—हंसकुमार तिवारी : **कला** : भागलपुर, युगान्तर साहित्य मन्दिर, १९९४ वि०, पृ० १५६, ड० क्रा०, १.५० रु०, वि० प्र०, (५४-५५)।

कला विषयक विवेचनात्मक ग्रन्थ।

—हरद्वारीलाल शर्मा (डॉ०) : **सौन्दर्यशास्त्र** : प्रयाग, साहित्य भवन लि०, १९५३, पृ० २४०, ड० क्रा०, ३ रु०, उ० प्र०, (५३-५४)।

सौन्दर्यशास्त्र का संक्षिप्त विवेचन।

हिन्दी साहित्य, सामान्य

—क्षेमचन्द्र सुमन तथा योगेन्द्रकुमार मल्लिक (भू० ले० नन्ददुलारे वाजपेयी): **साहित्य विवेचन** : दिल्ली, आत्माराम एण्ड सन्स, १९५५, डि०, पृ० ३३६, ७ रु०, उ० प्र०, (५२)।

हिन्दी-साहित्य के विभिन्न अंगों का सैद्धान्तिक एवं ऐतिहासिक विवेचन।

—नामवरसिंह : **छायावाद** : बनारस, सरस्वती प्रेस, १९५५, पृ० १४६, डि०, ४ रु०, उ० प्र०, (५५-५६)।

छायावाद की काव्यगत विशेषताओं को स्पष्ट करते हुए छाया-चित्रों में निहित सामाजिक सत्य का उद्घाटन।

—प्रेमनारायण शुक्ल : **हिन्दी साहित्य में विविधवाद** : कानपुर, पद्मजा प्रकाशन, २०१० वि०, पृ० ५२६, डि०, ९ रु०, उ० प्र०, (५५)।

रचनात्मक साहित्य तथा वादों के बीच मनोवैज्ञानिक सम्बद्धता का प्रतिस्थापन एवं विविध वादों की विवेचना।

—बटे कृष्ण : **वीर रस का शास्त्रीय अध्ययन** : बनारस, सरस्वती मन्दिर, १९५६, पृ० २१२, ड० क्रा०, ३.५० रु०, उ० प्र०, (५६-५७)।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

—बरसानेलाल चतुर्वेदी (डॉ०) : **हिन्दी साहित्य में हास्य-रस** : दिल्ली, हिन्दी साहित्य संसार, १६५७, पृ० ३२२, डि०, ७.५० रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

आगरा विश्वविद्यालय द्वारा पी-एच० डी० के लिए स्वीकृत प्रबन्ध। भारतेन्दु-काल से आधुनिक काल तक के हास्य की प्रवृत्तियों की विवेचना। श्री गुलाबराय की भूमिका सहित।

—बलदेव उपाध्याय : **भारतीय साहित्यशास्त्र, प्रथम भाग** : काशी, प्रसाद परिषद्, २००७ वि०, पृ० ७०६, ड० क्रा०, ८ रु०, उ० प्र०, (५०)।

भारतीय साहित्यशास्त्र के मुख्य सिद्धान्तों का तुलनात्मक अध्ययन।

—बलदेव उपाध्याय : **भारतीय साहित्यशास्त्र, द्वितीय भाग** : काशी, प्रसाद परिषद्, २०१२ वि०, पृ० ४७८, ड० क्रा०, उ० प्र०, (५२)।

भारतीय रसशास्त्र के मुख्य सिद्धान्तों का तुलनात्मक अध्ययन।

डॉ० नगेन्द्र का साहित्य

१. भारतीय काव्य-शास्त्र की परम्परा	१६·००
२. विचार और विश्लेषण	५·५०
३. विचार और अनुभूति	४·५०
४. विचार और विवेचन	४·५०
५. रीति-काव्य की भूमिका	५·५०
६. देव और उनकी कविता	६.५०
७. सियारामशरण गुप्त	५·५०
८. आधुनिक हिन्दी कविता की मुख्य प्रवृत्तियाँ	४·००

इनके बिना आपका पुस्तकालय अधूरा रहेगा।

नेशनल पब्लिशिंग हाउस

नई सड़क, देहली

—विश्वम्भर उपाध्याय, (भू० ले० वासुदेवशरण अग्रवाल): **हिन्दी साहित्य की दार्शनिक पृष्ठभूमि** : आगरा, साहित्य-रत्न भण्डार, २०१२ वि०, ७.५० रु०, उ० प्र०, (५५-५६)।

मध्यकालीन हिन्दी-काव्य में प्राप्त दार्शनिक धारणाओं का विवेचन।

—शचीरानी गुर्टू (श्रीमती), (भू० ले० डॉ० वेस्टन मेकडानियल) : **साहित्य दर्शन, प्रथम भाग** : दिल्ली, गौतम बुक डिपो, १६५०, पृ० ४००, डि०, ८ रु०, के० स० प्र० वि० पु० प्रति०, हि० सा०स० से क० पुर०, (२००७ वि०), तथा उ० प्र०, (५२)।

२३ शीर्षकों के अन्तर्गत विभिन्न कलाकारों की प्रवृत्तियों की तुलना।

—शम्भूनाथ सिंह : **छायावाद युग** : बनारस, सरस्वती मंदिर, १६५२, पृ० ३६२, डि०, ६.५० रु०, उ० प्र०, (५३)।

तीन खण्डों में छायावाद युग का सर्वांगीण विवेचन।

—श्रीपाल सिंह 'क्षेम' : **छायावाद की काव्य साधना** : काशी, साहित्य ग्रन्थमाला कार्यालय, २०११ वि०, पृ० ३७६, ड० क्रा०, ४.५० रु०, उ० प्र०, (५५)।

छायावाद की सहज भारतीय भूमि का निरीक्षण। उसके विकास का इतिहास एवं उसके शास्त्रीय पक्ष का अध्ययन।

—श्रीपाल सिंह 'क्षेम' : **छायावाद के गौरवचिह्न** : वाराणसी, हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, १६५६, पृ० ३६७, डि०, ६ रु०, उ० प्र०, (५६-५७)।

छायावादी काव्यधारा की कुछ प्रमुख तात्त्विकताओं को लेकर उनका विवेचन।

—सूरजप्रसाद खत्री (डॉ०) : **हास्य की रूपरेखा** : वाराणसी, हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, १६५६, पृ० ३६६, डि०, ६ रु०, उ० प्र०, (५६-५७)।

हास्य के अन्तरंग और बहिरंग सिद्धान्तों का निरूपण संस्कृत, हिन्दी एवं उर्दू साहित्य की विशिष्ट रूपरेखा सहित।

साहित्यिक कोष

—रामाज्ञा द्विवेदी 'समीर' : **अवधी कोष** : इलाहाबाद,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिंदुस्तानी एके०, १९५५, पृ० २४३, रॉ०, ७.५० रु०, उ० प्र०, (५५-५६)।

अवधी के लगभग १५०० मूल शब्दों का व्याकरण, अर्थ एवं व्युत्पत्ति सहित सम्पादन, यत्र-तत्र मुहावरे, लोकोक्तियाँ एवं उद्धरण आदि।

—सुधाकर पाण्डेय : **प्रसाद कोष :** वाराणसी, आराधना प्रकाशन, १९५७, पृ० ४०६, रॉ०, १६ रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

'प्रसाद' जी के सुप्रसिद्ध ९ काव्य-ग्रन्थों के अन्तर्गत प्रयुक्त शब्दों का साधारण एवं विशेष अर्थ। प्रारम्भ में 'प्रसाद' जी के व्यक्तित्व एवं उनकी रचनाओं के सम्बन्ध में १५ पृष्ठ का एक निबन्ध।

—हरदेव बाहरी (डॉ०) : **प्रसाद साहित्य कोष :** इलाहाबाद, भारती भण्डार, २०१४ वि०, पृ० ४८५, डि०, ६ रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

प्रसाद साहित्य का ज्ञानकोष। 'प्रसाद' जी की सभी कृतियों का परिचय, उनकी विषय-वस्तु की संक्षिप्त समीक्षा तथा प्रसाद साहित्य में आये हुए संदर्भों का विवेचन।

हिन्दी काव्यशास्त्र

—अकबर साह (मूल ले०), चिन्तामणि कवि (रूपा०), भगीरथ मिश्र (सम्पा०) : **शृंगार मंजरी :** लखनऊ, विश्वविद्यालय, १९५६, पृ० १४४, भूमिका पृ० ३५, ड० क्रा०, २ प्लेट्स, २.५० रु०, उ० प्र०, (५६-५७)।

हिन्दी काव्यशास्त्र की लगभग तीन सौ साल पुरानी संस्कृत रचना का सम्पादन। उत्तर प्रदेशीय प्राच्य इतिहास परिषद् के संग्रहालय में प्राप्त प्रति के आधार पर।

—अप्पय दीक्षित (मूल ले०), व्याख्या० भोलाशंकर व्यास (डॉ०) : **हिन्दी कुवलयानन्द :** बनारस, चौखम्भा विद्या भवन, १९५६, पृ० ३१२, डि०, ६.५० रु०, उ० प्र०, (५६-५७)।

श्री अप्पय दीक्षित के प्रसिद्ध अलंकार-विषयक ग्रन्थ 'कुवलयानन्द' की व्याख्या। प्रारम्भ में ९० पृष्ठों में मूल लेखक और उनके ग्रन्थ के सम्बन्ध में विस्तृत विवेचना। अन्त में पद्यानुक्रमणिका।

—मीर अब्दुल वाहिद बिलग्रामी (मू० ले०), सैयद अतहर अब्बास रिज़वी (अनु०), डॉ० हजारीप्रसाद द्विवेदी (भू० ले०) : **हकायके हिन्दी :** काशी, नागरी प्रचारिणी सभा, २०१४ वि०, पृ० ११५, डि०, ३ रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

हिन्दी ध्रुपद और विष्णुपद गानों में लौकिक शृंगार के वर्ण्य-विषयों को आध्यात्मिक रूप में समझने का अध्ययन-ग्रन्थ, १२ पृष्ठों की डॉ० हजारीप्रसाद द्विवेदी की भूमिका, ३६ पृष्ठों की प्र० सम्पा० रुद्र कौशिकेय की भूमिका।

—विश्वेश्वर आचार्य (व्याख्या०), डॉ० नगेन्द्र (सम्पा०) : **हिन्दी ध्वन्यालोक :** दिल्ली, गौतम बुक डिपो, १९५२, पृ० ५००, डि०, १० रु०, उ० प्र०, (५२-५३)।

आनन्दवर्द्धनाचार्य प्रणीत 'ध्वन्यालोक' नामक संस्कृत ग्रन्थ के मूल एवं टीका की हिन्दी व्याख्या। डॉ० नगेन्द्र की ५५ पृष्ठों की भूमिका द्रष्टव्य।

—ओमप्रकाश (डॉ०) : **हिन्दी अलंकार साहित्य :** दिल्ली, भारतीय साहित्य मन्दिर, १९५६, पृ० २६७, डि०, ६ रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

उत्तर प्रदेश और विंध्य प्रदेश सरकार द्वारा पुरस्कृत
अन्तर्राष्ट्रीय मुखपृष्ठ प्रदर्शनी में स्वर्णपदक प्राप्त

भारतीय कसीदा

लेखक : **जगदीश मित्तल : कमला मित्तल**

भूमिका : **डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल**

- बढ़िया कागज पर छपे २१५ सादे और रंगीन नमूने
- १८ हाफ़टोन चित्र, ३२ पृष्ठ की ठोस पाठ-सामग्री
- आकार ९" × ११"
- मजबूत जिल्द, नयनाभिराम तिरंगा कवर
- मूल्य १५), विशेष संस्करण २०)

'भारतीय कसीदा' नेशनल एक्सटेंशन सरविस संग्रहालयों के लिए स्वीकृत है।

प्रकाशक : **सुरुचि प्रकाशन** १-२-२१४ गगन महल रोड हैदराबाद, आंध्र प्रदेश

मुख्य वितरक : **राजकमल प्रकाशन** दिल्ली, इलाहाबाद, बम्बई, पटना, मद्रास

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आगरा विश्वविद्यालय द्वारा पी-एच० डी० उपाधि के लिए स्वीकृत थीसिस का कुछ परिवर्तित प्रथम भाग, संस्कृत की प्राचीन परम्परा से लेकर हिन्दी की नवीन गतिविधि तक का अलंकार विषयक अध्ययन।

—कुन्तक (मू० ले०), विश्वेश्वर आचार्य (व्याख्या०), डॉ० नागेन्द्र (सम्पा०) : **हिन्दी वक्रोक्ति जीवितम्** : दिल्ली, आत्माराम एण्ड सन्स, १९५५, पृ० ५५८, डि०, १६ रु०, उ० प्र०, (५५-५६)।

आचार्य कुन्तक के 'वक्रोक्ति जीवितम्' की हिन्दी व्याख्या। प्रारम्भ में अतिरिक्त २८२ पृष्ठों की डॉ० नगेन्द्र की मार्मिक भूमिका एवं २७ पृष्ठों की व्याख्या का आमुख द्रष्टव्य।

—धनंजय (मू० ले०), गोविन्द त्रिगुणायत (व्याख्या०) : **हिन्दी दशरूपक** : कानपुर, साहित्य निकेतन, पृ० २४७, डि०, ६·२५ रु०, उ० प्र०, (५५-५६)।

धनंजय के संस्कृत 'दशरूपक' की हिन्दी व्याख्या, मूल सहित, ३२ पृष्ठों की अतिरिक्त भूमिका द्रष्टव्य।

—धनंजय (मू० ले०), भोलाशंकर व्यास (डॉ०) (व्याख्या०) : **हिन्दी दशरूपक** : बनारस, चौखम्भा विद्या भवन, १९५५, पृ० २८६, डि०, ५ रु०, उ० प्र०, (५५-५६)।

धनंजय के प्रसिद्ध ग्रन्थ 'दशरूपक' की व्याख्या मूल सहित, ४९ पृष्ठों की अतिरिक्त भूमिका द्रष्टव्य।

—नगेन्द्र (डॉ०) : **भारतीय काव्यशास्त्र की भूमिका, भाग २** : दिल्ली, ओरियन्टल बुक डिपो, १९५५, पृ० ४६४, डि०, १० रु०, म० प्र०, (५६)।

रीति तथा वक्रोक्ति सिद्धान्त-विवेचन।

—प्रभुदयाल मीतल : **ब्रजभाषा साहित्य में नायिका भेद** : मथुरा, अग्रवाल प्रेस, २००५ वि०, पृ० ४२४, डि०, ६ रु०, उ० प्र०, (५०)।

नायिका-भेद का सर्वांगीण विवेचन, ब्रज भाषा साहित्य का विशेष उद्धरण सहित।

—बिहारीलाल विजावर : **साहित्य सागर, दो भाग** : लखनऊ, गंगा ग्रन्थागार, १९९४ वि०, पृ० ५५४, रॉ०, प्र० भा० ३·७५ रु०, द्वि० भा० ४·७५ रु०, वि० प्र०, (५२-५३)।

काव्यशास्त्र (नायिका-भेद) का एक प्रामाणिक ग्रन्थ।

—भगीरथ मिश्र (डॉ०) : **काव्यशास्त्र** : गोरखपुर, विश्वविद्यालय प्रकाशन, १९५७, पृ० २९०, डि०, ५.५० रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

काव्यशास्त्र के स्वरूप, कारण, प्रयोजन, तत्त्वों, भेदों और सिद्धान्तों की प्रामाणिक मीमांसा प्रस्तुत करने वाला ग्रन्थ।

—भगीरथ मिश्र (डॉ०) : **हिन्दी काव्यशास्त्र का इतिहास** : लखनऊ, विश्वविद्यालय, २००५ वि०, पृ० ४७८, रॉ०, ९ रु०, उ० प्र०, (५२)।

काव्यशास्त्र के विविध अंगों का क्रमिक विकास, काव्यशास्त्र विषयक ग्रन्थों की विश्लेषणात्मक समालोचना, काव्यशास्त्र के आचार्यों का परिचय, काल-क्रमानुसार उनके ग्रन्थों का विवरण और उनकी आलोचना। पी-एच० डी० के लिए स्वीकृत प्रबन्ध।

—भोलाशंकर व्यास (डॉ०) : **ध्वनि सम्प्रदाय और उसके सिद्धान्त, भाग १** : काशी, नागरी प्रचारिणी सभा, पृ० ५०९, डि०, १० रु०, उ० प्र० (५६-५७)।

राजपूताना विश्वविद्यालय की पी-एच० डी० की उपाधि के लिए स्वीकृत प्रबन्ध। शब्द-शक्ति-विवेचन।

—मम्मट आचार्य (मू० ले०), सत्यव्रतसिंह (व्याख्या०) : **हिन्दी काव्य प्रकाश** : बनारस, चौखम्भा विद्या भवन, १९५५, पृ० ४७४, १० रु०, उ० प्र०, (५५-५६)।

आचार्य मम्मट के प्रसिद्ध ग्रन्थ 'काव्य प्रकाश' की मूलसहित व्याख्या, व्याख्याकार की ७३ पृष्ठों की अतिरिक्त भूमिका द्रष्टव्य।

—मोतीलाल मेनारिया : **राजस्थान का पिंगल साहित्य** : उदयपुर, हितैषी पुस्तक भण्डार, १९५१, पृ० २९०, डि०, ५ रु०, उ० प्र०, (५२-५३)।

राजस्थान के पिंगल साहित्य का क्रमबद्ध इतिहास।

—रामनरेश वर्मा : **वक्रोक्ति और अभिव्यंजना** : बनारस, ज्ञानमण्डल लि०, २००८ वि०, पृ० २३५, ड० क्रा०, ४·५० रु०, उ० प्र०, (५२)।

वक्रोक्ति के स्वरूप का विवेचन तथा उससे ध्वनि का सम्बन्ध, निर्देशन का प्राचीन परम्परानुकूल प्रतिपादन।

—वामन आचार्य (मू० ले०), विश्वेश्वरानन्द (व्याख्या०), डॉ० नगेन्द्र (भूमिका) : **हिन्दी काव्यालंकार सूत्र** : दिल्ली, आत्माराम एण्ड सन्स, २०११ वि०, पृ० ३६६, डि०,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१२ रु०, उ० प्र०, (५५)।

'काव्यालंकार सूत्र वृत्तिः' की हिन्दी व्याख्या। ६ शीर्षकों के अन्तर्गत १८६ पृष्ठों में डॉ० नगेन्द्र की विद्वत्तापूर्ण भूमिका सहित।

हिन्दी साहित्य-इतिहास

—उदयनारायण तिवारी (डॉ०) : **भोजपुरी भाषा और साहित्य** : पटना, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, २०११ वि०, पृ० ३६०, रॉ०, १२ रु०, उ० प्र०, (५५-५६) तथा वि० प्र०, (५५-५६)।

प्रयाग विश्वविद्यालय द्वारा स्वीकृत डी० लिट्० की थीसिस का परिवर्द्धित रूप।

—उदयनारायण तिवारी (डॉ०) : **हिन्दी भाषा का उद्भव और विकास** : प्रयाग, भारती भण्डार, २०१२ वि०, पृ० ६११, डि०, ११ रु०, बि० रा० प०, (५६-५७)।

१४ अध्यायों में हिन्दी भाषा के उद्गम और विकास का प्रामाणिक विवेचन। परिशिष्ट में हिन्दी व्याकरण का संस्कृत, अंग्रेज़ी, फारसी एवं अरबी भाषाओं के व्याकरणों से तुलनात्मक अध्ययन तथा हिन्दी लिपि की उत्पत्ति तथा विकास का ४२ पृष्ठों में परिचय।

—कृष्णदेव उपाध्याय (डॉ०) : **भोजपुरी और उसका साहित्य** : दिल्ली, राजकमल प्रकाशन (कृते सरस्वती सहकार), १९५७, पृ० १४८, २·२५ रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

भोजपुरी भाषा और साहित्य का परिचयात्मक विश्लेषण। भारतीय साहित्य परिचय पुस्तकमाला के अन्तर्गत प्रकाशित।

—गौरीशंकर द्विवेदी 'शंकर' : **बुन्देल वैभव, द्वितीय भाग** : टीकमगढ़, बुन्देल वैभव ग्रन्थमाला, १९९२ वि०, पृ० ५२१, ड० क्रा०, २·५० रु०, वि० प्र०।

बुन्देलखण्ड के हिन्दी-कवियों का साङ्गोपाङ्ग इतिहास। सचित्र और सटिप्पण।

—त्रिलोकी नारायण दीक्षित (डॉ०) : **अवधी और उसका साहित्य** : दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, (कृते सरस्वती सहकार, दिल्ली), पृ० १४०, ड० क्रा०, २ रु०, उ० प्र०, (५६-५७)।

अवधी भाषा और साहित्य का परिचयात्मक विश्लेषण। (भारतीय साहित्य परिचय पुस्तकमाला के अन्तर्गत प्रकाशित)।

—नरेशचन्द्र चतुर्वेदी : **हिन्दी साहित्य का विकास और कानपुर** : कानपुर, कानपुर इतिहास समिति, १९५७, पृ० ३८४, ड० क्रा०, ६ रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

एक विशेष क्षेत्र को लेकर साहित्यकारों एवं कृतियों का परिचय।

—भोलानाथ (डॉ०) : **हिन्दी साहित्य (१९२६-१९४७)** : प्रयाग, हिन्दी परिषद् (प्रयाग वि० वि०), १९५४, पृ० ४६६, ८ रु०, उ० प्र०, (५४-५५)।

विवेच्यकाल के साहित्य की सामान्य प्रवृत्तियों का सर्वांगीण संक्षिप्त विवेचन। प्रयाग विश्वविद्यालय की डी० फिल्० उपाधि के लिए स्वीकृत प्रबन्ध।

—राम अवध द्विवेदी : **हिन्दी साहित्य के विकास की रूप-रेखा** : इलाहाबाद, भारती भण्डार, २०१३ वि०, पृ० २१५, डि०, ४ रु०, उ० प्र०, (५६-५७)।

लेखक के अपने विचार एवं दृष्टिकोण से उद्धृत हिन्दी-साहित्य का इतिहास।

—रामबहोरी शुक्ल : **हिन्दी साहित्य का उद्भव और विकास** : इलाहाबाद, हिन्दी भवन, १९५६, पृ० ३०८, डि०, १० रु०, उ० प्र०, (५६-५७)।

विविध प्रेरणाओं और परिस्थितियों पर विकसित हिन्दी-साहित्य के विकास का साङ्गोपाङ्ग अध्ययन।

—शिवदानसिंह चौहान : **हिन्दी साहित्य के अस्सी वर्ष** : दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, १९५४, पृ० २२२, ड० क्रा०, ३·२५ रु०, उ० प्र०, (५५-५६)।

८ अध्यायों में हिन्दी-साहित्य के विगत ८० वर्षों के सर्वांगीण विकास का विवेचन। १८ पृष्ठों की अतिरिक्त सारगर्भित भूमिका सहित।

—सावित्री सिनहा (डॉ०) : **मध्यकालीन हिन्दी कवयित्रियाँ** : दिल्ली, आत्माराम एण्ड सन्स, १९५३, पृ० ३१७, डि०, ८ रु०, उ० प्र०, (५५)।

मध्यकालीन हिन्दी-साहित्य में कवयित्रियों के योगदान पर गवेषणात्मक अध्ययन। दिल्ली विश्वविद्यालय द्वारा पी-एच० डी० के लिए स्वीकृत प्रबन्ध।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

—हजारी प्रसाद द्विवेदी (डॉ०) : **हिन्दी साहित्य :** दिल्ली, अतरचन्द कपूर एण्ड सन्स, १९५५, पृ० ५१०, ड० क्रा०, ६·२५ रु०, उ० प्र०, (५५)।

हिन्दी-साहित्य के उद्भव और विकास पर प्रामाणिक ग्रन्थ।

आलोचना : सिद्धान्त

—सूरजप्रसाद खत्री (डॉ०) : **आलोचना, इतिहास और सिद्धान्त :** दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, पृ० ५८०, डि०, १२ रु०, बि० रा० प०, (५३-५४)।

आलोचना का दो खण्डों में ऐतिहासिक और सैद्धान्तिक विवेचन।

—रामलालसिंह : **समीक्षा दर्शन, प्रथम भाग :** प्रयाग, इण्डियन प्रेस, १९५२, पृ० ३८१, ड० क्रा०, ६ रु०, वि० प्र०, (५४-५५)।

समीक्षा के सैद्धान्तिक एवं व्यावहारिक पक्ष का विवेचन।

—श्यामलाकान्त वर्मा : **आधुनिक समीक्षा :** पटना, अन्तर्राष्ट्रीय प्रकाशन मण्डल, १९५५, पृ० १३०, ड० क्रा०, २ रु०, उ० प्र०, (५५)।

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के पश्चात् होने वाले समीक्षकों के सम्बन्ध में विचार।

—देवराज (डॉ०) : **आधुनिक समीक्षा : कुछ समस्याएँ :** दिल्ली, राजपाल एण्ड सन्स, १९५४, पृ० १४६, डि०, ४·५० रु०, उ० प्र०, (५५-५६)।

लेखक के सत्रह महत्त्वपूर्ण सैद्धान्तिक साहित्यिक निबन्धों का संकलन। स्वमन्तव्य सहित।

हिन्दी-काव्य

—अतुलकृष्ण गोस्वामी : **नारी :** दिल्ली, आत्माराम एण्ड सन्स, १९५०, पृ० ३१६, डि०, १० रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

१९ सर्गों का महाकाव्य।

—अनूप शर्मा : **वर्द्धमान :** काशी, भारतीय ज्ञानपीठ, १९५१, पृ० ५८५, ड० क्रा०, ६ रु०, उ० प्र०, (५२)।

जैन धर्म के उन्नायक भगवान् महावीर पर १७ सर्गों का महाकाव्य।

—अनूप शर्मा : **शर्वाणी :** दिल्ली, पारिजात प्रकाशन, १९४८, पृ० २५२, डि०, ७·५० रु०, उ० प्र०, (५०)।

७०० घनाक्षरी छन्दों का एक काव्य।

—आनन्द मिश्र : **चन्देरी का जौहर :** दिल्ली, आत्माराम एण्ड सन्स, १९५७, पृ० २९, डि०, (सचित्र), २ रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

—आनन्द मिश्र : **झांसी की रानी :** उ० प्र०, (५७-५८)।

६ सर्गों का खोजपूर्ण ऐतिहासिक खण्ड-काव्य।

—आनन्दकुमार : **अंगराज :** दिल्ली, राजपाल एण्ड सन्स, १९५०, पृ० २९९, डि०, ७ रु०, उ० प्र०, (५१)।

महारथी कर्ण का जीवन-काव्य २५ सर्गों में; ४ पृष्ठों की भूमिका।

—आरसीप्रसादसिंह : **नन्ददास :** पटना, तारा मण्डल, १९५३, पृ० ६३, डि०, २·५० रु०, उ० प्र०, (५५)।

३ सर्गों का एक प्रतीक काव्य और जीवन-दर्शन।

—उदयशंकर भट्ट : **विजय पथ :** दिल्ली, गौतम बुकडिपो, १९५०, पृ० ७९, ड० क्रा०, १·२५ रु०, उ० प्र०, (५२)

खण्ड-काव्य।

—केदारनाथ मिश्र 'प्रभात' : **ऋतम्बरा :** पटना, अजन्ता प्रेस, १९५७, पृ० २०८, डि०, ४·५० रु०, बि० रा० प० (५६-५७) और उ० प्र०, (५७-५८)।

१६ सर्गों का महाकाव्य।

—गिरिजाकुमार माथुर : **धूप के धान :** काशी, भारतीय ज्ञानपीठ, १९५५, पृ० १४८, ड० क्रा०, ३ रु०, उ० प्र० (५५-५६)।

१९४६ ई० से अद्यतन ४५ कविताओं का संग्रह।

—गिरिजाकुमार माथुर : **नाश और निर्माण :** लखनऊ, महेशानन्द एण्ड सन्स, १९४६, पृ० १३६, डि०, ३ रु० उ० प्र०।

कवि के अपने जुलाई १९५८ से नव० १९४५ तक के ५७ गीतों का संग्रह।

—गिरिजादत्त शुक्ल 'गिरीश' : **गृहलक्ष्मी :** नई दिल्ली, राजेन्द्रगुप्त एण्ड कम्पनी, १९५७, पृ० ११३, ड० क्रा०, २ रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

भारतीय ग्राम-समाज-निर्माण में सहयोगिनी, सत्याग्रहमयी ग्राम-नारी का एक खण्ड-काव्यात्मक चित्र।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजकमल प्रकाशन

ऐतिहासिक उपन्यास

जय सोमनाथ :	कन्हैयालाल माणिकलाल मुन्शी	५·५०
भगवान परशुराम :	,, ,,	७·००
लोमहर्षिणी :	,, ,,	५·००
लोपामुद्रा :	,, ,,	५·५०
भरतपादुका :	,, ,,	४·००
कल्याणमल :	के० एम० परिणक्कर	४·००

आंचलिक उपन्यास

मैला आंचल :	फणीश्वरनाथ रेणु (भारत सरकार द्वारा पुरस्कृत)	६·५०
परती : परिकथा :	,, ,,	७.५०
जीवी :	पन्नालाल पटेल (साहित्य अकादेमी की ओर से)	४·५०
नदी और नारी :	हुमायूँ कबीर	४·५०
बहती गंगा :	शिवप्रसाद मिश्र 'रुद्र'	२·५०

सामाजिक उपन्यास

जहाज का पंछी :	इलाचन्द्र जोशी	७·५०
बुढ़िया की गाय :	मुल्कराज आनन्द	५·५०
एक था राजा :	,,	अभी अप्राप्य
दूध-गाछ :	देवेन्द्र सत्यार्थी	६·००
लोक-परलोक :	उदयशंकर भट्ट	३.५०
विशाख :	प्रकाशचन्द्र गुप्त	१·५०
दुखमोचन :	नागार्जुन	३·००
बाबा बटेसरनाथ :	,,	२·००
उखड़े हुए लोग :	राजेन्द्र यादव	७·५०
प्रगति की राह :	गोविन्दवल्लभ पन्त	अभी अप्राप्य
कायर :	राजेन्द्र शर्मा	२·५०
जीवन-दान :	श्रीराम शर्मा 'राम'	३·००
आदमी और सिक्के :	महेन्द्रनाथ	२·००
गंगा मैया :	भैरवप्रसाद गुप्त	२·००

चन्दा :	इन्द्र वसावड़ा	२·००
रोड़े और पत्थर :	डॉ० देवराज	२·२५
बाहर-भीतर :	,,	२·००
उबाल :	डॉ० रांगेय राघव	१·७५
सनसनाते सपने :	राधाकृष्ण	२·००
स्वप्नमयी :	विष्णु प्रभाकर	२·००
दूर के ढोल :	ए० रमेश चौधरी 'आरिगपूडि'	४·००
कली मुसकराई :	सत्यप्रकाश संगर	३·००
कजली :	भवानी भट्टाचार्य	अभी अप्राप्य
टूटे हुए पर :	खलील जिब्रान	२·००
बेद वृक्षों की छाया में :	शिह् येन	१·२५

कहानियाँ—निजी संकलन

जानवर और जानवर	मोहन राकेश	३·००
तुम बड़ी पागल हो	मालती परूलकर	२·५०
काल सुन्दरी :	ओंकारनाथ श्रीवास्तव	३·००
जीवन के अंचल से :	लीलावती मुन्शी	अभी अप्राप्य
फूल और पत्थर :	कृष्णचन्द्र	अभी अप्राप्य
जहाँ लक्ष्मी कैद है :	राजेन्द्र यादव	४·००
मैं हार गई :	मन्नू भण्डारी	३·००
आधी रात का सूरज :	शमशेरसिंह नरूला	२·५०

कहानी-संग्रह

*कहानी : नई पुरानी :	सं० डॉ० रघुबीरसिंह	२·००

नाटक

लाल कनेर :	रवीन्द्रनाथ ठाकुर अनु० हजारी प्रसाद द्विवेदी	२·००
वाह रे मैं वाह ! :	कन्हैयालाल माणिकलाल मुन्शी	४·५०
ध्रुवतारिका :	डॉ० रामकुमार वर्मा	अभी अप्राप्य
एकला चलो रे :	उदयशंकर भट्ट	अभी अप्राप्य
क्रान्तिकारी :	,,	१·५०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छलना भगवतीप्रसाद बाजपेयी ३·००

नाटक-संग्रह

***युगछाया :** सं० शिवदानसिंह चौहान २·५०

कविता

पर आँखें नहीं भरीं : डॉ० शिवमंगल सिंह 'सुमन' ४·००
धरती और स्वर्ग : डॉ० देवराज ३·५०
अपलक : बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' अभी अप्राप्य
क्वासि : ,, ,, ४·००
सूर्य का स्वागत : दुष्यन्त कुमार ३·५०
बनपाखी सुनो : नरेश मेहता ३·००
कविताएँ : कीर्ति चौधरी ३·५०
चक्रव्यूह : कुँवर नारायण ३·५०
सुवेला : शम्भुनाथ 'शेष' २·५०
चेतना : बाबूराम पालीवाल २·००
दिवालोक : शम्भूनाथ सिंह २·००
रामचरित्र (मालवा के राजा रामसिंह का जीवन-चरित्र) : रघुनाथ 'रसाल' ३·५०
अकेले कण्ठ की पुकार : अजित कुमार ३·००

कविता-संग्रह

***पद्य-प्रवाह :** सं० श्रीमती सुशीलाकुमारी २·५०

भारतीय अमर-साहित्य

पञ्चतन्त्र : डॉ० मोतीचन्द ५·२५
दशकुमारचरित : पं० निरञ्जनदेव शर्मा अभी अप्राप्य
मेघदूत (मूल सहित) : डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल ४·५०
सेतुबन्ध : डॉ० रघुवंश ४·५०

संस्कृति

भगवान् बुद्ध : धर्मानन्द कोसम्बी (साहित्य अकादेमी की ओर से) ५·००
***हिन्दू सभ्यता :** डॉ० राधाकुमुद मुकर्जी, अनु० डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल ७·५०
प्राचीन भारतीय विचार और विभूतियाँ : डॉ० राधाकुमुद मुकर्जी ३·५०
वैष्णव धर्म : परशुराम चतुर्वेदी ३·५०
भारतीय संस्कृति : शिवदत्त ज्ञानी ५·५०

भारतीय समाज विन्यास : डॉ० राधाकमल मुकर्जी २·००
भारतीय तत्त्व चिन्तन : डॉ० जगदीशचन्द्र जैन ६·५०

लोक-साहित्य

भारतीय लोक-साहित्य (सिद्धान्त) : श्याम परमार ४·००
पाषाण नगरी (लोक-कथाएँ) : शिवसहाय चतुर्वेदी अभी अप्राप्य
धरती गाती है : देवेन्द्र सत्यार्थी अभी अप्राप्य
धीरे बहो गंगा : ,, ,, अभी अप्राप्य

आलोचना

आलोचना, इतिहास तथा सिद्धान्त : डॉ० एस० पी० खत्री १२·००
कवि प्रसाद : डॉ० भोलानाथ तिवारी ४·००
प्रेमचन्द एक विवेचन : डॉ इन्द्रनाथ मदान ३·५०
हिन्दी निबन्ध : प्रभाकर माचवे २·५०
पृथ्वीराज रासो में कथानक रूढ़ियाँ : व्रजविलास श्रीवास्तव ३·५०
भारतीय प्रेमाख्यान की परम्परा : परशुराम चतुर्वेदी ४·००
हिन्दी रीति साहित्य : डॉ० भगीरथ मिश्र ४·००
मध्यकालीन हिन्दी गद्य हरिमोहन श्रीवास्तव ४·००
मुन्शीजी और उनकी प्रतिभा : पं० सीताराम चतुर्वेदी ३·००
हिन्दी गद्य-काव्य : पद्मसिंह शर्मा 'कमलेश' ७·००

साहित्य : इतिहास एवं परिचय

हिन्दी गद्य साहित्य : शिवदानसिंह चौहान २·७५
हिन्दी साहित्य के अस्सी वर्ष : ,, ,, ३·५०
उर्दू साहित्य का इतिहास : डॉ० एजाज़ हुसेन ६·००
हिन्दी भाषा तथा साहित्य : डॉ० उदयनारायण तिवारी ३·२५
उर्दू और उसका साहित्य : गोपीनाथ 'अमन' २·२५
तमिल और उसका साहित्य : पूर्ण सोमसुन्दरम् २·२५
तेलुगु और उसका साहित्य : हनुमच्छास्त्री 'अयाचित' २·२५
मालवी और उसका साहित्य : श्याम परमार २·२५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बंगला और उसका साहित्य : हंसकुमार तिवारी २·२५

अवधी और उसका साहित्य : डॉ० त्रिलोक नारायण दीक्षित २·२५

मराठी और उसका साहित्य : प्रभाकर माचवे २·२५

प्राकृत और उसका साहित्य : डॉ० हरदेव बाहरी २·२५

भोजपुरी और उसका साहित्य : डॉ० कृष्णदेव उपाध्याय २·२५

संस्कृत और उसका साहित्य : डॉ० नानूराम व्यास २·२५

भाषा-विज्ञान, व्याकरण

भारतीय-आर्य भाषा और हिन्दी : डॉ० सुनीतिकुमार चाटुर्ज्या ७·२५

शब्दों का जीवन : डॉ० भोलानाथ तिवारी अभी अप्राप्य

हिन्दी और प्रादेशिक भाषाओं का वैज्ञानिक इतिहास : शमशेरसिंह नरूला ४·००

हिन्दी भाषा का सरल व्याकरण : डॉ० भोलानाथ तिवारी ३.५०

अपभ्रंश व्याकरण : आचार्य हेमचन्द्र २·००

आलोचनात्मक संकलन

निबन्धिनी (निजी संकलन) : गंगाप्रसाद पाण्डेय ४·००

प्रेमचन्द और गोर्की : सं० शचीरानी गुर्टू ६·००

सिद्धान्त और समीक्षा : सं० सन्तराम 'विचित्र' २·५०

हिन्दी गद्य की प्रवृत्तियाँ : आलोचना पुस्तकमाला २·००

हिन्दी काव्य की प्रवृत्तियाँ : ,, ,, २·००

हिन्दी-आलोचना की अर्वाचीन प्रवृत्तियाँ : ,, ,, २·२५

हिन्दी के गौरव ग्रन्थ : ,, ,, २·२५

गद्य-काव्य

मालाकार : रवीन्द्रनाथ ठाकुर अनु० सत्यकाम विद्यालंकार १०·००

शेष स्मृतियाँ : डॉ० रघुबीरसिंह ४·००

साहित्यिक निबन्ध

जीवन-करण : डॉ० रघुबीरसिंह अभी अप्राप्य

जीवन-धूलि : ,, ,, अभी अप्राप्य

निबन्ध-संकलन

*गद्य-गौरव : सं० बलराज एम० ए० २·५०

*विचार-वल्लरी : सं० जैनेन्द्रकुमार २·५०

गद्य-पद्य संग्रह

*मानसरोवर : सं० क्षेमचन्द्र 'सुमन' २·५०

*साहित्य-सञ्चय : सं० ओंप्रकाश २·५०

धार्मिक

धर्म वर्णन : आनन्दशंकर बापूभाई ध्रुव २·७५

इतिहास

रतलाम का प्रथम राज्य : डॉ० रघुबीरसिंह १०·००

Asoka : Dr. Radha Kumud Mookerji १८·००

Chandragupta Maurya & His Times ,, ,, अभी अप्राप्य

आत्मकथा, जीवन-चरित्र

आधे रास्ते : कन्हैयालाल माणिकलाल मुन्शी अभी अप्राप्य

सीधी चढ़ान : ,, ,, ५·२५

स्वप्नसिद्धि की खोज में : ,, ,, ५·५०

अर्थशास्त्र, राजनीति

*भारतीय अर्थशास्त्र : जथार व बेरी १४·५०

*भारतीय अर्थशास्त्र : जथार व जथार १०·००

*राजनीति सार : डॉ० ए० अप्पादोराय ८·५०

आधुनिक संविधान : के० सी० व्हीयर ३·५०

विविध

ग्रामोद्योग और उनकी शब्दावली : डॉ० हरिप्रसाद गुप्त ६·००

भारत और अन्तर्राष्ट्रीय श्रम संस्था : नरेन्द्रनाथ 'कौल' ३·२५

शिक्षा, मनोविज्ञान

शिक्षा : डॉ० जाकिर हुसैन ३·२५

शिक्षण-प्रविधि : वी० एस० माथुर, शची माथुर ३·००

बच्चा मेरा शिक्षक : कैरोलिन प्रैट १·५०

सरल मनोविज्ञान : हंसराज भाटिया ४·००

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरल शिक्षा-मनोविज्ञान : हंसराज भाटिया ३·५०
हमारे बच्चे ६ से १२ वर्ष तक : अनूदित अभी अप्राप्य

राजकमल मनोविज्ञान माला

बचपन के पहले पांच साल : १·२५
हीन भाव : १·२५
बचपन ५ से १० साल : १·२५
हमारे जीवन का अर्थ (भाग १) : १.२५
प्रेम और विवाह : १ २५
हमारे जीवन का अर्थ (भाग २) : १·२५
व्यक्तित्व : १·२५
स्मरण-शक्ति : १·२५
मित्र बनाने की कला : १·२५
हमारे जीवन का अर्थ (भाग ३) : १·२५
अध्ययन कैसे करें : १·२५
हमारे जीवन का अर्थ (भाग ४) : १·२५
चिन्ता : १·२५
हमारे जीवन का अर्थ (भाग ५) : १·२५
माता-पिता की समस्या : १·२५
हमारे जीवन का अर्थ (भाग ६) : १·२५

स्त्रियोपयोगी

नारी का रूप-शृंगार : सावित्रीदेवी वर्मा ६·००
भारतीय भोजन विज्ञान : ,, ७·००

सेक्स

दाम्पत्य प्रेम : डॉ० मेरी स्टोप्स ३·००
संतति नियमन : ,, ,, २·००
स्थायी प्रेम : ,, ,, ३·००

किशोरोपयोगी, प्रौढ़ोपयोगी

इन्सान की कहानी : मुल्कराज आनन्द ३·००
हिन्दुस्तान की कहानी : ,, ,, २·५०
ग्राम-पंचायत (नाटक) : राजेन्द्र शर्मा २·००
अफ्रीका : मदन गोपाल २·००
अक्षरों का आरम्भ : आगा हैदर हुसैन २.००
अजन्ता के चित्रकूट : रायकृष्णदास, आनन्दकृष्ण १·२५

प्रौढ़ोपयोगी देश-परिचय माला

देश की जानकारी : ०·५
गांव की बातें : ०·५
सहकारी आन्दोलन : ०·५
सफाई : ०·५
खेतीबारी : ०·५
पशु-पालन : ०·५
साम्प्रदायिकता : ०·५
स्वतन्त्र देश के नागरिक : ०·५
हमारा विधान : ०·५
भारत के तीर्थस्थान : ०·५
स्वास्थ्य-रक्षा : ०·५
हमारे त्यौहार : ०·५
भारत-निर्माता : ०·५
नगर-व्यवस्था : ०·५

प्रौढ़ोपयोगी विज्ञान-परिचय माला

पेड़-पौधे : ०·६
पक्षियों का जीवन : ०·६
फल और सब्जियां : ०·६
कीड़े-मकोड़े व मक्खी-मच्छर : ०·६
पदार्थ की रचना : ०·६
हवा और पानी : ०·६
शरीर और भोजन : ०·६
हमारी फसलें : ०·६

बाल-साहित्य : चित्रकथा

नन्हे लंगूर की कहानी : वेलरी मैजिल
(भारत सरकार द्वारा पुरस्कृत) अभी अप्रा
आओ दोस्त बनाएँ : सईदा सय्यदैन ०·

बाल-साहित्य : अमर-कथा, लोक-कथा

पञ्चतन्त्र की कहानियां, (भाग १) :
(भारत सरकार द्वारा पुरस्कृत) शकुन्तला देवी १·
पञ्चतन्त्र की कहानियां, (भाग २) : ,, ,, १·
पञ्चतन्त्र की कहानियां, (भाग ३) : ,, ,, १·

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाल पञ्चतन्त्र :	शकुन्तला देवी	२·००
सोने का नीबू :	किरण	१·२५
लोक कथाएँ :	द्रोणवीर कोहली	१·२५

बाल-साहित्य : कहानियाँ

परिस्तान : ग्रिम्स की कहानियाँ	अनु० रघुपतिसहाय फिराक	४·५०
पीली बत्तक :	चीन की कहानियाँ	१·००
तीरन्दाज 'ई' :	,, ,,	१·००
बरफीले देश में :	रूस की कहानियाँ	१·००
पहला शिकार :	,, ,,	१·००
अमृत के घड़े :	पृथ्वीकुमार अग्रवाल	१·००
बचपन की कहानियाँ :	शरत्चन्द्र चैटर्जी	१·५०
धुएँ की फांसी :	एस० ए० ताहिर	१·५०

बाल-साहित्य : कविता

रामायण के गीत :	'राघव'	१·००

बाल-साहित्य : नाटक

बच्चों की कचहरी :	केशवचन्द्र वर्मा	१·२५
जंगल में शेर :	कुदसिया जैदी	१·२५
चचा छक्कन के ड्रामे (२ भागों में)	कुदसिया ज़ैदी प्रति भाग	१·००
चमचम चमके चन्दा मामा :	बाबूराम पालीवाल	१·००

बाल-साहित्य : नागरिक-ज्ञान

सच्ची नागरिकता : (भारत सरकार द्वारा पुरस्कृत)	मनरो लीफ	२·००
एक कदम आगे :	मनरो लीफ	२·००

बाल-साहित्य : जीवनियाँ

हमारे बापू :	डॉ० इन्द्रनाथ मदान	१·००
हमारे नेहरू :	,, ,,	१·००
हमारे गुरुदेव :	,, ,,	१·००
मुन्शी प्रेमचन्द :	,, ,,	१·००
लेनिन :	,, ,,	१·००
अब्राहम लिंकन :	,, ,,	१·००
भगवान् बुद्ध :	,, ,,	१·००

राजकमल प्रकाशन

द्वारा वितरित पुस्तकें

(एकाधिकारी वितरण)

उपन्यास

नये मोड़ :	उदयशंकर भट्ट	अभी अप्राप्य
सागर लहरें और मनुष्य :	,, ,,	५·००
एक नीड़ दो पंछी :	,, ,,	८·५०
कठपुतली :	देवेन्द्र सत्यार्थी	अप्राप्य
ब्रह्मपुत्र :	,, ,,	७·००
रथ के पहिये :	,, ,,	अभी अप्राप्य
हेमा :	राजेन्द्र शर्मा	३·००
रीता की बात :	प्रताप नारायण टण्डन	२·००
चांद रानी :	सत्यप्रकाश संगर	२·२५
एक था :	श्रीमती शीला शर्मा	२·००
धरती की ओर :	शिवराज कारान्त	५·००
सोरठ तेरा बहता पानी :	झवेरचन्द मेघानी	३·००
निर्देशक	'पहाड़ी'	५.००
सराय	,,	४.५०
फुटपाथ	राधाकृष्ण	२.००
कश्मीरी गुलाब	फडके	३.००

कहानियाँ

लम्बे दिन जलती रातें :	सत्यप्रकाश संगर	२·२५
अफ्रीका का आदमी :	,, ,,	२·७५
अवगुण्ठन :	,, ,,	२.२५
नया मार्ग :	,, ,,	२·५०
कितना ऊंचा कितना नीचा :	,, ,,	२·२५
वीरभद्र की गोष्ठी :	रावी	३·५०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महिला शासन :	चिरंजीलाल पाराशर	२.००
छाया में	'पहाड़ी'	३.२५
मौली	,,	२.५०
कैदी और बुलबुल	,,	४.००
तूफान के बाद	,,	३.५०
शेषनाग की थाती	,,	४.००
अधूरा चित्र	,,	२.५०
नया रास्ता	,,	३.२५
बया का घोंसला	,,	३.२५
सजला	राधाकृष्ण	५.००
गांधीजी का भूत	'बेढब' बनारसी	१.५०
महत्व के गुमनाम पत्र	,,	१.२५

नाटक

नया समाज :	उदयशंकर भट्ट	२.००
विद्रोहिणी अम्बा	,, ,,	२.००
सगर विजय :	,, ,,	२.२५
शक विजय :	,, ,,	२.२५
अवशेष	सुधाकर पाण्डेय	२.००

आलोचना, निबन्ध

मीरां एक अध्ययन	'शबनम'	३.५०
मीरां बृहत् पद संग्रह	,,	६.००
चन्द्रसखी और उनका काव्य	,,	२.००
मध्यकालीन शृङ्गारिक प्रवृत्तियां तथा नव-निबन्ध	परशुराम चतुर्वेदी	३.००
नव निबन्ध	,,	२.५०
भाषा विज्ञान और हिन्दी	डॉ० सरयूप्रसाद	४.००

राजनीति, नागरिक शास्त्र

पार्लमेण्टरी सरकार (इंगलैण्ड)	विश्वनाथ राय
नागरिक और नागरिकता	शुभदा तेलंग

कविता

भग्नमूर्ति :	'अनिल' (साहित्य अकादेमी प्रकाशन)
यायावर	रामबहादुर सिंह 'मुक्त'
प्रेयस	सुधीन्द्र
जीवन की लहरें	व्रजमोहन गुप्त

संस्कृति, लोक-साहित्य

प्राचीन भारतीय मनोरंजन :	मन्मथराय
विश्वकवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर :	इलाचन्द्र जोशी
बाजत आवे ढोल :	देवेन्द्र सत्यार्थी
हमारी नाट्य परम्परा	श्रीकृष्णदास

धार्मिक

सागर सेतु :	राजेन्द्र शर्मा

आत्मकथा, जीवन-चरित्र

चाँद सूरज के बीरन :	देवेन्द्र सत्यार्थी
लोकमान्य तिलक :	भीमराव गोपाल देशपाण्डे

किशोरोपयोगी, प्रौढ़ोपयोगी

आदर्श माता-पिता :	सावित्रीदेवी वर्मा
कैसे पकायें, क्या खायें :	,, ,,
बीमार की सेवा :	डॉ० इन्द्रसेन वर्मा
पशु से मानव	श्रीवास्तव, उदयन
अंगूरों का गुच्छा	रमापति शुक्ल

राजकमल प्रकाशन प्रा० लि०

१५-ए, महात्मा गांधी मार्ग,
इलाहाबाद-१

साइंस कालेज के सामने
पटना-६

हिमालय हाउस, हार्नबी रोड,
बम्बई-१

४२७, मिण्ट स्ट्रीट,
मद्रास-१

८, फ़ैज बाजार,
दिल्ली-७

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

—गोपालशरणसिंह : **ग्रामिका** : प्रयाग, इण्डियन प्रेस लि०, १९५१, पृ० १२४, रॉ०, ३ रु०, उ० प्र०, (५२-५३)।

१९३९ ई० के बाद की अपनी ५७ रचनाओं का संग्रह।

—गोपालशरण सिंह, (मू० ले० पुरुषोत्तमदास टंडन) : **जगदालोक** : प्रयाग, इंडियन प्रेस लि०, १९५२, पृ० ३४१, डि०, ४·५० रु०, उ० प्र०, (५२-५३) तथा वि० प्र०, (५३-५४)।

महात्मा गांधीजी के जीवन और उनकी साधना पर आधारित २० सर्गों का एक महाकाव्य, २१ पृष्ठ की भूमिका।

—चुन्नीलाल 'शेष' : **सूर के सौ कूट** : वाराणसी, हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, २०१३ वि०, पृ० २६८, डि०, ५ रु०, उ० प्र०, (५६-५७)।

सूरदासजी के १०० कूट पद और उनकी व्याख्या। ४२ पृष्ठों की भूमिका।

—जगतसिंह सेंगर : **किसान सतसई** : उ० प्र०, (५०)।

—जगदीश गुप्त (डॉ०) : **नाव के पाँव** : गोरखपुर, विश्वविद्यालय प्रकाशन, १९५५, पृ० ७८, डि०, (सचित्र), २·५० रु०, उ० प्र०, (५६)।

लेखक की नवीन और प्राचीन ५७ कविताओं का संग्रह। नई कविता का मॉडल।

—जगन्नाथप्रसाद मिलिन्द : **बलि पथ के गीत** : दिल्ली, आत्माराम एण्ड सन्स, १९५०, डि०, ४ रु०, उ० प्र०, (५२)।

११ शीर्षकों के अन्तर्गत कवि के ४० गीतों का संग्रह।

—जयशंकर त्रिपाठी : **आंजनेय** : प्रयाग, साहित्यकार संघ, २०१३ वि०, पृ० ११२, ड० क्रा०, २ रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

५ सर्गों में विभक्त सांस्कृतिक काव्य।

—ताराचन्द 'हारीत' : **दमयन्ती** : दिल्ली, आत्माराम एण्ड सन्स, १९५७, पृ० ३०४, डि०, ८ रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

१४ सर्गों का महाकाव्य।

—त्रिलोकीनारायण दीक्षित (डॉ०) : **परिचयी साहित्य** : लखनऊ, विश्वविद्यालय हिन्दी प्रकाशन, १९५७, पृ० २५२, डि०, ५ रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

निर्गुणोपासक सन्तों और साधकों के जीवन-परिचय और उनके शिष्यों द्वारा लिखित पद्यों का संकलन।

—त्रिलोचन शास्त्री : **गुलाब और बुलबुल** : बनारस, पंकज प्रकाशन, १९५६, पृ० १३६, ड० क्रा०, २·२५ रु०, उ० प्र०, (५६-५७)।

कवि द्वारा १९५५-५६ में लिखित रुबाइयों और गजलों का संग्रह।

—त्रिलोचन शास्त्री : **दिगंत** : वाराणसी, जगत शंखधर, १९५७, पृ० ६८, डि०, २·५० रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

कवि के अपने गीतों का संग्रह।

—दुष्यन्त कुमार : **सूर्य का स्वागत** : दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, १९५७, पृ० ८४, डि०, ३ रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

कवि की अपनी कविताओं का संग्रह।

—द्वारकाप्रसाद मिश्र (मू० ले०), डॉ० राजेन्द्रप्रसाद (प्राक्कथन), विनयमोहन शर्मा, (टीका०) : **कृष्णायन** : (तीन खण्ड) नागपुर, प्रतिभा प्रकाशन, २००८ वि०, पृ० ४००, रॉ०, ६ रु०, हर० डाल० पु०।

श्रीकृष्णचन्द्रजी की जीवन-लीला पर एक महाकाव्य। (अवतरण काण्ड, मथुरा काण्ड, द्वारका काण्ड)

—नर्मदेश्वर चतुर्वेदी : **संगीतज्ञ कवियों की हिन्दी रचनाएँ** : प्रयाग, साहित्य भवन लि०, १९५५, पृ० १६०, ड० क्रा०, २·५० रु०, उ० प्र०, (५५-५६)।

पाँच भारतीय संगीतज्ञ कवियों की रचनाओं का संकलन, कवि-परिचय एवं हिन्दुस्तानी संगीत के विकास सहित।

—निरंकारदेव सेवक : **मुन्नू के गीत** : उ० प्र०, (५६-५७)।

—नीरज (गोपालदास सक्सेना) : **दर्द दिया है** : दिल्ली, आत्माराम एण्ड सन्स, १९५६, पृ० १२६, डि०, ४ रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

कवि के अपने ५ गीतों का संग्रह।

—नीलकण्ठ तिवारी : **भावना के फूल** : बम्बई, रमा प्रकाशन, १९५४, पृ० १२२, डि०, ३·५० रु०, उ० प्र०, (५५)।

कवि की अपनी ४३ रचनाओं का संकलन।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

—परमेश्वर 'द्विरेफ'(भूमिका नन्ददुलारे वाजपेयी) : **मीरा** : वाराणसी, हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, १९५७, पृ० २६४, डि०, ५ रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

१३ सर्गों का महाकाव्य।

—बलबीरसिंह 'रंग' : **संगम** : एटा, भारतीय प्रकाशन मन्दिर, १९५०, पृ० १९६, ड० क्रा०, ३ रु०, उ० प्र०, (५२)।

कवि के अपने ९८ गीतों का संकलन।

—बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' : **उर्मिला** : उ० प्र०, (५७-५८)।

—बारणसी राममूर्ति 'रेणु' : **आंध्र देश के कबीर श्री वेमना** : प्रयाग, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, २००७ वि०, पृ० ११२, ड० क्रा०, १·७५ रु०, उ० प्र०, (५२-५३)।

संत वेमना की कुछ चुनी हुई रचनाएँ, विस्तृत भूमिका सहित।

—बालशौरि रेड्डि : **पंचामृत** : हैदराबाद, हिन्दी प्रचार सभा, १९५४, पृ० २२८, डि०, ४ रु०, के० स० द्वि० वि० पु० प्रति० में पुरस्कृत।

तेलुगु के प्राचीन पाँच प्रतिनिधि कवियों का संक्षिप्त परिचय तथा उनकी कुछ उत्कृष्ट रचनाओं का संकलन।

—भगीरथ मिश्र (डॉ०) : **तुलसी रसायन** : प्रयाग, साहित्य भवन लि०, १९५४, पृ० १९८, ड० क्रा०, २·५० रु०, उ० प्र०, (५४-५५)।

गोस्वामी तुलसीदास के युग, जीवनी और कृतित्व की समीक्षा तथा उनकी कृतियों से चुना हुआ संग्रह।

—मंझन (मू० ले०), डॉ० शिवगोपाल मिश्र (सम्पा०) : **मंझन कृत मधुमालती** : वाराणसी, हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, १९५७, पृ० २६८, (भू० ७०, मूल १६४, परि० ३४) डि०, ८ रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

सूफी कवि मंझन के प्रेमाख्यानक काव्य 'मधु मालती' का खोजपूर्ण सम्पादन (लेखक को एकडला (फतेहपुर) में प्राप्त सम्पूर्ण हस्तलिखित प्रति के तथा अन्य प्रतियों के आधार पर)।

—महेन्द्रसिंह 'प्रेमघन' : **भिक्षुणी** : बलिया, लेखक द्वारा, १९५२, पृ० १०४, ड० क्रा०, १·५० रु०, उ० प्र०, (५२-५३)।

यशोधरा के चरित्र पर आधारित काव्य।

—माखनलाल चतुर्वेदी : **युग चरण** : प्रयाग, भारती भण्डार, २०१३ वि०, पृ० ६५, डि०, २ रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

कवि के ३९ गीतों का संग्रह।

—माखनलाल चतुर्वेदी : **माता** : खण्डवा, पंकज प्रकाशन, २००८ वि०, पृ० १४९, डि०, ४·५० रु०, उ० प्र०, (५२-५३)।

कवि की ५६ रचनाओं का संकलन।

—माखनलाल चतुर्वेदी : **समर्पण** : इलाहाबाद, भारती भण्डार, २०१३ वि०, पृ० ११२, डि०, ३ रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

कवि की ८२ कविताओं का संग्रह।

—माखनलाल चतुर्वेदी : **हिमतरंगिनी** : प्रयाग, भारती भण्डार, २०१२ वि०, पृ० ५६, डि०, २·७५ रु०, सा० ए० (५५) तथा उ० प्र०, (५०)।

कवि के ५५ गीतों का संग्रह।

—माताप्रसाद गुप्त तथा अगरचन्द नाहटा : **वीसलदेव रास** : प्रयाग, हिन्दी परिषद् (प्रयाग वि० वि०), १९५३, पृ० ३१४, ड० क्रा०, ३·५० रु०, उ० प्र०, (५५)।

वीसलदेव रास का मूल पाठ संशोधित, एवं मूल की व्याख्या, ५२ पृष्ठों की भूमिका सहित।

—मैथिलीशरण गुप्त : **पृथ्वीपुत्र** : झाँसी, चिरगाँव, साहित्य सदन, २०१३ वि०, पृ० ६४, ड० क्रा०, ७५ न० पै० उ० प्र०, (५२)।

तीन सम्वादों का पद्यात्मक संग्रह।

—मैथिलीशरण गुप्त : **प्रदक्षिणा** : झाँसी, चिरगाँव, साहित्य सदन, २०१४ वि०, पृ० ७६, ड० क्रा०, ६२ न० पै० उ० प्र०, (५२)।

—मैथिलीशरण गुप्त : **हिडिम्बा** : झाँसी, चिरगाँव, साहित्य सदन, २००७ वि०, पृ० ४५, ड० क्रा०, ७५ न० पै० उ० प्र०, (५२)।

—रघुनाथ प्रसाद 'साधक' : **साधना** : मुरादाबाद, कुमार प्रकाशन, १९५२, पृ० २१२, डि०, ४·५० रु०, उ० प्र०, (५२-५३)।

एक प्रबन्ध-काव्य।

—रघुवीरशरण 'मित्र' : **जलते तारे** : मेरठ, भारतीय साहित्य प्रकाशन, २०१० वि०, पृ० १०६, डि०, २·५० रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'मित्र' जी की कविताओं का नवीन संग्रह ।

—रघुवीरशरण 'मित्र' : **प्रतिध्वनि** : मेरठ, भारतीय साहित्य प्रकाशन, १९५१, पृ० १५२, डि०, ३ रु०, उ० प्र०, (५३)।

कवि के अपने १०१ गीतों का संग्रह ।

—रघुवीरशरण 'मित्र' : **भूमि के भगवान** : मेरठ, भारतीय साहित्य प्रकाशन, ५७, पृ० ८०, ड० क्रा०, १'५० रु०, उ० प्र०, (५६-५७) ।

लेखक की ९ बालोपयोगी कविताओं का संग्रह ।

—रघुवीरशरण 'मित्र' : **महापुरुष** : मेरठ, भारतीय साहित्य प्रकाशन, ५४वें कांग्रेस अधिवेशन के समय प्रकाशित, पृ० ३९, ड० क्रा०, (सचित्र), १ रु०, वि० प्र०, (५३) ।

देश के १६ अग्रणी राजनीतिक नेताओं पर लिखी कविताओं का संग्रह ।

—रघुवीरशरण 'मित्र' : **सुनो बच्चो** : मेरठ, भारतीय साहित्य प्रकाशन, १९५७, पृ० ६६, ड० क्रा०, (सचित्र), १'५० रु०, उ० प्र०, (५३) तथा वि० प्र०, (५३) ।

लेखक की बालोपयोगी कविताओं का संकलन ।

—रमा सिंह (कुमारी) : **समुद्रफेन** : लखनऊ, उदयन प्रकाशन, १९५७, पृ० ७६, डि०, ३ रु०, उ० प्र०, (५७-५८) ।

कवयित्री की अपनी कविताओं का संग्रह ।

—रामकुमार चतुर्वेदी : **धूल का परिचय** : ग्वालियर, विद्या मन्दिर प्रकाशन, २०१२ वि०, पृ० ९२, ड० क्रा०, २ रु०, उ० प्र०, (५५-५६) ।

कवि की अपनी २५ कविताओं का संकलन ।

—रामकुमार वर्मा (डॉ०) : **आकाश गंगा** : इलाहाबाद, रामनारायणलाल, पृ० ९०, डि०, १.५० रु०, उ० प्र०, (५२)।

अपनी कविताओं का संग्रह ।

—राजकुमारी सोंधी : **पथ के गीत** : वि० प्र०, (५५-५६)।

—रामधारीसिंह 'दिनकर' : **कुरुक्षेत्र** : पटना, अजन्ता प्रेस, १९५६, पृ० १४६, डि०, ३.५० रु०, के० स० प्र० बि० पु० प्रति० तथा उ० प्र०, (५०) ।

सात सर्गों का एक महाकाव्य ।

—रामधारीसिंह 'दिनकर' : **नीलकुसुम** : पटना, उदयाचल, १९५६, पृ० १०६, डि०, ३ रु०, बि० रा० प०, (५५-५६) ।

'दिनकर' जी की स्फुट कविताओं का संग्रह ।

—रामधारीसिंह 'दिनकर' : **मिर्च का मजा** : पटना, अजन्ता प्रेस, पृ० ३२, फु० स्के०, (सचित्र), ७५ न० पै०, के० स० बा० सा० प्रति०, (५४) तथा काशी ना० प्र० स० ।

बालोपयोगी सात अपनी कहानियों का संग्रह ।

—रामधारीसिंह 'दिनकर' : **रश्मिरथी** : पटना, अजन्ता प्रेस, १९५२, पृ० १८५, रॉ०, ५ रु०, ना० प्र० सभा द्वारा द्विवेदी स्वर्ण-पदक प्रदत्त ।

सात सर्गों का काव्य ।

—रामनरेश पाण्डेय : **रश्मिरेखा** : उ० प्र०, (५२) ।

—रामशंकर शुक्ल 'रसाल' (डॉ०) : **काव्य पुरुष** : प्रयाग, अग्रवाल प्रेस, १९५५, पृ० २३४, डि०, ७ रु०, उ० प्र०, (५६-५७) ।

काव्योत्पत्ति पर काल्पनिक काव्य ।

—रामस्वरूप मिश्र : **कृष्णनायन** : उ० प्र०, (५५-५६) ।

—रामानन्द तिवारी 'भारती नन्दन' : **पार्वती** : कोटा, मंगल भवन, १९५५, पृ० ५६७, रॉ०, ७.५० रु०, हर० डा० पुर० (५८), के० स० तृ० वि० पु० प्रति० तथा उ० प्र०, (५६-५७) ।

२७ सर्गों का महाकाव्य ।

—रामावतार पोद्दार 'अरुण' : **कालिदास** : बिहार (समस्तीपुर), किरण प्रकाशन, १९५६, पृ० १६४, डि०, ४ रु०, उ० प्र०, (५६-५७) ।

नवसर्गों का एक महाकाव्य ।

—रामावतार पोद्दार 'अरुण' : **कोशा** : बिहार, समस्तीपुर, किरणकुञ्ज, पृ० १००, बि० रा० प०, (५२), काव्य ।

—रामावतार पोद्दार 'अरुण' : **गान्ध्या** : बिहार, समस्तीपुर, किरण प्रकाशन, १९५६, पृ० ९६, डि०, २ रु०, उ० प्र०, (५६-५७) ।

१० सर्गों का एक काव्य ।

—रामावतार पोद्दार 'अरुण', बिहार, समस्तीपुर, किरणकुञ्ज, उ० प्र०, (५७-५८) ।

: **अंगीता** : पृ० ६४, डि०, : **अशोकपुत्र** : पृ० ६४, डि०, : **आम्रपाली** : पृ० ६४, डि०, : **मुन्शी घनघोरलाल** : पृ० ७०, डि०, : **संगीता** : पृ० ६४, डि० ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

—रामावतार पोद्दार 'अरुण' : **विदेह** : बिहार, समस्तीपुर, किरणकुञ्ज, १९५४, पृ० ३१६, डि०, ८ रु०, उ० प्र०, (५५)।

१८ सर्गों का एक महाकाव्य।

—रामेश्वर शुक्ल 'अंचल' : **वर्षान्त के बादल** : प्रयाग, साहित्य भवन लि०, १९५७, पृ० ९२, डि०, ३ रु०, उ० प्र०, (५५)।

कवि के ५४ गीतों का संग्रह।

—रामेश्वरलाल खण्डेलवाल 'तरुण' : **हिमांचल** : मेरठ, भारतीय साहित्य प्रकाशन, १९५२, पृ० १०४, डि०, २.५० रु०, उ० प्र०, (५३)।

कवि की चुनी हुई ७४ कविताओं का संकलन।

—रूपनारायण त्रिपाठी : **माटी की मुसकान** : जौनपुर, विकास प्रकाशन, १९५४, पृ० ८०, डि०, १.५० रु०, वि० प्र०, (५४-५५)।

कवि की अपनी ६४ कविताओं का संग्रह।

—लक्ष्मीशंकर मिश्र 'निशंक' : **शतदल** : लखनऊ, नव साहित्य निकेतन, २००९ वि०, पृ० ९६, ड० क्रा०, २ रु०, उ० प्र०, (५२-५३)।

कवि की अपनी मुक्तक रचनाओं का संकलन।

—लालधर त्रिपाठी 'प्रवासी' : **छत्रसाल** : बनारस, जनता साहित्य प्रकाशन, २०१२ वि०, पृ० ३३२, डि०, ६ रु०, उ० प्र०, (५५-५६)।

एक महाकाव्य।

—लालरुद्रनाथसिंह : **सौमित्र विजय** : उ० प्र०, (५५-५६)।

—वासुदेवशरण अग्रवाल : **पद्मावत संजीवन भाष्य** : झाँसी, चिरगांव, साहित्य सदन, २०१२ वि०, पृ० ७८२, रॉ०, १५ रु०, सा० एके०, (५६)।

मलिक मुहम्मद जायसी कृत 'पद्मावत महाकाव्य' मूल और संजीवनी व्याख्या। प्रारम्भ में ७० पृष्ठों की विद्वत्तापूर्ण व्याख्या सहित।

—विद्याधर महाजन (स्व०) : **श्री गांधीचरित मानस** : इलाहाबाद, हिन्दी भवन, १९५४, पृ० २२०, डि०, ५.६२ रु०, उ० प्र०, (५५)।

चिर-प्रतीक्षित पुस्तक का नया संस्करण छप गया !!

शिक्षण-विधियों की रूपरेखा

(ले० श्री रामखेलावन चौधरी, एम० ए०, एम० एड०)

मूल्य : रुपये ८.७५

प्राचीन-अर्वाचीन शिक्षण-विधियों की परिचायक अपने ढंग की अकेली पुस्तक। इसका पहला संस्करण तीन महीने में ही समाप्त हो गया। दूसरा संशोधित-परिवर्धित संस्करण अभी छपकर तैयार हुआ है।

पुस्तक की श्रेष्ठता से प्रभावित होकर बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद् ने '५७ का शिक्षण-सम्बन्धी १०००) का अखिल भारतीय पुरस्कार और ताम्रपत्र लेखक को २९ मार्च, १९५८ को प्रदान किया।

द्वितीय संस्करण की थोड़ी ही प्रतियाँ अब शेष हैं। अतः अपनी प्रति आज ही मँगा लें। मनीआर्डर से पूरा मूल्य पेशगी भेज देने पर डाक-व्यय नहीं लिया जायगा।

हिन्दी-साहित्य भण्डार, गंगाप्रसाद रोड, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गांधीजी के जीवन का काव्यमय वर्णन (रामायण की भाँति)।

—विद्यावती 'कोकिल' : **पुर्नमिलन** : इलाहाबाद, ज्योति प्रकाशन, १९५६, पृ० १०४, डि० क्रा०, १.७५ रु०, उ० प्र०, (५६-५७)।

कवयित्री के अपने ४२ गीतों का संग्रह।

—विद्यावती 'कोकिल' (श्रीमती) : **सुहागिन** : प्रयाग, ज्योति प्रकाशन, पृ० ९६, डि० क्रा०, २ रु०, उ० प्र०, (५२-५३)।

कवयित्री के अपने ४२ गीतों का संकलन।

—विद्यावती मिश्र (श्रीमती) : **मुक्ति** : लखनऊ, हिन्दी परिषद्, १९५७, पृ० ६४, डि० क्रा०, १ रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

संगीत रूपक के रूप में लिखी गई कवयित्री की १३ कविताओं का संग्रह।

—विराज : **वसन्त के फूल** : दिल्ली, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, १९५७, पृ० १३२, डि० क्रा०, ४ रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

कवि की अपनी रुबाइयों का संग्रह।

—शकुन्तला सक्सेना (कु०) : **अवकाश के क्षण** : आगरा, साहित्यरत्न भण्डार, पृ० ८०, ७५ न० पै०, उ० प्र०, तथा वि० प्र० से भी, (५२)।

अपनी २३ स्फुट कविताओं का संग्रह।

—शकुन्तला सरोठिया, (भूमिका ले० लक्ष्मीनारायण मिश्र) : **सुधि के स्वर** : कोटा, वेणीमाधव शर्मा, १९५६, पृ० १०४, डि० क्रा०, १.५० रु०, उ० प्र०, (५६-५७)।

—शम्भूनाथ सिंह : **मन्वन्तर** : काशी, जन साहित्य मण्डल, २००८ वि०, पृ० १०६, डि० क्रा०, २ रु०, उ० प्र०, (५२-५३)।

अपने १४ गीतों का संग्रह।

—शम्भूनाथ सिंह (डॉ०) : **माध्यम में** : वाराणसी, सहकारी कविता प्रकाशन, १९५७, पृ० ९६, डि०, २.७५ रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

चार शीर्षकों के अन्तर्गत कवि के अपने गीतों का संग्रह।

—शान्ति (श्रीमती) : **रेखा** : लखनऊ, लक्ष्मी स्टोर्स, १९४७,

उर्दू के लोकप्रिय शायर

उनकी बेहतरीन ग़ज़लें, नज़्में, शेर, रुबाइयाँ पढ़िए !

प्रत्येक शायर पर अलग पुस्तक है, जिसमें उसकी चुनी हुई बेहतरीन शायरी के अलावा बड़ी ही रोचक शैली में उसकी जीवनी दी गई है। कठिन उर्दू शब्दों के अर्थ भी साथ ही दे दिए हैं ताकि आप पूरी तरह आज की उर्दू शायरी का लुत्फ़ उठा सकें। पुस्तकें सचित्र हैं और सजिल्द भी। आप इन पुस्तकों को अवश्य ही पसन्द करेंगे।

ग़ालिब	जीवनी और संकलन	१॥)
जोश मलीहाबादी	,,	१॥)
इक़बाल	,,	१॥)
साहिर लुधियानवी	,,	१॥)
फ़ैज़ अहमद फ़ैज़	,,	१॥)
सरदार जाफ़री	,,	१॥)
मजाज़	,,	१॥)

राजपाल एण्ड सन्ज़, कश्मीरी गेट, दिल्ली-६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पृ० ५७, डि०, १.५० रु०, हि० सा० स० सेक० महिला पुर०, (२००४ वि०)।

अपने ४३ गीतों का संग्रह।

—शिवचन्द्र नागर : **ऊर्मि** : प्रयाग, ओंकार प्रेस, २०१० वि०, पृ० १८३, ड० क्रा०, २ रु०, महा० शा० प०।

कवि के अपने गीतों का संकलन।

—शिवमंगल सिंह 'सुमन' : **विश्वास बढ़ता ही गया** : इलाहाबाद, सरस्वती प्रेस, १९५५, पृ० १०४, डि०, ३ रु०, वि० प्र०, (५७)।

अपनी कविताओं का संग्रह।

—शुकदेव दुबे : **पद्माकर कवि** : प्रयाग, साहित्य भवन लि०, २०१३ वि०, पृ० १४६, ड० क्रा०, २.५० रु०, वि० प्र०, (५६-५७), म० प्र०, (५७-५८)।

पद्माकर की चुनी हुई प्रतिनिधि रचनाओं का संग्रह, कवि के जीवन-वृत्त एवं संक्षिप्त आलोचना सहित।

—श्यामनारायण 'प्रसाद' : **झाँसी की रानी** : बनारस, प्रकाश गृह, १९५५, पृ० ३०८, डि०, ४ रु०, उ० प्र०, (५५-५६)।

२२ हुंकारों का एक काव्य।

—श्यामनारायण पाण्डेय : **जौहर** : काशी, सरस्वती मन्दिर, २००२ वि०, पृ० १२४, डि०, (सचित्र), ३ रु०, ना० प्र० सभा से द्विवेदी स्वर्ण पदक प्रदत्त, (२००४ वि०)।

वीर-करुण-रससिक्त काव्य।

—श्यामनारायण पाण्डेय : **जय हनुमान** : उ० प्र०, (५६-५७)।

—श्यामसुन्दरलाल दीक्षित : **श्याम सन्देश** : आगरा, लोकायन, १९५१, पृ० ८०, ड० क्रा०, १.५० रु०, उ० प्र०, (५२)।

—श्रीराम शर्मा : **दक्खिनी का पद्य और गद्य** : हैदराबाद, हिन्दी प्रचार सभा, १९५४, पृ० ५२८, ड० क्रा०, १०.५० रु०, उ० प्र०, (५५-५६)।

दक्खिनी के प्रमुख कवियों एवं गद्य-लेखकों की रचनाओं के अंशों का संकलन, सम्पादक की ४१ पृष्ठों की अतिरिक्त भूमिका (निवेदन) सहित।

—सत्यनारायण पाण्डेय 'सत्य' : **काश्मीर विजय** : प्रयाग, इण्डियन प्रेस, २००९ वि०, पृ० ४५, ड० क्रा०, (सचित्र), १.५० रु०, उ० प्र०, (५२-५३)।

—सुमित्राकुमारी सिनहा (श्रीमती) : **आँगन के फूल** : वाराणसी, आराधना प्रकाशन, (५६-५७)।

लेखिका की बालोपयोगी कविताओं का संग्रह।

—सुमित्राकुमारी सिनहा : **बोलों के देवता** : उन्नाव, मन्दिर, १९५४, पृ० ५६, डि०, २.५० रु०, उ० प्र० (५५)।

अपने ५१ गीतों का संग्रह।

—सुमित्रानन्दन पन्त : **स्वर्ण किरण** : इलाहाबाद, भारती भण्डार, २००४ वि०, पृ० १७७, डि०, ४ रु०, उ० प्र० (५०)।

कवि के ३८ गीतों का संग्रह।

—सुमित्रानन्दन पन्त : **स्वर्णधूलि** : प्रयाग, भारती भण्डार, २००४ वि०, पृ० १६६, डि०, ५ रु०, उ० प्र०, (५०) तथा डा० पुर० भी।

८० गीतों का संकलन।

—सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' : **अर्चना** : प्रयाग, दारागंज, कला मन्दिर, १९५०, पृ० १११, ड० क्रा०, २.५० रु०, उ० प्र०, (५२-५३)।

कवि के नवीनतम गीतों का संग्रह।

—सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' : **आराधना** : प्रयाग, साहित्यकार संसद्, २०१० वि०, पृ० ९६, ड० क्रा०, २.५० रु०, उ० प्र०, (५२-५३)।

कवि के ९६ गीतों का संग्रह।

—सूर्यदेव मिश्र : **ध्रुव चरित** : बनारस, दीक्षित पब्लिशिंग हाउस, १९४६, पृ० १६७, ड० क्रा०, ३ रु०, ना० प्र० सभा, (२००२ वि०)।

१२ सर्गों का महाकाव्य, ६९ पृष्ठों की लालधर त्रिपाठी की समीक्षात्मक भूमिका सहित।

—सोमेश्वरसिंह (कुंवर) : **सरोज** : इलाहाबाद, इण्डियन प्रेस लि०, १९५३, पृ० १२०, २ रु०, वि० प्र०, (५४-५५)।

९१ गीतों का संग्रह।

—सोहनलाल द्विवेदी : **दूध बताशा** : प्रयाग, भारती भण्डार, १९९० वि०, पृ० ४६, (सचित्र), फु० स्के०, ७५ न० पै०, के० स० बाल० प्रति०, (५८)।

लेखक की बालोपयोगी कविताओं का संग्रह।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

—हरदयालुसिंह, (मू० ले० शुकदेवबिहारी मिश्र) : **रावण महाकाव्य** : दिल्ली, आत्माराम एण्ड सन्स, १९५२, पृ० २२८, डि०, ६ रु०, उ० प्र०, (५०)।

महर्षि वाल्मीकि प्रणीत आदि-काव्य के कथानक पर आधारित १७ सर्गों का एक महाकाव्य, कथासार सहित।

—हनुमन्त दयाल अवस्थी : **सीता सुधि** : प्रयाग, लेखक द्वारा, १९४८, पृ० १८९, ड० क्रा०, उ० प्र०, (५२)।

राम-भक्ति का सोलह सर्गों का एक महाकाव्य।

—हरिकृष्ण 'प्रेमी' : **रूप दर्शन** : दिल्ली, आत्माराम एण्ड सन्स, १९५१, पृ० २६८, डि०, (सचित्र), ६ रु०, उ० प्र०, (५२)।

कवि के १३४ गीतों का संग्रह।

—हरिवंशराय 'बच्चन' : **मिलन यामिनी** : काशी, भारतीय ज्ञानपीठ, १९५०, पृ० २२९, ड० क्रा०, ४ रु०, उ० प्र०, (५२)।

'बच्चन' जी की ३३ कविताओं का संग्रह।

काव्य, अनूदित

—गोविन्दराय जैन (अनु०) : **कुरल काव्य** : झांसी, महरौनी, लेखक द्वारा, १९५४, पृ० ३२४, डि०, १० रु०, उ० प्र०, (५५)।

श्री इलाचार्य लिखित तमिल के काव्य का संस्कृत श्लोकों में हिन्दी अर्थसहित अनुवाद।

—जयदेव, महाकवि (मू० ले०), (अनु० विनयमोहन शर्मा) : **गीत गोविन्द** : दिल्ली, आत्माराम एण्ड सन्स, १९५५, पृ० १५०, डि०, (सचित्र), ६ रु०, के० स० तृ० वि० पु० प्रति।

महाकवि जयदेव के प्रसिद्ध ग्रन्थ 'गीत गोविन्द' का सचित्र हिन्दी-रूपान्तर मूलसहित।

—रघुवंशलाल गुप्ता : **रवि बाबू के कुछ गीत** : प्रयाग, इण्डियन प्रेस लि०, १९५०, पृ० ६८, रॉ०, २·५० रु०, के० स० प्र० वि० पु० प्रति०।

स्व० रवीन्द्रनाथ टैगोर के कुछ गीतों का सरल और सुबोध पद्यात्मक हिन्दी अनुवाद।

—कन्हैयालाल पोद्दार (सेठ) : **हिन्दी मेघदूत विमर्श** : प्रयाग, लीडर प्रेस, १९२१, पृ० २८१, ड० क्रा०, १·५० रु०, के० स० प्र० वि० पु० प्रति०।

महाकवि कालिदास प्रणीत मूल संस्कृत और समश्लोकी पद्य तथा गद्य हिन्दी भाषानुवाद सहित।

हिन्दी नाटक

—उदयशंकर भट्ट : **नया समाज** : दिल्ली, मसिजीवी प्रकाशन, (वितरक राजकमल प्रकाशन), पृ० ७३, ड० का०, १·५० रु०, उ० प्र०, (५५-५६)।

नया वस्तु-निर्देश, छब्बीस घण्टे का कार्यक्रम, छः दृश्यों का एक नाटक।

—उदयशंकर भट्ट : **शक विजय** : दिल्ली, मसिजीवी प्रकाशन, १९५५, पृ० ११३, ड० क्रा०, १·७५ रु०, उ० प्र०, (५२)।

शक-विजय पर ऐतिहासिक नाटक।

—कमलाकान्त पाठक : **अभागिन** : प्रयाग, श्रीरघुनाथ साहित्य कुटीर, १९५७, पृ० १२६, ड० क्रा०, ९४ न० पै०, उ० प्र०, (५६-५७)।

स्त्री-समाज की जटिल समस्याओं का सिंहावलोकन एवं समाधान प्रस्तुत करने वाला सामाजिक नाटक।

—कमलाकान्त पाठक : **अस्पृश्य** : लल्ली प्रकाशन, १९५७, पृ० १३९, ड० क्रा०, २·५० रु०, उ० प्र०, (५७ ५८)।

हरिजनोत्थान सम्बन्धी सामाजिक नाटक।

—कासिम अली (सैयद) : **बाल एकांकी** : वि०प्र०, (५४-५५)।

—कासिम अली (सैयद) : **देशभक्त नर्तकी** : हावड़ा, ए० आर० मल्लिक (वितरक राजपाल एण्ड सन्स), पृ० १७६, ड० क्रा०, ३ रु०, उ० प्र०, (५२)।

देशभक्ति की भावना से भरपूर ऐतिहासिक नाटक।

—चतुर्भुज : **मीर कासिम** : बनारस, उपन्यास बहार आफिस, २००८ वि०, पृ० ६१, ड० क्रा०, १·७५ रु०, उ० प्र०, (५२)।

ऐतिहासिक नाटक।

—चन्द्रगुप्त विद्यालंकार : **देव और दानव** : दिल्ली, अत्तर चन्द कपूर एण्ड सन्स, १९५५, पृ० १५३, ड० क्रा०, २ रु०, उ० प्र०, (५५-५६), नाटक।

—जगदीशचन्द्र माथुर : **कोणार्क** : इलाहाबाद, भारती भण्डार, २०१४ वि०, पृ० ११५, ड० क्रा०, १·५० रु०, बि० रा० प०, (५४-५५)।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छात्रहितकारी पुस्तकमाला

की अनुपम पुस्तकें

काव्य व आलोचना

कवियों की झाँकी [सम्पादक प्रि० केदारनाथ गुप्त] ५)
कवित्त सरसी [सेनापति] १)
विद्यापति पदामृत [विद्यापति] ।।।)
तुलसीदल [डॉ०उदयनारायण तिवारी] १।)
सन्तों की वाणी (भजन संग्रह) [सं० प्रि० केदारनाथ गुप्त] ।।=)
गुप्तजी की काव्य धारा ['गिरीश'] ४)
कवि प्रसाद की काव्य साधना [श्री रामनाथ 'सुमन'] ३।।)
हिन्दी के निर्माता [गौतम यजुर्वेदीय] १।)

गल्प, उपन्यास एवं नाटक

वीर राजपूत [श्री नाथमाधव] १।।)
पतिता की साधना [भगवतीप्रसाद वाजपेयी] २।।)
अवध की नवाबी [चण्डी चरण सेन] २।।)
कोलतार [मिर्जा अजीमबेग चगताई] २।।)
शरीर बीबी [" "] १।।)
चगताई की कहानियाँ १ भा० [" "] १।।)
" " २ भा० [" "] १।।)
फुलबूट " [" "] १।)
लेफ्टिनेन्ट [" "] १।।)
विसर्जन [मोहनलाल महतो 'वियोगी'] २)
फरार [" "] २।।)
एकाकी [" "] ३)
पाटलिपुत्रक [कवीन्दु बेनीप्रसाद वाजपेयी 'मंजुल'] २)
बन्धन मुक्ति [रामजीलाल 'सहायक'] २)
शकारि विक्रमादित्य [राजीवलोचन अग्निहोत्री] २)
पढ़ो और हँसो [अ० जहूर बख्श] १)
मिरजा जंगी [अजीमबेग चगताई] १)
हँसती बोलती तस्वीरें [शौकत थानवी] १।।)
अफजल बध (ऐतिहासिक नाटक) [मोहनलाल महतो] १।)
पंचशर (एकांकी नाटक) [विद्यानिवास मिश्र] १।।)

छात्रहितकारी पुस्तकमाला, दारागंज, प्रयाग

एक अभिनेय नाटक, परिशिष्ट में दो महत्त्वपूर्ण निबन्ध।

—जगन्नाथप्रसाद मिलिन्द : **समर्पण** : दिल्ली, आत्माराम एण्ड सन्स, १९५०, पृ० १२७, ड० क्रा०, २ रु०, उ० प्र० (५२)।

सामाजिक नाटक, नाटककार की १२ पृष्ठों की भूमिका सहित।

—जैनेन्द्रकुमार (अनु०) : **पाप और प्रकाश** : दिल्ली, पूर्वोदय प्रकाशन, १९५६, पृ० १४८, ड० क्रा०, ३ रु०, के० स० द्वि० वि० पु० प्रति०।

टालस्टाय के नाटक 'दि पॉवर ऑफ डार्कनेस' का रूपान्तर।

—देवराज 'दिनेश' : **यशस्वी भोज** : दिल्ली, आत्माराम एण्ड सन्स, १९५५, ड० क्रा०, २ रु०, उ०प्र०, (५६-५७)

ऐतिहासिक नाटक।

—बनारसीदास 'करुणाकर' : **सिद्धार्थ बुद्ध** : दिल्ली, भारतीय साहित्य मन्दिर, १९५५, पृ० १४८, ड० क्रा०, २ रु०, उ० प्र०, (५५-५६)।

सांस्कृतिक नाटक।

—मन्मथनाथ गुप्त : **बाल रंगमंच** : उ० प्र०, (५२-५३)।

—रघुवीरशरण मित्र : **वीर बालक** : मेरठ, भारतीय साहित्य प्रकाशन, १९५७, पृ० ६८, ड० क्रा०, १ रु०, उ० प्र० (५३) एवं वि० प्र० से भी।

बालोपयोगी ऐतिहासिक नाटक।

—रामबालक शास्त्री : **महामना** : वाराणसी नन्दकिशोर एण्ड ब्रदर्स, २०१३ वि०, पृ० ६८, ड० क्रा०, १ रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

—लक्ष्मीनारायण मिश्र : **कवि भारतेन्दु** : वाराणसी, हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, १९५५, पृ० १३६, ड० क्रा०, २ रु०, उ० प्र०, (५५-५६)।

भारतेन्दुजी के व्यक्तित्व तथा तत्कालीन वातावरण का बोधक नाटक।

—लक्ष्मीनारायण मिश्र : **चक्रव्यूह** : प्रयाग, कोशाम्बी प्रकाशन, १९५७, पृ० १४४, ड० क्रा०, १.७५ रु०, उ० प्र०, (५७)।

संस्कृति-प्रधान पौराणिक नाटक।

—लक्ष्मीनारायण मिश्र : **दशाश्वमेघ** : इलाहाबाद, हिन्दी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भवन, १९५०, पृ० १२२, ड० क्रा०, १·५० रु०, उ० प्र०, (५२) तथा वि० प्र०, (५२-५३)।

संस्कृति-प्रधान ऐतिहासिक नाटक।

—लक्ष्मीनारायण मिश्र : **नारद की वीणा** : प्रयाग, किताब महल, १९४६, पृ० १३३, ड० क्रा०, २ रु० उ० प्र०, (५१)।

सांस्कृतिक ऐतिहासिक नाटक।

—लक्ष्मीनारायण मिश्र : **वत्सराज** : इलाहाबाद, हिन्दी भवन, १९५२, पृ० १४८, ड० क्रा०, १·७५ रु०, उ० प्र०, (५२)।

संस्कृति-प्रधान ऐतिहासिक नाटक।

—लक्ष्मीनारायण मिश्र : **वैशाली में वसंत** : उ० प्र०, (५६-५७)।

—लक्ष्मीनारायणलाल : **अन्धा कुआं** : प्रयाग, भारती भण्डार, २०१२ वि०, पृ० १५८, ड० क्रा०, २·५० रु०, उ० प्र०, (५६-५७)।

ग्रामीण सामाजिकता का दुखान्त नाटक, तीन घण्टे में अभिनेय।

—विनोद रस्तोगी : **नए हाथ** : दिल्ली, आत्माराम एण्ड सन्स, पृ० ११४, ड० क्रा०, २ रु०, थियेटर सेन्ट्रल कलकत्ता द्वारा आयोजित अ० भार० हिन्दी नाटक प्रति०, (५७)।

एक अभिनेय नाटक।

—मैक्सिम गोर्की, (अनु० शिवदानसिंह चौहान तथा श्रीमती विजय चौहान) : **तीन पीढ़ी** : बनारस, सरस्वती प्रेस, पृ० ३७०, ड० क्रा०, ५ रु०, के० स० द्वि० वि० पु० प्रति० में पुरस्कृत।

गोर्की के प्रसिद्ध उपन्यास Artamonovs का अनुवाद जिसमें पूंजीपति की तीन पीढ़ियों का चित्रण है।

—शील : **किसान** : (मूल नाम 'जमीन'), कानपुर, संस्कार प्रकाशन, १९५७, पृ० १०४, ड० क्रा०, २·५० रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

पृथ्वी थियेटर्स द्वारा सफलतापूर्वक अभिनीति एक दृश्य और तीन अंकों का सामाजिक नाटक, जिसमें भारत के ग्रामीण जीवन की एक सशक्त झांकी प्रस्तुत की गई है।

—श्रीकृष्णनाथ मेहता : **धरती के जलजले** : महा० शा०।

हमारे अनमोल हिन्दी प्रकाशन

(हमारी पुस्तकों को देखकर लोग कह उठते हैं कि ये हिन्दी में अपने विषय की बेजोड़ और अद्वितीय हैं।)

(१) हिन्दी के श्रेष्ठ साहित्यकार—लेखक सिंहासन राय 'सिद्धेश'। इसमें हिन्दी के सर्वश्रेष्ठ साहित्यकारों की प्रामाणिक जीवनी, उनकी साहित्य-सेवा और भाषा-शैली का सुन्दर वर्णन है। मूल्य २॥)

(२) वादविवाद और व्याख्यान प्रवेशिका—लेखक तिवारी और राय। इसमें हाईस्कूलों और कॉलेजों में होने वाले वादविवाद (पक्ष और विपक्ष) और व्याख्यान-विषयों का ओजपूर्ण आकर्षक शैली में वर्णन है। मूल्य ३) मात्र

(३) निबन्ध-भारती—लेखक प्रो० 'सिद्धेश।' हाईस्कूलों और हायर सेकण्ड्री स्कूलों की उच्च कक्षाओं के छात्रों के लिए हिन्दी निबन्ध की सर्वश्रेष्ठ पुस्तक। आधुनिक विषयों पर निबन्ध। मूल्य ३)

(४) आर्थिक और व्यापारिक निबन्ध—लेखक प्रोफेसर रूपनारायण उपाध्याय एम० ए०। कालेज के छात्रों के लिए। मूल्य ४)

(५) निबन्धालोक—लेखक प्रो० 'कमलेश'। मौलिक साहित्यिक निबन्ध। मूल्य ३)

प्राप्ति-स्थान

आदर्श पुस्तक भण्डार

५८, अपर चितपुर रोड, कलकत्ता-७

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

—सर्वदानन्द वर्मा : **चेतसिंह** : इलाहाबाद, किताब महल, १९५७, पृ० ६६, ड० क्रा०, १·२५ रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

इतिहास-प्रसिद्ध बनारस-नरेश राजा चेतसिंह के जीवन पर आधारित एक ऐतिहासिक नाटक, जो रेडियो तथा रंगमंच दोनों पर सफलतापूर्वक अभिनीत हो चुका है।

—सुदर्शन : **सिकन्दर** : बम्बई, वोरा एण्ड कम्पनी लि०, १९४७, पृ० १४३, ड० क्रा०, १·५० रु०, के० स० प्र वि० पु० प्रति० में पुरस्कृत।

सिकन्दर महान् के भारत-आक्रमण की कहानी को मूर्त रूप प्रदान करने वाला एक ऐतिहासिक नाटक, जो मूल रूप से चलचित्र-निर्माण के हेतु मिनर्वा मुवीटोन, बम्बई के लिए लिखा गया था।

—हरिकृष्ण 'प्रेमी' : **उद्धार** : दिल्ली, आत्माराम एण्ड सन्स, १९५६, पृ० १२०, ड० क्रा०, २ रु०, उ० प्र०, (५२)।

ऐतिहासिक नाटक।

—हरिकृष्ण प्रेमी : **कीर्ति-स्तंभ** : राजपाल एण्ड सन्स, १९५७, पृ० २००, ड० क्रा०, २·५० रु०, उ० प्र०, (५६-५७)।

ऐतिहासिक नाटक।

—हरिकृष्ण 'प्रेमी' : **विषपान** : दिल्ली, आत्माराम एण्ड सन्स, १९५१, पृ० १०७, ड० क्रा०, २ रु०, बंगाल हिन्दी मण्डल द्वारा पुरस्कृत।

ऐतिहासिक नाटक।

—हरिकृष्ण 'प्रेमी' : **शपथ** : दिल्ली, आत्माराम एण्ड सन्स, १९५४, पृ० १६०, ड० क्रा०, २·५० रु०, उ० प्र०, (५२)।

सांस्कृतिक नाटक।

—हरिकृष्ण 'प्रेमी' : **स्वप्न भंग** : दिल्ली, आत्माराम एण्ड सन्स, १९५३, पृ० १२८, ड० क्रा०, २ रु०, हिं० सा० स० द्वारा १९९८ वि० में रत्नकुमारी पुरस्कार प्राप्त।

ऐतिहासिक नाटक।

हिन्दी नाटक-एकांकी

—उदयशंकर भट्ट : **परदे के पीछे** : दिल्ली, मसिजीवी प्रकाशन, पृ० १७८, ड० क्रा०, २·५० रु०. उ० प्र०, (५५-५६)।

आठ एकांकी नाटकों का संकलन।

—उपेन्द्रनाथ 'अश्क' : **चरवाहे** : प्रयाग, नीलाभ प्रकाशन, १९४७, पृ० २०४, ड० क्रा०, ३ रु०, उ० प्र०, (५०)।

सात सांकेतिक एकांकी। प्रारम्भ में २८ पृष्ठों का 'चरवाहे एक अध्ययन' नामक निबन्ध।

—गंगाधर शुक्ल : **सुबह होती है शाम होती है** : कलकत्ता, बंगीय हिन्दी परिषद्, १९५७, पृ० २२१, डि०, ३·७५ रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

दैनिक पारिवारिक जीवन के सजीव चित्र प्रस्तुत करने वाले १४ एकांकियों का संग्रह, जो परस्पर सम्बद्ध होते हुए अपने-आप में पूर्ण भी हैं।

—चन्द्र प्रकाश सिंह (कुँवर) : **कविकुल गुरु** : लखनऊ, सेवा प्रकाशन, २०१२ वि०, पृ० १७७, ड० क्रा०, ३ रु०, उ० प्र०, (५५-५६)।

लेखक के अपने ८ एकांकी नाटकों का संकलन।

—भारत भूषण अग्रवाल : **और खाई बढ़ती गई** : वाराणसी, भारतीय ज्ञानपीठ, १९५६, पृ० १५०, ड० क्रा०, २·५० रु०, उ० प्र०, (५६-५७)।

ऐतिहासिक, काल्पनिक, सामाजिक, व्यंग्य-प्रधान तथा विनोदपूर्ण आदि विभिन्न प्रकार के आठ अभिनेय रेडियो नाटकों का संग्रह।

—मोहनलाल गुप्त : **बच्चों की सरकार** : वाराणसी, मधु प्रकाशन, पृ० २४, (सचित्र), फु० स्के०, १ रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

३ से ६ वर्ष के बच्चों के लिए लघु एकांकी।

—रामकुमार वर्मा : **ऋतुराज (पूर्वार्द्ध)** : प्रयाग, सेन्ट्रल बुक डिपो, १९५६, पृ० १५२, ड० क्रा०, २·५० रु०, उ० प्र०, (५२-५३)।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के पाँच एकांकी नाटकों का संकलन।

—रामकुमार वर्मा : **रजत रश्मि** : काशी, भारतीय ज्ञानपीठ, १९५२, पृ० १७४, ड० क्रा०, २ ५० रु०, उ० प्र०, (५२-५३)।

५ एकांकी नाटकों का संग्रह।

—रामकुमार वर्मा : **रिमझिम** : इलाहाबाद, किताब महल,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उच्चकोटि का साहित्य

उ० प्र० राज्य द्वारा पुरस्कृत

क्या मैं अंदर आ सकता हूँ २॥)
ध्वनि और संगीत ४)
धूप के धान ३)
शरत् के नारी पात्र ४॥)
संस्कृत साहित्य में आयुर्वेद ३)
और खाई बढ़ती गई २॥)
कालिदास का भारत (१-२) ८)
खण्डहरों का वैभव ६)
खोज की पगडण्डियाँ ४)
चौलुक्य कुमारपाल ४)
शेरो-शायरी ८)
शेरो-सुखन (भाग १) ८)
वर्द्धमान ६)
मिलन-यामिनी ४)
संघर्ष के बाद ३)
पहला कहानीकार २॥)
द्विवेदी-पत्रावली २॥)
रजत-रश्मि २॥)
भारतीय ज्योतिष ६)
वैदिक साहित्य ६)
संस्मरण ३)
हमारे आराध्य ३)
रेखाचित्र ४)
कुछ मोती कुछ सीप २॥)
पचपन का फेर ३)
संस्कारों की राह २॥)
माटी हो गई सोना २)
बाजे पायलिया के घुँघरू ४)
संस्कृत का भाषा शास्त्रीय अध्ययन ५)

महत्त्वपूर्ण प्रकाशन

मुक्तिदूत ५)
गहरे पानी पैठ २॥)
भारतीय विचार-धारा २)
मेरे बापू २॥)
पंच प्रदीप २)
ज्ञान-गंगा ६)
आकाश के तारे : धरती के फूल २)
जैन जागरण के अग्रदूत ५)
रेडियो नाट्यशिल्प २॥)
जिन खोजा तिन पाइयाँ २॥)
हिन्दी जैन साहित्य परिशीलन (दो भाग) ५)
अतीत के कम्पन ३)
खेल खिलौने २)
हिन्दू विवाह में कन्यादान का स्थान १)
जिन्दगी मुस्कराई ४)
शेरो-सुखन (२,३,४,५) १२)
अध्यात्म-पदावली ४॥)
नये बादल २॥)
तीसरा नेत्र २॥)
रक्तराग ३)
काल के पंख ३)
शरत् की सूक्तियाँ २)
तरकश के तीर ३)
नये चित्र ३)
जय दोल ३)

१९५८ के नवीन प्रकाशन

शायरी के नये दौर (१)

शायरे-इन्क़िलाब 'जोश' मलीहाबादी की बग़ावत, इन्क़िलाब, मज़हब, अन्धविश्वास, देश-द्रोह आदि पर आग उगलती और मानवता, प्रकृति, सौन्दर्य, प्रेम आदि पर आत्म-विभोर कर देने वाली नज़्में और रूबाइयात, जोश का परिचय एवं उनकी शाइरी पर विवेचन।

मूल्य तीन रुपया

•

शायरी के नये मोड़ (१)

१९४६ से मार्च १९५८ तक की नवीन शायरी की गतिविधि का अध्ययन, भारत विभाजन, स्वराज्य-प्राप्ति, राष्ट्रपिता की शहादत, नरमेध-यज्ञ, जनताराज, देश-प्रेम, प्रेरणात्मक, नवीन चेतना, बज़्में-अदब परिच्छेदों में इस युग के सर्वश्रेष्ठ शायरों का कलाम।

मूल्य तीन रुपया

चेख़व के तीन नाटक ४)
गरीब और अमीर पुस्तकें १)
लेखनी बेला ३)
मेरे कथा गुरु का कहना है २॥)
वाणी ४)
हरियाणा लोकमंच की कहानियाँ २॥)
बना रहे बनारस ३)
बारह एकांकी ४)
मोतियों वाले २॥)

भारतीय ज्ञानपीठ, दुर्गाकुण्ड रोड, वाराणसी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुप्रसिद्ध फ़िल्म-अभिनेता

बलराज साहनी

की साहित्य-जगत् को अनुपम भेंट

वसन्त क्या कहेगा ?

(कहानी-संग्रह)

मूल्य ३.५०

कश्मीर पर कृश्नचन्दर ने भी बीसियों कहानियाँ लिखी हैं, रामानन्द सागर और दूसरों ने भी, लेकिन बलराज साहनी की 'वापसी व वापसी' उन सब पर भारी है। इसमें ज़रा-सी अत्युक्ति नहीं यदि मैं कहूँ कि हिन्दी की सर्वश्रेष्ठ पन्द्रह कहानियों में से एक वह है।

—उपेन्द्रनाथ 'अश्क'

बलराज भाई की कहानियों का बड़ा पुराना आशिक हूँ।

—अमृतलाल नागर

मुझे संग्रह की अधिकांश कहानियाँ और ललित लेख बहुत सुगठित, मंजे हुए और रुचिकर लगे।

—यशपाल

कहानियाँ रोचक हैं—भाषा में प्रवाह तथा लालित्य है। इनमें अपना विशेष वातावरण मिलता है।

—सुमित्रानन्दन पन्त

बलराज साहनी जी की पुस्तक 'वसन्त क्या कहेगा' बहुत सुन्दर बन पड़ी है; इसके लिए लेखक बधाई का पात्र है।

—हज़ारीप्रसाद द्विवेदी

हमारे अन्य प्रकाशन

नयी कविता के प्रतिमान : श्री लक्ष्मीकान्त वर्मा

नयी कविता की सहानुभूतिपूर्ण आलोचना—मूल्य ८)

हिन्दी की काव्य-शैलियों का विकास : डॉ० हरदेव बाहरी; एम० ए०, डी० लिट्०

काव्य-शैलियों के क्रमिक विकास पर अधिकारपूर्ण रचना—मूल्य ६)

ठेले पर हिमालय : डॉ० धर्मवीर भारती; एम० ए०, डी० फिल०

इस कृति से भारती के पाठक-वर्ग को उनके कला-व्यक्तित्व की विविध दिशाओं का परिचय भी मिल सकेगा।

मूल्य ५.५०

भारती प्रेस प्रकाशन

१०, दरभंगा रोड, इलाहाबाद—२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१९५५, पृ० ३२२, ड० क्रा०, ३·७५ रु०, के० स० तृ० पु० प्रति०, (५७-५८)।

सोलह हास्य-व्यंग्यपूर्ण, चुटीले और अभिनेय एकांकियों का संग्रह, जिसके आरम्भ में हास्य-एकांकियों पर भूमिका के रूप में लेखक का एक महत्त्वपूर्ण लेख भी संलग्न है।

—रामकुमार वर्मा : **सप्तकिरण** : बम्बई, नेशनल इन्फार्मेशन एण्ड पब्लिकेशन लि०, १९४७, पृ० १६७, ड० क्रा०, ३ रु०, उ० प्र०।

सात एकांकी नाटकों का संग्रह।

—लक्ष्मीनारायण मिश्र : **कावेरी में कमल** : वाराणसी, हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, पृ० १२७, ड० क्रा०, २ रु०, उ० प्र०, (५५-५६)।

लेखक के तीन एकांकी नाटकों का संकलन।

—लक्ष्मीनारायण मिश्र : **भगवान मनु तथा अन्य एकांकी** : दिल्ली, आत्माराम एण्ड सन्स, १९५७, पृ० १२८, २ रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

मनु, पराशर, याज्ञवल्क्य, कौटिल्य तथा शंकर, भारतीय संस्कृति के पाँच विधायकों के जीवन पर आधारित अभिनेय एकांकियों का संग्रह।

—विमला लूथरा (श्रीमती) : **५५ का फेर** : काशी, भारतीय ज्ञानपीठ, १९५७, पृ० २४०, ड० क्रा०, ३ रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

१५ एकांकी नाटकों का संकलन।

—सद्गुरुशरण अवस्थी : **नाटक और नायक, ६ भाग** : प्रयाग, इण्डियन प्रेस लि०, १९५०, उ० प्र०।

प्रथम भाग पृष्ठ, ९९,	१·२५ रु०,	ड० क्रा०	३ एकांकी
द्वितीय भाग, पृष्ठ ९७,	,,	,,	,,
तृतीय भाग, पृष्ठ ९१,	,,	,,	,,
चतुर्थ भाग, पृष्ठ १००,	,,	,,	,,
पंचम भाग, पृष्ठ ७०,	,,	,,	२ एकांकी
षष्ठ भाग, पृष्ठ ७५,	,,	,,	६ एकांकी

—सीताचरण दीक्षित : **आनन्द का राजपथ तथा अन्य लघु नाटक** : दिल्ली, आत्माराम एण्ड सन्स, १९५७, पृ० १२९, २ रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

शिक्षा-संस्थाओं के रंगमञ्च के लिए अत्यन्त उपयुक्त चार सफल संवादों का संग्रह।

हिन्दी-कथा-साहित्य, उपन्यास

—अनन्तगोपाल शेवड़े : **मृगजल** : प्रयाग, नीलाभ प्रकाशन, पृ० ३३४, ड० क्रा०, ५ रु०, महा० शा० सा० प०।

—अनन्तगोपाल शेवड़े : **ज्वालामुखी** : प्रयाग, नीलाभ प्रकाशन, १९५६, पृ० ३१५, ड० क्रा०, ४.५० रु०, उ० प्र०, (५६-५७)।

सन् बयालीस की भारतीय क्रान्ति की पृष्ठभूमि पर लिखित उपन्यास।

—अनूपलाल मण्डल : **रक्त और रंग** : पटना, अजन्ता प्रेस लि०, २०१२ वि०, पृ० ४१६, ड० क्रा०, ६ रु०, बि० रा० प०, (५६-५७)।

—अमृतलाल नागर : **बूँद और समुद्र** : इलाहाबाद, किताब महल, १९५६, पृ० ६०६, डि०, १२ रु०, उ० प्र०, (५६-५७)।

सामाजिक उपन्यास।

—अमृतराय : **नागफनी का देश** : इलाहाबाद, हंस प्रकाशन, १९५६, पृ० ९१, ड० क्रा०, १.५० रु०, उ० प्र०, (५६-५७)।

—अली अब्बास हुसैनी : **कोमल नगरी** : लखनऊ, मेरी पब्लिशर्स, १९५४, ड० क्रा०, २.५० रु०, उ० प्र०, (५५)।

उपन्यास।

—इलाचन्द्र जोशी : **जहाज का पंछी** : दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, १९५५, पृ० ५५२, ड० क्रा०, ७ रु०, के० स० तृ० वि० पु० प्रति० में पुरस्कृत।

मध्यवर्गीय नवयुवक के परिस्थिति प्रताड़ित जीवन पर आधारित उपन्यास।

—इलाचन्द्र जोशी : **सुबह के भूले** : इलाहाबाद, हिन्दी भवन, १९५४, पृ० ३२८, ड० क्रा०, ५ रु०, उ० प्र०, (५२-५३)।

—उदयशंकर भट्ट : **सागर, लहरें और मनुष्य** : नई दिल्ली, मसिजीवी प्रकाशन, पृ० ४१०, ड० क्रा०, ४.५० रु०, उ० प्र०, (५६-५७)।

—उपेन्द्रनाथ 'अश्क' : **बड़ी-बड़ी आंखें** : इलाहाबाद, नीलाभ प्रकाशन, १९५५, ड० क्रा०, ३.७५ रु०, के० स० तृ० वि० पु० प्रति० में पुरस्कृत।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

प्रकाशन से पूर्व आकाशवाणी से प्रसारित सामाजिक उपन्यास ।

—उमाशंकर : **नाना फड़नवीस** : वाराणसी, हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, १९५६, पृ० ३१२, ड० क्रा०, ४ रु०, उ०प्र०, (५६-५७) ।

ऐतिहासिक उपन्यास ।

—ए० रमेश चौधरी 'आरिगपूडि' : **दूर के ढोल** : दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, १९५७, पृ० २५४, ड० क्रा०, ४ रु०, उ० प्र०, (५७-५८) ।

—कंचनलता सब्बरवाल (कुमारी): **मूक तपस्वी** : जालंधर, हिन्दी भवन, १९५३, पृ० २८०, ड० क्रा०, ३.४४ रु०, उ० प्र० ।

—कंचनलता सब्बरवाल (कुमारी) : **स्वतन्त्रता की ओर** : देहरादून, प्रतिभा प्रकाशन, पृ० २२२, ड० क्रा०, ३ रु०, उ० प्र०, (५२-५३) ।

—कृष्णचन्द्र शर्मा : **भंवर जाल** : दिल्ली, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, १९५४, पृ० २०५, ड० क्रा०, ३.५० रु०, उ०प्र०, (५५) ।

—गिरिधर गोपाल : **चांदनी के खण्डहर** : इलाहाबाद, साहित्य भवन लि०, १९५४, पृ० १२८, ड० क्रा०, २ रु०, उ० प्र०, (५५) ।

एक लघु उपन्यास ।

—गिरिजाशंकर पांडेय : **चेतसिंह का सपना, दो भागों में** : वाराणसी, आनन्द पुस्तक भवन, १९५६, प्रथम भाग, पृ० ३३०, ड० क्रा०, ४ रु०, द्वितीय भाग, १९५८, पृ० २६८, ड० क्रा०, ४.५० रु०, उ० प्र०, (५६-५७) ।

अठारहवीं शताब्दी के भारत का क्रान्तिदर्शी राजनीतिक उपन्यास ।

—गोविन्दवल्लभ पन्त : **नौजवान** : लखनऊ, गंगा पुस्तक माला, २०११ वि०, पृ० ३२०, ड० क्रा०, ५ रु०, उ० प्र०, (५५) ।

—गोविन्दवल्लभ पन्त : **जल समाधि** : दिल्ली, आत्माराम एण्ड सन्स, पृ० १९२, ड० क्रा०, ४ रु०, उ० प्र०, (५५-५६) ।

—गोविन्दवल्लभ पन्त : **पर्णा** : दिल्ली, आत्माराम एण्ड सन्स, १९५५, पृ० २५६, ड० क्रा०, ४ रु०, उ० प्र०, (५६-५७) ।

—गोविन्दसिंह : **१८५७** : वाराणसी, सोहनराम एण्ड सन्स, १९५७, पृ० ७१३, ड० क्रा०, १० रु०, उ० प्र०, (५७-५८) ।

ऐतिहासिक उपन्यास ।

—चतुरसेन (आचार्य) : **गोली** : दिल्ली, राजहंस प्रकाशन, १९५७, पृ० ३४६, ड० क्रा०, (सचित्र), ६.५० रु०, उ० प्र०, (५७-५८) ।

—चतुरसेन शास्त्री : **वयं रक्षामः** : भागलपुर, शारदा प्रकाशन, १९५५, (पूर्वार्द्ध), पृ० ५४४, ड० क्रा०, ६ रु०, उ० प्र०, (५६-५७) ।

अतीत रस का मौलिक उपन्यास ।

(उत्तरार्द्ध), पृ० ५४५ से ७६७ तक, तथा परिशिष्ट में इतिवृत्तात्मक पृ० ३०६, भाष्य ।

—चतुरसेन शास्त्री : **सोमनाथ** : दिल्ली, ज्ञानधाम प्रतिष्ठान

संस्कृत भाषा तथा व्याकरण के अध्ययन के लिए डॉ० कपिलदेव द्विवेदी, एम० ए०, डी० लिट्०, व्याकरणाचार्य द्वारा फ्रेंच तथा जर्मन पद्धति पर रचित दो अनुपम पुस्तकें

प्रारम्भिक रचनानुवाद कौमुदी १·००

रचनानुवाद कौमुदी ३·००

नई कविता के शिल्पी एवं नव-चित्रकला के चित्रकार डॉ० जगदीश गुप्त की शब्द-कला तथा चित्रकला की भावपूर्ण अभिव्यक्ति

नाव के पाँव

(उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा पुरस्कृत)

मूल्य : ढाई रुपया

वार्ता-शैली में लिखे गए गीतों के माधुर्य से पूर्ण लघु-निबन्ध

लहर-पंथी

लेखक—स्व० रामअधार सिंह

मूल्य : सवा रुपया

सुप्रसिद्ध नाटककार श्री सद्गुरुशरण अवस्थी की प्रसिद्ध नाट्यकृति

मुद्रिका

इस नाटक में एक से अनेक होने पर एक होने की प्रेरणा है ।

समाज-शिक्षण के लिए अति उपयोगी ।

मूल्य : एक रुपया

प्रकाशक

विश्वविद्यालय प्रकाशन

नखास चौक, गोरखपुर

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शाहदरा), १९५७, पृ० ५४७, डि० क्रा०, ८ रु०, उ० प्र०, (५५)।
६८ पृष्ठों का आधारित विवेचना सहित।

—जगदीशचन्द्र मिश्र, (आचार्य) : **इन्दिरा** : इलाहाबाद, भारतीय सदन, १९५६, पृ० १६४, डि० क्रा०, २.५० रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

—जैनेन्द्रकुमार : **जयवर्द्धन** : दिल्ली, पूर्वोदय प्रकाशन, १९५६, पृ० ४४०, डि० क्रा०, ६ रु०, उ० प्र०, (५६-५७)।

—जैनेन्द्रकुमार : **सुखदा** : दिल्ली, पूर्वोदय प्रकाशन, १९५५, पृ० २०२, डि० क्रा०, ४ रु०, उ० प्र०, (५३)।

—दयानाथ झा : **कर्मपथ** : इलाहाबाद, हिन्दी भवन, २०१० वि०, पृ० १४९, डि० क्रा०, २ रु०, उ० प्र०, (५७)।

—देवराज : **बाहर-भीतर** : दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, १९५४, पृ० १३२, डि० क्रा०, २ रु०, उ० प्र०, (५५)।

—देवीदयाल चतुर्वेदी 'मस्त' : **प्रवाह** : इलाहाबाद, मनोरमा प्रकाशन, १९४९, पृ० १९६, डि० क्रा०, २.५० रु०, उ० प्र०, (५१)।

—देवेन्द्र सत्यार्थी : **ब्रह्मपुत्र** : नई दिल्ली, एशिया प्रकाशन, (वित० राजकमल) १९५६, पृ० ४५२, डि० क्रा०, ७ रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।
नदी-पुत्रों के लोक-जीवन का परिचयात्मक उपन्यास।

—नरेश मेहता : **डूबते मस्तूल** : दिल्ली, आत्माराम एण्ड सन्स, १९५४, पृ० २११, डि०, ४.५० रु०, उ० प्र०, (५५)।

—नागार्जुन : **बाबा बटेसरनाथ** : दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, १९५४, पृ० १४९, डि० क्रा०, २ रु०, उ० प्र०, (५५)।

—प्रतापनारायण श्रीवास्तव : **बयालीस** : बनारस, ज्ञान मण्डल लि०, २००५ वि०, पृ० २३८, डि०, ४ रु०, उ० प्र०, (५१)।

—प्रतापनारायण श्रीवास्तव : **बेकसी का मजार** : कानपुर, भारती प्रतिष्ठान, १९५६, पृ० ५५२, डि०, १० रु०, उ० प्र०, (५१)।
ऐतिहासिक उपन्यास।

—प्रतापनारायण श्रीवास्तव : **विसर्जन** : (बयालीस के बाद), दिल्ली, आत्माराम एण्ड सन्स, पृ० ४०५, डि०, ६ रु०, उ० प्र०, (५१)।
गांधीवादी विचारधारा पर आधारित उपन्यास।

—प्रतापनारायण श्रीवास्तव : **विषमुखी** : कानपुर, भारती प्रतिष्ठान, १९५७, पृ० ३२४, डि० क्रा०, ५ रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

—फणीश्वरनाथ 'रेणु' : **मैला आँचल** : दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, १९५७, पृ० ४२६, डि० क्रा०, ६ रु०, के० स० द्वि० वि० ग्रन्थ प्रति० में पुरस्कृत।
पूर्ण प्रतिष्ठा प्राप्त मौलिक सामाजिक उपन्यास।

—बच्चन सिंह : **लहरें और कगार** : जौनपुर, शारदा सदन, १९५६, पृ० ९७, डि० क्रा०, २ रु०, उ० प्र०, (५६-५७)।
लघु उपन्यास।

—भगवतीप्रसाद वाजपेयी : **धरती की साँस** : प्रयाग, रामनारायणलाल, १९५६, पृ० २५६, डि० क्रा०, २ रु०, उ० प्र०, (५६-५७)।

Please Visit or Ring 2595A.

GUPTA STORES

Wholesale & Retail Booksellers

Dhatkidih : **JAMSHEDPUR**

(*Estd. 1950*)

for

COLLEGE, SCHOOL & LIBRARY BOOKS

(in Hindi, English, Urdu & Bengali Languages)

Besides Text Books we also supply all sorts of Educational requirements such as Wall Maps, Globes, Black Board Instruments, Science apparatus, Block-materials & Government of India publications.

Orders for Medical and Engineering books are also executed by us promptly.

GUPTA STORES
JAMSHEDPUR

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

—भगवतीप्रसाद वाजपेयी : **निर्यातन** : इलाहाबाद, किताब महल, १९५५, पृ० १९०, ड० क्रा०, २ रु०, उ० प्र०, (५४-५५)।

एक लघु उपन्यास एवं चार कहानियों का एकत्र संकलन।

—भगवतीप्रसाद वाजपेयी : **भूदान** : दिल्ली, भारत भारती लि०, १९५५, पृ० ४११, ड० क्रा०, ६ रु०, उ० प्र०, (५५-५६)।

राष्ट्र के नव-निर्माण की भावनाओं से ओत-प्रोत एक सांस्कृतिक, सामाजिक और मौलिक उपन्यास।

—भगवतीप्रसाद वाजपेयी : **मनुष्य और देवता** : देहरादून, साहित्य सदन, १९५४, पृ० २५६, ड० क्रा०, ३.७५ रु० उ० प्र०, (५५)।

—भगवतीचरण वर्मा : **अपने खिलौने** : प्रयाग, भारती भण्डार, २०१४ वि०, पृ० २३४, ड० क्रा०, ३.५० रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

—भैरवप्रसाद गुप्त : **जंजीरें और नया आदमी** : इलाहाबाद, हंस प्रकाशन, १९५६, पृ० ३७२, ड० क्रा०, ५ रु०, उ० प्र०, (५६-५७)।

—मनु शर्मा : **तीन प्रश्न** : वाराणसी, कल्याणदास एण्ड ब्रदर्स, २०१४ वि०, पृ० २६६, ड० क्रा०, ५ रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

—मन्मथनाथ गुप्त : **बहता पानी** : प्रयाग, साहित्य भवन लिमिटेड, १९५५, पृ० २०८, डि०, ३.२५ रु०, उ० प्र०, (५५-५६)।

प्राक्पाकिस्तान-युग की एक राजनीतिक चेतना का उपन्यास।

—यज्ञदत्त शर्मा : **इन्सान** : दिल्ली, आत्माराम एण्ड सन्स, पृ० २४७, डि०, ४ रु०, उ० प्र०।

—यज्ञदत्त शर्मा : **परिवार** : दिल्ली, साहित्य प्रकाशन, १९५५, पृ० ३२६, ड० क्रा०, ५.५० रु०, उ० प्र०, (५६-५७)।

सामाजिक उपन्यास, १४ पृष्ठों की भूमिका सहित।

—यशपाल : **अमिता** : लखनऊ, विप्लव कार्यालय, १९५६, पृ० २३७, डि०, ५ रु०, उ० प्र०, (५६-५७)।

—यादवचन्द्र जैन : **ललितांगी** : दिल्ली, नारायणदास सहगल एण्ड सन्स, १९५७, पृ० २०५, ड० क्रा०, ३.७५ रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

—रघुवीरशरण मित्र : **आग और पानी** : मेरठ, भारतीय साहित्य प्रकाशन, २०११ वि०, पृ० ५०८, ड० क्रा०, ७ रु०, उ० प्र०, (५५)।

युग-निर्माता चाणक्य के चरित पर उपन्यास।

—रजनी पणिक्कर (श्रीमती) : **प्यासे बादल** : बनारस, मोतीलाल बनारसीदास, पृ० २५६, ड० क्रा०, ५ रु०, उ० प्र०, (५६-५७)।

कुछ आधुनिक सामाजिक समस्याओं का समाधान। लेखिका की तीसरी कृति।

—रांगेय राघव (डॉ०) : **कब तक पुकारूँ** : दिल्ली, राजपाल एण्ड सन्स, १९५७, पृ० ६५८, ड० क्रा०, ८ रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

समाज के उपेक्षित वर्ग 'नट', का चित्रण, सामाजिक उपन्यास।

—राजकुमार : **कश्मीर** : वाराणसी, हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, १९५७, पृ० २५७, ड० क्रा०, ४ रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

—राजीवलोचन अग्निहोत्री : **शकारि विक्रमादित्य** : प्रयाग, छात्रहितकारी पुस्तकमाला, २०१३ वि०, पृ० १६५, ड० क्रा०, २ रु०, वि० प्र०, (५३-५४)।

ऐतिहासिक उपन्यास।

—राधाकृष्णप्रसाद : **संस्कारों की राह** : काशी, भारतीय ज्ञानपीठ, १९५७, पृ० १६८, ड० क्रा०, २.५० रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

एक सामाजिक लघु उपन्यास।

—रावी : **वीरभद्र की गोष्ठी** : आगरा, कैलाश प्रकाशन (वितरक राजकमल प्रका०), १९५६, पृ० २०८, ड० क्रा०, ३.५० रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

चिन्तन-ग्रन्थ के दृष्टिकोण से सामाजिक चिन्तन की पृष्ठभूमि। इष्ट मित्रों के साथ एक वर्ष की बातचीत का विवरण औपन्यासिक रूप में।

—रामसागर मिश्र : **कर्म साधना** : दिल्ली, साहित्य प्रकाशन, १९५४, पृ० २१६, ड० क्रा०, ४ रु०, वि० प्र०, (५२-५३)।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशकों के लिए विशेष सूचनाएँ

पिछले वर्षों की तरह इस वर्ष भी बिहार राज्य सरकार की ओर से बिहार अधीक्षक द्वारा पुस्तकालयों, हाई स्कूलों और समाज-शिक्षा-केन्द्रों के लिए स्वीकृत पुस्तकों की एक अनुपूरक सूची प्रकाशित की जायगी। इस सूची में मुख्यत: १९५७ के बाद के प्रकाशन संकलित किये जायँगे, किन्तु पूर्व-प्रकाशित महत्त्वपूर्ण पुस्तकों के संकलन पर भी विचार किया जा सकेगा। प्रत्येक पुस्तक की दो-दो प्रतियाँ पुस्तकालय अधीक्षक, बिहार, सिन्हा लाइब्रेरी रोड, पटना-१ को ३१ अगस्त १९५८ तक पहुँच जानी चाहिएँ। प्रत्येक पुस्तक की एक प्रति पर निम्नलिखित सूचनाओं का एक लेबल लगा रहना चाहिए :

(क) लेखक अथवा अनुवादक का नाम
(ख) प्रकाशक का नाम और पता
(ग) पुस्तक का विषय
(घ) प्रकाशक का नाम और वर्ष
(ङ) जिस प्रकार के कागज पर पुस्तक छपी है उसका विवरण
(च) पुस्तक की पृष्ठ-संख्या
(छ) चित्रित है अथवा नहीं
(ज) पुस्तक का मूल्य
(झ) पुस्तक-प्राप्ति का पूरा पता

ऐसी पुस्तकें, जो मौलिक रचनाएँ नहीं हैं, वरन् नोट और गाइड के रूप में लिखी गई हैं तथा जो विश्वविद्यालयों, स्कूलों के पाठ्यक्रम को दृष्टि में रखकर लिखी गई हैं तथा जो केवल विद्यार्थियों के लिए उपयोगी हैं एवं ऐसी पुस्तकें, जो न्यूज़ प्रिंट पर छपी हैं, नहीं भेजी जानी चाहिएँ।

× × ×

उत्तर प्रदेश, एजूकेशन एक्सपेंशन ऑफिस, ३६ महात्मा गांधी मार्ग, इलाहाबाद के पास १९५८-५९ के लिए खरीद की जाने वाली पुस्तकों के चयन के उद्देश्य से प्रत्येक पुस्तक की ८-८ प्रतियाँ १५ अक्तूबर, १९५८ तक भेजी जा सकती हैं।

विभाग द्वारा पहले खरीदी जा चुकी पुस्तकों और १९५६ से पूर्व प्रकाशित पुस्तकों की नमूने की प्रतियाँ नहीं भेजनी चाहिएँ। प्रत्येक पुस्तक के विषय में निम्न निर्धारित विवरण पुस्तक के साथ भेजा जायगा।

(क) पुस्तक का नाम
(ख) विषय
(ग) भाषा
(घ) लेखक का नाम
(ङ) अनुवादक का नाम, यदि कोई हो
(च) प्रकाशक का नाम या उस व्यक्ति का नाम जिसको यदि पुस्तक चुनी जाय तो आर्डर भेजा जाय।
(छ) पूरा पता
(ज) पुस्तक का मूल्य
(झ) मूल्य पर कमीशन
(ञ) भेजने वाले का पता।

जिन पुस्तकों पर उनके प्रकाशन की तिथि का उल्लेख नहीं होगा, उन पर विचार नहीं किया जायगा और न न्यूज़ प्रिंट अथवा खराब कागज़ पर छपी हुई पुस्तकों पर।

× × ×

मुद्रकों एवं प्रकाशकों को सूचना दी जाती है कि १९५९-६० के वर्ष के लिए उत्तर प्रदेश के राजकीय प्रकाशनों के मुद्रण हेतु प्रार्थना-पत्र विशेष पदाधिकारी, पाठ्य-पुस्तक, उत्तर प्रदेश, ६ माल ऐवेन्यु, लखनऊ के कार्यालय में बुधवार १५ अक्तूबर, १९५८ से कार्यालय में १०-३० प्रातः से ४ बजे सायं तक लिये जायँगे। प्रार्थना-पत्र निर्धारित प्रपत्र पर ही भेजना चाहिए जो नकद दाम देकर अधीक्षक, मुद्रण एवं लेखक सामग्री, लखनऊ से प्राप्त हो सकता है। १९५९-६० के वर्ष में प्रवेशिका, बेसिक रीडर भाग १, २ और ३ कई रंगों में सुपर कलेंडर कागज़ पर मुद्रित होंगे।

× × ×

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ की ओर से सूचना

प्रकाशन व पुस्तक-व्यवसाय सेमीनार

अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ के तत्त्वावधान में 'प्रकाशन व पुस्तक व्यवसाय' पर एक सेमीनार २८ सितम्बर से ५ अक्टूबर तक दिल्ली में आयोजित किया जा रहा है। इसमें प्रकाशन व पुस्तक-व्यवसाय सम्बन्धी समस्याओं पर विचार होगा। इसमें केवल प्रकाशन व पुस्तक-व्यवसाय में काम करने वाले प्रमाणित व्यक्ति ही भाग ले सकेंगे जो इस व्यवसाय की समस्याओं से परिचित हों। प्रत्येक प्रस्तुत विषय पर पहले उस विषय में पूरी जानकारी रखने वाला व्यक्ति भाषण देगा अथवा लिखित विचार पढ़ेगा। तत्पश्चात् सभी लोग प्रश्नों द्वारा अपनी शंकाओं का समाधान करेंगे। अधिक समय प्रश्नोत्तरों को ही दिया जायगा। इसके अतिरिक्त चुने हुए प्रकाशन-गृह, प्रिंटिंग प्रैस, लाइब्रेरियों व शिक्षण-संस्थाओं को देखने का आयोजन होगा तथा व्यवसाय से सम्बन्धित प्रमुख व्यक्तियों से भेंट का अवसर भी मिलेगा। इसमें विचार प्रकट करने के लिए देश के प्रकाशन-व्यवसाय सम्बन्धी जानकारों का सहयोग प्राप्त किया जा रहा है। अतएव ऐसी आशा की जाती है कि प्रकाशन-कार्य को समझने के लिए यह सेमीनार अत्यन्त उपयोगी सिद्ध होगा। सम्भवतः कुछ विदेशी प्रकाशक भी इसमें अपने अनुभव बताने आ सकें।

जिन समस्याओं पर इस सेमीनार में विचार होगा उनमें निम्नलिखित उल्लेखनीय हैं :—

प्रकाशन-व्यवसाय का संगठन और उसकी रूपरेखा : प्रकाशक का प्रकाशन कार्यक्रम व पाण्डुलिपियों का चुनाव : पुस्तक का सम्पादन, मुद्रण व रंग-रूप : पुस्तकों की चित्रकारी : पुस्तकों का विज्ञापन : प्रकाशन-कार्य का आर्थिक लेखा-जोखा : प्रकाशक-पुस्तक-विक्रेता सम्बन्ध : पुस्तकों का थोक वितरण : कापीराइट : लेखक-प्रकाशक सम्बन्ध : कमीशन के निश्चित दर : पुस्तक-विक्रय-कला : बाल-साहित्य-सृजन : पुस्तकों का मूल्य और जिल्दबन्दी : प्रकाशन-गृह की आन्तरिक व्यवस्था : विभिन्न भाषाओं की पुस्तकों का सांझा प्रकाशन : प्रकाशक का लाइब्रेरियों की व सरकारी खरीद के प्रति दृष्टिकोण : विदेशों में पुस्तक-व्यवसाय।

अन्तिम दिन बैठक में एक विविध-वार्त्ता प्रश्नोत्तरी होगी। इसमें एक प्रकाशक, एक पुस्तक-विक्रेता व एक लेखक मंच पर बैठेंगे और अपने-अपने दृष्टिकोण से सभी प्रश्नों का उत्तर देंगे।

सेमीनार के सप्ताह में कुछेक मनोरंजन के कार्यक्रम दिल्ली से बाहर दर्शनीय स्थानों पर होंगे। २८ सितम्बर रविवार की प्रातः सेमीनार में भाग लेने वाले सभी व्यक्तियों का दिल्ली पहुँच जाना आवश्यक होगा। उसी दिन सायं सेमीनार का उद्घाटन समारोह होगा। प्रायः सभी वार्त्ताएँ राष्ट्रभाषा में होंगी। परन्तु सेमीनार में भाग लेने के लिए हिन्दी व अंग्रेजी दोनों भाषाएं आनी चाहिएँ। जो व्यक्ति दिल्ली में ठहरने का निजी प्रबन्ध करेंगे उनके लिए शुल्क २५ रुपये होगा और जो व्यक्ति संघ द्वारा आयोजित कैम्प में रहेंगे, उनका शुल्क ६० रुपये होगा। सभी लोगों के लिए अपराह्न चाय का प्रबन्ध संघ की ओर से होगा। जिस दिन विशेष सांघिक सहभोज होंगे उनकी सूचना पहले से दी जायगी।

सेमीनार में केवल एक सीमित संख्या में ही व्यक्ति भाग ले सकेंगे, अतएव जिनका शुल्क व प्रार्थना-पत्र पहले प्राप्त होंगे, वही लिये जा सकेंगे। प्रार्थना-पत्र के लिए अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ, कश्मीरी गेट, दिल्ली को लिखें। प्रार्थना-पत्र व शुल्क भेजने की अन्तिम तिथि २५ अगस्त है।

विस्तृत कार्यक्रम बाद में भेजा जायगा।

भवदीय,
दीनानाथ मल्होत्रा
प्रधान मन्त्री

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

—रामेश्वर शुक्ल 'अंचल' : **मरु प्रदीप** : प्रयाग, साहित्य भवन लि०, १९५१, पृ० २५३, ड० क्रा०, ४ रु०, उ० प्र०, (५३-५४)।

—लक्ष्मीचन्द्र वाजपेयी : **मेघ पुष्प** : आगरा, विनोद पुस्तक मन्दिर, १९५६, पृ० २१०, ड० क्रा०, ३.५० रु०, उ० प्र०, (५६-५७)।

—लक्ष्मीचन्द्र वाजपेयी : **श्रीमती विश्वास** : दिल्ली, साहित्य प्रकाशन, १९५५, पृ० २३८, ड० क्रा०, ४ रु०, उ० प्र०, (५५-५६)।

जीवन की नाना परिस्थितियों के भीतर से झाँकनेवाली एक समुज्ज्वल नारी का अध्ययन।

—लक्ष्मीनारायण लाल : **काले फूल का पौधा** : प्रयाग, भारती भण्डार, २०१२ वि०, पृ० २६४, ड० क्रा०, ३ रु०, उ० प्र०, (५६-५७)।

—विष्णु प्रभाकर : **स्वप्नमयी** : दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, १९५६, पृ० १३२, ड० क्रा०, २ रु०, उ० प्र०, (५६-५७)।

—विष्णु शर्मा : **सूरज डूबने से उगने तक** : इलाहाबाद, किताब महल, १९५६, पृ० १२०, ड० क्रा०, २.५० रु०, उ० प्र०, (५६-५७)।

—वृन्दावनलाल वर्मा : **अचल मेरा कोई** : झाँसी, मयूर प्रकाशन, १९५७, पृ० २६३, ड० क्रा०, ३.७५ रु०, उ० प्र०, (१९५१) तथा ना० प्र० सभा, काशी से भी पुरस्कृत।

—वृन्दावनलाल वर्मा : **झाँसी की रानी** : झाँसी, मयूर प्रकाशन, १९५६, पृ० ५१२, ड० क्रा०, ६ रु०, के० स० प्र० वि० पु० प्रति०, तथा हिन्दु० एके० (४८-४९) और उ० प्र० (५५-५६)।

ऐतिहासिक उपन्यास।

—वृन्दावनलाल वर्मा : **मृगनयनी** : झाँसी, मयूर प्रकाशन, १९५५, पृ० ४९४, ड० क्रा०, ५ रु०, उ० प्र०, (५१-५२)।

एक ऐतिहासिक उपन्यास।

हर० डा० (५१), साहित्यकार संसद, उ० प्र०, प० भा०, नागरी प्रचारिणी सभा, भारत सरकार, दिल्ली तथा हिन्दुस्तानी एकेडेमी द्वारा पुरस्कृत।

—शान्तिप्रिय द्विवेदी : **दिगम्बर** : वाराणसी, हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, १९५४, पृ० १४४, ड० क्रा०, २ रु०, उ० प्र०, (५५-५६)।

औपन्यासिक रेखांकन।

—शिवरानी विशनोई (श्रीमती) : **भीगी पलकें** : वाराणसी, सरस्वती मन्दिर, १९५७, पृ ४०६, ड० क्रा०, ५.५० रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

उपन्यास।

—शीला शर्मा : **एक था** : दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, पृ० १४२, ड० क्रा०, २ रु०, उ० प्र०, (५५-५६) तथा वि प्र०, (५५-५६)।

एक लघु उपन्यास।

—श्रीराम शर्मा 'राम' : **जिन्दगी की राहें** : दिल्ली, ओरियन्टल बुक डिपो, पृ० २३१, ड० क्रा०, ४ रु०, उ० प्र०, (५६-५७)।

परित्यक्त और घृणा योग्य बालकों पर आधारित उपन्यास।

—सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय' : **शेखर एक जीवनी (दो भागों में)** : बनारस, सरस्वती प्रेस, १९४४, पृष्ठ प्र० भाग २५३, द्वि० भाग २५९, डि०, मूल्य भाग १—५ रु०, भाग २—५ रु०, ना० प्र० सभा द्वारा बटुक प्रसाद पुरस्कार, सुधाकर पदक, (२००४ वि०)।

—सत्यकेतु विद्यालंकार : **आचार्य चाणक्य** : मसूरी, सरस्वती सदन, १९५६, पृ० ३५२, ड० क्रा०, ४ रु०, उ० प्र०, (५४)।

ऐतिहासिक उपन्यास, परिशिष्ट में कठिन शब्दों के अर्थ।

—हजारीप्रसाद द्विवेदी : **बाणभट्ट की आत्मकथा** : बम्बई, हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय, १९५८, पृ० ३०८, ड० क्रा०, ५ रु०, ना० प्र० सभा, द्विवेदी स्वर्ण पदक, (२००७ वि०)।

—हरिदास माणिक : **पोर्ट आर्थर एक खूनी किला** : काशी, माणिक कार्यालय, १९५६, पृ० २४०, ड० क्रा०, ३ रु०, उ० प्र०, (५६)।

अनूदित उपन्यास

—आन्द्रेजीद (मू० ले०), अनु० सुशीलादेवी : **संकरा द्वार** : मसूरी, सरस्वती सदन, २.५० रु०, के० स०,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(५५), प्रथम वि० पु० प्रति० ।

'ला पॉर्त एत्रोग्रात' नामक फ्रेंच पुस्तक का अनुवाद। दो युवक-युवतियों की प्रेम-कहानी।

—हावर्ड फास्ट (मू० ले०), अनु० अमृतराय : **आदि विद्रोही** : इलाहाबाद, हंस प्रकाशन, १९५५, पृ० ३८४, डि०, ६·५० रु०, के० स० तृ० वि० पु० प्रति० ।

ईसा के ७३ वर्ष पूर्व के रोम के एक गुलाम स्पार्टकस की गुलामी के विरुद्ध चुनौती की अपनी जीवन-कथा।

हिन्दी-कथा-साहित्य, कहानियाँ

—अन्नपूर्णानन्द : **मन मयूर** : इलाहाबाद, रामनारायण लाल, १९५१, पृ० २२२, डं० क्रा०, (सचित्र), ४ रु०, वि० प्र० ।

१५ बालोपयोगी कहानियाँ।

—अयोध्याप्रसाद गोयलीय : **कुछ मोती कुछ सीप** : काशी, भारतीय ज्ञानपीठ, १९५७, पृ० १४४, डं० क्रा०, (सचित्र), २·५० रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

४३ लघु कथाएँ, एक शब्द-चित्र।

—उपेन्द्रनाथ 'अश्क' : **कहानी लेखिका और जेहलम के सात पुल** : इलाहाबाद, उपासना प्रकाशन, १९५७, पृ० १८३, डं० क्रा०, ३·५० रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

लेखक की अपनी कहानियों का संग्रह।

—उषा देवी मित्रा (श्रीमती) : **सान्ध्यपूर्वी** : आजमगढ़, प्रभात साहित्य कुटीर, १९४१, पृ० १५७, डं० क्रा०, १ रु०, हिं० सा० स० सेक० महिला पुर०, (२००५ वि०)।

लेखिका की अपनी नौ कहानियों का संग्रह।

—कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर : **बाजे पायलिया के घुँघरू** : काशी, भारतीय ज्ञानपीठ, १९५७, पृ० २६६, डं० क्रा०, ४ रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

कहानियों के रूप में छोटे संस्करण।

—कृष्णदेव प्रसाद गौड़ 'बेढब' : **उपहार** : वाराणसी, हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, १९५६, पृ० १३८, डं० क्रा०, २ रु०, उ० प्र०, (५५)।

'बेढब' जी की १९ कहानियों का संग्रह।

—गोविन्दवल्लभ पंत : **फटा पत्र** : प्रयाग, जवाहर ज्योति, २०१४ वि०, पृ० १५२, डं० क्रा०, ३ रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

अपनी ५ कहानियों का संग्रह।

—चन्द्रगुप्त विद्यालंकार : **तीन दिन** : दिल्ली, राजपाल एण्ड सन्स, १९५७, पृ० १९२, डं० क्रा०, ३ रु०, उ० प्र०, (५६-५७)।

अपनी १५ कहानियों का संग्रह।

—जहूर बख्श : **हम प्रेसीडेंट हैं** : महा० शा०।

—जैनेन्द्रकुमार : **जयसंधि** : दिल्ली, पूर्वोदय प्रकाशन, १९४८, पृ० २२०, डं० क्रा०, ३ रु०, उ० प्र०, (५०)।

अपनी २० कहानियों का संग्रह।

—देवराज 'दिनेश' : **राजा भोज** : दिल्ली, सस्ता साहित्य मण्डल, १९५७, पृ० ३२, (सचित्र), डं० क्रा०, ३१ न० पै०, के० स० जन सा० प्रति०, (५६)।

राजा भोज सम्बन्धी रोचक कहानियाँ (प्रौढ़ साहित्य)।

—देवीदयाल चतुर्वेदी 'मस्त' : **हवा का रस** : इलाहाबाद, इंडियन प्रेस, पब्लिकेशन्स लि०, पृ० १३५, डि०, १·५० रु०, उ० प्र०, (५५) तथा महा० शा० प० से भी।

१६ कहानियों का संग्रह।

—नंदलाल जैन : **सुखी राजकुमार** : वि० प्र०, (५४-५५)।

—नमिता लुम्बा (श्रीमती) : **जिन्दगी के अनुभव** : इलाहाबाद, सेन्ट्रल बुक डिपो, १९५४, पृ० १५४, डं० क्रा०, २·५० रु०, वि० प्र०, (५४-५५)।

लेखिका की सोलह कहानियों का संग्रह।

—नर्मदाप्रसाद मिश्र : **भारतीय वीरों की कहानियां** : वि० प्र०, (५२-५३)।

— प्राणनाथ सेठ : **हमारी कहानियां** : के० स०, (५६)।

—प्रेमचन्द : **दो बैलों की कथा और बाबाजी का भोग** : बनारस, सरस्वती प्रेस, पृ० २३, डि०, ७५ न० पै०, के० स० प्र० जन सा० प्रति०, (५४)।

स्व० प्रेमचन्दजी की दो प्रौढ़ोपयोगी कहानियों का संकलन।

—ब्रजकिशोर नारायण : **हंसी-खुशी** : पटना, अजन्ता प्रेस, १९५१, पृ० १६, (सचित्र), रॉ०, ७५ न० पै०, के० स०, (५५-५६)।

बालोपयोगी कविताएँ।

—माखनलाल चतुर्वेदी : **कला का अनुवाद** : गोरखपुर,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विश्वविद्यालय प्रकाशन, १९५४, पृ० ९८, डि० क्रा०, २·२५ रु०, म० प्र०, (५६)।

लेखक की अपनी नौ कहानियों का संग्रह (रेखाचित्र)।

—मन्मथनाथ गुप्त : **बाल कथा कहानियाँ** : दिल्ली, विद्या-मन्दिर लि०, १९५६, पृ० ६१, फु० स्के०, (सचित्र), १ रु०, वि० प्र०, (५४-५५)।

देश-विदेश की लोक-कथाएँ।

—मार्कण्डेय : **हंसा जाइ अकेला** : इलाहाबाद, नया साहित्य प्रकाशन, १९५७, पृ० १२२, ड० क्रा०, ३ रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

लेखक की अपनी सात कहानियों का संग्रह।

—मोहनलाल गुप्त : **अनोखे चित्र, अनबोले चेहरे** : वाराणसी, मधु प्रकाशन, १९५७, पृ० १८४, ड० क्रा०, ३ रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

कहानी-संग्रह।

—मोहनलाल गुप्त : **मखमली जूती** : वाराणसी मधु, प्रकाशन, १९५७, पृ० १२०, ड० क्रा०, २ रु०, उ० प्र०, (५५-५६)।

लेखक की अपनी १४ कहानियों का संग्रह।

—यशपाल : **चित्र का शीर्षक** : लखनऊ, विप्लव कार्यालय, १९५५, पृ० ११३, डि०, २.५० रु०, उ० प्र०, (५५), वि० प्र०, (५४-५५)।

१३ समस्यामूलक कहानियों का संग्रह।

—यशपाल : **तुमने क्यों कहा था कि मैं सुन्दर हूँ** : लखनऊ, विप्लव कार्यालय, १९५४, पृ० ११०, डि०, २·५० रु०, उ० प्र०, (५५-५६)।

कहानी-संग्रह।

—राजेन्द्र शर्मा : **मानस हंस** : दिल्ली, भारती साहित्य मन्दिर, २०१३ वि०, पृ० १३८, ड० क्रा०, ३ रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

प्रेरणादायक, भावपूर्ण, शिक्षाप्रद प्राचीन आख्यान।

—राजेन्द्रसिंह वेदी : **लाजवंती** : प्रयाग, नीलाभ प्रकाशन, १९५७, पृ० १९१, ड० क्रा०, ३.७५ रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

हमारे पुरस्कृत प्रकाशन

★ कृष्णदेव प्रसाद गौड़ :	—साहित्य-प्रवाह (आलोचना)	६·००
★ शान्तिप्रिय द्विवेदी :	—पद्मनाभिका (निबन्ध)	२·५०
★ 'बेढब' बनारसी :	—बिजली (हास्यरस)	२·५०
★ 'बेढब' बनारसी :	—हुक्का पानी (हास्यरस)	३·५०
★ मनु शर्मा :	—तीन प्रश्न (उपन्यास)	५·००
★ रुद्र काशिकेय :	—सुचिताच (उपन्यास)	५·००
★ सुधाकर पाण्डेय :	—प्रसाद काव्य-कोश (कोश)	१५·००

अन्य प्रकाशनों के लिए सूचीपत्र मँगावें

कल्याणदास एण्ड ब्रदर्स

ज्ञानवापी, वाराणसी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेखक की अपनी कहानियों का प्रथम संग्रह ।

—राधाकृष्ण : **गल्पिका** : इलाहाबाद, हंस प्रकाशन, १९५६, पृ० ८२, डि० क्रा०, १.५० रु०, उ० प्र०, (५६-५७)।

२७ लघु कथाएँ ।

—रामनिरंजन पांडेय : **गांव की कहानियाँ** : के० स०, (५४)।

—रामवृक्ष बेनीपुरी : **बेटे हों तो ऐसे** : पटना, अजन्ता प्रेस लि०, पृ० ३९, फु०स्के०, (सचित्र), ७५ न० पै०, के० स० बा० साहि० प्रति०, (५४)।

लेखक की बालोपयोगी ११ कहानियों का संग्रह ।

—रावी (रामप्रसाद विद्यार्थी) : **पहला कहानीकार** : काशी, भारतीय ज्ञानपीठ, १९५४, पृ० १९८, डि० क्रा०, २.५०रु०, उ० प्र०, (५४)।

लेखक की २८ लघु कथाओं का संग्रह ।

—रुद्र काशिकेय : **सुचिताच** : वाराणसी, आराधना प्रकाशन, १९५७, पृ० २१९, डि० क्रा०, ५ रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

सुमित्रा, चित्रा, तारा और चन्द्रा शीर्षकों के अन्तर्गत पाँच-पाँच शब्द-चित्र ।

—लक्ष्मीनारायण : **मैं क्या कर सकता हूँ** : दिल्ली, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, १९५४, पृ० ३५, डि०, (सचित्र), ८७ न० पै०, के० स०, (५५)।

नव-साक्षरों के लिए लिखित कहानियाँ ।

—विनोदशंकर व्यास : **नक्षत्र लोक** : काशी, पुस्तक मंदिर, १९५०, पृ० १२८, डि० क्रा०, २ रु०, उ० प्र०, (५१)।

अपनी १८ कहानियों का संग्रह ।

—वियोगी हरि : **पाव भर आटा** : नई दिल्ली, सस्ता साहित्य मण्डल, १९५६, पृ० ३६, डि० क्रा०, (सचित्र), ३७ न०पै०, के० स० द्वारा प्र० प्रौ० सा० प्रति०, (५७)।

छोटे माने जाने वाले बड़े दिलों की ५ कहानियाँ ।

—विश्वामित्र शर्मा : **सुनो कहानी** : दिल्ली, राजहंस प्रकाशन, पृ० ३०, २ रु०, शिक्षा विभाग, दिल्ली द्वारा पुरस्कृत ।

—विष्णु प्रभाकर : **संघर्ष के बाद** : काशी, भारतीय ज्ञानपीठ, १९५३, पृ० २४८, डि० क्रा०, ३ रु०, उ० प्र०, (५५)।

अपनी २१ कहानियों का संग्रह ।

—शकुन्तला देवी : **पंचतन्त्र की कहानियाँ, भाग १** : दिल्ली राजकमल प्रकाशन, १९५७, पृ० २४, (सचित्र), रॉ०, १.२५ रु०, के० स० अ० प्रौ० सा० प्रति० (५४)।

बालकों एवं प्रौढ़ों के लिए सरल एवं रोचक ७ कहानियाँ ।

भाग २, १.२५ रु०।

भाग ३, १.२५ रु०।

—शारदा मिश्र (श्रीमती) : **नीलम और मशहरी की देवी** : वाराणसी, हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, १९५७, पृ० ३२, फु० स्के०, (सचित्र), १.२५ रु०, के० स० बा० सा० प्रति०, (५४)।

बालोपयोगी कहानी ।

—संतराम वत्स : **ज्ञान की कहानियाँ** : के० स०, (५४)।

—सत्यप्रकाश संगर : **लम्बे दिन जलती रातें** : भोपाल, विजय प्रकाशन, (मुख्य वि०—राजकमल प्रकाशन), पृ० १२८, डि० क्रा०, २.२५ रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

कहानी-संग्रह ।

—सत्यवती मल्लिक (श्रीमती) : **दिन-रात** : दिल्ली, अतरचन्द कपूर एण्ड सन्स, १९५५, पृ० १३९, डि०, ३ रु०, उ० प्र०, (५५-५६)।

लेखिका की बीस कहानियों का संकलन ।

—सरूपकुमारी बख्शी (श्रीमती) : **कौड़ियों का नाच** : लखनऊ, रंजना प्रकाशन, १९५६, पृ० १२६, डि० क्रा०, ४ रु०, उ० प्र०, (५६-५७)।

लेखिका की १० कहानियों का संग्रह ।

—श्रीराम शर्मा : **बालकों की कहानियाँ** : के० स०, (५४)।

—हरिकृष्णदेव सरे : **सफेद रसगुल्ला** : वि०प्र०, (५४-५५)।

—हरिदास माणिक : **आत्मत्यागी वीर** : काशी, माणिक कार्यालय, १९५१, पृ० १४४, डि० क्रा०, २ रु०, उ० प्र०, (५२)।

नई पीढ़ी के नवयुवकों में उच्च गुणों एवं विचारों की प्रेरक ऐतिहासिक सच्ची कहानियाँ एवं संस्मरण ।

—हीरादेवी चतुर्वेदी : **उलझी स्मृतियाँ** : इलाहाबाद, मनोरमा प्रकाशन, १९४९, पृ० १३४, डि०क्रा०, १.५०रु०, उ० प्र०, (५१)।

अपनी १५ कहानियों का संकलन ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे प्रमुख प्रकाशन

उपन्यास

यथार्थ से आगे (पुरस्कृत) : भगवतीप्रसाद वाजपेयी ५।।)
जिन्दगी की राहें (पुरस्कृत) : श्रीराम शर्मा 'राम' ४)
भारत सेवक : यज्ञदत्त शर्मा ५।।)
मायाजाल : गुरुदत्त ५)
उमड़ती घटाएँ : ,, ६)
सहस्रबाहु : ,, ६)
नगर-परिमोहन : ,, ५।।)
लुढ़कते पत्थर : ,, ५।।)
राग और त्याग : कमल शुक्ल ५)
मोलश्री : ,, ६)
काले नगर में : ,, २।।)
पथ से दूर : ,, २।)
देवता : ,, २।)
जीत या हार ? : बलराज मधोक ४)

आलोचना तथा साहित्य

भारतीय काव्य-शास्त्र की भूमिका (पुरस्कृत) : डॉ० नगेन्द्र १०)
बीसवीं शताब्दी के महाकाव्य (पुरस्कृत) : डॉ० प्रतिपाल सिंह ८।।)
सूर मीमांसा : डॉ० व्रजेश्वर वर्मा ४।)
सिद्धान्तालोचन : धर्मचन्द्र सन्त तथा बलदेव कृष्ण ४।।)
हिन्दी गद्य का आविर्भाव और विकास : धर्मचन्द्र सन्त २।)
प्रेमचन्द और उनका गोदान : बलदेव कृष्ण ५।)
भाषा का इतिहास : पं० भगवद्दत्त ५)
काव्य सम्प्रदाय और वाद : अशोककुमार सिंह ४।।)
हिन्दी काव्यादर्श : रणवीरसिंह ४)

नाटक

भारतेन्दु : सेठ गोविन्ददास २)
रहीम : ,, २)
मीरा : सन्त गोकुलचन्द्र १।।।)
हिरौल : ,, १।)
समाधि : विष्णु प्रभाकर २।।)

हास्य रस

सटक सीताराम : संसारचन्द्र एम० ए० ३)

अन्य

संक्षिप्त वाल्मीकि रामायण : डॉ० एस० एन० व्यास २।।।)

हमारा बाल-साहित्य

जो रोचक सरल सरस सचित्र और आकर्षक है जिसमें कहानी कविता नाटक (अभिनेय) जीवनी और अन्य मनोरंजक सामग्री पाएँगे।

कृपया सूचीपत्र मँगाकर अपनी रुचि की पुस्तकें पढ़ें।

ओरिएण्टल बुक डिपो

नई सड़क, दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अगले महीनों में प्रकाशित होने वाले

हमारे कुछ उत्कृष्ट प्रकाशन

मैं नेहरू से मिला : तिबौर मॉड

श्री नेहरू से लेखक की चार लम्बी और टेप रिकार्ड की गई मुलाकातों का ब्यौरा, जिसमें नेहरू ने लेखक द्वारा पूछे गए राजनीति व समाज-विषयक प्रत्येक प्रश्न का विस्तार से उत्तर दिया है। श्री नेहरू और उनके विचारों को समझने के लिए अद्वितीय पुस्तक। पुस्तक का अधिकांश श्री नेहरू के अपने शब्दों में ही है। मूल्य ३·५० रु०।

हिन्दी लेखक चित्रावली :

हिन्दी के पच्चीस प्रमुख साहित्यिकों के चित्रों का पहला, सुमुद्रित एलबम। मूल्य १५·०० रु०।

भारतीय शिक्षा का पुनर्गठन : के० जी० सय्यदैन

केन्द्रीय शिक्षा-मन्त्रालय के मुख्य सचिव द्वारा लिखित देश में शिक्षण के नये संगठन की समस्याओं पर प्रामाणिक पुस्तक।

ठुमरी : फणीश्वरनाथ रेणु

'मैला आँचल' और 'परती परिकथा' के यशस्वी लेखक की कहानियों का प्रथम संग्रह।

लोक परलोक : उदयशंकर भट्ट

लेखक का नवीनतम उपन्यास।

रूपाजीवा : डॉ० लक्ष्मीनारायण लाल

चन्दौसी के व्यापारियों के जीवन की पृष्ठभूमि में लिखा गया लेखक का नवीनतम उपन्यास।

मादा कैक्टस : डॉ० लक्ष्मीनारायण लाल : नाटक

राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड

दिल्ली : इलाहाबाद : बम्बई : पटना : मद्रास

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहानी, अनूदित

—टालस्टाय (मू० ले०), (अनु० जैनेन्द्रकुमार) : **प्रेम में भगवान** : दिल्ली, सस्ता साहित्य मण्डल, १९५६, पृ०२३८, ड० क्रा०, २ रु०, के० स० प्र० वि० पु० प्रति० में पुरस्कृत।

टालस्टाय की सत्रह कहानियों का अनुवाद।

—दिनमणि : **पञ्चतन्त्र की कहानी** : रॉ०, (५४-५५)।

—वेलरी मैंजिल : **नन्हे लंगूर की कहानी** : दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, पृ० २४, फु० स्के०, (सचित्र), १.७५ रु०, के० स०, (५४)।

बालोपयोगी कहानी।

—सावित्रीदेवी वर्मा : **शेक्सपियर की कहानियाँ** : उ० प्र०, (५४-५५)।

हिन्दी आलोचनात्मक निबन्ध, कवि और काव्य

—अक्षयकुमार जैन, (भू० ले० जैनेन्द्र कुमार) : **युग पुरुष राम** : दिल्ली, आत्माराम एण्ड सन्स, १९५४, पृ० २०७, डि०, ५ रु०, उ० प्र०, (५५-५६)।

रामचरित के स्फुट किन्तु क्रमबद्ध प्रसंग २८ शीर्षकों के अन्तर्गत। प्रत्येक शीर्षक अपने में पूर्ण।

—उदयभानु सिंह (डॉ०) : **महावीर प्रसाद द्विवेदी और उनका युग** : लखनऊ, लखनऊ विश्वविद्यालय, २००८ वि०, पृ० ४३०, रॉ०, १० रु०, उ० प्र०, (५२-५३)।

९ अध्यायों में द्विवेदीजी और उनके युग (१९०१-१९२०) का गवेषणात्मक अध्ययन। लखनऊ विश्वविद्यालय से पी-एच० डी० के लिए स्वीकृत प्रबन्ध।

—उषा जायसवाल (कुमारी) : **रत्नाकर और उनका काव्य** : वाराणसी, हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, १९५६, पृ० १७२, डि०, ५ रु०, उ० प्र०, (५६-५७)।

रत्नाकर का प्रामाणिक जीवन-वृत्त तथा उनके काव्यों की समीक्षा।

—कामिल बुल्के (रे० फा०) : **राम कथा** : प्रयाग, हिन्दी परिषद्, (प्रयाग विश्वविद्यालय), १९५०, पृ० ५३२, डि०, ८ रु०, उ० प्र०, (५२)।

रामकथा की उत्पत्ति एवं विकास का गवेषणात्मक अध्ययन। प्रयाग विश्वविद्यालय से डी० फिल्० के लिए स्वीकृत प्रबन्ध।

—किशोरीलाल गुप्त : **भारतेन्दु और अन्य सहयोगी कवि** : वाराणसी, हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, १९५६, पृ० ४४०, डि०, १० रु०, उ० प्र०, (५६-५७)।

पूर्वार्द्ध में भारतेन्दु के तथा उत्तरार्द्ध में उनके सहयोगी कवियों के कवि रूप पर विस्तृत विवेचन।

—गंगाप्रसाद पाण्डेय : **महाप्राण निराला** : प्रयाग, साहित्यकार संसद, २००६ वि०, पृ० ३७६, (सचित्र), डि०, १० रु०, उ० प्र०, (५०)।

'निराला' जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय।

—गिरिजादत्त शुक्ल 'गिरीश' : **समीक्षक प्रवर श्री रामचन्द्र शुक्ल** : प्रयाग, रामनारायणलाल, १९५५, पृ० ३७०, डि०, ५ रु०, उ० प्र०, (५४-५५)।

३८ अध्यायों में आचार्य शुक्ल की साहित्यिक साधना के विकास का अध्ययन।

—गोविन्द त्रिगुणायत : **कबीर और जायसी का रहस्यवाद** : देहरादून, साहित्य सदन, पृ० २४४, ड० क्रा०, ४ रु०, उ० प्र०, (५५-५६)।

कबीर का रहस्यवाद, जायसी का रहस्यवाद एवं दोनों का तुलनात्मक विवेचन, लेखक की ५१ पृष्ठों की अतिरिक्त भूमिका सहित।

—चन्द्रबली पाण्डेय : **केशवदास** : ग्वालियर, नवप्रभात प्रेस, २००७ वि०, पृ० २७१, ड० क्रा०, ३ रु०, वि० प्र०, (५२-५३)।

केशवदास का आलोचनात्मक सर्वाङ्गीण अध्ययन।

—जगमोहनलाल चतुर्वेदी : **एकनाथ व तुलसीदास** : पेठण, श्री एकनाथ संशोधन मन्दिर, १९९४ वि०, पृ० १३०, ड० क्रा०, २.५० रु०, उ० प्र०, (५५)।

एकनाथ व तुलसीदास का तुलनात्मक अध्ययन। (जीवन की झाँकी, काव्य की झलक एवं अध्यात्म-दर्शन)

—देवकीनन्दन श्रीवास्तव : **तुलसीदास की भाषा** : उ० प्र०, (५७-५८)।

—नगेन्द्र (डॉ०) : **रीतिकाव्य की भूमिका तथा देव और उनकी कविता** : दिल्ली, गौतम बुक डिपो, १९४९, पृ० प्र० भा० १९२, द्वि० भा० २९९, डि०, १० रु०, उ० प्र०, (५०) तथा हर० डाल० पुर०।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कविवर 'आदर्श'

विरचित

युगसत्पानिवेष एवं पंचशील की अधुनातन मान्यताओं पर आधारित इस युग का नयी कविता शैली में लिखित पत्रों एवं विद्वानों द्वारा बहु-प्रशंसित अपूर्व महाकाव्य

पुष्पनगर

भूमिका :

डॉ० हजारी प्रसाद द्विवेदी

मूल्य : ६·००

प्रकाशक

आराधना प्रकाशन

६४/४४ गोला दीनानाथ,

वाराणसी

रीतिकाव्य की सामान्य पृष्ठभूमि देकर शुद्ध साहित्यिक दृष्टि से रीतिकालीन कविता, विशेषतया देव की कविता का विश्लेषण एवं मूल्यांकन।

—नर्मदेश्वर चतुर्वेदी : **कवि तानसेन और उनका काव्य :** इलाहाबाद, साहित्य भवन लि०, २०१३ वि०, पृ० १५०, ड० क्रा०, २·५० रु०, उ० प्र०, (५६-५७)।

प्रथम खण्ड में तानसेन के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का संक्षिप्त विवेचन तथा द्वितीय खण्ड में कृतित्व का संग्रह।

—नामवरसिंह : **पृथ्वीराज रासो की भाषा :** बनारस, सरस्वती प्रेस, १९५६, पृ० २९२, डि०, ६ रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

पृथ्वीराज रासो की भाषा का सांगोपांग अध्ययन।

—नारायणदास खन्ना (डॉ०) : **आचार्य भिखारीदास :** लखनऊ, लखनऊ विश्वविद्यालय, २०१२ वि०, पृ० ३६८, रॉ०, १० रु०, उ० प्र०, (५४-५५)।

भिखारीदासजी के जीवन-वृत्त, साहित्यिक रचनाओं का विवेचन, काव्य-कला, भक्ति-भावना तथा सामाजिक नीति पर प्रकाश एवं आचार्यत्व का प्रतिस्थापन। लखनऊ विश्वविद्यालय द्वारा पी-एच० डी० की उपाधि का स्वीकृत शोध ग्रन्थ।

—पद्मावती 'शबनम्' (श्रीमती) : **चन्द्रसखी और उनका काव्य :** बनारस, लोक सेवक प्रकाशन, २०११ वि०, पृ० १२३, ड० क्रा०, २ रु०, उ० प्र०, (५५)।

७४ पृष्ठों का काव्य-संग्रह और ५९ पृष्ठों की आलोचनात्मक भूमिका।

—पुरुषोत्तमलाल श्रीवास्तव : **कबीर साहित्य का अध्ययन :** बनारस, साहित्य रत्नमाला कार्यालय, २००८ वि०, पृ० ३९७, ड० क्रा०, ४ रु०, उ० प्र०, (५२)।

कबीर साहित्य की समीक्षा एवं तत्सम्बन्धी सभी जिज्ञासाओं के समाधान सहित।

—प्रेमनारायण टण्डन (डॉ०) : **सूर की भाषा :** लखनऊ, हिन्दी साहित्य भण्डार, १९५७, पृ० ६२४, रॉ०, २ रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

लखनऊ विश्वविद्यालय की पी-एच० डी० उपाधि के लिए स्वीकृत प्रबन्ध।

—प्रेमशंकर (डॉ०) : **प्रसाद का काव्य :** इलाहाबाद, भारती

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भण्डार, २०१२ वि०, पृ० ५८८, डि०, १० रु०, उ० प्र०, (५५-५६)।

'चित्राधार' से 'कामायनी' तक के क्रमिक विकास का विवेचनापूर्ण अध्ययन। सागर विश्वविद्यालय से पी-एच० डी० के लिए स्वीकृत प्रबन्ध।

—फतहसिंह : **कामायनी सौन्दर्य :** कोटा, संस्कृति सदन, १९४८, पृ० १९२, ड० क्रा०, २ रु०, उ० प्र०, (५२)।

'कामायनी' का काव्यगत विवेचनात्मक संक्षिप्त अध्ययन, छात्रों के दृष्टिकोण से लिखित।

—बच्चनसिंह : **क्रान्तिकारी कवि निराला :** काशी, युगाश्रय, २००४ वि०, पृ० १८९, ड० क्रा०, २.७५ रु०, उ० प्र०, (५०)।

'निराला' जी के काव्य-साहित्य के ऐतिहासिक विकास तथा काव्यात्मक सौष्ठव का प्रतिपादन।

—व्रजविलास श्रीवास्तव, (भूमिका हजारीप्रसाद द्विवेदी) : **पृथ्वीराज रासो में कथानक रूढ़ियां :** दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, १९५५, पृ० १४६, डि०, ३.५० रु०, उ० प्र०, (५५-५६)।

प्रसिद्ध ऐतिहासिक काव्य 'पृथ्वीराज रासो' की कथानक रूढ़ियों का विश्लेषण। लोक-साहित्य और अभिजात-साहित्य से उसकी समानान्तर रूढ़ियों का समन्वय।

—भगवतीप्रसाद सिंह (डॉ०), (भूमिका पं० गोपीनाथ कविराज) : **रामभक्ति में रसिक सम्प्रदाय :** बलरामपुर, अवध साहित्य मन्दिर, २०१४ वि०, पृ० ६२७, (सचित्र), डि०, १५ रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

आगरा विश्वविद्यालय द्वारा पी-एच० डी० की उपाधि के लिए स्वीकृत प्रबन्ध। श्री कविराजजी की १६ पृष्ठों की विद्वत्तापूर्ण भूमिका एवं परिशिष्टांश महत्त्वपूर्ण।

—भगीरथप्रसाद दीक्षित : **महाकवि भूषण :** प्रयाग, साहित्य-भवन लि०, १९५३, पृ० १८८, ड० क्रा०, २.५० रु०, उ० प्र०, (५३-५४)।

भूषण का संक्षिप्त परिचय, कृतियाँ और उनका आलोचनात्मक अध्ययन।

—मुन्शीराम शर्मा : **भारतीय साधना और सूर साहित्य :** कानपुर, आचार्य शुक्ल साधना सदन, २०१० वि०, पृ० ४६०, डि०, ८ रु०, उ० प्र०, (५३)।

पुस्तकालयों के लिए हमारे नवीनतम प्रकाशन

हिन्दी कहानियों का विवेचनात्मक अध्ययन : (थीसिस) डॉ० ब्रह्मदत्त शर्मा १०)
ऐतिहासिक उपन्यासकार वृन्दावनलाल वर्मा : डॉ० गोपीनाथ तिवारी १॥।)
भ्रमरगीत में काव्यकला और दर्शन : श्री प्रेमकृष्ण अनामिल एम० ए० २।)
रहस्यवाद और हिन्दी कविता : डॉ० गुलाबराय डी० लिट् ४)
रीतिकालीन कविता, शृंगाररस का विवेचन : (थीसिस) डॉ० राजेश्वर प्रसाद पी-एच० डी० ६॥)
प्रगतिशील साहित्य के मानदण्ड : डॉ० रांगेय राघव ४)
हिन्दी नाटक के सिद्धान्त और नाटककार : डॉ० रामचरण महेन्द्र ४॥)
प्रसाद एवं पन्त का तुलनात्मक विवेचन : प्रो० रामरजपाल द्विवेदी ४॥)
रामचरितमानस में लोकवार्ता : प्रो० चन्द्रभान ३॥)
जायसी और उनका पद्मावत : डॉ० सुधीन्द्र १॥।)
तुलसी का गवेषणात्मक अध्ययन : प्रो० राजकुमार एम० ए० २॥)
साकेत-दर्शन : प्रो० त्रिलोचन पाण्डेय ५)
हरिऔध और उनकी कला-कृतियाँ : डॉ० द्वारिकाप्रसाद ३।)
महादेवी साहित्यकला-जीवन-दर्शन : श्री रामचन्द्र गुप्त ३॥)
पन्त की काव्यकला और जीवन-दर्शन : " ३।)
हिन्दी साहित्य के दार्शनिक आधार : प्रो० पद्मचन्द एम० ए० १॥।)
हिन्दी साहित्य के प्रमुख वाद और उनके प्रवर्तक : प्रो० विश्वम्भरनाथ ३॥)
गुप्तजी की काव्य-कला : प्रो० त्रिलोचन पाण्डेय ३॥)
आचार्य रामचन्द्र शुक्ल और चिन्तामणि : प्रो० विमला कौल २।)
तुलनात्मक विवेचन, भाग १ व २ : प्रो० दिनेश एम० ए० ३॥)
काव्यश्री (रस अलंकार) : डॉ० सुधीन्द्र ३)
हिन्दी एकांकी एवं एकांकीकार : डॉ० महेन्द्र १॥।)
वृन्दावनलाल वर्मा की उपन्यास-कला : " " १॥)
हिन्दी महाकाव्य एवं महाकाव्यकार : " " २।)
पांचाली (खण्ड काव्य) : डॉ० रांगेय राघव १॥)
चिता (कहानी) : प्रो० ओमानन्द स० सारस्वत १)

सरस्वती पुस्तक सदन, मोती कटरा, आगरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

११ अध्यायों में भारतीय साधना और सूर साहित्य का विस्तृत विवेचन ।

—मुकुन्ददेव शास्त्री, (भूमिका प्योत्र वारान्निकोव) : **हरिऔध और उनका साहित्य :** वाराणसी, हिन्दी साहित्य कुटीर, २०१३ वि०, पृ० ५५४, ड० क्रा०, (सचित्र), ७ रु०, उ० प्र०, (५७-५८) ।

'हरिऔध' के जीवन और उनके सम्पूर्ण साहित्य का आलोचनात्मक विवेचन ।

—राजपति दीक्षित : **सन्त तुलसीदास और उनके सन्देश :** बनारस, गोविन्द मुद्रणालय, २०१० वि०, पृ० १६०, डि०, ३ रु०, उ० प्र०, (५५) ।

तुलसीदासजी की सन्त-भावना और उनके सन्देशों का विस्तृत विवेचन ।

—राजपति दीक्षित (डॉ०) : **तुलसीदास और उनका युग :** बनारस, ज्ञानमण्डल लि०, २००९ वि०, पृ० ४९६, ड० क्रा०, ७ रु०, उ० प्र०, (५२-५३) ।

तुलसीदास के सभी पक्षों का व्यापक रूप में प्रत्यक्षीकरण । २२ पृष्ठों की भूमिका द्रष्टव्य ।

—रामचन्द्र तिवारी : **रीतिकालीन हिन्दी कविता और सेनापति :** गोरखपुर, विश्वविद्यालय प्रकाशन, १९५३, पृ० ११२, ड० क्रा०, १.५० रु०, उ० प्र०, (५५) ।

रीतिकाव्य की परम्परा तथा तत्कालीन प्रवृत्तियों की पृष्ठभूमि में सेनापति के काव्य का विशेष अध्ययन ।

—रामरतन भटनागर (डॉ०) : **प्रसाद की विचारधारा :** प्रयाग, रामनारायणलाल, १९५१, पृ० ४४२, ड० क्रा०, ४ रु०, उ० प्र०, (५२-५३) ।

'प्रसाद' की विचारधारा की प्रत्येक तरंग का कालक्रमागत गतिविधि से प्रतिष्ठापन ।

—लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय (डॉ०) : **भारतेन्दु हरिश्चन्द्र :** प्रयाग, साहित्य भवन लि०, १९५६, पृ० ३२२, ड० क्रा०, ५ रु०, उ० प्र०, (५३-५४) ।

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र की कृतियों के आलोचनात्मक अध्ययन के साथ-साथ उनकी विचारधारा की तत्कालीन जीवन की परिस्थितियों के बीच परख ।

—वारान्निकोव, ए० पी० (मू० ले०), केशरीनारायण शुक्ल (अनु०) : **मानस की रूसी भूमिका :** लखनऊ, विद्या मन्दिर, १९५५, पृ० १९१, ड० क्रा०, ३.५० रु०, उ० प्र०, (५५-५६) ।

प्रो० वारान्निकोव की 'रामचरितमानस' की रूसी भूमिका का रूपान्तर । अनुवादक की ८३ पृष्ठों की अतिरिक्त भूमिका ।

—वासुदेव गोस्वामी : **भक्त कवि व्यासजी :** मथुरा, अग्रवाल प्रेस, २००९ वि०, पृ० ४४७, डि०, ६ रु०, वि० प्र०, (५२-५३) ।

भक्त कवि व्यास की जीवनी, काव्य-समीक्षा एवं उनकी समस्त रचनाओं का संकलन ।

—विपिनविहारी त्रिवेदी (डॉ०) : **चन्दबरदाई और उनका काव्य :** इलाहाबाद, हिन्दुस्तानी एकेडेमी, पृ० ३७६, रॉ० ८ रु०, उ० प्र०, (५३) ।

आदि कवि चन्दबरदाई के जीवन और काव्य का गवेषणात्मक अध्ययन । कलकत्ता विश्वविद्यालय से डी० फिल्० के लिए स्वीकृत प्रबन्ध ।

—विश्वम्भरनाथ भट्ट (डॉ०) : **रत्नाकर, उनकी प्रतिभा और कला :** नई दिल्ली, हिन्दी पुस्तक सदन, १९५८, पृ० ३८८, डि०, ९ रु०, उ० प्र०, (५७-५८) ।

लेखक की थीसिस का परिमार्जित रूप । दस अध्यायों में विषय का प्रतिपादन ।

—वृजेन्द्रनाथ पाण्डेय : **भारतेन्दुकालीन व्यंग परम्परा :** वाराणसी, कल्याणदास एण्ड ब्रदर्स, २०१३ वि०, पृ० १५४, ड० क्रा०, २.५० रु०, उ० प्र०, (५६-५७) ।

व्यंग-परिहासयुक्त निबन्धों का संकलन ।

—शान्तिप्रिय द्विवेदी : **ज्योति विहग :** प्रयाग, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, २००८ वि०, पृ० ४५८, ड० क्रा०, ५ रु०, उ० प्र०, (५२) ।

सौन्दर्य और संस्कृति के कवि पंत की समस्त रचनाओं का समीक्षात्मक अध्ययन ।

—शिवचन्द्र नागर : **महादेवी विचार और व्यक्तित्व :** प्रयाग, किताब महल, १९५३, पृ० ३५८, ड० क्रा०, ३ रु०, उ० प्र०, (५५) ।

महादेवीजी के सम्बन्ध में विश्वम्भर मानव को लिखे गए शिवचन्द्र नागर के पत्रों का संकलन ।

—शिवप्रसाद सिंह (डॉ०) : **कीर्तिलता और अवहट्ट भाषा**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रत्येक पुस्तकालय में संग्रह करने योग्य पुस्तकें

कोश

बृहत् हिन्दी कोश	सम्पादक कालिकाप्रसाद : लेदर क्लाथ राजवल्लभ सहाय जिल्द मू०	२५.००
	मुकुन्दीलाल श्रीवास्तव चमड़े की जिल्द	३२.००
ज्ञान शब्दकोश	सम्पा० मुकुन्दीलाल श्रीवास्तव	१५.००
पारिभाषिक शब्दकोश	सम्पा० मुकुन्दीलाल श्रीवास्तव	४.००

राजनीतिक पुस्तकें

भारतीय राजनीति—विक्टोरिया से नेहरू तक	रामगोपाल एम० ए०	११.००
राष्ट्रीयता और समाजवाद	आचार्य नरेन्द्रदेव	११.००
अन्तर्राष्ट्रीय विधान	डॉ० सम्पूर्णानन्द	११.००
चीन कल और आज	के० एम० पणिक्कर	५.००
राजनीतिशास्त्र	प्राणनाथ विद्यालंकार	४.५०
जापान की राजनीतिक प्रगति	अनु० लक्ष्मणनारायण गर्दे	५.५०
चीन और भारत	अम्बिकाप्रसाद वाजपेयी	१.५०

धर्म और दर्शन

सन्तमत साधना और साहित्य	रामपूजन तिवारी	११.००
विश्व के धर्म प्रवर्तक	रघुनाथसिंह एम० पी०	६.५०
वैज्ञानिक अद्वैतवाद	स्व० रामदास गौड़ एम० ए०	२.२५
चिद्विलास	डॉ० सम्पूर्णानन्द	५.००
दर्शन का प्रयोजन	डॉ० भगवानदास	३.५०
नीतिशास्त्र	सुश्री शान्ति जोशी	८.००

पत्रकारिता

पत्र और पत्रकार	माननीय पं० कमलापति त्रिपाठी तथा पुरुषोत्तमदास टण्डन 'पत्रकार'	६.५०
भारतीय पत्रकार कला	सम्पादक रौलेण्ड ई० वूल्सले	६.५०
समाचारपत्रों का इतिहास	पं० अम्बिकाप्रसाद वाजपेयी	६.५०
आधुनिक पत्रकार कला	रा० र० खाडिलकर	४.००

मनोविज्ञान

शिक्षा मनोविज्ञान	हंसराज भाटिया	४.५०

भ्रमण

इंगलैण्ड में पचीस दिन	रा० र० खाडिलकर	३.००
अर्मीना	रघुनाथसिंह एम० पी०	३.००

इतिहास

भारतवर्ष का इतिहास	एक इतिहास प्रेमी	८.००

पश्चिमी यूरोप, प्रथम भाग	अनुवादक छविनाथ पाण्डेय एम० ए०, एल-एल० बी०	४.५०
गांधी हत्याकाण्ड	सम्पादक विहंगम	५.००
आजाद हिन्द फौज और उसके तीन अफ़सरों का मुकदमा	३५० पृष्ठों की ऐतिहासिक पुस्तक	२.००

संस्मरण

जेल के वे दिन	विजयालक्ष्मी पंडित	२.५०
कुछ स्मरणीय मुकदमे	श्री कैलाशनाथ काटजू	८.००
मेरे बचपन की कहानी	श्रीमती नयनतारा सहगल	६.००

साहित्य

वक्रोक्ति और अभिव्यंजना	रामनरेश वर्मा एम० ए०	४.५०
गीतिकाव्य	प्रो० रामखेलावन एम० ए०	५.५०
तुलसीदास और उनका युग	डॉ० राजपति दीक्षित	८.००
सामयिकी	शान्तिप्रिय द्विवेदी	४.००
धरातल	शान्तिप्रिय द्विवेदी	२.७५
कल्पलता	आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी	२.५०

कथा साहित्य

उलूकतन्त्र	बलदेवप्रसाद मिश्र	२.००
शव साधन	बलदेवप्रसाद मिश्र	२.५०
तूफान	सर्वश्रेष्ठ कहानी-लेखकों की कहानियों का संग्रह	२.५०

उपन्यास

पुनर्जीवन	महात्मा टालस्टाय	६.५०
कर्त्तव्याघात	देवनारायण द्विवेदी	४.५०
नूतन ब्रह्मचारी	स्वर्गीय पं० बालकृष्ण भट्ट	०.६३
देशभक्त और देशद्रोही		२.५०
बयालीस	प्रतापनारायण श्रीवास्तव	४.५०
गेंजी की कहानी	मुरासाकी शिकाबू	४.५०

आदर्श जीवन चरित्र

सरदार पृथ्वीसिंह	राहुल सांकृत्यायन	४.००

विज्ञान

विज्ञान की प्रगति	भगवतीप्रसाद श्रीवास्तव	३.५०
विज्ञान के चमत्कार	भगवतीप्रसाद श्रीवास्तव	२.७५
परमाणु शक्ति	भगवतीप्रसाद श्रीवास्तव	२.७५
घरेलू बिजली	भगवतीप्रसाद श्रीवास्तव	४.००
सरल विज्ञान	भगवतीप्रसाद श्रीवास्तव	१.०६

ज्ञानमण्डल लिमिटेड, वाराणसी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी-भवन के प्रमुख प्रकाशन

उपन्यास, कहानी

केलाबाड़ी (नित्यानन्द वात्स्यायन) १।)
सुबह के भूले (इलाचन्द्र जोशी) ५)
मुक्तिपथ " ५।)
मूक तपस्वी (कंचनलता सब्बरवाल) ४)
युग सन्देश (पृथ्वीनाथ शर्मा) ३।।।)
उदय-अस्त " २।)

नाटक तथा एकांकी संग्रह

पार्वती (उदयशंकर भट्ट) १।)
विदा (हरिकृष्ण प्रेमी) १।।।)
प्रकाशस्तम्भ (हरिकृष्ण प्रेमी) १।।)
रक्षाबन्धन " १।)
प्रतिशोध " १।।।)
शिवासाधना " २)
आहुति " १)
दशाश्वमेध (लक्ष्मीनारायण मिश्र) १।=)
वत्सराज " १।।)
प्रताप प्रतिज्ञा (जगन्नाथप्रसाद मिलिन्द) १।)
अपराधी (पृथ्वीनाथ शर्मा) ।।।)
साध " ।।।)
दुविधा " ।।।)
कर्मपथ (दयानाथ झा) २)
आदित्यसेनगुप्त (कंचनलता) १।।)
विक्रमादित्य (उदयशंकर भट्ट) १=)
सरस एकांकी नाटक (रामकुमार वर्मा) १।।)
आठ एकांकी नाटक " २)
एकांकी एकावली (रामचन्द्र शर्मा) २।।)

भारतीय इतिहास

भारतीय कृष्टि का क ख (जयचन्द्र विद्यालंकार) ७)
इतिहास प्रवेश " ११)
लघु इतिहास प्रवेश " ५)
भारतीय वाङ्मय के अमर रत्न " १)
पुरखों का चरित (तीन भाग) " २), १।।), १।।)

हमारा राजस्थान (पृथ्वीसिंह विद्यालंकार)

साहित्यिक ग्रन्थ

पूर्व भारतेन्दु नाटक साहित्य (सोमनाथ गुप्त)
भारत की भाषाएँ और भाषा सम्बन्धी समस्याएं (सुनीतिकुमार चटर्जी)
हिन्दी साहित्य का उद्भव और विकास (रामबहोरी शुक्ल तथा भगीरथ मिश्र)
हिंदी गद्य-साहित्य का इतिहास (जगन्नाथ प्रसाद शर्मा)
प्रेमचन्द : साहित्यिक विवेचन (नन्ददुलारे वाजपेयी)
हिन्दी कलाकार (इन्द्रनाथ मदान)
शरच्चन्द्र चिन्तन व कला (इन्द्रनाथ मदान)
जयशंकरप्रसाद चिन्तन व कला (इन्द्रनाथ मदान)
साहित्य मीमांसा (सूर्यकान्त)
साहित्य समालोचना (रामकुमार वर्मा)
हिन्दी नाटक साहित्य का इतिहास (सोमनाथ गुप्त)
तुलसी (रामबहोरी शुक्ल)
काव्य-प्रदीप (रामबहोरी शुक्ल)
आलोचना प्रवेश (प्यारेलाल शर्मा)
प्रबन्ध प्रभाकर (गुलाबराय)
सामयिक निबन्ध (इन्द्र एम० ए०)
कालेज निबन्ध (रोशनलाल सिंहल)
खड़ी बोली के गौरव ग्रन्थ (विश्वम्भर मानव)
पदमावत का ऐतिहासिक आधार (इन्द्रचन्द्र नारंग)
पदमावत-सार (इन्द्रचन्द्र नारंग)
गुञ्जन का अनुशीलन (बलदेवप्रसाद शुक्ल)
भूषण ग्रन्थावली सटीक (देवचन्द्र)
श्री गांधीचरितमानस (विद्याधर महाजन)

विविध

जेल में तीस बरस (त्रैलोक्यनाथ चक्रवर्ती)
शिल्पमाला (विद्याधरी जौहरी) २ भाग ६)
बदलते दृश्य (राजवल्लभ ओझा)
गृह विज्ञान (कंचनलता सब्बरवाल)

हिन्दी-भवन, जालन्धर और इलाहाबाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रयाग, साहित्य भवन लि०, १९५५, पृ० ११८, डि०, ५ रु०, उ० प्र०, (५५-५६)।

अवहट्ट भाषा का प्रथम विस्तृत अध्ययन एवं विद्यापति के 'कीर्तिलता' नामक ग्रन्थ की भाषा का विवेचन तथा मूल पाठ का संशोधन हिन्दी अनुवाद सहित।

—शिवसहाय पाठक (प्रो०) : **पद्मावत का काव्य सौन्दर्य :** बम्बई, हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय, १९५६, पृ० २५१, डि०, ५ रु०, उ० प्र०, (५६-५७)।

हिन्दी के अमरकाव्य 'पद्मावत' के काव्य-सौन्दर्य का विवेचन। लेखक द्वारा एम० ए० परीक्षा के लिए निबन्ध के रूप में लिखित।

—शीलकुमार : **मानस बालकाण्ड के स्रोत :** वाराणसी, प्रभात प्रकाशन, १९५७, पृ० १४२, डि०, ५ रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

बालकाण्ड की कथाओं के उद्‌गम स्रोतों का प्रामाणिक एवं स्पष्ट विवेचन। (कथा, संवाद, वर्णन, आध्यात्मिक सिद्धान्त, सुभाषित और सूक्तियाँ नामक पाँच शीर्षकों में)

—शु० शंकरराजू नायडू : **कम्बर और तुलसी अथवा रामायण में राम सीता पूर्वराग :** मद्रास, मद्रास यूनिवर्सिटी १९५९, रॉ०, पृ० १४३, ६ रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

कम्बर रामायण और तुलसीकृत रामायण में राम-सीता के पूर्व राम का गवेषणात्मक अध्ययन।

—हरवंशलाल शर्मा (डॉ०) : **सूर और उनका साहित्य :** अलीगढ़, भारत प्रकाशन मन्दिर, १९५४, पृ० ५२६, डि०, ७ रु०, उ० प्र०, (५५-५६)।

सूरदास एवं उनके साहित्य का विद्वत्तापूर्ण विवेचन। १९ पृष्ठों की भूमिका एवं ३८ पृष्ठों के परिशिष्ट में आवश्यक अन्य तथ्यों पर प्रकाश।

—हीरालाल दीक्षित (डॉ०) : **आचार्य केशवदास :** लखनऊ, लखनऊ विश्वविद्यालय, २०११ वि०, पृ० ४३१, रॉ०, १९ रु०, उ० प्र०, (५५-५६)।

लखनऊ विश्वविद्यालय की पी-एच० डी० की उपाधि के लिए स्वीकृत प्रबन्ध। केशवदास के जीवन, व्यक्तित्व तथा उनकी कृतियों का मूल्यांकन।

आलोचना मत साहित्य

—दीनदयाल गुप्त (डॉ०) : **अष्टछाप और वल्लभ सम्प्रदाय, प्रथम भाग :** प्रयाग, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, २००४ वि०, पृ ३९१, द्वितीय भाग, पृ० ३९३-९२३, रॉ०, दोनों भाग २० रु०, उ० प्र०, (५२) तथा हि० सा० स० मंगला०, (२००९ वि०)।

ब्रज का भौगोलिक वर्णन, अष्टछाप के समय की राजनीतिक और सामाजिक दशा का वृत्तान्त, विभिन्न सम्प्रदायों की विवेचना, कवियों का जीवन-चरित्र और उनकी रचनाओं की समीक्षा तथा वल्लभ सम्प्रदाय और उसके कवियों के दार्शनिक विचार आदि का गवेषणात्मक अध्ययन। प्रयाग विश्वविद्यालय द्वारा डी० लिट्० की उपाधि के लिए स्वीकृत प्रबन्ध।

—विजयेन्द्र स्नातक (डॉ०) : **राधावल्लभ सम्प्रदाय सिद्धान्त और साहित्य :** दिल्ली, नेशनल पब्लिशिंग हाउस (हि० अ० प० दिल्ली वि० वि०), २०१४ वि०, पृ० ६१२, रॉ०, १८ रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

सिद्धान्त और साहित्य नामक दो खण्डों में विभक्त करके राधावल्लभ सम्प्रदाय का सांगोपांग प्रतिपादन। दिल्ली विश्वविद्यालय द्वारा पी-एच० डी० की उपाधि के लिए स्वीकृत प्रबन्ध। परिशिष्ट में राधावल्लभीय वंश-परम्परा का वर्णन एवं विन्दु तथा नादवंशीय साहित्य-सूची।

—विमलकुमार जैन (डॉ०) : **सूफ मत और हिन्दी साहित्य :** दिल्ली, आत्माराम एण्ड सन्स (हि० अ० प० दिल्ली वि० वि०), १९५५, पृ० २७१, डि०, ८ रु०, उ० प्र०, (५५-५६)।

सूफी सिद्धान्त और हिन्दी साहित्य के पारस्परिक सम्बन्धों का विवेचन। दिल्ली विश्वविद्यालय द्वारा पी-एच० डी० की उपाधि के लिए स्वीकृत प्रबन्ध।

—रामपूजन तिवारी : **सूफीमत साधना और साहित्य :** बनारस, ज्ञानमण्डल लि०, २०१३ वि०, पृ० ५७५, ड० क्रा०, ११ रु०, उ० प्र०, (५६-५७)।

सूफीमत की साधनात्मक एवं साहित्यिक प्रवृत्तियों का अध्ययन।

आलोचना, काव्य सामान्य

—ओंप्रकाश (डॉ०) : **हिन्दी काव्य और उसका सौन्दर्य :**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिल्ली, भारती साहित्य मन्दिर, १९५७, पृ० २६८, डि०, ८ रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

वीरगाथाकाल से रीतिकाल तक की काव्य-वर्णन-सामग्री का अध्ययन। गत ६०० वर्षों की हिन्दी काव्यधारा पर प्रकाश।

—कमल कुलश्रेष्ठ (डॉ०) : **हिन्दी प्रेमाख्यानक काव्य :** अजमेर, चौधरी मानसिंह प्रकाशन, १९५३, पृ० ४१७, ड० क्रा०, ७·५० रु०, उ० प्र०, (५५)।

१५०० से १७५० ई० तक के हिन्दी प्रेमाख्यानक काव्य का गवेषणात्मक अध्ययन। प्रयाग विश्वविद्यालय द्वारा डी० फिल्० के लिए स्वीकृत प्रबन्ध।

—किरणकुमारी गुप्ता (डॉ०) : **हिन्दी काव्य में प्रकृति-चित्रण :** प्रयाग, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, २००६ वि०, पृ० ४८४, डि०, ९ रु०, उ० प्र०, (५१)।

प्रकृति-चित्रण के सिद्धान्तों का प्रथम खण्ड में और अपने युग के विशिष्ट काव्यकारों के प्रकृति के प्रति दृष्टिकोण का द्वितीय खण्ड में निर्देशन।

—केशरी नारायण शुक्ल : **आधुनिक काव्यधारा का सांस्कृतिक स्रोत :** काशी, सरस्वती मन्दिर, २००४ वि०, पृ० २३२, ड० क्रा०, ३·५० रु०, उ० प्र०, (५०)।

आधुनिक हिन्दी साहित्य के मूल में वर्तमान एवं उसे प्रभावित और संचालित करने वाली प्रवृत्तियों का अध्ययन।

—टीकमसिंह तोमर (डॉ०) : **हिन्दी वीर काव्य :** इलाहाबाद, हिन्दुस्तानी एकेडेमी, १९५४, पृ० ४१२, रॉ०, १२ रु०, उ० प्र०, (५५)।

१६०० से १८०० ई० तक के हिन्दी वीर-काव्यों का वैज्ञानिक एवं सुव्यवस्थित अध्ययन। इलाहाबाद विश्वविद्यालय से डी० फिल्० की उपाधि के लिए स्वीकृत प्रबन्ध।

—त्रिभुवनसिंह : **आधुनिक हिन्दी कविता की स्वच्छन्द धारा :** वाराणसी, हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, १९५६, पृ० २२३, ड० क्रा०, ४ रु०, उ० प्र०, (५६-५७)।

हिन्दी कविता की स्वच्छन्द धारा का विवेचन तथा छायावाद के सम्बन्ध में अनेक भ्रान्त धारणाओं का निराकरण।

—परशुराम चतुर्वेदी : **भारतीय प्रेमाख्यान की परम्परा :** दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, १९५६, पृ० १६७, डि०, ३·५० रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

भारतीय प्रेमाख्यानों के वैविध्य एवं विकास के सम्बन्ध में संक्षिप्त सारगर्भित विवेचन।

—प्रतिपालसिंह (डॉ०) : **बीसवीं शताब्दी के महाकाव्य :** दिल्ली, ओरियंटल बुक डिपो, पृ० ३५०, डि०, ८·५० रु०, उ० प्र०, (५६)।

आगरा विश्वविद्यालय द्वारा पी·एच० डी० की उपाधि के लिए स्वीकृत प्रबन्ध।

—भगीरथ मिश्र (डॉ०) : **हिन्दी रीति साहित्य :** दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, १९५६, पृ० १७१, डि०, ४ रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

हिन्दी-रीति-साहित्य के विकास और उसकी विभिन्न प्रवृत्तियों का प्रामाणिक विवेचन।

—रघुवंश (डॉ०) : **प्रकृति और हिन्दी काव्य :** प्रयाग, साहित्य भवन लि०, २००५ वि०, पृ० ५०२, ड० क्रा०, ६·५० रु०, उ० प्र०, (५२-५३)।

प्रयाग विश्वविद्यालय की डी० फिल्० की उपाधि के लिए स्वीकृत प्रबन्ध। मध्ययुगीन हिन्दी-काव्य का अध्ययन।

—रवीन्द्रसहाय वर्मा (डॉ०) : **हिन्दी काव्य पर आंग्ल प्रभाव :** कानपुर, पद्मजा प्रकाशन, २०११ वि०, पृ० २८८, डि०, ६ रु०, उ० प्र०, (५५)।

हिन्दी कविता पर आंग्ल प्रभाव का अध्ययन। प्रथम भाग में विषय की प्रारम्भिक पृष्ठभूमि और द्वितीय भाग में आंग्ल प्रभाव का विवेचन। प्रयाग विश्वविद्यालय द्वारा डी० फिल्० के लिए स्वीकृत प्रबन्ध।

—राजेश्वरप्रसाद चतुर्वेदी, : **रीतिकालीन कविता एवं शृंगार रस का विवेचन :** आगरा, सरस्वती पुस्तक सदन, २०१ वि०, पृ० ५३५, ड० क्रा०, ६·५० रु०, उ० प्र०, (५५)।

१६०० से १८५० ई० तक की रीतिकालीन कविता एवं शृंगार रस का विवेचन। आगरा विश्वविद्यालय से पी-एच० डी० की उपाधि के लिए स्वीकृत प्रबन्ध।

—राममूर्ति त्रिपाठी : **व्यंजना और नवीन कविता :** वाराणसी, नागरी प्रचारिणी सभा, २०१४ वि०, पृ० २१५, डि०, ५ रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

नवीन कविता के अध्ययन में प्राचीन आचार्यों की विवेचन-पद्धति की उपयोग-विधि। व्यंजन-वृत्ति का स्वरूप, प्रसार एवं उसके व्यवहार पक्ष का प्रतिपादन।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

—रामेश्वरलाल खंडेलवाल, (भूमिका विजयेन्द्र स्नातक), कविता में **प्रकृति-चित्रण :** दिल्ली, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, १९५४, पृ० १९९, ड० क्रा०, ४ रु०, उ० प्र०, (५५-५६)।

सिद्धान्त-समीक्षा एवं विवेचन, सौन्दर्य-दृष्टि एवं शास्त्र-दृष्टि के समन्वयात्मक भाव से विषय का प्रतिपादन। विजयेन्द्रजी की १९ पृष्ठों की सारगर्भित भूमिका द्रष्टव्य।

—विजयशंकर मल्ल : **हिन्दी काव्य में प्रगतिवाद :** बनारस, सरस्वती मन्दिर, १९५०, पृ० १८८, ड० क्रा०, २.५० रु०, उ० प्र०, (५०)।

प्रगतिवाद के सैद्धान्तिक और व्यावहारिक पक्ष का निरूपण।

—शकुन्तला शर्मा (कु०) : **आधुनिक काव्य में नारी भावना :** बनारस, सरस्वती मन्दिर (स० संसद् की ओर से), १९५२, पृ० २४०, ड० क्रा०, ४ रु०, उ० प्र०, (५२)।

आधुनिक काव्य में नारी-भावना का खोजपूर्ण विवेचन।

—शम्भूनाथ सिंह (डॉ०) : **हिन्दी महाकाव्य का स्वरूप-विकास :** वाराणसी, हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, १९५६, पृ० ७१०, डि०, १२ रु०, उ० प्र०, (५६-५७)।

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से पी-एच० डी० की उपाधि के लिए स्वीकृत प्रबन्ध।

—शम्भूनाथ सिंह : **आधुनिक हिन्दी काव्य में निराशावाद :** उ० प्र०, (५५-५६)।

—शैलकुमारी (डॉ०) : **आधुनिक काव्य में नारी भावना :** इलाहाबाद, हिन्दुस्तानी एकेडेमी, १९५१, पृ० २६४, रॉ०, ३ रु०, हि० सा० स० सेक०, (२००८ वि०)।

आधुनिक काव्य में नारी-भावना का विश्लेषण एवं गवेषणात्मक अध्ययन। प्रयाग विश्वविद्यालय द्वारा डी० फिल्० के लिए स्वीकृत प्रबन्ध।

—सत्यनारायण पाण्डेय : **कृष्णकाव्य की परम्परा :** लखनऊ, हिन्दुस्तानी बुक डिपो, २००९ वि०, पृ० २८३, ड० क्रा०, ५ रु०, उ० प्र०, (५२-५३)।

वैदिक काल से आधुनिक काल तक के साहित्य में भगवान् कृष्ण के विविध स्वरूपों के कार्यक्रम का बिवेचनात्मक दर्शन।

—सरजूप्रसाद अग्रवाल : **अकबरी दरबार के हिन्दी कवि :** लखनऊ, लखनऊ विश्वविद्यालय, २००७ वि०, पृ० ४५६, रॉ०, ९ रु०, उ० प्र०, (५२)।

अकबर के दरबार से सम्बन्ध रखने वाले कतिपय हिन्दी कवियों का विस्तृत अध्ययन। लखनऊ विश्वविद्यालय द्वारा पी-एच० डी० के लिए स्वीकृत प्रबन्ध।

—सरला शुक्ला (श्रीमती) : **हिन्दी साहित्य में भ्रमर गीत की परम्परा :** लखनऊ, लखनऊ विश्वविद्यालय, १९५३, पृ० १७५, रॉ०, ४ रु०, उ० प्र०, (५५)।

हिन्दी-साहित्य में भ्रमरगीत परम्परा के ऐतिहासिक, दार्शनिक एवं कलात्मक पक्षों का विशद विवेचन।

—सरला शुक्ला (श्रीमती) : **हिन्दी सूफी कवि और काव्य :** लखनऊ, लखनऊ विश्वविद्यालय, २०१३ वि०, पृ० ६२०, रॉ०, १२ रु०, उ० प्र०, (५६-५७)।

जायसी के परवर्ती हिन्दी सूफी कवियों और काव्यों का गवेषणात्मक अध्ययन। लखनऊ विश्वविद्यालय से पी-एच० डी० के लिए स्वीकृत प्रबन्ध।

—सुधीन्द्र (डॉ०) : **हिन्दी कविता में युगान्तर :** दिल्ली, आत्माराम एण्ड सन्स, १९५०, पृ० ५२२, डि०, ८ रु०, उ० प्र०, (५२)।

नवीन हिन्दी कविता के विकास का अध्ययन।

—सूर्यबलीसिंह : **हिन्दी की प्राचीन और नवीन काव्यधारा :** बनारस, नन्दकिशोर एण्ड ब्रदर्स, १९९९ वि०, पृ० १९५, ड० क्रा०, १ रु०, वि० प्र०, (५२-५३)।

हिन्दी की पुरानी और नई शैली की कविताओं की तुलनात्मक समीक्षा।

—हरिकान्त श्रीवास्तव (डॉ०) : **भारतीय प्रेमाख्यान काव्य :** वाराणसी, हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, १९५५, पृ० ४८३, डि०, १० रु०, उ० प्र०, (५५-५६)।

सं० १००० से १९१२ तक भारतीय प्रेमाख्यान-काव्य का अध्ययन। पी-एच० डी० की उपाधि के लिए स्वीकृत प्रबन्ध।

आलोचना, नाटक

—दशरथ ओझा (डॉ०), (भूमिका हजारीप्रसाद द्विवेदी) : **हिन्दी नाटक उद्‌भव और विकास :** दिल्ली, राजपाल एण्ड सन्स, १९५४, पृ० ५५६, ड० क्रा०, ९ रु०, उ० प्र०, (५५) तथा बि० रा० प०, (५७-५८)।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे कुछ अनमोल पुष्प

आधुनिक निबन्ध

श्री रामप्रसाद किचलू तथा श्री केशनी प्रसाद चौरसिया द्वारा लिखित १२५ वर्णनात्मक, विचारोत्तेजक, व्याख्यात्मक एवं भावनासिक्त निबन्धों का संग्रह जो पूरे भारतवर्ष में विद्यार्थियों के अध्ययन में एक आवश्यक तथा बेजोड़ पुस्तक मानी जाती है। चौथा संस्करण, १९५८ रु० ३·५०

इन्द्रधनुष

प्रसिद्ध एकांकीकार डॉ॰ रामकुमार वर्मा के सात नये सांस्कृतिक एकांकियों का संग्रह। रु० ३·००

अनजान रास्ता

भारतीय पंचवर्षीय योजना पर आधारित एक सम्पूर्ण सामाजिक नाटक। उत्तर प्रदेश सरकार ने इसको बहुत सराहा है। लेखक श्री 'आनन्द'। जुलाई १९५८ रु० १·५०

समाज से दूर

उपन्यास की दुनिया में एक नया मोड़—'समाज से दूर' हमारी एक अनुपम नई भेंट है। ले० श्री 'आनन्द'। जुलाई १९५८ रु० ३·००

हिन्दी ग्रामर (इंगलिश-हिन्दी)

अहिन्दी-भाषियों के लिए हिन्दी सीखने में एक अध्यापक का काम करेगी। लेखक श्री मोतीलाल चतुर्वेदी। १९५८ रु० १·७५

हिन्दी आलेखन

श्री रामप्रसाद किचलू द्वारा लिखित हिन्दी में 'ड्राफ्टिंग' की शिक्षा देने वाला अपूर्व और उपयोगी प्रकाशन। रु० १·५०

एकमात्र अधिकृत प्रकाशक

राजकिशोर पब्लिकेशन्स

१८ बी, एडमान्स्टन रोड, इलाहाबाद

हिन्दी नाटकों की दीर्घकालीन परम्परा और उसकी विशाल पृष्ठभूमि का अध्ययन। दिल्ली विश्वविद्यालय द्वारा पी-एच० डी० की उपाधि के लिए स्वीकृत प्रबन्ध।

—देवदत्त शास्त्री (सम्पा०) : **अभिनय दर्पण** : इलाहाबाद, जननी कार्यालय, १९५६, पृ० १३८, ड० क्रा०, २.५० रु०, उ० प्र०, (५६-५७)।

आचार्य नन्दिकेश्वर लिखित अभिनय-कला सम्बन्धी विख्यात संस्कृत ग्रन्थ 'अभिनय दर्पण' का आलोचनात्मक परिचय एवं उसकी स्वतन्त्र व्याख्या।

—श्रीकृष्णदास : **हमारी नाट्य परम्परा** : प्रयाग, साहित्यकार संसद, (वितरक राजकमल प्रकाशन), १९५६, पृ० ७३७, ड० क्रा०, (सचित्र), १० रु०, उ० प्र०, (५६-५७)।

भारतीय नाट्यकला की विविधता में व्याप्त तत्त्वगत एकता का परिचायक प्रामाणिक ग्रन्थ। लेखक की इक्कीस पृष्ठों की विस्तृत भूमिका तथा परिशिष्ट में हिन्दी-नाट्य-साहित्य के २३० नाटककारों के नाटकों की सूची द्रष्टव्य।

—हरिश्चन्द्र खन्ना : **रेडियो नाटक** : दिल्ली, आत्माराम एण्ड सन्स, १९५५, पृ० २८१, डि०, ६ रु०, उ० प्र०, (५५-५६)।

रेडियो नाट्य के सिद्धान्त, इतिहास तथा विविध रूपों की रचना का विवेचन।

आलोचना, कथा-साहित्य

—गंगाप्रसाद पाण्डेय : **हिन्दी कथा साहित्य** : इलाहाबाद, भारती भण्डार, २००८ वि०, पृ० २३०, ड० क्रा०, ३ रु०, उ० प्र०, (५२)।

हिन्दी-कथा-साहित्य तथा उसके विशिष्ट कथाकारों की प्रतिभा-प्रवृत्तियों तथा भाव-धाराओं का अध्ययन।

—त्रिभुवन सिंह : **हिन्दी उपन्यास और यथार्थवाद** : वाराणसी, हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, २०१२ वि०, पृ० २५०, डि०, ५ रु०, उ० प्र०, (५५-५६)।

यथार्थवाद के स्वरूप और इतिहास का विवेचन तथा हिन्दी-उपन्यासों में पाई जाने वाली यथार्थवाद की विभिन्न प्रवृत्तियों का विश्लेषण।

—देवराज उपाध्याय (डॉ०) : **आधुनिक हिन्दी कथा साहित्य**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और मनोविज्ञान : प्रयाग, साहित्य भवन लि०, १९५६, पृ० ३५२, डि०, १० रु०, उ० प्र०, (५६-५७)।

राजपूताना विश्वविद्यालय द्वारा डाक्टरेट के लिए स्वीकृत प्रबन्ध। मनोवैज्ञानिक उपपत्तियों के दृष्टिकोण से प्रमुख कथाकारों की कृतियों का अध्ययन।

—रामदरश मिश्र : **ऐतिहासिक उपन्यासकार वृन्दावनलाल वर्मा** : पटना, अन्तर्राष्ट्रीय प्रकाशन मण्डल, १९५५, पृ० १३५, ड० क्रा०, २ रु०, उ० प्र०, (५५-५६)।

वर्माजी के ऐतिहासिक उपन्यासों की समीक्षा।

—रामस्वरूप चतुर्वेदी : **शरद् के नारी पात्र** : काशी, भारतीय ज्ञानपीठ, १९५५, पृ० ३५२, ड० क्रा०, ४ रु०, उ० प्र०, (५६-५७)।

शरद् के नारी-पात्रों का उनकी रचनाओं की समयानुक्रमणिका के आधार पर आलोचनात्मक अध्ययन।

—लक्ष्मीनारायण लाल (डॉ०) : **हिन्दी कहानियों की शिल्पविधि का विकास** : प्रयाग, साहित्य भवन लि०, १९५३, पृ० ३६२, डि०, १० रु०, उ० प्र०, (५३-५४)।

हिन्दी-कहानियों की शिल्पविधि के वैज्ञानिक विकास-क्रम और उनकी प्रवृत्तियों का विवेचन। प्रयाग विश्वविद्यालय की डी० फिल्० की उपाधि के लिए स्वीकृत प्रबन्ध।

हिन्दी निबन्ध, सामान्य

—गुलाबराय : **अध्ययन और आस्वाद** : दिल्ली, आत्माराम एण्ड सन्स, १९५७, पृ० ४४३, ड० क्रा०, ७·५० रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

चालीस साहित्यिक निबन्धों का संकलन।

—कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर' : **माटी हो गई सोना** : काशी, भारतीय ज्ञानपीठ, १९५७, पृ० १२३, ड० क्रा०, २ रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

बल और बलिदान की जीवन-चेतना देने वाले १७ निबन्ध।

—कृष्णदेव प्रसाद गौड़ : **धन्यवाद** : वाराणसी, हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, २०१३ वि०, पृ० ११४, ड० क्रा०, १·७५ रु०, उ० प्र०, (५५-५६)।

आत्मव्यंजक २६ निबन्धों का संकलन, व्यंग के पुट सहित।

SOME USEFUL BOOKS

Principles of Literary Criticism.
by Lascelles Abercrombie, Rs. 3.75.

Economic Theory and Underdeveloped Regions.
by Gunnar Myrdal, Rs. 4.50.

The New Economy of China.
by Dr. Gyanchand, Rs. 16.00.

Our Economic Problem.
by Wadia & Merchant, Rs. 9.00.

The Monetary & Fiscal Policy of India.
by K. C. Chacko, Rs. 15.00.

Mercantile Law.
by James Menezes, Rs. 12.50.

Business Organisation.
by Satyanarayana and Others, Rs. 12.50.

Statistics.
by Y. D. Kesker, Rs. 10.50.

Introduction to Economics.
by C. N. Vakil & H. N. Pathak, Rs. 5.00.

Economic Analysis.
by B. S. Bhanage, Rs. 7.00.

Modern Economic Development of Great Powers.
by D. S. Savkar, Rs. 8.00.

Salesmanship, Sales Management & Advertising.
by Satyanarayana, Rs. 7.50.

Planning for an Expanding Economy.
by C. N. Vakil and P. R. Brahmanand, Rs. 8.00.

Woman in Modern India.
by Neera Desai, Rs. 10.00.

VORA & CO., PUBLISHERS PRIVATE LTD.
3, Round Building, Bombay 2.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

—कृष्णदेव प्रसाद गौड़ : **साहित्य प्रवाह** : वाराणसी, कल्याणदास एण्ड ब्रदर्स, १९५६, पृ० २६८, डि०, ६ रु०, उ० प्र०, (५६-५७)।

लेखक के आलोचनात्मक लेखों का संग्रह।

—ज्योत्स्ना द्विवेदी : **हिन्दी किशोर साहित्य** : बनारस, नन्दकिशोर एण्ड ब्रदर्स, १९५२, पृ० २१४, ड० क्रा०, २ रु०, उ० प्र०, (५२-५३)।

मनोविज्ञान, शिक्षाशास्त्र तथा साहित्य के सिद्धान्तों के आधार पर हिन्दी किशोर साहित्य का एक अध्ययन। अन्त में किशोर साहित्य की पुस्तकों और पत्रिकाओं की एक लघु सूची।

—ठाकुर प्रसाद सिंह : **चौथी पीढ़ी** : लखनऊ, राष्ट्रीय प्रकाशन मन्दिर, १९५७, पृ० १८६, ड० क्रा०, ३ रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

१९ साहित्यिक निबन्धों का संकलन।

—नन्ददुलारे बाजपेयी : **आधुनिक हिन्दी साहित्य** : इलाहाबाद, भारती भण्डार, २०१३ वि०, पृ० ४७१, डि०, ७ रु०, उ० प्र०, (५२)।

हिन्दी साहित्य की कतिपय मुख्य कृतियों और प्रवृत्तियों के विवेचक समीक्षात्मक निबन्धों का संकलन।

—पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी : **कुछ** : प्रयाग, इंडियन प्रेस, पृ० २१९, ड० क्रा०, १.५० रु०, उ० प्र०, (५०)।

कुछ साहित्यिक निबन्धों का संग्रह।

—मन्मथनाथ गुप्त : **साहित्य कला समीक्षा** : दिल्ली, साहित्य प्रकाशन, १९५४, पृ० २७६, डि०, ६ रु०, उ० प्र०, (५५-५६)।

लेखक के २८ आलोचनात्मक लेखों का संग्रह।

—रामचन्द्र तिवारी (डॉ०) : **हिन्दी का गद्य साहित्य** : गोरखपुर, विश्वविद्यालय प्रकाशन, १९५५, पृ० ३१९, डि०, ६ रु०, उ० प्र०, (५६)।

हिन्दी के गद्य-साहित्य से सम्बन्धित सम्पूर्ण सामग्री का प्रस्तुतीकरण।

—रामवृक्ष बेनीपुरी : **माटी की मूरतें** : पटना, बेनीपुरी प्रकाशन, १९४८, पृ० १३८, ड० क्रा०, १.५० रु०, के० स० प्र० वि० पु० प्रति०।

ग्राम-जीवन के नौ सशक्त पात्रों के शब्द-चित्र।

—रावी : **क्या मैं अन्दर आ सकता हूँ** : काशी, भारतीय ज्ञानपीठ, १९५६, पृ० १६०, ड० क्रा०, २.५० रु०, उ० प्र०, (५६-५७)।

वैयक्तिक शैली के शृङ्खलाबद्ध २३ लेखों की माला।

—ललिताप्रसाद सुकुल : **इनसे** : वाराणसी, हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, १९५७, पृ० १०४, डि०, २.५० रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

लेखक के १८ निबन्धों का संग्रह।

—ललिताप्रसाद सुकुल : **काव्य चर्चा** : कलकत्ता, साहित्य सौंध, २००८ वि०, पृ० १९६, ड० क्रा०, २.५० रु०, उ० प्र०, (५२-५३)।

११ साहित्यिक निबन्धों का संकलन।

—विद्यानिवास मिश्र : **कदम की फूली डाल** : इलाहाबाद, न्यू लिटरेचर, पृ० १८३, ड० क्रा०, ३ रु०, उ० प्र०, (५५-५६)।

तीन खण्डों में २२ निबन्धों का संकलन।

—विद्यानिवास मिश्र : **चितवन की छाँह** : इलाहाबाद, सरस्वती प्रेस, १९५३, पृ० १४०, ड० क्रा०, २.५० रु०, उ० प्र०, (५४)।

१८ साहित्यिक निबन्धों का संकलन।

—विद्यानिवास मिश्र : **तुम चन्दन हम पानी** : इलाहाबाद, भारती भण्डार, २०१३ वि०, पृ० १७७, ड० क्रा०, ३ रु०, उ० प्र०, (५६-५७)।

भारतीय संस्कृति की मूल मान्यताओं, भारतीय संस्कृति के आराध्यों एवं भारतीय मांगलिक प्रतीकों पर लिखित चौबीस व्यक्तिगत निबन्धों का संकलन।

—विनयमोहन शर्मा : **दृष्टिकोण** : बनारस, नन्दकिशोर एण्ड ब्रदर्स, १९५०, पृ० २०२, डि०, ४ रु०, उ० प्र०, (५२)।

आलोचनात्मक ३२ निबन्धों का संकलन।

—शम्भूप्रसाद बहुगुणा : **विराट् हृदय** : लखनऊ, अलकनन्दा मन्दाकिनी प्रकाशन, पृ० २५२, ड० क्रा०, ४ रु०, उ० प्र०, (५२)।

साहित्यिक आलोचनात्मक निबन्धों का संकलन।

—शान्तिप्रिय द्विवेदी : **आधान** : वाराणसी, हिन्दी प्रचारक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस मास के नये प्रकाशन

डॉ० रांगेय राघव द्वारा अनूदित

हिन्दी शेक्सपियर सीरीज़ के अन्तर्गत तीन और नये नाटक

निष्फल प्रेम (LOVE'S LABOUR'S LOST)

भूल भुलैयाँ (COMEDY OF ERRORS)

परिवर्त्तन (TAMING OF THE SHREW)

प्रत्येक पुस्तक का मूल्य केवल दो रुपये

★ ★ ★ ★ ★ ★

ज्ञान-विज्ञान सीरीज़ के अंतर्गत नई पुस्तकें

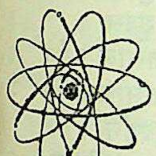

एटम की कहानी

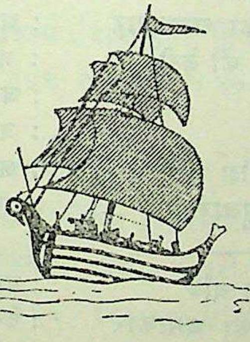

टेलीफोन की कहानी

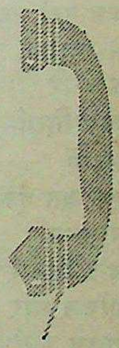

कोलम्बस की कहानी

वायुयान की कहानी

प्रत्येक पुस्तक का मूल्य दो रुपये

राजपाल एण्ड संज़ कश्मीरीगेट, दिल्ली-६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रत्येक पुस्तकालय के लिए अनुपम प्रकाशन

इसी मास के प्रकाशन

उपन्यास

सूखे पेड़, सब्ज़ पत्ते : गुलशन नन्दा ५)

आँचल में दूध आँखों में पानी : यादवेन्द्र शर्मा चन्द्र ५)

ग़ज़ाला : शौकत थानवी ३।।।)

कहानियाँ

उर्दू की सर्वश्रेष्ठ ग़ज़लें : सं० नूरनबी अब्बासी २।।)

विज्ञान

दो गज़ ज़मीन : टालस्टाय ३)

आगामी मास के आकर्षण

जीवन-दर्शन

आपका व्यक्तित्व : आनन्द कुमार ४।।)

उपन्यास

तन के उजले मन के काले : जमनादास 'अख्तर' ४)

नसीम : शौकत थानवी ३।।।)

काव्य

चन्द्रलोक (सचित्र) : बसन्तकुमार चटर्जी २।।)

अन्य महत्त्वपूर्ण प्रकाशन

काव्य—

दीवाने ग़ालिब (उर्दू काव्य) : सं० मुग़नी अमरोहवी नूरनबी अब्बासी ६)

राजनीतिक व ऐतिहासिक—

मेवाड़ : टॉड ३।।।)

बाचा खान : फ़ारिग बुख़ारी ६)

नेहरू विश्व-शान्ति की खोज में : ओमप्रकाश गुप्ता ४।।)

आध्यात्मिक—

जीना सीखो : देसराज व गन्धर्व ३)

नाटक—

जब पर्दा उठा : हास्य एकांकी : प्रकाश पण्डित ४।)

मेरे नाटक : रवीन्द्रनाथ टैगोर ३।।)

डाकघर : रवीन्द्रनाथ टैगोर ।।=)

कहानियाँ—

उड़ानें : कृष्णचन्द्र ३।।)

एक खत एक खुशबू : कृष्णचन्द्र ३।)

सीमान्त : रवीन्द्रनाथ टैगोर २।।)

चाँद सितारे : टैगोर २।।)

आँचल और आँसू : शिक्षा रानी निगम ३।।)

पागल : ख़लील जिब्रान १।।)

लायसेंस : मिन्टो ३।।)

उपन्यास—

एक नदी दो पाट : गुलशन नन्दा ४।)

पत्थर के होंठ : गुलशन नन्दा ३।।।)

बादल छँट गए : कृष्णचन्द्र ३)

ललिताङ्गी : यादवचन्द्र जैन ३।।।)

इन्शा अल्लाह : शौकत थानवी ३)

कुतिया : शौकत थानवी ४।)

कार्टून : शौकत थानवी ४।)

चार सौ बीस : शौकत थानवी ३।)

साँच को आँच : शौकत थानवी ३।।।)

मिट्टी का कलंक : यादवेन्द्र शर्मा चन्द्र ३)

तूलिका : सोमर सेट मॉम ५।)

धरती की बेटी : कमल शुक्ल ३।।)

राख की परतें : कमल शुक्ल ३।)

एक ही पतवार : शिवव्रतलाल वर्मन ३।)

शाही लकड़हारा : शिवव्रतलाल वर्मन ३।।)

प्रेम पुजारिन : पं० सुदर्शन २।)

कौन किसी का ? : रवीन्द्रनाथ टैगोर २।)

समाज का अत्याचार : शरत् चन्द्र चटर्जी २।।।)

काश्मीर की बेटी : जमनादास 'अख्तर' २।।)

आग : जमनादास 'अख्तर' २।।)

आँसू : जमनादास 'अख्तर' ३।)

बुर्दा फरोश : जमनादास 'अख्तर' २।)

शैतान पुजारी : अनु० तीर्थराम २।।)

विज्ञान—

वैज्ञानिक चाँद : बसन्तकुमार चटर्जी १।।)

विज्ञान का चमत्कार : देसराज व गन्धर्व ।।=)

विज्ञान के मनोरंजन : श्री शरण ।।=)

कालिदास साहित्य—(अनु० श्री शरण)

रघुवंश, मेघदूत, विक्रमोर्वशी, कुमारसम्भव, अभिज्ञान शाकुन्तल, मालविकाग्निमित्र, नलोदय

मूल्य प्रत्येक का १।)

व्यापारियों और लायब्रेरियों को विशेष सुविधा, बड़े सूचीपत्र और विवरण के लिए लिखिये।

नारायण दत्त सहगल एण्ड सन्ज़, दरीबा कलां, देहली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तकालय, १९५७, पृ० १५२, डि० क्रा०, २·५० रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

लेखक के १४ साहित्यिक निबन्धों का संकलन।

—शान्तिप्रिय द्विवेदी : **धरातल** : काशी, ज्ञान मण्डल पुस्तक भण्डार लि०, २००५ वि०, पृ० १४७, डि० क्रा०, २·७५ रु०, उ० प्र०, (५१-५२)।

उद्योग, संस्कृति और कला का स्वाभाविक समन्वयात्मक निबन्ध-संग्रह।

—शान्तिप्रिय द्विवेदी : **पथ चिह्न** : काशी, भारतीय ज्ञानपीठ, पृ० १११, डि० क्रा०, २ रु०, उ० प्र०, (५०)।

लेखक द्वारा अपनी स्वर्गीया बहन को भारतमाता की आत्मा के रूप में स्मरण करके अपने युग और जीवन सम्बन्धी लिखित ६ निबन्धों का संकलन।

—शान्तिप्रिय द्विवेदी : **पद्मनाभिका** : वाराणसी, कल्याणदास एण्ड ब्रदर्स, २०१३ वि०, पृ० १५४, डि० क्रा०, ६ रु०, उ० प्र०।

लेखक के ९ निबन्धों का संग्रह।

—शान्तिप्रिय द्विवेदी : **प्रतिष्ठान** : इलाहाबाद, इण्डियन प्रेस लि०, १९५३, पृ० २२५, डि० क्रा०, ३ रु०, वि० प्र०, (५४-५५)।

जीवन और साहित्य के संस्थापक व्यक्तिगत, समीक्षात्मक निबन्ध एवं संस्मरण।

—शान्तिप्रिय द्विवेदी : **साकल्य** : वाराणसी, हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, १९५५, पृ० २५६, डि० क्रा०, ४ रु०, उ० प्र०, (५५-५६)।

लेखक के १९ विविध निबन्धों का संग्रह।

—शितिकण्ठ मिश्र (डॉ०), (भूमिका हजारीप्रसाद द्विवेदी) : **खड़ी बोली का आन्दोलन** : काशी, नागरी प्रचारिणी सभा, २०१३ वि०, पृ० ३६६, डि०, ७ रु०, उ० प्र०, (५६-५७)।

खड़ी बोली की उत्पत्ति से आधुनिक विविध प्रवृत्तियों तक के विकास का विवेचन। काशी विश्वविद्यालय द्वारा पी-एच० डी० की उपाधि के लिए स्वीकृत प्रबन्ध।

—शिवदानसिंह चौहान : **साहित्यानुशीलन** : दिल्ली, आत्माराम एण्ड सन्स, १९५५, पृ० २९०, डि०, ६ रु०, उ० प्र०, (५५-५६)।

साहित्य सम्बन्धी १७ और मूल्यांकन सम्बन्धी १७ निबन्धों का संग्रह।

—सद्गुरुशरण अवस्थी : **बुद्धितरंग** : कानपुर, साहित्य निकेतन, १९५०, पृ० १७८, डि० क्रा०, २·२५ रु०, उ० प्र०, (५२)।

लेखक के उच्चकोटि के विचार-प्रवर्तक कुछ साहित्यिक निबन्धों का संकलन।

—सुधाकर पाण्डेय : **सदा सुहागिन रूठ गई** : बनारस, हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, १९५४, पृ० १४३, डि०, ३ रु०, उ० प्र०।

लेखक के आत्मव्यंजक १८ निबन्धों का संकलन।

पत्र साहित्य

—बैजनाथ सिंह 'विनोद' : **द्विवेदी पत्रावली** : काशी, भारतीय ज्ञानपीठ, १९५४, पृ० २२६, डि० क्रा०, (सचित्र), २·५० रु०, उ० प्र०, (५५)।

द्विवेदीजी के १८४ पत्रों का संकलन।

हास्य-व्यंग्य साहित्य

—अनन्तगोपाल शेवड़े : **तीसरी भूख** : इलाहाबाद, नीलाभ प्रकाशन, १९५५, पृ० १३०, डि० क्रा०, २·५० रु०, उ० प्र०, (५६-५७)।

१२ ललित रोचक हास्य-व्यंग भरे निबन्धों का संग्रह।

—कमला चौधरी (श्रीमती) : **आपन मरन जगत कै हांसी** : मेरठ, साहित्य सेवा सदन, १९५४, पृ० ११२, डि०, ३ रु०, वि० प्र०, (५४-५५)।

९ अवधी, १० हिन्दी और २ उर्दू की (कुल २१) हास्य-व्यंगात्मक कविताएँ।

—कान्तानाथ पांडेय 'चोंच' : **ठाकुर ठेंगासिंह** : बनारस, पुस्तक सदन, २०१४ वि०, पृ० १७६, डि० क्रा०, ३ रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

हास्य-रस का लघु उपन्यास।

—कृष्णदेवप्रसाद गौड़ : **बिजली** : वाराणसी, कल्याणदास एण्ड ब्रदर्स, २०१३ वि०, पृ० १३५, डि० क्रा०, २.५० रु०, उ० प्र०।

हास्य-रस की ८६ रचनाएँ।

—कृष्णदेवप्रसाद गौड़ : **हुक्का पानी** : वाराणसी, पराग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशन, १९५७, पृ० १४८, ड० क्रा०, ३ रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

हास्य-व्यंग्य-प्रधान ३० आत्मव्यंजक निबन्धों का संग्रह।

—गोपालप्रसाद व्यास : **मैंने कहा** : दिल्ली, आत्माराम एण्ड सन्स, १९५१, पृ० १२३, डि०, (सचित्र), ३ रु०, उ० प्र०।

शिष्ट, सामाजिक, हास्य एवं व्यंग्य-विनोदों से परिपूर्ण १५ मौलिक तथा सचित्र निबन्धों का संग्रह।

—चन्द्रभूषण त्रिवेदी (रमई काका) : **फुहार** : लखनऊ, ग्राम साहित्य मन्दिर, १९५६, पृ० ९४, ड० क्रा०, १.२५ रु०, उ० प्र०, (५६-५७)।

हास्य-रस की कविताओं का संग्रह।

—बरसानेलाल चतुर्वेदी : **हाथी के पंख** : मथुरा, झिलमिल प्रकाशन, २०१३ वि०, पृ० १००, ड० क्रा०, १.५० रु०, उ० प्र०, (५६-५७)।

विनोदपूर्ण १८ लेखों का संग्रह।

—मोहनलाल गुप्त : **बनारसी रईस** : बनारस, चौधरी एण्ड सन्स, १९५६, पृ० १२५, ड० क्रा०, २.२५ रु०, उ० प्र०, (५६-५७)।

हास्य के व्यक्तिव्यंजक २१ निबन्धों का संकलन।

—मोहनलाल गुप्त : **राम झरोखा** : बनारस, मधु प्रकाशन, पृ० १६०, ड० क्रा०, उ० प्र०, (५५)।

हास्य-रस की कविताएँ।

—वासुदेव गोस्वामी : **बुद्धि के ठेकेदार** : रीवां, गोस्वामी पुस्तक सदन, १९५५, पृ० ८२, ड० क्रा०, १.२५ रु०, उ० प्र०, (५६-५७) तथा विं० प्र०, (५५-५६)।

परिष्कृत हास्य-रस के १४ लेख।

लोक-साहित्य

—कृष्णदेव उपाध्याय (डॉ०) : **लोक साहित्य की भूमिका** : प्रयाग, साहित्य भवन लि०, १९५७, पृ० ३१८, डि०, ७.५० रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

लोक-नाट्य को छोड़कर लोक-साहित्य के समस्त मुख्य रूपों का विवेचन।

—नरेन्द्र धीर : **मैं धरती पंजाब की** : खन्ना (पंजाब), क्रान्ति प्रकाशन, (मुख्य वि० राजकमल प्रकाशन), पृ० १९६, ड० क्रा०, ३.५० रु०, के० स० द्वि० वि० पु० प्रति०।

पंजाब के व्यक्तित्व, सभ्यता एवं संस्कृति की द्योतक पंजाबी लोक-साहित्य की परिचयात्मक पुस्तक।

लोक-गीत

—उमाशंकर शुक्ल : **बुन्देलखण्ड के लोकगीत** : इलाहाबाद, इण्डियन प्रेस लि०, २०१० वि०, पृ० १४८, डि०, २.२५ रु०, विं० प्र०, (५३-५४)।

बुन्देलखण्ड के विविध लोक-गीतों का समीक्षात्मक अध्ययन।

—सत्येन्द्र (डॉ०, सम्पा०) : **व्रज लोक संस्कृति** : मथुरा, व्रज साहित्य मण्डल, २००५ वि०, पृ० २२७, डि०, (सचित्र), ४ रु०, ना० प्र० स०।

लोक-जीवन और लोक-साहित्य के अध्ययन की प्रणाली पर प्रकाश डालने वाला ग्रन्थ। व्रज की लोक-संस्कृति का विशेष संदर्भ सहित।

—कृष्णदेव उपाध्याय : **भोजपुरी ग्रामगीत** : प्रयाग

हिन्दी के लोकप्रिय कवि
बच्चन
की दो नवीन अनूठी रचनाएँ
गीता साहित्य को अनोखी देन
जन-गीता
तुलसीकृत रामचरितमानस की लोकप्रिय शैली में सरस रूपान्तर !
बुद्ध और नाचघर
'हिन्दी ब्लैंक वर्स' में बच्चन की स्फुट मौलिक कविताएँ
शीघ्र ही प्रकाशित हो रही हैं !
राजपाल एण्ड सन्ज़
कश्मीरी गेट, दिल्ली-६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी साहित्य सम्मेलन, २००० वि०, पृ० ३९८, ड०क्रा०, ४.५० रु०, ना० प्र० स० ।

भोजपुरी क्षेत्र के विविध लोकगीतों का संकलन और उनकी व्याख्या ।

—कृष्णलाल हंस : **निमाड़ी लोकगीत :** महा० शा० ।

—गोविन्द चातक (डॉ०) : **गढ़वाली लोकगीत** : देहरादून, जुगलकिशोर .एण्ड कं०, पृ० ४००, ड० क्रा०, ५ रु०, उ० प्र०, (५७-५८) ।

गढ़वाली लोकगीत मूल, हिन्दी अनुवाद, टिप्पणियों तथा परिचयात्मक भूमिका सहित ।

—जगदीश त्रिगुणायत : **बाँसरी बज रही :** पटना, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, १९५७, पृ० ७२२, (सचित्र), ८ रु०, उ० प्र०, (५७-५८) ।

आदिवासी क्षेत्र के विशेषत: मुण्डा लोकगीतों का सानुवाद संग्रह । प्रथम खण्ड में मुण्डा भाषा और उसके साहित्य का परिचय । परिशिष्ट में एक मानचित्र तथा अन्य सामग्री ।

—रामनरेश त्रिपाठी : **ग्राम साहित्य** : प्रयाग, हिन्दी मन्दिर, १९५१, पृ० ३७२, ड० क्रा०, ५ रु०, उ० प्र०, (५३) ।

सोहर, अन्न प्राशन, मुण्डन, जनेऊ, नहछू और विवाह के गीतों का संकलन ।

—रामनरेश त्रिपाठी : **ग्राम साहित्य, दूसरा भाग** : दिल्ली, आत्माराम एण्ड सन्स, १९५२, पृ० ३३७, डि०, ७ रु०, उ० प्र०, (५३) ।

ज्ञानवर्द्धक और मनोरंजक लोक-कथाओं का संग्रह ।

—शिवसहाय चतुर्वेदी : **बुन्देली लोकगीत** : महा० शा० ।

—श्रीचन्द्र जैन : **विन्ध्य प्रदेश के लोकगीत** : (करमा) दिल्ली, राजपाल एण्ड सन्स, पृ० ४७, ड० क्रा०, ८७ न० पै०, वि० प्र० ।

विन्ध्य के आदिवासियों में प्रचलित करमा नृत्य के साथ गाये जाने वाले गीतों का संक्षिप्त संकलन व्याख्या सहित ।

—श्रीचन्द्र जैन : **विन्ध्य प्रदेश के आदिवासियों के गीत** : उ० प्र०, (५६-५७) ।

—श्रीचन्द्र जैन : **विन्ध्य के लोक-कवि** : वि० प्र० ।

—राम 'अनिल' : **कनउजी लोकगीत** : लखनऊ, लखनऊ विश्वविद्यालय, १९५७, पृ० २९५, ड० क्रा०, ४ रु०, उ० प्र०, (५७-५८) ।

पाँच अध्यायों में कनउजी लोकगीतों की पृष्ठभूमि का सांगोपांग विवेचन । परिशिष्ट में कुछ कनउजी लोकगीतों का संग्रह ।

लोक-कथाएँ

—गोविन्द चातक (डॉ०) : **गढ़वाली लोक-कथाएँ** : देहरादून, मोहनी प्रकाशन, १९५८, पृ० २५०, ड० क्रा०, ३ रु०, बद्रीनाथ टेम्पल कमेटी द्वारा पुरस्कृत ।

गढ़वाल की लोक-कथाएँ मूल, हिन्दी अनुवाद, टिप्पणियों सहित ।

—पुरुषोत्तम मेनारिया : **राजस्थान की लोक कथाएँ** : दिल्ली, आत्माराम एण्ड सन्स, १९५४, पृ० ४०, फु० स्के०, (सचित्र), १ २५ रु०, के० स० तथा राज० स०, (५४-५५) ।

राजस्थान की १२ लोक-कथाओं का संग्रह ।

श्री हरजीमल डालमिया पुरस्कार समिति
तथा
उत्तर प्रदेश शासन द्वारा पुरस्कृत

राधावल्लभ सम्प्रदाय : सिद्धान्त और साहित्य

भक्ति-सिद्धांत और साहित्य का गवेषणात्मक, विवेचनात्मक और तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करने वाला ग्रन्थ

लेखक—डॉ० विजयेन्द्र स्नातक एम० ए०, पी-एच० डी०, रीडर, हिन्दी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय ।

राधावल्लभ सम्प्रदाय के सिद्धान्त और साहित्य का पहली बार हस्तलिखित ग्रन्थों के आधार पर इस शोध-ग्रन्थ में सर्वाङ्गीण विवेचन किया गया है । माधुर्य भक्ति और व्रज के भक्ति-सम्प्रदायों के मर्म को हृदयङ्गम करने में इस ग्रन्थ से महत्त्वपूर्ण सहायता मिलेगी । भक्ति और शृङ्गार के रहस्य को समझने तथा रासलीला आदि के तत्त्वशोध में यह ग्रन्थ पथ-प्रदर्शक सिद्ध होगा । उत्तरार्द्ध खण्ड में साहित्य का अध्ययन नितांत मौलिक एवं हिन्दी साहित्य की समृद्धि में योग देने वाला है ।

नेशनल पब्लिशिंग हाउस
नई सड़क, दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

—राजशेष गिरि राव, के० : **आंध्र की लोक कथाएँ** : दिल्ली, आत्माराम एण्ड सन्स, १९५५, पृ० ५८, फु० स्के०, १·५० रु०, के० स०, (५६)।

आंध्र की चौदह लोक-कथाओं का संग्रह।

—शिवसहाय चतुर्वेदी : **गौने की विदा** : पटना, अजन्ता प्रेस, १९५३, पृ० १६४, ड० क्रा०, २ रु०, विं० प्र०, (५३-५४)।

बुन्देलखण्ड की लोक-कथाएँ।

—शिवसहाय चतुर्वेदी : **पाषाण नगरी** : दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, १९५०, पृ० २०४, ड० क्रा०, ३·५० रु०, उ० प्र०, (५२)।

बुन्देलखण्ड की लोक-कहानियां।

—श्रीचन्द्र जैन : **विन्ध्यभूमि की लोक कथाएँ** : दिल्ली, आत्माराम एण्ड सन्स, १९५४, पृ० ४३, फु० स्के०, (सचित्र), १ रु०, के० स० बाल प्रति० (५४) तथा वि० प्र०।

बालोपयोगी लोक-कथाओं का सँग्रह।

—श्रीचन्द्र जैन : **विन्ध्यभूमि की अमर कथाएँ** : वि० प्र०।

—सत्येन्द्र (डॉ०) : **ब्रज की लोक कहानियाँ** : मथुरा, ब्रज साहित्य मण्डल, २००४वि०, पृ० १८७, डि०, ३·२५ रु०, ना० प्र० स०, काशी।

८ वर्गों में विभक्त ब्रज की विविध लोक-कथाओं का संग्रह।

उर्दू-साहित्य

—एहतमाम हुसैन (सैयद), अनु० शमशेर बहादुरसिंह : **उर्दू साहित्य का इतिहास** : दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, १९५७, पृ० ३२७, ड० क्रा०, ६ रु०, उ० प्र०, (५५-५६)।

प्रत्येक साहित्यिक की शैली, विचारधारा एवं व्यक्तिगत विशेषता सहित उर्दू साहित्य का सर्वांगीण संक्षिप्त इतिहास।

उर्दू-साहित्य-काव्य

—अयोध्याप्रसाद गोयलीय : **शेरओसखुन, पांच भागों में** : काशी, भारतीय ज्ञानपीठ, १९५१, प्र० भा०, पृ० ७७७, ड० क्रा०, ८ रु०, उ० प्र०, (५२)।

द्वितीय भाग, पृ० ३२१, ३ रु०, लखनऊ स्कूल के शायर।

तृतीय भाग, पृ० २६३, ३ रु०, मौजूदा दौर के गजलगो शायर।

चतुर्थ भाग, पृ० २५५, ३ रु०, ख्यातिप्राप्त वयोवृद्ध शायर।

पंचम भाग, पृ० २५४, ३ रु०, युवक शायर।

प्रारम्भ से सन् १९०० तक की उर्दू शायरी का प्रामाणिक इतिहास, निष्पक्ष आलोचना और इस अवधि में हुए प्रायः सभी गजलगो शायरों की श्रेष्ठतम रचनाओं का संकलन और परिचय।

—अयोध्याप्रसाद गोयलीय : **शेरओ शायरी** : काशी, भारतीय ज्ञानपीठ, १९५०, पृ० ६३९, ड० क्रा०, ८ रु०, उ० प्र०, (५२)।

प्राचीन और वर्तमान कवियों में सर्वप्रधान, लोकप्रिय ३१ कलाकारों के मर्मस्पर्शी पद्यों का संग्रह और उर्दू कविता की गतिविधि का आलोचनात्मक परिचय।

—एजाज हुसैन (सम्पा०) : **गजलों की बादशाह मीर** : इलाहाबाद, लॉ जर्नल प्रेस, १९५५, पृ० २८७, ड० क्रा०, २·५० रु०, उ० प्र०, (५५-५६)।

महाकवि मीर की गजलों, मसनवियों एवं रूबाइयों का संग्रह।

—एजाज हुसैन (डॉ०, सम्पा०) : **अकबर इलाहाबादी** : इलाहाबाद, लॉ जर्नल प्रेस, १९५४, पृ० १६०, ड० क्रा०, २·५० रु०, उ० प्र०, (५५-५६)।

शायर का परिचय, संक्षिप्त आलोचना एवं चुनी हुई कविताओं का संग्रह।

—कृष्णदेव प्रसाद गौड़ : **ग़ालिब की कविता** : वाराणसी, प्रसाद परिषद, २०१४वि०, पृ० ४७६, ड० क्रा०, (सचित्र), १० रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

ग़ालिब की समस्त उर्दू कविताएँ, प्रत्येक शेर की टीका, उस पर टिप्पणी तथा काव्य की आलोचना।

—हीरालाल चोपड़ा : **डाक्टर इकबाल और उनकी शायरी** : वाराणसी, हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, १९५६, पृ० २०..., ड० क्रा०, ३·५० रु०, उ० प्र०, (५६-५७)।

डॉ० इकबाल का परिचय और उनकी शायरी का संक्षिप्त संकलन।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डॉ० प्रेमनारायण टंडन के पाँच नवीन महत्त्वपूर्ण प्रकाशन

उ० प्र० सरकार द्वारा पुरस्कृत और लखनऊ वि० वि० द्वारा पी-एच० डी० के लिए स्वीकृत थीसिस

सूर की भाषा

विषय-सूची—(१) ब्रजभाषा और सूर की भाषा के अध्ययन का इतिहास, (२) ब्रजभाषा—उसका विकास और सूर का भाषा-ज्ञान, (३) सूर की भाषा का वैज्ञानिक अध्ययन, (४) सूर की भाषा का व्याकरणिक अध्ययन, (५) सूर की भाषा का व्यावहारिक और शास्त्रीय अध्ययन। (६) सांस्कृतिक दृष्टि से सूर की भाषा का महत्व, (७) उपसंहार—समकालीन और परवर्ती ब्रजभाषा कवियों से सूर की भाषा की तुलना एवं अध्ययन का सारांश।

परिशिष्ट—(१) सूर-काव्य में प्रयुक्त शब्दों की संख्या, (२) सूर-साहित्य और उसकी सम्पादन-समस्या, (३) नामानुक्रमणिका।

उत्तर प्रदेश सरकार ने अप्रैल, १९५८ में लेखक को ७००) का पुरस्कार देकर सम्मानित किया है।

रायल अठपेजी साइज़ • पृष्ठ-संख्या सवा छह सौ • मू० २०)

भाषा अध्ययन के आधार

प्रस्तुत पुस्तक में, काव्यांगों में भाषा का स्थान, भाषा के विभिन्न रूप और उनका विकास, भाषा के अंग, शब्द-शक्ति, काव्यत्व किस अर्थ में, ध्वनि, गुण, वृत्ति और रीति, विषय पात्र और मनोभावों का भाषा और वाक्य-रचना पर प्रभाव, सूक्तियाँ, मुहावरे और कहावतों के प्रयोग, आदर्श भाषा की विशेषताएँ एवं रस, अलंकार और छन्द का भाषा से सम्बन्ध, आदि विषयों पर प्रकाश डाला गया है। हिन्दी में अपने ढंग का सर्व-प्रथम प्रकाशन। रायल अठपेजी साइज, सजिल्द मू० ७।।)

सूर-साहित्य का सांस्कृतिक अध्ययन

प्रस्तुत पुस्तक में सूरदास के समकालीन समाज की सांस्कृतिक विचारधारा का परिचय देने के लिए उसके सामाजिक, पौराणिक, धार्मिक और सामान्य विश्वासों के साथ-साथ शकुन-अपशकुन और स्वप्न-सम्बन्धी विश्वासों के अतिरिक्त भारतीय कवियों में प्रसिद्ध बातों और भारतीय संस्कृति के प्रमुख अंगों—पर्वोत्सवों, संस्कारों और कलाकौशल—पर भी प्रकाश डाला गया है। सूर-साहित्य के ही नहीं, हिंदी के किसी भी एक कवि के काव्य के इतने विशद सांस्कृतिक अध्ययन का हिंदी में यह प्रथम प्रयास है। रायल अठपेजी, मू० ५)

हिन्दी-साहित्य : कुछ विचार

इसमें डॉ० टंडन के हिन्दी-कविता-सम्बन्धी नौ तथा हिन्दी-गद्य-सम्बन्धी पाँच उच्च कोटि के निबन्ध हैं। उनकी सूची इस प्रकार है—

१—ब्रजभाषा की विशेषताएँ, २—पृथ्वीराज रासो, ३—सूरसागर, ४—साहित्य लहरी, ५—सूर का वात्सल्य-वर्णन : कुछ प्रसंग, ६—भ्रमर गीत प्रसंग, ७—तुलसी का राम-रूप-वर्णन, ८—तुलसी का काव्यादर्श, ९—साकेत के कुछ पात्र १०—राजस्थानी गद्य, ११—ब्रजभाषा का गद्य-साहित्य, १२—द्विवेदी जी का सम्पादन-कौशल, १३—प्रेमचंदजी के उपन्यासों की मुख्य समस्याएँ, १४—प्रसादजी का 'चन्द्रगुप्त' नाटक। डिमाई, सजिल्द, मू० ७।।)

अजातशत्रु और अन्य एकांकी

डॉ० टंडन का यह पाँचवाँ नवीनतम एकांकी संग्रह है। इसमें तपेदिक का रोगी, समानता संघ, शीलवती, अजातशत्रु, उपक्रम और बनवास के पूर्व की रात शीर्षक छह एकांकी संकलित हैं। सभी एकांकी कला की दृष्टि से सुन्दर और सुरुचिपूर्ण हैं। मू० २)

नोट—पेशगी मूल्य भेजने पर डाक-व्यय माफ।

हिन्दी-साहित्य-भण्डार, गंगाप्रसाद रोड, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारत सरकार द्वारा पुरस्कृत

साइन्स की कहानियाँ

—उमाशंकर

बालकों और प्रौढ़ों के लिए इस पुस्तक से भौतिक-शास्त्र, रसायन-शास्त्र और जीव-विज्ञान के कठिन प्रश्नों को बड़े ही सरल और मनोरंजक ढंग से कहानियों के रूप में समझाया गया है।

"साइन्स की कहानियों को हिन्दुस्तानी में पेश करने का विचार बहुत ही सुन्दर है और इसलिए मैं इस पुस्तक का स्वागत करता हूँ। मेरे विचार में हमारे बच्चों के लिए जरूरी है कि उनकी शिक्षा की बुनियाद वैज्ञानिक हो।"

मूल्य ३।॥) —जवाहरलाल नेहरू

अमर आशा

—श्रीमन्नारायण

इसमें अग्रवाल जी की दो प्रकार की कविताएँ हैं: एक वे जिन्हें शुद्ध साहित्यिक क्षेत्र में स्थान मिलेगा, दूसरी वे जिन्हें सामयिक साहित्य में।

"...हिन्दी तथा हिन्दुस्तानी रचनाओं की गंगा-यमुना का यह संगम अपूर्व है। जहाँ साहित्यकार इसमें रस पायेंगे, वहाँ राष्ट्र-प्रेमी इसकी राष्ट्रीय चेतना से अनुप्राणित रचनाओं में अपने मन के गीत पायेंगे।"

मूल्य ३।॥) —मोहनलाल द्विवेदी

उमर खैयाम की रूबाइयाँ

—रघुवंशलाल गुप्त

हिन्दी में उमर खैयाम की रूबाइयों के अनुवाद कई निकल चुके हैं, पर रघुवंशलाल गुप्त के इस अनुवाद में जो ज़िन्दगी है, जो माधुर्य है, वह आपको कहीं और नहीं मिलेगा।

"...श्री रघुवंश के अनुवाद में हमें उमर की आत्मा के दर्शन होते हैं..."

मूल्य ३) —अमरनाथ झा

दीपशिखा

—महादेवी वर्मा

इसमें पद्यभूषण महादेवी वर्मा के बनाए ५२ पद्य हैं जो महादेवीजी की ही लिखावट में छपे हैं और प्रत्येक पद्य के भाव उन्हीं के बनाये हुए सुन्दर चित्रों में चित्रित हैं। यह पुस्तक पूरी आर्ट पेपर पर १२"×९" साइज़ में छपी है और इस बार एक आकर्षक और सुन्दर आवरण-पृष्ठ भी दिया गया है। उपहार देने के लिए अति उचित और योग्य है। मूल्य २२)

मैं ज़रूर रोऊँगी

—बलवन्तसिंह

कहानियों के इस संग्रह में बलवन्तसिंह ने ज़िन्दगी के हर मूड को अपनी कला से उजागर करने की कोशिश की है। १३ कहानियों का यह संग्रह जीवन के अनेक मूडों को प्रकट करता है। मूल्य ३)

किताबिस्तान : इलाहाबाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संस्कृत, पालि एवं प्राकृत साहित्य

—चन्द्रबली पाण्डेय : **कालिदास** : बनारस, मोतीलाल बनारसीदास, २०११ वि०, पृ० ६२६, ड० क्रा०, ७.५० रु०, उ० प्र०, (५५)।

महाकवि कालिदास का जीवन-वृत्त एवं उनके ग्रन्थों की सप्रमाण मीमांसा।

—भोलाशंकर व्यास (डॉ०) : **संस्कृत कवि दर्शन** : बनारस, चौखम्भा विद्या भवन, २०१२ वि०, पृ० ५७५, ड० क्रा०, ६ रु०, उ० प्र०, (५६-५७)।

संस्कृत साहित्य के ६ कवियों, ८ नाटककारों, ४ गद्यकारों एवं दो मुक्तक कवियों का समीक्षात्मक अध्ययन।

—मनोहरलाल गौड़ (डॉ०) : **आचार्य क्षेमेन्द्र** : अलीगढ़, भारत प्रकाशन मन्दिर, पृ० ११२, डि०, ४ रु०, उ० प्र०, (५६-५७)।

आचार्य क्षेमेन्द्र के समीक्षा-सिद्धान्त, कवि-शिक्षा एवं छन्द-विचार विषयक पुस्तकों—(१) 'औचित्य विचार चर्चा', (२) 'कवि कण्ठाभरण' (३) 'सुवृत्त तिलक'—का और इन तीनों में प्रतिपादित उनके तीनों प्रस्थानों का विकास तथा समीक्षा।

—राजीवलोचन अग्निहोत्री : **संस्कृत साहित्य गांधव नरेशों** ओदेन : वि० प्र०, (५५)।

—वासुदेवशरण अग्रवाल : **हर्षचरित एक सांस्कृतिक अध्ययन** : पटना, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, २००७ वि०, पृ० २२३, रॉ०, ६.५० रु०, हि० सा० स० मंगला०, (२०१० वि०)।

सांस्कृतिक सामग्री की दृष्टि से बाणभट्ट के 'हर्षचरित' ग्रन्थ का अध्ययन। २८ फलकों पर लगभग १०० चित्र सहित।

पालि साहित्य

—भरतसिंह उपाध्याय : **पालि साहित्य का इतिहास** : प्रयाग, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, २००८ वि०, पृ० ७३३, १० रु०, के० स० प्र० वि० पु० प्रति०।

पालि-साहित्य के विविध अंगों का विवेचनात्मक इतिहास।

अपभ्रंश साहित्य

—हरिवंश कोछड़ : **अपभ्रंश साहित्य** : दिल्ली, भारतीय साहित्य मन्दिर (हि० अ० प० दिल्ली वि० वि० के लिए), २०१३ वि०, डि०, १० रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

साहित्यिक दृष्टि से अपभ्रंश साहित्य का अध्ययन। दिल्ली विश्वविद्यालय द्वारा पी-एच० डी० की उपाधि के लिए स्वीकृत प्रबन्ध।

अन्य साहित्य

—केशरी नारायण शुक्ल और श्रीमती फिलिप मेरी एम० केम्प : **रूसी साहित्य** : बनारस, सरस्वती मन्दिर, १९५१, पृ० २०६, डि०, ४.५० रु०, उ० प्र०, (१९५२)।

रूसी साहित्य के विज्ञ लेखकों की प्रामाणिक पुस्तकों के आधार पर रूसियों की साहित्यिक और संस्कृति-सम्बन्धी अपनी निजी भावना की अभिव्यक्ति का काल-क्रमानुसार परिचय।

—वीर राजेन्द्र ऋषि : **रूसी लोक साहित्य** : दिल्ली, आत्माराम एण्ड सन्स, १९५६, पृ० १५१, (सचित्र) डि०, ४ रु०, उ० प्र०, (५६-५७)।

'कनीगा ओ फोल्कलबोरये' नामक मूल रूसी ग्रन्थ के आधार पर लिखित रूसी लोक-साहित्य।

—विनोदशंकर व्यास : **यूरोपीय साहित्य** : बनारस, सत्-साहित्य प्रकाशन गृह, १९५५, पृ० १४५, ड० क्रा०, २ रु०, उ० प्र०।

पूर्वकाल के यहूदी, यूनानी और लैटिन साहित्य के विकास का विवरण।

—यतेन्द्रकुमार : **शैली** : अलीगढ़, भारत प्रकाशन मन्दिर, पृ० २१—जीवन-वृत्त, पृ० ५७—काव्यसाधना, पृ० ९५—काव्य लोक, डि०, के० स० द्वि० प्रति०।

अंग्रेजी के प्रख्यात रोमानी कवि परसीविसी शैली का जीवन-वृत्त, काव्य-साधना और काव्यलोक।

इतिहास

इतिहास, सामान्य

—सुतीक्ष्ण मुनि उदासी (सम्पा०) : **गाथा संवत्सरी** : ✓ काशी, श्री साधु वेला आश्रम, २०१२ वि०, पृ० २८७, ड० क्रा०, २.५० रु०, उ० प्र०, (५६-५७)।

संसार-भर की सामान्यतः और भारत की विशेषतः

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तीन श्रेष्ठ कृतियाँ

१. रणधीर सिनहा की रचनाएँ

(पहला चयन)

कविताएँ, कहानियाँ, नाटक, रिपोर्ताज, लघु-कथाएँ, निबन्ध, संस्मरण, व्यंग्य-चित्र, आत्मालाप, डायरी आदि। दस प्रकार में रचित २५ रचनाओं का अनुपम संग्रह जो हिन्दी-साहित्य में पहली बार प्रकाशित हुआ है। **मूल्य मात्र २·५०**

२. क्वार की साँझ

रामनरेश पाठक की कविताएँ। नई हिन्दी कविता की ५१ कविताएँ, जो एक नये धरातल की ओर संकेत कर रही हैं। **मूल्य मात्र २·५०**

३. आकलन (पहला भाग)

हिन्दी में मौलिक तथा पहला प्रयास। रणधीर सिनहा कृत आलोचना साहित्य का प्रयोग। **मूल्य ३ रुपया**

केवल एक सौ प्रतियाँ बच रही हैं।

प्रकाशक

श्रेष्ठ साहित्यागार

सिनहा लाइब्रेरी रोड,
पटना-१

सभी प्रमुख घटनाओं तथा महापुरुषों की जीवनियों प्रमुख तिथि-क्रमाली।

भूगोल

—उजागरसिंह : **भारत का नवीन आर्थिक भूगोल** इलाहाबाद, स्टूडेण्ट्स फ्रेंड्स, १९५४, पृ० ५५३, डि (सचित्र) आंकड़ों एवं मानचित्रों से युक्त, ७.५० रु उ० प्र०, (५५-५६)।

विभाजित भारत की वर्तमान समस्याओं को ध्या में रखते हुए प्राकृतिक वातावरण, प्रसाधन, कृषि, उद्यो धन्धों, वाणिज्य एवं आर्थिक परिस्थितियों की तुलनात्म विवेचना।

—कृपाशंकर गौड़ : **भारत की भौगोलिक समीक्षा** वाराणसी, हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, १९५७, पृ० ५६ रॉ०, (सचित्र) १० रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

भारत के भौतिक, आर्थिक, प्रादेशिक और सांस्कृति भूगोल का विस्तृत विवेचन, भारतीय विश्वविद्यालयों कक्षाओं के लिए लिखित।

—कृपाशंकर गौड़ : **भौतिक भूगोल के सिद्धान्त** : उ० प्र (५७-५८)।

—चतुर्भुज मामोरिया : **आर्थिक और वाणिज्य भूगोल** आगरा, गयाप्रसाद एण्ड सन्स, १९५७, पृ० १२०४, डि १५ रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

आँकड़ों, मानचित्रों एवं चित्रों से युक्त, बी० ए० बी० कॉम० और एम० ए० की कक्षाओं के लिए भूगोल विषयक पाठ्य-ग्रन्थ।

—जनार्दनप्रसाद श्रीवास्तव : **भू सैद्धान्तिकी** : जौनपुर अम्बिका प्रकाशन, १९५५, पृ० ९१, डि०, १.७५ रु (सचित्र) वि० प्र०, (५३-५४)।

भूगोल और भूतत्त्व के सिद्धान्त।

—महेश्वरप्रसाद करण : **मानव भूगोल के सिद्धान्त** उ० प्र०, (५७ ५८)।

—बागेश्वरीप्रसाद वर्मा : **जापान, चीन और दक्षिण-पूर्वी एशिया** : इलाहाबाद, भारत प्रेस, १९५५, पृ० १६ ड० क्रा०, १.८८ रु०, उ० प्र०, (५५-५६)।

बी० ए० और इंटर के विद्यार्थियों के लिए भौगोलि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दृष्टिकोण से लिखित ।

—रामस्वरूप वशिष्ठ : **भूगोल के भौतिक आधार** : दिल्ली, आत्माराम एण्ड सन्स, १९५३, पृ० ३२२, डि०, ६ रु०, उ० प्र०, (५५) ।

व्यक्ति के भौतिक वातावरण के विभिन्न रूपों की व्याख्या, पृथ्वी, वायु-मण्डल आदि का वैज्ञानिक विवेचन ।

—श्रीकृष्णदत्त भट्ट : **भारत का आर्थिक भूगोल** : उ० प्र०, (५०) ।

यात्रा और भ्रमण

—कृष्णवंश सिंह बघेल : **हिमालय के प्रदेश में** : वि० प्र०, (५५-५६) ।

—खाण्डेलकर, आर० आर० : **हालैंड में पच्चीस दिन** : बनारस, ज्ञान मण्डल लि०, २०११ वि०, पृ० १५९, ड० क्रा०, (सचित्र), ३ रु०, उ० प्र०, (५५-५६) ।

लेखक द्वारा अपनी हालैण्ड-यात्रा के २५ दिनों का वर्णन, २३ चित्रों सहित ।

—गुरुदेव दुबे : **खोज के पथ पर** : प्रयाग, छात्रहितकारी पुस्तक माला, १९५२, पृ० ५६, ड० क्रा०, ५० न० पै०, वि० प्र०, (५४-५५) ।

भौगोलिक साहसिक अभियान (बाल-साहित्य) ।

—भगवतशरण उपाध्याय : **कलकत्ता से पेकिंग** : दिल्ली, राजपाल एण्ड सन्स, पृ० १७३, ड० क्रा०, ३.५० रु०, उ० प्र०, (५५-५६) ।

यात्रा-सम्बन्धी संस्मरण ।

—यशपाल : **राह बीती** : लखनऊ, विप्लव कार्यालय, १९५६, पृ० १७९, डि०, ३.५० रु०, उ० प्र०, (५७-५८) ।

लेखक की पूर्वी यूरोप यात्रा के अनुभव एवं संस्मरण ।

—राजवल्लभ ओझा : **बदलते दृश्य** : इलाहाबाद, हिन्दी भवन, १९५४, पृ० २६४, डि०, ६ रु०, उ० प्र०, (५५) ।

—श्रीनिधि सिद्धान्तालंकार : **शिवालक की घाटियों में** : दिल्ली, आत्माराम एण्ड सन्स, १९५३, पृ० २३९, (सचित्र), डि०, ५ रु०, उ० प्र०, (५५) ।

शिवालक की घाटियों का १६ शीर्षकों में स्वानुभूत सजीव वर्णन ।

—सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय' : **अरे यायावर**

गोरखपुर, लखनऊ, आगरा, विक्रम, जबलपुर, काशी तथा अन्य विश्वविद्यालयों के लिए स्वीकृत पाठ्य-ग्रन्थ

निबन्ध-नवनीत :
सम्पादक—डॉ० लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय ३·००

श्री चन्द्रावली नाटिका (भारतेन्दु रचित)
सम्पादक—डॉ० लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय १·५०

भारत-दुर्दशा :
सम्पादक—डॉ० लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय १·००

काव्य-धारा :
सम्पादक—डॉ० गोपीनाथ तिवारी
एवं डॉ० रामचन्द्र तिवारी ३·००

भूषण-मञ्जूषा :
सम्पादक—डॉ० व्रजकिशोर मिश्र २·२५

वेलिक्रिसन रुकमणी री :
सम्पादक—डॉ० आनन्द प्रकाश दीक्षित ५·००

***रीतिकालीन हिन्दी कविता और सेनापति :**
लेखक—डॉ० रामचन्द्र तिवारी १·५०

***हिन्दी का गद्य-साहित्य :**
लेखक—डॉ० रामचन्द्र तिवारी ६·००

***काव्य-शास्त्र :**
लेखक—डॉ० भगीरथ मिश्र ५·५०

शिक्षा-सिद्धान्त एवं दर्शन :
लेखक—प्रोफेसर सत्यदेवसिंह ४·५०

*चिह्नित पुस्तकें उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा पुरस्कृत हैं ।

प्रकाशक

विश्वविद्यालय प्रकाशन
नखास चौक, गोरखपुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहेगा याद : इलाहाबाद, सरस्वती प्रेस, १९५३, पृ० २२८, ड० क्रा०, (सचित्र), ६ रु०, उ० प्र०, (५४)।

लेखक द्वारा अंकित रेखाचित्र, स्केच और अलंकृतियाँ।

—सत्यवती मल्लिक (श्रीमती) : **अमर पथ** : दिल्ली, अतरचन्द कपूर एण्ड सन्स, १९५४, पृ० १२४, डि०, (सचित्र), ३ रु०, उ० प्र०, (५५-५६)।

यात्रा सम्बन्धी संस्मरण।

—सत्यभक्त (स्वामी) : **नया संसार** : वर्धा, सत्याश्रम, पृ० १४०, ड० क्रा०, १.५० रु०, उ० प्र०, (५२-५३)।

डेढ़सौ वर्ष बाद बनने वाले नये संसार में भ्रमण करने वाले एक यात्री का भ्रमण-वृत्तान्त।

जीवनी, आत्मकथा

—गंगाप्रसाद उपाध्याय : **जीवन चक्र** : इलाहाबाद, कला प्रेस, १९५४, पृ० ५००, ड० क्रा०, (सचित्र), ५ रु०, उ० प्र०, (५५)।

लेखक की आत्मकथा।

—देवीदत्त शुक्ल : **सम्पादक के पच्चीस वर्ष** : प्रयाग, कल्याण मन्दिर, १९५६, पृ० १५८, रॉ०, ४ रु०, उ० प्र०, (५६-५७)।

'सरस्वती' के सम्पादक पंडित देवीदत्त शुक्ल के सम्पादक-जीवन के २५ वर्षों (१९१९-१९४५) के संस्मरण।

—यशपाल : **सिंहावलोकन** : लखनऊ, विप्लव कार्यालय, प्रथम भाग, १९५१, पृ० २०६, डि०, (सचित्र), ५ रु०, द्वितीय भाग, १९५२, पृ० २६४, डि०, (सचित्र), ५.५० रु०, तृतीय भाग, १९५५, पृ० १९५, डि०, (सचित्र), ४.५० रु०।

सशस्त्र क्रान्ति की प्रामाणिक कहानी। हिन्दुस्तानी समाजवादी-प्रजातन्त्र सेना द्वारा भारत में सशस्त्र क्रान्ति की चेष्टा के सम्बन्ध में लेखक के संस्मरण।

—रवीन्द्रनाथ टैगोर (मू० ले०), (अनु० धन्यकुमार जैन) : **जीवन स्मृति** : कलकत्ता, रवीन्द्र साहित्य मन्दिर, पृ० १८३, ड० क्रा०, २.५० रु०, के० स० प्र० वि० पु० प्रति०।

रवीन्द्र-साहित्य का अठारहवाँ भाग। टैगोर महोदय की आत्मकथा का अंश।

—राजेन्द्रप्रसाद (डॉ०) : **आत्मकथा** : पटना, साहित्य संसार, १९४७, पृ० ६५९, रॉ०, (सचित्र) १२ रु०, बि० रा० प०, (५४-५५) तथा ना० प्र० सभा से भी।

वर्तमान राष्ट्रपति डॉ० राजेन्द्रप्रसादजी की आत्मकथा।

—रामवृक्ष बेनीपुरी : **जंजीरें और दीवारें** : दिल्ली, राजपाल एण्ड सन्स, १९५७, पृ० २८२, ड० क्रा०, ४.२५ रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

३० शीर्षकों के अन्तर्गत लेखक के जेल-जीवन के संस्मरण।

—शान्तिप्रिय द्विवेदी : **परिव्राजक की प्रजा** : इलाहाबाद, इण्डियन प्रेस लि०, १९५२, पृ० २०८, ड० क्रा०, ३.५० रु०, उ० प्र०, (५३)।

अपनी साहित्यिक आत्म-कथा।

जीवनी

—अशोक : **गांधीजी का विद्यार्थी जीवन** : दिल्ली, सस्ता साहित्य मण्डल, १९५७, पृ० ३८, ड० क्रा०, ३१ न० पै०, के० स० जन सा० प्रति०, (५३)।

आत्मकथा के आधार पर गांधीजी के विद्यार्थी-जीवन की झाँकी।

—क्षेमचन्द्र 'सुमन' : **नये भारत के नये निर्माता** : उ० प्र०, (५१)।

—चन्द्रबली त्रिपाठी : **धर्मराज युधिष्ठिर** : बस्ती, लेखक द्वारा, १९५२, पृ० ३३४, ड० क्रा०, ५ रु०, उ० प्र०।

धर्मराज युधिष्ठिर की जीवनी।

—प्रमोदकुमार : **नेहरू और भारतीय राजनीति** : लखनऊ, अध्यापक प्रकाशन मण्डल, पृ० ३२८, ३ रु०, उ० प्र०, (५५-५६)।

नेहरूजी की जीवनी तथा उनके राजनीतिक जीवन का विस्तृत अध्ययन।

—बनारसीदास चतुर्वेदी : **रेखा-चित्र** : काशी, भारतीय ज्ञानपीठ, १९५२, पृ० ३७५, ड० क्रा०, ४ रु०, वि० प्र०, (५३-५४)।

जीवनी सम्बन्धी ४० रेखाचित्र।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रत्येक पुस्तकालय, विक्रेता, विद्वान् एवं पाठकों की आवश्यकता की पूर्ति के लिए
प्रसाद साहित्य के अधिकारी विद्वान्
पं० सुधाकर पाण्डेय रचित तीन

बहुमूल्य प्रतिष्ठित अमूल्य

प्रकाशन

कामायनी समीक्षा
नूतन दृष्टिकोण से कामायनी पर विचार-विमर्श और नयी मात्र स्थापनाएँ। ३ रु०

प्रसाद काव्य कोश
प्रसाद काव्य में व्यवहृत प्रत्येक शब्द का व्याख्यात्मक विश्लेषण। १६ रु०

प्रसाद की कविताएँ
प्रसादजी की प्रत्येक काव्य-उपलब्धि और युग की ऐतिहासिक गतिविधि का अपूर्व आलोचनात्मक विवेचन। १ रु०

अन्य महत्त्वपूर्ण नवीनतम प्रकाशन

गालिब की कविता	: बेढब बनारसी	१०·००
हुक्का पानी	: बेढब बनारसी	३·००
सुचिताव	: 'रुद्र' काशिकेय	४·५०
पुष्प नगर	: कविवर 'आदर्श'	६·००
साहित्य-शास्त्रीय-समाधान	: शंकरदेव अवतरे	६·००
मार्क्सवाद और साहित्य	: महेन्द्रचन्द्र राय	४·५०
सिकन्दर का आक्रमण और पश्चिमोत्तर भारत	: बलराम श्रीवास्तव	३·००
जो गाता हूँ	: सुधाकर पाण्डेय	३·००
नीहारिका	: सुधाकर पाण्डेय	१·५०

आराधना प्रकाशन

६४/४४ गोला दीनानाथ, वाराणसी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

—बनारसीदास चतुर्वेदी : **हमारे आराध्य** : काशी, भारतीय ज्ञानपीठ, १९५२, पृ० २६०, ड० क्रा०, ३ रु०, उ० प्र०, (५३)।

१७ महान् व्यक्तियों के सम्बन्ध में रेखाचित्र तथा शब्द-चित्र।

—बलदेव उपाध्याय : **श्री शंकराचार्य** : इलाहाबाद, हिन्दुस्तानी एकेडेमी, १९५०, पृ० ३०४, रॉ०, ७.५० रु०, उ० प्र०, (५१)।

श्री शंकराचार्य की जीवनी तथा उनके उपदेशों का प्रामाणिक विवरण।

—मदनमोहन मिश्र : **विंध्यप्रदेश की अमर आत्माएँ** : वि० प्र०, (५३-५४)।

—लक्ष्मीनारायण गर्ग : **हमारे संगीत रत्न** : हाथरस, संगीत कार्यालय, १९५७, पृ० ७००, डि०, (सचित्र), १५ रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

भारतीय संगीतज्ञों की जीवनी।

—विद्यावती (कुमारी) 'मालविका' : **आदर्श बौद्ध महिलाएँ** : सारनाथ, भारतीय महाबोधि सभा, २४९९ बुद्धाब्द, पृ० १२०, ड० क्रा०, १.५० रु०, उ० प्र०, (५६-५७)।

३१ बौद्ध महिलाओं की जीवन-झांकी।

—विनोदशंकर व्यास : **दिन और रात** : बनारस, पुस्तक-मन्दिर, १९५०, पृ० १५८, ड० क्रा०, २ रु०, उ० प्र०, (५२)।

कुछ प्रमुख साहित्यकारों के जीवन का यथार्थ चित्रण।

—विश्वामित्र शर्मा : **बड़ों का बचपन** : दिल्ली, राजहंस प्रकाशन, १९५६, पृ० ६०, फु० स्के०, (सचित्र), २.२५ रु०, के० स० (५७)।

भारत के कुछ महापुरुषों की संक्षिप्त जीवनी। किशोरों के लिए लिखित।

—विष्णु प्रभाकर : **बाजीप्रभु देश पांडे** : दिल्ली, सस्ता साहित्य मण्डल, १९५५, पृ० ३०, ड० क्रा०, (सचित्र), ३१ न० पै०, के० स० जन सा० प्रति०, (५५)।

महाराज शिवाजी के सेनापति श्री बाजीराव देशपांडे के देश-प्रेम की कहानी (प्रौढ़ोपयोगी, सरल भाषा एवं रोचक शैली)।

—शुकदेव दुबे : **खुदीराम बोस** : वि० प्र०, (५५-५६)।

—शचीरानी गुर्टू (श्रीमती) : **विश्व की महान् महिलाएँ** : दिल्ली, युग प्रकाशन, १९४८, पृ० २०२, डि०, (सचित्र) ५ रु०, उ० प्र०, (५२)।

विश्व की प्रतिनिधि २२ नारियों के सचित्र रेखाचित्र।

—सुशीला नैयर : **बापू की कारावास कहानी** : दिल्ली, सस्ता साहित्य मण्डल, १९५०, पृ० ४५६, (सचित्र), डि०, १० रु०, के० स० प्र० वि० पु० प्रति०।

आगाखां महल में बापू के २१ मास की कारावास कहानी।

भेंट, साक्षात्कार

—पद्मसिंह शर्मा 'कमलेश' : **मैं इनसे मिला** (पहली किश्त) : दिल्ली, आत्माराम एण्ड सन्स, १९५२, पृ० २००, ड० क्रा०, ३ रु०, उ० प्र०, (५३)।

दूसरी किश्त, १९५२, पृ० २४६, ड० क्रा०, ३.५० रु०, उ० प्र०, (५३)।

हिन्दी के कुछ प्रमुख साहित्यकारों से इन्टरव्यू।

संस्मरण

—बनारसीदास चतुर्वेदी : **संस्मरण** : काशी, भारतीय ज्ञानपीठ, १९५२, पृ० २५१, ड० क्रा०, ३ रु०, उ० प्र०, (५२-५३)।

२१ साहित्यकारों तथा कुछ अन्य व्यक्तियों के सम्बन्ध में रोचक संस्मरण।

प्राचीन इतिहास एवं संस्कृति

—कान्त सागर (मुनि) : **खोज की पगडण्डियां** : काशी, भारतीय ज्ञानपीठ, १९५३, पृ० २७५, ड० क्रा०, ४ रु०, उ० प्र०, (५५)।

ललितकला, लिपि और भौगोलिक यात्रा, इन तीन भागों में विभक्त एवं खोजपूर्ण प्रतिपादन।

—कान्त सागर (मुनि) : **खण्डहरों का वैभव** : काशी, भारतीय ज्ञानपीठ, १९५३, पृ० ४३६, (सचित्र) ड० क्रा०, २ रु०, उ० प्र०, (५५)।

भारतीय पुरातत्त्व की गरिमा का द्योतक ग्रन्थ।

—जयचन्द विद्यालंकार : **भारतीय कृष्टि का क, ख:**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे प्रकाशन

अभिनव प्रकाशन—'भारत के संत-महात्मा'—ले० रामलाल : भारत के ११४ संत-महात्माओं के जीवन-चरित्र और उपदेश का अपूर्व अमृतकलश, मू० रुपये १०)

उपन्यास

सिंदूर की राख : कश्मीरीलाल जाकिर	३.००
अमरनाथ : शरच्चन्द्र चट्टोपाध्याय	२.५०
मेरी पति-विजय : रमणलाल देसाई, अनु० श्यामलाल मेढ़	६.००
काम और कामिनी : प्रेमा कंटक, अनु० परदेशी	६.००
आम्रपाली : रामचन्द्र ठाकुर	४.५०
मगधपति : 'धूमकेतु', अनु० परदेशी	५.००
बावन पत्ते : कृष्णचन्द्र	५.५०
नगर-सुन्दरी : 'धूमकेतु', अनु० कि० र० टंडन	४.२५
महामात्य चाणक्य : 'धूमकेतु', अनु० आ० विभुदेव	४.५०
चौलादेवी : 'धूमकेतु', अनु० वीरेन्द्रकुमार जैन	५.५०
राज संन्यासी : 'धूमकेतु', अनु० श्यामू संन्यासी	५.५०
भगवान् बुद्ध की आत्मकथा : परदेशी	४.००
बीरबल : रामचन्द्र ठाकुर	४.५०
मीरा प्रेम दिवानी : रामचन्द्र ठाकुर	५.००
नर्तकी : उमाकान्त	५.५०
सर्व मंगला : मामा वरेरकर, अनु० आ० विभुदेव	३.००
नया रास्ता : रतीलाल त्रिवेदी, अनु० दर्शन	३.७५
तूफ़ान : जॉर्ज स्टुअर्ट, अनु० परदेशी	२.००
काला पानी : ईश्वर पेटलीकर, अनु० विभुदेव	३.००
प्रलय : रमणलाल देसाई, अनु० मगनलाल जैन	५.५०

कहानी-संग्रह

नगीने : पं० सुदर्शन	३.००
पनघट : ,,	३.५०
पुष्प-लता : ,,	२.५०
दीपाली : ,,	२.५०
सुदर्शन-सुधा : ,,	४.००
विद्रोही आत्माएँ : खलील जिब्रान, सुदर्शन	२.७५
पाप का पुण्य : 'रावी'	१.७५
मेरी श्रेष्ठ कहानी : (लब्धप्रतिष्ठ कथाकारों की श्रेष्ठ कहानियों का संग्रह)	४.००
श्रेष्ठ हास्य-कथाएँ : (हास्य एवं व्यंग्य से परिपूर्ण कथाओं का संग्रह)	४.००
सपनों का टुकड़ा : कुलभूषण	२.५०

किशोर साहित्यमाला

सुलेमान का खज़ाना : कुलभूषण	१.५०
दबी आग : (उपन्यास) रमणलाल देसाई	१.७५
दरियालाल : आ० गुणवन्तराय, अनु०आ०विभुदेव	२.००
अब्राहम लिंकन : अनु० वीरेन्द्रकुमार जैन	२.००
फूलमाला भाग १ : पं० सुदर्शन	१.५०
,, ,, २ : ,, ,,	१.६२
खटपटलाल : पं० सुदर्शन	१.५०
लाल पन्ने : आनन्दप्रकाश जैन	१.७५
मेरी जीवन कहानी : कु० हेलन केलर	२.००
अंगूठी का मुकदमा : पं० सुदर्शन	१.२५
महापुरुषों की कहानियाँ : आचार्य विभुदेव	२.००
बेन्जामिन फ्रेंकलिन : (द्वि० चित्र) अनु० परदेशी	२.५०
अमर सुहागिन : झवेरचन्द मेघाणी, अनु० वीरेन्द्रकुमार जैन	१.५०
सुनहरी नदी का राजा : जॉन रस्कीन, अनु० आ० विभुदेव	०.७५
काशीनाथ : शरच्चन्द्र चट्टोपाध्याय	०.७५
उद्धार : ,, ,,	०.७५
दिव्यचक्षु : (संक्षिप्त) रमणलाल देसाई	२.००
पहली अविराम उड़ान : चार्ल्स० ए० लिंडबर्ग	२.००
अणुशक्ति : गोर्डन इवान्स, अनु० के० श्यामलाल	१.५०
हेनरी फोर्ड : (सचित्र जीवनी) अनु० परदेशी	२.००
मेवाड़ का अरुणोदय : (सचित्र) अनु० एम. एल. मुंशी	२.००

अन्य प्रकाशन

संत ज्ञानेश्वर : प्रसिद्ध संत की चित्रमय जीवन-कथा—आकर्षक द्विरंगी चित्रों में। मुखपृष्ठ संत ज्ञानेश्वर के पचरंगी चित्र से सुशोभित है।	०.६०
सिंहासन बत्तीसी : चक्रवर्ती राजा विक्रमादित्य की कहानी सुन्दर द्विरंगी चित्रों में। सुघड़ छपाई, द्विरंगी मुखपृष्ठ, बढ़िया गेट-अप !	०.७५
ठक्कर बापा : प्रसिद्ध लोक-सेवक व हरिजन और बनवासी के महान् उद्धारक की जीवनी (सचित्र)	०.६०
डॉ० अल्बर्ट स्वीट्जर : काले नीग्रो के प्राणदाता—महान् गोरे जन-सेवक की सचित्र जीवनी	०.६०

वोरा एण्ड कम्पनी पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड

३, राउन्ड बिल्डिंग, बम्बई—२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इलाहाबाद, हिन्दी भवन, १९५५, पृ० २६८, ड० क्रा०, (सचित्र), ७ रु०, के० स० तृ० वि० पु० प्रति०।

भारत का तथ्यपूर्ण सांस्कृतिक इतिहास। परिशिष्ट में १०६ चित्र।

—बलदेव उपाध्याय : **वैदिक साहित्य और संस्कृति :** काशी, शारदा मन्दिर, पृ० ५७६, ड० क्रा०, ५.५० रु०, उ० प्र०, (५५-५६)।

वैदिक साहित्य और वैदिक संस्कृति का परिचयात्मक प्रामाणिक ग्रन्थ। (एम० ए० परीक्षा का पाठ्य-ग्रन्थ)।

—भगवतशरण उपाध्याय : **कालिदास का भारत भाग १ :** काशी, भारतीय ज्ञानपीठ, १९५४, पृ० ३४४, ड० क्रा०, ४ रु०, उ० प्र०, (५५)।

कालिदासकालीन भौगोलिक सामग्री, राजनीति और शासन एवं सामाजिक जीवन की व्याख्या।

—भगवतशरण उपाध्याय : **भारतीय संस्कृति की कहानी :** दिल्ली, राजपाल एण्ड सन्स, १९५७, पृ० ८४, ड० क्रा०, (सचित्र) १.२५ रु०, के० स० जन सा० प्रति० (५५)।

प्रौढ़ोपयोगी सरल एवं रोचक भाषा में भारतीय संस्कृति का परिचय।

—मंगलदेव शास्त्री (डॉ०) : **भारतीय संस्कृति का विकास (वैदिक धारा) :** बनारस, काशी विद्यापीठ, १९५६, पृ० ३१७, ७ रु०, उ० प्र०, (५६-५७)।

विज्ञानमूलक ऐतिहासिक दृष्टि के आधार पर भारतीय संस्कृति की वैदिक धारा के विकास का विवेचन।

—रांगेय राघव : **प्राचीन भारतीय परम्परा और इतिहास :** दिल्ली, आत्माराम एण्ड सन्स, १९५३, पृ० ५१८, १२ रु०, हर० डा० पु०।

प्रागैतिहासिक भारत और उसका भौगोलिक विवेचन, मानचित्रों एवं आंकड़ों सहित।

—राधाकृष्ण शर्मा (प्रो०) : **दुनिया की कहानी :** इलाहाबाद, किताब महल, प्रथम भाग, १९५३, पृ० २८६, डि०, ५ रु०, द्वि० भाग, १९५६, पृ० ३१८, डि०, ५ रु०, बि० रा० प०, (५७-५८)।

सृष्टि के प्रारम्भिक काल से अब तक के मानव के सांस्कृतिक एवं राजनीतिक विकास-क्रम का शृंखलाबद्ध अध्ययन।

—राम अवतार : **भारत की अध्यात्ममूलक संस्कृति :** उ० प्र०, (५२)।

—रामजी उपाध्याय (डॉ०) : **भारत की प्राचीन संस्कृति :** प्रयाग, किताब महल, १९४८, पृ० २८३, डि०, ७.५० रु०, उ० प्र०, (५०)।

वैदिक काल से सम्राट् हर्षवर्द्धन के काल तक की भारतीय संस्कृति का सारगर्भित विवेचन।

—रामधारीसिंह 'दिनकर', (भू० ले० जवाहरलाल नेहरू) **: संस्कृति के चार अध्याय :** दिल्ली, राजपाल एण्ड सन्स, १९५६, पृ० ६६०, डि०, १५ रु०, उ० प्र०, (५६-५७)।

चार विस्तृत अध्यायों में संस्कृति का विवेचन।

१. भारतीय जनता की रचना और हिन्दू संस्कृति का आविर्भाव, २. प्राचीन हिन्दुत्व से विद्रोह, ३. हिन्दू संस्कृति और इस्लाम, ४. भारतीय संस्कृति और यूरोप।

—रामेश्वर गुप्त : **मानव की कहानी (दो भागों में):** ब्यावर, (राजस्थान), चेतनागार, १९५१, प्रथम भाग, पृ० ७६१, द्वि० भाग, पृ० ७६२ से १३६८ तक, ड० क्रा०, (सचित्र), रेखाचित्र सहित, दोनों भागों का मूल्य १६ रु०, उ० प्र०, (५२)।

ज्ञान-विज्ञान और इतिहास के तथ्यों पर आधारित सृष्टि और मानव-विकास का इतिहास, पहला भाग, सृष्टि के आदि से १५०० ई० तक, दूसरा भाग, १५०० से १९५० ई० तक।

—वासुदेवशरण अग्रवाल : **पाणिनिकालीन भारतवर्ष :** बनारस, मोतीलाल बनारसीदास, २०१२ वि०, पृ० ५४०, रॉ०, १० रु०, उ० प्र०, (५५-५६)।

पाणिनि की अष्टाध्यायी का सांस्कृतिक अध्ययन, पाणिनिकालीन भूगोल का एक मानचित्र तथा अनुक्रमणिका सहित।

—विमलचन्द्र पांडेय : **विश्व की सभ्यताएँ :** इलाहाबाद, नव भारती प्रकाशन, १९५४, पृ० ५३६, ड० क्रा०, ७.५० रु०, उ० प्र०, (५५)।

विश्व की विभिन्न सभ्यताओं का दिग्दर्शन।

—राहुल सांकृत्यायन : **बौद्ध संस्कृति :** कलकत्ता, आधुनिक पुस्तक भवन, १९५२, पृ० ४८५, रॉ०, (सचित्र), ११ रु०, उ० प्र०, (५३)।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाँच भागों में—भारत, लंका, बर्मा, जावा, इण्डो-नेशिया, कंबुज, थाइलैण्ड, चीन आदि देशों में फैली हुई बौद्ध संस्कृति का गवेषणात्मक विवेचन।

—सतीशचन्द्र काला : **सिन्धु सभ्यता** : इलाहाबाद, हिन्दुस्तानी एकेडेमी, १९५५, पृ० १०२, रॉ०, (सचित्र), ५ रु०, उ० प्र०, (५५-५६)।

६ अध्यायों में सिन्धु-सभ्यता का प्रामाणिक एवं रोचक वर्णन; परिशिष्ट में १४ चित्र।

—सत्यभक्त (स्वामी) : **संस्कृति समस्या** : वर्धा, सत्याश्रम, १९५२, पृ० १५०, ड० क्रा०, १·५०, उ० प्र०, (५३)।

मानव-संस्कृति सम्बन्धी २१ निबन्धों का संकलन।

इतिहास, यूरोप

—सत्यकेतु विद्यालंकार : **योरप का आधुनिक इतिहास** : मसूरी, सरस्वती सदन, १९५६, पृ० १०४७, डि०, १५ रु०, उ० प्र०, (५१)।

आधुनिक यूरोप का इतिहास (१७८९ से १९५५ तक)।

इतिहास, एशिया

—सत्यकेतु विद्यालंकार : **एशिया का आधुनिक इतिहास, प्रथम भाग** : मसूरी, सरस्वती सदन, १९५२, पृ० ६०७, ९·५० रु०, उ० प्र०, (५४)।

चीन, जापान, कोरिया, इन्डोचाइना, फिलिप्पीन, इण्डोनेशिया, थाइलैण्ड, मलाया और बर्मा का इतिहास, मानचित्र सहित।

इतिहास, भारत

—अतहर अब्बास रिज़वी : **आर्य तुर्ककालीन भारत** : उ० प्र०, (५६-५७)।

—अतहर अब्बास रिज़वी : **खिलजीकालीन भारत** : के० स० तथा उ० प्र०, (५५-५६)।

—अतहर अब्बास रिज़वी : **तुगलककालीन भारत** : उ० प्र०, (५६-५७)।

—अवधबिहारी पांडेय : **पूर्व-मध्यकालीन भारत** : कानपुर, गौतम ब्रदर्स, १९५४, पृ० ४४९, डि०, ७·५० रु०, उ० प्र०, (५५)।

विश्वविद्यालय की कक्षाओं के लिए लिखित पूर्व-मध्यकालीन भारत का इतिहास चित्रों एवं मानचित्रों सहित।

—कृष्णदत्त वाजपेयी : **ब्रज का इतिहास, प्र० खण्ड** : मथुरा, ब्रज साहित्य मण्डल, २०११ वि०, पृ० २७०, डि०, ५ रु०, उ० प्र०, (५५-५६)।

ब्रज का इतिहास मानचित्रों सहित।

—कृष्णा, मेहता (श्रीमती) : **काश्मीर पर हमला** : दिल्ली, सस्ता साहित्य मण्डल, १९५८, पृ० १६८, ड० क्रा०, २ रु०, उ० प्र०, (५२-५३)।

कश्मीर पर कबाइलियों के आक्रमण के वर्णन की एक आपबीती कहानी।

—केशवचन्द्र मिश्र : **चन्देल और उनका राजत्वकाल** : काशी, नागरी प्रचारिणी सभा, २०११ वि०, पृ० ३३५, डि०, (सचित्र), ८ रु०, उ० प्र०, (५५) तथा वि० प्र०, (५४-५५)।

चन्देल शासकों के ऐतिहासिक तथ्यों का संकलन, चयन एवं समीक्षण। परिशिष्ट में १५ चित्र।

हिन्दी के
यथार्थवादी कथाकार
शैवाल सत्यार्थी
की ग्यारह कहानियों का
अनूठा संकलन

और पहिये घूम रहे थे

• भूमिका—उपन्यास-सम्राट् श्री वृन्दावनलाल वर्मा
• कसौटी पर—डॉ० शिवमंगलसिंह 'सुमन'

सुन्दर, सजिल्द, सुरुचिपूर्ण—
मूल्य दो रुपये आठ आने

ज्ञानमन्दिर प्रकाशन
लश्कर (ग्वालियर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

—पारसनाथसिंह : **जगत सेठ** : प्रयाग, भारती भण्डार, २००७ वि०, पृ० ४८४, डि०, ६·५० रु०, बि० रा० प०, (५१-५२)।

जगत सेठ और बंगाल में अंग्रेजी राज्य की नींव का वर्णन। जगत सेठ की वंशावली सहित।

—प्राणनाथ सेठ : **हमारा भारत** : दिल्ली, सर्वोदय प्रकाशन मन्दिर, पृ० ५२, ड० क्रा०, के० स० जन सा० चतुर्थ प्रति०, (५८)।

प्रौढ़ तथा बालोपयोगी साहित्य (भारतवर्ष की सामान्य जानकारी)।

—भगवतशरण उपाध्याय : **भारत की कहानी** : दिल्ली, राजपाल एण्ड सन्स, १९५६, पृ० ६१, (सचित्र), ड० क्रा०, १·२५ रु०, के० स० जन सा० प्रति०, (५४)।

छोटे बच्चों एवं अशिक्षित प्रौढ़ों के लिए भारतीय इतिहास।

—भगवतीप्रसाद पाँथरी : **हर्षवर्द्धन शीलादित्य** : बनारस, जगत शंखधर, १९५३, पृ० १७२, ड० क्रा०, ३·५० रु०, उ० प्र०, (५५)।

उच्च कक्षाओं के लिए लिखित हर्षवर्द्धन शीलादित्य पर एक प्रामाणिक किन्तु संक्षिप्त कृति।

—यदुनन्दन कपूर : **अशोक** : अलीगढ़, कालेज बुक स्टोर्स, १९५५, पृ० २५६, डि०, (सचित्र), ६ रु०, उ० प्र०, (५५-५६)।

मनोवैज्ञानिक स्तर पर अशोक के जीवन तथा कार्यों का आलोचनात्मक अध्ययन।

—राजकुमार : **राजनीतिक भारत** : वाराणसी, हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, १९५६, पृ० ५६०, डि०, १० रु०, उ० प्र०, (५६-५७)।

आँकड़ों और तालिकाओं से युक्त भारत का १७५७ से १९५६ तक का राजनीतिक दृष्टिकोण से अध्ययन।

—राहुल सांकृत्यायन : **हिमालय परिचय (गढ़वाल)** : इलाहाबाद, लॉ जरनल प्रेस, १९५३, पृ० ५६९, ड० क्रा०, (सचित्र), १० रु०, उ० प्र०, (५३)।

गढ़वाल का भौगोलिक, ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक परिचय।

—लक्ष्मीकान्त त्रिपाठी और नारायणप्रसाद अरोड़ा : **कानपुर का इतिहास** : कानपुर, कानपुर इतिहास समिति, १९५०, पृ० ५५८, ड० क्रा०, (सचित्र), १० रु०, उ० प्र०, (५१)।

कानपुर का भौगोलिक, प्राकृतिक एवं ऐतिहासिक क्रमबद्ध इतिहास (१५ अध्याय, ९६ चित्र)।

—लक्ष्मीशंकर व्यास : **महान चौलुक्य कुमारपाल** : काशी, भारतीय ज्ञानपीठ, १९५४, पृ० २८७, ड० क्रा०, ४ रु०, उ० प्र०, (५२)।

बारहवीं शती के अन्तिम हिन्दू-नरेश चौलुक्य कुमारपाल का ऐतिहासिक अध्ययन।

—वासुदेव उपाध्याय : **भारतीय सिक्के** : इलाहाबाद, भारती भण्डार, २००५ वि०, पृ० २६०, डि०, (सचित्र), ५ रु०, उ० प्र०, (५०), ना० प्र० सभा, काशी से पदक प्राप्त।

विभिन्न काल के भारतीय शासकों के सिक्कों का सचित्र प्रामाणिक विवेचन।

—वासुदेव गोस्वामी : **विद्रोही बानपुर** : दतिया, सहयोगी प्रकाशन मन्दिर, १९५४, पृ० ७५, ड० क्रा०, (सचित्र), १.७५ रु०, विं० प्र०, (५३-५४)।

सन् '५७ के गदर का एक विस्तृत अध्याय।

—विश्वनाथ मुकर्जी : **काशी, अतीत और वर्तमान** : बनारस, विश्व साहित्य सदन, १९५६, पृ० १८०, ड० क्रा०, २.५० रु०, उ० प्र०, (५६-५७)।

काशी के इतिहास, नागरिक जीवन, काव्य-जीवन और मस्ती का विशद और सुन्दर वर्णन।

—शांडिल्य : **कालापानी** : नई दिल्ली, सस्ता साहित्य मण्डल, १९५६, पृ० ३२, ड० क्रा०, ३७ न० पै०, के० स० द्वारा अ० प्रौ० सा० प्रति०, (५७)।

अण्डमान, निकोबार द्वीपों का रोचक परिचय।

—शिवदानसिंह चौहान : **काश्मीर देश व संस्कृति** : दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, १९५०, पृ० २०७, डि०, ५ रु०, उ० प्र०, (५२)।

काश्मीर का ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक परिचय।

—सन्तराम : **अलबरूनी का भारत** : प्रयाग, इण्डियन प्रेस, १९२८, के० स० प्र० वि० पु० प्रति०।

ऐतिहासिक अध्ययन।

—हरिहरनिवास द्विवेदी : **त्रिपुरी** : मुरार, विद्या मन्दिर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशन, २०१० वि०, पृ० ८४, राँ०, (सचित्र), २ रु०, उ० प्र०, (५५)।

विदिशा, पद्मावती और बाघ का सचित्र विवेचन।

—सन्तराम वत्स्य : **राजा भोज** : दिल्ली, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, २०१२ वि०, पृ० ४८, डि०, (सचित्र), १ रु०, के० स० जन० सा० प्रति०, (५६)।

राजा भोज के जीवन की झाँकी सरल रोचक भाषा में।

—सत्यकेतु विद्यालंकार : **पाटलीपुत्र की कथा** : इलाहाबाद, हिन्दुस्तानी एकेडेमी, १९४९, पृ० ७१०, ड० क्रा०, १० रु०, उ० प्र०, (५२)।

मगध साम्राज्य के उत्थान और पतन का विवेचन।

इतिहास, नेपाल

—काशीप्रसाद श्रीवास्तव : **नेपाल की कहानी** : दिल्ली, आत्माराम एण्ड सन्स, १९५५, पृ० २९३, डि०, (सचित्र), ८ रु०, उ० प्र०, (५५-५६)।

नेपाल का इतिहास ६१ चित्रों एवं लेखक-परिचय सहित।

—परिपूर्णानन्द पैन्यूली, (भूमिका ले० डॉ० सम्पूर्णानन्द) : **नेपाल का पुनर्जागरण** : टिहरी गढ़वाल, जन साहित्य परिषद्, १९५१, पृ० १५४, ड० क्रा०, २ रु०, उ० प्र०, (५२)।

नेपाल का संक्षिप्त इतिहास आधुनिक पुनर्जागरण तक।

वृहत्तर भारत

—बैजनाथपुरी (डॉ०) : **भारत और कम्बुज** : दिल्ली, भारतीय साहित्य मन्दिर, १९५७, पृ० १७८, ड० क्रा०, (सचित्र), ४ रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

हिन्दचीन में विद्यमान भारतीय प्राचीन उपनिवेश कम्बुज देश का दो खण्डों में सर्वांगीण संक्षिप्त वर्णन।

—रघुराजसिंह 'रंजन' (प्रो०), (भूमिका ले० डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल) : **हमारे पड़ोसी देश** : ग्वालियर, विद्या-मन्दिर प्रकाशन, १९५५, पृ० १४२, (सचित्र), ड० क्रा०, २ ५० रु०, उ० प्र०, (५५-५६)।

स्याम, हिन्दचीन, सिंहल का वर्णन।

परिशिष्ट

अन्य पुरस्कृत पुस्तकें[1]

—अयोध्याप्रसाद झा : **स्वर्ण अभियान** : वि० प्र०, (५४-५५)।

—उर्मिला बनर्जी : **अपना पराया** : वि० प्र०, (५५-५६)।

—कंचनलता सब्बरवाल : **संकल्प** : उ० प्र०, (५५)।

—कमला चौधरी : **प्रसादी कमण्डल** : उ० प्र०, (५६-५७)।

—कुँवरचन्द्र प्रकाश सिंह : **जनकवि जगनिक** : उ० प्र०, (५७-५८)।

—कुँवरचन्द्र प्रकाश सिंह : **बा और बापू** : उ० प्र०, (५६-५७)।

—कुसुमकुमारी चतुर्वेदी : **बाबा तुलसी** : वि० प्र०, (५४-५५)।

—गंगाप्रसाद कौशल : **वीर बालक** : के० स०, (५६)।

—गुलाबचन्द्र काला : **राजस्थान परिचय ग्रन्थ** : रा०, (५४-५५)।

—गोकुलचन्द्र शर्मा : **अभिनय रामायण** : उ० प्र०, (५५-५६)।

—गोविन्द शरण : **घरौंदा, भाग १** : के० स०, (५६)।

—गौरीशंकर लहरी : **अंगारों की सदिया** : महा० शा०।

—जनार्दन प्रसाद श्रीवास्तव : **उदधि** : वि० प्र०, (५५-५६)।

१. इन पुस्तकों का विवरण हमें प्राप्त नहीं हो सका, इसलिए इनकी सूची एक स्थान पर प्रकाशित की जा रही है।

—सम्पादक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

—नरोत्तमदास स्वामी : **महान् बालक** : रा०, (५४-५५)।
—नर्मदाप्रसाद मिश्र : **कलयुग के सतजुगी सपूत** : वि० प्र०, (५२-५३)।
—निरंकारदेव सेवक : **धूप छाया** : उ० प्र०, (५६-५७)।
—निरंकारदेव सेवक : **रिमझिम** : वि० प्र०, (५२-५३)।
—परमात्मानन्द शर्मा : **छत्रपति** : उ० प्र०, (५२)।
—पुरुषोत्तमलाल जैन : **दिव्य ध्वनि** : महा० शा०।
—प्रभुदयाल गोस्वामी : **खलिहान की रात** : वि० प्र०, (५५-५६)।
—बद्रीनारायण शुक्ल : **टिमटिम** : महा० शा०।
—बालचन्द्र जैन : **कलिंग चक्रवर्ती** : वि० प्र०, (५३-५४)।
—बेनीप्रसाद सिंह : **स्वर्ग** : उ० प्र०, (५२)।
—भगवतशरण उपाध्याय : **यह सोने का देश** : के० स०, (५६)।
—भैयालाल व्यास : **आग पानी** : वि० प्र०, (५२-५३)।
—महावीरप्रसाद अग्रवाल : **आठ सेर चावल** : वि० प्र०, (५४-५५)।
—रघुवरदयाल मिश्र : **हैदरअली** : के० स०।
—रविकमल मिश्र : **श्रम का मूल्य** : उ० प्र०, (५७-५८)।
—रहीम, एस० ए० : **मार्गदर्शी महात्मा** : के० स०,(५६)।
—राजकुमारी विन्दल : **हमारी समस्याएँ** : उ० प्र०,(५१)।
—रामउजागर दुबे : **कर्म प्रधान** : उ० प्र०, (५७-५८)।
—रामऋषि शुक्ल : **उन्मेष** : उ० प्र०, (५७-५८)।
—रामकुमार वर्मा : **विजयपर्व** : उ० प्र०, (५६-५७)।
—राममूर्ति अंचल : **अचला** : उ० प्र०, (५७-५८)।
—रामावतार : **सिद्धान्त सार** : उ० प्र०, (५०)।
—लीला सिंघवी (श्रीमती) : **सुहाग रागिनी** : वि० प्र०, (५४-५५)।
—विश्वनाथ तिवारी : **मानचित्र निरूपण** : उ० प्र०, (५६-५७)।
—ब्रजकिशोर वर्मा 'श्याम' : **विप्लव के अग्रदूत** : वि० प्र०, (५४-५५)।
—शिरोदकार, एस०के० : **बातचीत, एक से पाँच भागों में** : के० स०, (५६)।
—शीला शर्मा : **धरती माता** : के० स०, (५५)।
—शीला शर्मा : **मछलियों का देश** : वि० प्र०, (५६-५७)।
—श्याम तिवारी : **दूर्विग्रक्षत** : उ० प्र०, (५६-५७)।
—श्रीचन्द्र जैन : **भुइयाँ परे हैं लाल** : वि० प्र०।
—सत्यभक्त (स्वामी) : **ईमान** : उ० प्र०, (५२-५३)।
—सत्यभक्त (स्वामी) : **भावगीत** : उ० प्र०, (५२-५३)।
—सत्यभूषण तथा शोभारानी : **विज्ञान दर्शन चित्रावली** : के० स०, (५६)।
—सद्गुरुशरण अवस्थी : **साहित्य तरंग** : उ० प्र०, (५६-५७)।
—सुरेशसिंह : **जीवन की दुनियाँ** : के० स०, (५६)।
—हबीबुर्रहमान शास्त्री : **तत्त्व प्रकाश** : उ०प्र०,(५६-५७)।
—हरगोविन्द गुप्त : **गाँव का मेरुदंड किसान** : वि० प्र०, (५४) तथा उ० प्र०, (५५)।
—हरिमोहनलाल श्रीवास्तव : **भारत भक्ति** : वि० प्र०, (५२-५३)।
—हरिमोहनलाल श्रीवास्तव : **शिशु बोध** : वि० प्र०, (५३-५४)।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी लेखक-चित्रावली

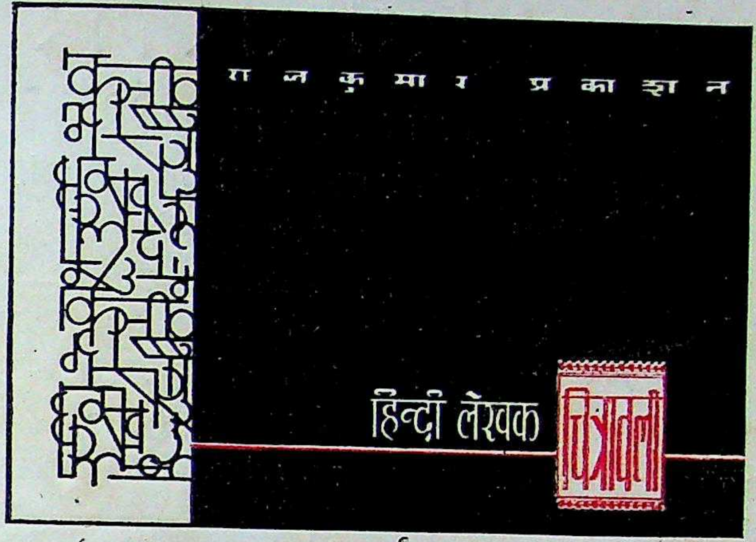

मूल्य १५) मात्र

'हिन्दी लेखक-चित्रावली' लम्बी प्रतीक्षा के बाद अब छपकर तैयार है, और इसकी प्रतियाँ ग्राहकों को भेजी जा रही हैं। इसमें निम्न २५ लेखकों के चित्र प्रकाशित किये गए हैं :

सर्वश्री भारतेन्दु हरिश्चन्द्र	रामवृक्ष बेनीपुरी	शिवपूजन सहाय
आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी	भगवतीचरण वर्मा	सुमित्रानन्दन पन्त
अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'	सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय'	मैथिलीशरण गुप्त
प्रेमचन्द		माखनलाल चतुर्वेदी
आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी	उपेन्द्रनाथ 'अश्क'	वृन्दावनलाल वर्मा
महादेवी वर्मा	आचार्य रामचन्द्र शुक्ल	इलाचन्द्र जोशी
सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'	श्याम सुन्दरदास	लक्ष्मीनारायण मिश्र
रामधारीसिंह 'दिनकर'	जयशंकर प्रसाद	यशपाल
जैनेन्द्र कुमार	राहुल सांकृत्यायन	

प्रत्येक चित्र सर्वोत्तम विदेशी आर्ट पेपर पर मुद्रित है और उसके नीचे लेखक व उसकी मुख्य कृतियों का संक्षिप्त परिचय दिया गया है। हिन्दी में पहली बार इस प्रकार का एल्बम प्रकाशित हुआ है। किसी भी हिन्दी प्रेमी व संस्था के लिए इस 'चित्रावली' का आकर्षण स्वाभाविक है।

यदि आपने अब तक आर्डर न भेजा हो तो आज ही लिखें :

राजकुमार प्रकाशन, प्रयाग

की ओर से प्रकाशक

राजकमल

राजकमल प्रकाशन

दिल्ली बम्बई इलाहाबाद पटना मद्रास

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Regd. No. D – 594

भारत सरकार द्वारा

शिक्षण संस्थाओं, ग्राम पंचायतों, स्कूल लायब्रेरियों, कम्यूनिटी प्रोजेक्टों, टैकनिकल इन्स्टीट्यूटों, सामाजिक व शासकीय संस्थाओं द्वारा अपनाया जाने वाला उच्चतम साहित्य यहाँ से लीजिए ।

देहली में पुस्तकों की बड़ी दुकान

हमारी प्रकाशित टैकनिकल, इण्डस्ट्रियल तथा अन्य सभी प्रकार के साहित्य की पुस्तकों के अतिरिक्त

भारत के प्रायः सभी प्रमुख हिन्दी प्रकाशकों द्वारा प्रकाशित उत्कृष्ट तथा उपयोगी समीक्षात्मक साहित्य, उपन्यास, कहानी, नाटक, एकांकी, जीवन-चरित्र, आत्म-कथाएँ, ग्रामोपयोगी, महिलोपयोगी, नवयुवकोपयोगी, समाज-शिक्षण, प्रौढ़-साहित्य, मनोविज्ञान, शिक्षा-विज्ञान, इतिहास, राजनीतिक विज्ञान, वनस्पति-विज्ञान, जन्तु-विज्ञान, भौतिक-विज्ञान, रसायन-विज्ञान, नीति-विज्ञान, संगीत-विज्ञान, तर्क-शास्त्र, समाज-शास्त्र, धार्मिक तथा अध्यातम साहित्य और ज्योतिष सम्बन्धी, तिजारती, तिब्बी, डाक्टरी, आयुर्वेदिक, होम्योपैथिक, जन्त्र-मन्त्र-तन्त्र, पूजापाठ, बालोपयोगी और स्त्रियोपयोगी तथा साथ-साथ हर प्रकार के उपन्यास, कहानियाँ आदि आकर्षक पुस्तकें आपको हमारे यहाँ सुविधा से मिलेंगी । हिन्दी में हर एक विषय की पुस्तक के लिए हमें लिखें ।

हमारे प्रकाशन के बिना आपकी लायब्रेरी निश्चित रूप से अधूरी और आपका साहित्य विशेष रूप से अधूरा है और विशेषकर टैकनिकल, इण्डस्ट्रियल तथा एग्रीकल्चरल साहित्य, जिसकी आज के समय में सबसे अधिक आवश्यकता है, विशेष रूप से प्रकाशित किया गया है । आप अपने संग्रह को पूर्ण और साहित्य-रुचि को पूर्ण करने के लिए अपने शहर के मुख्य पुस्तक-विक्रेता से हमारे निश्चित मूल्य पर हमारे प्रकाशन प्राप्त करें, इसके अतिरिक्त हमें सीधा भी लिख सकते हैं—

हिन्दी की पुस्तकों का वृहद् सूचीपत्र केवल पच्चीस नये पैसे के टिकट डाक खर्च के लिए भेजकर मुफ्त मँगाइये

आवश्यक सूचना—हिन्दी के साथ-साथ हमारे यहाँ उर्दू तथा गुरुमुखी की भी हर प्रकार की पुस्तकें हर समय तैयार मिलती हैं ।

लायब्रेरियों तथा पुस्तक-विक्रेताओं को पर्याप्त कमीशन

गवर्नमेण्ट आर्डर सप्लायर

देहाती पुस्तक भण्डार, चावड़ी बाजार, दिल्ली

PHONE : 20030

लोकल ग्राहकों को फोन द्वारा माल सप्लाई करने का पूरा प्रबन्ध है ।

श्री देवराज, मैनेजिंग डाइरेक्टर, राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, दिल्ली के लिए श्री गोपीनाथ सेठ द्वारा नवीन प्रेस, दिल्ली में मुद्रित ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वर्ष ५ अगस्त, १९५८ अंक १२

प्रकाशन समाचार

वार्षिक रु० ३.०० इस अंक का १)

पुरस्कृत पुस्तक सूची विशेषांक

सत्तर श्रेष्ठ कहानियाँ

उपेन्द्र नाथ 'अश्क'

*'अश्क' प्रेमचन्द के ज़माने से कहानी लिख हैं, लेकिन जहाँ अन्य कथाकार वहीं-के-वहीं रह गए 'अश्क' नयी प्रेरणाओं और विचार-धाराओं, नवी दृष्टिकोण और शिल्प-विधान अपनाते हुए निरन्त प्रगति करते रहे।

*प्रेमचन्द के बाद की लगभग चौथाई सदी हिन्दी कहानी ने जो प्रगति की है, 'अश्क' कहानियाँ उसका प्रतीक हैं और प्रस्तुत संग्रह पाठकों को उस विकास का बिम्ब देखने को मिलेगा

*संग्रह में भूमिका-स्वरूप लेखक का एक अ मनोरंजक संस्मरण भी संकलित है, जिसमें लेखक अपने बत्तीस वर्षों के कहानी-लेखन की कहा कही है।

*आज की कहानी पर 'अश्क' की गहरी छा है। संग्रह में 'अश्क' की चुनी हुई सत्तर कहानि संकलित हैं, जिन्हें लेखक ने स्वयं अपनी डेढ़-दो कहानियों में से चुना है।

*चार रंग का मुख पृष्ठ, डबल डिमाई एंटि काग़ज़, मोनो की छपाई, रेक्सिन की जिल्द मूल्य १५)

नीलाभ प्रकाशन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सप्त सिन्धु प्रकाशन

का आयोजन

आपकी जेब की पहुँच में ही—

हिन्दी में प्रथम बार देशीय तथा विदेशीय भाषाओं का सुन्दर, सरस एवं सर्वोत्कृष्ट साहित्य—

सस्ते **जेबी सीरीज़** में

साहित्य के बिना हमारा जीवन अधूरा है। किन्तु हमारे देश में सस्ते मूल्य पर अच्छे साहित्य की नितान्त आवश्यकता होते हुए भी अभी तक हिन्दी में इसका पूर्ण रूप से अभाव रहा है। 'सप्त सिन्धु' ने इस अभाव को पूर्ण कर हिन्दी को नया जीवन दिया है। अब प्रत्येक हिन्दी पाठक अपनी जेब की सामर्थ्य में ही (बहुत सस्ते दामों पर) श्रेष्ठ-से-श्रेष्ठ **'सप्त सिन्धु'** के **'जेबी सीरीज़'** की पुस्तकें खरीदकर पढ़ सकता है, और इस प्रकार नगण्य मूल्य में ही साहित्य निकुञ्ज की अनमोल कलियाँ आपके विचारों का शृंगार बन सकती हैं।

इस सीरीज़ की प्रत्येक पुस्तक छपाई तथा गेट-अप में अंग्रेजी पाकेट बुक्स की तरह सुन्दर तथा जिल्द में उनसे कहीं अधिक मजबूत है।

इस सीरीज़ में अनेक भाषाओं से चुने हुए 'दस' उपन्यास अब प्रेस में हैं ? प्रत्येक का मूल्य केवल रु० १'७५ मात्र। विशेष जानकारी के लिए कृपया तुरन्त लिखें।

भारत-भर के लिए एकमात्र वितरक

भारती एसोसिएशन पब्लिकेशन्स

हिन्दी में अन्तर्राष्ट्रीय भाषा साहित्य के प्रकाशक

गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश

भारती एसोसिएशन पब्लिकेशन्स का नवीन प्रकाशित साहित्य

शान्तिनिकेतन	: रवीन्द्रनाथ ठाकुर सजिल्द	६'००
उठती दीवारें हिलती नींव	: डॉ० स्कॉट निअरिंग ,,	५.५०
महाकवि अकबर और उनका उर्दू काव्य :	उमरावसिंह कारुणिक ,,	३.५०
उसने कहा	: खलील जिब्रान ,,	२.००
आत्माएँ बोलती हैं	: डी० ओ० राबर्ट्स ,,	३.७५
चिर यौवन	: डॉ० जान एच० मानस	१.५०
जीवन-रहस्य	: डॉ० जान एच० मानस	१.५०
नृत्य और स्वास्थ्य	: डॉ० जान एच० मानस	१.५०
हाज़िरजवाबी और विनोद	: शिवनाथसिंह शाण्डिल्य	०.८५
अणु और आत्मा	: डॉ० जे० ट्रस्ट सजिल्द	४'००
धूम्रपान : समस्या और उपाय	: डॉ० मानस ,,	३.००
धार्मिक चरित्र (१)	: डॉ० ज्वालाप्रसाद सिंहल	२.५०
धार्मिक चरित्र (२)	: डॉ० ज्वालाप्रसाद सिंहल	२.५०
धार्मिक व्याख्या	: डॉ० ज्वालाप्रसाद सिंहल	२.००
धार्मिक सिद्धान्त	: डॉ० ज्वालाप्रसाद सिंहल	१'५०
धार्मिक तत्त्व	: डॉ० ज्वालाप्रसाद सिंहल	१.५०
ग्राम सुधार	: शंकरसहाय वर्मा	०.५०
तारिका (कहानी-संग्रह)	: कृष्णचन्द्र मुद्गल	१.२५
सावन का गीत—कविताएँ	: शान्तिदेवी सिंहल	१.२५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशन समाचार

: वर्ष ५ :
: अंक १२ :

सम्पादक : श्री प्रकाश, डायरेक्टर इंचार्ज, राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड

इस विशेषांक के साथ **प्रकाशन समाचार** के जीवन के पाँच वर्ष पूरे हो रहे हैं। सितम्बर १९५३ में पहले अंक के अग्रलेख में इस पत्र के उद्देश्यों की घोषणा की गई थी : प्रकाशकीय समस्याओं पर सामूहिक रूप से विचार करने के लिए एक मंच उपस्थित करना तथा प्रकाशकों, पुस्तक-विक्रेताओं तथा पुस्तकालयों के परस्पर सम्बन्धों को दृढ़तर बनाना। इन्हीं उद्देश्यों की पूर्ति के प्रयासों में अब तक हम चार विशेषांक प्रकाशित कर चुके हैं : (१) **साहित्य सूची विशेषांक**, सितम्बर १९५४, जिसमें हिन्दी के उपन्यास, कहानी और नाटक आदि की पुस्तकों को छोड़कर अन्य प्रायः सब विषयों की पुस्तकों की सविवरण सूची एकत्र की गई थी, (२) **उपन्यास-कहानी-नाटक विशेषांक**, फरवरी १९५५ (३) **उत्कृष्टतम पुस्तक सूची परिशिष्टांक**, जनवरी १९५६, जिसमें एक विशेष सम्पादन-समिति द्वारा हिन्दी की १२२४ श्रेष्ठतम पुस्तकों का ब्योरा दिया गया था, तथा (४) **बाल-किशोर और प्रौढ़ साहित्य विशेषांक**, सितम्बर १९५६। इन विशेषांकों की सामग्री का चयन प्रामाणिक और वैज्ञानिक था और इनकी उपयोगिता आज भी किसी कद्र कम नहीं हुई।

प्रस्तुत अंक **पुरस्कृत पुस्तक सूची विशेषांक** है। इसमें १९४७ से १९५८ तक की हिन्दी की पुरस्कृत पुस्तकों का विषयानुसार वर्गीकृत संक्षिप्त परिचय दिया गया है। प्रत्येक पुस्तक का विवरण प्रस्तुत करते समय सूचीकरण की वैज्ञानिक विधि के अनुसार विषय, मूल लेखक, सम्पादक, अनुवादक, पुस्तक का नाम, खण्ड, भाग, प्रकाशन स्थान, प्रकाशक, प्रकाशन वर्ष, पृष्ठ संख्या, चित्र, आकार, मूल्य, पुरस्कर्ता, वर्ष जिसमें पुरस्कार दिया गया, एवं प्रतिपाद्य विषय का संक्षिप्त परिचय, इन १६ अंशों का समावेश एवं निर्देश किया गया है।

केन्द्रीय तथा राज्य सरकारों के शिक्षा मंत्रालयों एवं हिन्दी की कतिपय मान्य संस्थाओं से प्राप्त सूचनाओं के अनुसार १९४७ से १९५८ तक की हिन्दी की १०६१ पुस्तकों के लेखक पुरस्कार प्राप्त कर चुके हैं। विभिन्न सरकारों व संस्थाओं द्वारा स्वतन्त्रता-प्राप्ति के बाद के पहले दशक में निम्नलिखित संख्याओं में पुरस्कार वितरित किये गए : केन्द्रीय सरकार—८१, साहित्य अकादेमी—३, उत्तर प्रदेश सरकार—७५२, विन्ध्य प्रदेश सरकार—१२६, राजस्थान सरकार—८, महाकोशल शासन साहित्य परिषद्—१८, नागरी प्रचारिणी सभा—२२, हिन्दी साहित्य सम्मेलन—१६, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्—२५, हरजीमल डालमिया पुरस्कार—१०।

पुरस्कार प्रकाशित पुस्तकों पर ही नहीं, पाण्डुलिपियों पर भी दिये जाते रहे हैं, और कई पुस्तकें ऐसी हैं जिन पर एकाधिक स्रोत से पुरस्कार दिये गए हैं। इस प्रकार छँट-कर इस विशेषांक में सम्मिलित पुस्तकों की संख्या ९८० रह गई है। ५२ पुस्तकों के विषय में हम केवल उनका नाम और पुरस्कृत संस्था व सरकार का नाम ही जान सके; इन पुस्तकों की सूची विशेषांक के परिशिष्ट में दी गई है। ८० ऐसी अन्य पुस्तकें थीं जो हमें विवरण के उल्लेख के लिए प्राप्त नहीं हो सकीं; उनका वर्गीकरण तो कर दिया गया है, लेकिन उनका परिचय नहीं जा सका। बाल और प्रौढ़ोपयोगी पुस्तकों का उल्लेख भी सम्बन्धित विषय के वर्गीकृत शीर्ष के अन्तर्गत दिया गया है, अलग से नहीं।

इन ९८० पुरस्कृत पुस्तकों का विषयानुसार विश्लेषण रोचक होगा। उपन्यास, कहानी, नाटक तथा निबन्ध,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आलोचना आदि की ५६०, समाजशास्त्र और इतिहास के विभिन्न अंगों से सम्बन्धित विषयों की ३२४ तथा विज्ञान आदि विषयों की ४४ पुस्तकें पुरस्कृत हुई हैं। कहा जा सकता है कि पुरस्कारदातृ सरकारें और संस्थाएँ विज्ञान आदि विषयों की पुस्तकों के लेखकों को पुरस्कार आदि देकर प्रोत्साहित नहीं करना चाहतीं, अथवा विज्ञान सम्बन्धी साहित्य का विशेष समर्थन अभी राजकीय अथवा हिन्दी की प्रमुख संस्थाओं की नीति का भाग नहीं बना है; या यह भी कि विज्ञान-साहित्य के उल्लेखनीय लेखक अभी हिन्दी में नहीं हैं। यह भी हो सकता है कि पुरस्कार देने का आयोजन मुख्यतया ललित और कुछ हद तक समाजशास्त्र के विभिन्न अंगों के साहित्य के लिए ही किया गया है। यहाँ किसी सरकारी अथवा संस्थागत नीति की टिप्पणी करना अभीष्ट नहीं है, हिन्दी-साहित्य के अत्यन्त महत्त्वपूर्ण—रचनात्मक, वैज्ञानिक—साहित्य के अभाव को स्पष्ट करके दिखाना ही है। न हमारा कर्तव्य या प्रयोजन साहित्य की उन अधिकांश पुरस्कृत पुस्तकों की ओर संकेत करते हुए यह बताना ही है कि हिन्दी में बहुत बड़ी संख्या उन पुस्तकों की है जिनके लेखक असंदिग्धतापूर्वक पुरस्कार पाने के अधिकारी थे, लेकिन जो पुरस्कार-प्रतियोगिताओं में पड़ना सम्मान की बात नहीं समझते और पुरस्कार देने की वर्तमान नीति और कार्यकलाप को भी संशय की दृष्टि से देखते हैं। बहुत लोगों को इन पुरस्कारों का प्रयोजन स्पष्ट नहीं है, और शायद स्वयं पुरस्कार देने वालों को भी। जिस लेखक को पुरस्कार दिया जाता है, उसकी कृति को अवश्य ही उत्तम समझा जाता होगा। लेकिन केन्द्रीय सरकार के शिक्षा-मन्त्रालय के अतिरिक्त अन्य सब सरकारें अपने ही शिक्षा विभागों द्वारा पुरस्कृत और श्रेष्ठ घोषित पुस्तकों को उपेक्षा की दृष्टि से देखती हैं; सरकारी अनुदान प्राप्त करने वाले पुस्तकालयों द्वारा इनकी खरीद आवश्यक नहीं समझी जाती। न किसी अन्य सरकार अथवा केन्द्र द्वारा पुरस्कृत पुस्तकों के प्रति किसी अन्य क्षेत्र में रुचि ही दिखाई पड़ती है। पुरस्कृत पुस्तकें श्रेष्ठ साहित्य की हैं—इनका अधिकाधिक प्रचार होना चाहिए—यह तर्क कहीं कार्यान्वित होता नहीं दीखता। स्वयं सरकार की ऐसी उपेक्षा से पाठकवर्ग में भी पुरस्कृत पुस्तकों के प्रति कोई खास लगाव पैदा नहीं हो सका।

इस विशेषांक को प्रकाशित करने का हमारा एक उद्देश्य इन श्रेष्ठ मानी गई पुस्तकों की ओर विशेष रूप से पुस्तकालयों और पाठक-वर्ग का ध्यान आकर्षित करना है।

प्रस्तुत विशेषांक के पूर्व विज्ञापनों में हम इस ओर संकेत कर रहे थे कि इसमें संकलित प्रत्येक पुस्तक का ड्यूयी दशमलव पद्धति के अनुसार विषय-वर्गांक भी दिया जायगा, किन्तु कुछ कारणों से वैसा नहीं किया जा सका। वर्गीकरण की उक्त पद्धति बहुत विस्तृत है और विशेषांक की पुस्तकें थोड़ी हैं, एवं कुछ प्रमुख विषयों पर ही लिखी हुई हैं। ऐसी स्थिति में दशमलव वर्गीकरण पद्धति के अनुसार पच्चीस प्रतिशत मुख्य शीर्षकों के अतिरिक्त अन्य सभी शीर्षक कोरे छूट जाते। फिर यदि सूक्ष्म वर्गीकरण कर भी दिया जाता तो अधिकांश शीर्षकों के अन्तर्गत तो एक-एक पुस्तक ही आ पाती और शीर्षकों एवं उपशीर्षकों की अधिकता से विशेषांक का आकार व्यर्थ ही बढ़ जाता। फलतः यह विशेषांक व्यावहारिक कम रह जाता और टैकनिकल अधिक हो जाता।

अंक में सम्मिलित पुस्तकों के उसी संस्करण का उल्लेख है जो अब प्राप्य हैं। जिस संस्करण पर पुरस्कार दिया गया था, उसका निश्चयपूर्वक जानना कठिन था।

पुरस्कृत पुस्तक सूची विशेषांक के लिए सम्बन्धित पुस्तकों का विवरण स्थानीय पुस्तक-विक्रेताओं के स्टॉक के अतिरिक्त हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग के हिन्दी संग्रहालय, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी के पुस्तकालय एवं लखनऊ की अमीनुद्दौला पब्लिक लाइब्रेरी से प्राप्त किया गया है। हम इनसे प्राप्त सहयोग के प्रति आभार प्रकट करते हैं।

इस अंक के सम्पादक—श्री ओं प्रकाश, श्री द्वारकाप्रसाद शास्त्री

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुरस्कृत पुस्तक सूची विशेषांक में प्रयुक्त

सांकेतिक शब्दावली

उ० प्र० = उत्तर प्रदेश सरकार, लखनऊ।

के० = केन्द्रीय सरकार, नई दिल्ली।

के० स० प्र० वि० पु० प्रति० = केन्द्रीय सरकार प्रथम विशिष्ट पुस्तक प्रतियोगिता।

के० स० ज० सा० प्रति० = केन्द्रीय सरकार जन साहित्य प्रतियोगिता।

के० स० बा० सा० प्रति० = केन्द्रीय सरकार बाल साहित्य प्रतियोगिता।

ड० क्रा० = डबल क्राउन।

डि० = डिमाई।

ना० प्र० स० = नागरी प्रचारिणी सभा, काशी।

फु० स्के० = फुल स्केप।

बि० रा० प० = बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना।

म० = मध्य भारत सरकार (अब मध्य प्रदेश)।

महा० शा० सा० प० = महाकोशल शासन साहित्य परिषद्, भोपाल।

रॉ० = रॉयल।

रा० = राजस्थान सरकार, जयपुर।

रा० प्र० प० = राष्ट्रभाषा प्रचार परिषद्, वर्धा।

वि० प्र० = विन्ध्य प्रदेश सरकार (अब मध्य प्रदेश)।

सा० अ० = साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली।

ह० डा० = हरजीमल डालमिया पुरस्कार, दिल्ली।

हि० सा० स० = हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विज्ञापन-सूची

आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली ४३४
आदर्श पुस्तक भण्डार, कलकत्ता ४८९
आराधना प्रकाशन, वाराणसी ५०६, ५२९
ओरिएण्टल बुक डिपो, दिल्ली ५०३
कल्याणदास एण्ड ब्रदर्स, वाराणसी ५०१
किताबिस्तान, इलाहाबाद ५२४
गुप्ता स्टोर्स, जमशेदपुर ४९५
छात्र हितकारी पुस्तकालय, इलाहाबाद ४८८
देशमुख आणि कम्पनी, पूना ४४९
देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली कवर
न्यू लिटरेचर, इलाहाबाद ४३३
नारायणदत्त सहगल एण्ड सन्स, दिल्ली ५१८
नीलाभ प्रकाशन, इलाहाबाद कवर
नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, दिल्ली ४४५, ४७०, ५२१
बम्बई प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, बम्बई ४३७
भारती एसोसिएशन पब्लिकेशन्स, गाज़ियाबाद कवर
भारती प्रेस प्रकाशन, इलाहाबाद ४९२
भारतीय ज्ञानपीठ, वाराणसी ४९१
भारती साहित्य सदन, नई दिल्ली ४९१
मञ्जीत पब्लिशर्स, जालन्धर ४५२
मोहिनी प्रकाशन, देहरादून ४५६
राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, इलाहाबाद, बम्बई, पटना, मद्रास ४४१, ४६२, ४७५–८०, ५०४, कवर
राजकिशोर पब्लिकेशन्स, इलाहाबाद ५१
राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली ४५९, ४८५, ५१७, ५२
विजय प्रकाशन, भोपाल ४४
विश्व विद्यालय प्रकाशन, गोरखपुर ४३९, ४६५, ४९४, ५२७
वोरा एण्ड कम्पनी, बम्बई ५१५, ५३१
श्रेष्ठ साहित्यागार, पटना ५२६
संगीत कार्यालय, हाथरस ४५०
सरस्वती पुस्तक सदन, आगरा ५०७
सुरुचि प्रकाशन, हैदराबाद ४७
हिन्दी भवन, जालन्धर, इलाहाबाद ४५७, ५१
हिन्दी साहित्य भण्डार, लखनऊ ४३८, ४५३, ४८४, ५२३
हिन्दी साहित्य संसार, दिल्ली ४३६
हिन्दुस्तानी एकेडेमी, इलाहाबाद ४४७, ४६६-६७
ज्ञानमण्डल लिमिटेड, वाराणसी ४४२, ५०६
ज्ञान मन्दिर प्रकाशन, लश्कर (ग्वालियर) ५३३

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषय सूची

सामान्य विषय

पुस्तकालय-विज्ञान	४३५
समाचार-पत्र, सम्पादन कला	४३५

दर्शन

दर्शन, सामान्य	४३५
मनोविज्ञान का क्षेत्र, स्वप्न	४३५
सामान्य मनोविज्ञान	४३५
तर्कशास्त्र	४३८
नीतिशास्त्र, आचार	४३८
भारतीय दर्शन	४३८
अन्य दर्शन	४३९

धर्म, सामान्य, समाज-शास्त्र

धर्म, सामान्य	४३९
समाजशास्त्र, सामान्य	४४३
संख्यातत्त्व	४४४
राजनीति	४४४
अर्थशास्त्र	४४६
दण्डविधि	४४८
समाज-कल्याण	४४८
शिक्षा	४५१
वाणिज्य, व्यापार	४५१
प्रथाएँ, परम्पराएँ	४५१

भाषा-शास्त्र

भाषा-शास्त्र, सामान्य	४५२

शुद्ध विज्ञान

शुद्ध विज्ञान, सामान्य	४५४
गणित	४५४
ज्योतिष	४५५
पदार्थ विज्ञान	४५५
रसायन-शास्त्र	४५५
भू-विज्ञान	४५५
पुरातन जीव-विज्ञान	४५५
वनस्पति विज्ञान	४५५
जन्तु विज्ञान	४५५

व्यावहारिक विज्ञान

चिकित्सा	४५८
इंजीनियरिंग	४६४
कृषि (गोपालन उद्यान विज्ञान आदि सहित)	४६४
व्यापार एवं व्यापार-प्रणाली	४६५
वास्तुशास्त्र	४६५

कलाएँ एवं मनोरंजन

कला, सामान्य	४६५
भास्कर्य (स्कलप्चर)	४६८
अंकन, विभूषण (ड्राइंग, डेकोरेशन, डिज़ाइन)	४६८
चित्रकला	४६८
संगीत	४६८
मनोरंजन	४६८

साहित्य

साहित्य, सामान्य	४६९
हिन्दी-साहित्य, सामान्य	४६९
साहित्यिक कोष	४७०
हिन्दी काव्यशास्त्र	४७१
हिन्दी साहित्य, इतिहास	४७३

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आलोचना : सिद्धान्त - - ४७४

हिन्दी काव्य - - ४७४

काव्य, अनूदित - - ४८७

हिन्दी नाटक - - ४८७

हिन्दी नाटक, एकांकी - - ४९०

हिन्दी कथा-साहित्य, उपन्यास - - ४९३

अनूदित उपन्यास - - ४९९

हिन्दी कथा-साहित्य, कहानियाँ - - ५००

कहानी अनूदित, - - ५०५

हिन्दी आलोचनात्मक निबन्ध, कवि और काव्य ५०५

आलोचना, मत साहित्य - - ५११

आलोचना, काव्य सामान्य - - ५११

आलोचना, नाटक - - ५१३

आलोचना, कथा-साहित्य - - ५१४

हिन्दी निबन्ध, सामान्य - - ५१५

पत्र-साहित्य - - ५१६

हास्य-व्यंग्य साहित्य - - ५१९

लोक-साहित्य - - ५२०

लोक-गीत - - ५२०

लोक-कथाएँ - - ५२१

उर्दू-साहित्य - - ५२२

उर्दू साहित्य-काव्य - -

संस्कृत, पालि एवं प्राकृत साहित्य -

अन्य साहित्य - -

इतिहास

इतिहास, सामान्य - -

भूगोल - -

यात्रा और भ्रमण - -

जीवनी, आत्मकथा - -

जीवनी - -

भेंट, साक्षात्कार - -

संस्मरण - -

प्राचीन इतिहास एवं संस्कृति - -

इतिहास, यूरोप - -

इतिहास, एशिया - -

इतिहास, भारत - -

इतिहास, नेपाल - -

बृहत्तर भारत - -

परिशिष्ट

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१९५५-५६ में

उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा पुरस्कृत

श्री विद्यानिवास मिश्र का बहुप्रशंसित निबन्ध-संग्रह

कदम की फूली डाल

मूल्य : ३·८० रुपये

और हमारे ये प्रकाशन जिन्हें पाठकों ने हाथों-हाथ खरीदकर अपनी गुणग्राहकता से पुरस्कृत किया

स्काउटिंग

कोमल पद शिक्षा (गाइडस के लिए)	१)
गुरुपद शिक्षण	२)
कोमल पद शिक्षण	१॥)
ध्रुव पद शिक्षण	१)
सिंह शावक (कब) नायक	१)
सिंह शावक (कब)	१)
खेल	२॥।)
स्काउट ड्रिल	१॥)
खेल पचासा	१)
आग बुझाने का हुनर	१।)
ध्वज शिष्टाचार	॥)
कैम्प-फ़ायर	१)
रसोइया	।=)
राष्ट्रीय झण्डा	॥)
हमारे बारह गीत और सोलह सिंहनाद	=)

बाल साहित्य

सम्पादक जी	।=)
काठ का घोड़ा	।=)
ननिहाल को	।=)
बहादुर राजकुमार	।=)
मेरी चिट्ठी	।=)
भयानक सपना	।=)
मुन्नू की चिट्ठी	।=)
हीरे का पेड़	।=)
सेवाग्राम चित्रावली	१।)
अमर बापू	१।)

महिलोपयोगी साहित्य

अच्छी बुनाई	३)
घर की लक्ष्मी	२॥।)
नई नारी	१॥)

कुछ साहित्यिक प्रकाशन

आशु कवि मोहन	: पं० जगमोहन नाथ अवस्थी	५॥)
प्रतिध्वनि	: पं० जगमोहन नाथ अवस्थी	४॥)
अन्धकार का अन्त	: हरीशंकर मेहरोत्रा	१॥।)
प्लाट का मोर्चा	: शमशेर बहादुर सिंह	१॥)
नीराजना	: नर्मदा प्रसाद 'खरे'	१॥।)
धूल के बादल	: ब्रह्मदत्त सिंह	२)
संघमित्रा और सिंहल विजय	: रामवृक्ष बेनीपुरी	१॥)
बिखरे मोती (भाग १-२)	: राजकुमार जौहरी	२)

विविध

ग्राम विज्ञान	: रामसुमेर त्रिपाठी	॥।=)
ग्राम विज्ञान (भाग १-२)	: रामसुमेर त्रिपाठी	१।)
लोक गीत संग्रह	: वाचस्पति गैरोला	।)

उत्तर प्रदेश माध्यमिक विद्यालयों के पुस्तकालयों तथा ग्राम-पंचायत पुस्तकालयों के लिए विभागीय अधिकारियों द्वारा स्वीकृत। हमारे इन प्रकाशनों को राजस्थान के उप-शिक्षा संचालक महोदय ने राजस्थान की समस्त शिक्षण संस्थाओं में खरीदे जाने के उपयुक्त बताते हुए इनकी भूरि-भूरि प्रशंसा की है।

विशेष जानकारी के लिए हमारा बृहत् 'सूचीपत्र' मँगावें

न्यू लिटरेचर

२५७ चक, जीरो रोड, इलाहाबाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केन्द्रीय सरकार, विभिन्न राज्यों तथा संस्थाओं द्वारा

हमारे पुरस्कृत प्रकाशन

उपन्यास

इन्सान	यज्ञदत्त शर्मा	४.५०
जल-समाधि	गोविन्दवल्लभ पंत	४.००
पर्णा	,,	४.००
डूबते मस्तूल	नरेश मेहता	४.५०
युगपुरुष राम (सचित्र)	अक्षयकुमार जैन	५.००

नाटक

विषपान	हरिकृष्ण 'प्रेमी'	२.००
स्वप्न-भंग	,,	२.००
उद्धार	,,	२.००
शपथ	,,	२.५०
समर्पण	जगन्नाथप्रसाद 'मिलिन्द'	२.००
यशस्वी भोज	देवराज 'दिनेश'	२.००
वितस्ता की लहरें	लक्ष्मीनारायण मिश्र	२.००
नये हाथ	विनोद रस्तौगी	२.००
अपूर्व बंगाल	भा० वि० वरेरकर	१.५०
भूमिकन्या सीता	,,	१.५०
कला के लिए	,,	१.५०
कोरी करामात	,,	२.००

एकांकी

आनन्द का राजपथ	सीताचरण दीक्षित	२.२५
भगवान् मनु तथा अन्य एकांकी	लक्ष्मीनारायण मिश्र	२.५०

कविता

दर्द दिया है	'नीरज'	४.५०
रूप दर्शन (सचित्र)	हरिकृष्ण 'प्रेमी'	६.००
बलिपथ के गीत	जगन्नाथप्रसाद 'मिलिन्द'	४.००
गीत-गोविन्द	विनयमोहन शर्मा	६.००
रावण (महाकाव्य)	हरदयालुसिंह वर्मा	६.००
दमयन्ती (महाकाव्य)	ताराचन्द हारीत	८.००
नारी (महाकाव्य)	अतुलकृष्ण गोस्वामी	१०.००
चन्देरी का जौहर (खण्ड-काव्य)	आनन्द मिश्र	२.००

शिकार

शिवालक की घाटियों में (सचित्र)	श्रीनिधि	५.००
वनराज के राज में (सचित्र)	विराज एम० ए०	४.००

मनोरंजन

सचित्र गृह-विनोद	अरुण एम० ए०	८.००
मैंने कहा (सचित्र)	गोपालप्रसाद व्यास	५.००

विज्ञान

विज्ञान और सभ्यता	रामचन्द्र तिवारी	५.००
सरल रेडियो विज्ञान	रमेशचन्द्र विजय	५.००
चन्दामामा का देश	सन्तोष नौटियाल	४.००
आदमी का जन्म	मन्मथनाथ गुप्त	१.२५

लोक-साहित्य

रूसी लोक साहित्य	वीर राजेन्द्रऋषि	४.००
विन्ध्यभूमि की लोक-कथाएँ	श्रीचन्द्र जैन	१.२५
आन्ध्र की लोक-कथाएँ	के० राजशेष गिरि	१.५०
राजस्थान की लोक-कथाएँ	पुरुषोत्तम मेनारिया	१.२५

भ्रमण

नेपाल की कहानी	काशीप्रसाद	८.००

गृहोपयोगी

आपका मुन्ना	सावित्रीदेवी वर्मा	१३.५०
पारिवारिक समस्याएँ	,,	७.५०

विविध

अध्ययन और आस्वाद	गुलाबराय	७.५०
मन की बातें	,,	३.५०
रेडियो नाटक.	हरिश्चन्द्र खन्ना	६.५०
आधुनिक शिक्षा मनोविज्ञान	ईश्वरचन्द्र शर्मा	५.००
हिन्दी कविता में युगान्तर	डॉ० सुधीन्द्र	८.००
मध्यकालीन हिन्दी कवयित्रियाँ	डॉ० सावित्री सिन्हा	८.००
साहित्यानुशीलन	शिवदानसिंह चौहान	६.००
सूफ़ी मत और हिन्दी साहित्य	डॉ विमलकुमार जैन	८.००
साहित्य विवेचन	सुमन-मल्लिक	७.००
प्राचीन भारतीय परम्परा और इतिहास	डॉ० रांगेय राघव	१२.००
भूगोल के भौतिक आधार	रामस्वरूप वशिष्ठ	६.००
हिन्दी काव्यालंकार-सूत्र	आचार्य विश्वेश्वर	१२.००
हिन्दी वक्रोक्तिजीवितम्	,,	१६.००

आत्माराम एण्ड सन्स, काश्मीरी गेट, दिल्ली-६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुरस्कृत पुस्तक सूची

सामान्य विषय

पुस्तकालय-विज्ञान

—द्वारकाप्रसाद शास्त्री, (भूमिका ले० डॉ० जगदीशशरण शर्मा) : **पुस्तकालय संगठन और संचालन** : प्रयाग, लहर प्रकाशन, १९५६, पृ० १४०, (सचित्र), ड० क्रा०, ३ रु०, उ० प्र०, (५६-५७)।

विशेषतः स्कूल और कालेज पुस्तकालयों तथा सामान्यतः अन्य पुस्तकालयों के संगठन एवं संचालन के लिए लिखित।

—द्वारकाप्रसाद शास्त्री : **पुस्तकालय विज्ञान** : प्रयाग, लेखक द्वारा, १९५७, पृ० २४०, (सचित्र), डि०, ५ रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

पुस्तकालय विज्ञान की प्रामाणिक पुस्तक। ३३ चित्रों, रेखाचित्रों, उदाहरणों एवं पारिभाषिक शब्दावली सहित।

—द्वारकाप्रसाद शास्त्री : **भारत में पुस्तकालयों का उद्भव और विकास** : वाराणसी, हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, १९५७, पृ० १७६, (सचित्र), डि०, ५ रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

सिन्धु-सभ्यता काल से लेकर द्वितीय पंचवर्षीय योजना तक भारत में पुस्तकालयों के विकास का ऐतिहासिक विवेचन।

समाचार-पत्र, सम्पादन-कला

—अम्बिकाप्रसाद वाजपेयी : **समाचार-पत्रों का इतिहास** : बनारस, ज्ञान मण्डल लि०, २०१० वि०, पृ० ३९४, ड० क्रा०, ६·५० रु०, उ० प्र०, (५५)।

भारतीय समाचार-पत्रों के (१८२६ से १९२५) सौ वर्षों का इतिहास।

—रामकृष्ण रघुनाथ खाडिलकर : **आधुनिक पत्रकार कला** : बनारस, ज्ञान मण्डल लि०, १९५३, पृ० २४०, ड० क्रा०, ४ रु०, वि० रा० प०, (५७-५८)।

पत्रकारिता के सभी अंगों का संक्षिप्त विवेचन।

—वेंकटलाल ओझा : **हिन्दी समाचार-पत्र सूची (भाग १)** : हैदराबाद, हिन्दी समाचार-पत्र संग्रहालय, १९५०, पृ० ८२, ड० क्रा०, १·२५ रु०, उ० प्र०, (५१)।

दर्शन

दर्शन, सामान्य

—चन्द्रधर शर्मा (डॉ०) : **पाश्चात्य दर्शन** : बनारस, भार्गव बुक डिपो, १९५४, पृ० २१९, डि०, ४ रु०, उ० प्र०, (५५)।

पाश्चात्य दर्शन के उद्भव और विकास का संक्षिप्त इतिहास (थेलीज़ से हेगल तक), परिशिष्ट में पारिभाषिक शब्दावली।

—फ्रेंक थिली (मू० ले०), अनु० मधुकर : **पाश्चात्य दर्शन का इतिहास** : इलाहाबाद, सेंट्रल बुक डिपो, १९५४, पृ० १८२, ड० क्रा०, ५ रु०, उ० प्र०, (५५)।

पाश्चात्य दर्शन का संक्षिप्त इतिहास।

मनोविज्ञान का क्षेत्र, स्वप्न

—राजाराम शास्त्री : **स्वप्न दर्शन** : बनारस, काशी विद्यापीठ, २००४ वि०, पृ० २२०, ड० क्रा०, ३ रु०, ना० प्र० स०, (२००७ वि०)।

स्वप्न सम्बन्धी पाश्चात्य खोज का संक्षिप्त परिचय। स्वप्नावस्था का मनोविज्ञान। पारिभाषिक पदावली सहित।

सामान्य मनोविज्ञान

—अर्जुन चौबे काश्यप : **बाल मनोविज्ञान** : गया, भारती

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तकालय योग्य हमारे अनुपम ग्रंथ

आलोचनात्मक

हिन्दी साहित्य में हास्य रस : डा० बरसाने लाल ७·५०
कबीर एक विवेचन : डा० सरनामसिंह १०·००
सरल भाषा विज्ञान : डा० मनमोहन गौतम ५·७५
महादेवी वर्मा और उनका 'आधुनिक कवि' : सुरेशचन्द्र ७·१३
प्रबन्ध प्रदीप : भारत भूषण सरोज ५·००
हिन्दी साहित्य का इतिहास : " २·५०
भाषा विज्ञान एवं हिन्दी भाषा का इतिहास : भारत भूषण सरोज २·५०
साहित्यालोचन-सिद्धान्त : डा० मनमोहन गौतम २·००
अलंकार विवेचन : तिलकधर शास्त्री १·१२
चन्द्रगुप्त-समीक्षा : भारतभूषण सरोज १·२५
नाटक की रूपरेखा : दशरथ झा ३·००
प्राचीन कवि और काव्य : डा० मनमोहन गौतम ३·००
साहित्यरत्न निबन्ध माला : भारतभूषण सरोज ४·५०
जायसी की काव्य-साधना : दानबहादुर पाठक ३·५०
हिन्दी गद्य साहित्य : सुरेशचन्द्र गुप्त २·५०
कबीर : भारतभूषण सरोज २·५०
मित्रलाभ सटीक : आदित्येश्वर कौशिक १·५०
रघुवंशम त्रयोदश सर्ग = सटीक : इन्द्रकुमार विद्यार्थी १·००
अशोक हिन्दी शब्दकोष : आदित्येश्वर कौशिक ३·७५

उपन्यास

वंश-वल्लरी : उर्मिला कुमारी एम० ए० ३·७५
धरती की पुकार : बलदेवदत्त शर्मा ३·००
पठान का हृदय : " २·७५

बाल-साहित्य

सुन्दर कहानियाँ : उर्मिला कुमारी ०·७५
छल का फल : " ०·७५
मनोरंजक कहानियाँ : सुरेशचन्द्र गुप्त ०·५०
काँच का महल : सुरेशचन्द्र गुप्त ०·५०

हिन्दी-साहित्य संसार

नई सड़क, दिल्ली

पुस्तक भण्डार, १९५०, पृ० ५०४, ड० क्रा०, ६ रु०, उ० प्र०, (५२)।

कालेज तथा विश्वविद्यालयों के मनोविज्ञान के विद्यार्थियों के लिए बाल-मनोविज्ञान विषयक पाठ्य-पुस्तक। विषय का सारगर्भित प्रतिपादन।

—अर्जुन चौबे काश्यप : **सामान्य मनोविज्ञान** : गया, राजेश्वरी पुस्तकालय, १९५१, पृ० ५६८, ड० क्रा०, उ० प्र०, (५२)।

मनःशास्त्र के तत्त्वों का सरल विवेचन।

—गुलाबराय : **मन की बातें** : दिल्ली, आत्माराम एण्ड सन्स, १९५४, पृ० १७३, ड० क्रा०, ३.५० रु०, उ० प्र०, (५५-५६)।

मन का विश्लेषण। अनुक्रमणिका में पारिभाषिक पदों का हिन्दी-पर्याय एवं व्याख्या।

—निर्मला शेरजंग (सुश्री) : **बाल विकास और समस्याएं** : बनारस, जगत शंखधर, १९५६, पृ० ९४, (सचित्र), फु० स्के०, ५ रु०, उ० प्र०, (५६-५७)।

माता-पिता तथा छोटे बच्चों के अध्यापकों के लिए लिखित बालकों के प्रतिदिन की समस्याओं के आधार पर मनोविज्ञान का परिचय।

—निर्मला शेरजंग (श्रीमती) : **मनोविज्ञान** : बनारस, जगत शंखधर, १९५४, पृ० २७९, ड० क्रा०, ४ रु०, उ० प्र०, (५५-५६)।

मनोविज्ञान विषय का संक्षिप्त विवेचन, शब्दकोष एवं पारिभाषिक शब्दसूची सहित।

—पद्मा अग्रवाल (डॉ०) : **मनोविज्ञान और मानसिक क्रियाएं** : बनारस, संसार प्रेस, १९५१, पृ० २२२, ड० क्रा०, ४.५० रु०, उ० प्र०, (५२)।

मनोविश्लेषण विषयक प्रतिपादन, पारिभाषिक शब्दावली सहित।

—पुरुषोत्तमलाल चोपड़ा : **बाल विकास** : वि० प्र०, (५३-५४)।

—मधुकर : **नवीन मनोविज्ञान** : इलाहाबाद, सेन्ट्रल बुक डिपो, १९५४, पृ० २२२, (सचित्र), ड० क्रा०, ४.५० रु०, उ० प्र०, (५५)।

प्रयोगात्मक खोजों के आधार पर तथा शरीर-विज्ञान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एवं समाज-विज्ञान के आधार पर मनोविज्ञान की व्याख्या।

—मधुकर, डी॰ एस॰ : **मनोविज्ञान प्रकृत और अप्रकृत** : इलाहाबाद, सेन्ट्रल बुक डिपो, १९५७, पृ० ४४७, डि॰, (सचित्र), ६ रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

मनुष्य के व्यवहार के प्रकृत और अप्रकृत दोनों पक्षों का अध्ययन।

—मेरी एण्ड लारेंस के॰ फ्रैंक (मू॰ ले॰), अनु॰ सीताराम जायसवाल : **बाल विकास और शिक्षण** : बनारस, नन्द-किशोर एण्ड ब्रदर्स, १९५६, पृ० २७६, डि०, ५ रु०, उ० प्र०, (५६-५७)।

'हाऊ टू हेल्प योर चिल्ड्रेन ऐट स्कूल' का अनुवाद।

—यदुनाथ सिह्ना (मूल ले०), अनु॰ गोवर्द्धनप्रसाद भट्ट : **समाज का मनोविज्ञान** : आगरा, लक्ष्मीनारायण अग्रवाल, १९५२, पृ० ५३८, ड० क्रा०, ७.५० रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

बी॰ ए॰ पाठ्य-ग्रन्थ के रूप में लिखित सामान्य मनोविज्ञान का प्रतिपादन।

—लालजीराम शुक्ल : **मनोविज्ञान और जीवन** : ना० प्र० स०।

—शिवानन्द शर्मा : **समाज मनोविज्ञान** : इलाहाबाद, फ्रेंड्स बुक डिपो, १९५४, पृ० २७८, ड० क्रा०, ४.५० रु०, उ० प्र०, (५५)।

समाज-मनोविज्ञान का संक्षिप्त परिचय।

—सावित्री देवी वर्मा, (भू० ले० अमृतकौर, राजकुमारी) : **आपका मुन्ना (तीन भागों में)** : दिल्ली, आत्माराम एण्ड सन्स, (सचित्र), १३.५० रु०, वि० प्र०, (५५-५६), ना० प्र० स० तथा उ० प्र० से भी ५५ में पुरस्कृत।

प्रथम भाग—१९५३, पृ० २०१, डि०, ३.५० रु०, बच्चों का पालन-पोषण।

द्वितीय भाग—१९५३, पृ० २७८, डि०, ५ रु०, बच्चों की समस्याएँ।

तृतीय भाग—१९५३, पृ० ३२२, डि०, ५ रु०, बच्चों का शिक्षण।

बाल-मनोविज्ञान सम्बन्धी भारतीय ग्रन्थ।

—हेमांकिनी जोशी (सुश्री) : **आपका शिशु** : बनारस, हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, १९५६, पृ० १३२, ड० क्रा०, (सचित्र),

हमारे प्रकाशन

उपन्यास :

जब खेत जागे : कृष्ण चन्द्र	३·००
अँधेरा-उजाला : ख्वाजा अहमद अब्बास	२·२५
यात्रा : साने गुरुजी	४·००
जहाँ बर्फ़ गिरती है : ए० हमीद	३·५०
झील और कंवल : ए० हमीद, अनु० श्यामू संन्यासी	६·००

कहानियाँ :

यहाँ से वहाँ तक : महेन्द्रनाथ	२·२५
निशानियाँ : उपेन्द्रनाथ 'अश्क'	३·००
मम्मी : सआदत हसन मण्टो	२·५०

नाटक :

बाबू : आचार्य आत्रेय	२·००
नेपथ्य : आरिगपूडि	३·००

किशोर साहित्य : (रंगीन चित्रों के साथ)

सयाना मूरख : कृष्ण चन्द्र	१·२५
मौत की मौत : कृष्ण चन्द्र	०·६०
सोने की सन्दूकची : कृष्ण चन्द्र	१·२५

जीवनियाँ : (रंगीन चित्रों के साथ)

अमर ज्योति : मोहन	१·२५
बापू की कहानी : कृष्णा हठीसिंह	२·२५
हमारे ज्योतिर्धर : चन्द्रवदन शाह, मगन लाल नायक	२·२५

बम्बई प्रकाशन प्राइवेट लि.

मनु मन्शन, १६ ओल्ड कस्टम हाउस रोड

बम्बई-१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

३.५० रु०, उ० प्र०, (५६-५७)।

शिशु की उत्पत्ति एवं उसके बौद्धिक विकास का अध्ययन।

तर्कशास्त्र

—केशव मिश्र (मू० ले०), विश्वेश्वर, आचार्य, व्याख्या० : **तर्क भाषा** : बनारस, चौखम्भा संस्कृत सीरीज़, २०१० वि०, पृ० २६४, डि०, ४.५० रु०, विं० प्र०, (५४-५५)।

तर्क भाषा की हिन्दी व्याख्या मूल सहित।

नीतिशास्त्र, आचार

—आनन्दकुमार : **आत्म विकास** : दिल्ली, राजपाल एण्ड सन्स, १९४९, पृ० ३९४, ड० क्रा०, ५ रु०, उ० प्र०, (५१)।

लोक-व्यवहार और जीव-कला पर व्यावहारिक ज्ञान से परिपूर्ण पुस्तक।

—फिलिप ह्वील, राइट (मू० ले०), अनु० मधुकर : **नीतिशास्त्र का आलोचनात्मक परिचय** : इलाहाबाद, सेन्ट्रल बुक डिपो, १९५३, पृ० २४७, ड० क्रा०, ५ रु०, उ० प्र०, (५५)।

नीतिशास्त्र के सिद्धांतों का आलोचनात्मक परिचय।

—लालजीराम शुक्ल : **नीतिशास्त्र** : बनारस, नन्दकिशोर एण्ड ब्रदर्स, १९५६, पृ० ४००, ड० क्रा०, ५ रु०, उ० प्र०, (५२)।

पाश्चात्य नीति की विचार-शैली पर लिखित उच्चतर कक्षाओं के योग्य पाठ्य-ग्रन्थ।

—शिवानन्द शर्मा : **नीति विज्ञान** : इलाहाबाद, फ्रेंड्स बुक डिपो, १९५६, पृ० ३६३, डि०, ६.७५ रु०, उ० प्र०, (५६-५७)।

प्रथम भाग (१-२०८) में ऐतिहासिक अध्ययन और द्वितीय भाग (२०९-३६३) में आचार सम्बन्धी समस्याओं का विश्लेषण।

—शान्ति जोशी (सुश्री) : **नीतिशास्त्र** : बनारस, ज्ञान मण्डल लि०, २०१३ वि०, पृ० ६१७, ड० क्रा०, ८ रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

पाश्चात्य यूनानी विचारकों से लेकर आधुनिक पाश्चात्य नीतिज्ञों तक के नैतिक दर्शन के विविध पक्षों का एकत्र अध्ययन एवं उनके विचारों की तुलनात्मक आलोचना।

भारतीय दर्शन

—आनन्द झा : **पदार्थ शास्त्र** : बनारस, लेखक द्वारा, २००७ वि०, पृ० २४१, ड० क्रा०, २.५० रु०, उ० प्र०, (५२)।

वैशेषिक दर्शन के सिद्धान्तों के आधार पर लिखित एक परिचयात्मक ग्रन्थ।

—उदयवीर शास्त्री : **सांख्य दर्शन का इतिहास** : ज्वालापुर (सहारनपुर), विरजानन्द वैदिक संस्थान, १९५०, पृ० ५३६, रॉ०, ३० रु०, बि० रा० प०, (५१-५२), डालमिया पुर०, (५१)।

सांख्य विषयक बहिरंग परीक्षात्मक मौलिक ग्रन्थ।

—चन्द्रधर शर्मा (डॉ०) : **बौद्ध दर्शन और वेदान्त** : इलाहाबाद, स्टूडेन्ट्स फ्रेंड्स, १९४९, पृ० ३०९, ड० क्रा०, ३.७५ रु०, उ० प्र०, (५१)।

प्रयाग विश्वविद्यालय द्वारा डी० फिल० के लिए स्वीकृत थीसिस का हिन्दी रूपान्तर। बौद्ध-दर्शन और वेदान्त दोनों के विकास-क्रम के विभिन्न रूपों की आलो-

द्विवेदी-युग तथा आधुनिक युग के सुप्रसिद्ध
कवि और सफल अनुवादक-लेखक

स्व० श्री रूपनारायण पांडेय

की अन्तिम काव्य-कृति

श्रीकृष्ण चरित

सरल लयपूर्ण छन्दों में लिखी गई इस पुस्तक को **पं० भरतलाल गौड़ कथावाचक** ने प्रकाशित-प्रचारित किया है। बहु-प्रशंसित।

मू० ४॥), डाक-व्यय माफ

पता—
हिन्दी-साहित्य भण्डार
गंगाप्रसाद रोड, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चनात्मक मौलिक गवेषणा ।

—नरेन्द्रदेव, आचार्य, (भू० ले० म० म० पं० गोपीनाथ कविराज) : **बौद्ध दर्शन** : पटना, बि० रा० प०, १६५६, पृ० ६१६, (प्राक्कथन पृ० ७२, परिशिष्ट पृ० ७६), रॉ०, सजिल्द १७ रु०, अजिल्द १५ रु०, उ० प्र०, (५६-५७) तथा सा० अ०, (१६५७) ।

५ खण्डों और २० अध्यायों में पालि और संस्कृत में वर्णित बौद्ध धर्म और दर्शन का सांगोपांग वर्णन, डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल द्वारा ग्रन्थकार प्रशस्ति, श्री श्रीप्रकाशजी की प्रस्तावना, आचार्यजी की संक्षिप्त आत्म-कथा तथा ७२ पृष्ठ की शब्दानुक्रमणी सहित ।

—फतहसिंह : **वैदिक दर्शन** : कोटा, संस्कृति सदन, २००६ वि०, पृ० २४७, ड० क्रा०, ६ रु०, डा० पु० ।

आध्यात्मिक दृष्टिकोण से वेदों का अध्ययन ।

—बालदेव उपाध्याय, (भूमिका ले० कविराज गोपीनाथ) : **बौद्ध दर्शन मीमांसा** : बनारस, शारदा मन्दिर, १६४६, पृ० ५२५, ड०क्रा०, ६ रु०, डा०पु० (२००२-०३वि०) ।

बौद्ध धर्म तथा तत्त्व-ज्ञान का सांगोपांग प्रामाणिक विवेचन ।

—मदन मिश्र : **मीमांसा दर्शन** : उ० प्र०, (५५) ।

—महेन्द्रकुमार जैन, (प्राक्कथन—मंगलदेव शास्त्री) : **जैन दर्शन** : काशी, गणेशप्रसाद जैन ग्रन्थमाला, १६५५, पृ० ६५१, ड० क्रा०, ७ रु०, उ० प्र०, (५५-५६) ।

व्यापक और तुलनात्मक विधि से जैन दर्शन का विवेचनात्मक अध्ययन ।

—विद्यासागर शास्त्री (डॉ०) : **चारवाक दर्शन** : डा० पु० ।

—सम्पूर्णानन्द : **चिद्विलास** : वाराणसी, ज्ञान मण्डल लि०, २००१ वि०, पृ० २७२, ड० क्रा०, २.५० रु०, हि० सा० स०, मंगला० (२००५ वि०) ।

अद्वैतवाद पर एक मौलिक चिन्तन । आधार खण्ड, ज्ञान खण्ड और धर्म खण्ड नामक तीन खण्डों में विभक्त ११ पृष्ठों की सारगर्भित भूमिका सहित ।

अन्य दर्शन

—देवराज (डॉ०) : **योरोपीय दर्शन (द्वितीय भाग)** : मुजफ्फरपुर, सिंह ब्रदर्स, २००३ वि०, पृ० ३३१, ड० क्रा०, ४ रु०, उ० प्र०, (५०) ।

आधुनिक काल, कार्लमार्क्स के दर्शन पर एक अध्ययन, पारिभाषिक पदावली सहित ।

—भूपेन्द्रनाथ सान्याल : **मार्क्स दर्शन** : प्रयाग, इंडियन प्रेस, १६४५, पृ० १५५, ड० क्रा०, २ रु०, हि० सा० स० मुरारका पुर०, (२००७ वि०) ।

मार्क्स की दार्शनिक विचारधारा का परिचय । पारिभाषिक शब्दावली सहित ।

धर्म सामान्य

—अलगूराय शास्त्री : **ऋग्वेद रहस्य** : उ० प्र०, आर्य प्रतिनिधि सभा, १६५१, पृ० ७२०, ड० क्रा०, ५ रु०, उ० प्र०, (५२) ।

ऋग्वेद के सम्बन्ध में विद्वानों की प्रतिकूल-अनुकूल सभी स्थापनाओं और धारणाओं का विशद विवेचन ।

—गंगाप्रसाद उपाध्याय, अनु० : **ऋग्वेदीय ऐतरेय ब्राह्मण** : प्रयाग, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, २००६ वि०, पृ० ५७३, ड० क्रा०, ५ रु०, उ० प्र०, (५२) ।

भारतीय संस्कृति

लेखक

डॉ० ब्रजनाथसिंह यादव, एम० ए०, डी० फिल०

डॉ० लल्लनजी गोपाल, एम० ए०, डी० फिल०

प्राध्यापक, प्राचीन इतिहास एवं संस्कृति विभाग, प्रयाग विश्वविद्यालय, प्रयाग ।

● प्रस्तुत कृति गोरखपुर विश्वविद्यालय की बी० ए० परीक्षा के भारतीय संस्कृति के अनिवार्य प्रश्नपत्र तथा सागर, विक्रम, लखनऊ, इलाहाबाद, काशी, आगरा आदि विश्वविद्यालयों की बी० ए० परीक्षा के लिए पाठ्य-ग्रन्थ ।

● पुस्तक के आरम्भ में गोरखपुर विश्वविद्यालय के प्राचीन इतिहास एवं संस्कृति विभाग के अध्यक्ष डॉ० गोबिन्द चन्द्र पांडे ने 'संस्कृति के मूल तत्त्व' विषय पर महत्वपूर्ण भूमिका लिखी है ।

● पुस्तक साधारण पाठकों के लिए भी अत्यन्त उपयोगी है ।

पृष्ठ संख्या—३०० मूल्य ६·२५

प्रकाशक

विश्वविद्यालय प्रकाशन

नखास चौक, गोरखपुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऐतरेय ब्राह्मण का केवल हिन्दी अनुवाद मन्त्र सूची तथा परिचयात्मक शब्दावली सहित।

—राजगोपालाचार्य, चक्रवर्ती (मू० ले०), अनु० सोमसुन्दरम् : **महाभारत कथा** : दिल्ली, सस्ता साहित्य मण्डल, १९५६, पृ० ४६४, ड० क्रा०, ५ रु०, के० स० प्र० वि० पु० प्रति०।

महाभारत की कथाएँ।

—चाउसिग्रांगकुग्रांग (डॉ०) (मू० ले०), अनु० आत्मनू, (भू० ले० सुनीतिकुमार चाटुर्ज्या) : **चीनी बौद्ध धर्म का इतिहास** : प्रयाग, भारती भण्डार, २०१३ वि०, पृ० २९८, डि०, (सचित्र), ७·५० रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

बौद्ध-साहित्य के प्रसार से सम्बद्ध आवश्यक सामग्री, लेखक की १६ पृष्ठों की और श्री चाटुर्ज्या की ११ पृष्ठों की भूमिका द्रष्टव्य।

—ज्ञानेश्वर सन्त (मू० ले०), अनु० रामचन्द्र वर्मा : **हिन्दी ज्ञानेश्वरी** : बनारस, हिन्दी साहित्य कुटीर, २०१३ वि०, पृ० ७१६, ड० क्रा०, ५ रु०, के० स० प्र० वि० पु० प्रति०।

श्रीमद्भगवद्गीता के मूल श्लोकों सहित सन्त ज्ञानेश्वर जी की मराठी टीका का हिन्दी अनुवाद।

—धर्मपाल शास्त्री : **हमारे त्योहार** : दिल्ली, राजपाल एण्ड सन्स, १९५६, पृ० ३६, फु० स्कै०, (सचित्र), ७५ न० पै०, के० स० जन सा० प्रति०, (५७)।

१३ सामाजिक एवं राष्ट्रीय त्योहारों का अशिक्षित प्रौढ़ों के लिए सरल परिचय।

—परशुराम चतुर्वेदी : **उत्तरी भारत की सन्त परम्परा** : प्रयाग, भारती भण्डार, २००८ वि०, पृ० ७७८, डि०, १० रु०, बि० रा० प०, पटना, (५१-५२), महा० शा० प० से भी।

उत्तरी भारत की सन्त-परम्पराओं का ७ अध्यायों में ऐतिहासिक विवेचन।

—बलदेव उपाध्याय : **भागवत सम्प्रदाय** : काशी, नागरी प्रचारिणी सभा, २०१० वि०, पृ० ६८०, ड० क्रा०, ६ रु०, उ० प्र०, (५५)।

भारतवर्ष के मुख्य वैष्णव सम्प्रदायों का एक गम्भीर अध्ययन।

—बुद्धघोष, आचार्य (मूल ले०), अनु० धर्मरक्षित भिक्षु : **विशुद्धि मार्ग, भाग १** : वाराणसी, महाबोधि सभा, १९५६, पृ० ३७७, रॉ०, १० रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

शील निर्देश से समाधि निर्देश तक ११ परिच्छेदों का अनुवाद। उपमा सूची, कथा सूची, ग्रन्थ सूची, नाम अनुक्रमणिका एवं शब्द अनुक्रमणिका सहित।

—धर्मरक्षित भिक्षु : **विशुद्ध मार्ग, भाग २** : उ० प्र०, (५७-५८)।

—भरतसिंह उपाध्याय : **गौतम बुद्ध और उनके उपदेश** : दिल्ली, सस्ता साहित्य मण्डल, १९५७, पृ० ३२, (सचित्र), ड० क्रा०, ३१ न० पै०, के० स० जन सा० प्रति०, (५४)।

गौतम बुद्ध की कहानी और उनके उपदेशों का बालोपयोगी संग्रह।

—मन्मथराय, (भूमिका ले० गोपीनाथ कविराय) : **हमारे कुछ प्राचीन लोकोत्सव** : प्रयाग, साहित्य भवन लिमिटेड, १९५३, पृ० १७३, ड० क्रा०, २·५० रु०, उ० प्र०, (५३-५४)।

कुछ ऐतिहासिक महत्त्वपूर्ण उत्सवों का रोचक एवं शिक्षाप्रद वर्णन।

—मोती बाबू : **हिन्दू विवाह विधि** : इलाहाबाद, रामनारायणलाल, पृ० १३७, ३ रु०, उ० प्र०, (५५)।

अक्टूबर १९५४ तक के न्यायालयों के निर्णयों, अधिनियमों तथा धर्मशास्त्र-ग्रन्थों के आधार पर विवाह सम्बन्धी वर्तमान हिन्दू विधि का विवेचन।

—राजवली पाण्डेय (डॉ०) : **हिन्दू संस्कार** : वाराणसी, चौखम्भा विद्या भवन, २०१४ वि०, पृ० ३९३, डि०, १५ रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

सोलह हिन्दू संस्कारों का सामाजिक तथा धार्मिक अध्ययन। काशी विश्वविद्यालय से डी० लिट्० की उपाधि के लिए स्वीकृत मूल अंग्रेजी ग्रन्थ का स्वतन्त्र परिवर्तित हिन्दी रूप।

—रामगोविन्द त्रिवेदी : **वैदिक साहित्य** : काशी, भारतीय ज्ञानपीठ, १९५०, पृ० ५१२, ड० क्रा०, ६ रु०, उ० प्र०, (५२)।

वैदिक साहित्य का साङ्गोपाङ्ग विशद विवेचन।

—रामलगन त्रिपाठी : **महाभारत प्रकाश** : उ० प्र०, (५१)।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजनीतिज्ञ, संस्कृत मानव और महान् स्वप्नद्रष्टा

श्री जवाहरलाल नेहरू

के विभिन्न व्यक्तित्वों को ठीक-ठीक समझने के लिए और भावी भारत तथा भावी विश्व के निर्माण के सम्बन्ध में उनके विचारों और कार्य-व्यापारों का मूल्यांकन करने में सहायक अपने समय का अप्रतिम प्रकाशन

मैं नेहरू से मिला

फ्रांसीसी लेखक श्री तिबौर मॉंड पेरिस की इंस्टीच्यूट ऑफ़ पॉलिटिकल स्टडीज़ में प्राध्यापक हैं। विभिन्न मसलों पर उनके विचार जानने के उद्देश्य से श्री मॉंड श्री नेहरू से बातचीत करने के लिए हिन्दुस्तान आये और उनसे चार लम्बी मुलाकातें कीं। इन मुलाकातों के दौरान की बातचीत के प्रत्येक शब्द को ऑल इण्डिया रेडियो के टेप रिकार्डर पर उतार लिया गया था और इस पुस्तक में उन्हीं चार मुलाकातों की कुल बातचीत का समावेश है।

"......इस पुस्तक को श्री नेहरू की अपनी ही एक नवीन कृति माना जा सकता है।"

पुस्तक अगस्त के अन्त तक प्रकाशित होगी !

आकर्षक गेट-अप, बढ़िया कार्टरिज कागज, पक्की जिल्द, मूल्य तीन रुपये पचास नये पैसे

राजकमल

राजकमल

प्रकाशन प्राइवेट लि:

दिल्ली इलाहाबाद बम्बई पटना मद्रास

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी साहित्य कोश

के प्रकाशन की महत्त्वपूर्ण घोषणा

हिन्दी-साहित्य के अध्ययन, अध्यापन तथा अनुशीलन में प्रत्येक विद्यार्थी, अध्यापक, अनुसन्धानकर्ता और पाठक को एक ऐसे ग्रन्थ की आवश्यकता का अनुभव निरन्तर होता है, जिसकी सहायता से हिन्दी में प्रयुक्त अनेकानेक प्राचीन और नवीन साहित्यिक, पारिभाषिक शब्दों का प्रामाणिक अर्थ, साहित्य की गतिविधि को संचालित एवं प्रभावित करने वाले वादों और प्रवृत्तियों का ऐतिहासिक और शास्त्रीय परिचय, साहित्यिक भाषा और बोलियों का भाषा-वैज्ञानिक विवेचन तथा शिष्ट और लोक-साहित्य के विभिन्न अंगों की उपयोगी जानकारी प्राप्त हो सके। सभी उन्नत साहित्यों में इस प्रकार के दर्जनों छोटे-बड़े विश्व कोश हैं, जो भाषा और साहित्य के सभी श्रेणी के अध्येताओं और पाठकों के लिए उपयोगी ज्ञानभण्डार तात्कालिक रूप से उपलब्ध करते हैं। हिन्दी के इसी भारी अभाव की पूर्ति के लिए हिन्दी साहित्य कोश की आयोजना हमने पिछले वर्ष प्रस्तुत की थी, जो अब पूर्ण हो चुकी है। आशा है कि १५ अगस्त सन् १९५८ तक कोश प्रकाशित हो जायगा।

इस हिन्दी साहित्य कोश को वैज्ञानिक रूप देने के लिए प्रयत्न किया गया है कि उसमें दी गई सामग्री साहित्य के सामयिक वाद-विवादों का परिचय देते हुए भी उनसे अप्रभावित रहकर शुद्ध बौद्धिक स्तर पर यथासम्भव तटस्थ रूप में उपस्थित की जाय तथा उसकी प्रामाणिकता यथासम्भव सर्वमान्य और स्थायित्वपूर्ण हो। इस उद्देश्य की पूर्ति को ध्यान में रखते हुए इस कोश-रचना के लिए एक सम्पादक-मण्डल संघटित किया गया था, जिसने हिन्दी के अस्सी से अधिक विशेषज्ञ और अधिकारी विद्वानों द्वारा विभिन्न विषयों पर लेख और टिप्पणियां लिखवाकर उन्हें कोशबद्ध किया है। उक्त सम्पादक-मण्डल के सदस्य हैं—डॉ० धीरेन्द्र वर्मा (प्रधान), डॉ० ब्रजेश्वर वर्मा, डॉ० धर्मवीर भारती, श्री रामस्वरूप चतुर्वेदी तथा डॉ० रघुवंश (संयोजक)। प्रस्तुत साहित्य कोश में निम्नलिखित विषयों में प्रयुक्त होने वाले पारिभाषिक शब्द संकलित किये गए हैं—

१. प्राचीन साहित्यशास्त्र—रस, ध्वनि, अलंकार, छन्द आदि
२. पाश्चात्य साहित्यशास्त्र
३. साहित्य के विविध रूप
४. साहित्य में प्रयुक्त दार्शनिक, मनोवैज्ञानिक तथा समाजशास्त्रीय सिद्धान्त
५. साहित्य के विविध वाद तथा प्रवृत्तियाँ—प्राचीन और आधुनिक
६. लोक-साहित्य
७. हिन्दी भाषा, उसकी जनपदीय बोलियाँ, प्राचीन तथा आधुनिक भारतीय आर्य-भाषाओं तथा सम्बद्ध आर्य-भाषाओं का परिचयात्मक विवरण।

मूल्य बीस रुपये मात्र

कोश की सामग्री प्रस्तुत करने वाले लेखकों के नाम कोश में यथास्थान दिये गए हैं। इस महत्वपूर्ण आयोजन में हिन्दी के सभी मान्य तथा प्रतिष्ठित लेखकों का सहयोग प्राप्त हुआ।

हमारे अन्य कोश

बृहत् हिन्दी कोश	२५)	ज्ञान शब्द कोश	१५)
पारिभाषिक शब्द कोश	४)	बृहत् अंग्रेजी हिन्दी कोश	(प्रेस में)

प्रकाशक : ज्ञानमण्डल लिमिटेड, वाराणसी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

—वासुदेवशरण अग्रवाल, (डॉ०) : **भारत सावित्री** : नई दिल्ली, सस्ता साहित्य मण्डल, १९५७, पृ० ३४७, ड० क्रा०, ३ रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

महाभारत का एक नवीन एवं सारगर्भित अध्ययन (आदि पर्व से विराट् पर्व तक)।

—शशिभूषणदास गुप्त : **श्री राधा का क्रम-विकास** : वाराणसी, हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, १९५६, पृ० ३१३, डि०, ८ रु०, उ० प्र०, (५६-५७)।

जीवन द्वारा ग्राह्य होने के लिए श्री राधा के परम तत्व रूप की मर्त्यलोक में अभिव्यक्ति का क्रम-विकास। भारतीय दर्शन और साहित्य के विभिन्न स्तरों में व्याप्त श्री राधा के चिरंतन क्रम-विकास का इतिहास।

—सत्यभक्त (स्वामी) : **धर्म सम्भाव** : वर्धा, सत्याश्रम, पृ० ७४, ड० क्रा०, ७५ न० पै०, उ० प्र०, (५२-५३)।

धर्म सम्भाव पर वैज्ञानिक, ऐतिहासिक और व्यावहारिक दृष्टि से विचार।

—सत्यव्रत विद्यालंकार : **एकादशोपनिषद्** : देहरादून, विद्या विहार, १९५४, पृ० ६२७, डि०, (सचित्र), १२ रु०, उ० प्र०, (५५)।

प्रसिद्ध एकादशोपनिषदों का मूल सहित हिन्दी में अनुवाद।

—सत्यव्रत, (स्वामी) : **सत्यामृत** : वर्धा, सत्याश्रम,
१. दृष्टिकाण्ड, १९४०, पृ० २११, रॉ० अठपेजी, १·२५ रु०
२. आचारकाण्ड, पृ० २१२–४४०, रॉ० " , १·७५ रु०
३. व्यवहार काण्ड, पृ० ४४१–७९१, रॉ० " , ५ रु०
मानव धर्मशास्त्र।

—हजारीप्रसाद द्विवेदी : **नाथ सम्प्रदाय** : इलाहाबाद, हिन्दुस्तानी एकेडेमी, १९५०, पृ० २१२, रॉ०, ४·५० रु०, उ० प्र०, (५१)।

प्रामाणिक आधार पर नाथ-सम्प्रदाय का प्रथम क्रमबद्ध विस्तृत विवेचन।

—हरिदास माणिक : **महाभारत के महारथी** : काशी, माणिक कार्यालय, १९५७, पृ० ३५९, ड० क्रा०, ५ रु०, उ० प्र०, (५२)।

महाभारत के शौर्यपूर्ण प्रसङ्गों का चयन।

—हरिभाऊ उपाध्याय : **भागवत धर्म** : दिल्ली, सस्ता साहित्य मण्डल, १९५१, पृ० ३६९, रॉ०, ६·५० रु०, उ० प्र०, (५२)।

श्रीभागवत् के एकादश स्कन्ध का लोक-सुलभ अनुवाद एवं टीका।

समाजशास्त्र

समाजशास्त्र, सामान्य

—कमलापति त्रिपाठी : **बापू और मानवता** : बनारस, सरस्वती मन्दिर, १९४८, पृ० ४०६, ड० क्रा०, ५ रु०, हि० सा० स० मंगला०, (२००४ वि०)।

गांधीजी के विचारों और उनकी पद्धति का अध्ययन।

—क्षितिमोहन सेन (आचार्य) : **संस्कृति संगम** : प्रयाग, साहित्य भवन लि०, १९५०, पृ० १८०, ड० क्रा०, ३ रु०, रा० प्र० स० वर्धा, (५३-५४) तथा हि० सा० स० मुरारका पुर०, (२००८ वि०)।

लेखक के १२ सांस्कृतिक निबन्धों का संग्रह।

जैनेन्द्र कुमार : **जड़ की बात** : प्रयाग, हिन्दी मन्दिर, १९४६, पृ० २१५, ड० क्रा०, २ रु०, उ० प्र०, (५०)।

लेखक के १९ सामाजिक, सांस्कृतिक निबन्धों का संकलन।

—नरेन्द्रकुमार जैन : **अछूत कोई नहीं** : वि० प्र०, (५५-५६)।

—पंचानन मिश्र : **समाज की भूमिका** : पटना, अजन्ता प्रेस लि०, २०१३ वि०, पृ० २२६, डि०, ४ रु०, बि० रा० प०, (५६-५७)।

—विनोबा भावे : **गांव सुखी हम सुखी** : दिल्ली, सस्ता साहित्य मण्डल, १९५७, पृ० ३२, (सचित्र), ड० क्रा०, ३१ न० पै०, के० स० जन सा०, (५४)।

विनोबाजी का गाँव के लोगों के लिए उपयोगी प्रवचन, प्रौढ़ोपयोगी साहित्य।

—भागीरथ प्रसाद : **भारतीय समाज विमर्श** : उ० प्र०, (५७-५८)।

—सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार : **समाज के मूल तत्त्व** : देहरादून, विजय कृष्ण लखनपाल एण्ड कं०, १९५७, पृ० ५९४, ड० क्रा०, १० रु०, उ० प्र०, (५५)।

समाजशास्त्र के सभी विषयों का सुन्दर एवं सरल विवेचन। विश्वविद्यालय कक्षाओं में समाजशास्त्र विषयक एक सहायक ग्रन्थ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

—भगवानदास केला : **मनुष्य जाति की प्रगति** : इलाहाबाद, भारतीय ग्रन्थ माला, १९५३, पृ० ३८२, डि० क्रा०, ३·५० रु०, उ० प्र०, (५०)।

मानव-जीवन के अधिक-से-अधिक पहलुओं पर उसकी प्रगति का प्रतिपादन।

संख्यातत्त्व

—महेन्द्रप्रतापसिंह : **सांख्यिकी सिद्धान्त और प्रयोग** : उ० प्र०, (५५-५६)।

राजनीति

—अनन्तसदाशिव अल्तेकर : **प्राचीन भारतीय शासन पद्धति** : प्रयाग, भारती भण्डार, २००४ वि०, पृ० २७६, डि०, ५ रु०, बि० रा० प०, पटना, (५२-५३), ना० प्र० सभा, काशी तथा उ० प्र०, (५०)।

भारत की प्राचीन शासन-पद्धति का मौलिक दृष्टिकोण से प्रामाणिक विवेचन।

—कन्हैयालाल वर्मा : **पाश्चात्य राजनीतिक विचारों का इतिहास** : बनारस, नन्दकिशोर एण्ड ब्रदर्स, १९५२, पृ० ३२१, डि०, ८·५० रु०, उ० प्र०, (५२-५३)।

प्राचीन और मध्यकालीन पाश्चात्य राजनीतिक विचारों का विवरण।

—कन्हैयालाल वर्मा : **भारतीय राजनीति और शासन-पद्धति** : बनारस, एजूकेशनल पब्लिशिंग हाउस, १९५२, पृ० ५१०, डि०, ८ रु०, उ० प्र०, (५५)।

भारत के राष्ट्रीय उत्थान का इतिहास सन् १८५८ से १९३५ तक।

—केदारनाथप्रसाद (प्रो०) : **नागरिक और राज्य (नागरिकशास्त्र)** : पटना, पुस्तक भण्डार, १९५१, पृ० ४९४, डि०, ८ रु०, उ० प्र०, (५२)।

भारतीय गणतन्त्र संविधान की विशद् पृष्ठभूमि में लिखित नागरिकशास्त्र का ग्रन्थ।

—गंगाप्रसाद उपाध्याय : **कम्युनिज़्म** : इलाहाबाद, कला प्रेस, १९५०, पृ० २२०, ड० क्रा०, १·५० रु०, उ० प्र०, (५१)।

कम्युनिज़्म के सिद्धान्तों की आलोचना।

—जयनारायण पांडेय : **प्रमुख राजनैतिक विचारों की चिन्तनधारा** : जबलपुर, लोक चेतना प्रकाशन, १९५६, पृ० ४३०, डि०, ७ रु०, उ० प्र०, (५६-५७)।

बारह पाश्चात्य और तीन भारतीय राजनीतिक विचारकों की विचारधाराओं का प्रतिपादन।

—त्रिलोचन पन्त : **इंगलैण्ड का संविधानिक इतिहास** : बनारस, नन्दकिशोर एण्ड ब्रदर्स, १९५५, पृ० ३२१, डि०, ५ रु०, उ० प्र०, (५५-५६)।

इंगलैण्ड की आंग्ल-सैक्सन काल से ट्यूडर काल के अन्त तक की संविधानिक व्यवस्था का इतिहास। डिग्री कक्षाओं के विद्यार्थियों के लिए लिखित।

—फिशर एच० (श्रीमती) तथा कस्तूरचन्द गुप्ता, सम्पादक रामतेलंग : **हम सरकार हैं** : इलाहाबाद, लिटरेसी हाउस, १९५५, पृ० ५४, (सचित्र), ३१ न० पै०, के० स० जन सा० प्रति०, (५५)।

नागरिकों के अधिकार और कर्तव्य की बोधक पुस्तक। निरक्षर प्रौढ़ों के लिए लिखित।

—बैजनाथसिंह 'विनोद' : **भारतीय जीवन की समाजवादी समीक्षा** : इलाहाबाद, किताब महल, १९५५, पृ० १६६, ड० क्रा०, २ रु०, उ० प्र०, (५५-५६)।

भारत की सम्पूर्ण सामाजिक स्थिति का समाजवादी दृष्टिकोण से अध्ययन।

—ब्रजमोहन शर्मा, डॉ० (प्राक्कथन श्री चन्द्रभान गुप्त): **प्रमुख देशों की शासन प्रणालियाँ** : चन्दौसी, जी० आर० भार्गव एण्ड सन्स, १९५२, पृ० ५२०, डि०, १२ रु०, उ० प्र०, (५१)।

संसार के प्रमुख देशों की शासन-प्रणालियों का विवेचन। विश्वविद्यालय कक्षाओं के लिए उपयोगी ग्रन्थ।

—ब्रजमोहन शर्मा, डॉ० : **राजशास्त्र के मूल सिद्धान्त** : उ० प्र०, (५१)।

—प्लातौन (मू० ले०), अनु० भोलानाथ शर्मा : **आदर्श नगर व्यवस्था** : प्रयाग, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, २००७ वि०, पृ० ७१२, ड० क्रा०, १० रु०, के० स० प्र० वि० पु० प्रति०।

विश्व-साहित्यिकों से समादृत प्लातौन (प्लेटो) के 'पोलितेइया' (रिपब्लिक) ग्रन्थ का मूल ग्रीक भाषा से हिन्दी अनुवाद।

—मनरो लीफ (मू० ले०) : **सच्ची नागरिकता** : दिल्ली,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजकमल प्रकाशन, १९५३, पृ० ८८, रॉ०, (सचित्र), २ रु०, के० स० बा० सा० प्रति०, (५४)।

बालकों के लिए नागरिकता के सिद्धान्तों की बोधक प्रसिद्ध पुस्तक।

—महादेवप्रसाद शर्मा (डॉ०) : **राजनीति के सिद्धान्त :** प्रयाग, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, २००६ वि०, पृ० ३८७, डि०, ८ रु०, उ० प्र०, (५१)।

राजनीतिक सिद्धान्त सम्बन्धी सभी आवश्यक और उपयोगी तथ्यों का समावेश। पारिभाषिक शब्दावली सहित।

—महेन्द्रप्रकाश अग्रवाल : **संयुक्तराज्य अमरीका का शासन :** प्रयाग, किताब महल, १९५६, पृ० ३३३, डि०, ४.७५ रु०, उ० प्र०, (५६-५७)।

विश्वविद्यालयों के राजशास्त्र के विद्यार्थियों के लिए लिखित पारिभाषिक शब्दावली, मानचित्रों एवं प्रश्नपत्रों सहित।

—महेन्द्रप्रकाश अग्रवाल : **स्वीटजरलैण्ड का शासन :** इलाहाबाद, किताब महल, १९५६, पृ० १८१, ड० क्रा०, २.५० रु०, उ० प्र०, (५६-५७)।

स्वीटज़रलैण्ड की शासन-प्रणाली का परिचय।

—महेन्द्रप्रकाश अग्रवाल : **सोवियत संघ का शासन :** इलाहाबाद, किताब महल, १९५६, पृ० २६४, ड० क्रा०, ३.७५ रु०, उ० प्र०, (५६-५७)।

सामाजिक और आर्थिक पृष्ठभूमि को ध्यान में रखते हुए सोवियत शासन-प्रणाली का सरल अध्ययन।

—राजनारायण गुप्त और राधानाथ चतुर्वेदी : **पाश्चात्य राजदर्शन का इतिहास :** इलाहाबाद, किताब महल, १९५४, पृ० ६६८, डि०, ८.७५ रु०, उ० प्र०, (५५)।

सोक्रेटीज़ से हिटलर और मुसोलनी तक का पाश्चात्य राजदर्शन का विवेचन। बी० ए० कक्षा के लिए लिखित।

—रामगोपाल : **भारतीय राजनीति :** बनारस, ज्ञान मण्डल लि०, २०११ वि०, पृ० ४७२, रॉ०, १० रु०, उ० प्र०, (५५)।

विक्टोरिया से नेहरू (१८५८-१९४७) तक भारतीय राजनीति का विवेचन। १०० वर्षों की राजनीति का इतिहास।

—रामायणप्रसाद : **हमारा संविधान :** वि०प्र०, (५३-५४)।

—लीलाधर शर्मा : **संयुक्त राष्ट्र संघ :** लखनऊ, वीणा प्रकाशन, १९५४, पृ० २१४, ड० क्रा०, २.५० रु०, उ० प्र०, (५५)।

संयुक्त राष्ट्र संघ और उससे संचालित संस्थाओं की सभी ज्ञातव्य बातों का संक्षिप्त प्रतिपादन।

—विश्वनाथ प्रसाद वर्मा (डॉ०) : **राजनीति और दर्शन :** पटना, बिहार राष्ट्र भाषा परिषद्, १९५६, पृ० ५५५, (अनुक्रमणिका पृ० ३०), सजिल्द १४ रु०, अजिल्द १२.५० रु०, बि० रा० प० (५५-५६) तथा उ० प्र० (५६-५७)।

चौदह अध्यायों में राजनीतिशास्त्र का दार्शनिक विवेचन।

—विष्णु प्रभाकर : **हमारे पड़ोसी :** नई दिल्ली, सस्ता साहित्य मण्डल, १९५७, पृ० ३२, ड० क्रा०, (सचित्र), ३६ न० पै०, के० स० अ० जन सा० प्रति०, (५७)।

नागरिकता का एक पाठ। पड़ोसी धर्म की शिक्षा।

—श्यामलाल पांडेय (डॉ०) : **जनतन्त्रवाद :** लखनऊ, अवध

मैथिलीशरण गुप्त :

कवि और भारतीय संस्कृति के आख्याता

ले० डॉ० उमाकान्त

एम० ए०, पी-एच० डी०

यह ग्रन्थ दिल्ली विश्वविद्यालय द्वारा पी-एच० डी० की उपाधि के लिए स्वीकृत शोध-प्रबन्ध है। इसमें गुप्त जी का सर्वाङ्गीण अध्ययन प्रस्तुत किया है। लेखक ने कई वर्ष के अनवरत परिश्रम के पश्चात् इस ग्रन्थ का प्रणयन किया है। अपने विषय के ग्रन्थों में यह सर्वोत्कृष्ट ग्रन्थ है।

नयनाभिराम आवरण, सुन्दर मुद्रण, मूल्य १५)

नेशनल पब्लिशिंग हाउस

नई सड़क, दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हिन्दी के सभी मूर्धन्य समालोचकों की दृष्टि में श्री सत्यप्रकाश संगर एक प्रतिभासम्पन्न कुशल कलाकार हैं। अभिव्यक्ति में प्रवाह, धारणा में मौलिकता, तथा शैली और कथोपकथन में प्रवीणता के कारण श्री संगर की गणना हिन्दी के कुछ प्रमुख लेखकों में अनायास ही आ जाती है।"
—हिन्दुस्तान टाइम्ज़

"संगर की कहानियों में यथार्थता का पुट हर कहीं परिलक्षित है, घटनाओं का चुनाव बड़ा ही आकर्षक है। चलती भाषा, फबती शैली, सरल विचार शायद उनकी रचनाओं के विशेष आकर्षण हैं।"
—दक्षिण भारत

"कहानियों की भाषा अत्यन्त सरल तथा बोलचाल की है। प्रवाहशील शैली है, कथोपकथन रोचक, मार्मिक एवं भावपूर्ण हैं।"
—सम्मेलन पत्रिका

हिन्दी-संसार के सुप्रसिद्ध लेखक
डॉ० सत्यप्रकाश संगर
की
मौलिक, रोचक एवं अनुपम कृतियाँ

उपन्यास

१. कली मुसकराई
२. घर की आन
३. चांद रानी

कहानी-संग्रह

४. अवगुण्ठन
५. कितना ऊँचा कितना नीचा
६. नया मार्ग
७. लम्बे दिन जलती रातें
८. अफ्रीका का आदमी [उ० प्र० सरकार द्वारा पुरस्कृत]

प्रकाशक : **विजय प्रकाशन**
१३६/१ कालेज कलोनी, भोपाल

मुख्य वितरक : **राजकमल प्रकाशन**
दिल्ली, इलाहाबाद, बम्बई, पटना, मद्रास

पब्लिशिंग हाउस, २००७ वि०, पृ० ३१४, डि०, ५
उ० प्र०, (५७)।

रामायण और महाभारतकालीन जनतन्त्रवाद
विवेचन। लखनऊ वि० वि० से पी-एच० डी० की उपा
के लिए स्वीकृत निबन्ध का परिवर्द्धित रूप।

—सत्यकेतु विद्यालंकार : **राजनीतिशास्त्र, प्रथम भा**
मसूरी, सरस्वती सदन, १९५४, (सं० सो० स०), पृ० ३
डि०, १०.७५ रु०, उ० प्र०, (५२)।

राज्य और राज्य-शासन। बी० ए० प्रथम वर्ष
लिए पाठ्य-ग्रन्थ। पारिभाषिक पदावली सहित।

—सत्यकेतु विद्यालंकार : **राजनीतिशास्त्र, द्वितीय भा**
मसूरी, सरस्वती सदन, १९५७, (तृ० सं०), पृ० ४०
७५२ तक, डि०, ५ रु०, उ० प्र०, (५२)।

बी० ए० द्वितीय वर्ष के लिए पाठ्य-ग्रन्थ। राज्य
राज्य-शासन।

—सत्यभक्त (स्वामी) : **राजनीति समस्या** : वर्धा, सत्या
१९५२, पृ० ९२, ड० क्रा०, ८८ न० पै०, उ० प्र
(५२-५३)।

विभिन्न राजनीतिक वादों का संक्षिप्त परिचय
राजनीति विषयक कुछ प्रश्नोत्तर।

—सुशीलचन्द्र सिंह : **महत्त्वपूर्ण शासन प्रणालियाँ**
उ० प्र०, (५५-५६)।

—सुशीलचन्द्र सिंह : **राजनीति, दो भागों में** : मेर
एस० डी० त्यागी द्वारा, १९५४, पृ० ४४८, डि०, ८
उ० प्र०, (५५)।

राजनीति के सिद्धान्त और राजनीतिक विचारधारा
का विवेचन।

—हरीमोहन जैन : **संयुक्त राज्य अमेरिका की शास**
प्रणाली : इलाहाबाद, चैतन्य पब्लिशिंग हाउस, १९५
पृ० २९८, डि०, ५.२५ रु०, उ० प्र०, (५५-५६)।

संयुक्त राज्य अमेरिका की शासन-प्रणाली का विश्ले
षण। भारतीय विश्वविद्यालयों के स्तर पर लिखित।

अर्थशास्त्र

—अजमेरा, बी० एल० : **भारतीय आर्थिक लेख** : रा० स
(५५-५६)।

—ओमप्रकाश केला : **भारतीय अर्थशास्त्र का विवेचन**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इलाहाबाद, भारतीय ग्रंथ माला १९५१, पृ० ५४४, रॉ०, १० रु०, उ० प्र०, (५२-५३)।

विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रमानुसार बी० ए० कक्षा के अर्थशास्त्र विषय के लिए लिखित। भारतीय अर्थशास्त्र का विस्तृत प्रतिपादन आँकड़ों एवं तालिकाओं सहित।

—आनन्दस्वरूप गर्ग : **अर्थशास्त्र के सिद्धान्त** : उ० प्र०, (५५)।

—कपिलदेव उपाध्याय (डॉ०) : **अर्थशास्त्र, सिद्धान्त और विश्लेषण** : आगरा, लक्ष्मीनारायण अग्रवाल, १९५४, पृ० ५७३, डि०, १० रु०, उ० प्र०, (५५)।

विश्वविद्यालयों की बी० ए० अथवा समानान्तर कक्षाओं के लिए अर्थशास्त्र का सैद्धान्तिक विवेचन (प्रश्न-पत्रों सहित)।

—ओमप्रकाश शर्मा : **भारतीय सहकारिता आन्दोलन** : महां० शा०।

—कालकाप्रसाद भटनागर तथा सुरेशचन्द्र : **भारतीय अर्थशास्त्र** : मसूरी, सरस्वती सदन, १९५७, (द्वि० सं०), पृ० ५६०, डि०, ८.५० रु०, उ० प्र०, (५६-५७)।

विश्वविद्यालयों की बी० ए० कक्षाओं के पाठ्यक्रम के अनुसार लिखित पाठ्य-ग्रन्थ। परिशिष्ट में आगरा वि० वि० के चुने हुए कुछ प्रश्न-पत्र।

—कृष्णकुमार शर्मा : **भारतीय मुद्रा विनिमय अधिकोषण तथा राजस्व** : आगरा, आगरा बुक स्टोर, १९५४, पृ० ४५४, डि०, ७ रु०, उ० प्र०, (५५)।

अधिकोषण, मुद्रा तथा राजस्व सम्बन्धी सिद्धान्तों का स्पष्टीकरण तथा तत्सम्बन्धी भारतीय निरूपण।

—केदारनाथ प्रसाद (प्रो०) : **आधुनिक अर्थशास्त्र** : पटना, पुस्तक भण्डार, १९५१, पृ० ६९४, डि०, १० रु०, उ० प्र०, (५२)।

अर्थशास्त्र के सैद्धान्तिक पक्ष का विशद् विवेचन, आँकड़ों एवं रेखाचित्रों सहित। उच्चतम कक्षाओं के लिए लिखित।

—चन्द्रदेवप्रसाद श्रीवास्तव : **राजस्व एवं भारतीय वित्त-व्यवस्था** : कानपुर, गौतम ब्रदर्स, २०१० वि०, पृ० २६७, डि०, ४.५० रु०, उ० प्र०, (५५)।

आँकड़ों एवं तथ्यों से युक्त राजस्व के मूल सिद्धान्तों

हिन्दुस्तानी एकेडेमी, उत्तर प्रदेश, इलाहाबाद

की

खोज और विवेचनपूर्ण त्रैमासिक पत्रिका

हिन्दुस्तानी

जनवरी '५८ से पुनः प्रकाशित हो रही है।

प्रधान सम्पादक : डॉ० माता प्रसाद गुप्त, एम० ए०, डी० लिट्०।

सहायक सम्पादक : डॉ० सत्यव्रत सिन्हा, एम० ए०, डी० फिल०।

सम्पादक मंडल

डॉ० धीरेन्द्र वर्मा, एम० ए०, डी० लिट्०
डॉ० वासुदेव शरण अग्रवाल, एम० ए०, डी० लिट्०
डॉ० हजारी प्रसाद द्विवेदी, पद्म विभूषण
डॉ० दीन दयालु गुप्त, एम० ए०, डी० लिट्०
डॉ० सत्य प्रकाश, एम० एस-सी०, डी० एस-सी०

द्वितीय अंक के प्रमुख लेख एवं लेखक

स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी काव्य की दिशा : डॉ० रघुवंश
सौराष्ट्री : डॉ० विनयमोहन शर्मा
ब्रजभाषा काव्य में नायक-नायिका-भेद : डॉ० जगदीश गुप्त
निघंटु (संस्कृत कोषविद्या) का इतिहास : श्री बलदेव उपाध्याय
मोमिन एक परिचय : श्री एम० मसीहुज्जमा
कबीर बीजक की पाठ-परंपरा : डॉ० पारसनाथ तिवारी
कन्नड वचन साहित्य परिचय : श्री बाबूराम कुमठेकर

एक प्रति २.५० वार्षिक शुल्क १०.००

हिन्दुस्तानी एकेडेमी, उत्तर प्रदेश, इलाहाबाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एवं भारतीय वित्त-व्यवस्था की आलोचनात्मक व्याख्या।

—देवदत्त शास्त्री : **कौटिल्य अर्थशास्त्र की भूमिका :** इलाहाबाद, किताब महल, पृ० १०४, ड० क्रा०, २.५० रु० उ० प्र०, (५५)।

कौटिल्य के व्यक्तित्व और उनके नाम-उपनामों, जीवन-तथ्य एवं जन्मभूमि सम्बन्धी कुछ मौलिक विचार।

—देवर्षि तथा सोलंकी : **राजस्थान का आर्थिक विकास :** रा०, (५४-५५)।

—एन० डी० टंडन और वीरेन्द्र टंडन : **अर्थशास्त्र के सिद्धान्त :** प्रयाग, इंडियन प्रेस लि०, १९५५, पृ० ८३९, रॉ०, ११ रु०, उ० प्र०, (५५)।

बी० ए० और बी० काम० के विद्यार्थियों के लिए पाठ्य-ग्रंथ के रूप में लिखित। अर्थशास्त्र के सैद्धान्तिक पक्ष का विस्तृत विवेचन।

—प्यारेलाल रावत : **भारत का आर्थिक विकास :** आगरा, आगरा बुक स्टोर, १९५४, पृ० ६३१, डि०, ८ रु०, उ० प्र०, (५५)।

भारतीय विश्वविद्यालयों के अर्थशास्त्र विषय की उच्च कक्षाओं के लिए पाठ्य-ग्रंथ के रूप में लिखित, आँकड़ों एवं तथ्यों से परिपूर्ण। अन्त में कुछ प्रश्न-पत्र भी।

—भगवानदास केला : **सर्वोदय अर्थशास्त्र :** इलाहाबाद, भारतीय ग्रंथमाला, १९५६, पृ० ३३५, ड० क्रा०, ४ रु०, बि० रा० प०, (५६-५७)।

सर्वोदय की दृष्टि से अर्थशास्त्र की रूपरेखा प्रस्तुत करने वाला ग्रंथ।

—मुरलीधर जोशी तथा सेवाराम शर्मा : **अर्थशास्त्र :** लखनऊ, अपर इण्डिया पब्लिशिंग हाउस लि०, १९५१, पृ० ४३२, डि०, १० रु०, उ० प्र०, (५२)।

अर्थशास्त्र के सैद्धान्तिक पक्ष का विवेचन।

—मुरलीधर जोशी : **द्रव्य शास्त्र :** प्रयाग, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, २००५ वि०, पृ० ११७, ड० क्रा०, २.२५ रु०, उ० प्र०, (५२)।

द्रव्य, बैंक और देशी विनिमय के सिद्धान्तों का निरूपण, पारिभाषिक पदावली सहित।

—शंकरसहाय सक्सेना : **भारतीय ग्राम्य अर्थशास्त्र :** प्रयाग, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, २००५ वि०, पृ० ४९२, डि०, ७ रु०, उ० प्र०, (५१)।

बी० काम० तथा एम० ए० परीक्षा के लिए ग्राम्य अर्थशास्त्र विषयक प्रश्न-पत्र के लिए लिखित भारतीय अर्थशास्त्र का सरल विवेचन।

—श्रीगोपाल तिवारी (डॉ०) : **भारतीय अर्थशास्त्र :** कानपुर, गौतम ब्रदर्स, १९५३, पृ० ६८३, डि०, १० रु० उ० प्र०, (५५)।

भारतीय अर्थ-व्यवस्था के विभिन्न पहलुओं का अध्ययन तथा तत्सम्बन्धी समस्याओं का विवेचन।

—श्रीगोपाल तिवारी और रामचन्द्र द्विवेदी : **हमारे भोजन की समस्या :** काशी, लेखक द्वारा, १९४६, पृ० ९६, डि० १.५० रु०, उ० प्र०, (५२)।

उत्पादन के दृष्टिकोण से खाद्य-समस्या पर विचार कुछ मौलिक सुझावों सहित।

—सुधाकर पाण्डेय : **मुद्रा और बैंक :** वाराणसी, हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, १९५५, पृ० ५८४, डि०, ६ रु० उ० प्र०, (५५-५६)।

आधुनिक मुद्राशास्त्र तथा अधिकोष प्रणाली का सम्यक् परिचय एवं विश्लेषण।

—हृषिकेशनारायण : **मुद्रा एवं मौद्रिक संस्थाओं का विश्लेषणात्मक अध्ययन :** पटना, पुस्तक भण्डार, १९५१, पृ० ३४१, डि०, ८ रु०, उ० प्र०, (५२)।

तीन खण्डों में मुद्रा एवं मौद्रिक संस्थाओं का विश्लेषण। पारिभाषिक पदावली एवं पटना यूनिवर्सिटी के प्रश्न-पत्रों सहित। डिग्री कक्षाओं के लिए लिखित।

दण्ड-विधि

परिपूर्णानन्द वर्मा : **प्राणदण्ड :** झाँसी, मयूर प्रकाशन, १९५४, पृ० २९२, ड० क्रा०, ५ रु०, उ० प्र०, (५५)।

प्राणदण्ड की प्रथा का इतिहास, समीक्षा तथा विवेचन।

—सिराजुद्दीन सिद्दिकी : **आंगुल्य छात्र विमर्श :** वि० प्र०, (५५-५६)।

समाज-कल्याण

—प्रेमचन्द्र श्रीवास्तव : **भारतीय औद्योगिक श्रमिकों का सामाजिक बीमा :** महा० स०।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

न या आ क र्ष ण

संस्कार और स्फूर्तिदायी साहित्य

श्री खांडेकरजी की दो नवीन रचनाएँ

प्रकाशित हुईं

१. सुख की खोज : (उपन्यास) मूल्य साढ़े चार रुपये

सुख किसमें है ?

सुख निरपेक्ष सेवा में है ।

सुख प्राण के लिये प्राण देने वाले मनुष्य से प्रेम करने में है ।

मनुष्य का सारा बल प्रेम देने और प्रेम लेने में है ।

२. तीसरा पहर : (लघुनिबन्ध-संग्रह) मूल्य चार रुपये

दिन के तीसरे पहर मनुष्य यदि क्षण-भर के लिए अन्तर्मुख हो जाय, तो बाढ़ आई नदी में तैरने वाले की भावनाओं का खासकर आधे से अधिक अन्तर तय कर लेने पर उस तैराक के मन में उठने वाले विविध विचारों का अल्लोल अपने हृदय में भी प्रतिध्वनित हो रहा है, ऐसा विश्वास होगा ।

* * * * * *

खांडेकरजी की अन्य प्रकाशित रचनाएँ

१. उल्का	(उपन्यास)	रु० ६·००
२. दो ध्रुव	,,	,, ६·००
३. हरा चंपा	,,	,, ६·००
४. दो मन	,,	,, ६·००
५. सूना मन्दिर	,,	,, ४·५०
६. महला प्रेम	,,	,, ४·५०
७. झुलसी मंजरी	,,	,, ५·००
८. रुपहले बादल	,,	,, ५·००
९. क्रौंचवध	,,	,, ६·००
१०. आंसू	,,	,, ६·००
११. ययाति	,,	(प्रेस में)

रूपक कथा

कलिका	६·००

ललित निबन्ध

कल्पलता	५·००
चाँदनी	६.००
तीसरा पहर	५·००

कहानियाँ

प्रीति की खोज	५·००
संध्यादीप	३·००

प्रकाशक—**देशमुख आणि कम्पनी, २२ कसबा, पूना—२**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संगीत के प्रकाशन

बाल संगीत शिक्षा भाग १ : अपर प्राइमरी सैक० के लिए	०.५०
बाल संगीत शिक्षा भाग २ : पाँचवीं, छठी कक्षा के लिए	०.७५
बाल संगीत शिक्षा भाग ३ : सातवीं, आठवीं कक्षा के लिए	१.००
संगीत किशोर : नवीं, दसवीं कक्षा के लिए	१.५०
संगीत शास्त्र : इण्टर तक की थ्योरी	१.००
क्रमिक पुस्तक मालिका भाग १ : इण्टर तक के लिए	१.००
क्रमिक पुस्तक मालिका भाग २, ३, ५ या ६ : आगामी कक्षाओं के लिए	८.००
क्रमिक पुस्तक मालिका भाग ४ :	१०.००
संगीत सोपान : हाई स्कूल के प्रश्नोत्तर	३.००
संगीत विशारद : प्रथम से चौथे वर्ष की थ्योरी	५.००
संगीत सीकर : इण्टर स्टैण्डर्ड के प्रश्नोत्तर	५.००
संगीत अर्चना : क्रमिक पुस्तक भाग तीन की तानें	५.००
संगीत कादम्बिनी : क्रमिक पुस्तक भाग चार की तानें	५.००
भातखण्डे संगीत शास्त्र भाग १ : शास्त्रीय विवेचन	५.००
भातखण्डे संगीत शास्त्र भाग २ : शास्त्रीय विवेचन	६.००
भातखण्डे संगीत शास्त्र भाग ३ : शास्त्रीय विवेचन	६.००
भातखण्डे संगीत शास्त्र भाग ४ : शास्त्रीय विवेचन	१५.००
मारिफुन्नगमात भाग १ : इण्टर की थ्योरी व प्रेक्टीकल	६.००
मारिफुन्नगमात भाग २ : विशारद की थ्योरी व प्रेक्टीकल	६.००
संगीत सागर : गायन, वादन, नृत्य शिक्षा	६.००
बेला विज्ञान : सचित्र वायलिन शिक्षा	४.००
सितार शिक्षा : सचित्र, सितार बजाने की शिक्षा	२.५०
कलावन्तों की गायकी : शास्त्रीय रिकार्डों की स्वरलिपि	३.००
हमारे संगीत रत्न : ३४० कलाकारों की जीवनी	१५.००
सहगल संगीत : सहगल के रिकार्डों की स्वरलिपि	२.५०
बेंजो मास्टर : बेंजो बजाने की शिक्षा	२.००
संगीत पद्धतियों का तुलनात्मक अध्ययन	२.५०
सूर संगीत भाग १ : मय स्वरलिपि के ६० पद	१.५०
सूर संगीत भाग २ : मय स्वरलिपि के ६० पद	१.५०
ताल अंक : सचित्र ताल शिक्षा	४.००
ठुमरी अंक : ऊँचे कलाकारों की ठुमरियाँ	२.५०
सन्त संगीत अंक : भजनों की स्वरलिपियाँ	२.५०
राष्ट्रीय संगीत अंक : देश-प्रेम के गीतों की स्वरलिपि	२.५०
राग अंक : सोदाहरण राग विवरण	२.५०
वाद्य संगीत अंक : कई साजों को बजाना	३.००
बिलावल ठाठ अंक : ४० रागों के उदाहरण	२.५०
कल्याण ठाठ अंक : २५ रागों के उदाहरण	२.५०
भैरव ठाठ अंक : ३३ रागों के उदाहरण	२.५०
पूर्वी ठाठ अंक : २७ रागों का उदाहरण	२.५०
खमाज ठाठ अंक : ३३ रागों का उदाहरण	२.५०
काफी ठाठ अंक : ५८ रागों का उदाहरण	२.५०
नृत्य अंक : नृत्य विवरण	३.००
नृत्यशाला : नृत्य शिक्षा	२.००
कथकलि नृत्यकला	२.५०
नृत्य भारती : हाई स्कूल व इण्टर के लिए नृत्य शिक्षा	३.००
म्यूज़िक मास्टर : हारमोनियम, तबला, बंशी शिक्षा	२.००
महिला हारमोनियम गाइड	१.५०
संगीत पारिजात : हिन्दी टीका सहित	४.००
स्वरमेल कलानिधि : हिन्दी टीका सहित	१.००
संगीत दर्पण : हिन्दी टीका सहित	२.००
फिल्म संगीत भाग २७वाँ : फिल्मी गाने की स्वरलिपि	४.००
आवाज सुरीली कैसे करें ?	२.००
अप्रकाशित राग भाग १, २ ३	४.५०
पिल्ला : 'काका' कवि की हास्य कविताएँ	२.००
म्याऊँ ,, ,,	२.००
काका की कचहरी ,, ,,	३.००

'संगीत' मासिक पत्र सन् १९३५ से बराबर निकल रहा है, वार्षिक मूल्य ६ रु०

पुस्तकों पर डाक खर्च अलग लगेगा

प्रकाशक : संगीत कार्यालय, हाथरस (उ० प्र०)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

—सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार : **समाज कल्याण तथा सुरक्षा** : देहरादून, विद्या विहार, १९५७, पृ० ५५२, डि०, १० रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

समाज-सेवकों के लिए प्रामाणिक विचारधारा देने एवं विश्वविद्यालयों में निर्धारित समाज-कल्याण विषय का अध्यापकों एवं विद्यार्थियों को बोध कराने के लिए लिखित ग्रंथ। श्रीमती दुर्गाबाई देशमुख के प्राक्कथन सहित।

शिक्षा

—ईश्वरचन्द्र शर्मा : **आधुनिक शिक्षा मनोविज्ञान** : दिल्ली, आत्माराम एण्ड सन्स, १९५३, पृ० १८८, डि०, ५ रु०, उ० प्र० तथा रा०, (५४-५५)।

शिक्षा-मनोविज्ञान के विभिन्न अंगों तथा नवीनतम सिद्धान्तों का सम्यक् विश्लेषण।

—रामखेलावन चौधरी : **शिक्षणविधियों की रूपरेखा** : लखनऊ, हिन्दी साहित्य भण्डार, १९५८, पृ० ६२४, ड० क्रा०, ८·७५ रु०, बि० रा० प०, पटना, (५७-५८)।

शिक्षा-जगत् में होने वाली प्राचीन और अर्वाचीन शिक्षण-विधियों एवं प्रयोगों का विस्तार से दिग्दर्शन।

—रामप्रसाद भटनागर : **शिक्षा में आँकड़ों का प्रयोग** : मुरादाबाद, मीनाक्षी प्रकाशन मन्दिर, १९५४, पृ० ९९, ड० क्रा०, ४.५० रु०, उ० प्र०, (५५)।

—वेणीमाधव शर्मा : **प्रौढ़ शिक्षा के प्रयोग और विधान** : बनारस, नन्दकिशोर एण्ड ब्रदर्स, १९५२, पृ० २६०, ड० क्रा०, ३.५० रु०, उ० प्र०, (५२-५३)।

एम० एड्० परीक्षा के दृष्टिकोण से लिखित प्रौढ़ों की शिक्षा के सम्बन्ध में कुछ मौलिक सुझावों सहित।

—वेणीमाधव शर्मा, (भूमिका लेखक माननीय सम्पूर्णानन्द) : **बच्चों की शिक्षा, एक जटिल समस्या** : काशी, पुस्तक भवन, २००१ वि०, पृ० ९६, ड० क्रा०, उ० प्र०, (५२)।

बालकों की शिक्षा-सम्बन्धी अनेक महत्त्वपूर्ण पहलुओं पर विचार।

—वेणीमाधव शर्मा : **रचनात्मक शिक्षा** : बनारस, नन्दकिशोर एण्ड ब्रदर्स, १९५०, पृ० २७७, ड० क्रा०, ३.५० रु०, उ० प्र०, (५२)।

१९ अध्यायों में रचनात्मक शिक्षा का संक्षिप्त सर्वांगीण विवेचन।

—वेणीमाधव शर्मा : **सामाजिक शिक्षा** : बनारस, नन्दकिशोर एण्ड ब्रदर्स, १९५०, पृ० २११, ड० क्रा०, २.५० रु०, उ० प्र०, (५२)।

—शम्भूनाथ झा : **भारतीय शिक्षा की प्रगति** : इलाहाबाद, रामनारायणलाल, १९५१, पृ० १५७, ड० क्रा०, २.५० रु०, उ० प्र०, (५२)।

भारतीय शिक्षा के क्रमिक विकास का संक्षिप्त विवरण। प्रशिक्षण कक्षाओं के पाठ्य-ग्रन्थ के रूप में लिखित।

—श्रीकृष्ण देव सरे : **बेसिक कलाकौशल** : वि० प्र०, (५४-५५)।

—सीताराम जायसवाल : **पश्चिमी शिक्षा का इतिहास** : बनारस, नन्दकिशोर एण्ड ब्रदर्स, १९५१, पृ० ६५०, (सचित्र), ड० क्रा०, ७.५० रु०, उ० प्र०, (५२)।

पश्चिमी देशों की शिक्षा का क्रमबद्ध इतिहास।

—सीताराम जायसवाल : **शिक्षाशास्त्र** : बनारस, नन्दकिशोर एण्ड ब्रदर्स, १९५७, पृ० ६७६, ड० क्रा०, ७ रु०, उ० प्र०, (५१)।

शिक्षाशास्त्र का सर्वांगीण विस्तृत विवेचन।

वाणिज्य-व्यापार

—कृष्णदत्त वाजपेयी : **भारतीय व्यापार का इतिहास** : मथुरा, राष्ट्रभाषा प्रकाशन, १९५१, पृ० ४१२, डि०, ७ रु०, बि० रा० प०, (५६-५७) तथा ना० प्र० स० काशी से भी पुरस्कृत।

भारतीय व्यापार के विकास, प्रसार और ह्रास का प्रामाणिक अद्यतन विवेचन।

प्रथाएँ, परम्पराएँ

—ब्रह्मदत्त दीक्षित तथा कृष्णा दीक्षित : **बनवासी भारत** : नागन्दा, पर्ण कुटीर प्रकाशन, २००४ वि०, पृ० १०४, डि०, (सचित्र), २.२५ रु०, वि० प्र०, (५४-५५)।

भारत की बनवासी जातियों के जीवन का सुन्दर चित्रण, आचार्य नरेन्द्र देव की भूमिका सहित।

—भगवानदास केला तथा अखिल विनय : **हमारी आदिम जातियाँ** : इलाहाबाद, भारतीय ग्रन्थमाला, १९५०, पृ० ३५४, ड० क्रा०, ३.५० रु०, उ० प्र०, (५२)।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विभिन्न आदिम जातियों की सभ्यता, भाषाएँ, लोक-साहित्य, लोक-नृत्य, धर्म एवं त्योहार, संस्कार तथा संगठन आदि की संक्षिप्त सारगर्भित विवेचना।

—सरोजनी देवी वैद्य (श्रीमती) : **महिला जीवन** : मेरठ, लेखिका द्वारा, १९४८, पृ० ११९०, डं० क्रा०, १६ रु०, उ० प्र०, (५०)।

स्त्री-जीवन को सफल व स्वस्थ बनाने का मार्ग-दर्शक एक महान् ग्रन्थ।

—सावित्री देवी वर्मा (श्रीमती) : **नारी का रूप-शृंगार** : दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, १९५५, पृ० २५६, (सचित्र), डि०, ६ रु०, उ० प्र०, (५६-५७)।

नारी के बाह्य रूप सँवारने के साथ ही उसके व्यक्तित्व, मानसिक एवं शारीरिक स्वास्थ्य एवं आचरण के सौन्दर्य के महत्त्व का प्रतिपादक ग्रन्थ।

—सावित्रीदेवी वर्मा (श्रीमती) : **पारिवारिक समस्याएँ** : दिल्ली, आत्माराम एण्ड सन्स, १९५७, पृ० ३६०, (सचित्र), डि०, ७·५० रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

असन्तुलित गार्हस्थ्य-जीवन में सामञ्जस्य लाने के लिए लेखिका के कुछ लिखित, व्यावहारिक सुझावों सहित। पारिवारिक जीवन को सफल बनाने के लिए सहायक पुस्तक।

पंजाबी के विख्यात नाटककार

हरसरणसिंह

के एकांकियों का हिन्दी में सर्वप्रथम प्रकाशन

जोत से जोत जले

इन नाटकों के विषय में श्री हरिकृष्ण प्रेमी कहते हैं—"मैंने जब पुस्तक को पढ़ना प्रारम्भ किया उस समय मैं समझता था कि नाटकों में कोई विशेष बात न होगी; किन्तु एक के बाद एक पृष्ठ पढ़ता गया और मुझे उनमें रस मिला।···मैंने इन्हें काफी अच्छा पाया। इन नाटकों में लेखक ने जो चरित्र उठाए हैं, जो घटनाएँ अंकित की हैं और जो प्रभाव डालना चाहा है, उसमें उन्हें पूर्ण सफलता मिली है। मैं पंजाबी के नाटककार हरसरणसिंह का हिन्दी भाषा के क्षेत्र में आगमन अभिनन्दनीय समझता हूँ।"

मूल्य २·५०

सञ्जीत पब्लिशर्स

माई हीराँ गेट, जालंधर

भाषाशास्त्र

भाषाशास्त्र (सामान्य)

—कपिलदेव द्विवेदी : **अर्थ विज्ञान और व्याकरण दर्शन** : इलाहाबाद, हिन्दुस्तानी एकेडेमी, १९५१, पृ० ३९७, रॉ०, १२ रु०, उ० प्र०, (५२)।

वाक्तत्त्व, अर्थतत्त्व एवं उसके सम्बन्ध के विषय में अत्यन्त सूक्ष्म एवं स्पष्ट अभिव्यक्ति। प्रयाग विश्वविद्यालय द्वारा डी० फिल्० के लिए स्वीकृत प्रबन्ध।

—कपिलदेव सिंह (डॉ०) : **ब्रजभाषा बनाम खड़ीबोली** : आगरा, विनोद पुस्तक मन्दिर, १९५६, पृ० ३४०, डि०, ८ रु०, उ० प्र०, (५६-५७)।

कविता के माध्यम से गत सौ वर्षों में ब्रजभाषा और खड़ीबोली सम्बन्धी विवाद की रूपरेखा। आगरा विश्वविद्यालय द्वारा पी-एच० डी० के लिए स्वीकृत प्रबन्ध।

—कान्ति श्रीवास्तव (श्रीमती) : **अर्थ ध्वनि एवं विचार** : (५४-५५)।

—किशोरीदास वाजपेयी : **राष्ट्रभाषा का प्रथम व्याकरण** : कलकत्ता, जनवाणी प्रकाशन, १९४९, पृ० १९८, डं० क्रा०, ४ रु०, उ० प्र०, (५१)।

विशेषत: अहिन्दी-भाषियों के लिए हिन्दी-व्याकरण की प्रामाणिक पुस्तक।

—किशोरीदास वाजपेयी : **हिन्दी निरुक्त** : कलकत्ता, जनवाणी प्रकाशन, २००६ वि०, पृ० १२४, डं० क्रा०, २·२५ रु०, उ० प्र०, (५१)।

हिन्दी में शब्द-विकास के नियमों का प्रथम मौलिक प्रयास।

—तेस्सितोरी, एल० पी०, डॉ०, (मू० ले०), अनु० नामवर सिंह : **पुरानी राजस्थानी** : काशी, नागरी प्रचारिणी सभा, २०१२ वि०, पृ० २१२, डि०, ४ रु०, उ० प्र०, (५५-५६)।

डॉ० तेस्सितोरी के पुरानी राजस्थानी पर खोजपूर्ण निबन्ध का भाषान्तर, लेखक के संक्षिप्त परिचय सहित।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

—बालगोविन्द मिश्र : **हिन्दी भाषा और नागरी लिपि का विकास** : उ० प्र०, (५७-५८)।

—ब्रजराज चौधरी : **चित्रों में १, २, ३, ४** : के० स०, (५८)।

—भोलानाथ तिवारी : **शब्दों का जीवन** : दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, पृ० ११५, ड० क्रा०, २ रु०, उ० प्र०, (५५)।

शब्दों के आन्तरिक और बाह्य परिवर्तनों से सम्बन्धित भाषा-वैज्ञानिक तथ्यों का मनोरंजक अध्ययन।

—भोलाशंकर व्यास (डॉ०) : **संस्कृत भाषा का शास्त्रीय अध्ययन** : वाराणसी, भारतीय ज्ञानपीठ, १९५७, पृ० ३३८, ड० क्रा०, ५ रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

भाषा-विज्ञान की दृष्टि से आदि भाषा संस्कृत का सम्यक् अध्ययन। साथ-साथ भारोपीय भाषा-विज्ञान का तुलनात्मक अध्ययन भी।

—युधिष्ठिर मीमांसक : **संस्कृत व्याकरण का इतिहास** : देहरादून, वैदिक साधन आश्रम, २००७ वि०, पृ० ४५८, डि०, १० रु०, उ० प्र०, (५२)।

१७ अध्यायों में संस्कृत व्याकरण के इतिहास का प्रामाणिक विवेचन।

—रामचन्द्र वर्मा : **कोश कला** : बनारस, साहित्यरत्न माला कार्यालय, २००९ वि०, पृ० १५६, ड० क्रा०, १.५० रु०, उ० प्र०, (५५)।

शब्द-कोश-रचना की कार्य-प्रणाली, नियम एवं सिद्धान्त।

—रामचन्द्र वर्मा, (प्रस्तावना—श्रीप्रकाश राज्यपाल): **शब्द साधना** : बनारस, साहित्य रत्नमाला कार्यालय, २०१२ वि०, पृ० ३७६, ड० क्रा०, ५ रु०, उ० प्र०, (५५-५६)।

आधुनिक दृष्टिकोण से हिन्दी के कुछ शब्दों के पर्यायों के सूक्ष्म प्रयुक्त शब्दों के अर्थ-भेदों का निरूपण, उदाहरण एवं व्याख्या सहित। ४१ पृष्ठों की अनुक्रमणिका अंग्रेजी पर्याय सहित। हिन्दी शब्दों के समानार्थ अंग्रेजी शब्दावली भी।

—सत्यभक्त, स्वामी : **मानव भाषा** : वर्धा, सत्याश्रम, १९४७, पृ० १९४, ड० क्रा०, २ रु०, उ० प्र०, (५२-५३)।

मनुष्य-मात्र के लिए सरल और नई भाषा का प्रतिपादन।

—सरयूप्रसाद अग्रवाल (डॉ०) : **प्राकृत विमर्श** : लखनऊ, लखनऊ विश्वविद्यालय, २००९ वि०, पृ० १०९, ड० क्रा०, ४.५० रु०, उ० प्र० (५३)।

प्राकृत भाषाओं का संक्षिप्त परिचय।

—सुनीतिकुमार चाटुर्ज्या (डॉ०) : **भारतीय आर्य भाषा और हिन्दी** : दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, १९५७, पृ० २६४ डि०, ७.२५ रु०, उ० प्र०, (५५)।

भारत में आर्य भाषा के विकास और भारत की राष्ट्र-भाषा हिन्दी के रूप में हिन्दी पर क्रमशः चार-चार व्याख्यानों का पुनर्निरीक्षित एवं विस्तृत संकलन।

—सुनीतिकुमार चाटुर्ज्या : **राजस्थानी भाषा** : उदयपुर, राजस्थान विश्व विद्यापीठ, १९४९, पृ० ८६, ड० क्रा०, २.५० रु०, ना० प्र० सभा, (२००७ वि०)।

राजस्थानी भाषा सम्बन्धी लेखक के तीन भाषणों का संग्रह।

—हरिहरनिवास द्विवेदी, (भू० ले० वासुदेवशरण अग्रवाल) : **मध्यदेशीय भाषा** : ग्वालियर, विद्या मन्दिर प्रकाशन,

अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति-प्राप्त हिन्दी प्रकाशन

मानस की (रूसी) भूमिका

मूल लेखक—स्व० प्रोफेसर ए० पी० वरान्नीकोव

अनुवादक—डॉ० केसरी नारायण शुक्ल, डी० लिट्०

भूमिका लेखक—महापण्डित राहुल सांकृत्यायन

'रामचरितमानस' के रूसी रूपान्तर के भूमिका भाग का हिन्दी अनुवाद।

इस पर उत्तर प्रदेशीय सरकार ने अनुवादक को ५००) का पुरस्कार दिया है। **मूल्य ६.००**

आज ही मँगाइए।

पता—

हिन्दी-साहित्य भण्डार,

गंगाप्रसाद रोड, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२०१२ वि०, पृ० २४३, डि० क्रा०, ५ रु०, उ० प्र०, (५५-५६)।

मध्यदेशीय भाषा 'ग्वालियरी हिन्दी' का विश्लेषणात्मक अध्ययन।

शुद्ध विज्ञान

शुद्ध विज्ञान, सामान्य

—ओमप्रकाश : **आकाश की बातें** : नई दिल्ली, सस्ता साहित्य मण्डल, १९५७, पृ० ३६, ड० क्रा०, (सचित्र), ३७ न० पै०, के० स० जन सा० प्रति०, (५७)।

तारों और नक्षत्रों आदि के विषय में सरल रोचक वर्णन।

—उमाशंकर : **साइंस की कहानियाँ** : इलाहाबाद, किताबिस्तान, १९४८, पृ० १३३, फु० स्के०, (सचित्र), ३.७५ रु०, के० स० बाल सा० प्रति०, (५६)।

कहानियों के रूप में दुनिया और उसके जीवन, बनावट और नियमों का परिचय।

—गणपति चतुर्वेदी : **जीने के लिए** : इलाहाबाद, किताब महल, १९५२, पृ० १८८, ड० क्रा०, २ रु०, उ० प्र०, (५३)।

भयानक, संक्रामक एवं छूत के रोगों से बचने के लिए वैज्ञानिकों की विविध खोजों का वर्णन।

—जगपति चतुर्वेदी : **पेनिसिलिन की कहानी** : प्रयाग, किताब महल, १९५७, पृ० १७८, ड० क्रा०, २ रु०, उ० प्र०, (५३)।

रसायन-चिकित्सा के विकास तथा पेनिसिलिन के आविष्कार की कथा।

—जगपति चतुर्वेदी : **वैज्ञानिक आविष्कार, प्रथम भाग** : प्रयाग, किताब महल, १९५३, पृ० २१०, ड० क्रा०, (सचित्र), २ रु०, उ० प्र०, (५३)।

पुरातन तथा नूतन विविध वैज्ञानिक खोजों की विशद कहानियाँ।

—जगपति चतुर्वेदी : **वैज्ञानिक आविष्कार, द्वितीय भाग** : इलाहाबाद, किताब महल, १९५६, पृ० १८८, (सचित्र), ड० क्रा०, २ रु०, उ० प्र०, (५३)।

पुरातन तथा नूतन कुछ वैज्ञानिक खोजों की विशद कहानियाँ।

—मन्मथनाथ गुप्त : **आदमी का जन्म** : दिल्ली, आत्माराम एण्ड संस, १९५५, पृ० ५२, फु० स्के०, (सचित्र), १.२५ रु०, के० स०।

बालकों के लिए विज्ञान के सरल ज्ञान का परिचय।

—रामचन्द्र तिवारी तथा सिद्धि तिवारी (श्रीमती) : **विज्ञान और सभ्यता** : दिल्ली, आत्माराम एण्ड सन्स, १९५६, पृ० १९१, (सचित्र), डि०, ५ रु०, उ० प्र०, (५६-५७)।

विज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों एवं प्रमुख आविष्कारों के विकास का सरल संक्षिप्त परिचय।

—लालकृष्ण अग्रवाल : **मानव और मशीन** : प्रथम खण्ड बनारस, लेखक द्वारा, १९५३, पृ० ३१९, ड० क्रा० २.५० रु०, उ० प्र०, (५५)।

मशीन के क्रम-विकास का विवेचन एवं उसका मानव पर प्रभाव।

—सत्यप्रकाश (डॉ०) : **कुछ आधुनिक आविष्कार** : इलाहाबाद हिन्दुस्तानी एकेडेमी, १९५४, पृ० २९४, ड० क्रा०, (सचित्र) ५ रु०, उ० प्र०, (५५-५६)।

१९ शीर्षकों के अन्तर्गत प्रमुख आधुनिक आविष्कारों का रोचक परिचय।

—सत्यप्रकाश (डॉ०) : **वैज्ञानिक विकास की भारतीय परम्परा** : पटना, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, २०१० वि० पृ० २६८, रॉ०, ८ रु०, उ० प्र०, (५५)।

वैदिक काल से अब तक के भारतीय विज्ञान के विभिन्न अंगों में प्राप्य सामग्री का समन्वित रूप। गणित, ज्योतिष, रसायन, आयुर्वेद आदि का सर्वाङ्गीण अध्ययन।

—हरिभगवानन : **दैनिक जीवन में विज्ञान** (रसायन शास्त्र) : लखनऊ, अशोक प्रकाशन, १९५६, पृ० २०६, ड० क्रा०, ३.५० रु०, उ० प्र०, (५६-५७)।

रसायन के जीवन सम्बन्धी उपयोगों का सरल भाषा में प्रतिपादन।

गणित

—ब्रजमोहन (डॉ०) : **गणितीय कोश** : बनारस, चौखम्बा विद्या भवन, १९५४, पृ० ६९९, ड० क्रा०, ९ रु०, उ० प्र०, (५५-५६)।

गणितीय परिभाषा और शब्दावली।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

—गोरखप्रसाद (डॉ०) : **नीहारिकाएँ** : पटना, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, २०११ वि०, पृ० ७१, रॉ०, (सचित्र), ४.२५ रु०, उ० प्र०, (५५-५६)।

नीहारिकाओं और विश्व-रचना के सम्बन्ध में आधुनिक खोजों एवं निर्माण का संक्षिप्त परिचय।

—गोरखप्रसाद (डॉ०) : **सरल गणित ज्योतिष** : उ० प्र०, (५६-५७)।

—नेमिचन्द्र शास्त्री : **भारतीय ज्योतिष** : काशी, भारतीय ज्ञानपीठ, १९५३, पृ० ६२२, ड० क्रा०, ६ रु०, उ० प्र० (५३)।

भारतीय ज्योतिष का सर्वाङ्गीण अध्ययन।

—सन्तोषनारायण नौटियाल : **चन्दा मामा का देश** : दिल्ली, आत्माराम एण्ड सन्स, १९५५, पृ० १०६, फु० स्कै०, (सचित्र), ४ रु०, के० स० बाल सा० प्रति०, (५४)।

चन्द्रमा तथा अन्य ग्रह, नक्षत्र, नदी, झील, सागर तथा अन्य ग्रहों के विषय में बालोपयोगी सरल भाषा एवं सुन्दर शैली में विवेचन।

पदार्थ विज्ञान

—जगपति चतुर्वेदी : **बिजली की लीला** : इलाहाबाद, किताब महल, १९५१, पृ० १६८, ड० क्रा०, २ रु० उ० प्र०, (५२)।

बिजली के सम्बन्ध में एक परिचयात्मक पुस्तक।

—निहालकरण सेठी : **प्रकाश विज्ञान** : दिल्ली, प्रीमियर पब्लिशिंग कम्पनी, १९५५, पृ० ५२३, डि०, (सचित्र), १० रु०, बि० रा० प०, (५६-५७)।

'प्रकाश विज्ञान' पर बी० एस-सी० कक्षा के लिए पाठ्य-ग्रन्थ के रूप में उपयोगी ग्रन्थ।

—ब्रह्मानन्द गुप्त तथा नरेश वेदी : **प्रकाश की बातें** : दिल्ली, सस्ता साहित्य मण्डल, १९५७, पृ० ४४, फु० स्कै०, (सचित्र), १.५० रु०, के० स० बाल सा० प्रति०, (५८)।

प्रकाश के विषय में जानने योग्य आवश्यक बातें। बालोपयोगी सरल भाषा और रोचक शैली।

—भगवतीप्रसाद श्रीवास्तव : **घरेलू बिजली** : वाराणसी, ज्ञान मण्डल लि०, २०१४ वि०, पृ० १०५, फु० स्कै०, (सचित्र), ४ रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

प्रत्येक नागरिक के लिए बिजली के सम्बन्ध में साधारण जानकारी के लिए लिखित।

रसायनशास्त्र

—सत्यप्रकाश (डॉ०) : **सामान्य रसायनशास्त्र** : प्रयाग, भारती भण्डार, २००८ वि०, पृ० ११६४, डि०, १४ रु०, हि० सा० स० द्वारा गोविन्दराम सेक्ससरिया विज्ञान पुर०, (२००८ वि०)

भारतीय विश्वविद्यालयों की बी० एस-सी० कक्षा के विद्यार्थियों के लिए लिखित, अकार्बनिक रसायन पर प्रामाणिक ग्रन्थ।

भू-विज्ञान

—जगपति चतुर्वेदी : **ज्वालामुखी** : प्रयाग, किताब महल, १९५२, पृ० २१६, ड० क्रा०, २ रु०, उ० प्र०, (५२-५३)।

ज्वालामुखी सम्बन्धी ज्ञातव्य बातों का रोचक वर्णन।

—जगपति चतुर्वेदी : **भूगर्भ विज्ञान** : प्रयाग, किताब महल, १९५२, पृ० २४०, ड० क्रा०, (सचित्र), २ रु०, उ० प्र०।

धरती के निर्माण, अन्तर्भाग तथा पपड़ी की रचना एवं अनेक युगों से होते आने वाले परिवर्तन आदि का रोचक वर्णन।

पुरातन जीव-विज्ञान

—ऋषिदेव विद्यालंकार : **मानव विज्ञान** : बि० रा० प०, (५४-५५)।

—दयानन्द पन्त : **विकासवाद** : इलाहाबाद, हिन्दुस्तानी एकेडेमी, १९५१, पृ० १२०, ड० क्रा०, २.२५ रु०, उ० प्र०, (५२)।

डार्विन के विकासवाद का संक्षिप्त परिचय, पारिभाषिक वैज्ञानिक पदावली सहित।

वनस्पति विज्ञान

—जगपति चतुर्वेदी : **वनस्पति की कहानी** : प्रयाग, किताब महल, १९५१, पृ० २३९, ड० क्रा०, (सचित्र), २ रु०, उ० प्र०, (५२-५३)।

वनस्पति-जगत् का संक्षिप्त रोचक वर्णन।

जन्तु विज्ञान

—जगपति चतुर्वेदी : **कीट-पतंगों का संसार** : इलाहाबाद,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे नये प्रकाशन

डॉ० गोविन्द चातक के लोक-साहित्य
सम्बन्धी दो संचयन

गढ़वाली लोक-गाथाएं ५)

मूल, हिन्दी अनुवाद, टिप्पणियों और विशद भूमिका सहित पवाड़े, धार्मिक, पौराणिक तथा सामाजिक कथा-गीत

सपना मुस्कराया १)

गढ़वाल की सरस और सजीव लोक-कथाओं का बालकों, वयस्कों और लोक-साहित्य के रसज्ञों के लिए अनुपम संकलन

"चातकजी ने गढ़वाल के लोक-गीतों के संकलन, सम्पादन और अध्ययन में बहुत समय लगाया है। उनकी कृतियों से लोक-साहित्य के प्रेमियों को बहुत लाभ हुआ है। उन्हीं जैसे सहृदय साहित्यकार लोक भारती के सच्चे पारखी हो सकते हैं।" —**राहुल सांकृत्यायन**

"आपका संग्रह लोक-गीतों के प्रति नई आस्था प्रदान करता है।" —**डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल**

उपन्यास : तूफान के बाद

ले० राजेन्द्रकुमार मू० ४)

आज़ादी के बिगुल की आवाज़ उन गाँवों में भी गूँज उठी है, जहाँ पुरानी मान्यताएँ हैं, गन्दे रस्मो-रिवाज हैं, जिन्हें अभी इस युग की हवा तक नहीं लग पाई।

प्रस्तुत उपन्यास ग्रामीण वातावरण पर एक सफल कृति है।

हमारे अन्य प्रमुख प्रकाशन

● उपन्यास—

भटकती आत्मा : कंचनलता सब्बरवाल ३॥)
स्वतन्त्रता की ओर : कंचनलता सब्बरवाल ३)
ममता : १) **मीठा जहर** : १)

● कविता :

सुरभि १।) **नया स्वर्ग** १) **विभूति** १॥)

● बाल साहित्य :

नई कहानियाँ [चीनी लोक-कथाएं] १)

● अन्य :

श्रीमद्वाल्मीकि रामायण, तीन खण्ड १६॥)
महिला सुबोधिनी : राजबहादुरसिंह २॥)

मोहिनी प्रकाशन

१७, राजपुर रोड, देहरादून

किताब महल, १९५७, पृ० १९५, (सचित्र), डि०, ४ रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

संसार के कीड़े-मकोड़ों की विविध जातियों का वर्णन।

—जगपति चतुर्वेदी : **चींटी-चींटों की दुनियाँ** : इलाहाबाद, किताब महल, १९५५, पृ० १५०, ड० क्रा०, (सचित्र), २ रु०, उ० प्र०, (५५-५६)।

चींटी-चींटों की अद्भुत जीवन की कहानी।

—जगपति चतुर्वेदी : **जन्तुओं का गृह-निर्माण** : इलाहाबाद, किताब महल, १९५५, पृ० १६०, ड० क्रा०, (सचित्र), २ रु०, उ० प्र०, (५५-५६)।

विविध जन्तुओं, कीड़े-मकोड़ों, पक्षियों आदि द्वारा सन्तानोत्पादन या निवास के लिए गृह बनाने का वर्णन।

—जगपति चतुर्वेदी : **जन्तु बिल कैसे बनाते हैं** : प्रयाग, किताब महल, १९५५, पृ० १५९, ड० क्रा०, २ रु०, उ० प्र०, (५५-५६)।

अपने रहने या शिशु उत्पन्न करने के लिए जन्तुओं द्वारा विविध प्रकार के बिल बनाने का वर्णन।

—जगपति चतुर्वेदी : **जलचर पक्षी** : इलाहाबाद, किताब महल, १९५४, पृ० १६४, ड० क्रा०, (सचित्र), २ रु०, उ० प्र०, (५५)।

हंस, बगुला, बत्तख, आदि पक्षियों के आकार-प्रकार, रंग-रूप आदि का वर्णन।

—जगपति चतुर्वेदी : **जीव-जन्तुओं की बुद्धि** : इलाहाबाद, किताब महल, १९५७, पृ० १९२, डि०, ४ रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

वैज्ञानिकों की खोजों के आधार पर जन्तुओं की बुद्धि के सम्बन्ध में कुछ ज्ञातव्य बातों की चर्चा।

—जगपति चतुर्वेदी : **वन-उपवन के पक्षी** : इलाहाबाद, किताब महल, १९५४, पृ० १७२, ड० क्रा०, (सचित्र), २ रु०, उ० प्र०, (५५)।

—जगपति चतुर्वेदी : **वन-वाटिका के पक्षी** : इलाहाबाद, किताब महल, १९५४, पृ० १४३, ड० क्रा०, (सचित्र), २ रु०, उ० प्र०, (५५)।

—जगपति चतुर्वेदी : **उथले जल के पक्षी** : इलाहाबाद, किताब महल, १९५४, पृ० १४७, ड० क्रा०, २ रु०, उ० प्र०, (५५)।

—जगपति चतुर्वेदी : **लुप्त जन्तु** : इलाहाबाद, किताब महल,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१९५४, द्वि० सं०, पृ० १६०, डं० क्रा०, (सचित्र), २ रु०, उ० प्र०, (५१-५२)।

५० करोड़ वर्ष से पूर्व आज तक के उन जन्तुओं का वर्णन जो अब विलुप्त हो चुके हैं।

—जगपति चतुर्वेदी : **संसार के सरीसृप :** इलाहाबाद, किताब महल, १९५७, पृ० २००, डि०, (सचित्र), ४ रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

रेंगने वाले जानवरों—कछुए, मगर, सांप, गोह, गिरगिट, सांड़ा आदि—का सचित्र वर्णन।

—जगपति चतुर्वेदी : **संसार के सर्प :** इलाहाबाद, किताब महल, १९५७, पृ० १६२, डि०, ४ रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

संसार के विभिन्न प्रदेशों में पाए जाने वाले सांपों के वंश और मुख्य जातियों-प्रजातियों का सामान्य एवं सचित्र वर्णन।

—जगपति चतुर्वेदी : **स्तनपोषी जन्तु :** इलाहाबाद, किताब महल, १९५५, पृ० २१६, डं० क्रा०, २ रु०, उ० प्र०, (५५-५६)।

शिशु-जीवन में माता का दूध पीकर पोषण पाने वाले जन्तुओं की कहानी।

—जगपति चतुर्वेदी : **हिंसक पशु :** इलाहाबाद, किताब महल, १९५५, पृ० १७५, डं० क्रा०, (सचित्र), २ रु०, उ० प्र०, (५५-५६)।

विविध हिंसक स्तनपोषी जन्तुओं का वर्णन।

—महेश्वरसिंह सूद (डॉ०) : **जन्तु विज्ञान शब्दकोष :** आगरा, आगरा बुक स्टोर, १९५६, पृ० ५८५, डं० क्रा०, १२ रु०, बि० रा० प०, (५६-५७)।

वनस्पति, चिकित्सा तथा विज्ञान आदि के पारिभाषिक शब्द।

—रुद्रदत्त : **हमारे पक्षी :** दिल्ली, राजपाल एण्ड सन्स, पृ० २४, फु०स्के०, (सचित्र), ७५ न०पै०, के० स० बाल सा० प्रति०, (५८)।

कुछ भारतीय पक्षियों पर बालोपयोगी कविताएँ।

—सुरेशसिंह कालाकांकर : **हमारे जानवर :** कालाकांकर प्रकाशन गृह, १९५४, पृ० ३०३, फु०स्के०, ४ रु०, उ० प्र०, (५५)।

विभिन्न वर्गों के जानवरों का सुन्दर परिचय।

इस मास के प्रकाशन

१. पार्वती

श्री उदयशंकर भट्ट का नवीनतम सामाजिक नाटक, जिसमें एक आधुनिक नारी तथा एक ग्रामीण माता का चरित्र बड़े ही स्वाभाविक ढंग से चित्रित किया गया है। मूल्य १·२५

२. विदा

प्रसिद्ध नाटककार श्री हरिकृष्ण प्रेमी का नवीनतम ऐतिहासिक नाटक। नाट्यकला की दृष्टि से प्रेमीजी के पहले नाटकों से बहुत उत्कृष्ट। मूल्य १·७५

३. पूर्व-भारतेन्दु नाटक-साहित्य

डॉ० सोमनाथ गुप्त का नवीन खोजपूर्ण ग्रन्थ : अपने विषय की एकमात्र पुस्तक, जिसमें लेखक ने हिन्दी के प्रथम मौलिक नाटक से लेकर भारतेन्दु-युग के प्रारम्भ तक के नाटक-साहित्य का आलोचनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया है। मूल्य ५·००

४. प्रसाद काव्य विवेचन

लेखक डॉ० हरदेव बाहरी। पुस्तक में प्रसाद की समस्त काव्य-कृतियों का सर्वाङ्गीण परिचय तथा विवेचन दिया गया है। प्रसाद-काव्य-सम्बन्धी लेखक का दृष्टिकोण अपना है, जो पुस्तक की विशेषता है। मूल्य २·५०

५. चांद से नीचे

श्री रामावतार चेतन की सीधी-सादी भाषा में चुभती हुई प्रयोगवादी कविताएँ। मूल्य ३·००

मिलने का पता :

हिन्दी भवन

जालन्धर, इलाहाबाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यावहारिक विज्ञान

चिकित्सा

—अत्रिदेव विद्यालंकार, : **क्लीनिकल मेडिसन** : बनारस, मोतीलाल बनारसीदास, १९५४, पृ० ९१५, ड० क्रा०, १२.५० रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

आधुनिक चिकित्सा-विज्ञान के आधार पर भारतीय दृष्टिकोण से लिखा गया, रोगों की पहचान, पूर्व-कथन, और निदान सम्बन्धी उत्कृष्ट ग्रन्थ।

—अत्रिदेव विद्यालंकार : **चरकसंहिता का अनुशीलन** : बनारस, भार्गव पुस्तकालय, १९५५, पृ० १७९, ड० क्रा०, २ रु०, उ० प्र०, (५५-५६)।

स्नातकोत्तर परीक्षा एवं अनुसंधान के लिए उपयोगी ग्रन्थ।

—अत्रिदेव गुप्त : **भैषज्य कल्पना** : प्रयाग, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, २००८ वि०, पृ० १७५, ड० क्रा०, १.७५ रु०, उ० प्र०, (५२)।

आयुर्वेद के पाठ्य-क्रम में निर्धारित 'भैषज्य कल्पना' विषय पर स्वतन्त्र पुस्तक।

—अत्रिदेव गुप्त : **स्त्रियों का स्वास्थ्य व रोग** : काशी विश्वविद्यालय, लेखक द्वारा, १९५१, पृ० १७२, ड० क्रा०, ३ रु०, उ० प्र०, (५२)।

स्त्रियों के स्वास्थ्य एवं रोगों के सम्बन्ध में अनेक ज्ञातव्य बातें।

—अत्रिदेव गुप्त, (भू० ले० डॉ० राजेन्द्रप्रसाद) : **हमारे भोजन की समस्या** : बम्बई, निर्णय सागर प्रेस, १९४८, पृ० १०२, ड० क्रा०, १.७५ रु०, उ० प्र०, (५२) तथा भारतीय विद्या भवन बम्बई से भी पुरस्कृत।

स्वास्थ्य की दृष्टि से खाद्य-पदार्थों के गुणागुण पर विचार।

—अत्रिदेव विद्यालंकार, (भू० ले० हजारीप्रसाद द्विवेदी) : **संस्कृत साहित्य में आयुर्वेद** : काशी, भारतीय ज्ञानपीठ, १९५६, पृ० २४०, ड० क्रा०, ३ रु०, उ० प्र०, (५६-५७)।

आयुर्वेद के दृष्टिकोण से संस्कृत साहित्य का अध्ययन। संस्कृत साहित्य में वनस्पतियों एवं आयुर्वेद साहित्य में काव्य का वर्णन।

—अन्नपूर्णा देवी : **स्वास्थ्य प्रवेशिका** : वि० प्र०, (५४-५५)।

—अवधबिहारी अग्निहोत्री : **पंचविध कषाय कल्पना विज्ञान** : बनारस, चौखम्भा विद्या भवन, पृ० १०६, ड० क्रा०, १.५० रु०, उ० प्र० आयुर्वेद तथा तिब्बी एकेडेमी, (५८)।

पंचविध कषायों एवं उनके अन्तर्भूत उपकषायों का प्राच्य, पाश्चात्य तथा यूनानी मतानुसार विवेचन।

—फुंदनलाल (डॉ०) : **आयुर्वेद प्राकृतिक चिकित्सा** : उ० प्र०, (५५-५६)।

—चतुरसेन शास्त्री : **हमारा शरीर** : दिल्ली, राजपाल एण्ड सन्स, १९५६, पृ० ३२, फु० स्के०, ७५ न० पै०, के० स० अ० जन सा० प्रति०, (५७)।

सरल भाषा में शरीर और उसकी क्रियाओं का परिचय (प्रौढ़ों के लिए उपयोगी)।

—तरुण भाई : **सफाई विज्ञान और शास्त्र** : वाराणसी, सर्वोदय साहित्य प्रकाशन, १९५७, पृ० १२८, ड० क्रा०, १ रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

सफाई के सम्बन्ध में वैज्ञानिक अध्ययन, गांधीजी एवं विनोबाजी के सफाई सम्बन्धी विचारों सहित।

—नेकीराम गुप्ता : **मानव शरीर** : के० स०, (५४)।

—पुरुषोत्तमलाल चोपड़ा : **संतति निग्रह क्यों और कैसे** : वि० प्र०।

—प्रकाशचन्द्र यादव : **स्वास्थ्य शिक्षा और व्यक्तिगत व्यायाम** : प्रयाग, प्रमोद पुस्तक माला, १९५१, पृ० ३४४, ड० क्रा०, (सचित्र), ६ रु०, उ० प्र०, (५१)।

स्वास्थ्य एवं व्यायाम विषयक सचित्र एवं सुबोध वर्णन।

—प्रभाकर जनार्दन देशपांडे : **शल्यतन्त्र में रोगी परीक्षा** : बनारस, विजय कुमार एण्ड ब्रदर्स, १९५५, पृ० २१६, डि०, ७ रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

शल्यतंत्र की कई पुस्तकों का, लेखक के गहन अनुभवों का तथा शल्य परीक्षा के कुछ व्याख्यानों का एक प्रतिरूप। पारिभाषिक शब्दावली सुश्रुत के आधार पर।

—प्रियव्रत शर्मा : **अभिनव शरीर क्रिया विज्ञान** : बनारस, चौखम्भा विद्या भवन, पृ० ६४१, ड० क्रा०, ७.५० रु०,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

उ० प्र०, आयुर्वेद तथा तिव्बी एकेडेमी, लखनऊ, (५५)।

आधुनिक शरीर-क्रिया-विज्ञान के सम्पूर्ण विषयों का वैज्ञानिक संकलन।

—प्रियव्रत शर्मा : **द्रव्य गुण विज्ञान :** बनारस, चौखम्भा विद्या भवन, पृ० ११८६, डि०, १८ रु०, उ० प्र० आयुर्वेद तथा तिव्बी एकेडेमी, लखनऊ, (५१)।

आयुर्वेदीय द्रव्य-शास्त्र के मौलिक सिद्धांतों का वैज्ञानिक विवेचन एवं औषध द्रव्यों की व्याख्या।

—प्रियव्रत शर्मा : **रोगी परीक्षा विधि :** बनारस, चौखम्भा संस्कृत विद्या भवन, १९५७, पृ०४४८, डि०क्रा०,(सचित्र), उ० प्र० आयुर्वेद तथा तिव्बी एकेडेमी (५८)।

रोगी-परीक्षा-विधियों का विस्तृत विवेचन।

—कुन्दनलाल (डॉ०) : **यज्ञ चिकित्सा :** जबलपुर, यज्ञ चिकित्सा सेनीटोरियम, १९४६, पृ० ३२८, डि० क्रा०, ५ रु०, उ० प्र०, (५१)।

क्षय रोग की प्राकृतिक चिकित्सा का प्रतिपादन।

—बालकृष्ण मिश्र : **होमियोपैथिक चिकित्सा विज्ञान :** बनारस, श्रीकृष्ण होमियोपैथिक औषधालय, डि० क्रा०, उ० प्र०, (५१)।

होमियोपैथिक का चिकित्सा-विज्ञान का ग्रन्थ।

—भास्कर गोविन्द घाणेकर : **औपसर्गिक रोग, २ भागों में :** काशी वि० वि०, लेखक द्वारा, १९९४ वि०, पृ० ७६८, डि० क्रा०, प्र० भा० ३.५० रु०, द्वि० भा० ४ रु०, ना० प्र० सभा, काशी।

औपसर्गिक रोगों का सर्वाङ्गीण विवेचन। टिप्पणी एवं समश्लोकी आयुर्वेद सहित।

—भास्कर गोविन्द घाणेकर : **मूत्र के रोग :** बनारस, लेखक द्वारा, २०११ वि०, पृ० ५२७, डि० क्रा०, ६ रु०, उ० प्र०, (५५)।

मूत्र, मूत्र-संस्थान तथा उससे सम्बन्धित रोगों का निदान एवं निवारण। पृ० ५१५ से ५२७ तक पारिभाषिक शब्दावली।

—महेन्द्रनाथ पाण्डेय : **रोगी सुश्रूषा :** प्रयाग, छात्रहितकारी

हिन्दी में एक महत्त्वपूर्ण प्रकाशन!

फ्रायड

महान मनोविज्ञानवेत्ता सिगमंड फ्रायड की अमर कृति

मनोविश्लेषण

मूल्य : दस रुपये

फ्रायड की अमर कृति 'ए जनरल इंट्रोडक्शन टु साइकोनेलसिस' का प्रामाणिक हिन्दी अनुवाद

राजपाल एण्ड संज़, कश्मीरी गेट, दिल्ली-६

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तक माला, १९५३, पृ० २७२, डि० क्रा०, २.५० रु०, उ० प्र०, (५५)।

रोगी की सेवा सम्बन्धी एलोपैथिक एवं आयुर्वेदिक पद्धति के सिद्धान्तों एवं उपकरणों का समन्वयात्मक अध्ययन।

—रघुवीरप्रसाद द्विवेदी : **अभिनव विकृति विज्ञान** : चौखम्भा विद्या भवन, १९५७, पृ० १११३, डि०, (सचित्र), २५ रु०, उ० प्र० आयुर्वेद तथा तिब्बी एकेडेमी, लखनऊ, (५८)।

पाश्चात्य तथा आयुर्वेदीय वैकारिकी का पाठ्य-ग्रन्थ।

—रघुवीरप्रसाद द्विवेदी : **कौमार भृत्य नव्य बाल रोग सहित** : बनारस, चौखम्भा विद्या भवन, २००५ वि०, पृ० ६३४, डि० क्रा०, ९ रु०, आयुर्वेद महा सम्मेलन, दिल्ली, (४९)।

बाल-रोग सम्बन्धी प्रामाणिक ग्रन्थ।

—रघुवीरशरण शर्मा : **भारतीय जीवाणु विज्ञान** : बुलन्दशहर, लेखक द्वारा, २००५ वि०, पृ० ११६, डि० क्रा०, १.५० रु०, उ० प्र०, (५१)।

आधुनिक चिकित्साशास्त्र के एक महत्त्वपूर्ण अंग जीवाणु-विज्ञान पर भारतीय दृष्टिकोण से विचार।

—रमानाथ द्विवेदी : **अगदतन्त्र** : बनारस, चौखम्भा विद्या भवन, पृ० ७६, डि० क्रा०, ७५ नये पैसे, उ० प्र० आयु० एवं तिब्बी एके०, (५४)।

विष-प्रयोग से उत्पन्न स्थिति का निदान और उपशमन।

—रमानाथ द्विवेदी : **प्रसूति विज्ञान** : बनारस, चौखम्भा विद्या भवन, पृ० ७३८, डि० क्रा०, ९ रु०, उ० प्र० आयु० तथा तिब्बी एके०, (५५)।

प्रसूति विषयक पाठ्य-क्रम के अनुसार तुलनात्मक विधि से लिखित पुस्तक।

—रमानाथ द्विवेदी : **शालाक्य तन्त्र-निमितन्त्र** : बनारस, चौखम्भा विद्या भवन, १९५२, पृ० ६५४, डि० क्रा०, ९ रु०, उ० प्र० आयु० तथा तिब्बी एके०, (५३)।

नाक, कान, गला और शिर-सम्बन्धी रोगों का आयुर्वेदीय ग्रन्थों के आधार पर विस्तृत तुलनात्मक अध्ययन।

—रमानाथ द्विवेदी, (प्रस्ता० द० अ० कुलकर्णी) : **सौश्रुति** : बनारस, चौखम्भा विद्या भवन, २००६ वि०, पृ० ५५८, डि० क्रा०, ८.५० रु०, उ० प्र०, तथा आयु० एवं तिब्बी एके० लखनऊ से भी, (५२-५३)।

'सुश्रुतसंहिता' के आधार पर आयुर्वेदीय शल्य-तन्त्र विषयक ग्रन्थ, प्राचीन यन्त्र-शस्त्रों के चित्र सहित।

—रमानाथ द्विवेदी : **स्त्री रोग विज्ञान** : बनारस, चौखम्भा विद्या भवन, पृ० २२८, डि० क्रा०, ३ रु०, उ० प्र०, आयु० तथा तिब्बी एके० लखनऊ, (५८)।

प्राचीन सिद्धान्तों तथा आधुनिक नवीनतम आविष्कारों के अनुसार स्त्री-रोगों का निदान एवं चिकित्सा विषयक विवेचन।

—रामेश वेदी : **सोंठ** : लाहौर, हिमालय हर्बल इन्स्टीट्यूट, १९४७, पृ० १०७, डि० क्रा०, १ रु०, उ० प्र०, (५२)।

अदरक तथा सोंठ के गुण तथा उनसे लाभ उठाने के उपाय।

—रामेश वेदी ? : **तुलसी** : हरिद्वार, हिमालय हर्बल इन्स्टीट्यूट, २००५ वि०, पृ० १७८, २ रु०, डि० क्रा०, उ० प्र०, (५२)।

तुलसी के पौदों का वैज्ञानिक विवेचन तथा उससे लाभ उठाने के उपाय।

—रामेश वेदी : **प्याज व लहसुन** : हरिद्वार, हिमालय हर्बल इन्स्टीट्यूट, २००५ वि०, पृ० २२०, २.५० रु०, डि० क्रा०, उ० प्र०, (५२)।

लहसुन और प्याज के गुण और उनके उपयोग की विधियाँ।

—रामेश वेदी : **शहद** : हरिद्वार, हिमालय हर्बल इन्स्टीट्यूट, २००६ वि०, पृ० २१०, डि० क्रा०, ३ रु०, उ० प्र०, (५२)।

मधुमक्खियों द्वारा पैदा किये गए शहद और मोम का विस्तृत वैज्ञानिक विवेचन और उससे लाभ उठाने की विधियां।

—रामेश वेदी : **मिर्च** : हरिद्वार, हिमालय हर्बल इन्स्टीट्यूट, २००७ वि०, पृ० ९०, डि० क्रा०, १ रु०, उ० प्र०, (५२)।

काली, सफेद और लाल मिर्च के अनेक रोगों में उपयोग करने के लिए विस्तृत तरीके।

—रामेश वेदी : **देहात की दवाएँ** : हरिद्वार, हिमालय हर्बल इन्स्टीट्यूट, पृ० ५०, डि० क्रा०, उ० प्र०, (५७)।

घरेलू इलाज के लिए उपयोगी पुस्तक।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री गुरुदत्त की चिर-प्रतीक्षित रचना

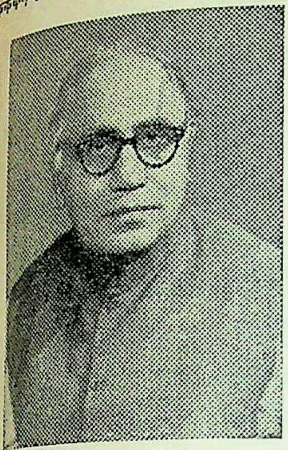

छ ल ना

मूल्य ६)

कुछ लोग कम्यूनिज़म को केवल मात्र आर्थिक अव्यवस्था दूर करने का उपाय समझते हैं। वास्तव में ऐसा नहीं है। यदि ऐसा होता तो मानव-इतिहास के नवीन अर्थ, शिक्षा की रूपरेखा में परिवर्तन और विवाहादि सभी विषयों पर नवीन आचरण न किया जाता। प्रस्तुत पुस्तक में उक्त विषय की युक्तियुक्त विवेचना पढ़िए। उपन्यास रोचकता में अन्यतम है।

सुन्दर छपाई एवं आकर्षक रूपरेखा।

हमारे दो अन्य प्रकाशन

१. **मेरी पसन्द (नाटक)**—हिन्दी-जगत् के सर्वप्रसिद्ध उपन्यासकार श्री गुरुदत्त का यह प्रथम प्रकाशित नाटक है। रोचकता में उपन्यासों से किसी प्रकार भी कम नहीं।

२. **आदरणीय (उपन्यास)**—दक्षिण भारत के प्रथम हिन्दी उपन्यासकार, 'खरे-खोटे' के ख्याति-प्राप्त, अन्य कई रचनाओं के रचयिता श्री आरिगपूडि का यह नवीन उपन्यास है। सरल भाषा, रोचक शैली श्री आरिगपूडि की विशेषता है।

हमारे प्रकाशन

१. विकृत छाया	मू०	४॥)	१२. कला	मू०	५)
२. भावुकता का मूल्य	,,	६)	१३. दासता के नए रूप	,,	६)
३. बहती रेता	,,	५)	१४. पत्रलता	,,	७)
४. विश्वासघात	,,	५॥)	१५. धरती और धन	,,	६)
५. विडम्बना	,,	६)	१६. छलना	,,	६)
६. देश की हत्या	,,	५॥)	१७. मेरी पसन्द (नाटक)	,,	२॥)
७. वाम मार्ग	,,	७)	१८. अन्तिम यात्रा	,,	१)
८. विलोम गति	,,	५)	१९. आदरणीय	,,	४)
९. गुण्ठन	,,	५)	२०. भूले-भटके	,,	३)
१०. मानव	,,	५)	२१. खरे-खोटे	,,	५)
११. आवरण	,,	५)	२२. अलका (कविता-संग्रह)	,,	२॥)

भारती साहित्य सदन

३०/९० कनॉट सरकस, नई दिल्ली-१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजकमल प्रकाशन
द्वारा प्रकाशित एवं प्रचारित

पुरस्कृत पुस्तकों की सूची

उपन्यास

मैला आँचल : फणीश्वरनाथ रेणु ६·५०
जहाज का पंछी : इलाचन्द्र जोशी ७·५०
बाबा बटेसरनाथ : नागार्जुन २·००
बाहर-भीतर : डॉ० देवराज ३·००
स्वप्नमयी : विष्णु प्रभाकर २·००
दूर के ढोल : ए० रमेश चौधरी 'आरिगपूडि' ४·००
सागर, लहरें और मनुष्य : उदयशंकर भट्ट ५·००
एक था : श्रीमती शीला शर्मा २·००

कविता

सूर्य का स्वागत : दुष्यन्त कुमार ३·५०

कहानियाँ

लम्बे दिन जलती रातें : सत्यप्रकाश संगर २·२५
वीरभद्र की गोष्ठी : रावी ३·५०

नाटक

नया समाज : उदयशंकर भट्ट २·००
शक विजय : ,, ,, २·२५
पर्दे के पीछे : ,, ,, अभी अप्राप्य

आलोचना, साहित्य, भाषाशास्त्र

आलोचना इतिहास तथा सिद्धान्त :
डॉ० एस० पी० खत्री १२·००
पृथ्वीराज रासो में कथानक रूढ़ियाँ :
ब्रजविलास श्रीवास्तव ३·५०
भारतीय प्रेमाख्यान की परम्परा :
परशुराम चतुर्वेदी ४·००
हिन्दी रीति-साहित्य : डॉ० भगीरथ मिश्र ४·००
हिन्दी साहित्य के अस्सी वर्ष :
शिवदानसिंह चौहान ३·५०
उर्दू साहित्य का इतिहास : डॉ० एजाज हुसेन ६·००
अवधी और उसका साहित्य :
डॉ० त्रिलोकीनारायण दीक्षित २·२५
भोजपुरी और उसका साहित्य :
डॉ० कृष्णदेव उपाध्याय २·२५
मालवी और उसका साहित्य : श्याम परमार २·२५
भारतीय आर्यभाषा और हिन्दी :
डॉ० सुनीतिकुमार चाटुर्ज्या ७·२५
शब्दों का जीवन : डॉ० भोलानाथ तिवारी
अभी अप्राप्य
चन्द्रसखी और उनका काव्य :
पद्मावती 'शबनम' २·००

लोक-साहित्य, सांस्कृतिक

पाषाण नगरी : शिवसहाय चतुर्वेदी अभी अप्राप्य
प्राचीन भारतीय मनोरंजन : मन्मथ राय ५·२५
हमारी नाट्य-परम्परा : श्रीकृष्णदास १०·००

स्त्रियोपयोगी

नारी का रूप श्रृंगार : सावित्रीदेवी वर्मा ६·००

बाल-साहित्य

नन्हे लंगूर की कहानियाँ : वेलरी मैजिल अभी अप्राप्य
पंचतन्त्र की कहानियाँ (३ भाग) :
शकुन्तलादेवी ३·००
सच्ची नागरिकता : मनरो लीफ़ २·००
आदर्श माता-पिता : सावित्रीदेवी वर्मा १·२५

राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड
दिल्ली : इलाहाबाद : बम्बई : पटना : मद्रास

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

—रामसुशील सिंह, (भूमिका ले०) भास्कर गोविन्द घाणेकर) : **पाश्चात्य द्रव्य गुण विज्ञान मेटेरियामेडिका, भाग १** : चुनार, श्री दलजीतसिंह द्वारा, २००९ वि०, पृ० ६१२, डि०, १२ रु०, उ० प्र०, (५२-५३)।

प्राच्य-पाश्चात्य उभय चिकित्सा-क्रम के अध्ययन-अध्यापन का उपयोगी ग्रन्थ।

—शारदाचरण मुकर्जी : **हमारा भोजन** : के० स०, (५४)।

—शिवदयाल गुप्त : **एलोपैथिक मेटेरियामेडिका** : बनारस, मेडिकल पुस्तक भवन, १९५५, पृ० १३००, डि० क्रा०, १२ रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

सरल, सुबोध भाषा एवं एक निश्चित वैज्ञानिक क्रम में विषय का संकलन एवं स्पष्टीकरण, सभी औषधियों के सम्बन्ध में आधुनिकतम सूचना, एवं १०० पृष्ठों की पारिभाषिक पदावली सहित।

—शिवदयाल गुप्त : **धात्री विज्ञान** : उ० प्र०, (५६-५७)।

—शिवनाथ खन्ना : **रोग-निवारण** : वाराणसी, थियोसोफिकल सोसाइटी, १९५६, पृ० ८४८, ड० क्रा०, १४ रु०, उ० प्र०, (५६-५७)।

आधुनिक चिकित्सा-पद्धति के अनुसार रोगों की चिकित्सा का विस्तृत वर्णन तथा आयुर्वेदिक चिकित्सा का संक्षिप्त परिचय।

—शिवनाथ खन्ना : **रोग-परिचय** : बनारस, थियोसोफिकल सोसाइटी, १९५२, पृ० ६५६, ड० क्रा०, १२·७५ रु०, उ० प्र०, (५२-५३)।

व्याधि विज्ञान का परिचय। रोग के लक्षणों का विशेष रूप से परिचय। पारिभाषिक शब्दकोश पृष्ठ ५१, परि० पृष्ठ १३४।

—शिवानाथ शर्मा : **रोग परीक्षा** : बनारस, थियोसोफिकल सोसाइटी, १९५१, पृ० ३२०, ड० क्रा०, ६ रु०, उ० प्र०, (५२-५३)।

नवीन वैज्ञानिक पद्धति के आधार पर रोगी-परीक्षा की विधियों का विस्तारपूर्वक वर्णन उनके चित्रों एवं तालिकाओं सहित।

—सावित्रीदेवी वर्मा : **आदर्श माता-पिता** : दिल्ली, अरुणोदय प्रकाशन, १९५७, पृ० ६४, फु० स्के०, (सचित्र), १·२५ रु०, के० स० जन सा० प्रति०, (५५)।

शिशु-पालन के विषय में वैज्ञानिक सुझाव एवं तौर-तरीकों का वर्णन।

—सुरेन्द्रनाथ (डॉ०) : **सन्तति-निरोध, कब, क्यों और कैसे** : कालपी, स्वास्थ्य सन्देश प्रकाशन, १९५२, पृ० १५२, ड० क्रा०, (सचित्र), २ रु०, उ० प्र०, (५२-५३)।

संतति-निरोध विषय का सर्वांगीण संक्षिप्त विवेचन, ४१ चित्रों सहित।

—सुरेन्द्रनाथ गुप्ता (डॉ०) : **विटामिन और हीनता-जनित रोग** : उ० प्र०, (५७-५८)।

—सुरेन्द्रनाथ (डॉ०) : **यौन-विकार, कारण और निवारण** : उ० प्र०, (५२-५३)।

—सेमुअल हेनीमैन (मू० ले०), (अनु० सुरेन्द्रप्रसाद वर्मा) : **आर्गेनन** : बनारस, मेडिकल पुस्तक भवन, पृ० ३८८, ड० क्रा०, ४ रु०, उ० प्र०, (५२-५३)।

होमियोपैथिक चिकित्सा के आधारभूत उक्त ग्रन्थ का हिन्दी अनुवाद, ५६ पृष्ठों के अतिरिक्त आलोचनात्मक विचार।

—सुरेशप्रसाद शर्मा : **एलोपैथिक चिकित्सा** : बनारस, मेडिकल पुस्तक भवन, १९५३, पृ० ८२५, ड० क्रा०, ८ रु०, उ० प्र०, (५२-५३)।

सरल ढंग से एलोपैथिक चिकित्सा का प्रतिपादन, आधुनिकतम अनुसन्धानों और अनुभव-सिद्ध योगों सहित।

—सुरेशप्रसाद शर्मा : **प्रिन्स मेटेरियामेडिका** : बनारस, मेडिकल पुस्तक भवन, १९५२, पृ० १२६१, ड० क्रा०, ८ रु०, उ० प्र०, (५२-५३)।

होमियोपैथिक मेटेरियामेडिका फर्माकोपिया और थेराप्युटिक्स सहित।

—सुरेशप्रसाद शर्मा : **रोगी की सेवा और पथ्य** : बनारस, मेडिकल पुस्तक भवन, १९५१, पृ० २३४, ड० क्रा०, ३ रु०, उ० प्र०, (५२)।

रोगी की सेवा एवं पथ्यापथ्य का प्रतिपादन।

—सुरेशप्रसाद शर्मा : **बायोकेमिक चिकित्सा** : बनारस, मेडिकल पुस्तक भवन, १९५१, पृ० ४४६, ड० क्रा०, ४ रु०, उ० प्र०, (५२)।

बायोकेमिक चिकित्सा पर हिन्दी में एक प्रामाणिक पुस्तक, पारिभाषिक पदावली सहित।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

—हरिस्वरूप कुलश्रेष्ठ : **अभिनव शवच्छेद विज्ञान** : बनारस, मेडिकल पुस्तक भवन, १९५६, पृ० १०१८, डि० क्रा०, (सचित्र), १५ रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

राष्ट्रभाषा में लिखी शवच्छेद विज्ञान पर एक नवीन सफल पुस्तक। ग्रन्त में ४२ पृष्ठों की पारिभाषिक पदावली सहित।

इंजीनियरिंग

—दयास्वरूप (डॉ०), ग्रादि : **ग्रौद्योगिक ईंधन** : काशी, नागरी प्रचारिणी सभा, २००९ वि०, पृ० ३४८, डि०, (सचित्र), ८ रु०, ना० प्र० सभा द्वारा पु०।

ईंधन विज्ञान (फ्युग्रल टेकनॉलॉजी) से सम्बन्धित सभी बातों पर संक्षिप्त विवेचन। इस विषय का एक पाठ्य-ग्रन्थ।

—दयास्वरूप (डॉ०) : **धातु विज्ञान** : काशी, नागरी प्रचारिणी सभा, २००८ वि०, पृ० ३१०, डि०, (सचित्र), ६ रु०, उ० प्र०, (५२) तथा ना० प्र० स०, काशी द्वारा भी पुरस्कृत।

धातुग्रों के सम्बन्ध में ज्ञानवर्द्धक ग्रन्थ, धातु-विज्ञान के विद्यार्थियों के लिए लिखित।

—रामेशचन्द्र विजय : **सरल रेडियो विज्ञान** : दिल्ली, ग्रात्माराम एण्ड सन्स, १९५७, पृ० १८१, डि०, (सचित्र), ५ रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

रेडियो विज्ञान का सरल एवं संक्षिप्त परिचय।

कृषि (गोपालन, उद्यान विज्ञान ग्रादि सहित)

—ग्रमरनाथ बिन्दल : **भारत में उद्यानकारी** : इलाहाबाद, किताब महल, १९५३, पृ० २०४, डि० क्रा०, (सचित्र), ३ रु०, उ० प्र०, (५१)।

उद्यानकारी का संक्षिप्त सर्वाङ्गीण विवेचन।

—कालीचरण गुप्त : **पोलट्री फार्मिंग (कामयाब मुर्गीखाना)** : दिल्ली, देहाती पुस्तक भण्डार, १९५६, पृ० १८८, डि० क्रा०, (सचित्र), ४ रु०, उ० प्र०, (५६-५७)।

मुर्गियों की जातियों, पक्षियों की छँटनी का ग्रालेखन; निवासन, प्रजनन, बन्दम ग्रादि का वर्णन।

—चन्द्रावती राधारमण : **सन्तुलित गोपालन** : पीलीभीत, गोसेवा सदन, १९४९, पृ० ३१०, फु० स्कै०, ५ रु०, हि० सा० स० द्वारा मंगला० पारि०, (२००७ वि०)।

—जयरामसिंह तथा जी० एस० लवानियाँ : **मिट्टी का प्रारम्भिक ग्रध्ययन** : वाराणसी, हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, १९५२, पृ० १९८, डि० क्रा०, २.७५ रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

कृषि-कार्य के लिए मिट्टी का प्रारम्भिक ग्रध्ययन। पारिभाषिक पदावली सहित।

—नज़ीर ग्रहमद खाँ : **बागवानी का परिणाम** : उ० प्र०, (५१)।

—फूलदेवसहाय वर्मा : **ईख ग्रौर चीनी** : पटना, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, १९५५, पृ० ४४०, रॉ०, (सचित्र) सजिल्द १३.५० रु०, बि० रा० प०, पटना, (५५-५६) तथा उ० प्र०, (५६-५७)।

ईख ग्रौर चीनी सम्बन्धी विषयों ग्रौर समस्याग्रों पर हिन्दी में प्रथम प्रामाणिक पुस्तक। ग्रावश्यक ग्रांकड़ों, चित्रों से युक्त विस्तृत दोहरी पारिभाषिक पदावली सहित।

—फूलदेवसहाय वर्मा : **रबड़** : पटना, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, २०११ वि०, पृ० २६६, रॉ०, (सचित्र), ६ रु०, उ० प्र०, (५५-५६)।

रबर के विज्ञान एवं व्यवसाय से सम्बन्धित समस्त विषयों का प्रतिपादन, पारिभाषिक वैज्ञानिक शब्दावली सहित।

—फूलदेवसहाय वर्मा : **प्लास्टिक** : उ० प्र०, (५७-५८)।

—मोतीलाल सेठ : **कृषि हानिकारक कीट पतंग** : इलाहाबाद, देश सेवा मण्डल, १९५३, पृ० ८६, रॉ०, (सचित्र), १.५० रु०, उ० प्र०, (५५)।

३४ प्रमुख कृषि-हानिकारक कीट-पतंगों का विवरण।

—रावत, बी० एस० : **शहद की खेती** : दिल्ली, सस्ता साहित्य मण्डल, १९५७, पृ० ३६, (सचित्र), डि० क्रा०, ३१ न० पै०, के० स० जन सा० प्रति०, (५६)।

शहद की मक्खियाँ पालने ग्रौर शहद निकालने की सरल विधि (प्रौढ़ोपयोगी सरल भाषा एवं रोचक शैली में)।

—रामसागर राय तथा रामप्रसाद सिंह : **उद्यान कृषि दर्शन** : पटना, कला निकेतन, १९५५, पृ० ४७८, डि०, (सचित्र), ७ रु०, बि० रा० प०, (५६-५७) तथा उ० प्र०, (५६-५७)।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उद्यान-विज्ञान का सर्वाङ्गीण विस्तृत विवेचन। अन्त में ५ पृष्ठों में पारिभाषिक पदावली।

—लालबिहारी सिंह तथा रामनाथ सिंह : **फलों की खेती :** पटना, अजन्ता प्रेस लि०, १९५६, पृ० ३५४, डि०, (सचित्र), ७ रु०, उ० प्र०, (५६-५७)।

फलों की कृषि का विवेचन।

—सोहनलाल गुप्ता : **भारतीय कृषि की समस्याएँ :** प्रयाग, सरोज प्रकाशन, १९५५, पृ० ४३६, डि०, ५ रु०, वि० प्र०, (५४-५५)।

कृषि एवं अर्थशास्त्र लेने वाले विद्यार्थियों के लिए एक आवश्यक पुस्तक।

व्यापार एवं व्यापार प्रणाली

—घनानन्द फुलारा : **आशु लिपि बोध :** देहरादून, लेखक द्वारा, १९५०, पृ० २२२, ड० क्रा०, ४.५० रु०, उ० प्र०, (५२)।

आशुलिपि (शार्टहैंड) के सिद्धान्तों की विवेचना तथा विविध अभ्यासों का संकलन। लेखक की अपनी मौलिक प्रणाली का प्रतिपादन, विटमैन प्रणाली पर आधारित।

—रामप्रसाद टण्डन : **व्यापार, उसकी कठिनाइयाँ और उपाय :** इलाहाबाद, लेखक द्वारा, १९५५, पृ० ३३६, ड० क्रा०, ३.२५ रु०, उ० प्र०, (५५)।

प्रचलित व्यापार सम्बन्धी कठिनाइयाँ और उनको दूर करने के उपायों का प्रतिपादन।

वास्तुशास्त्र

—द्विजेन्द्रनाथ शुक्ल : **भारतीय वास्तुशास्त्र :** लखनऊ, वास्तुवाङ्मय प्रकाशनशाला, २०१२ वि०, पृ० २५४, रॉ०, (सचित्र), ८.५० रु०, उ० प्र०, (५५-५६)।

भारतीय वास्तुशास्त्र के सर्वाङ्गपूर्ण अधिकृत और वैज्ञानिक ग्रन्थ धाराधिप महाराज भोजदेव विरचित 'समरांगण सूत्रधार' पर आधारित लेखक का अनुसन्धान ग्रन्थ। लखनऊ वि० वि० द्वारा स्वीकृत थीसिस का परिवर्द्धित वृहद्रूप—वास्तुविद्या (पृ० १-८०), पुरनिवेश (पृ० ८१-२१४), परिशिष्ट (पृ० २१५—२५४ तक)।

—परमेश्वरीलाल गुप्त : **भारतीय वास्तुकला :** काशी, नागरी प्रचारिणी सभा, २००३ वि०, पृ० १५०, ड० क्रा०, २ रु०, (सचित्र), ना० प्र० सभा।

भारतीय वास्तुकला के इतिवृत्त के साथ-साथ उसकी तात्त्विक व्याख्या, सिद्धान्त, सौन्दर्य-प्रेक्षण एवं आलोचना आदि का समावेश।

कलाएँ एवं मनोरंजन

कला, सामान्य

—बालचन्द्र जैन : **विन्ध्य प्रदेश के प्राचीन कलाकेन्द्र और कलाकृतियाँ :** कटनी, महाकोशल सिण्डीकेट, १९५४, पृ० ५९, ड० क्रा०, (सचित्र), १.५० रु०, वि० प्र०, (५३-५४)।

विन्ध्य प्रदेश के प्राचीन कलाकेन्द्रों और उनकी कलाकृतियों का संक्षिप्त परिचय।

—शचीरानी गुर्टू (श्रीमती) : **कला-दर्शन :** दिल्ली, साहनी प्रकाशन, १९५६, पृ० ५६३, डि०, (सचित्र), २० रु०, उ० प्र०, (५६-५७)।

विश्व के समस्त देशों की कला-समीक्षा।

श्री विनोदचन्द्र पांडेय, एम० एस-सी०, एम० ए०, आई० ए० एस० की दो नई कृतियाँ

वसन्त और पतझर
(कविता-संग्रह)

ये कविताएँ शब्दों की परिमितता में एजरापौंड का और भावों की तीव्रता एवं गहनता में इलियट का स्मरण कराती हैं। कलापूर्ण आवरण, सुन्दर मुद्रण। मूल्य १.५०

स्वयंवर
(कहानी-संग्रह)

इन कहानियों के पात्र—लगता है—जाने-पहचाने हैं, फिर भी कितने अलग हैं! लेखक ने उनके चरित्र का चित्रण करके उनके मन का स्पर्श तो किया ही है, पाठकों के मन को भी वे छू लेते हैं। मूल्य तीन रुपये

कला का अनुवाद

एक भारतीय आत्मा—पं० माखनलाल चतुर्वेदी का कहानी-संग्रह

ये कहानियाँ नहीं सच्ची घटनाएँ हैं। मुहब्बत का रंग, कच्चा रास्ता, बरसता सावन बैसाख हो गया, कला का अनुवाद आदि इस संग्रह की प्रमुख कहानियाँ हैं।

पुस्तक मध्यप्रदेश शासन द्वारा पुरस्कृत है। मूल्य रु० २.२५

प्रकाशक
विश्वविद्यालय प्रकाशन
नखास चौक, गोरखपुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दुस्तानी एकेडेमी, उत्तर प्रदेश, इलाहाबाद के महत्वपूर्ण प्रकाशन

हिन्दी भाषा और साहित्य

१. तुलसी शब्दसागर	—	मूल्य १२.००
२. अवधी कोष	—	मूल्य ७.५०
३. हिन्दी कथा कोष	—	मूल्य ३.००
४. दक्खिनी हिन्दी	डॉ० बाबूराम सक्सेना, एम० ए०, डी० लिट्०	मू० ३.००
५. हिन्दी भाषा और लिपि	डॉ० धीरेन्द्र वर्मा, एम० ए०, डी० लिट्०	मूल्य १.००
६. हिन्दी भाषा का इतिहास	डॉ० धीरेन्द्र वर्मा, एम० ए०, डी० लिट्०	मूल्य १०.००
७. नाथ सम्प्रदाय	डॉ० हजारी प्रसाद द्विवेदी	मूल्य ५.००
८. गोस्वामी तुलसीदास	स्व० डॉ० श्यामसुन्दरदास, स्व० डॉ० पीताम्बरदत्त बडथ्वाल	मूल्य ४.००
९. विद्यापति ठाकुर	डॉ० उमेश मिश्र, एम० ए०, डी० लिट्०	मूल्य १.७५
१०. मराठी साहित्य का इतिहास	श्री कृष्णलाल शरसोदे	मूल्य ४.५०
११. उर्दू साहित्य का इतिहास	(मूल लेखक) डॉ० रामबाबू सक्सेना; अनुवादक— श्री रामचन्द्र टण्डन तथा श्री शालिग्राम श्रीवास्तव	मू० ७.२५
१२. हिन्दी, उर्दू और हिन्दुस्तानी	स्व० श्री पद्मसिंह शर्मा	मूल्य २.५०
१३. उर्दू काव्य की एक नई धारा	श्री उपेन्द्रनाथ 'अश्क'	मूल्य २.५०
१४. हिन्दुई साहित्य का इतिहास	(मूल लेखक) गार्सा-द-तासी; अनुवादक— डॉ० लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय, एम०ए०, डी०लिट्०	मूल्य ७.००
१५. अर्थविज्ञान और व्याकरण दर्शन	डॉ० कपिलदेव द्विवेदी, एम०ए०, डा०फिल्०	मूल्य १२.००
१६. बेलि क्रिसन रुक्मणी री	सम्पादक—ठाकुर रामसिंह, एम० ए०, श्री सूर्यकरण पारीक, एम० ए०	मूल्य १५.००
१७. सतसई सप्तक	सम्पादक—डॉ० श्यामसुन्दरदास	मूल्य १२.००
१८. प्रेम दीपिका	,, स्व० लाला सीताराम	मूल्य १.००
१९. तुलसी ग्रन्थावली भाग १, खण्ड १,२	,, डॉ० माताप्रसाद गुप्त, एम० ए०, डी० लिट्०	मूल्य १५.००
२०. जायसी ग्रन्थावली	,, ,, ,, ,, ,, ,, ,, ,,	मूल्य १२.००
२१. केशव ग्रन्थावली, भाग १,२	,, श्री विश्वनाथ प्रसाद मिश्र	प्रति खण्ड मूल्य ५.००
२२. रामचरितमानस	,, डॉ० माताप्रसाद गुप्त, एम० ए०, डी० लिट्०	मूल्य ४.००
२३. हिन्दी संत काव्य संग्रह	स्व० श्री गणेशप्रसाद द्विवेदी तथा श्री परशुराम चतुर्वेदी	मूल्य ५.००
२४. हिन्दी प्रेमगाथा काव्य संग्रह	सम्पादक—स्व० गणेशप्रसाद द्विवेदी, श्री गुलाबराय	मूल्य ६.००
२५. हिन्दी वीर काव्य संग्रह	सम्पादक—स्व० गणेशप्रसाद द्विवेदी, डॉ० उदयनारायण तिवारी	मूल्य १२.००
२६. कवि रहस्य	स्व० महामहोपाध्याय डॉ० गंगानाथ झा, एम० ए०, डी० लिट्०	मूल्य २.००
२७. आधुनिक हिन्दी काव्य में नारी भावना	डॉ० शैल कुमारी, एम० ए०, डी० फिल्०	मूल्य ७.००
२८. हिन्दी वीर काव्य	डॉ० टीकमसिंह तोमर, एम०ए०, डी०फिल्०	मूल्य १२.००
२९. चन्दबरदाई और उनका काव्य	डॉ० विपिन बिहारी त्रिवेदी, एम०ए०, डी०फिल्०	मू० ८.००
३०. भारतेन्दु हरिश्चन्द्र	श्री ब्रजरत्नदास, बी० ए०, एल-एल० बी०	मूल्य ५.००
३१. घाघ और भड्डरी	सम्पादक—श्री रामनरेश त्रिपाठी	मूल्य १.५०
३२. भोजपुरी लोकगाथा	डॉ० सत्यव्रत सिन्हा, एम० ए०, डी० फिल्०	मूल्य ८.००

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इतिहास

३३. हिन्दुस्तान की पुरानी सभ्यता	स्व० डॉ० बेनीप्रसाद, एम० ए०, पी-एच० डी०, (लंदन) डी० एस-सी०
३४. हर्षवर्द्धन	स्व० श्री गौरीशंकर चटर्जी, एम० ए० मूल्य ७.५०
३५. राजा भोज	श्री विश्वेश्वरनाथ रेऊ मूल्य १०.००
३६. पाटलीपुत्र की कथा	डॉ० सत्यकेतु विद्यालंकार, डी० लिट्० मूल्य १०.००
३७. अरब और भारत के सम्बन्ध	(मूल लेखक) मौ० सैय्यद सुलेमान नदवी, अनुवादक–बाबू रामचन्द्र वर्मा मूल्य ८.००
३८. मध्यकालीन भारतीय संस्कृति	स्व० महामहोपाध्याय पं० गौरीशंकर हीराचन्द्र ओझा मूल्य ३.००
३९. सिन्धु सभ्यता	श्री सतीशचन्द्र काला मूल्य ५.००
४०. अयोध्या का इतिहास	स्व० अवधवासी लाला सीताराम मूल्य ६.००
४१. प्रयाग प्रदीप	श्री शालिग्राम श्रीवास्तव मूल्य ६.००

दर्शन

४२. भारतीय-दर्शन शास्त्र का इतिहास	डॉ० न० के० देवराज, डी० फिल्०, डॉ० रामानन्द तिवारी, डी० फिल्० मूल्य ६.५०
४३. विकासवाद	श्री दयानन्द पंत मूल्य २.२५
४४. विचार विज्ञान	डॉ० हरद्वारीलाल शर्मा
४५. मनस्तत्व	श्री यशदेव शल्य मूल्य ८.००
४६. जीववृत्ति विज्ञान	डॉ० महाजोत सहाय, एम०ए०, पी-एच० डी० मू० १.५०

अर्थशास्त्र

४७. ग्रामीण अर्थशास्त्र	स्व० ब्रजगोपाल भटनागर, एम० ए० मूल्य ४.००
४८. राजस्व	स्व० भगवानदास केला मूल्य १.५०
४९. अर्थशास्त्र के मूल सिद्धान्त	श्री भगवानदास अवस्थी, एम० ए० मूल्य ३.००
५०. औद्योगिक तथा व्यापारिक भूगोल	प्रो० शंकर सरन सक्सेना, एम० ए० मूल्य ७.००

विज्ञान

५१. कुछ आधुनिक आविष्कार	डॉ० सत्यप्रकाश, एम०एस-सी०, डी०एस-सी० मू० ५.००

जीवनी

५२. शंकराचार्य	श्री बलदेव उपाध्याय मूल्य ७.५०
५३. रणजीतसिंह	श्री सीताराम कोहली

हिन्दुस्तानी पत्रिका

(त्रैमासिक)

प्रधान सम्पादक
डॉ० माताप्रसाद गुप्त, एम० ए०, डी० लिट्०

सहायक सम्पादक
डॉ० सत्यव्रत सिन्हा, एम० ए०, डी० फिल्०

सम्पादक मण्डल
१. डॉ० धीरेन्द्र वर्मा, एम० ए०, डी० लिट्०
२. डॉ० हजारीप्रसाद द्विवेदी, (पद्म विभूषण)
३. डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल, एम० ए०, डी० लिट्०
४. डॉ० दीनदयाल गुप्त, एम० ए०, डी० लिट्०
५. डॉ० सत्यप्रकाश एम० एस-सी०, डी० एस-सी०

हिन्दुस्तानी एकेडेमी, उत्तर प्रदेश, इलाहाबाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भास्कर्य (स्कल्पचर)

—द्विजेन्द्रनाथ शुक्ल (डॉ०) : **प्रतिमा विज्ञान :** लखनऊ, वास्तुवाङमय प्रकाशनशाला, १९५६, पृ० ३४२, रॉ०, १५ रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

धार्मिक दृष्टिकोण एवं स्थापत्य दृष्टिकोण से प्रतिमा विज्ञान की मीमांसा, आवश्यक रेखाचित्रों सहित।

अंकन, विभूषण (ड्राइंग, डैकोरेशन, डिज़ाइन आदि)

—जगदीश मित्तल और कमला मित्तल : **भारतीय कसीदा :** हैदराबाद, सुरुचि प्रकाशन, १९५४, पृ० ११३, रॉ०, (सचित्र), १५ रु०, उ० प्र०, (५५) तथा वि० प्र०, (५४-५५)।

भारतीय कसीदे का परिचय और उसके नमूने।

—प्रेमकुमारी ठाकुर : **सिलाई, बुनाई और कटाई :** उ० प्र०, (५७-५८)।

चित्रकला

—इकबाल बहादुर देवसरे : **भारतीय चित्रकला :** बनारस, नन्दकिशोर एण्ड ब्रदर्स, १९५२, पृ० १८८, ड० क्रा०, ३·५० रु०, उ० प्र०, (५२-५३) तथा वि० प्र०, (५३-५४)।

इतिहास, विधान और मूर्तिकला नामक तीन खण्डों में भारतीय चित्रकला का विवेचन।

—कलावती बेबी (श्रीमती) : **बेल-बूटे (पहली पुस्तक) :** उ० प्र०, (५७-५८)।

—कलावती बेबी (श्रीमती) : **बेल-बूटे (दूसरी पुस्तक) :** उ० प्र०, (५७-५८)।

—धूलिया, डी० पी०, (भू० ले० डॉ० अमरनाथ झा) : **चित्र-दर्शन :** प्रयाग, इंडियन प्रेस, १९५५, पृ० २६, रॉ०, (सचित्र), १० रु०, उ० प्र०, (५५-५६)।

भारतीय चित्रकला के आदि काल का सोदाहरण ऐतिहासिक निरूपण।

—रामगोपाल विजयवर्गीय : **राजस्थानी चित्रकला :** रा०, (५४)।

—शैलेन्द्रनाथ दे : **भारतीय चित्रकला पद्धति :** जयपुर, लेखक द्वारा, १९५१, पृ० ९६, ड० क्रा०, (सचित्र), २·५० रु०, उ० प्र०, (५५)।

छात्रों के दृष्टिकोण से भारतीय चित्रकला-पद्धति का संक्षिप्त परिचय।

संगीत

—उमेश जोशी : **भारतीय संगीत का इतिहास :** फिरोजाबाद, मानसरोवर प्रकाशन महल, १९५७, पृ० ५१४, डि०, १२·५० रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

भारतीय संगीत की विकास-परम्परा का विशद विवेचन।

—ललितकिशोर सिंह : **ध्वनि और संगीत :** काशी, भारतीय ज्ञानपीठ, १९५५, पृ० ३०९, ड० क्रा०, ४ रु०, उ० प्र०, (५५-५६)।

मुख्यतः उत्तरीय पद्धति एवं प्रसंगतः दाक्षिणात्य पद्धति का प्रतिपादन, संगीत विषयक ग्रन्थों के आधार पर ध्वनि विज्ञान के तथ्यों तथा मौलिक सिद्धान्तों का स्पष्टीकरण अध्याय १ से १२ तक। सभी भारतीय स्वर-ग्रामों का वैज्ञानिक विश्लेषण अध्याय १३ से अन्त तक।

—हरिहर निवास द्विवेदी : **मानसिंह और भानु कुतूहल :** मुरार, विद्या मन्दिर प्रकाशन, २०१० वि०, पृ० १६६, ५ रु०, उ० प्र०, (५५)।

महाराज मानसिंह का परिचय एवं 'राग-दर्पण' नामक ग्रन्थ का अनुवाद। संगीत-शास्त्र का उपयोगी ग्रन्थ।

मनोरंजन

—अरुण : **सचित्र गृह विनोद :** दिल्ली, आत्माराम एण्ड सन्स, १९५४, पृ० ४११, डि०, (सचित्र), ८ रु०, उ० प्र०, (५५)।

२० शीर्षकों के अन्तर्गत विविध प्रकार के मनोरंजन एवं खेलों की विधियाँ।

—प्रेमनाथ चतुर्वेदी : **डाक टिकट संग्रह कला :** दिल्ली, लेखक द्वारा, १९५६, पृ० ११६, ड० क्रा०, २ रु०, उ० प्र०, (५६-५७)।

डाक-टिकटों के संग्रह के ढंग तथा इस सम्बन्ध में विशेष जानकारी प्रदान करने वाली पुस्तक।

—मन्मथराय (मू०ले०), (सम्पा० चंद्रभान अग्रवाल) : **प्राचीन भारतीय मनोरंजन :** इलाहाबाद, भारतीय विद्या भवन,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(वि० राजकमल प्रकाशन), २०१३ वि०, पृ० ३३६, डि० क्रा०, ५ रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

भारत के इतिहास के भिन्न-भिन्न कालों में प्रचलित मनोरंजन के विविध साधनों का धारावाहिक विवरण।

—मन्मथराय : **देश-विदेश में मनोरंजन** : प्रयाग, साहित्य भवन लिमिटेड, १९५६, पृ० २५४, डि० क्रा०, ४ रु०, उ० प्र०, (५६-५७)।

देश-विदेश के विविध मनोरंजनों का परिचय। 'प्राचीन भारतीय मनोरंजन' की परिपूरक पुस्तक।

—विराज : **बनराज के राज में** : दिल्ली, आत्माराम एण्ड सन्स, १९५६, पृ० १९१, (सचित्र), डि०, ४ रु०, उ०प्र०, (५६-५७)।

वन-पर्वतों और उनमें निवास करने वाले पशु-पक्षियों के प्रति अनुराग प्रकट करने तथा आकृष्ट कराने के उद्देश्य से लिखित २६ लेख।

साहित्य

साहित्य, सामान्य

—किशोरीदास वाजपेयी : **साहित्य निर्माण** : कलकत्ता, जनवाणी प्रकाशन, २००७ वि०, पृ० १४४, डि० क्रा०, २ रु०, उ० प्र०, (५२)।

—गुलाबराय : **सिद्धान्त और अध्ययन** : दिल्ली, प्रतिभा प्रकाशन, १९५५, पृ० ३१४, डि०, ६ रु०. उ०प्र०, (५१)।

भारतीय तथा पाश्चात्य समीक्षा-सिद्धान्तों का प्रसाद-पूर्ण शैली में विवेचन।

—जैनेन्द्रकुमार : **साहित्य का श्रेय और प्रेय** : दिल्ली, पूर्वोदय प्रकाशन, १९५३, पृ० ४५६, डि० क्रा०, ७ रु०, उ० प्र०, (५५)।

साहित्य के हर पहलू पर अपने दृष्टिकोण से लिखे गए लेखक के मौलिक निबन्धों का संकलन।

—बुद्धिनाथ झा 'कैरव' : **साहित्य साधना की पृष्ठभूमि** : पटना, ज्ञानपीठ लि०, १९५३, पृ० २१६, रॉ०, ६ रु०, बि० रा० प०, (५४-५५)।

साहित्य के सभी अंगों का आलोचनात्मक विधान (साहित्य तत्त्व विमर्श, काव्य तत्त्व विमर्श एवं अलंकार तत्त्व विमर्श)।

—भगवतशरण उपाध्याय (डॉ०) : **विश्व साहित्य की रूपरेखा** : दिल्ली, राजपाल एण्ड सन्स, १९५७, पृ० ५५८, डि०, १२ रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

विश्व की प्रसिद्ध २८ भाषाओं के साहित्य और उनके साहित्यकारों का विवेचनात्मक दिग्दर्शन।

—शंकरदेव अवतरे : **साहित्य** : काशी, लेखक द्वारा, १९५७, पृ० ३१७, डि० क्रा०, ६ रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

आधुनिक आलोचनात्मक पद्धति एवं शास्त्रीय दृष्टिकोण से साहित्य का अध्ययन।

—हंसकुमार तिवारी : **कला** : भागलपुर, युगान्तर साहित्य मन्दिर, १९९४ वि०, पृ० १५६, डि० क्रा०, १.५० रु०, वि० प्र०, (५४-५५)।

कला विषयक विवेचनात्मक ग्रन्थ।

—हरद्वारीलाल शर्मा (डॉ०) : **सौन्दर्यशास्त्र** : प्रयाग, साहित्य भवन लि०, १९५३, पृ० २४०, डि० क्रा०, ३ रु०, उ० प्र०, (५३-५४)।

सौन्दर्यशास्त्र का संक्षिप्त विवेचन।

हिन्दी साहित्य, सामान्य

—क्षेमचन्द्र सुमन तथा योगेन्द्रकुमार मल्लिक (भू० ले० नन्ददुलारे वाजपेयी): **साहित्य विवेचन** : दिल्ली, आत्माराम एण्ड सन्स, १९५५, डि०, पृ० ३३६, ७ रु०, उ० प्र०, (५२)।

हिन्दी-साहित्य के विभिन्न अंगों का सैद्धान्तिक एवं ऐतिहासिक विवेचन।

—नामवरसिंह : **छायावाद** : बनारस, सरस्वती प्रेस, १९५५, पृ० १४६, डि०, ४ रु०, उ० प्र०, (५५-५६)।

छायावाद की काव्यगत विशेषताओं को स्पष्ट करते हुए छाया-चित्रों में निहित सामाजिक सत्य का उद्घाटन।

—प्रेमनारायण शुक्ल : **हिन्दी साहित्य में विविधवाद** : कानपुर, पद्मजा प्रकाशन, २०१० वि०, पृ० ५२६, डि०, ९ रु०, उ० प्र०, (५५)।

रचनात्मक साहित्य तथा वादों के बीच मनोवैज्ञानिक सम्बद्धता का प्रतिस्थापन एवं विविध वादों की विवेचना।

—बटे कृष्ण : **वीर रस का शास्त्रीय अध्ययन** : बनारस, सरस्वती मन्दिर, १९५६, पृ० २१२, डि० क्रा०, ३.५० रु०, उ० प्र०, (५६-५७)।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

—बरसानेलाल चतुर्वेदी (डॉ०) : **हिन्दी साहित्य में हास्य-रस** : दिल्ली, हिन्दी साहित्य संसार, १९५७, पृ० ३२२, डि०, ७.५० रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

आगरा विश्वविद्यालय द्वारा पी-एच० डी० के लिए स्वीकृत प्रबन्ध। भारतेन्दु-काल से आधुनिक काल तक के हास्य की प्रवृत्तियों की विवेचना। श्री गुलाबराय की भूमिका सहित।

—बलदेव उपाध्याय : **भारतीय साहित्यशास्त्र, प्रथम भाग** : काशी, प्रसाद परिषद्, २००७ वि०, पृ० ७०६, ड० क्रा०, ८ रु०, उ० प्र०, (५०)।

भारतीय साहित्यशास्त्र के मुख्य सिद्धान्तों का तुलनात्मक अध्ययन।

—बलदेव उपाध्याय : **भारतीय साहित्यशास्त्र, द्वितीय भाग** : काशी, प्रसाद परिषद्, २०१२ वि०, पृ० ४७८, ड० क्रा०, उ० प्र०, (५२)।

भारतीय रसशास्त्र के मुख्य सिद्धान्तों का तुलनात्मक अध्ययन।

डॉ० नगेन्द्र का साहित्य

१. भारतीय काव्य-शास्त्र की परम्परा १६·००
२. विचार और विश्लेषण ५·५०
३. विचार और अनुभूति ४·५०
४. विचार और विवेचन ४·५०
५. रीति-काव्य की भूमिका ५·५०
६. देव और उनकी कविता ६.५०
७. सियारामशरण गुप्त ५·५०
८. आधुनिक हिन्दी कविता की मुख्य प्रवृत्तियाँ ४·००

इनके बिना आपका पुस्तकालय अधूरा रहेगा।

नेशनल पब्लिशिंग हाउस

नई सड़क, देहली

—विश्वम्भर उपाध्याय, (भू० ले० वासुदेवशरण अग्रवाल): **हिन्दी साहित्य की दार्शनिक पृष्ठभूमि** : आगरा, साहित्य-रत्न भण्डार, २०१२ वि०, ७.५० रु०, उ० प्र०, (५५-५६)।

मध्यकालीन हिन्दी-काव्य में प्राप्त दार्शनिक धारणाओं का विवेचन।

—शचीरानी गुर्टू (श्रीमती), (भू० ले० डॉ० वेस्टन मेकडानियल) : **साहित्य दर्शन, प्रथम भाग** : दिल्ली, गौतम बुक डिपो, १९५०, पृ० ४००, डि०, ८ रु०, के० स० प्र० वि० पु० प्रति०, हि० सा०स० से क० पुर०, (२००७ वि०), तथा उ० प्र०, (५२)।

२३ शीर्षकों के अन्तर्गत विभिन्न कलाकारों की प्रवृत्तियों की तुलना।

—शम्भूनाथ सिंह : **छायावाद युग** : बनारस, सरस्वती मंदिर, १९५२, पृ० ३९२, डि०, ६.५० रु०, उ० प्र०, (५३)।

तीन खण्डों में छायावाद युग का सर्वांगीण विवेचन।

—श्रीपाल सिंह 'क्षेम' : **छायावाद की काव्य साधना**: काशी, साहित्य ग्रन्थमाला कार्यालय, २०११ वि०, पृ० ३७६, ड० क्रा०, ४.५० रु०, उ० प्र०, (५५)।

छायावाद की सहज भारतीय भूमि का निरीक्षण। उसके विकास का इतिहास एवं उसके शास्त्रीय पक्ष का अध्ययन।

—श्रीपाल सिंह 'क्षेम' : **छायावाद के गौरवचिह्न** : वाराणसी, हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, १९५६, पृ० ३६७, डि०, ९ रु०, उ० प्र०, (५६-५७)।

छायावादी काव्यधारा की कुछ प्रमुख तात्त्विकताओं को लेकर उनका विवेचन।

—सूरजप्रसाद खत्री (डॉ०) : **हास्य की रूपरेखा** : वाराणसी, हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, १९५६, पृ० ३६६, डि०, ९ रु०, उ० प्र०, (५६-५७)।

हास्य के अन्तरंग और बहिरंग सिद्धान्तों का निरूपण संस्कृत, हिन्दी एवं उर्दू साहित्य की विशिष्ट रूपरेखा सहित।

साहित्यिक कोष

—रामाज्ञा द्विवेदी 'समीर' : **अवधी कोष** : इलाहाबाद,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दुस्तानी एके०, १९५५, पृ० २४३, रॉ०, ७.५० रु०, उ० प्र०, (५५-५६)।

अवधी के लगभग १५०० मूल शब्दों का व्याकरण, अर्थ एवं व्युत्पत्ति सहित सम्पादन, यत्र-तत्र मुहावरे, लोकोक्तियाँ एवं उद्धरण आदि।

—सुधाकर पाण्डेय : **प्रसाद कोष** : वाराणसी, आराधना प्रकाशन, १९५७, पृ० ४०६, रॉ०, १६ रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

'प्रसाद' जी के सुप्रसिद्ध ९ काव्य-ग्रन्थों के अन्तर्गत प्रयुक्त शब्दों का साधारण एवं विशेष अर्थ। प्रारम्भ में 'प्रसाद' जी के व्यक्तित्व एवं उनकी रचनाओं के सम्बन्ध में १५ पृष्ठ का एक निबन्ध।

—हरदेव बाहरी (डॉ०) : **प्रसाद साहित्य कोष** : इलाहाबाद, भारती भण्डार, २०१४ वि०, पृ० ४८५, डि०, ९ रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

प्रसाद साहित्य का ज्ञानकोष। 'प्रसाद' जी की सभी कृतियों का परिचय, उनकी विषय-वस्तु की संक्षिप्त समीक्षा तथा प्रसाद साहित्य में आये हुए संदर्भों का विवेचन।

हिन्दी काव्यशास्त्र

—अकबर साह (मूल ले०), चिन्तामणि कवि (रूपा०), भगीरथ मिश्र (सम्पा०) : **शृंगार मंजरी** : लखनऊ, विश्वविद्यालय, १९५६, पृ० १४४, भूमिका पृ० ३५, डि० क्रा०, २ प्लेट्स, २.५० रु०, उ० प्र०, (५६-५७)।

हिन्दी काव्यशास्त्र की लगभग तीन सौ साल पुरानी संस्कृत रचना का सम्पादन। उत्तर प्रदेशीय प्राच्य इतिहास परिषद् के संग्रहालय में प्राप्त प्रति के आधार पर।

—अप्पय दीक्षित (मूल ले०), व्याख्या० भोलाशंकर व्यास (डॉ०) : **हिन्दी कुवलयानन्द** : बनारस, चौखम्भा विद्या भवन, १९५६, पृ० ३१२, डि०, ६.५० रु०, उ० प्र०, (५६-५७)।

श्री अप्पय दीक्षित के प्रसिद्ध अलंकार-विषयक ग्रन्थ 'कुवलयानन्द' की व्याख्या। प्रारम्भ में ९० पृष्ठों में मूल लेखक और उनके ग्रन्थ के सम्बन्ध में विस्तृत विवेचना। अन्त में पद्यानुक्रमणिका।

—मीर अब्दुल वाहिद बिलग्रामी (मू० ले०), सैयद अतहर अब्बास रिज़वी (अनु०), डॉ० हजारीप्रसाद द्विवेदी (भू० ले०) : **हकायके हिन्दी** : काशी, नागरी प्रचारिणी सभा, २०१४ वि०, पृ० ११५, डि०, ३ रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

हिन्दी ध्रुपद और विष्णुपद गानों में लौकिक शृंगार के वर्ण्य-विषयों को आध्यात्मिक रूप में समझने का अध्ययन-ग्रन्थ, १२ पृष्ठों की डॉ० हजारीप्रसाद द्विवेदी की भूमिका, ३६ पृष्ठों की प्र० सम्पा० रुद्र कौशिकेय की भूमिका।

—विश्वेश्वर आचार्य (व्याख्या०), डॉ० नगेन्द्र (सम्पा०) : **हिन्दी ध्वन्यालोक** : दिल्ली, गौतम बुक डिपो, १९५२, पृ० ५००, डि०, १० रु०, उ० प्र०, (५२-५३)।

आनन्दवर्द्धनाचार्य प्रणीत 'ध्वन्यालोक' नामक संस्कृत ग्रन्थ के मूल एवं टीका की हिन्दी व्याख्या। डॉ० नगेन्द्र की ५५ पृष्ठों की भूमिका द्रष्टव्य।

—ओमप्रकाश (डॉ०) : **हिन्दी अलंकार साहित्य** : दिल्ली, भारतीय साहित्य मन्दिर, १९५६, पृ० २६७, डि०, ६ रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

उत्तर प्रदेश और विंध्य प्रदेश सरकार द्वारा पुरस्कृत
अन्तर्राष्ट्रीय मुखपृष्ठ प्रदर्शनी में स्वर्णपदक प्राप्त

भारतीय कसीदा

लेखक : **जगदीश मित्तल : कमला मित्तल**

भूमिका : **डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल**

- बढ़िया कागज़ पर छपे २१५ सादे और रंगीन नमूने
- १८ हाफ़टोन चित्र, ३२ पृष्ठ की ठोस पाठ-सामग्री
- आकार ९" × ११"
- मजबूत जिल्द, नयनाभिराम तिरंगा कवर
- मूल्य १५), विशेष संस्करण २०)

'भारतीय कसीदा' नेशनल एक्सटेंशन सरविस संग्रहालयों के लिए स्वीकृत है।

प्रकाशक :
सुरुचि प्रकाशन
१-२-२१४ गगन महल रोड
हैदराबाद, आंध्र प्रदेश

मुख्य वितरक :
राजकमल प्रकाशन
दिल्ली, इलाहाबाद,
बम्बई, पटना, मद्रास

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आगरा विश्वविद्यालय द्वारा पी-एच० डी० उपाधि के लिए स्वीकृत थीसिस का कुछ परिवर्तित प्रथम भाग, संस्कृत की प्राचीन परम्परा से लेकर हिन्दी की नवीन गतिविधि तक का अलंकार विषयक अध्ययन।

—कुन्तक (मू० ले०), विश्वेश्वर आचार्य (व्याख्या०), डॉ० नागेन्द्र (सम्पा०) : **हिन्दी वक्रोक्ति जीवितम्** : दिल्ली, आत्माराम एण्ड सन्स, १९५५, पृ० ५५८, डि०, १६ रु०, उ० प्र०, (५५-५६)।

आचार्य कुन्तक के 'वक्रोक्ति जीवितम्' की हिन्दी व्याख्या। प्रारम्भ में अतिरिक्त २८२ पृष्ठों की डॉ० नगेन्द्र की मार्मिक भूमिका एवं २७ पृष्ठों की व्याख्या का आमुख द्रष्टव्य।

—धनंजय (मू० ले०), गोविन्द त्रिगुणायत (व्याख्या०) : **हिन्दी दशरूपक** : कानपुर, साहित्य निकेतन, पृ० २४७, डि०, ६.२५ रु०, उ० प्र०, (५५-५६)।

धनंजय के संस्कृत 'दशरूपक' की हिन्दी व्याख्या, मूल सहित, ३२ पृष्ठों की अतिरिक्त भूमिका द्रष्टव्य।

—धनंजय (मू० ले०), भोलाशंकर व्यास (डॉ०) (व्याख्या०) : **हिन्दी दशरूपक** : बनारस, चौखम्भा विद्या भवन, १९५५, पृ० २८६, डि०, ५ रु०, उ० प्र०, (५५-५६)।

धनंजय के प्रसिद्ध ग्रन्थ 'दशरूपक' की व्याख्या मूल सहित, ४६ पृष्ठों की अतिरिक्त भूमिका द्रष्टव्य।

—नगेन्द्र (डॉ०) : **भारतीय काव्यशास्त्र की भूमिका, भाग २** : दिल्ली, ओरियन्टल बुक डिपो, १९५५, पृ० ४६४, डि०, १० रु०, म० प्र०, (५६)।

रीति तथा वक्रोक्ति सिद्धान्त-विवेचन।

—प्रभुदयाल मीतल : **ब्रजभाषा साहित्य में नायिका भेद** : मथुरा, अग्रवाल प्रेस, २००५ वि०, पृ० ४२४, डि०, ६ रु०, उ० प्र०, (५०)।

नायिका-भेद का सर्वांगीण विवेचन, ब्रज भाषा साहित्य का विशेष उद्धरण सहित।

—बिहारीलाल विजावर : **साहित्य सागर, दो भाग** : लखनऊ, गंगा ग्रन्थागार, १९९४ वि०, पृ० ५५४, रॉ०, प्र० भा० ३.७५ रु०, द्वि० भा० ४.७५ रु०, वि० प्र०, (५२-५३)।

काव्यशास्त्र (नायिका-भेद) का एक प्रामाणिक ग्रन्थ।

—भगीरथ मिश्र (डॉ०) : **काव्यशास्त्र** : गोरखपुर, विश्वविद्यालय प्रकाशन, १९५७, पृ० २९०, डि०, ५.५० रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

काव्यशास्त्र के स्वरूप, कारण, प्रयोजन, तत्त्वों, भेदों और सिद्धान्तों की प्रामाणिक मीमांसा प्रस्तुत करने वाला ग्रन्थ।

—भगीरथ मिश्र (डॉ०) : **हिन्दी काव्यशास्त्र का इतिहास** : लखनऊ, विश्वविद्यालय, २००५ वि०, पृ० ४७८, रॉ०, ९ रु०, उ० प्र०, (५२)।

काव्यशास्त्र के विविध अंगों का क्रमिक विकास, काव्यशास्त्र विषयक ग्रन्थों की विश्लेषणात्मक समालोचना, काव्यशास्त्र के आचार्यों का परिचय, काल-क्रमानुसार उनके ग्रन्थों का विवरण और उनकी आलोचना। पी-एच० डी० के लिए स्वीकृत प्रबन्ध।

—भोलाशंकर व्यास (डॉ०) : **ध्वनि सम्प्रदाय और उसके सिद्धान्त, भाग १** : काशी, नागरी प्रचारिणी सभा, पृ० ५०९, डि०, १० रु०, उ० प्र० (५६-५७)।

राजपूताना विश्वविद्यालय की पी-एच० डी० की उपाधि के लिए स्वीकृत प्रबन्ध। शब्द-शक्ति-विवेचन।

—मम्मट आचार्य (मू० ले०), सत्यव्रतसिंह (व्याख्या०) : **हिन्दी काव्य प्रकाश** : बनारस, चौखम्भा विद्या भवन, १९५५, पृ० ४७४, १० रु०, उ० प्र०, (५५-५६)।

आचार्य मम्मट के प्रसिद्ध ग्रन्थ 'काव्य प्रकाश' की मूलसहित व्याख्या, व्याख्याकार की ७३ पृष्ठों की अतिरिक्त भूमिका द्रष्टव्य।

—मोतीलाल मेनारिया : **राजस्थान का पिंगल साहित्य** : उदयपुर, हितैषी पुस्तक भण्डार, १९५१, पृ० २६०, डि०, ५ रु०, उ० प्र०, (५२-५३)।

राजस्थान के पिंगल साहित्य का क्रमबद्ध इतिहास।

—रामनरेश वर्मा : **वक्रोक्ति और अभिव्यंजना** : बनारस, ज्ञानमण्डल लि०, २००८ वि०, पृ० २३५, डि० क्रा०, ४.५० रु०, उ० प्र०, (५२)।

वक्रोक्ति के स्वरूप का विवेचन तथा उससे ध्वनि का सम्बन्ध, निर्देशन का प्राचीन परम्परानुकूल प्रतिपादन।

—वामन आचार्य (मू० ले०), विश्वेश्वरानन्द (व्याख्या०), डॉ० नगेन्द्र (भूमिका) : **हिन्दी काव्यालंकार सूत्र** : दिल्ली, आत्माराम एण्ड सन्स, २०११ वि०, पृ० ३६६, डि०,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१२ रु०, उ० प्र०, (५५)।

'काव्यालंकार सूत्र वृत्तिः' की हिन्दी व्याख्या। ९ शीर्षकों के अन्तर्गत १८९ पृष्ठों में डॉ० नगेन्द्र की विद्वत्तापूर्ण भूमिका सहित।

हिन्दी साहित्य-इतिहास

—उदयनारायण तिवारी (डॉ०) : **भोजपुरी भाषा और साहित्य** : पटना, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, २०११ वि०, पृ० ३६०, रॉ०, १२ रु०, उ० प्र०, (५५-५६) तथा वि० प्र०, (५५-५६)।

प्रयाग विश्वविद्यालय द्वारा स्वीकृत डी० लिट्० की थीसिस का परिवर्द्धित रूप।

—उदयनारायण तिवारी (डॉ०) : **हिन्दी भाषा का उद्भव और विकास** : प्रयाग, भारती भण्डार, २०१२ वि०, पृ० ६११, डि०, ११ रु०, वि० रा० प०, (५६-५७)।

१४ अध्यायों में हिन्दी भाषा के उद्गम और विकास का प्रामाणिक विवेचन। परिशिष्ट में हिन्दी व्याकरण का संस्कृत, अंग्रेज़ी, फारसी एवं अरबी भाषाओं के व्याकरणों से तुलनात्मक अध्ययन तथा हिन्दी लिपि की उत्पत्ति तथा विकास का ४२ पृष्ठों में परिचय।

—कृष्णदेव उपाध्याय (डॉ०) : **भोजपुरी और उसका साहित्य** : दिल्ली, राजकमल प्रकाशन (कृते सरस्वती सहकार), १९५७, पृ० १४८, २·२५ रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

भोजपुरी भाषा और साहित्य का परिचयात्मक विश्लेषण। भारतीय साहित्य परिचय पुस्तकमाला के अन्तर्गत प्रकाशित।

—गौरीशंकर द्विवेदी 'शंकर' : **बुन्देल वैभव, द्वितीय भाग** : टीकमगढ़, बुन्देल वैभव ग्रन्थमाला, १९९२ वि०, पृ० ५२१, ड० क्रा०, २·५० रु०, वि० प्र०।

बुन्देलखण्ड के हिन्दी-कवियों का साङ्गोपाङ्ग इतिहास। सचित्र और सटिप्पण।

—त्रिलोकी नारायण दीक्षित (डॉ०) : **अवधी और उसका साहित्य** : दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, (कृते सरस्वती सहकार, दिल्ली), पृ० १४०, ड० क्रा०, २ रु०, उ० प्र०, (५६-५७)।

अवधी भाषा और साहित्य का परिचयात्मक विश्लेषण। (भारतीय साहित्य परिचय पुस्तक) के अन्तर्गत प्रकाशित)।

—नरेशचन्द्र चतुर्वेदी : **हिन्दी साहित्य का विकास और कानपुर** : कानपुर, कानपुर इतिहास समिति, १९५७, पृ० ३८४, ड० क्रा०, ६ रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

एक विशेष क्षेत्र को लेकर साहित्यकारों एवं कृतियों का परिचय।

—भोलानाथ (डॉ०) : **हिन्दी साहित्य (१९२६-१९४७)** : प्रयाग, हिन्दी परिषद् (प्रयाग वि० वि०), १९५४, पृ० ४६६, ८ रु०, उ० प्र०, (५४-५५)।

विवेच्यकाल के साहित्य की सामान्य प्रवृत्तियों का सर्वांगीण संक्षिप्त विवेचन। प्रयाग विश्वविद्यालय की डी० फिल्० उपाधि के लिए स्वीकृत प्रबन्ध।

—राम अवध द्विवेदी : **हिन्दी साहित्य के विकास की रूप-रेखा** : इलाहाबाद, भारती भण्डार, २०१३ वि०, पृ० २१५, डि०, ४ रु०, उ० प्र०, (५६-५७)।

लेखक के अपने विचार एवं दृष्टिकोण से उद्धृत हिन्दी-साहित्य का इतिहास।

—रामबहोरी शुक्ल : **हिन्दी साहित्य का उद्भव और विकास** : इलाहाबाद, हिन्दी भवन, १९५६, पृ० ३०८, डि०, १० रु०, उ० प्र०, (५६-५७)।

विविध प्रेरणाओं और परिस्थितियों पर विकसित हिन्दी-साहित्य के विकास का साङ्गोपाङ्ग अध्ययन।

—शिवदानसिंह चौहान : **हिन्दी साहित्य के अस्सी वर्ष** : दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, १९५४, पृ० २२२, ड० क्रा०, ३·२५ रु०, उ० प्र०, (५५-५६)।

८ अध्यायों में हिन्दी-साहित्य के विगत ८० वर्षों के सर्वांगीण विकास का विवेचन। १८ पृष्ठों की अतिरिक्त सारगर्भित भूमिका सहित।

—सावित्री सिनहा (डॉ०) : **मध्यकालीन हिन्दी कवयित्रियाँ** : दिल्ली, आत्माराम एण्ड सन्स, १९५३, पृ० ३१७, डि०, ८ रु०, उ० प्र०, (५५)।

मध्यकालीन हिन्दी-साहित्य में कवयित्रियों के योगदान पर गवेषणात्मक अध्ययन। दिल्ली विश्वविद्यालय द्वारा पी-एच० डी० के लिए स्वीकृत प्रबन्ध।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

—हजारी प्रसाद द्विवेदी (डॉ०) : **हिन्दी साहित्य** : दिल्ली, अतरचन्द कपूर एण्ड सन्स, १९५५, पृ० ५१०, ड० क्रा०, ६·२५ रु०, उ० प्र०, (५५)।

हिन्दी-साहित्य के उद्भव और विकास पर प्रामाणिक ग्रन्थ।

आलोचना : सिद्धान्त

—सूरजप्रसाद खत्री (डॉ०) : **आलोचना, इतिहास और सिद्धान्त** : दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, पृ० ५९०, डि०, १२ रु०, बि० रा० प०, (५३-५४)।

आलोचना का दो खण्डों में ऐतिहासिक और सैद्धान्तिक विवेचन।

—रामलालसिंह : **समीक्षा दर्शन, प्रथम भाग** : प्रयाग, इण्डियन प्रेस, १९५२, पृ० ३८१, ड० क्रा०, ६ रु०, वि० प्र०, (५४-५५)।

समीक्षा के सैद्धान्तिक एवं व्यावहारिक पक्ष का विवेचन।

—श्यामलाकान्त वर्मा : **आधुनिक समीक्षा** : पटना, अन्त-र्राष्ट्रीय प्रकाशन मण्डल, १९५५, पृ० १३०, ड० क्रा०, २ रु०, उ० प्र०, (५५)।

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के पश्चात् होने वाले समीक्षकों के सम्बन्ध में विचार।

—देवराज (डॉ०) : **आधुनिक समीक्षा : कुछ समस्याएँ** : दिल्ली, राजपाल एण्ड सन्स, १९५४, पृ० १४६, डि०, ४·५० रु०, उ० प्र०, (५५-५६)।

लेखक के सत्रह महत्त्वपूर्ण सैद्धान्तिक साहित्यिक निबन्धों का संकलन। स्वमन्तव्य सहित।

हिन्दी-काव्य

—अतुलकृष्ण गोस्वामी : **नारी** : दिल्ली, आत्माराम एण्ड सन्स, १९५०, पृ० ३१६, डि०, १० रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

१९ सर्गों का महाकाव्य।

—अनूप शर्मा : **वर्द्धमान** : काशी, भारतीय ज्ञानपीठ, १९५१, पृ० ५८५, ड० क्रा०, ६ रु०, उ० प्र०, (५२)।

जैन धर्म के उन्नायक भगवान् महावीर पर १७ सर्गों का महाकाव्य।

—अनूप शर्मा : **शर्वाणी** : दिल्ली, पारिजात प्रकाशन, १९४८, पृ० २५२, डि०, ७·५० रु०, उ० प्र०, (५०)।

७०० घनाक्षरी छन्दों का एक काव्य।

—आनन्द मिश्र : **चन्देरी का जौहर** : दिल्ली, आत्माराम एण्ड सन्स, १९५७, पृ० २९, डि०, (सचित्र), २ रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

—आनन्द मिश्र : **झांसी की रानी** : उ० प्र०, (५७-५८)।

६ सर्गों का खोजपूर्ण ऐतिहासिक खण्ड-काव्य।

—आनन्दकुमार : **अंगराज** : दिल्ली, राजपाल एण्ड सन्स, १९५०, पृ० २९९, डि०, ७ रु०, उ० प्र०, (५१)।

महारथी कर्ण का जीवन-काव्य २५ सर्गों में; ४[illegible] पृष्ठों की भूमिका।

—आरसीप्रसादसिंह : **नन्ददास** : पटना, तारा मण्डल, १९५३, पृ० ६३, डि०, २·५० रु०, उ० प्र०, (५५)।

३ सर्गों का एक प्रतीक काव्य और जीवन-दर्शन।

—उदयशंकर भट्ट : **विजय पथ** : दिल्ली, गौतम बुकडिपो, १९५०, पृ० ७९, ड० क्रा०, १·२५ रु०, उ० प्र०, (५२)।

खण्ड-काव्य।

—केदारनाथ मिश्र 'प्रभात' : **ऋतम्बरा** : पटना, अजन्ता प्रेस, १९५७, पृ० २०८, डि०, ४·५० रु०, बि० रा० प०, (५६-५७) और उ० प्र०, (५७-५८)।

१६ सर्गों का महाकाव्य।

—गिरिजाकुमार माथुर : **धूप के धान** : काशी, भारतीय ज्ञानपीठ, १९५५, पृ० १४८, ड० क्रा०, ३ रु०, उ० प्र०, (५५-५६)।

१९४६ ई० से अद्यतन ४५ कविताओं का संग्रह।

—गिरिजाकुमार माथुर : **नाश और निर्माण** : लखनऊ, महेशानन्द एण्ड सन्स, १९४६, पृ० १३६, डि०, ३ रु०, उ० प्र०।

कवि के अपने जुलाई १९५८ से नव० १९४५ तक के ५७ गीतों का संग्रह।

—गिरिजादत्त शुक्ल 'गिरीश' : **गृहलक्ष्मी** : नई दिल्ली, राजेन्द्रगुप्त एण्ड कम्पनी, १९५७, पृ० ११३, ड० क्रा०, २ रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

भारतीय ग्राम-समाज-निर्माण में सहयोगिनी, सत्यार्ग्रहमयी ग्राम-नारी का एक खण्ड-काव्यात्मक चित्र।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजकमल प्रकाशन

ऐतिहासिक उपन्यास

जय सोमनाथ : कन्हैयालाल माणिकलाल मुन्शी ५·५०
भगवान परशुराम : ,, ,, ७·००
लोमर्हर्षिणी : ,, ,, ५·००
लोपामुद्रा : ,, ,, ५·५०
भरतपादुका : ,, ,, ४·००
कल्याणमल : के० एम० पणिक्कर ४·००

आंचलिक उपन्यास

मैला आंचल : फणीश्वरनाथ रेणु (भारत सरकार द्वारा पुरस्कृत) ६·५०
परती : परिकथा : ,, ,, ७.५०
जीवी : पन्नालाल पटेल (साहित्य अकादेमी की ओर से) ४·५०
नदी और नारी : हुमायूँ कबीर ४·५०
बहती गंगा : शिवप्रसाद मिश्र 'रुद्र' २·५०

सामाजिक उपन्यास

जहाज का पंछी : इलाचन्द्र जोशी ७·५०
बूढ़िया की गाय : मुल्कराज आनन्द ५·५०
एक था राजा : ,, अभी अप्राप्य
दूध-गाछ : देवेन्द्र सत्यार्थी ६·००
लोक-परलोक : उदयशंकर भट्ट ३.५०
विशाख : प्रकाशचन्द्र गुप्त १·५०
दुखमोचन : नागार्जुन ३·००
बाबा बटेसरनाथ : ,, २·००
उखड़े हुए लोग : राजेन्द्र यादव ७·५०
प्रगति की राह : गोविन्दवल्लभ पन्त अभी अप्राप्य
कायर : राजेन्द्र शर्मा २·५०
जीवन-दान : श्रीराम शर्मा 'राम' ३·००
आदमी और सिक्के : महेन्द्रनाथ २·००
गंगा मैया : भैरवप्रसाद गुप्त २·००

चन्दा : इन्द्र वसावड़ा २·००
रोड़े और पत्थर : डॉ० देवराज २·२५
बाहर-भीतर : ,, २·००
उबाल : डॉ० रांगेय राघव १·७५
सनसनाते सपने : राधाकृष्ण २·००
स्वप्नमयी : विष्णु प्रभाकर २·००
दूर के ढोल : ए० रमेश चौधरी 'आरिगपूडि' ४·००
कली मुसकराई : सत्यप्रकाश संगर ३·००
कजली : भवानी भट्टाचार्य अभी अप्राप्य
टूटे हुए पर : खलील जिब्रान २·००
बेद वृक्षों की छाया में : शिह येन १·२५

कहानियाँ—निजी संकलन

जानवर और जानवर मोहन राकेश ३·००
तुम बड़ी पागल हो मालती परूलकर २·५०
काल सुन्दरी : ओंकारनाथ श्रीवास्तव ३·००
जीवन के अंचल से : लीलावती मुन्शी अभी अप्राप्य
फूल और पत्थर : कृष्णचन्द्र अभी अप्राप्य
जहाँ लक्ष्मी कैद है : राजेन्द्र यादव ४·००
मैं हार गई : मन्नू भण्डारी ३·००
आधी रात का सूरज : शमशेरसिंह नरूला २·५०

कहानी-संग्रह

***कहानी : नई पुरानी :** सं० डॉ० रघुबीरसिंह २·००

नाटक

लाल कनेर : रवीन्द्रनाथ ठाकुर अनु० हजारी प्रसाद द्विवेदी २·००
वाह रे मैं वाह ! : कन्हैयालाल माणिकलाल मुन्शी ४·५०
ध्रुवतारिका : डॉ० रामकुमार वर्मा अभी अप्राप्य
एकला चलो रे : उदयशंकर भट्ट अभी अप्राप्य
क्रान्तिकारी : ,, १·५०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छलना   भगवतीप्रसाद बाजपेयी   ३·००

नाटक-संग्रह

*युगछाया :   सं० शिवदानसिंह चौहान   २·५०

कविता

पर आँखें नहीं भरीं : डॉ० शिवमंगल सिंह 'सुमन'   ४·००
धरती और स्वर्ग :   डॉ० देवराज   ३·५०
अपलक :   बालकृष्ण शर्मा 'नवीन'   अभी अप्राप्य
क्वासि :   ,,   ,,   ४·००
सूर्य का स्वागत :   दुष्यन्त कुमार   ३·५०
बनपाखी सुनो :   नरेश मेहता   ३·००
कविताएँ :   कीर्ति चौधरी   ३·५०
चक्रव्यूह :   कुँवर नारायण   ३·५०
सुवेला :   शम्भुनाथ 'शेष'   २·५०
चेतना :   बाबूराम पालीवाल   २·००
दिवालोक :   शम्भूनाथ सिंह   २·००
रामचरित्र (मालवा के राजा रामसिंह
का जीवन-चरित्र) :   रघुनाथ 'रसाल'   ३·५०
अकेले कण्ठ की पुकार :   अजित कुमार   ३·००

कविता-संग्रह

*पद्य-प्रवाह :   सं० श्रीमती सुशीलाकुमारी   २·५०

भारतीय अमर-साहित्य

पञ्चतन्त्र :   डॉ० मोतीचन्द   ५·२५
दशकुमारचरित :   पं निरञ्जनदेव शर्मा   अभी अप्राप्य
मेघदूत (मूल सहित) : डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल   ४·५०
सेतुबन्ध :   डॉ० रघुवंश   ४·५०

संस्कृति

भगवान् बुद्ध :   धर्मानन्द कोसम्बी
(साहित्य अकादेमी की ओर से)   ५·००
*हिन्दू सभ्यता :   डॉ० राधाकुमुद मुकर्जी,
अनु० डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल   ७·५०
प्राचीन भारतीय विचार और विभूतियां :
डॉ० राधाकुमुद मुकर्जी   ३·५०
वैष्णव धर्म :   परशुराम चतुर्वेदी   ३·५०
भारतीय संस्कृति :   शिवदत्त ज्ञानी   ५·५०

भारतीय समाज विन्यास : डॉ० राधाकमल मुकर्जी   २·००
भारतीय तत्त्व चिन्तन :   डॉ० जगदीशचन्द्र जैन   ६·५०

लोक-साहित्य

भारतीय लोक-साहित्य (सिद्धान्त) : श्याम परमार   ४·००
पाषाण नगरी (लोक-कथाएँ) :
शिवसहाय चतुर्वेदी   अभी अप्राप्य
धरती गाती है :   देवेन्द्र सत्यार्थी   अभी अप्राप्य
धीरे बहो गंगा :   ,,   ,,   अभी अप्राप्य

आलोचना

आलोचना, इतिहास
तथा सिद्धान्त :   डॉ० एस० पी० खत्री   १२·००
कवि प्रसाद :   डॉ० भोलानाथ तिवारी   ४·००
प्रेमचन्द एक विवेचन :   डॉ इन्द्रनाथ मदान   ३·५०
हिन्दी निबन्ध :   प्रभाकर माचवे   २·५०
पृथ्वीराज रासो में
कथानक रूढ़ियाँ :   व्रजविलास श्रीवास्तव   ३·५०
भारतीय प्रेमाख्यान की
परम्परा :   परशुराम चतुर्वेदी   ४·००
हिन्दी रीति साहित्य :   डॉ० भगीरथ मिश्र   ४·००
मध्यकालीन हिन्दी गद्य   हरिमोहन श्रीवास्तव   ४·००
मुन्शीजी और उनकी
प्रतिभा :   पं० सीताराम चतुर्वेदी   ३·००
हिन्दी गद्य-काव्य :   पद्मसिंह शर्मा 'कमलेश'   ७·००

साहित्य : इतिहास एवं परिचय

हिन्दी गद्य साहित्य :   शिवदानसिंह चौहान   २·७५
हिन्दी साहित्य के अस्सी वर्ष :   ,,   ,,   ३·५०
उर्दू साहित्य का
इतिहास :   डॉ० एजाज़ हुसेन   ६·००
हिन्दी भाषा तथा साहित्य : डॉ० उदयनारायण
तिवारी   ३·२५
उर्दू और उसका साहित्य : गोपीनाथ 'अमन'   २·२५
तमिल और उसका साहित्य : पूर्ण सोमसुन्दरम्   २·२५
तेलुगु और उसका साहित्य : हनुमच्छास्त्री 'अयाचित'   २·२५
मालवी और उसका साहित्य : श्याम परमार   २·२५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बंगला और उसका साहित्य : हंसकुमार तिवारी २·२५
अवधी और उसका साहित्य : डॉ० त्रिलोक नारायण दीक्षित २·२५
मराठी और उसका साहित्य : प्रभाकर माचवे २·२५
प्राकृत और उसका साहित्य : डॉ० हरदेव बाहरी २·२५
भोजपुरी और उसका साहित्य : डॉ० कृष्णदेव उपाध्याय २·२५
संस्कृत और उसका साहित्य : डॉ० नानूराम व्यास २·२५

भाषा-विज्ञान, व्याकरण

*भारतीय-आर्य भाषा और हिन्दी : डॉ० सुनीतिकुमार चाटुर्ज्या ७·२५
शब्दों का जीवन : डॉ० भोलानाथ तिवारी अभी अप्राप्य
हिन्दी और प्रादेशिक भाषाओं का वैज्ञानिक इतिहास : शमशेरसिंह नरूला ४·००
हिन्दी भाषा का सरल व्याकरण : डॉ० भोलानाथ तिवारी ३.५०
अपभ्रंश व्याकरण : आचार्य हेमचन्द्र २·००

आलोचनात्मक संकलन

निबन्धिनी (निजी संकलन) : गंगाप्रसाद पाण्डेय ४·००
प्रेमचन्द और गोर्की : सं० शचीरानी गुर्टू ६·००
सिद्धान्त और समीक्षा : सं० सन्तराम 'विचित्र' २·५०
हिन्दी गद्य की प्रवृत्तियाँ : आलोचना पुस्तकमाला २·००
हिन्दी काव्य की प्रवृत्तियाँ : ,, ,, २·००
हिन्दी-आलोचना की अर्वाचीन प्रवृत्तियाँ : ,, ,, २·२५
हिन्दी के गौरव ग्रन्थ : ,, ,, २·२५

गद्य-काव्य

मालाकार : रवीन्द्रनाथ ठाकुर अनु० सत्यकाम विद्यालंकार १०·००
शेष स्मृतियाँ : डॉ० रघुबीरसिंह ४·००

साहित्यिक निबन्ध

जीवन-कण : डॉ० रघुबीरसिंह अभी अप्राप्य
जीवन-धूलि : ,, ,, अभी अप्राप्य

निबन्ध-संकलन

*गद्य-गौरव : सं० बलराज एम० ए० २·५०
*विचार-वल्लरी : सं० जैनेन्द्रकुमार २·५०

गद्य-पद्य संग्रह

*मानसरोवर : सं० क्षेमचन्द्र 'सुमन' २·५०
*साहित्य-सञ्चय : सं० ओंप्रकाश २·५०

धार्मिक

धर्म वर्णन : आनन्दशंकर बापूभाई ध्रुव २·७५

इतिहास

रतलाम का प्रथम राज्य : डॉ० रघुबीरसिंह १०·००
Asoka : Dr. Radha Kumud Mookerji १८·००
Chandragupta Maurya & His Times ,, ,, अभी अप्राप्य

आत्मकथा, जीवन-चरित्र

आधे रास्ते : कन्हैयालाल माणिकलाल मुन्शी अभी अप्राप्य
सीधी चढ़ान : ,, ,, ५·२५
स्वप्नसिद्धि की खोज में : ,, ,, ५·५०

अर्थशास्त्र, राजनीति

*भारतीय अर्थशास्त्र : जथार व बेरी १४·५०
*भारतीय अर्थशास्त्र : जथार व जथार १०·००
*राजनीति सार : डॉ० ए० अप्पादोराय ८·५०
आधुनिक संविधान : के० सी० व्हीयर ३·५०

विविध

ग्रामोद्योग और उनकी शब्दावली : डॉ० हरिप्रसाद गुप्त ६·००
भारत और अन्तर्राष्ट्रीय श्रम संस्था : नरेन्द्रनाथ 'कौल' ३·२५

शिक्षा, मनोविज्ञान

शिक्षा : डॉ० ज़ाकिर हुसैन ३·२५
शिक्षण-प्रविधि : वी० एस० माथुर, शची माथुर ३·००
बच्चा मेरा शिक्षक : कैरोलिन प्रैट १·५०
सरल मनोविज्ञान : हंसराज भाटिया ४·००

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरल शिक्षा-मनोविज्ञान : हंसराज भाटिया ३'५०
हमारे बच्चे ६ से १२ वर्ष तक : अनूदित अभी अप्राप्य

राजकमल मनोविज्ञान माला

बचपन के पहले पांच साल : १'२५
हीन भाव : १'२५
बचपन ५ से १० साल : १'२५
हमारे जीवन का अर्थ (भाग १) : १.२५
प्रेम और विवाह : १'२५
हमारे जीवन का अर्थ (भाग २) : १'२५
व्यक्तित्व : १'२५
स्मरण-शक्ति : १'२५
मित्र बनाने की कला : १'२५
हमारे जीवन का अर्थ (भाग ३) : १'२५
अध्ययन कैसे करें : १'२५
हमारे जीवन का अर्थ (भाग ४) : १'२५
चिन्ता : १'२५
हमारे जीवन का अर्थ (भाग ५) : १'२५
माता-पिता की समस्या : १'२५
हमारे जीवन का अर्थ (भाग ६) : १'२५

स्त्रियोपयोगी

नारी का रूप-शृंगार : सावित्रीदेवी वर्मा ६'००
भारतीय भोजन विज्ञान : ,, ७'००

सेक्स

दाम्पत्य प्रेम : डॉ० मेरी स्टोप्स ३'००
संतति नियमन : ,, ,, २'००
स्थायी प्रेम : ,, ,, ३'००

किशोरोपयोगी, प्रौढ़ोपयोगी

इन्सान की कहानी : मुल्कराज आनन्द ३'००
हिन्दुस्तान की कहानी : ,, ,, २'५०
ग्राम-पंचायत (नाटक) : राजेन्द्र शर्मा २'००
अफ्रीका : मदन गोपाल २'००
अक्षरों का आरम्भ : आग़ा हैदर हुसैन २.००
अजन्ता के चित्रकूट : रायकृष्णदास, आनन्दकृष्ण १'२५

प्रौढ़ोपयोगी देश-परिचय माला

देश की जानकारी :
गांव की बातें : ०'५
सहकारी आन्दोलन : ०'५
सफाई : ०'५
खेतीबारी : ०'५
पशु-पालन : ०'५
साम्प्रदायिकता : ०'५
स्वतन्त्र देश के नागरिक : ०'५
हमारा विधान : ०'५
भारत के तीर्थस्थान : ०'५
स्वास्थ्य-रक्षा : ०'५
हमारे त्यौहार : ०'५
भारत-निर्माता : ०'५
नगर-व्यवस्था : ०'५

प्रौढ़ोपयोगी विज्ञान-परिचय माला

पेड़-पौधे : ०'६
पक्षियों का जीवन : ०'६
फल और सब्जियां : ०'६
कीड़े-मकोड़े व मक्खी-मच्छर : ०'६
पदार्थ की रचना : ०'६
हवा और पानी : ०'६
शरीर और भोजन : ०'६
हमारी फसलें : ०'६

बाल-साहित्य : चित्रकथा

नन्हे लंगूर की कहानी : वेलरी मैजिल
(भारत सरकार द्वारा पुरस्कृत) अभी अप्राप्य
आओ दोस्त बनाएं : सईदा सय्यदैन ०'७

बाल-साहित्य : अमर-कथा, लोक-कथा

पञ्चतन्त्र की कहानियां, (भाग १) :
(भारत सरकार द्वारा पुरस्कृत) शकुन्तला देवी
पञ्चतन्त्र की कहानियां, (भाग २) : ,, ,,
पञ्चतन्त्र की कहानियां, (भाग ३) : ,, ,,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाल पञ्चतन्त्र :	शकुन्तला देवी	२·००
सोने का नीबू :	किरण	१·२५
लोक कथाएँ :	द्रोणवीर कोहली	१·२५

बाल-साहित्य : कहानियाँ

परिस्तान : ग्रिम्स की कहानियाँ	अनु० रघुपतिसहाय फिराक	४·५०
पीली बत्तक :	चीन की कहानियाँ	१·००
तीरन्दाज 'ई' :	,, ,,	१·००
बरफीले देश में :	रूस की कहानियाँ	१·००
पहला शिकार :	,, ,,	१·००
प्रभात के घड़े :	पृथ्वीकुमार अग्रवाल	१·००
बचपन की कहानियाँ :	शरत्चन्द्र चैटर्जी	१·५०
धुएं की फांसी :	एस० ए० ताहिर	१·५०

बाल-साहित्य : कविता

रामायण के गीत :	'राघव'	१·००

बाल-साहित्य : नाटक

बच्चों की कचहरी :	केशवचन्द्र वर्मा	१·२५
जंगल में शेर :	कुदसिया जैदी	१·२५
चचा छक्कन के ड्रामे (२ भागों में)	कुदसिया ज़ैदी प्रति भाग	१·००
चमचम चमके चन्दा मामा :	बाबूराम पालीवाल	१·००

बाल-साहित्य : नागरिक-ज्ञान

सच्ची नागरिकता : (भारत सरकार द्वारा पुरस्कृत)	मनरो लीफ	२·००
एक कदम आगे :	मनरो लीफ	२·००

बाल-साहित्य : जीवनियाँ

हमारे बापू :	डॉ० इन्द्रनाथ मदान	१·००
हमारे नेहरू :	,, ,,	१·००
हमारे गुरुदेव :	,, ,,	१·००
मुन्शी प्रेमचन्द :	,, ,,	१·००
लेनिन :	,, ,,	१·००
अब्राहम लिंकन :	,, ,,	१·००
भगवान् बुद्ध :	,, ,,	१·००

राजकमल प्रकाशन

द्वारा वितरित पुस्तकें

(एकाधिकारी वितरण)

उपन्यास

नये मोड़ :	उदयशंकर भट्ट	अभी अप्राप्य
सागर लहरें और मनुष्य :	,, ,,	५·००
एक नीड़ दो पंछी :	,, ,,	८·५०
कठपुतली :	देवेन्द्र सत्यार्थी	अप्राप्य
ब्रह्मपुत्र :	,, ,,	७·००
रथ के पहिये :	,, ,,	अभी अप्राप्य
हेमा :	राजेन्द्र शर्मा	३·००
रीता की बात :	प्रताप नारायण टण्डन	२·००
चाँद रानी :	सत्यप्रकाश संगर	२·२५
एक था :	श्रीमती शीला शर्मा	२·००
धरती की ओर :	शिवराज कारान्त	५·००
सोरठ तेरा बहता पानी :	झवेरचन्द मेघानी	३·००
निर्देशक	'पहाड़ी'	५.००
सराय	,,	४.५०
फुटपाथ	राधाकृष्ण	२.००
कश्मीरी गुलाब	फडके	३.००

कहानियाँ

लम्बे दिन जलती रातें :	सत्यप्रकाश संगर	२·२५
अफ्रीका का आदमी :	,, ,,	२·७५
अवगुण्ठन :	,, ,,	२.२५
नया मार्ग :	,, ,,	२·५०
कितना ऊँचा कितना नीचा :	,, ,,	२·२५
वीरभद्र की गोष्ठी :	रावी	३·५०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महिला शासन :	चिरंजीलाल पाराशर	२·००
छाया में	'पहाड़ी'	३.२५
मौली	,,	२.५०
कैदी और बुलबुल	,,	४.००
तूफान के बाद	,,	३.५०
शेषनाग की थाती	,,	४.००
अधूरा चित्र	,,	२.५०
नया रास्ता	,,	३.२५
बया का घोंसला	,,	३.२५
सजला	राधाकृष्ण	५.००
गांधीजी का भूत	'बेढब' बनारसी	१.५०
महत्व के गुमनाम पत्र	,,	१.२५

नाटक

नया समाज :	उदयशंकर भट्ट	२·००
विद्रोहिणी अम्बा	,, ,,	२·००
सगर विजय :	,, ,,	२·२५
शक विजय :	,, ,,	२·२५
अवशेष	सुधाकर पाण्डेय	२.००

आलोचना, निबन्ध

मीरां एक अध्ययन	'शबनम'	३.५०
मीरां बृहत् पद संग्रह	,,	६.००
चन्द्रसखी और उनका काव्य	,,	२.००
मध्यकालीन श्रृंगारिक प्रवृत्तियां तथा नव-निबन्ध	परशुराम चतुर्वेदी	३.००
नव निबन्ध	,,	२.५०
भाषा विज्ञान और हिन्दी	डॉ० सरयूप्रसाद	४.००

राजनीति, नागरिक शास्त्र

पार्लमेण्टरी सरकार (इंगलैण्ड)	विश्वनाथ राय
नागरिक और नागरिकता	शुभदा तेलंग

कविता

भग्नमूर्ति :	'अनिल' (साहित्य अकादेमी प्रकाशन)
यायावर	रामबहादुर सिंह 'मुक्त'
प्रेयस	सुधीन्द्र
जीवन की लहरें	ब्रजमोहन गुप्त

संस्कृति, लोक-साहित्य

प्राचीन भारतीय मनोरंजन :	मन्मथराय
विश्वकवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर :	इलाचन्द्र जोशी
बाजत आवे ढोल :	देवेन्द्र सत्यार्थी अभी अप्राप्य
हमारी नाट्य परम्परा	श्रीकृष्णदास

धार्मिक

सागर सेतु :	राजेन्द्र शर्मा

आत्मकथा, जीवन-चरित्र

चाँद सूरज के बीरन :	देवेन्द्र सत्यार्थी
लोकमान्य तिलक :	भीमराव गोपाल देशपाण्डे

किशोरोपयोगी, प्रौढ़ोपयोगी

आदर्श माता-पिता :	सावित्रीदेवी वर्मा
कैसे पकायें, क्या खायें :	,, ,,
बीमार की सेवा :	डॉ० इन्द्रसेन वर्मा
पशु से मानव	श्रीवास्तव, उदयन
अंगूरों का गुच्छा	रमापति शुक्ल

राजकमल प्रकाशन प्रा० लि०

१५–ए, महात्मा गांधी मार्ग,
इलाहाबाद-१

हिमालय हाउस, हार्नबी रोड,
बम्बई-१

साइंस कालेज के सामने
पटना-६

४२७, मिएट स्ट्रीट,
मद्रास-१

८, फ़ैज बाजार,
दिल्ली-७

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

—गोपालशरणसिंह : **ग्रामिका** : प्रयाग, इण्डियन प्रेस लि०, १९५१, पृ० १२४, रॉ०, ३ रु०, उ० प्र०, (५२-५३)।

१९३९ ई० के बाद की अपनी ५७ रचनाओं का संग्रह।

—गोपालशरण सिंह, (मू० ले० पुरुषोत्तमदास टंडन) : **जगदालोक** : प्रयाग, इंडियन प्रेस लि०, १९५२, पृ० ३४१, डि०, ४'५० रु०, उ० प्र०, (५२-५३) तथा वि० प्र०, (५३-५४)।

महात्मा गांधीजी के जीवन और उनकी साधना पर आधारित २० सर्गों का एक महाकाव्य, २१ पृष्ठ की भूमिका।

—चुन्नीलाल 'शेष' : **सूर के सौ कूट** : वाराणसी, हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, २०१३ वि०, पृ० २६८, डि०, ५ रु०, उ० प्र०, (५६-५७)।

सूरदासजी के १०० कूट पद और उनकी व्याख्या। ४२ पृष्ठों की भूमिका।

—जगतसिंह सेंगर : **किसान सतसई** : उ० प्र०, (५०)।

—जगदीश गुप्त (डॉ०) : **नाव के पाँव** : गोरखपुर, विश्वविद्यालय प्रकाशन, १९५५, पृ० ७८, डि०, (सचित्र), २'५० रु०, उ० प्र०, (५६)।

लेखक की नवीन और प्राचीन ५७ कविताओं का संग्रह। नई कविता का मॉडल।

—जगन्नाथप्रसाद मिलिन्द : **बलि पथ के गीत** : दिल्ली, आत्माराम एण्ड सन्स, १९५०, डि०, ४ रु०, उ० प्र०, (५२)।

११ शीर्षकों के अन्तर्गत कवि के ४० गीतों का संग्रह।

—जयशंकर त्रिपाठी : **आंजनेय** : प्रयाग, साहित्यकार संघ, २०१३ वि०, पृ० ११२, डं० क्रा०, २ रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

५ सर्गों में विभक्त सांस्कृतिक काव्य।

—ताराचन्द 'हारीत' : **दमयन्ती** : दिल्ली, आत्माराम एण्ड सन्स, १९५७, पृ० ३०४, डि०, ८ रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

१४ सर्गों का महाकाव्य।

—त्रिलोकीनारायण दीक्षित (डॉ०) : **परिचयी साहित्य** : लखनऊ, विश्वविद्यालय हिन्दी प्रकाशन, १९५७, पृ० २५२, डि०, ५ रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

निर्गुणोपासक सन्तों और साधकों के जीवन-परिचय और उनके शिष्यों द्वारा लिखित पद्यों का संकलन।

—त्रिलोचन शास्त्री : **गुलाब और बुलबुल** : बनारस, पंकज प्रकाशन, १९५६, पृ० १३६, डं० क्रा०, २'२५ रु०, उ० प्र०, (५६-५७)।

कवि द्वारा १९५५-५६ में लिखित रूबाइयों और गजलों का संग्रह।

—त्रिलोचन शास्त्री : **दिगंत** : वाराणसी, जगत शंखधर, १९५७, पृ० ६८, डि०, २'५० रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

कवि के अपने गीतों का संग्रह।

—दुष्यन्त कुमार : **सूर्य का स्वागत** : दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, १९५७, पृ० ८४, डि०, ३ रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

कवि की अपनी कविताओं का संग्रह।

—द्वारकाप्रसाद मिश्र (मू० ले०), डॉ० राजेन्द्रप्रसाद (प्राक्कथन), विनयमोहन शर्मा, (टीका०) : **कृष्णायन** : (तीन खण्ड) नागपुर, प्रतिभा प्रकाशन, २००८ वि०, पृ० ४००, रॉ०, ६ रु०, हर० डाल० पु०।

श्रीकृष्णचन्द्रजी की जीवन-लीला पर एक महाकाव्य। (अवतरण काण्ड, मथुरा काण्ड, द्वारका काण्ड)

—नर्मदेश्वर चतुर्वेदी : **संगीतज्ञ कवियों की हिन्दी रचनाएँ** : प्रयाग, साहित्य भवन लि०, १९५५, पृ० १६०, डं० क्रा०, २'५० रु०, उ० प्र०, (५५-५६)।

पाँच भारतीय संगीतज्ञ कवियों की रचनाओं का संकलन, कवि-परिचय एवं हिन्दुस्तानी संगीत के विकास सहित।

—निरंकारदेव सेवक : **मुन्नू के गीत** : उ० प्र०, (५६-५७)।

—नीरज (गोपालदास सक्सेना) : **दर्द दिया है** : दिल्ली, आत्माराम एण्ड सन्स, १९५६, पृ० १२६, डि०, ४ रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

कवि के अपने ५ गीतों का संग्रह।

—नीलकण्ठ तिवारी : **भावना के फूल** : बम्बई, रमा प्रकाशन, १९५४, पृ० १२२, डि०, ३'५० रु०, उ० प्र०, (५५)।

कवि की अपनी ४३ रचनाओं का संकलन।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

—परमेश्वर 'द्विरेफ'(भूमिका नन्ददुलारे वाजपेयी) : **मीरा :** वाराणसी, हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, १९५७, पृ० २६४, डि०, ५ रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

१३ सर्गों का महाकाव्य।

—बलबीरसिंह 'रंग' : **संगम :** एटा, भारतीय प्रकाशन मन्दिर, १९५०, पृ० १९६, ड० क्रा०, ३ रु०, उ० प्र०, (५२)।

कवि के अपने ९८ गीतों का संकलन।

—बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' : **उर्मिला :** उ० प्र०, (५७-५८)।

—वाराणसी राममूर्ति 'रेणु' : **आंध्र देश के कबीर श्री वेमना :** प्रयाग, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, २००७ वि०, पृ० ११२, ड० क्रा०, १·७५ रु०, उ० प्र०, (५२-५३)।

संत वेमना की कुछ चुनी हुई रचनाएँ, विस्तृत भूमिका सहित।

—बालशौरि रेड्डि : **पंचामृत :** हैदराबाद, हिन्दी प्रचार सभा, १९५४, पृ० २२८, डि०, ४ रु०, के० स० द्वि० वि० पु० प्रति० में पुरस्कृत।

तेलुगु के प्राचीन पाँच प्रतिनिधि कवियों का संक्षिप्त परिचय तथा उनकी कुछ उत्कृष्ट रचनाओं का संकलन।

—भगीरथ मिश्र (डॉ०) : **तुलसी रसायन :** प्रयाग, साहित्य भवन लि०, १९५४, पृ० १९८, ड० क्रा०, २·५० रु०, उ० प्र०, (५४-५५)।

गोस्वामी तुलसीदास के युग, जीवनी और कृतित्व की समीक्षा तथा उनकी कृतियों से चुना हुआ संग्रह।

—मंझन (मू० ले०), डॉ० शिवगोपाल मिश्र (सम्पा०) : **मंझन कृत मधुमालती :** वाराणसी, हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, १९५७, पृ० २६८, (भू० ७०, मूल १६४, परि० ३४) डि०, ८ रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

सूफी कवि मंझन के प्रेमाख्यानक काव्य 'मधु मालती' का खोजपूर्ण सम्पादन (लेखक को एकडला (फतेहपुर) में प्राप्त सम्पूर्ण हस्तलिखित प्रति के तथा अन्य प्रतियों के आधार पर)।

—महेन्द्रसिंह 'प्रेमघन' : **भिक्षुणी :** बलिया, लेखक द्वारा, १९५२, पृ० १०४, ड० क्रा०, १·५० रु०, उ० प्र०, (५२-५३)।

यशोधरा के चरित्र पर आधारित काव्य।

—माखनलाल चतुर्वेदी : **युग चरण :** प्रयाग, भारती भण्डार, २०१३ वि०, पृ० ६५, डि०, २ रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

कवि के ३९ गीतों का संग्रह।

—माखनलाल चतुर्वेदी : **माता :** खण्डवा, पंकज प्रकाशन, २००८ वि०, पृ० १४९, डि०, ४·५० रु०, उ० प्र०, (५२-५३)।

कवि की ५६ रचनाओं का संकलन।

—माखनलाल चतुर्वेदी : **समर्पण :** इलाहाबाद, भारती भण्डार, २०१३ वि०, पृ० ११२, डि०, ३ रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

कवि की ८२ कविताओं का संग्रह।

—माखनलाल चतुर्वेदी : **हिमतरंगिनी :** प्रयाग, भारती भण्डार, २०१२ वि०, पृ० ५६, डि०, २·७५ रु०, सा० ए० (५५) तथा उ० प्र०, (५०)।

कवि के ५५ गीतों का संग्रह।

—माताप्रसाद गुप्त तथा अगरचन्द नाहटा : **वीसलदेव रास :** प्रयाग, हिन्दी परिषद् (प्रयाग वि० वि०), १९५३, पृ० ३१४, ड० क्रा०, ३·५० रु०, उ० प्र०, (५५)।

वीसलदेव रास का मूल पाठ संशोधित, एवं मूल की व्याख्या, ५२ पृष्ठों की भूमिका सहित।

—मैथिलीशरण गुप्त : **पृथ्वीपुत्र :** झाँसी, चिरगाँव, साहित्य सदन, २०१३ वि०, पृ० ६४, ड० क्रा०, ७५ न० पै०, उ० प्र०, (५२)।

तीन सम्वादों का पद्यात्मक संग्रह।

—मैथिलीशरण गुप्त : **प्रदक्षिणा :** झाँसी, चिरगाँव, साहित्य सदन, २०१४ वि०, पृ० ७६, ड० क्रा०, ६२ न० पै०, उ० प्र०, (५२)।

—मैथिलीशरण गुप्त : **हिडिम्बा :** झाँसी, चिरगाँव, साहित्य सदन, २००७ वि०, पृ० ४५, ड० क्रा०, ७५ न० पै०, उ० प्र०, (५२)।

—रघुनाथ प्रसाद 'साधक' : **साधना :** मुरादाबाद, कुमार प्रकाशन, १९५२, पृ० २१२, डि०, ४·५० रु०, उ० प्र०, (५२-५३)।

एक प्रबन्ध-काव्य।

—रघुवीरशरण 'मित्र' : **जलते तारे :** मेरठ, भारतीय साहित्य प्रकाशन, २०१० वि०, पृ० १०६, डि०, २·५० रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'मित्र' जी की कविताओं का नवीन संग्रह ।

—रघुवीरशरण 'मित्र' : **प्रतिध्वनि** : मेरठ, भारतीय साहित्य प्रकाशन, १९५१, पृ० १५२, डिं०, ३ रु०, उ० प्र०, (५३)।

कवि के अपने १०१ गीतों का संग्रह ।

—रघुवीरशरण 'मित्र' : **भूमि के भगवान** : मेरठ, भारतीय साहित्य प्रकाशन, ५७, पृ० ८०, ड० क्रा०, १.५० रु०, उ० प्र०, (५६-५७)।

लेखक की ९ बालोपयोगी कविताओं का संग्रह ।

—रघुवीरशरण 'मित्र' : **महापुरुष** : मेरठ, भारतीय साहित्य प्रकाशन, ५४वें कांग्रेस अधिवेशन के समय प्रकाशित, पृ० ३९, ड० क्रा०, (सचित्र), १ रु०, वि० प्र०, (५३)।

देश के १६ अग्रणी राजनीतिक नेताओं पर लिखी कविताओं का संग्रह ।

—रघुवीरशरण 'मित्र' : **सुनो बच्चो** : मेरठ, भारतीय साहित्य प्रकाशन, १९५७, पृ० ९६, ड० क्रा०, (सचित्र), १.५० रु०, उ० प्र०, (५३) तथा वि० प्र०, (५३)।

लेखक की बालोपयोगी कविताओं का संकलन ।

—रमा सिंह (कुमारी) : **समुद्रफेन** : लखनऊ, उदयन प्रकाशन, १९५७, पृ० ७६, डि०, ३ रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

कवयित्री की अपनी कविताओं का संग्रह ।

—रामकुमार चतुर्वेदी : **धूल का परिचय** : ग्वालियर, विद्या मन्दिर प्रकाशन, २०१२ वि०, पृ० ९२, ड० क्रा०, २ रु०, उ० प्र०, (५५-५६)।

कवि की अपनी २५ कविताओं का संकलन ।

—रामकुमार वर्मा (डॉ०) : **आकाश गंगा** : इलाहाबाद, रामनारायणलाल, पृ० ९०, डि०, १.५० रु०, उ० प्र०, (५२)।

अपनी कविताओं का संग्रह ।

—राजकुमारी सोंधी : **पथ के गीत** : वि० प्र०, (५५-५६)।

—रामधारीसिंह 'दिनकर' : **कुरुक्षेत्र** : पटना, अजन्ता प्रेस, १९५६, पृ० १४६, डि०, ३.५० रु०, के० स० प्र० बि० पु० प्रति० तथा उ० प्र०, (५०)।

सात सर्गों का एक महाकाव्य ।

—रामधारीसिंह 'दिनकर' : **नीलकुसुम** : पटना, उदयाचल, १९५६, पृ० १०६, डि०, ३ रु०, बि० रा० प०, (५५-५६)।

'दिनकर' जी की स्फुट कविताओं का संग्रह ।

—रामधारीसिंह 'दिनकर' : **मिर्च का मजा** : पटना, अजन्ता प्रेस, पृ० ३२, फु० स्के०, (सचित्र), ७५ न० पै०, के० स० वा० सा० प्रति०, (५४) तथा काशी ना० प्र० स०।

बालोपयोगी सात अपनी कहानियों का संग्रह ।

—रामधारीसिंह 'दिनकर' : **रश्मिरथी** : पटना, अजन्ता प्रेस, १९५२, पृ० १८५, रॉ०, ५ रु०, ना० प्र० सभा द्वारा द्विवेदी स्वर्ण-पदक प्रदत्त ।

सात सर्गों का काव्य ।

—रामनरेश पाण्डेय : **रश्मिरेखा** : उ० प्र०, (५२)।

—रामशंकर शुक्ल 'रसाल' (डॉ०) : **काव्य पुरुष** : प्रयाग, अग्रवाल प्रेस, १९५५, पृ० २३४, डि०, ७ रु०, उ० प्र०, (५६-५७)।

काव्योत्पत्ति पर काल्पनिक काव्य ।

—रामस्वरूप मिश्र : **कृष्णायन** : उ० प्र०, (५५-५६)।

—रामानन्द तिवारी 'भारती नन्दन' : **पार्वती** : कोटा, मंगल भवन, १९५५, पृ० ५६७, रॉ०, ७.५० रु०, हर० डा० पुर० (५८), के० स० तृ० वि० पु० प्रति० तथा उ० प्र०, (५६-५७)।

२७ सर्गों का महाकाव्य ।

—रामावतार पोद्दार 'अरुण' : **कालिदास** : बिहार (समस्तीपुर), किरण प्रकाशन, १९५६, पृ० १६४, डि०, ४ रु०, उ० प्र०, (५६-५७)।

नवसर्गों का एक महाकाव्य ।

—रामावतार पोद्दार 'अरुण' : **कोशा** : बिहार, समस्तीपुर, किरणकुञ्ज, पृ० १००, बि० रा० प०, (५२), काव्य ।

—रामावतार पोद्दार 'अरुण' : **गान्ध्या** : बिहार, समस्तीपुर, किरण प्रकाशन, १९५६, पृ० ९६, डि०, २ रु०, उ० प्र०, (५६-५७)।

१० सर्गों का एक काव्य ।

—रामावतार पोद्दार 'अरुण', बिहार, समस्तीपुर, किरणकुञ्ज, उ० प्र०, (५७-५८)।
: **अंगीता** : पृ० ६४, डि०, : **अशोकपुत्र** : पृ० ६४, डि०, : **आम्रपाली** : पृ० ६४, डि०, : **मुन्शी घनघोरलाल** : पृ० ७०, डि०, : **संगीता** : पृ० ६४, डि०।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

—रामावतार पोद्दार 'अरुण' : **विदेह** : बिहार, समस्तीपुर, किरणकुञ्ज, १९५४, पृ० ३१९, डि०, ८ रु०, उ० प्र०, (५५)।

१८ सर्गों का एक महाकाव्य।

—रामेश्वर शुक्ल 'अंचल' : **वर्षान्त के बादल** : प्रयाग, साहित्य भवन लि०, १९५७, पृ० ९२, डि०, ३ रु०, उ० प्र०, (५५)।

कवि के ५४ गीतों का संग्रह।

—रामेश्वरलाल खण्डेलवाल 'तरुण' : **हिमांचल** : मेरठ, भारतीय साहित्य प्रकाशन, १९५२, पृ० १०४, डि०, २.५० रु०, उ० प्र०, (५३)।

कवि की चुनी हुई ७४ कविताओं का संकलन।

—रूपनारायण त्रिपाठी : **माटी की मुसकान** : जौनपुर, विकास प्रकाशन, १९५४, पृ० ८०, डि०, १.५० रु०, वि० प्र०, (५४-५५)।

कवि की अपनी ६४ कविताओं का संग्रह।

—लक्ष्मीशंकर मिश्र 'निशंक' : **शतदल** : लखनऊ, नव साहित्य निकेतन, २००९ वि०, पृ० ९६, डं० का०, २ रु०, उ० प्र०, (५२-५३)।

कवि की अपनी मुक्तक रचनाओं का संकलन।

—लालधर त्रिपाठी 'प्रवासी' : **छत्रसाल** : बनारस, जनता साहित्य प्रकाशन, २०१२ वि०, पृ० ३३२, डि०, ६ रु०, उ० प्र०, (५५-५६)।

एक महाकाव्य।

—लालरुद्रनाथसिंह : **सौमित्र विजय** : उ० प्र०, (५५-५६)।

—वासुदेवशरण अग्रवाल : **पद्मावत संजीवन भाष्य** : झाँसी, चिरगांव, साहित्य सदन, २०१२ वि०, पृ० ७८२, रॉ०, १५ रु०, सा० एके०, (५६)।

मलिक मुहम्मद जायसी कृत 'पद्मावत महाकाव्य' मूल और संजीवनी व्याख्या। प्रारम्भ में ७० पृष्ठों की विद्वत्तापूर्ण व्याख्या सहित।

—विद्याधर महाजन (स्व०) : **श्री गांधीचरित मानस** : इलाहाबाद, हिन्दी भवन, १९५४, पृ० २२०, डि०, ५.६२ रु०, उ० प्र०, (५५)।

चिर-प्रतीक्षित पुस्तक का नया संस्करण छप गया !!

शिक्षण-विधियों की रूपरेखा

(ले० श्री रामखेलावन चौधरी, एम० ए०, एम० एड०)

मूल्य : रुपये ८.७५

प्राचीन-अर्वाचीन शिक्षण-विधियों की परिचायक अपने ढंग की अकेली पुस्तक। इसका पहला संस्करण तीन महीने में ही समाप्त हो गया। दूसरा संशोधित-परिवर्धित संस्करण अभी छपकर तैयार हुआ है।

पुस्तक की श्रेष्ठता से प्रभावित होकर बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद् ने '५७ का शिक्षण-सम्बन्धी १०००) का अखिल भारतीय पुरस्कार और ताम्रपत्र लेखक को २९ मार्च, १९५८ को प्रदान किया।

द्वितीय संस्करण की थोड़ी ही प्रतियाँ अब शेष हैं। अतः अपनी प्रति आज ही मँगा लें। मनीआर्डर से पूरा मूल्य पेशगी भेज देने पर डाक-व्यय नहीं लिया जायगा।

हिन्दी-साहित्य भण्डार, गंगाप्रसाद रोड, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गांधीजी के जीवन का काव्यमय वर्णन (रामायण की भाँति)।

—विद्यावती 'कोकिल' : **पुर्नमिलन** : इलाहाबाद, ज्योति प्रकाशन, १९५६, पृ० १०४, डं० क्रा०, १.७५ रु०, उ० प्र०, (५६-५७)।

कवयित्री के अपने ४२ गीतों का संग्रह।

—विद्यावती 'कोकिल' (श्रीमती) : **सुहागिन** : प्रयाग, ज्योति प्रकाशन, पृ० ९६, डं० क्रा०, २ रु०, उ० प्र०, (५२-५३)।

कवयित्री के अपने ४२ गीतों का संकलन।

—विद्यावती मिश्र (श्रीमती) : **सुवित** : लखनऊ, हिन्दी परिषद्, १९५७, पृ० ६४, डं० क्रा०, १ रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

संगीत रूपक के रूप में लिखी गई कवयित्री की १३ कविताओं का संग्रह।

—विराज : **वसन्त के फूल** : दिल्ली, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, १९५७, पृ० १३२, डं० क्रा०, ४ रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

कवि की अपनी रुबाइयों का संग्रह।

—शकुन्तला सक्सेना (कु०) : **अवकाश के क्षण** : आगरा, साहित्यरत्न भण्डार, पृ० ८०, ७५ न० पै०, उ० प्र०, तथा वि० प्र० से भी, (५२)।

अपनी २३ स्फुट कविताओं का संग्रह।

—शकुन्तला सरोठिया, (भूमिका ले० लक्ष्मीनारायण मिश्र) : **सुधि के स्वर** : कोटा, वेणीमाधव शर्मा, १९५६, पृ० १०४, डं० क्रा०, १.५० रु०, उ० प्र०, (५६-५७)।

—शम्भूनाथ सिंह : **मन्वन्तर** : काशी, जन साहित्य मण्डल, २००८ वि०, पृ० १०६, डं० क्रा०, २ रु०, उ० प्र०, (५२-५३)।

अपने १४ गीतों का संग्रह।

—शम्भूनाथ सिंह (डॉ०) : **माध्यम में** : वाराणसी, सहकारी कविता प्रकाशन, १९५७, पृ० ९६, डिं०, २.७५ रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

चार शीर्षकों के अन्तर्गत कवि के अपने गीतों का संग्रह।

—शान्ति (श्रीमती) : **रेखा** : लखनऊ, लक्ष्मी स्टोर्स, १९४७,

उर्दू के लोकप्रिय शायर

उनकी बेहतरीन ग़ज़लें, नज़्में, शेर, रुबाइयाँ पढ़िए !

प्रत्येक शायर पर अलग पुस्तक है, जिसमें उसकी चुनी हुई बेहतरीन शायरी के अलावा बड़ी ही रोचक शैली में उसकी जीवनी दी गई है। कठिन उर्दू शब्दों के अर्थ भी साथ ही दे दिए हैं ताकि आप पूरी तरह आज की उर्दू शायरी का लुत्फ़ उठा सकें। पुस्तकें सचित्र हैं और सजिल्द भी। आप इन पुस्तकों को अवश्य ही पसन्द करेंगे।

ग़ालिब	◈	जीवनी और संकलन	१।)
जोश मलीहाबादी	◈	"	१।।)
इक़बाल	◈	"	१।।)
साहिर लुधियानवी	◈	"	१।।)
फ़ैज़ अहमद फ़ैज़	◈	"	१।।)
सरदार जाफ़री	◈	"	१।।)
मजाज़	◈	"	१।।)

राजपाल एण्ड सन्ज़, कश्मीरी गेट, दिल्ली-६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पृ० ५७, डि०, १.५० रु०, हि० सा० स० सेक० महिला पुर०, (२००४ वि०)।

अपने ४३ गीतों का संग्रह।

—शिवचन्द्र नागर : **ऊर्मि** : प्रयाग, ओंकार प्रेस, २०१० वि०, पृ० १८३, ड० क्रा०, २ रु०, महा० शा० प०।

कवि के अपने गीतों का संकलन।

—शिवमंगल सिंह 'सुमन' : **विश्वास बढ़ता ही गया** : इलाहाबाद, सरस्वती प्रेस, १९५५, पृ० १०४, डि०, ३ रु०, वि० प्र०, (५७)।

अपनी कविताओं का संग्रह।

—शुकदेव दुबे : **पद्माकर कवि** : प्रयाग, साहित्य भवन लि०, २०१३ वि०, पृ० १४६, ड० क्रा०, २.५० रु०, वि० प्र०, (५६-५७), म० प्र०, (५७-५८)।

पद्माकर की चुनी हुई प्रतिनिधि रचनाओं का संग्रह, कवि के जीवन-वृत्त एवं संक्षिप्त आलोचना सहित।

—श्यामनारायण 'प्रसाद' : **झांसी की रानी** : बनारस, प्रकाश गृह, १९५५, पृ० ३०८, डि०, ४ रु०, उ० प्र०, (५५-५६)।

२२ हुंकारों का एक काव्य।

—श्यामनारायण पाण्डेय : **जौहर** : काशी, सरस्वती मन्दिर, २००२ वि०, पृ० १२४, डि०, (सचित्र), ३ रु०, ना० प्र० सभा से द्विवेदी स्वर्ण पदक प्रदत्त, (२००४ वि०)।

वीर-करुण-रससिक्त काव्य।

—श्यामनारायण पाण्डेय : **जय हनुमान** : उ० प्र०, (५६-५७)।

—श्यामसुन्दरलाल दीक्षित : **श्याम सन्देश** : आगरा, लोकायन, १९५१, पृ० ८०, ड० क्रा०, १.५० रु०, उ० प्र०, (५२)।

—श्रीराम शर्मा : **दक्षिणी का पद्य और गद्य** : हैदराबाद, हिन्दी प्रचार सभा, १९५४; पृ० ५२८, ड० क्रा०, १०.५० रु०, उ० प्र०, (५५-५६)।

दक्खिनी के प्रमुख कवियों एवं गद्य-लेखकों की रचनाओं के अंशों का संकलन, सम्पादक की ४१ पृष्ठों की अतिरिक्त भूमिका (निवेदन) सहित।

—सत्यनारायण पाण्डेय 'सत्य' : **काश्मीर विजय** : प्रयाग, इण्डियन प्रेस, २००६ वि०, पृ० ४५, ड० क्रा०, (सचित्र), १.५० रु०, उ० प्र०, (५२-५३)।

—सुमित्राकुमारी सिनहा (श्रीमती) : **आँगन के फूल** : वाराणसी, आराधना प्रकाशन, (५६-५७)।

लेखिका की बालोपयोगी कविताओं का संग्रह।

—सुमित्राकुमारी सिनहा : **बोलों के देवता** : उन्नाव, युग मन्दिर, १९५४, पृ० ५६, डि०, २.५० रु०, उ० प्र०, (५५)।

अपने ५१ गीतों का संग्रह।

—सुमित्रानन्दन पन्त : **स्वर्ण किरण** : इलाहाबाद, भारती भण्डार, २००४ वि०, पृ० १७७, डि०, ४ रु०, उ० प्र०, (५०)।

कवि के ३८ गीतों का संग्रह।

—सुमित्रानन्दन पन्त : **स्वर्णधूलि** : प्रयाग, भारती भण्डार, २००४ वि०, पृ० १६६, डि०, ५ रु०, उ० प्र०, (५०) तथा डा० पुर० भी।

८० गीतों का संकलन।

—सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' : **अर्चना** : प्रयाग, दारागंज, कला मन्दिर, १९५०, पृ० १११, ड० क्रा०, २.५० रु०, उ० प्र०, (५२-५३)।

कवि के नवीनतम गीतों का संग्रह।

—सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' : **आराधना** : प्रयाग, साहित्यकार संसद्, २०१० वि०, पृ० ९६, ड० क्रा०, २.५० रु०, उ० प्र०, (५२-५३)।

कवि के ९६ गीतों का संग्रह।

—सूर्यदेव मिश्र : **ध्रुव चरित** : बनारस, दीक्षित पब्लिशिंग हाउस, १९४६, पृ० १६७, ड० क्रा०, ३ रु०, ना० प्र० सभा, (२००२ वि०)।

१२ सर्गों का महाकाव्य, ६९ पृष्ठों की लालधर त्रिपाठी की समीक्षात्मक भूमिका सहित।

—सोमेश्वरसिंह (कुंवर) : **सरोज** : इलाहाबाद, इण्डियन प्रेस लि०, १९५३, पृ० १२०, २ रु०, वि० प्र०, (५४-५५)।

६१ गीतों का संग्रह।

—सोहनलाल द्विवेदी : **दूध बताशा** : प्रयाग, भारती भण्डार, १९९० वि०, पृ० ४६, (सचित्र), फु० स्के०, ७५ न० पै०, के० स० बाल० प्रति०, (५८)।

लेखक की बालोपयोगी कविताओं का संग्रह।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

—हरदयालुसिंह, (मू० ले० शुकदेवबिहारी मिश्र) : **रावण महाकाव्य** : दिल्ली, आत्माराम एण्ड सन्स, १९५२, पृ० २२८, डि०, ६ रु०, उ० प्र०, (५०)।

महर्षि वाल्मीकि प्रणीत आदि-काव्य के कथानक पर आधारित १७ सर्गों का एक महाकाव्य, कथासार सहित।

—हनुमन्त दयाल अवस्थी : **सीता सुधि** : प्रयाग, लेखक द्वारा, १९४८, पृ० १८६, डं० क्रा०, उ० प्र०, (५२)।

राम-भक्ति का सोलह सर्गों का एक महाकाव्य।

—हरिकृष्ण 'प्रेमी' : **रूप दर्शन** : दिल्ली, आत्माराम एण्ड सन्स, १९५१, पृ० २६८, डि०, (सचित्र), ६ रु०, उ० प्र०, (५२)।

कवि के १३४ गीतों का संग्रह।

—हरिवंशराय 'बच्चन' : **मिलन यामिनी** : काशी, भारतीय ज्ञानपीठ, १९५०, पृ० २२९, डं० क्रा०, ४ रु०, उ० प्र०, (५२)।

'बच्चन' जी की ३३ कविताओं का संग्रह।

काव्य, अनूदित

—गोविन्दराय जैन (अनु०) : **कुरल काव्य** : झांसी, महरौनी, लेखक द्वारा, १९५४, पृ० ३२४, डि०, १० रु०, उ० प्र०, (५५)।

श्री इलाचार्य लिखित तमिल के काव्य का संस्कृत श्लोकों में हिन्दी अर्थसहित अनुवाद।

—जयदेव, महाकवि (मू० ले०), (अनु० विनयमोहन शर्मा) : **गीत गोविन्द** : दिल्ली, आत्माराम एण्ड सन्स, १९५५, पृ० १५०, डि०, (सचित्र), ६ रु०, के० स० तृ० वि० पु० प्रति।

महाकवि जयदेव के प्रसिद्ध ग्रन्थ 'गीत गोविन्द' का सचित्र हिन्दी-रूपान्तर मूलसहित।

—रघुवंशलाल गुप्ता : **रवि बाबू के कुछ गीत** : प्रयाग, इण्डियन प्रेस लि०, १९५०, पृ० ६८, रॉ०, २·५० रु०, के० स० प्र० वि० पु० प्रति०।

स्व० रवीन्द्रनाथ टैगोर के कुछ गीतों का सरल और सुबोध पद्यात्मक हिन्दी अनुवाद।

—कन्हैयालाल पोद्दार (सेठ) : **हिन्दी मेघदूत विमर्श** : प्रयाग, लीडर प्रेस, १९२१, पृ० २८१, डं० क्रा०, १·५० रु०, के० स० प्र० वि० पु० प्रति०।

महाकवि कालिदास प्रणीत मूल संस्कृत और समश्लोकी पद्य तथा गद्य हिन्दी भाषानुवाद सहित।

हिन्दी नाटक

—उदयशंकर भट्ट : **नया समाज** : दिल्ली, मसिजीवी प्रकाशन, (वितरक राजकमल प्रकाशन), पृ० ७३, डं० का०, १·५० रु०, उ० प्र०, (५५-५६)।

नया वस्तु-निर्देश, छब्बीस घण्टे का कार्यक्रम, छः दृश्यों का एक नाटक।

—उदयशंकर भट्ट : **शक विजय** : दिल्ली, मसिजीवी प्रकाशन, १९५५, पृ० ११३, डं० क्रा०, १·७५ रु०, उ० प्र०, (५२)।

शक-विजय पर ऐतिहासिक नाटक।

—कमलाकान्त पाठक : **अभागिन** : प्रयाग, श्रीरघुनाथ साहित्य कुटीर, १९५७, पृ० १२६, डं० क्रा०, ९४ न० पै०, उ० प्र०, (५६-५७)।

स्त्री-समाज की जटिल समस्याओं का सिंहावलोकन एवं समाधान प्रस्तुत करने वाला सामाजिक नाटक।

—कमलाकान्त पाठक : **अस्पृश्य** : लल्ली प्रकाशन, १९५७, पृ० १३६, डं० क्रा०, २·५० रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

हरिजनोत्थान सम्बन्धी सामाजिक नाटक।

—कासिम अली (सैयद) : **बाल एकांकी** : वि०प्र०, (५४-५५)।

—कासिम अली (सैयद) : **देशभक्त नर्तकी** : हावड़ा, ए० आर० मल्लिक (वितरक राजपाल एण्ड सन्स), पृ० १७६, डं० क्रा०, ३ रु०, उ० प्र०, (५२)।

देशभक्ति की भावना से भरपूर ऐतिहासिक नाटक।

—चतुर्भुज : **मीर कासिम** : बनारस, उपन्यास बहार आफिस, २००८ वि०, पृ० ६१, डं० क्रा०, १·७५ रु०, उ० प्र०, (५२)।

ऐतिहासिक नाटक।

—चन्द्रगुप्त विद्यालंकार : **देव और दानव** : दिल्ली, अत्तरचन्द कपूर एण्ड सन्स, १९५५, पृ० १५३, डं० क्रा०, २ रु०, उ० प्र०, (५५-५६), नाटक।

—जगदीशचन्द्र माथुर : **कोणार्क** : इलाहाबाद, भारती भण्डार, २०१४ वि०, पृ० ११५, डं० क्रा०, १·५० रु०, बि० रा० प०, (५४-५५)।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छात्रहितकारी पुस्तकमाला

की अनुपम पुस्तकें

काव्य व आलोचना

कवियों की झाँकी [सम्पादक प्रि० केदारनाथ गुप्त] ५)
कवित्त सरसी [सेनापति] १)
विद्यापति पदामृत [विद्यापति] ।।।)
तुलसीदल [डॉ०उदयनारायण तिवारी] १।)
सन्तों की वाणी (भजन संग्रह) [सं० प्रि० केदारनाथ गुप्त] ।।=)
गुप्तजी की काव्य धारा ['गिरीश'] ४)
कवि प्रसाद की काव्य साधना [श्री रामनाथ 'सुमन'] ३।।)
हिन्दी के निर्माता [गौतम यजुर्वेदीय] १।)

गल्प, उपन्यास एवं नाटक

वीर राजपूत [श्री नाथमाधव] १।।)
पतिता की साधना [भगवतीप्रसाद वाजपेयी] २।।)
अवध की नवाबी [चण्डी चरण सेन] २।।)
कोलतार [मिर्जा अजीमबेग चगताई] २।।)
शरीर बीबी [" "] १।।।)
चगताई की कहानियाँ १ भा० [" "] १।।)
" " २ भा० [" "] १।।)
फुलबूट " [" "] १।)
लेफ्टिनेन्ट [" "] १।।।)
विसर्जन [मोहनलाल महतो 'वियोगी'] २)
फरार [" "] २।।)
एकाकी [" "] ३)
पाटलिपुत्रक [कवीन्दु बेनीप्रसाद वाजपेयी 'मंजुल'] २)
बन्धन मुक्ति [रामजीलाल 'सहायक'] २)
शकारि विक्रमादित्य [राजीवलोचन अग्निहोत्री] २)
पढ़ो और हँसो [अ० जहूर बख्श] १)
मिरजा जंगी [अजीमबेग चगताई] १)
हँसती बोलती तस्वीरें [शौकत थानवी] १।।)
अफजल वध (ऐतिहासिक नाटक) [मोहनलाल महतो] १।)
पंचशर (एकांकी नाटक) [विद्यानिवास मिश्र] १।।)

छात्रहितकारी पुस्तकमाला, दारागंज, प्रयाग

एक अभिनेय नाटक, परिशिष्ट में दो महत्त्वपूर्ण निबन्ध।

—जगन्नाथप्रसाद मिलिन्द : **समर्पण** : दिल्ली, आत्माराम एण्ड सन्स, १९५०, पृ० १२७, ड० क्रा०, २ रु०, उ० प्र०, (५२)।

सामाजिक नाटक, नाटककार की १२ पृष्ठों की भूमिका सहित।

—जैनेन्द्रकुमार (अनु०) : **पाप और प्रकाश** : दिल्ली, पूर्वोदय प्रकाशन, १९५६, पृ० १४८, ड० क्रा०, ३ रु०, के० स० द्वि० वि० पु० प्रति०।

टालस्टाय के नाटक 'दि पॉवर ऑफ डार्कनेस' का रूपान्तर।

—देवराज 'दिनेश' : **यशस्वी भोज** : दिल्ली, आत्माराम एण्ड सन्स, १९५५, ड० क्रा०, २ रु०, उ०प्र०, (५६-५७)।

ऐतिहासिक नाटक।

—बनारसीदास 'करुणाकर' : **सिद्धार्थ बुद्ध** : दिल्ली, भारती साहित्य मन्दिर, १९५५, पृ० १४८, ड० क्रा०, २ रु०, उ० प्र०, (५५-५६)।

सांस्कृतिक नाटक।

—मन्मथनाथ गुप्त : **बाल रंगमंच** : उ० प्र०, (५२-५३)।

—रघुवीरशरण मित्र : **वीर बालक** : मेरठ, भारतीय साहित्य प्रकाशन, १९५७, पृ० ६८, ड० क्रा०, १ रु०, उ० प्र०, (५३) एवं वि० प्र० से भी।

बालोपयोगी ऐतिहासिक नाटक।

—रामबालक शास्त्री : **महामना** : वाराणसी नन्दकिशोर एण्ड ब्रदर्स, २०१३ वि०, पृ० ६८, ड० क्रा०, १ रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

—लक्ष्मीनारायण मिश्र : **कवि भारतेन्दु** : वाराणसी, हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, १९५५, पृ० १३६, ड० क्रा०, २ रु०, उ० प्र०, (५५-५६)।

भारतेन्दुजी के व्यक्तित्व तथा तत्कालीन वातावरण का बोधक नाटक।

—लक्ष्मीनारायण मिश्र : **चक्रव्यूह** : प्रयाग, कोशाम्बी प्रकाशन, १९५७, पृ० १४४, ड० क्रा०, १·७५ रु०, उ० प्र०, (५७)।

संस्कृति-प्रधान पौराणिक नाटक।

—लक्ष्मीनारायण मिश्र : **दशाश्वमेध** : इलाहाबाद, हिन्दी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भवन, १९५०, पृ० १२२, डि० क्रा०, १·५० रु०, उ० प्र०, (५२) तथा वि० प्र०, (५२-५३)।

संस्कृति-प्रधान ऐतिहासिक नाटक।

—लक्ष्मीनारायण मिश्र : **नारद की वीणा** : प्रयाग, किताब महल, १९४६, पृ० १३३, डि० क्रा०, २ रु० उ० प्र०, (५१)।

सांस्कृतिक ऐतिहासिक नाटक।

—लक्ष्मीनारायण मिश्र : **वत्सराज** : इलाहाबाद, हिन्दी भवन, १९५२, पृ० १४८, डि० क्रा०, १·७५ रु०, उ० प्र०, (५२)।

संस्कृति-प्रधान ऐतिहासिक नाटक।

—लक्ष्मीनारायण मिश्र : **वैशाली में वसंत** : उ० प्र०, (५६-५७)।

—लक्ष्मीनारायणलाल : **अन्धा कुआँ** : प्रयाग, भारती भण्डार, २०१२ वि०, पृ० १५८, डि० क्रा०, २·५० रु०, उ० प्र०, (५६-५७)।

ग्रामीण सामाजिकता का दुखान्त नाटक, तीन घण्टे में अभिनेय।

—विनोद रस्तोगी : **नए हाथ** : दिल्ली, आत्माराम एण्ड सन्स, पृ० ११४, डि० क्रा०, २ रु०, थियेटर सेन्ट्रल कलकत्ता द्वारा आयोजित अ० भार० हिन्दी नाटक प्रति०, (५७)।

एक अभिनेय नाटक।

—मैक्सिम गोर्की, (अनु० शिवदानसिंह चौहान तथा श्रीमती विजय चौहान) : **तीन पीढ़ी** : बनारस, सरस्वती प्रेस, पृ० ३७०, डि० क्रा०, ५ रु०, के० स० द्वि० वि० पु० प्रति० में पुरस्कृत।

गोर्की के प्रसिद्ध उपन्यास Artamonovs का अनुवाद जिसमें पूँजीपति की तीन पीढ़ियों का चित्रण है।

—शील : **किसान** : (मूल नाम 'जमीन'), कानपुर, संस्कार प्रकाशन, १९५७, पृ० १०४, डि० क्रा०, २·५० रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

पृथ्वी थिएटर्स द्वारा सफलतापूर्वक अभिनीत एक दृश्य और तीन अंकों का सामाजिक नाटक, जिसमें भारत के ग्रामीण जीवन की एक सशक्त झांकी प्रस्तुत की गई है।

—श्रीकृष्णनाथ मेहता : **धरती के जलजले** : महा० शा०।

हमारे अनमोल हिन्दी प्रकाशन

(हमारी पुस्तकों को देखकर लोग कह उठते हैं कि ये हिन्दी में अपने विषय की बेजोड़ और अद्वितीय हैं।)

(१) हिन्दी के श्रेष्ठ साहित्यकार—लेखक सिंहासन राय 'सिद्धेश'। इसमें हिन्दी के सर्वश्रेष्ठ साहित्यकारों की प्रामाणिक जीवनी, उनकी साहित्य-सेवा और भाषा-शैली का सुन्दर वर्णन है। मूल्य २॥)

(२) वादविवाद और व्याख्यान प्रवेशिका—लेखक तिवारी और राय। इसमें हाईस्कूलों और कॉलेजों में होने वाले वादविवाद (पक्ष और विपक्ष) और व्याख्यान-विषयों का ओजपूर्ण आकर्षक शैली में वर्णन है। मूल्य ३) मात्र

(३) निबन्ध-भारती—लेखक प्रो० 'सिद्धेश।' हाईस्कूलों और हायर सेकण्ड्री स्कूलों की उच्च कक्षाओं के छात्रों के लिए हिन्दी निबन्ध की सर्वश्रेष्ठ पुस्तक। आधुनिक विषयों पर निबन्ध। मूल्य ३)

(४) आर्थिक और व्यापारिक निबन्ध—लेखक प्रोफेसर रूपनारायण उपाध्याय एम० ए०। कालेज के छात्रों के लिए। मूल्य ४)

(५) निबन्धालोक—लेखक प्रो० 'कमलेश'। मौलिक साहित्यिक निबन्ध। मूल्य ३)

प्राप्ति-स्थान

आदर्श पुस्तक भण्डार

५८, अपर चितपुर रोड, कलकत्ता-७

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

—सर्वदानन्द वर्मा : **चेतसिंह** : इलाहाबाद, किताब महल, १९५७, पृ० ६६, ड० क्रा०, १·२५ रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

इतिहास-प्रसिद्ध बनारस-नरेश राजा चेतसिंह के जीवन पर आधारित एक ऐतिहासिक नाटक, जो रेडियो तथा रंगमंच दोनों पर सफलतापूर्वक अभिनीत हो चुका है।

—सुदर्शन : **सिकन्दर** : बम्बई, वोरा एण्ड कम्पनी लि०, १९४७, पृ० १४३, ड० क्रा०, १·५० रु०, के० स० प्र० वि० पु० प्रति० में पुरस्कृत।

सिकन्दर महान् के भारत-आक्रमण की कहानी को मूर्त रूप प्रदान करने वाला एक ऐतिहासिक नाटक, जो मूल रूप से चलचित्र-निर्माण के हेतु मिनर्वा मुवीटोन, बम्बई के लिए लिखा गया था।

—हरिकृष्ण 'प्रेमी' : **उद्धार** : दिल्ली, आत्माराम एण्ड सन्स, १९५६, पृ० १२०, ड० क्रा०, २ रु०, उ० प्र०, (५२)।

ऐतिहासिक नाटक।

—हरिकृष्ण प्रेमी : **कीर्ति-स्तंभ** : राजपाल एण्ड सन्स, १९५७, पृ० २००, ड० क्रा०, २·५० रु०, उ० प्र०, (५६-५७)।

ऐतिहासिक नाटक।

—हरिकृष्ण 'प्रेमी' : **विषपान** : दिल्ली, आत्माराम एण्ड सन्स, १९५१, पृ० १०७, ड० क्रा०, २ रु०, बंगाल हिन्दी मण्डल द्वारा पुरस्कृत।

ऐतिहासिक नाटक।

—हरिकृष्ण 'प्रेमी' : **शपथ** : दिल्ली, आत्माराम एण्ड सन्स, १९५४, पृ० १६०, ड० क्रा०, २·५० रु०, उ० प्र०, (५२)।

सांस्कृतिक नाटक।

—हरिकृष्ण 'प्रेमी' : **स्वप्न भंग** : दिल्ली, आत्माराम एण्ड सन्स, १९५३, पृ० १२८, ड० क्रा०, २ रु०, हिं० सा० स० द्वारा १९९८ वि० में रत्नकुमारी पुरस्कार प्राप्त।

ऐतिहासिक नाटक।

हिन्दी नाटक-एकांकी

—उदयशंकर भट्ट : **परदे के पीछे** : दिल्ली, मसिजीवी प्रकाशन, पृ० १७८, ड० क्रा०, २·५० रु०. उ० प्र०, (५५-५६)।

आठ एकांकी नाटकों का संकलन।

—उपेन्द्रनाथ 'अश्क' : **चरवाहे** : प्रयाग, नीलाभ प्रकाशन, १९४७, पृ० २०४, ड० क्रा०, ३ रु०, उ० प्र०, (५०)।

सात सांकेतिक एकांकी। प्रारम्भ में २८ पृष्ठों का 'चरवाहे एक अध्ययन' नामक निबन्ध।

—गंगाधर शुक्ल : **सुबह होती है शाम होती है** : कलकत्ता, बंगीय हिन्दी परिषद्, १९५७, पृ० २२१, डि०, ३·७५ रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

दैनिक पारिवारिक जीवन के सजीव चित्र प्रस्तुत करने वाले १४ एकांकियों का संग्रह, जो परस्पर सम्बद्ध होते हुए अपने-आप में पूर्ण भी हैं।

—चन्द्र प्रकाश सिंह (कुँवर) : **कविकुल गुरु** : लखनऊ, सेवा प्रकाशन, २०१२ वि०, पृ० १७७, ड० क्रा०, ३ रु०, उ० प्र०, (५५-५६)।

लेखक के अपने ८ एकांकी नाटकों का संकलन।

—भारत भूषण अग्रवाल : **और खाई बढ़ती गई** : वाराणसी, भारतीय ज्ञानपीठ, १९५६, पृ० १५०, ड० क्रा०, २·५० रु०, उ० प्र०, (५६-५७)।

ऐतिहासिक, काल्पनिक, सामाजिक, व्यंग्य-प्रधान तथा विनोदपूर्ण आदि विभिन्न प्रकार के आठ अभिनेय रेडियो नाटकों का संग्रह।

—मोहनलाल गुप्त : **बच्चों की सरकार** : वाराणसी, मधु प्रकाशन, पृ० २४, (सचित्र), फु० स्के०, १ रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

३ से ६ वर्ष के बच्चों के लिए लघु एकांकी।

—रामकुमार वर्मा : **ऋतुराज (पूर्वार्द्ध)** : प्रयाग, सेन्ट्रल बुक डिपो, १९५६, पृ० १५२, ड० क्रा०, २·५० रु०, उ० प्र०, (५२-५३)।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के पांच एकांकी नाटकों का संकलन।

—रामकुमार वर्मा : **रजत रश्मि** : काशी, भारतीय ज्ञानपीठ, १९५२, पृ० १७४, ड० क्रा०, २·५० रु०, उ० प्र०, (५२-५३)।

५ एकांकी नाटकों का संग्रह।

—रामकुमार वर्मा : **रिमझिम** : इलाहाबाद, किताब महल,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उच्चकोटि का साहित्य

उ० प्र० राज्य द्वारा पुरस्कृत

क्या मैं अंदर आ सकता हूँ २॥)
ध्वनि और संगीत ४)
धूप के धान ३)
शरत् के नारी पात्र ४॥)
संस्कृत साहित्य में आयुर्वेद ३)
और खाई बढ़ती गई २॥)
कालिदास का भारत (१-२) ८)
खण्डहरों का वैभव ६)
खोज की पगडण्डियाँ ४)
चौलुक्य कुमारपाल ४)
शेरो-शायरी ८)
शेरो-सुखन (भाग १) ८)
वर्द्धमान ६)
मिलन-यामिनी ४)
संघर्ष के बाद ३)
पहला कहानीकार २॥)
द्विवेदी-पत्रावली २॥)
रजत-रश्मि २॥)
भारतीय ज्योतिष ६)
वैदिक साहित्य ६)
संस्मरण ३)
हमारे आराध्य ३)
रेखाचित्र ४)
कुछ मोती कुछ सीप २॥)
पचपन का फेर ३)
संस्कारों की राह २॥)
माटी हो गई सोना २)
बाजे पायलिया के घुँघरू ४)
संस्कृत का भाषा शास्त्रीय अध्ययन ५)

महत्त्वपूर्ण प्रकाशन

मुक्तिदूत ५)
गहरे पानी पैठ २॥)
भारतीय विचार-धारा २)
मेरे बापू २॥)
पंच प्रदीप २)
ज्ञान-गंगा ६)
आकाश के तारे : धरती के फूल २)
जैन जागरण के अग्रदूत ५)
रेडियो नाट्यशिल्प २॥)
जिन खोजा तिन पाइयाँ २॥)
हिन्दी जैन साहित्य परिशीलन (दो भाग) ५)
अतीत के कम्पन ३)
खेल खिलौने २)
हिन्दू विवाह में कन्यादान का स्थान १)
जिन्दगी मुस्कराई ४)
शेरो-सुखन (२,३,४,५) १२)
अध्यात्म-पदावली ४॥)
नये बादल २॥)
तीसरा नेत्र २॥)
रक्तराग ३)
काल के पंख ३)
शरत् की सूक्तियाँ २)
तरकश के तीर ३)
नये चित्र ३)
जय दोल ३)

१९५८ के नवीन प्रकाशन

शायरी के नये दौर (१)

शायरे-इन्क़िलाब 'जोश' मलीहाबादी की बग़ावत, इन्क़िलाब, मज़हब, अन्धविश्वास, देश-द्रोह आदि पर आग उगलती और मानवता, प्रकृति, सौन्दर्य, प्रेम आदि पर आत्म-विभोर कर देने वाली नज़्में और रूबाइयात, जोश का परिचय एवं उनकी शाइरी पर विवेचन।

मूल्य तीन रुपया

•

शायरी के नये मोड़ (१)

१९४६ से मार्च १९५८ तक की नवीन शायरी की गतिविधि का अध्ययन, भारत विभाजन, स्वराज्य-प्राप्ति, राष्ट्रपिता की शहादत, नरमेध-यज्ञ, जनताराज, देश-प्रेम, प्रेरणात्मक, नवीन चेतना, बज़्में-अदब परिच्छेदों में इस युग के सर्वश्रेष्ठ शायरों का कलाम।

मूल्य तीन रुपया

चेखव के तीन नाटक ४)
गरीब और अमीर पुस्तकें १)
लेखनी बेला ३)
मेरे कथा गुरु का कहना है २॥)
वाणी ४)
हरियाणा लोकमंच की कहानियाँ २॥)
बना रहे बनारस ३)
बारह एकांकी ४)
मोतियों वाले २॥)

भारतीय ज्ञानपीठ, दुर्गाकुण्ड रोड, वाराणसी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुप्रसिद्ध फिल्म-अभिनेता

बलराज साहनी

की साहित्य-जगत् को अनुपम भेंट

वसन्त क्या कहेगा ?

(कहानी-संग्रह)

मूल्य ३ ५०

कश्मीर पर कृश्नचन्दर ने भी बीसियों कहानियाँ लिखी हैं, रामानन्द सागर और दूसरों ने भी, लेकिन बलराज साहनी की 'वापसी व वापसी' उन सब पर भारी है। इसमें ज़रा-सी अत्युक्ति नहीं यदि मैं कहूँ कि हिन्दी की सर्वश्रेष्ठ पन्द्रह कहानियों में से एक वह है।

—उपेन्द्रनाथ 'अश्क'

बलराज भाई की कहानियों का बड़ा पुराना आशिक हूँ।

—अमृतलाल नागर

मुझे संग्रह की अधिकांश कहानियाँ और ललित लेख बहुत सुगठित, मंजे हुए और रुचिकर लगे।

—यशपाल

कहानियाँ रोचक हैं—भाषा में प्रवाह तथा लालित्य है। इनमें अपना विशेष वातावरण मिलता है।

—सुमित्रानन्दन पन्त

बलराज साहनी जी की पुस्तक 'वसन्त क्या कहेगा' बहुत सुन्दर बन पड़ी है; इसके लिए लेखक बधाई का पात्र है।

—हज़ारीप्रसाद द्विवेदी

हमारे अन्य प्रकाशन

नयी कविता के प्रतिमान : श्री लक्ष्मीकान्त वर्मा

नयी कविता की सहानुभूतिपूर्ण आलोचना—मूल्य ८)

हिन्दी की काव्य-शैलियों का विकास : डॉ० हरदेव बाहरी; एम० ए०, डी० लिट्०

काव्य-शैलियों के क्रमिक विकास पर अधिकारपूर्ण रचना—मूल्य ६)

ठेले पर हिमालय : डॉ० धर्मवीर भारती; एम० ए०, डी० फिल०

इस कृति से भारती के पाठक-वर्ग को उनके कला-व्यक्तित्व की विविध दिशाओं का परिचय भी मिल सकेगा।

मूल्य ५·५०

भारती प्रेस प्रकाशन

१०, दरभंगा रोड, इलाहाबाद-२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१९५५, पृ० ३२२, डि० क्रा०, ३·७५ रु०, के० स० तृ० पु० प्रति०, (५७-५८)।

सोलह हास्य-व्यंग्यपूर्ण, चुटीले और अभिनेय एकांकियों का संग्रह, जिसके आरम्भ में हास्य-एकांकियों पर भूमिका के रूप में लेखक का एक महत्त्वपूर्ण लेख भी संलग्न है।

—रामकुमार वर्मा : **सप्तकिरण** : बम्बई, नेशनल इन्फार्मेशन एण्ड पब्लिकेशन लि०, १९४७, पृ० १६७, डि० क्रा०, ३ रु०, उ० प्र०।

सात एकांकी नाटकों का संग्रह।

—लक्ष्मीनारायण मिश्र : **कावेरी में कमल** : वाराणसी, हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, पृ० १२७, डि० क्रा०, २ रु०, उ० प्र०, (५५-५६)।

लेखक के तीन एकांकी नाटकों का संकलन।

—लक्ष्मीनारायण मिश्र : **भगवान मनु तथा अन्य एकांकी** : दिल्ली, आत्माराम एण्ड सन्स, १९५७, पृ० १२८, २ रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

मनु, पराशर, याज्ञवल्क्य, कौटिल्य तथा शंकर, भारतीय संस्कृति के पाँच विधायकों के जीवन पर आधारित अभिनेय एकांकियों का संग्रह।

—विमला लूथरा (श्रीमती) : **५५ का फेर** : काशी, भारतीय ज्ञानपीठ, १९५७, पृ० २४०, डि० क्रा०, ३ रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

१५ एकांकी नाटकों का संकलन।

—सद्गुरुशरण अवस्थी : **नाटक और नायक, ६ भाग** : प्रयाग, इण्डियन प्रेस लि०, १९५०, उ० प्र०।

प्रथम भाग पृष्ठ, ९९,	१·२५ रु०,	डि० क्रा०	३ एकांकी
द्वितीय भाग, पृष्ठ ९७,	,,	,,	,,
तृतीय भाग, पृष्ठ ९१,	,,	,,	,,
चतुर्थ भाग, पृष्ठ १००,	,,	,,	,,
पंचम भाग, पृष्ठ ७०,	,,	,,	२ एकांकी
षष्ठ भाग, पृष्ठ ७५,	,,	,,	६ एकांकी

—सीताचरण दीक्षित : **आनन्द का राजपथ तथा अन्य लघु नाटक** : दिल्ली, आत्माराम एण्ड सन्स, १९५७, पृ० १२६, २ रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

शिक्षा-संस्थाओं के रंगमञ्च के लिए अत्यन्त उपयुक्त चार सफल संवादों का संग्रह।

हिन्दी-कथा-साहित्य, उपन्यास

—अनन्तगोपाल शेवड़े : **मृगजल** : प्रयाग, नीलाभ प्रकाशन, पृ० ३३४, डि० क्रा०, ५ रु०, महा० शा० सा० प०।

—अनन्तगोपाल शेवड़े : **ज्वालामुखी** : प्रयाग, नीलाभ प्रकाशन, १९५६, पृ० ३१५, डि० क्रा०, ४.५० रु०, उ० प्र०, (५६-५७)।

सन् बयालीस की भारतीय क्रान्ति की पृष्ठभूमि पर लिखित उपन्यास।

—अनूपलाल मण्डल : **रक्त और रंग** : पटना, अजन्ता प्रेस लि०, २०१२ वि०, पृ० ४१६, डि० क्रा०, ६ रु०, बि० रा० प०, (५६-५७)।

—अमृतलाल नागर : **बूँद और समुद्र** : इलाहाबाद, किताब महल, १९५६, पृ० ६०६, डि०, १२ रु०, उ० प्र०, (५६-५७)।

सामाजिक उपन्यास।

—अमृतराय : **नागफनी का देश** : इलाहाबाद, हंस प्रकाशन, १९५६, पृ० ९१, डि० क्रा०, १.५० रु०, उ० प्र०, (५६-५७)।

—अली अब्बास हुसैनी : **कोमल नगरी** : लखनऊ, मेरी पब्लिशर्स, १९५४, डि० क्रा०, २.५० रु०, उ० प्र०, (५५)।

उपन्यास।

—इलाचन्द्र जोशी : **जहाज का पंछी** : दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, १९५५, पृ० ५५२, डि० क्रा०, ७ रु०, के० स० तृ० वि० पु० प्रति० में पुरस्कृत।

मध्यवर्गीय नवयुवक के परिस्थिति प्रज्ञतादित जीवन पर आधारित उपन्यास।

—इलाचन्द्र जोशी : **सुबह के भूले** : इलाहाबाद, हिन्दी भवन, १९५४, पृ० ३२८, डि० क्रा०, ५ रु०, उ० प्र०, (५२-५३)।

—उदयशंकर भट्ट : **सागर, लहरें और मनुष्य** : नई दिल्ली, मसिजीवी प्रकाशन, पृ० ४१०, डि० क्रा०, ४.५० रु०, उ० प्र०, (५६-५७)।

—उपेन्द्रनाथ 'अश्क' : **बड़ी-बड़ी आंखें** : इलाहाबाद, नीलाभ प्रकाशन, १९५५, डि० क्रा०, ३.७५ रु०, के० स० तृ० वि० पु० प्रति० में पुरस्कृत।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशन से पूर्व आकाशवाणी से प्रसारित सामाजिक उपन्यास।

—उमाशंकर : **नाना फड़नवीस** : वाराणसी, हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, १९५६, पृ० ३१२, डं० क्रा०, ४ रु०, उ०प्र०, (५६-५७)।

ऐतिहासिक उपन्यास।

—ए० रमेश चौधरी 'आरिगपूडि' : **दूर के ढोल** : दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, १९५७, पृ० २५४, डं० क्रा०, ४ रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

—कंचनलता सब्बरवाल (कुमारी): **मूक तपस्वी** : जालंधर, हिन्दी भवन, १९५३, पृ० २८०, डं० क्रा०, ३.४४ रु०, उ० प्र०।

—कंचनलता सब्बरवाल (कुमारी) : **स्वतन्त्रता की ओर** : देहरादून, प्रतिभा प्रकाशन, पृ० २२२, डं० क्रा०, ३ रु०, उ० प्र०, (५२-५३)।

—कृष्णचन्द्र शर्मा : **भंवर जाल** : दिल्ली, नेशनल पब्लिशिंग

संस्कृत भाषा तथा व्याकरण के अध्ययन के लिए डॉ० कपिलदेव द्विवेदी, एम० ए०, डी० लिट्०, व्याकरणाचार्य द्वारा फ्रेंच तथा जर्मन पद्धति पर रचित दो अनुपम पुस्तकें

प्रारम्भिक रचनानुवाद कौमुदी १.००

रचनानुवाद कौमुदी ३.००

नई कविता के शिल्पी एवं नव-चित्रकला के चित्रकार डॉ० जगदीश गुप्त की शब्द-कला तथा चित्रकला की भावपूर्ण अभिव्यक्ति

नाव के पाँव

(उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा पुरस्कृत)

मूल्य : ढाई रुपया

वार्ता-शैली में लिखे गए गीतों के माधुर्य से पूर्ण लघु-निबन्ध

लहर-पंथी

लेखक—स्व० रामअधार सिंह

मूल्य : सवा रुपया

सुप्रसिद्ध नाटककार श्री सद्गुरुशरण अवस्थी की प्रसिद्ध नाट्यकृति

मुद्रिका

इस नाटक में एक से अनेक होने पर एक होने की प्रेरणा है। समाज-शिक्षण के लिए अति उपयोगी।

मूल्य : एक रुपया

प्रकाशक

विश्वविद्यालय प्रकाशन

नखास चौक, गोरखपुर

हाउस, १९५४, पृ० २०५, डं० क्रा०, ३.५० रु०, उ०प्र०, (५५)।

—गिरिधर गोपाल : **चाँदनी के खण्डहर** : इलाहाबाद, साहित्य भवन लि०, १९५४, पृ० १२८, डं० क्रा०, २ रु०, उ० प्र०, (५५)।

एक लघु उपन्यास।

—गिरिजाशंकर पांडेय : **चेतसिंह का सपना, दो भागों में** : वाराणसी, आनन्द पुस्तक भवन, १९५६, प्रथम भाग, पृ० ३३०, डं० क्रा०, ४ रु०, द्वितीय भाग, १९५६, पृ० २६८, डं० क्रा०, ४.५० रु०, उ० प्र०, (५६-५७)।

अठारहवीं शताब्दी के भारत का क्रान्तिदर्शी राजनीतिक उपन्यास।

—गोविन्दवल्लभ पन्त : **नौजवान** : लखनऊ, गंगा पुस्तक माला, २०११ वि०, पृ० ३२०, डं० क्रा०, ५ रु०, उ० प्र०, (५५)।

—गोविन्दवल्लभ पन्त : **जल समाधि** : दिल्ली, आत्माराम एण्ड सन्स, पृ० १९२, डं० क्रा०, ४ रु०, उ० प्र०, (५५-५६)।

—गोविन्दवल्लभ पन्त : **पर्णा** : दिल्ली, आत्माराम एण्ड सन्स, १९५५, पृ० २५६, डं० क्रा०, ४ रु०, उ० प्र०, (५६-५७)।

—गोविन्दसिंह : **१८५७** : वाराणसी, सोहनराम एण्ड सन्स, १९५७, पृ० ७१३, डं० क्रा०, १० रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

ऐतिहासिक उपन्यास।

—चतुरसेन (आचार्य) : **गोली** : दिल्ली, राजहंस प्रकाशन, १९५७, पृ० ३४६, डं० क्रा०, (सचित्र), ६.५० रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

—चतुरसेन शास्त्री : **वयं रक्षामः** : भागलपुर, शारदा प्रकाशन, १९५५, (पूर्वार्द्ध), पृ० ५४४, डं० क्रा०, ६ रु०, उ० प्र०, (५६-५७)।

अतीत रस का मौलिक उपन्यास।

(उत्तरार्द्ध), पृ० ५४५ से ७६७ तक, तथा परिशिष्ट इतिवृत्तात्मक पृ० ३०६, भाष्य।

—चतुरसेन शास्त्री : **सोमनाथ** : दिल्ली, ज्ञानधाम प्रतिष्ठान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शाहदरा), १९५७, पृ० ५४७, ड० क्रा०, ८ रु०, उ० प्र०, (५५)।

९८ पृष्ठों का आधारित विवेचना सहित।

—जगदीशचन्द्र मिश्र, (आचार्य) : **इन्दिरा** : इलाहाबाद, भारतीय सदन, १९५६, पृ० १६४, ड० क्रा०, २.५० रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

—जैनेन्द्रकुमार : **जयवर्द्धन** : दिल्ली, पूर्वोदय प्रकाशन, १९५६, पृ० ४४०, ड० क्रा०, ६ रु०, उ० प्र०, (५६-५७)।

—जैनेन्द्रकुमार : **सुखदा** : दिल्ली, पूर्वोदय प्रकाशन, १९५५, पृ० २०२, ड० क्रा०, ४ रु०, उ० प्र०, (५३)।

—दयानाथ झा : **कर्मपथ** : इलाहाबाद, हिन्दी भवन, २०१० वि०, पृ० १४९, ड० क्रा०, २ रु०, उ० प्र०, (५७)।

—देवराज : **बाहर-भीतर** : दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, १९५४, पृ० १३२, ड० क्रा०, २ रु०, उ० प्र०, (५५)।

—देवीदयाल चतुर्वेदी 'मस्त' : **प्रवाह** : इलाहाबाद, मनोरमा प्रकाशन, १९४९, पृ० १९६, ड० क्रा०, २.५० रु०, उ० प्र०, (५१)।

—देवेन्द्र सत्यार्थी : **ब्रह्मपुत्र** : नई दिल्ली, एशिया प्रकाशन, (वितरक राजकमल) १९५६, पृ० ४५२, ड० क्रा०, ७ रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

नदी-पुत्रों के लोक-जीवन का परिचयात्मक उपन्यास।

—नरेश मेहता : **डूबते मस्तूल** : दिल्ली, आत्माराम एण्ड सन्स, १९५४, पृ० २११, डि०, ४.५० रु०, उ० प्र०, (५५)।

—नागार्जुन : **बाबा बटेसरनाथ** : दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, १९५४, पृ० १४९, ड० क्रा०, २ रु०, उ० प्र०, (५५)।

—प्रतापनारायण श्रीवास्तव : **बयालीस** : बनारस, ज्ञान मण्डल लि०, २००५ वि०, पृ० २३८, डि०, ४ रु०, उ० प्र०, (५१)।

—प्रतापनारायण श्रीवास्तव : **बेकसी का मजार** : कानपुर, भारती प्रतिष्ठान, १९५६, पृ० ५५२, डि०, १० रु०, उ० प्र०, (५१)।

ऐतिहासिक उपन्यास।

—प्रतापनारायण श्रीवास्तव : **विसर्जन** : (बयालीस के बाद), दिल्ली, आत्माराम एण्ड सन्स, पृ० ४०५, डि०, ६ रु०, उ० प्र०, (५१)।

गांधीवादी विचारधारा पर आधारित उपन्यास।

—प्रतापनारायण श्रीवास्तव : **विषमुखी** : कानपुर, भारती प्रतिष्ठान, १९५७, पृ० ३२४, ड० क्रा०, ५ रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

—फणीश्वरनाथ 'रेणु' : **मैला आंचल** : दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, १९५७, पृ० ४२६, ड० क्रा०, ६ रु०, के० स० द्वि० वि० ग्रन्थ प्रति० में पुरस्कृत।

पूर्ण प्रतिष्ठा प्राप्त मौलिक सामाजिक उपन्यास।

—बच्चन सिंह : **लहरें और कगार** : जौनपुर, शारदा सदन, १९५६, पृ० ९७, ड० क्रा०, २ रु०, उ० प्र०, (५६-५७)।

लघु उपन्यास।

—भगवतीप्रसाद वाजपेयी : **धरती की सांस** : प्रयाग, रामनारायणलाल, १९५६, पृ० २५६, ड० क्रा०, २ रु०, उ० प्र०, (५६-५७)।

Please Visit or Ring 2595A.

GUPTA STORES

Wholesale & Retail Booksellers

Dhatkidih : **JAMSHEDPUR**

(Estd. 1950)

for

COLLEGE, SCHOOL & LIBRARY BOOKS

(in Hindi, English, Urdu & Bengali Languages)

Besides Text Books we also supply all sorts of Educational requirements such as Wall Maps, Globes, Black Board Instruments, Science apparatus, Block-materials & Government of India publications.

Orders for Medical and Engineering books are also executed by us promptly.

GUPTA STORES
JAMSHEDPUR

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

—भगवतीप्रसाद वाजपेयी : **निर्यातन** : इलाहाबाद, किताब महल, १९५५, पृ० १९०, डि० क्रा०, २ रु०, उ० प्र०, (५४-५५)।

एक लघु उपन्यास एवं चार कहानियों का एकत्र संकलन।

—भगवतीप्रसाद वाजपेयी : **भूदान** : दिल्ली, भारत भारती लि०, १९५५, पृ० ४११, डि० क्रा०, ६ रु०, उ० प्र०, (५५-५६)।

राष्ट्र के नव-निर्माण की भावनाओं से ओत-प्रोत एक सांस्कृतिक, सामाजिक और मौलिक उपन्यास।

—भगवतीप्रसाद वाजपेयी : **मनुष्य और देवता** : देहरादून, साहित्य सदन, १९५४, पृ० २५६, डि० क्रा०, ३.७५ रु० उ० प्र०, (५५)।

—भगवतीचरण वर्मा : **अपने खिलौने** : प्रयाग, भारती भण्डार, २०१४ वि०, पृ० २३४, डि० क्रा०, ३.५० रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

—भैरवप्रसाद गुप्त : **जंजीरें और नया आदमी** : इलाहाबाद, हंस प्रकाशन, १९५६, पृ० ३७२, डि० क्रा०, ५ रु०, उ० प्र०, (५६-५७)।

—मनु शर्मा : **तीन प्रश्न** : वाराणसी, कल्याणदास एण्ड ब्रदर्स, २०१४ वि०, पृ० २९६, डि० क्रा०, ५ रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

—मन्मथनाथ गुप्त : **बहता पानी** : प्रयाग, साहित्य भवन लिमिटेड, १९५५, पृ० २०८, डि०, ३.२५ रु०, उ० प्र०, (५५-५६)।

प्राक्पाकिस्तान-युग की एक राजनीतिक चेतना का उपन्यास।

—यज्ञदत्त शर्मा : **इन्सान** : दिल्ली, आत्माराम एण्ड सन्स, पृ० २४७, डि०, ४ रु०, उ० प्र०।

—यज्ञदत्त शर्मा : **परिवार** : दिल्ली, साहित्य प्रकाशन, १९५५, पृ० ३२६, डि० क्रा०, ५.५० रु०, उ० प्र०, (५६-५७)।

सामाजिक उपन्यास, १४ पृष्ठों की भूमिका सहित।

—यशपाल : **अमिता** : लखनऊ, विप्लव कार्यालय, १९५६, पृ० २३७, डि०, ५ रु०, उ० प्र०, (५६-५७)।

—यादवचन्द्र जैन : **ललितांगी** : दिल्ली, नारायणदास सहगल एण्ड सन्स, १९५७, पृ० २०५, डि० क्रा०, ३.७५ र उ० प्र०, (५७-५८)।

—रघुवीरशरण मित्र : **आग और पानी** : मेरठ, भारती साहित्य प्रकाशन, २०११ वि०, पृ० ५०८, डि० क्रा० ७ रु०, उ० प्र०, (५५)।

युग-निर्माता चाणक्य के चरित पर उपन्यास।

—रजनी पणिक्कर (श्रीमती) : **प्यासे बादल** : बनारस मोतीलाल बनारसीदास, पृ० २५६, डि० क्रा०, ५ र उ० प्र०, (५६-५७)।

कुछ आधुनिक सामाजिक समस्याओं का समाधान लेखिका की तीसरी कृति।

—रांगेय राघव (डॉ०) : **कब तक पुकारूँ** : दिल्ली, राज पाल एण्ड सन्स, १९५७, पृ० ६५८, डि० क्रा०, ८ रु उ० प्र०, (५७-५८)।

समाज के उपेक्षित वर्ग 'नट', का चित्रण, सामाजि उपन्यास।

—राजकुमार : **कश्मीर** : वाराणसी, हिन्दी प्रचारक पुस् कालय, १९५७, पृ० २५७, डि० क्रा०, ४ रु०, उ० प्र (५७-५८)।

—राजीवलोचन अग्निहोत्री : **शकारि विक्रमादित्य** : प्रयाग छात्रहितकारी पुस्तकमाला, २०१३ वि०, पृ० १६ डि० क्रा०, २ रु०, वि० प्र०, (५३-५४)।

ऐतिहासिक उपन्यास।

—राधाकृष्णप्रसाद : **संस्कारों की राह** : काशी, भारती ज्ञानपीठ, १९५७, पृ० १६८, डि० क्रा०, २.५० रु उ० प्र०, (५७-५८)।

एक सामाजिक लघु उपन्यास।

—रावी : **वीरभद्र की गोष्ठी** : आगरा, कैलाश प्रकाशन (वितरक राजकमल प्रका०), १९५६, पृ० २०८, डि० क्रा० ३.५० रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

चिन्तन-ग्रन्थ के दृष्टिकोण से सामाजिक चिन्तन की पृष्ठभूमि। इष्ट मित्रों के साथ एक वर्ष की बातचीत का विवरण औपन्यासिक रूप में।

—रामसागर मिश्र : **कर्म साधना** : दिल्ली, साहित्य प्रकाशन १९५४, पृ० २१६, डि० क्रा०, ४ रु०, वि० प्र० (५२-५३)।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशकों के लिए विशेष सूचनाएँ

पिछले वर्षों की तरह इस वर्ष भी बिहार राज्य सरकार की ओर से बिहार अधीक्षक द्वारा पुस्तकालयों, हाई स्कूलों और समाज-शिक्षा-केन्द्रों के लिए स्वीकृत पुस्तकों की एक अनुपूरक सूची प्रकाशित की जायगी। इस सूची में मुख्यतः १९५७ के बाद के प्रकाशन संकलित किये जायँगे, किन्तु पूर्व-प्रकाशित महत्त्वपूर्ण पुस्तकों के संकलन पर भी विचार किया जा सकेगा। प्रत्येक पुस्तक की दो-दो प्रतियाँ पुस्तकालय अधीक्षक, बिहार, सिन्हा लाइब्रेरी रोड, पटना-१ को ३१ अगस्त १९५८ तक पहुँच जानी चाहिएँ। प्रत्येक पुस्तक की एक प्रति पर निम्नलिखित सूचनाओं का एक लेबल लगा रहना चाहिए :

(क) लेखक अथवा अनुवादक का नाम
(ख) प्रकाशक का नाम और पता
(ग) पुस्तक का विषय
(घ) प्रकाशक का नाम और वर्ष
(ङ) जिस प्रकार के कागज़ पर पुस्तक छपी है उसका विवरण
(च) पुस्तक की पृष्ठ-संख्या
(छ) चित्रित है अथवा नहीं
(ज) पुस्तक का मूल्य
(झ) पुस्तक-प्राप्ति का पूरा पता

ऐसी पुस्तकें, जो मौलिक रचनाएँ नहीं हैं, वरन् नोट और गाइड के रूप में लिखी गई हैं तथा जो विश्वविद्यालयों, स्कूलों के पाठ्यक्रम को दृष्टि में रखकर लिखी गई हैं तथा जो केवल विद्यार्थियों के लिए उपयोगी हैं एवं ऐसी पुस्तकें, जो न्यूज़ प्रिंट पर छपी हैं, नहीं भेजी जानी चाहिएँ।

× × ×

उत्तर प्रदेश, एजूकेशन एक्सपेंशन ऑफिस, ३६ महात्मा गांधी मार्ग, इलाहाबाद के पास १९५८-५९ के लिए खरीद की जाने वाली पुस्तकों के चयन के उद्देश्य से प्रत्येक पुस्तक की ८-८ प्रतियाँ १५ अक्तूबर, १९५८ तक भेजी जा सकती हैं।

विभाग द्वारा पहले खरीदी जा चुकी पुस्तकों और १९५६ से पूर्व प्रकाशित पुस्तकों की नमूने की प्रतियाँ नहीं भेजनी चाहिएँ। प्रत्येक पुस्तक के विषय में निम्न निर्धारित विवरण पुस्तक के साथ भेजा जायगा।

(क) पुस्तक का नाम
(ख) विषय
(ग) भाषा
(घ) लेखक का नाम
(ङ) अनुवादक का नाम, यदि कोई हो
(च) प्रकाशक का नाम या उस व्यक्ति का नाम जिसको यदि पुस्तक चुनी जाय तो आर्डर भेजा जाय।
(छ) पूरा पता
(ज) पुस्तक का मूल्य
(झ) मूल्य पर कमीशन
(ञ) भेजने वाले का पता।

जिन पुस्तकों पर उनके प्रकाशन की तिथि का उल्लेख नहीं होगा, उन पर विचार नहीं किया जायगा और न न्यूज़ प्रिंट अथवा खराब कागज़ पर छपी हुई पुस्तकों पर।

× × ×

मुद्रकों एवं प्रकाशकों को सूचना दी जाती है कि १९५९-६० के वर्ष के लिए उत्तर प्रदेश के राजकीय प्रकाशनों के मुद्रण हेतु प्रार्थना-पत्र विशेष पदाधिकारी, पाठ्य-पुस्तक, उत्तर प्रदेश, ६ माल ऐवेन्यु, लखनऊ के कार्यालय में बुधवार १५ अक्तूबर, १९५८ से कार्यालय में १०-३० प्रातः से ४ बजे सायं तक लिये जायँगे। प्रार्थना-पत्र निर्धारित प्रपत्र पर ही भेजना चाहिए जो नकद दाम देकर अधीक्षक, मुद्रण एवं लेखक सामग्री, लखनऊ से प्राप्त हो सकता है। १९५९-६० के वर्ष में प्रवेशिका, बेसिक रीडर भाग १, २ और ३ कई रंगों में सुपर कलेंडर कागज़ पर मुद्रित होंगे।

× × ×

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ की ओर से सूचना

प्रकाशन व पुस्तक-व्यवसाय सेमीनार

अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ के तत्वावधान में 'प्रकाशन व पुस्तक व्यवसाय' पर एक सेमीनार २८ सितम्बर से ५ अक्टूबर तक दिल्ली में आयोजित किया जा रहा है। इसमें प्रकाशन व पुस्तक-व्यवसाय सम्बन्धी समस्याओं पर विचार होगा। इसमें केवल प्रकाशन व पुस्तक-व्यवसाय में काम करने वाले प्रमाणित व्यक्ति ही भाग ले सकेंगे जो इस व्यवसाय की समस्याओं से परिचित हों। प्रत्येक प्रस्तुत विषय पर पहले उस विषय में पूर्ण जानकारी रखने वाला व्यक्ति भाषण देगा अथवा लिखित विचार पढ़ेगा। तत्पश्चात् सभी लोग प्रश्नों द्वारा अपनी शंकाओं का समाधान करेंगे। अधिक समय प्रश्नोत्तरों को ही दिया जायगा। इसके अतिरिक्त चुने हुए प्रकाशन-गृह, प्रिंटिंग प्रैस, लाइब्रेरियों व शिक्षण-संस्थाओं को देखने का आयोजन होगा तथा व्यवसाय से सम्बन्धित प्रमुख व्यक्तियों से भेंट का अवसर भी मिलेगा। इसमें विचार प्रकट करने के लिए देश के प्रकाशन-व्यवसाय सम्बन्धी जानकारों का सहयोग प्राप्त किया जा रहा है। अतएव ऐसी आशा की जाती है कि प्रकाशन-कार्य को समझने के लिए यह सेमीनार अत्यन्त उपयोगी सिद्ध होगा। सम्भवतः कुछ विदेशी प्रकाशक भी इसमें अपने अनुभव बताने आ सकें।

जिन समस्याओं पर इस सेमीनार में विचार होगा उनमें निम्नलिखित उल्लेखनीय हैं :—

प्रकाशन-व्यवसाय का संगठन और उसकी रूपरेखा : प्रकाशक का प्रकाशन कार्यक्रम व पाण्डुलिपियों का चुनाव : पुस्तक का सम्पादन, मुद्रण व रंग-रूप : पुस्तकों की चित्रकारी : पुस्तकों का विज्ञापन : प्रकाशन-कार्य का आर्थिक लेखा-जोखा : प्रकाशक-पुस्तक-विक्रेता सम्बन्ध : पुस्तकों का थोक वितरण : कापीराइट : लेखक-प्रकाशक सम्बन्ध : कमीशन के निश्चित दर : पुस्तक-विक्रय-कला : बाल-साहित्य-सृजन : पुस्तकों का मूल्य और जिल्दबन्दी : प्रकाशन-गृह की आन्तरिक व्यवस्था : विभिन्न भाषाओं की पुस्तकों का सांझा प्रकाशन : प्रकाशक का लाइब्रेरियों की व सरकारी खरीद के प्रति दृष्टिकोण : विदेशों में पुस्तक-व्यवसाय।

अन्तिम दिन बैठक में एक विविध-वार्ता प्रश्नोत्तरी होगी। इसमें एक प्रकाशक, एक पुस्तक-विक्रेता व एक लेखक मंच पर बैठेंगे और अपने-अपने दृष्टिकोण से सभी प्रश्नों का उत्तर देंगे।

सेमीनार के सप्ताह में कुछेक मनोरंजन के कार्यक्रम दिल्ली से बाहर दर्शनीय स्थानों पर होंगे। २८ सितम्बर रविवार की प्रातः सेमीनार में भाग लेने वाले सभी व्यक्तियों का दिल्ली पहुँच जाना आवश्यक होगा। उसी दिन सायं सेमीनार का उद्घाटन समारोह होगा। प्रायः सभी वार्ताएँ राष्ट्रभाषा में होंगी। परन्तु सेमीनार में भाग लेने के लिए हिन्दी व अंग्रेजी दोनों भाषाएं आनी चाहिएँ। जो व्यक्ति दिल्ली में ठहरने का निजी प्रबन्ध करेंगे उनके लिए शुल्क २५ रुपये होगा और जो व्यक्ति संघ द्वारा आयोजित कैम्प में रहेंगे, उनका शुल्क ६० रुपये होगा। सभी लोगों के लिए अपराह्न चाय का प्रबन्ध संघ की ओर से होगा। जिस दिन विशेष सांघिक सहभोज होंगे उनकी सूचना पहले से दी जायगी।

सेमीनार में केवल एक सीमित संख्या में ही व्यक्ति भाग ले सकेंगे, अतएव जिनका शुल्क व प्रार्थना-पत्र पहले प्राप्त होंगे, वही लिये जा सकेंगे। प्रार्थना-पत्र के लिए अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ, कश्मीरी गेट, दिल्ली को लिखें। प्रार्थना-पत्र व शुल्क भेजने की अन्तिम तिथि २५ अगस्त है।

विस्तृत कार्यक्रम बाद में भेजा जायगा।

भवदीय,

दीनानाथ मल्होत्रा

प्रधान मन्त्री

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

—रामेश्वर शुक्ल 'अंचल' : मरु प्रदीप : प्रयाग, साहित्य भवन लि०, १९५१, पृ० २५३, ड० क्रा०, ४ रु०, उ० प्र०, (५३-५४)।

—लक्ष्मीचन्द्र वाजपेयी : मेघ पुष्प : आगरा, विनोद पुस्तक मन्दिर, १९५६, पृ० २१०, ड० क्रा०, ३.५० रु०, उ० प्र०, (५६-५७)।

—लक्ष्मीचन्द्र वाजपेयी : श्रीमती विश्वास : दिल्ली, साहित्य प्रकाशन, १९५५, पृ० २३८, ड० क्रा०, ४ रु०, उ० प्र०, (५५-५६)।

जीवन की नाना परिस्थितियों के भीतर से झाँकनेवाली एक समुज्ज्वल नारी का अध्ययन।

—लक्ष्मीनारायण लाल : काले फूल का पौधा : प्रयाग, भारती भण्डार, २०१२ वि०, पृ० २६४, ड० क्रा०, ३ रु०, उ० प्र०, (५६-५७)।

—विष्णु प्रभाकर : स्वप्नमयी : दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, १९५६, पृ० १३२, ड० क्रा०, २ रु०, उ० प्र०, (५६-५७)।

—विष्णु शर्मा : सूरज डूबने से उगने तक : इलाहाबाद, किताब महल, १९५६, पृ० १२०, ड० क्रा०, २.५० रु०, उ० प्र०, (५६-५७)।

—वृन्दावनलाल वर्मा : अचल मेरा कोई : झाँसी, मयूर प्रकाशन, १९५७, पृ० २६३, ड० क्रा०, ३.७५ रु०, उ० प्र०, (१९५१) तथा ना० प्र० सभा, काशी से भी पुरस्कृत।

—वृन्दावनलाल वर्मा : झाँसी की रानी : झाँसी, मयूर प्रकाशन, १९५६, पृ० ५१२, ड० क्रा०, ६ रु०, के० स० प्र० वि० पु० प्रति०, तथा हिन्दु० एके० (४८-४९) और उ० प्र० (५५-५६)।

ऐतिहासिक उपन्यास।

—वृन्दावनलाल वर्मा : मृगनयनी : झाँसी, मयूर प्रकाशन, १९५५, पृ० ४९४, ड० क्रा०, ५ रु०, उ० प्र०, (५१-५२)।

एक ऐतिहासिक उपन्यास।

हर० डा० (५१), साहित्यकार संसद, उ० प्र०, म० भा०, नागरी प्रचारिणी सभा, भारत सरकार, दिल्ली तथा हिन्दुस्तानी एकेडेमी द्वारा पुरस्कृत।

—शान्तिप्रिय द्विवेदी : दिगम्बर : वाराणसी, हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, १९५४, पृ० १४४, ड० क्रा०, २ रु०, उ० प्र०, (५५-५६)।

औपन्यासिक रेखांकन।

—शिवरानी विश्नोई (श्रीमती) : भीगी पलकें : वाराणसी, सरस्वती मन्दिर, १९५७, पृ ४०६, ड० क्रा०, ५.५० रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

उपन्यास।

—शीला शर्मा : एक था : दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, पृ० १४२, ड० क्रा०, २ रु०, उ० प्र०, (५५-५६) तथा वि० प्र०, (५५-५६)।

एक लघु उपन्यास।

—श्रीराम शर्मा 'राम' : जिन्दगी की राहें : दिल्ली, ओरियन्टल बुक डिपो, पृ० २३१, ड० क्रा०, ४ रु०, उ० प्र०, (५६-५७)।

परित्यक्त और घृणा योग्य बालकों पर आधारित उपन्यास।

—सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय' : शेखर एक जीवनी (दो भागों में) : बनारस, सरस्वती प्रेस, १९४४, पृष्ठ प्र० भाग २५३, द्वि० भाग २५९, डि०, मूल्य भाग १—५ रु०, भाग २—५ रु०, ना० प्र० सभा द्वारा बटुक प्रसाद पुरस्कार, सुधाकर पदक, (२००४ वि०)।

—सत्यकेतु विद्यालंकार : आचार्य चाणक्य : मसूरी, सरस्वती सदन, १९५६, पृ० ३५२, ड० क्रा०, ४ रु०, उ० प्र०, (५४)।

ऐतिहासिक उपन्यास, परिशिष्ट में कठिन शब्दों के अर्थ।

—हजारीप्रसाद द्विवेदी : बाणभट्ट की आत्मकथा : बम्बई, हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय, १९५८, पृ० ३०८, ड० क्रा०, ५ रु०, ना० प्र० सभा, द्विवेदी स्वर्ण पदक, (२००७ वि०)।

—हरिदास माणिक : पोर्ट आर्थर एक खूनी किला : काशी, माणिक कार्यालय, १९५६, पृ० २४०, ड० क्रा०, ३ रु०, उ० प्र०, (५६)।

अनूदित उपन्यास

—आन्द्रेजीद (मू० ले०), अनु० सुशीलादेवी : संकरा द्वार : मसूरी, सरस्वती सदन, २.५० रु०, के० स०,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(५५), प्रथम वि० पु० प्रति०।

'ला पॉर्त एत्रोग्रात' नामक फ्रेंच पुस्तक का अनुवाद। दो युवक-युवतियों की प्रेम-कहानी।

—हावर्ड फास्ट (मू० ले०), अनु० अमृतराय : **आदि विद्रोही** : इलाहाबाद, हंस प्रकाशन, १९५५, पृ० ३८४, डि०, ६·५० रु०, के० स० तृ० वि० पु० प्रति०।

ईसा के ७३ वर्ष पूर्व के रोम के एक गुलाम स्पार्टकस की गुलामी के विरुद्ध चुनौती की अपनी जीवन-कथा।

हिन्दी-कथा-साहित्य, कहानियाँ

—अन्नपूर्णानन्द : **मन मयूर** : इलाहाबाद, रामनारायण लाल, १९५१, पृ० २२२, ड० क्रा०, (सचित्र), ४ रु०, वि० प्र०।

१५ बालोपयोगी कहानियाँ।

—अयोध्याप्रसाद गोयलीय : **कुछ मोती कुछ सीप** : काशी, भारतीय ज्ञानपीठ, १९५७, पृ० १४४, ड० क्रा०, (सचित्र), २·५० रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

४३ लघु कथाएँ, एक शब्द-चित्र।

—उपेन्द्रनाथ 'अश्क' : **कहानी लेखिका और जेहलम के सात पुल** : इलाहाबाद, उपासना प्रकाशन, १९५७, पृ० १८३, ड० क्रा०, ३·५० रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

लेखक की अपनी कहानियों का संग्रह।

—उषा देवी मित्रा (श्रीमती) : **साध्यपूर्वी** : आजमगढ़, प्रभात साहित्य कुटीर, १९४१, पृ० १५७, ड० क्रा०, १ रु०, हि० सा० स० सेक० महिला पुर०, (२००५ वि०)।

लेखिका की अपनी नौ कहानियों का संग्रह।

—कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर : **बाजे पायलिया के घुंघरू** : काशी, भारतीय ज्ञानपीठ, १९५७, पृ० २६६, ड० क्रा०, ४ रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

कहानियों के रूप में छोटे संस्करण।

—कृष्णदेव प्रसाद गौड़ 'बेढब' : **उपहार** : वाराणसी, हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, १९५६, पृ० १३८, ड० क्रा०, २ रु०, उ० प्र०, (५५)।

'बेढब' जी की १९ कहानियों का संग्रह।

—गोविन्दवल्लभ पंत : **फटा पत्र** : प्रयाग, जवाहर ज्योति, २०१४ वि०, पृ० १५२, ड० क्रा०, ३ रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

अपनी ५ कहानियों का संग्रह।

—चन्द्रगुप्त विद्यालंकार : **तीन दिन** : दिल्ली, राजपाल एण्ड सन्स, १९५७, पृ० १९२, ड० क्रा०, ३ रु०, उ० प्र०, (५६-५७)।

अपनी १५ कहानियों का संग्रह।

—जहूर बख्श : **हम पिरसीडंट हैं** : महा० शा०।

—जैनेन्द्रकुमार : **जयसंधि** : दिल्ली, पूर्वोदय प्रकाशन, १९४८, पृ० २२०, ड० क्रा०, ३ रु०, उ० प्र०, (५०)।

अपनी २० कहानियों का संग्रह।

—देवराज 'दिनेश' : **राजा भोज** : दिल्ली, सस्ता साहित्य मण्डल, १९५७, पृ० ३२, (सचित्र), ड० क्रा०, ३१ न० पै०, के० स० जन सा० प्रति०, (५६)।

राजा भोज सम्बन्धी रोचक कहानियाँ (प्रौढ़ साहित्य)।

—देवीदयाल चतुर्वेदी 'मस्त' : **हवा का रस** : इलाहाबाद, इंडियन प्रेस, पब्लिकेशन्स लि०, पृ० १३५, डि०, १·५० रु०, उ० प्र०, (५५) तथा महा० शा० प० से भी।

१६ कहानियों का संग्रह।

—नंदलाल जैन : **सुखी राजकुमार** : वि० प्र०, (५४-५५)।

—नमिता लुम्बा (श्रीमती) : **जिन्दगी के अनुभव** : इलाहाबाद, सेन्ट्रल बुक डिपो, १९५४, पृ० १५४, ड० क्रा०, २·५० रु०, वि० प्र०, (५४-५५)।

लेखिका की सोलह कहानियों का संग्रह।

—नर्मदाप्रसाद मिश्र : **भारतीय वीरों की कहानियां** : वि० प्र०, (५२-५३)।

—प्राणनाथ सेठ : **हमारी कहानियां** : के० स०, (५६)।

—प्रेमचन्द : **दो बैलों की कथा और बाबाजी का भोग** : बनारस, सरस्वती प्रेस, पृ० २३, डि०, ७५ न० पै०, के० स० प्र० जन सा० प्रति०, (५४)।

स्व० प्रेमचन्दजी की दो प्रौढ़ोपयोगी कहानियों का संकलन।

—ब्रजकिशोर नारायण : **हंसी-खुशी** : पटना, अजन्ता प्रेस, १९५१, पृ० १६, (सचित्र), रॉ०, ७५ न० पै०, के० स०, (५५-५६)।

बालोपयोगी कविताएँ।

—माखनलाल चतुर्वेदी : **कला का अनुवाद** : गोरखपुर,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विश्वविद्यालय प्रकाशन, १९५४, पृ० ६८, डि० क्रा०, २.२५ रु०, म० प्र०, (५६)।

लेखक की अपनी नौ कहानियों का संग्रह (रेखाचित्र)।

—मन्मथनाथ गुप्त : **बाल कथा कहानियाँ** : दिल्ली, विद्या-मन्दिर लि०, १९५६, पृ० ६१, फु० स्के०, (सचित्र), १ रु०, वि० प्र०, (५४-५५)।

देश-विदेश की लोक-कथाएँ।

—मार्कण्डेय : **हंसा जाइ अकेला** : इलाहाबाद, नया साहित्य प्रकाशन, १९५७, पृ० १२२, ड० क्रा०, ३ रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

लेखक की अपनी सात कहानियों का संग्रह।

—मोहनलाल गुप्त : **अनोखे चित्र, अनबोले चेहरे** : वाराणसी, मधु प्रकाशन, १९५७, पृ० १८४, ड० क्रा०, ३ रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

कहानी-संग्रह।

—मोहनलाल गुप्त : **मखमली जूती** : वाराणसी मधु, प्रकाशन, १९५७, पृ० १२०, ड० क्रा०, २ रु०, उ० प्र०, (५५-५६)।

लेखक की अपनी १४ कहानियों का संग्रह।

—यशपाल : **चित्र का शीर्षक** : लखनऊ, विप्लव कार्यालय, १९५५, पृ० ११३, डि०, २.५० रु०, उ० प्र०, (५५), वि० प्र०, (५४-५५)।

१३ समस्यामूलक कहानियों का संग्रह।

—यशपाल : **तुमने क्यों कहा था कि मैं सुन्दर हूँ** : लखनऊ, विप्लव कार्यालय, १९५४, पृ० ११०, डि०, २.५० रु०, उ० प्र०, (५५-५६)।

कहानी-संग्रह।

—राजेन्द्र शर्मा : **मानस हंस** : दिल्ली, भारती साहित्य मन्दिर, २०१३ वि०, पृ० १३८, ड० क्रा०, ३ रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

प्रेरणादायक, भावपूर्ण, शिक्षाप्रद प्राचीन आख्यान।

—राजेन्द्रसिंह वेदी : **लाजवंती** : प्रयाग, नीलाभ प्रकाशन, १९५७, पृ० १९१, ड० क्रा०, ३.७५ रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

हमारे पुरस्कृत प्रकाशन

★ कृष्णदेव प्रसाद गौड़ :	—साहित्य-प्रवाह (आलोचना)	६.००
★ शान्तिप्रिय द्विवेदी :	—पद्मनाभिका (निबन्ध)	२.५०
★ 'बेढब' बनारसी :	—बिजली (हास्यरस)	२.५०
★ 'बेढब' बनारसी :	—हुक्का पानी (हास्यरस)	३.५०
★ मनु शर्मा :	—तीन प्रश्न (उपन्यास)	५.००
★ रुद्र काशिकेय :	—सुचिताच (उपन्यास)	५.००
★ सुधाकर पाण्डेय :	—प्रसाद काव्य-कोश (कोश)	१५.००

अन्य प्रकाशनों के लिए सूचीपत्र मँगावें

कल्याणदास एण्ड ब्रदर्स

ज्ञानवापी, वाराणसी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेखक की अपनी कहानियों का प्रथम संग्रह ।

—राधाकृष्ण : **गल्पिका** : इलाहाबाद, हंस प्रकाशन, १९५६, पृ० ८२, ड० क्रा०, १.५० रु०, उ० प्र०, (५६-५७) ।

२७ लघु कथाएँ ।

—रामनिरंजन पांडेय : **गांव की कहानियाँ** : के० स०, (५४)।

—रामवृक्ष बेनीपुरी : **बेटे हों तो ऐसे** : पटना, अजन्ता प्रेस लि०, पृ० ३९, फु०स्के०, (सचित्र), ७५ न० पै०, के० स० बा० साहि० प्रति०, (५४) ।

लेखक की बालोपयोगी ११ कहानियों का संग्रह ।

—रावी (रामप्रसाद विद्यार्थी) : **पहला कहानीकार** : काशी, भारतीय ज्ञानपीठ, १९५४, पृ० १९८, ड० क्रा०, २.५०रु०, उ० प्र०, (५४) ।

लेखक की २८ लघु कथाओं का संग्रह ।

—रुद्र काशिकेय : **सुचिताच** : वाराणसी, आराधना प्रकाशन, १९५७, पृ० २१९, ड० क्रा०, ५ रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

सुमित्रा, चित्रा, तारा और चन्द्रा शीर्षकों के अन्तर्गत पाँच-पाँच शब्द-चित्र ।

—लक्ष्मीनारायण : **मैं क्या कर सकता हूँ** : दिल्ली, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, १९५४, पृ० ३५, डि०, (सचित्र), ८७ न० पै०, के० स०, (५५) ।

नव-साक्षरों के लिए लिखित कहानियाँ ।

—विनोदशंकर व्यास : **नक्षत्र लोक** : काशी, पुस्तक मंदिर, १९५०, पृ० १२८, ड० क्रा०, २ रु०, उ० प्र०, (५१) ।

अपनी १८ कहानियों का संग्रह ।

—वियोगी हरि : **पाव भर आटा** : नई दिल्ली, सस्ता साहित्य मण्डल, १९५६, पृ० ३६, ड० क्रा०, (सचित्र), ३७ न०पै०, के० स० द्वारा प्र० प्रौ० सा० प्रति०,(५७) ।

छोटे माने जाने वाले बड़े दिलों की ५ कहानियाँ ।

—विश्वामित्र शर्मा : **सुनो कहानी** : दिल्ली, राजहंस प्रकाशन, पृ० ३०, २ रु०, शिक्षा विभाग, दिल्ली द्वारा पुरस्कृत ।

—विष्णु प्रभाकर : **संघर्ष के बाद** : काशी, भारतीय ज्ञानपीठ, १९५३, पृ० २४८, ड० क्रा०, ३ रु०, उ० प्र०, (५५) ।

अपनी २१ कहानियों का संग्रह ।

—शकुन्तला देवी : **पंचतन्त्र की कहानियाँ, भाग १** : दिल्ली राजकमल प्रकाशन, १९५७, पृ० २४, (सचित्र), रॉ०, १.२५ रु०, के० स० अ० प्रौ० सा० प्रति० (५४) ।

बालकों एवं प्रौढ़ों के लिए सरल एवं रोचक ७ कहानियाँ ।

भाग २, १.२५ रु० ।

भाग ३, १.२५ रु० ।

—शारदा मिश्र (श्रीमती) : **नीलम और मशहरी की देवी** : वाराणसी, हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, १९५७, पृ० ३२, फु० स्के०, (सचित्र), १.२५ रु०, के० स० बा० सा० प्रति०, (५४) ।

बालोपयोगी कहानी ।

—संतराम वत्स : **ज्ञान की कहानियाँ** : के० स०, (५४)।

—सत्यप्रकाश संगर : **लम्बे दिन जलती रातें** : भोपाल, विजय प्रकाशन, (मुख्य वि०—राजकमल प्रकाशन), पृ० १२८, ड० क्रा०, २.२५ रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

कहानी-संग्रह ।

—सत्यवती मल्लिक (श्रीमती) : **दिन-रात** : दिल्ली, अतरचन्द कपूर एण्ड सन्स, १९५५, पृ० १३९, डि०, ३ रु०, उ० प्र०, (५५-५६) ।

लेखिका की बीस कहानियों का संकलन ।

—सरूपकुमारी बख्शी (श्रीमती) : **कौड़ियों का नाच** : लखनऊ, रंजना प्रकाशन, १९५६, पृ० १२६, ड० क्रा०, ४ रु०, उ० प्र०, (५६-५७) ।

लेखिका की १० कहानियों का संग्रह ।

—श्रीराम शर्मा : **बालकों की कहानियाँ** : के० स०, (५४)।

—हरिकृष्णदेव सरे : **सफेद रसगुल्ला** : वि०प्र०,(५४-५५)।

—हरिदास माणिक : **आत्मत्यागी वीर** : काशी, माणिक कार्यालय, १९५१, पृ० १४४, ड० क्रा०, २ रु०, उ० प्र०, (५२)।

नई पीढ़ी के नवयुवकों में उच्च गुणों एवं विचारों की प्रेरक ऐतिहासिक सच्ची कहानियाँ एवं संस्मरण ।

—हीरादेवी चतुर्वेदी : **उलझी स्मृतियाँ** : इलाहाबाद, मनोरमा प्रकाशन, १९४६, पृ० १३४, ड०क्रा०, १.५०रु०, उ० प्र०, (५१) ।

अपनी १५ कहानियों का संकलन ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे प्रमुख प्रकाशन

उपन्यास

यथार्थ से आगे (पुरस्कृत) : भगवतीप्रसाद वाजपेयी ५॥)
जिन्दगी की राहें (पुरस्कृत) : श्रीराम शर्मा 'राम' ४)
भारत सेवक : यज्ञदत्त शर्मा ५॥)
मायाजाल : गुरुदत्त ५)
उमड़ती घटाएँ : ,, ६)
सहस्रबाहु : ,, ६)
नगर-परिमोहन : ,, ५॥)
लुढ़कते पत्थर : ,, ५॥)
राग और त्याग : कमल शुक्ल ५)
मोलश्री : ,, ६)
काले नगर में : ,, २॥)
पथ से दूर : ,, २।)
देवता : ,, २।)
जीत या हार ? : बलराज मधोक ४)

आलोचना तथा साहित्य

भारतीय काव्य-शास्त्र की भूमिका (पुरस्कृत) : डॉ० नगेन्द्र १०)
बीसवीं शताब्दी के महाकाव्य (पुरस्कृत) : डॉ० प्रतिपाल सिंह ८॥)
सूर मीमांसा : डॉ० व्रजेश्वर वर्मा ४।)
सिद्धान्तालोचन : धर्मचन्द्र सन्त तथा बलदेव कृष्ण ४॥)
हिन्दी गद्य का आविर्भाव और विकास : धर्मचन्द्र सन्त २।)
प्रेमचन्द और उनका गोदान : बलदेव कृष्ण ५।)
भाषा का इतिहास : पं० भगवद्दत्त ५)
काव्य सम्प्रदाय और वाद : अशोककुमार सिंह ४॥)
हिन्दी काव्यादर्श : रणवीरसिंह ४)

नाटक

भारतेन्दु : सेठ गोविन्ददास २)
रहीम : ,, २)
मीरा : सन्त गोकुलचन्द्र १॥।)
हिरौल : ,, १।)
समाधि : विष्णु प्रभाकर २॥)

हास्य रस

सटक सीताराम : संसारचन्द्र एम० ए० ३)

अन्य

संक्षिप्त वाल्मीकि रामायण : डॉ० एस० एन० व्यास २॥।)

हमारा बाल-साहित्य

जो रोचक सरल सरस सचित्र और आकर्षक है जिसमें कहानी कविता नाटक (अभिनेय) जीवनी और अन्य मनोरंजक सामग्री पाएँगे।

कृपया सूचीपत्र मँगाकर अपनी रुचि की पुस्तकें पढ़ें।

ओरिएण्टल बुक डिपो

नई सड़क, दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अगले महीनों में प्रकाशित होने वाले

हमारे कुछ उत्कृष्ट प्रकाशन

मैं नेहरू से मिला : तिबौर माँड

श्री नेहरू से लेखक की चार लम्बी और टेप रिकार्ड की गई मुलाकातों का ब्यौरा, जिसमें नेहरू ने लेखक द्वारा पूछे गए राजनीति व समाज-विषयक प्रत्येक प्रश्न का विस्तार से उत्तर दिया है। श्री नेहरू और उनके विचारों को समझने के लिए अद्वितीय पुस्तक। पुस्तक का अधिकांश श्री नेहरू के अपने शब्दों में ही है। मूल्य ३·५० रु०।

हिन्दी लेखक चित्रावली :

हिन्दी के पच्चीस प्रमुख साहित्यिकों के चित्रों का पहला, सुमुद्रित एल्बम। मूल्य १५·०० रु०।

भारतीय शिक्षा का पुनर्गठन : के० जी० सय्यदैन

केन्द्रीय शिक्षा-मन्त्रालय के मुख्य सचिव द्वारा लिखित देश में शिक्षण के नये संगठन की समस्याओं पर प्रामाणिक पुस्तक।

ठुमरी : फणीश्वरनाथ रेणु

'मैला आँचल' और 'परती परिकथा' के यशस्वी लेखक की कहानियों का प्रथम संग्रह।

लोक परलोक : उदयशंकर भट्ट

लेखक का नवीनतम उपन्यास।

रूपाजीवा : डॉ० लक्ष्मीनारायण लाल

चन्दौसी के व्यापारियों के जीवन की पृष्ठभूमि में लिखा गया लेखक का नवीनतम उपन्यास।

मादा कैक्टस : डॉ० लक्ष्मीनारायण लाल : नाटक

राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड

दिल्ली : इलाहाबाद : बम्बई : पटना : मद्रास

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहानी, अनूदित

—टालस्टाय (मू० ले०), (अनु० जैनेन्द्रकुमार) : **प्रेम में भगवान** : दिल्ली, सस्ता साहित्य मण्डल, १९५६, पृ०२३८, ड० क्रा०, २ रु०, के० स० प्र० वि० पु० प्रति० में पुरस्कृत।

टालस्टाय की सत्रह कहानियों का अनुवाद।

—दिनमणि : **पञ्चतन्त्र की कहानी** : रॉ०, (५४-५५)।

—वेलरी मंजिल : **नन्हे लंगूर की कहानी** : दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, पृ० २४, फु० स्के०, (सचित्र), १.७५ रु०, के० स०, (५४)।

बालोपयोगी कहानी।

—सावित्रीदेवी वर्मा : **शेक्सपियर की कहानियां** : उ० प्र०, (५४-५५)।

हिन्दी आलोचनात्मक निबन्ध, कवि और काव्य

—अक्षयकुमार जैन, (भू० ले० जैनेन्द्र कुमार) : **युग पुरुष राम** : दिल्ली, आत्माराम एण्ड सन्स, १९५४, पृ० २०७, डि०, ५ रु०, उ० प्र०, (५५-५६)।

रामचरित के स्फुट किन्तु क्रमबद्ध प्रसंग २८ शीर्षकों के अन्तर्गत। प्रत्येक शीर्षक अपने में पूर्ण।

—उदयभानु सिंह (डॉ०) : **महावीर प्रसाद द्विवेदी और उनका युग** : लखनऊ, लखनऊ विश्वविद्यालय, २००८ वि०, पृ० ४३०, रॉ०, १० रु०, उ० प्र०, (५२-५३)।

९ अध्यायों में द्विवेदीजी और उनके युग (१९०१-१९२०) का गवेषणात्मक अध्ययन। लखनऊ विश्वविद्यालय से पी-एच० डी० के लिए स्वीकृत प्रबन्ध।

—उषा जायसवाल (कुमारी) : **रत्नाकर और उनका काव्य** : वाराणसी, हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, १९५६, पृ० १७२, डि०, ५ रु०, उ० प्र०, (५६-५७)।

रत्नाकर का प्रामाणिक जीवन-वृत्त तथा उनके काव्यों की समीक्षा।

—कामिल बुल्के (रे० फा०) : **राम कथा** : प्रयाग, हिन्दी परिषद्, (प्रयाग विश्वविद्यालय), १९५०, पृ० ५३२, डि०, ८ रु०, उ० प्र०, (५२)।

रामकथा की उत्पत्ति एवं विकास का गवेषणात्मक अध्ययन। प्रयाग विश्वविद्यालय से डी० फिल्० के लिए स्वीकृत प्रबन्ध।

—किशोरीलाल गुप्त : **भारतेन्दु और अन्य सहयोगी कवि** : वाराणसी, हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, १९५६, पृ० ४४०, डि०, १० रु०, उ० प्र०, (५६-५७)।

पूर्वार्द्ध में भारतेन्दु के तथा उत्तरार्द्ध में उनके सहयोगी कवियों के कवि रूप पर विस्तृत विवेचन।

—गंगाप्रसाद पाण्डेय : **महाप्राण निराला** : प्रयाग, साहित्यकार संसद, २००६ वि०, पृ० ३७६, (सचित्र), डि०, १० रु०, उ० प्र०, (५०)।

'निराला' जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय।

—गिरिजादत्त शुक्ल 'गिरीश' : **समीक्षक प्रवर श्री रामचन्द्र शुक्ल** : प्रयाग, रामनारायणलाल, १९५५, पृ० ३७०, डि०, ५ रु०, उ० प्र०, (५४-५५)।

३८ अध्यायों में आचार्य शुक्ल की साहित्यिक साधना के विकास का अध्ययन।

—गोविन्द त्रिगुणायत : **कबीर और जायसी का रहस्यवाद** : देहरादून, साहित्य सदन, पृ० २४४, ड० क्रा०, ४ रु०, उ० प्र०, (५५-५६)।

कबीर का रहस्यवाद, जायसी का रहस्यवाद एवं दोनों का तुलनात्मक विवेचन, लेखक की ५१ पृष्ठों की अतिरिक्त भूमिका सहित।

—चन्द्रबली पाण्डेय : **केशवदास** : ग्वालियर, नवप्रभात प्रेस, २००७ वि०, पृ० २७१, ड० क्रा०, ३ रु०, वि० प्र०, (५२-५३)।

केशवदास का आलोचनात्मक सर्वाङ्गीण अध्ययन।

—जगमोहनलाल चतुर्वेदी : **एकनाथ व तुलसीदास** : पेठण, श्री एकनाथ संशोधन मन्दिर, १९९४ वि०, पृ० १३०, ड० क्रा०, २·५० रु०, उ० प्र०, (५५)।

एकनाथ व तुलसीदास का तुलनात्मक अध्ययन। (जीवन की झाँकी, काव्य की झलक एवं अध्यात्म-दर्शन)

—देवकीनन्दन श्रीवास्तव : **तुलसीदास की भाषा** : उ० प्र०, (५७-५८)।

—नगेन्द्र (डॉ०) : **रीतिकाव्य की भूमिका तथा देव और उनकी कविता** : दिल्ली, गौतम बुक डिपो, १९४९, पृ० प्र० भा० १९२, द्वि० भा० २९९, डि०, १० रु०, उ० प्र०, (५०) तथा हर० डाल० पुर०।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कविवर 'आदर्श'
विरचित
युगसत्पानिवेष एवं पंचशील की अधु-
नातन मान्यताओं पर आधारित
इस युग का नयी कविता शैली
में लिखित पत्रों एवं विद्वानों
द्वारा बहु-प्रशंसित अपूर्व
महाकाव्य
पुष्पनगर
भूमिका :
डॉ० हजारी प्रसाद द्विवेदी
मूल्य : ६·००
प्रकाशक
आराधना प्रकाशन
६४/४४ गोला दीनानाथ,
वाराणसी

रीतिकाव्य की सामान्य पृष्ठभूमि देकर शुद्ध साहित्यिक दृष्टि से रीतिकालीन कविता, विशेषतया देव की कविता का विश्लेषण एवं मूल्यांकन।

—नर्मदेश्वर चतुर्वेदी : **कवि तानसेन और उनका काव्य :** इलाहाबाद, साहित्य भवन लि०, २०१३ वि०, पृ० १५०, ड० क्रा०, २·५० रु०, उ० प्र०, (५६-५७)।

प्रथम खण्ड में तानसेन के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का संक्षिप्त विवेचन तथा द्वितीय खण्ड में कृतित्व का संग्रह।

—नामवरसिंह : **पृथ्वीराज रासो की भाषा :** बनारस, सरस्वती प्रेस, १९५६, पृ० २९२, डि०, ६ रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

पृथ्वीराज रासो की भाषा का सांगोपांग अध्ययन।

—नारायणदास खन्ना (डॉ०) : **आचार्य भिखारीदास :** लखनऊ, लखनऊ विश्वविद्यालय, २०१२ वि०, पृ० ३६८, रॉ०, १० रु०, उ० प्र०, (५४-५५)।

भिखारीदासजी के जीवन-वृत्त, साहित्यिक रचनाओं का विवेचन, काव्य-कला, भक्ति-भावना तथा सामाजिक नीति पर प्रकाश एवं आचार्यत्व का प्रतिस्थापन। लखनऊ विश्वविद्यालय द्वारा पी-एच० डी० की उपाधि का स्वीकृत शोध ग्रन्थ।

—पद्मावती 'शबनम्' (श्रीमती) : **चन्द्रसखी और उनका काव्य :** बनारस, लोक सेवक प्रकाशन, २०११ वि०, पृ० १२३, ड० क्रा०, २ रु०, उ० प्र०, (५५)।

७४ पृष्ठों का काव्य-संग्रह और ५९ पृष्ठों की आलोचनात्मक भूमिका।

—पुरुषोत्तमलाल श्रीवास्तव : **कबीर साहित्य का अध्ययन :** बनारस, साहित्य रत्नमाला कार्यालय, २००८ वि०, पृ० ३९७, ड० क्रा०, ४ रु०, उ० प्र०, (५२)।

कबीर साहित्य की समीक्षा एवं तत्सम्बन्धी सभी जिज्ञासाओं के समाधान सहित।

—प्रेमनारायण टण्डन (डॉ०) : **सूर की भाषा :** लखनऊ, हिन्दी साहित्य भण्डार, १९५७, पृ० ६२४, रॉ०, २ रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

लखनऊ विश्वविद्यालय की पी-एच० डी० उपाधि के लिए स्वीकृत प्रबन्ध।

—प्रेमशंकर (डॉ०) : **प्रसाद का काव्य :** इलाहाबाद, भारती

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भण्डार, २०१२ वि०, पृ० ५८८, डि०, १० रु०, उ० प्र०, (५५-५६)।

'चित्राधार' से 'कामायनी' तक के क्रमिक विकास का विवेचनापूर्ण अध्ययन। सागर विश्वविद्यालय से पी-एच० डी० के लिए स्वीकृत प्रबन्ध।

—फतहसिंह : **कामायनी सौन्दर्य :** कोटा, संस्कृति सदन, १९४८, पृ० १९२, ड० क्रा०, २ रु०, उ० प्र०, (५२)।

'कामायनी' का काव्यगत विवेचनात्मक संक्षिप्त अध्ययन, छात्रों के दृष्टिकोण से लिखित।

—बच्चनसिंह : **क्रान्तिकारी कवि निराला :** काशी, युगाश्रय, २००४ वि०, पृ० १८९, ड० क्रा०, २.७५ रु०, उ० प्र०, (५०)।

'निराला' जी के काव्य-साहित्य के ऐतिहासिक विकास तथा काव्यात्मक सौष्ठव का प्रतिपादन।

—ब्रजविलास श्रीवास्तव, (भूमिका हजारीप्रसाद द्विवेदी) : **पृथ्वीराज रासो में कथानक रूढ़ियाँ :** दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, १९५५, पृ० १४६, डि०, ३.५० रु०, उ० प्र०, (५५-५६)।

प्रसिद्ध ऐतिहासिक काव्य 'पृथ्वीराज रासो' की कथानक रूढ़ियों का विश्लेषण। लोक-साहित्य और अभिजात-साहित्य से उसकी समानान्तर रूढ़ियों का समन्वय।

—भगवतीप्रसाद सिंह (डॉ०), (भूमिका पं० गोपीनाथ कविराज) : **रामभक्ति में रसिक सम्प्रदाय :** बलरामपुर, अवध साहित्य मन्दिर, २०१४ वि०, पृ० ६२७, (सचित्र), डि०, १५ रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

आगरा विश्वविद्यालय द्वारा पी-एच० डी० की उपाधि के लिए स्वीकृत प्रबन्ध। श्री कविराजजी की १६ पृष्ठों की विद्वत्तापूर्ण भूमिका एवं परिशिष्टांश महत्त्वपूर्ण।

—भगीरथप्रसाद दीक्षित : **महाकवि भूषण :** प्रयाग, साहित्य-भवन लि०, १९५३, पृ० १८८, ड० क्रा०, २.५० रु०, उ० प्र०, (५३-५४)।

भूषण का संक्षिप्त परिचय, कृतियाँ और उनका आलोचनात्मक अध्ययन।

—मुन्शीराम शर्मा : **भारतीय साधना और सूर साहित्य :** कानपुर, आचार्य शुक्ल साधना सदन, २०१० वि०, पृ० ४६०, डि०, ८ रु०, उ० प्र०, (५३)।

पुस्तकालयों के लिए हमारे नवीनतम प्रकाशन

हिन्दी कहानियों का विवेचनात्मक अध्ययन : (थीसिस) डॉ० ब्रह्मदत्त शर्मा १०)
ऐतिहासिक उपन्यासकार वृन्दावनलाल वर्मा : डॉ० गोपीनाथ तिवारी १।।।)
भ्रमरगीत में काव्यकला और दर्शन : श्री प्रेमकृष्ण अनामिल एम० ए० २।)
रहस्यवाद और हिन्दी कविता : डॉ० गुलाबराय डी० लिट् ४)
रीतिकालीन कविता, शृंगाररस का विवेचन : (थीसिस) डॉ० राजेश्वर प्रसाद पी-एच० डी० ६।।)
प्रगतिशील साहित्य के मानदण्ड : डॉ रांगेय राघव ४)
हिन्दी नाटक के सिद्धान्त और नाटककार : डॉ० रामचरण महेन्द्र ४।।)
प्रसाद एवं पन्त का तुलनात्मक विवेचन : प्रो० रामरजपाल द्विवेदी ४।।)
रामचरितमानस में लोकवार्ता : प्रो० चन्द्रभान ३।।)
जायसी और उनका पद्मावत : डॉ० सुधीन्द्र १।।।)
तुलसी का गवेषणात्मक अध्ययन : प्रो० राजकुमार एम० ए० २।।)
साकेत-दर्शन : प्रो० त्रिलोचन पाण्डेय ५)
हरिऔध और उनकी कला-कृतियाँ : डॉ० द्वारिकाप्रसाद ३।)
महादेवी साहित्यकला-जीवन-दर्शन : श्री रामचन्द्र गुप्त ३।।)
पन्त की काव्यकला और जीवन-दर्शन : " ३।)
हिन्दी साहित्य के दार्शनिक आधार : प्रो० पद्मचन्द एम० ए० १।।।)
हिन्दी साहित्य के प्रमुख वाद और उनके प्रवर्तक : प्रो० विश्वम्भरनाथ ३।।)
गुप्तजी की काव्य-कला : प्रो० त्रिलोचन पाण्डेय ३।।)
आचार्य रामचन्द्र शुक्ल और चिन्तामणि : प्रो० विमला कौल २।)
तुलनात्मक विवेचन, भाग १ व २ : प्रो० दिनेश एम० ए० ३।।)
काव्यश्री (रस अलंकार) : डॉ० सुधीन्द्र ३)
हिन्दी एकांकी एवं एकांकीकार : डॉ० महेन्द्र १।।।)
वृन्दावनलाल वर्मा की उपन्यास-कला : " " १।।)
हिन्दी महाकाव्य एवं महाकाव्यकार : " " २।)
पांचाली (खण्ड काव्य) : डॉ० रांगेय राघव १।।)
चिता (कहानी) : प्रो० ओमानन्द स० सारस्वत १)

सरस्वती पुस्तक सदन, मोती कटरा, आगरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

११ अध्यायों में भारतीय साधना और सूर साहित्य का विस्तृत विवेचन।

—मुकुन्ददेव शास्त्री, (भूमिका प्योत्र वारान्निकोव) : **हरिऔध और उनका साहित्य** : वाराणसी, हिन्दी साहित्य कुटीर, २०१३ वि०, पृ० ५५४, ड० क्रा०, (सचित्र), ७ रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

'हरिऔध' के जीवन और उनके सम्पूर्ण साहित्य का आलोचनात्मक विवेचन।

—राजपति दीक्षित : **सन्त तुलसीदास और उनके सन्देश** : बनारस, गोविन्द मुद्रणालय, २०१० वि०, पृ० १६०, डि०, ३ रु०, उ० प्र०, (५५)।

तुलसीदासजी की सन्त-भावना और उनके सन्देशों का विस्तृत विवेचन।

—राजपति दीक्षित (डॉ०) : **तुलसीदास और उनका युग** : बनारस, ज्ञानमण्डल लि०, २००९ वि०, पृ० ४९६, ड० क्रा०, ७ रु०, उ० प्र०, (५२-५३)।

तुलसीदास के सभी पक्षों का व्यापक रूप में प्रत्यक्षीकरण। २२ पृष्ठों की भूमिका द्रष्टव्य।

—रामचन्द्र तिवारी : **रीतिकालीन हिन्दी कविता और सेनापति** : गोरखपुर, विश्वविद्यालय प्रकाशन, १९५३, पृ० ११२, ड० क्रा०, १.५० रु०, उ० प्र०, (५५)।

रीतिकाव्य की परम्परा तथा तत्कालीन प्रवृत्तियों की पृष्ठभूमि में सेनापति के काव्य का विशेष अध्ययन।

—रामरतन भटनागर (डॉ०) : **प्रसाद की विचारधारा** : प्रयाग, रामनारायणलाल, १९५१, पृ० ४४२, ड० क्रा०, ४ रु०, उ० प्र०, (५२-५३)।

'प्रसाद' की विचारधारा की प्रत्येक तरंग का कालक्रमागत गतिविधि से प्रतिष्ठापन।

—लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय (डॉ०) : **भारतेन्दु हरिश्चन्द्र** : प्रयाग, साहित्य भवन लि०, १९५६, पृ० ३२२, ड० क्रा०, ५ रु०, उ० प्र०, (५३-५४)।

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र की कृतियों के आलोचनात्मक अध्ययन के साथ-साथ उनकी विचारधारा की तत्कालीन जीवन की परिस्थितियों के बीच परख।

—वारान्निकोव, ए० पी० (मू० ले०), केशरीनारायण शुक्ल (अनु०) : **मानस की रूसी भूमिका** : लखनऊ, विद्या मन्दिर, १९५५, पृ० १९१, ड० क्रा०, ३.५० रु०, उ० प्र०, (५५-५६)।

प्रो० वारान्निकोव की 'रामचरितमानस' की भूमिका का रूपान्तर। अनुवादक की ८३ पृष्ठों की अतिरि भूमिका।

—वासुदेव गोस्वामी : **भक्त कवि व्यासजी** : मथु अग्रवाल प्रेस, २००९ वि०, पृ० ४४७, डि०, ६ वि० प्र०, (५२-५३)।

भक्त कवि व्यास की जीवनी, काव्य-समीक्षा उनकी समस्त रचनाओं का संकलन।

—विपिनबिहारी त्रिवेदी (डॉ०) : **चन्दबरदाई और उ काव्य** : इलाहाबाद, हिन्दुस्तानी एकेडेमी, पृ० ३७६, रॉ ८ रु०, उ० प्र०, (५३)।

आदि कवि चन्दबरदाई के जीवन और काव्य गवेषणात्मक अध्ययन। कलकत्ता विश्वविद्यालय डी० फिल्० के लिए स्वीकृत प्रबन्ध।

—विश्वम्भरनाथ भट्ट (डॉ०) : **रत्नाकर, उनकी प्रति और कला** : नई दिल्ली, हिन्दी पुस्तक सदन, १९ पृ० ३८८, डि०, ९ रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

लेखक की थीसिस का परिमार्जित रूप। दस अध्या में विषय का प्रतिपादन।

—बृजेन्द्रनाथ पाण्डेय : **भारतेन्दुकालीन व्यंग परम्परा** वाराणसी, कल्याणदास एण्ड ब्रदर्स, २०१३ वि पृ० १५४, ड० क्रा०, २.५० रु०, उ० प्र०, (५६-५७)।

व्यंग-परिहासयुक्त निबन्धों का संकलन।

—शान्तिप्रिय द्विवेदी : **ज्योति विहग** : प्रयाग, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, २००८ वि०, पृ० ४५८, ड० क्रा० ५ रु०, उ० प्र०, (५२)।

सौन्दर्य और संस्कृति के कवि पंत की समस्त रचनाओं का समीक्षात्मक अध्ययन।

—शिवचन्द्र नागर : **महादेवी विचार और व्यक्तित्व** : प्रयाग किताब महल, १९५३, पृ० ३५८, ड० क्रा०, ३ रु० उ० प्र०, (५५)।

महादेवीजी के सम्बन्ध में विश्वम्भर मानव को लिखे गए शिवचन्द्र नागर के पत्रों का संकलन।

—शिवप्रसाद सिंह (डॉ०) : **कीर्तिलता और अवहट्ट भाषा**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रत्येक पुस्तकालय में संग्रह करने योग्य पुस्तकें

कोश

हत् हिन्दी कोश	सम्पादक कालिकाप्रसाद : लेदर क्लाथ राजवल्लभ सहाय जिल्द मू० २५.०० मुकुन्दीलाल श्रीवास्तव चमड़े की जिल्द	३२.००
न शब्दकोश	सम्पा० मुकुन्दीलाल श्रीवास्तव	१५.००
रिभाषिक शब्दकोश	सम्पा० मुकुन्दीलाल श्रीवास्तव	४.००

राजनीतिक पुस्तकें

रतीय राजनीति— क्टोरिया से नेहरू तक	रामगोपाल एम० ए०	११.००
ष्ट्रीयता और समाजवाद	आचार्य नरेन्द्रदेव	११.००
न्तर्राष्ट्रीय विधान	डॉ० सम्पूर्णानन्द	११.००
न कल और आज	के० एम० पणिक्कर	५.००
जनीतिशास्त्र	प्राणनाथ विद्यालंकार	४.५०
यान की राजनीतिक प्रगति	अनु० लक्ष्मणनारायण गर्दे	५.५०
न और भारत	अम्बिकाप्रसाद वाजपेयी	१.५०

धर्म और दर्शन

त साधना और साहित्य	रामपूजन तिवारी	११.००
के धर्म प्रवर्तक	रघुनाथसिंह एम० पी०	६.५०
निक अद्वैतवाद	स्व० रामदास गौड़ एम० ए०	२.२५
विलास	डॉ० सम्पूर्णानन्द	५.००
न का प्रयोजन	डॉ० भगवानदास	३.५०
तिशास्त्र	सुश्री शान्ति जोशी	८.००

पत्रकारिता

र और पत्रकार	माननीय पं० कमलापति त्रिपाठी तथा पुरुषोत्तमदास टण्डन 'पत्रकार'	६.५०
रतीय पत्रकार कला	सम्पादक रौलैण्ड ई० वूल्सले	६.५०
माचारपत्रों का इतिहास	पं० अम्बिकाप्रसाद वाजपेयी	६.५०
धुनिक पत्रकार कला	रा० र० खाडिलकर	४.००

मनोविज्ञान

क्षा मनोविज्ञान	हंसराज भाटिया	४.५०

भ्रमण

गलैण्ड में पचीस दिन	रा० र० खाडिलकर	३.००
यात्रा	रघुनाथसिंह एम० पी०	३.००

इतिहास

रतवर्ष का इतिहास	एक इतिहास प्रेमी	८.००
पश्चिमी यूरोप, प्रथम भाग	अनुवादक छबिनाथ पाण्डेय एम० ए०, एल-एल० बी०	४.५०
गांधी हत्याकाण्ड	सम्पादक विहंगम	५.००
आजाद हिन्द फौज और उसके तीन अफ़सरों का मुक़दमा	३५० पृष्ठों की ऐतिहासिक पुस्तक	२.००

संस्मरण

जेल के वे दिन	विजयालक्ष्मी पंडित	२.५०
कुछ स्मरणीय मुकदमे	श्री कैलाशनाथ काटजू	८.००
मेरे बचपन की कहानी	श्रीमती नयनतारा सहगल	६.००

साहित्य

वक्रोक्ति और अभिव्यंजना	रामनरेश वर्मा एम० ए०	४.५०
गीतिकाव्य	प्रो० रामखेलावन एम० ए०	५.५०
तुलसीदास और उनका युग	डॉ० राजपति दीक्षित	८.००
सामयिकी	शान्तिप्रिय द्विवेदी	४.००
धरातल	शान्तिप्रिय द्विवेदी	२.७५
कल्पलता	आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी	२.५०

कथा साहित्य

उलूकतन्त्र	बलदेवप्रसाद मिश्र	२.००
शव साधन	बलदेवप्रसाद मिश्र	२.५०
तूफान	सर्वश्रेष्ठ कहानी-लेखकों की कहानियों का संग्रह	२.५०

उपन्यास

पुनर्जीवन	महात्मा टालस्टाय	६.५०
कर्त्तव्याघात	देवनारायण द्विवेदी	४.५०
नूतन ब्रह्मचारी	स्वर्गीय पं० बालकृष्ण भट्ट	०.६३
देशभक्त और देशद्रोही		२.५०
बयालीस	प्रतापनारायण श्रीवास्तव	४.५०
गेंजी की कहानी	मुरासाकी शिकाबू	४.५०

आदर्श जीवन चरित्र

सरदार पृथ्वीसिंह	राहुल सांकृत्यायन	४.००

विज्ञान

विज्ञान की प्रगति	भगवतीप्रसाद श्रीवास्तव	३.५०
विज्ञान के चमत्कार	भगवतीप्रसाद श्रीवास्तव	२.७५
परमाणु शक्ति	भगवतीप्रसाद श्रीवास्तव	२.७५
घरेलू बिजली	भगवतीप्रसाद श्रीवास्तव	४.००
सरल विज्ञान	भगवतीप्रसाद श्रीवास्तव	१.०६

ज्ञान मण्डल लिमिटेड, वाराणसी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी-भवन के प्रमुख प्रकाशन

उपन्यास, कहानी

केलाबाड़ी (नित्यानन्द वात्स्यायन)	१।)
सुबह के भूले (इलाचन्द्र जोशी)	५)
मुक्तिपथ ,,	५।)
मूक तपस्वी (कंचनलता सब्बरवाल)	४)
युग सन्देश (पृथ्वीनाथ शर्मा)	३।।।)
उदय-अस्त ,,	२।)

नाटक तथा एकांकी संग्रह

पार्वती (उदयशंकर भट्ट)	१।)
विदा (हरिकृष्ण प्रेमी)	१।।।)
प्रकाशस्तम्भ (हरिकृष्ण प्रेमी)	१।।)
रक्षाबन्धन ,,	१।)
प्रतिशोध ,,	१।।।)
शिवासाधना ,,	२)
आहुति ,,	१)
दशाश्वमेध (लक्ष्मीनारायण मिश्र)	१।=)
वत्सराज ,,	१।।)
प्रताप प्रतिज्ञा (जगन्नाथप्रसाद मिलिन्द)	१।)
अपराधी (पृथ्वीनाथ शर्मा)	।।।)
साध ,,	।।।)
दुविधा ,,	।।।)
कर्मपथ (दयानाथ झा)	२)
आदित्यसेनगुप्त (कंचनलता)	१।।)
विक्रमादित्य (उदयशंकर भट्ट)	१=)
सरस एकांकी नाटक (रामकुमार वर्मा)	१।।)
आठ एकांकी नाटक ,,	२)
एकांकी एकावली (रामचन्द्र शर्मा)	२।।)

भारतीय इतिहास

भारतीय कृष्टि का क ख (जयचन्द्र विद्यालंकार)	७)
इतिहास प्रवेश ,,	११)
लघु इतिहास प्रवेश ,,	५)
भारतीय वाङ्मय के अमर रत्न ,,	१)
पुरखों का चरित (तीन भाग) ,,	२), १।।), १।।)

हमारा राजस्थान (पृथ्वीसिंह विद्यालंकार)

साहित्यिक ग्रन्थ

- पूर्व भारतेन्दु नाटक साहित्य (सोमनाथ गुप्त)
- भारत की भाषाएँ और भाषा सम्बन्धी समस्याएँ (सुनीतिकुमार चटर्जी)
- हिन्दी साहित्य का उद्भव और विकास (रामबहोरी शुक्ल तथा भगीरथ मिश्र)
- हिंदी गद्य-साहित्य का इतिहास (जगन्नाथ प्रसाद शर्मा)
- प्रेमचन्द : साहित्यिक विवेचन (नन्ददुलारे वाजपेयी)
- हिन्दी कलाकार (इन्द्रनाथ मदान)
- शरच्चन्द्र चिन्तन व कला (इन्द्रनाथ मदान)
- जयशंकरप्रसाद चिन्तन व कला (इन्द्रनाथ मदान)
- साहित्य मीमांसा (सूर्यकान्त)
- साहित्य समालोचना (रामकुमार वर्मा)
- हिन्दी नाटक साहित्य का इतिहास (सोमनाथ गुप्त)
- तुलसी (रामबहोरी शुक्ल)
- काव्य-प्रदीप (रामबहोरी शुक्ल)
- आलोचना प्रवेश (प्यारेलाल शर्मा)
- प्रबन्ध प्रभाकर (गुलाबराय)
- सामयिक निबन्ध (इन्द्र एम० ए०)
- कालेज निबन्ध (रोशनलाल सिंहल)
- खड़ी बोली के गौरव ग्रन्थ (विश्वम्भर मानव)
- पदमावत का ऐतिहासिक आधार (इन्द्रचन्द्र नारंग)
- पदमावत-सार (इन्द्रचन्द्र नारंग)
- गुञ्जन का अनुशीलन (बलदेवप्रसाद शुक्ल)
- भूषण ग्रन्थावली सटीक (देवचन्द्र)
- श्री गांधीचरितमानस (विद्याधर महाजन)

विविध

- जेल में तीस बरस (त्रैलोक्यनाथ चक्रवर्ती)
- शिल्पमाला (विद्याधरी जौहरी) २ भाग
- बदलते दृश्य (राजवल्लभ ओझा)
- गृह विज्ञान (कंचनलता सब्बरवाल)

हिन्दी-भवन, जालन्धर और इलाहाबाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रयाग, साहित्य भवन लि०, १९५५, पृ० ११८, डि०, ६ रु०, उ० प्र०, (५५-५६)।

अवहट्ट भाषा का प्रथम विस्तृत अध्ययन एवं विद्यापति के 'कीर्तिलता' नामक ग्रन्थ की भाषा का विवेचन तथा मूल पाठ का संशोधन हिन्दी अनुवाद सहित।

—शिवसहाय पाठक (प्रो०) : **पद्मावत का काव्य सौन्दर्य :** बम्बई, हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय, १९५६, पृ० २५१, डि०, ५ रु०, उ० प्र०, (५६-५७)।

हिन्दी के अमरकाव्य 'पद्मावत' के काव्य-सौन्दर्य का विवेचन। लेखक द्वारा एम० ए० परीक्षा के लिए निबन्ध के रूप में लिखित।

—श्रीशकुमार : **मानस बालकाण्ड के स्रोत :** वाराणसी, लाभ प्रकाशन, १९५७, पृ० १४२, डि०, ५ रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

बालकाण्ड की कथाओं के उद्गम स्रोतों का प्रामाणिक और स्पष्ट विवेचन। (कथा, संवाद, वर्णन, आध्यात्मिक सिद्धान्त, सुभाषित और सूक्तियाँ नामक पाँच शीर्षकों में)

—एस० शंकरराजू नायडू : **कम्बर और तुलसी अथवा रामायण में राम सीता पूर्वराग :** मद्रास, मद्रास यूनिवर्सिटी १९५६, रॉ०, पृ० १४३, ६ रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

कम्बर रामायण और तुलसीकृत रामायण में राम-सीता के पूर्व राम का गवेषणात्मक अध्ययन।

—हरवंशलाल शर्मा (डॉ०) : **सूर और उनका साहित्य :** अलीगढ़, भारत प्रकाशन मन्दिर, १९५४, पृ० ५२६, डि०, ९ रु०, उ० प्र०, (५५-५६)।

सूरदास एवं उनके साहित्य का विद्वत्तापूर्ण विवेचन। १२ पृष्ठों की भूमिका एवं ३८ पृष्ठों के परिशिष्ट में आवश्यक अन्य तथ्यों पर प्रकाश।

—हीरालाल दीक्षित (डॉ०) : **आचार्य केशवदास :** लखनऊ, लखनऊ विश्वविद्यालय, २०११ वि०, पृ० ४३१, रॉ०, १० रु०, उ० प्र०, (५५-५६)।

लखनऊ विश्वविद्यालय की पी-एच० डी० की उपाधि के लिए स्वीकृत प्रबन्ध। केशवदास के जीवन, व्यक्तित्व तथा उनकी कृतियों का मूल्यांकन।

आलोचना मत साहित्य

—दीनदयाल गुप्त (डॉ०) : **अष्टछाप और वल्लभ सम्प्रदाय, प्रथम भाग :** प्रयाग, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, २००४ वि०, पृ ३९१, द्वितीय भाग, पृ० ३९३-९२३, रॉ०, दोनों भाग २० रु०, उ० प्र०, (५२) तथा हि० सा० स० मंगला०, (२००६ वि०)।

ब्रज का भौगोलिक वर्णन, अष्टछाप के समय की राजनीतिक और सामाजिक दशा का वृत्तान्त, विभिन्न सम्प्रदायों की विवेचना, कवियों का जीवन-चरित्र और उनकी रचनाओं की समीक्षा तथा वल्लभ सम्प्रदाय और उसके कवियों के दार्शनिक विचार आदि का गवेषणात्मक अध्ययन। प्रयाग विश्वविद्यालय द्वारा डी० लिट्० की उपाधि के लिए स्वीकृत प्रबन्ध।

—विजयेन्द्र स्नातक (डॉ०) : **राधावल्लभ सम्प्रदाय सिद्धान्त और साहित्य :** दिल्ली, नेशनल पब्लिशिंग हाउस (हि० अ० प० दिल्ली वि० वि०), २०१४ वि०, पृ० ६१२, रॉ०, १८ रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

सिद्धान्त और साहित्य नामक दो खण्डों में विभक्त करके राधावल्लभ सम्प्रदाय का सांगोपांग प्रतिपादन। दिल्ली विश्वविद्यालय द्वारा पी-एच० डी० की उपाधि के लिए स्वीकृत प्रबन्ध। परिशिष्ट में राधावल्लभीय वंश-परम्परा का वर्णन एवं विन्दु तथा नादवंशीय साहित्य-सूची।

—विमलकुमार जैन (डॉ०) : **सूफीमत और हिन्दी साहित्य :** दिल्ली, आत्माराम एण्ड सन्स (हि० अ० प० दिल्ली वि० वि०), १९५५, पृ० २७१, डि०, ८ रु०, उ० प्र०, (५५-५६)।

सूफी सिद्धान्त और हिन्दी साहित्य के पारस्परिक सम्बन्धों का विवेचन। दिल्ली विश्वविद्यालय द्वारा पी-एच० डी० की उपाधि के लिए स्वीकृत प्रबन्ध।

—रामपूजन तिवारी : **सूफीमत साधना और साहित्य :** बनारस, ज्ञानमण्डल लि०, २०१३ वि०, पृ० ५७५, डं० क्रा०, ११ रु०, उ० प्र०, (५६-५७)।

सूफीमत की साधनात्मक एवं साहित्यिक प्रवृत्तियों का अध्ययन।

आलोचना, काव्य सामान्य

—ओंप्रकाश (डॉ०) : **हिन्दी काव्य और उसका सौन्दर्य :**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिल्ली, भारती साहित्य मन्दिर, १९५७, पृ० २६८, डि०, ८ रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

वीरगाथाकाल से रीतिकाल तक की काव्य-वर्णन-सामग्री का अध्ययन। गत ६०० वर्षों की हिन्दी काव्यधारा पर प्रकाश।

—कमल कुलश्रेष्ठ (डॉ०) : **हिन्दी प्रेमाख्यानक काव्य :** अजमेर, चौधरी मानसिंह प्रकाशन, १९५३, पृ० ४१७, ड० क्रा०, ७·५० रु०, उ० प्र०, (५५)।

१५०० से १७५० ई० तक के हिन्दी प्रेमाख्यानक काव्य का गवेषणात्मक अध्ययन। प्रयाग विश्वविद्यालय द्वारा डी० फिल्० के लिए स्वीकृत प्रबन्ध।

—किरणकुमारी गुप्ता (डॉ०) : **हिन्दी काव्य में प्रकृति-चित्रण :** प्रयाग, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, २००६ वि०, पृ० ४८४, डि०, ९ रु०, उ० प्र०, (५१)।

प्रकृति-चित्रण के सिद्धान्तों का प्रथम खण्ड में और अपने युग के विशिष्ट काव्यकारों के प्रकृति के प्रति दृष्टि-कोण का द्वितीय खण्ड में निर्देशन।

—केशरी नारायण शुक्ल : **आधुनिक काव्यधारा का सांस्कृतिक स्रोत :** काशी, सरस्वती मन्दिर, २००४ वि०, पृ० २३२, ड० क्रा०, ३·५० रु०, उ० प्र०, (५०)।

आधुनिक हिन्दी साहित्य के मूल में वर्तमान एवं उसे प्रभावित और संचालित करने वाली प्रवृत्तियों का अध्ययन।

—टीकमसिंह तोमर (डॉ०) : **हिन्दी वीर काव्य :** इलाहाबाद, हिन्दुस्तानी एकेडेमी, १९५४, पृ० ४१२, रॉ०, १२ रु०, उ० प्र०, (५५)।

१६०० से १८०० ई० तक के हिन्दी वीर-काव्यों का वैज्ञानिक एवं सुव्यवस्थित अध्ययन। इलाहाबाद विश्व-विद्यालय से डी० फिल्० की उपाधि के लिए स्वीकृत प्रबन्ध।

—त्रिभुवनसिंह : **आधुनिक हिन्दी कविता की स्वच्छन्द धारा :** वाराणसी, हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, १९५६, पृ० २२३, ड० क्रा०, ४ रु०, उ० प्र०, (५६-५७)।

हिन्दी कविता की स्वच्छन्द धारा का विवेचन तथा छाया-वाद के सम्बन्ध में अनेक भ्रान्त धारणाओं का निराकरण।

—परशुराम चतुर्वेदी : **भारतीय प्रेमाख्यान की परम्परा :** दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, १९५६, पृ० १६७, डि०, ३·५० रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

भारतीय प्रेमाख्यानों के वैविध्य एवं विकास सम्बन्ध में संक्षिप्त सारगर्भित विवेचन।

—प्रतिपालसिंह (डॉ०) : **बीसवीं शताब्दी के महाका** दिल्ली, ओरियंटल बुक डिपो, पृ० ३५०, डि०, ८·५० उ० प्र०, (५६)।

आगरा विश्वविद्यालय द्वारा पी·एच० डी० की उ के लिए स्वीकृत प्रबन्ध।

—भगीरथ मिश्र (डॉ०) : **हिन्दी रीति साहित्य :** दि राजकमल प्रकाशन, १९५६, पृ० १७१, डि०, ४ उ० प्र०, (५७-५८)।

हिन्दी-रीति-साहित्य के विकास और उसकी वि प्रवृत्तियों का प्रामाणिक विवेचन।

—रघुवंश (डॉ०) : **प्रकृति और हिन्दी काव्य :** प्र साहित्य भवन लि०, २००५ वि०, पृ० ५०२, ड० क्रा० ६·५० रु०, उ० प्र०, (५२-५३)।

प्रयाग विश्वविद्यालय की डी० फिल्० की उपाधि लिए स्वीकृत प्रबन्ध। मध्ययुगीन हिन्दी-काव्य का अध्ययन

—रवीन्द्रसहाय वर्मा (डॉ०) : **हिन्दी काव्य पर आं प्रभाव :** कानपुर, पद्मजा प्रकाशन, २०११ वि०, पृ० २ डि०, ६ रु०, उ० प्र०, (५५)।

हिन्दी कविता पर आंग्ल प्रभाव का अध्ययन। प्र भाग में विषय की प्रारम्भिक पृष्ठभूमि और द्वितीय में आंग्ल प्रभाव का विवेचन। प्रयाग विश्वविद्यालय द्वा डी० फिल्० के लिए स्वीकृत प्रबन्ध।

—राजेश्वरप्रसाद चतुर्वेदी, : **रीतिकालीन कविता एवं शृं रस का विवेचन** : आगरा, सरस्वती पुस्तक सदन, २० वि०, पृ० ५३५, ड० क्रा०, ६·५० रु०, उ० प्र०, (५५)

१६०० से १८५० ई० तक की रीतिकालीन कवि एवं शृंगार रस का विवेचन। आगरा विश्वविद्यालय पी-एच० डी० की उपाधि के लिए स्वीकृत प्रबन्ध।

—राममूर्ति त्रिपाठी : **व्यंजना और नवीन :** कवि वाराणसी, नागरी प्रचारिणी सभा, २०१४ वि०, २१५, डि०, ५ रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

नवीन कविता के अध्ययन में प्राचीन आचार्यों विवेचन-पद्धति की उपयोग-विधि। व्यंजन-वृत्ति का स्व प्रसार एवं उसके व्यवहार पक्ष का प्रतिपादन।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

—रामेश्वरलाल खंडेलवाल, (भूमिका विजयेन्द्र स्नातक), **कविता में प्रकृति-चित्रण :** दिल्ली, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, १९५४, पृ० १९९, ड० क्रा०, ४ रु०, उ० प्र०, (५५-५६)।

सिद्धान्त-समीक्षा एवं विवेचन, सौन्दर्य-दृष्टि एवं शास्त्र-दृष्टि के समन्वयात्मक भाव से विषय का प्रतिपादन। विजयेन्द्रजी की १९ पृष्ठों की सारगर्भित भूमिका द्रष्टव्य।

—विजयशंकर मल्ल : **हिन्दी काव्य में प्रगतिवाद :** बनारस, सरस्वती मन्दिर, १९५०, पृ० १८८, ड० क्रा०, २.५० रु०, उ० प्र०, (५०)।

प्रगतिवाद के सैद्धान्तिक और व्यावहारिक पक्ष का निरूपण।

—शकुन्तला शर्मा (कु०) : **आधुनिक काव्य में नारी भावना :** बनारस, सरस्वती मन्दिर (स० संसद् की ओर से), १९५२, पृ० २४०, ड० क्रा०, ४ रु०, उ० प्र०, (५२)।

आधुनिक काव्य में नारी-भावना का खोजपूर्ण विवेचन।

—शम्भूनाथ सिंह (डॉ०) : **हिन्दी महाकाव्य का स्वरूप-विकास :** वाराणसी, हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, १९५६, पृ० ७१०, डि०, १२ रु०, उ० प्र०, (५६-५७)।

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से पी-एच० डी० की उपाधि के लिए स्वीकृत प्रबन्ध।

—शम्भूनाथ सिंह : **आधुनिक हिन्दी काव्य में निराशावाद :** उ० प्र०, (५५-५६)।

—शैलकुमारी (डॉ०) : **आधुनिक काव्य में नारी भावना :** इलाहाबाद, हिन्दुस्तानी एकेडेमी, १९५१, पृ० २६४, रॉ०, ३ रु०, हि० सा० स० सेक०, (२००८ वि०)।

आधुनिक काव्य में नारी-भावना का विश्लेषण एवं गवेषणात्मक अध्ययन। प्रयाग विश्वविद्यालय द्वारा डी० फिल्० के लिए स्वीकृत प्रबन्ध।

—सत्यनारायण पाण्डेय : **कृष्णकाव्य की परम्परा :** लखनऊ, हिन्दुस्तानी बुक डिपो, २००९ वि०, पृ० २८३, ड० क्रा०, ५ रु०, उ० प्र०, (५२-५३)।

वैदिक काल से आधुनिक काल तक के साहित्य में भगवान् कृष्ण के विविध स्वरूपों के कार्यक्रम का विवेचनात्मक दर्शन।

—सरजूप्रसाद अग्रवाल : **अकबरी दरबार के हिन्दी कवि :** लखनऊ, लखनऊ विश्वविद्यालय, २००७ वि०, पृ० ४५६, रॉ०, ९ रु०, उ० प्र०, (५२)।

अकबर के दरबार से सम्बन्ध रखने वाले कतिपय हिन्दी कवियों का विस्तृत अध्ययन। लखनऊ विश्वविद्यालय द्वारा पी-एच० डी० के लिए स्वीकृत प्रबन्ध।

—सरला शुक्ला (श्रीमती) : **हिन्दी साहित्य में भ्रमर गीत की परम्परा :** लखनऊ, लखनऊ विश्वविद्यालय, १९५३, पृ० १७५, रॉ०, ४ रु०, उ० प्र०, (५५)।

हिन्दी-साहित्य में भ्रमरगीत परम्परा के ऐतिहासिक, दार्शनिक एवं कलात्मक पक्षों का विशद विवेचन।

—सरला शुक्ला (श्रीमती) : **हिन्दी सूफी कवि और काव्य :** लखनऊ, लखनऊ विश्वविद्यालय, २०१३ वि०, पृ० ६२०, रॉ०, १२ रु०, उ० प्र०, (५६-५७)।

जायसी के परवर्ती हिन्दी सूफी कवियों और काव्यों का गवेषणात्मक अध्ययन। लखनऊ विश्वविद्यालय से पी-एच० डी० के लिए स्वीकृत प्रबन्ध।

—सुधीन्द्र (डॉ०) : **हिन्दी कविता में युगान्तर :** दिल्ली, आत्माराम एण्ड सन्स, १९५०, पृ० ५२२, डि०, ८ रु०, उ० प्र०, (५२)।

नवीन हिन्दी कविता के विकास का अध्ययन।

—सूर्यबलीसिंह : **हिन्दी की प्राचीन और नवीन काव्यधारा :** बनारस, नन्दकिशोर एण्ड ब्रदर्स, १९९९ वि०, पृ० १९५, ड० क्रा०, १ रु०, वि० प्र०, (५२-५३)।

हिन्दी की पुरानी और नई शैली की कविताओं की तुलनात्मक समीक्षा।

—हरिकान्त श्रीवास्तव (डॉ०) : **भारतीय प्रेमाख्यान काव्य :** वाराणसी, हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, १९५५, पृ० ४८३, डि०, १० रु०, उ० प्र०, (५५-५६)।

सं० १००० से १९१२ तक भारतीय प्रेमाख्यान-काव्य का अध्ययन। पी-एच० डी० की उपाधि के लिए स्वीकृत प्रबन्ध।

आलोचना, नाटक

—दशरथ ओझा (डॉ०), (भूमिका हजारीप्रसाद द्विवेदी) : **हिन्दी नाटक उद्भव और विकास :** दिल्ली, राजपाल एण्ड सन्स, १९५४, पृ० ५५६, ड० क्रा०, ९ रु०, उ० प्र०, (५५) तथा बि० रा० प०, (५७-५८)।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे कुछ अनमोल पुष्प

आधुनिक निबन्ध

श्री रामप्रसाद किचलू तथा श्री केशनी प्रसाद चौरसिया द्वारा लिखित १२५ वर्णनात्मक, विचारोत्तेजक, व्याख्यात्मक एवं भावनासिक्त निबन्धों का संग्रह जो पूरे भारतवर्ष में विद्यार्थियों के अध्ययन में एक आवश्यक तथा बेजोड़ पुस्तक मानी जाती है। चौथा संस्करण, १९५८ रु० ३·५०

इन्द्रधनुष

प्रसिद्ध एकांकीकार डॉ० रामकुमार वर्मा के सात नये सांस्कृतिक एकांकियों का संग्रह। रु० ३·००

अनजान रास्ता

भारतीय पंचवर्षीय योजना पर आधारित एक सम्पूर्ण सामाजिक नाटक। उत्तर प्रदेश सरकार ने इसको बहुत सराहा है। लेखक श्री 'आनन्द'। जुलाई १९५८ रु० १·५०

समाज से दूर

उपन्यास की दुनिया में एक नया मोड़—'समाज से दूर' हमारी एक अनुपम नई भेंट है। ले० श्री 'आनन्द'। जुलाई १९५८ रु० ३·००

हिन्दी ग्रामर (इंगलिश-हिन्दी)

अहिन्दी-भाषियों के लिए हिन्दी सीखने में एक अध्यापक का काम करेगी। लेखक श्री मोतीलाल चतुर्वेदी। १९५८ रु० १·७५

हिन्दी आलेखन

श्री रामप्रसाद किचलू द्वारा लिखित हिन्दी में 'ड्राफ्टिंग' की शिक्षा देने वाला अपूर्व और उपयोगी प्रकाशन। रु० १·५०

एकमात्र अधिकृत प्रकाशक

राजकिशोर पब्लिकेशन्स

१८ बी, एडमान्स्टन रोड, इलाहाबाद

हिन्दी नाटकों की दीर्घकालीन परम्परा और उसकी विशाल पृष्ठभूमि का अध्ययन। दिल्ली विश्वविद्यालय द्वारा पी-एच० डी० की उपाधि के लिए स्वीकृत प्रबन्ध।

—देवदत्त शास्त्री (सम्पा०) : **अभिनय दर्पण** : इलाहाबाद, जननी कार्यालय, १९५६, पृ० १३८, ड० क्रा०, २.५० रु०, उ० प्र०, (५६-५७)।

आचार्य नन्दिकेश्वर लिखित अभिनय-कला सम्बन्धी विख्यात संस्कृत ग्रन्थ 'अभिनय दर्पण' का आलोचनात्मक परिचय एवं उसकी स्वतन्त्र व्याख्या।

—श्रीकृष्णदास : **हमारी नाट्य परम्परा** : प्रयाग, साहित्यकार संसद, (वितरक राजकमल प्रकाशन), १९५६, पृ० ७३७, ड० क्रा०, (सचित्र), १० रु०, उ० प्र०, (५६-५७)।

भारतीय नाट्यकला की विविधता में व्याप्त तत्त्वगत एकता का परिचायक प्रामाणिक ग्रन्थ। लेखक की इक्कीस पृष्ठों की विस्तृत भूमिका तथा परिशिष्ट में हिन्दी-नाट्य साहित्य के २३० नाटककारों के नाटकों की सूची द्रष्टव्य।

—हरिश्चन्द्र खन्ना : **रेडियो नाटक** : दिल्ली, आत्माराम एण्ड सन्स, १९५५, पृ० २८१, डि०, ६ रु०, उ० प्र०, (५५-५६)।

रेडियो नाट्य के सिद्धान्त, इतिहास तथा विविध रूपों की रचना का विवेचन।

आलोचना, कथा-साहित्य

—गंगाप्रसाद पाण्डेय : **हिन्दी कथा साहित्य** : इलाहाबाद, भारती भण्डार, २००८ वि०, पृ० २३०, ड० क्रा०, ३ रु०, उ० प्र०, (५२)।

हिन्दी-कथा-साहित्य तथा उसके विशिष्ट कथाकारों की प्रतिभा-प्रवृत्तियों तथा भाव-धाराओं का अध्ययन।

—त्रिभुवन सिंह : **हिन्दी उपन्यास और यथार्थवाद** : वाराणसी, हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, २०१२ वि०, पृ० २५०, डि०, ५ रु०, उ० प्र०, (५५-५६)।

यथार्थवाद के स्वरूप और इतिहास का विवेचन तथा हिन्दी-उपन्यासों में पाई जाने वाली यथार्थवाद की विभिन्न प्रवृत्तियों का विश्लेषण।

—देवराज उपाध्याय (डॉ०) : **आधुनिक हिन्दी कथा साहित्य**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और मनोविज्ञान : प्रयाग, साहित्य भवन लि०, १९५६, पृ० ३५२, डि०, १० रु०, उ० प्र०, (५६-५७)।

राजपूताना विश्वविद्यालय द्वारा डाक्टरेट के लिए स्वीकृत प्रबन्ध। मनोवैज्ञानिक उपपत्तियों के दृष्टिकोण से प्रमुख कथाकारों की कृतियों का अध्ययन।

—रामदरश मिश्र : **ऐतिहासिक उपन्यासकार वृन्दावनलाल वर्मा** : पटना, अन्तर्राष्ट्रीय प्रकाशन मण्डल, १९५५, पृ० १३५, डि० क्रा०, २ रु०, उ० प्र०, (५५-५६)।

वर्माजी के ऐतिहासिक उपन्यासों की समीक्षा।

—रामस्वरूप चतुर्वेदी : **शरद् के नारी पात्र** : काशी, भारतीय ज्ञानपीठ, १९५५, पृ० ३५२, ड० क्रा०, ४ रु०, उ० प्र०, (५६-५७)।

शरद् के नारी-पात्रों का उनकी रचनाओं की समयानुक्रमणिका के आधार पर आलोचनात्मक अध्ययन।

—लक्ष्मीनारायण लाल (डॉ०) : **हिन्दी कहानियों की शिल्पविधि का विकास** : प्रयाग, साहित्य भवन लि०, १९५३, पृ० ३६२, डि०, १० रु०, उ० प्र०, (५३-५४)।

हिन्दी-कहानियों की शिल्पविधि के वैज्ञानिक विकास-क्रम और उनकी प्रवृत्तियों का विवेचन। प्रयाग विश्वविद्यालय की डी० फिल्० की उपाधि के लिए स्वीकृत प्रबन्ध।

हिन्दी निबन्ध, सामान्य

—गुलाबराय : **अध्ययन और आस्वाद** : दिल्ली, आत्माराम एण्ड सन्स, १९५७, पृ० ४४३, ड० क्रा०, ७·५० रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

चालीस साहित्यिक निबन्धों का संकलन।

—कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर' : **माटी हो गई सोना** : काशी, भारतीय ज्ञानपीठ, १९५७, पृ० १२३, ड० क्रा०, २ रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

बल और बलिदान की जीवन-चेतना देने वाले १७ निबन्ध।

—कृष्णदेव प्रसाद गौड़ : **धन्यवाद** : वाराणसी, हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, २०१३ वि०, पृ० ११४, ड० क्रा०, १·७५ रु०, उ० प्र०, (५५-५६)।

आत्मव्यंजक २६ निबन्धों का संकलन, व्यंग के पुट सहित।

SOME USEFUL BOOKS

Principles of Literary Criticism.
by Lascelles Abercrombie, Rs. 3. 75.

Economic Theory and Underdeveloped Regions.
by Gunnar Myrdal, Rs. 4. 50.

The New Economy of China.
by Dr. Gyanchand, Rs. 16. 00.

Our Economic Problem.
by Wadia & Merchant, Rs. 9. 00.

The Monetary & Fiscal Policy of India.
by K. C. Chacko, Rs. 15. 00.

Mercantile Law.
by James Menezes, Rs. 12. 50.

Business Organisation.
by Satyanarayana and Others, Rs. 12. 50.

Statistics.
by Y. D. Kesker, Rs. 10. 50.

Introduction to Economics.
by C. N. Vakil & H. N. Pathak, Rs. 5. 00.

Economic Analysis.
by B. S. Bhanage, Rs. 7. 00.

Modern Economic Development of Great Powers.
by D. S. Savkar, Rs. 8. 00.

Salesmanship, Sales Management & Advertising.
by Satyanarayana, Rs. 7. 50.

Planning for an Expanding Economy.
by C. N. Vakil and P. R. Brahmanand, Rs. 8. 00.

Woman in Modern India.
by Neera Desai, Rs. 10. 00.

VORA & CO., PUBLISHERS PRIVATE LTD.
3, Round Building, Bombay 2.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

—कृष्णदेव प्रसाद गौड़ : **साहित्य प्रवाह** : वाराणसी, कल्याणदास एण्ड ब्रदर्स, १९५९, पृ० २९८, डि०, ६ रु०, उ० प्र०, (५९-५७)।

लेखक के आलोचनात्मक लेखों का संग्रह।

—ज्योत्स्ना द्विवेदी : **हिन्दी किशोर साहित्य** : बनारस, नन्दकिशोर एण्ड ब्रदर्स, १९५२, पृ० २१४, ड० क्रा०, २ रु०, उ० प्र०, (५२-५३)।

मनोविज्ञान, शिक्षाशास्त्र तथा साहित्य के सिद्धान्तों के आधार पर हिन्दी किशोर साहित्य का एक अध्ययन। अन्त में किशोर साहित्य की पुस्तकों और पत्रिकाओं की एक लघु सूची।

—ठाकुर प्रसाद सिंह : **चौथी पीढ़ी** : लखनऊ, राष्ट्रीय प्रकाशन मन्दिर, १९५७, पृ० १८६, ड० क्रा०, ३ रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

१९ साहित्यिक निबन्धों का संकलन।

—नन्ददुलारे बाजपेयी : **आधुनिक हिन्दी साहित्य** : इलाहाबाद, भारती भण्डार, २०१३ वि०, पृ० ४७१, डि०, ७ रु०, उ० प्र०, (५२)।

हिन्दी साहित्य की कतिपय मुख्य कृतियों और प्रवृत्तियों के विवेचक समीक्षात्मक निबन्धों का संकलन।

—पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी : **कुछ** : प्रयाग, इंडियन प्रेस, पृ० २१९, ड० क्रा०, १·५० रु०, उ० प्र०, (५०)।

कुछ साहित्यिक निबन्धों का संग्रह।

—मन्मथनाथ गुप्त : **साहित्य कला समीक्षा** : दिल्ली, साहित्य प्रकाशन, १९५४, पृ० २७६, डि०, ६ रु०, उ० प्र०, (५५-५६)।

लेखक के २८ आलोचनात्मक लेखों का संग्रह।

—रामचन्द्र तिवारी (डॉ०) : **हिन्दी का गद्य साहित्य** : गोरखपुर, विश्वविद्यालय प्रकाशन, १९५५, पृ० ३१९, डि०, ६ रु०, उ० प्र०, (५६)।

हिन्दी के गद्य-साहित्य से सम्बन्धित सम्पूर्ण सामग्री का प्रस्तुतीकरण।

—रामवृक्ष बेनीपुरी : **माटी की मूरतें** : पटना, बेनीपुरी प्रकाशन, १९४८, पृ० १३८, ड० क्रा०, १·५० रु०, के० स० प्र० वि० पु० प्रति०।

ग्राम-जीवन के नौ सशक्त पात्रों के शब्द-चित्र।

—रावी : **क्या मैं अन्दर आ सकता हूँ** : काशी, भारतीय ज्ञानपीठ, १९५९, पृ० १६०, ड० क्रा०, २·५० रु०, उ० प्र०, (५६-५७)।

वैयक्तिक शैली के शृङ्खलाबद्ध २३ लेखों की माला।

—ललिताप्रसाद सुकुल : **इनसे** : वाराणसी, हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, १९५७, पृ० १०४, डि०, २·५० रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

लेखक के १८ निबन्धों का संग्रह।

—ललिताप्रसाद सुकुल : **काव्य चर्चा** : कलकत्ता, साहित्य सौंध, २००८ वि०, पृ० १९६, ड० क्रा०, २·५० रु०, उ० प्र०, (५२-५३)।

११ साहित्यिक निबन्धों का संकलन।

—विद्यानिवास मिश्र : **कदम की फूली डाल** : इलाहाबाद, न्यू लिटरेचर, पृ० १८३, ड० क्रा०, ३ रु०, उ० प्र०, (५५-५६)।

तीन खण्डों में २२ निबन्धों का संकलन।

—विद्यानिवास मिश्र : **चितवन की छाँह** : इलाहाबाद, सरस्वती प्रेस, १९५३, पृ० १४०, ड० क्रा०, २·५० रु०, उ० प्र०, (५४)।

१८ साहित्यिक निबन्धों का संकलन।

—विद्यानिवास मिश्र : **तुम चन्दन हम पानी** : इलाहाबाद, भारती भण्डार, २०१३ वि०, पृ० १७७, ड० क्रा०, ३ रु०, उ० प्र०, (५६-५७)।

भारतीय संस्कृति की मूल मान्यताओं, भारतीय संस्कृति के आराध्यों एवं भारतीय मांगलिक प्रतीकों पर लिखित चौबीस व्यक्तिगत निबन्धों का संकलन।

—विनयमोहन शर्मा : **दृष्टिकोण** : बनारस, नन्दकिशोर एण्ड ब्रदर्स, १९५०, पृ० २०२, डि०, ४ रु०, उ० प्र०, (५२)।

आलोचनात्मक ३२ निबन्धों का संकलन।

—शम्भूप्रसाद बहुगुणा : **विराट् हृदय** : लखनऊ, अलकनन्दा मन्दाकिनी प्रकाशन, पृ० २५२, ड० क्रा०, ४ रु०, उ० प्र०, (५२)।

साहित्यिक आलोचनात्मक निबन्धों का संकलन।

—शान्तिप्रिय द्विवेदी : **आधान** : वाराणसी, हिन्दी प्रचारक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस मास के नये प्रकाशन

डॉ० रांगेय राघव द्वारा अनूदित

हिन्दी शेक्सपियर सीरीज़ के अन्तर्गत तीन और नये नाटक

निष्फल प्रेम (LOVE'S LABOUR'S LOST)

भूल भुलैयाँ (COMEDY OF ERRORS)

परिवर्तन (TAMING OF THE SHREW)

प्रत्येक पुस्तक का मूल्य केवल दो रुपये

★ ★ ★ ★ ★ ★

ज्ञान-विज्ञान सीरीज़ के अंतर्गत नई पुस्तकें

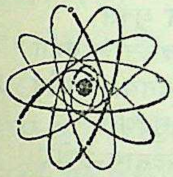

एटम की कहानी

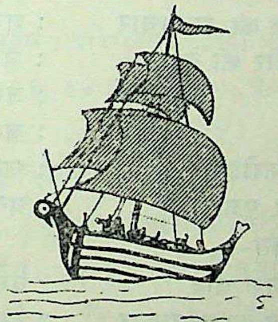

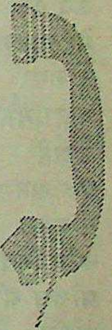

टेलीफोन की कहानी

कोलम्बस की कहानी

वायुयान की कहानी

प्रत्येक पुस्तक का मूल्य दो रुपये

राजपाल एण्ड संज़ कश्मीरीगेट, दिल्ली-६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रत्येक पुस्तकालय के लिए अनुपम प्रकाशन

इसी मास के प्रकाशन

उपन्यास

सूखे पेड़, सब्ज़ पत्ते : गुलशन नन्दा ५)

आँचल में दूध आंखों में पानी : यादवेन्द्र शर्मा चन्द्र ५)

ग़ज़ाला : शौकत थानवी ३।।।)

कहानियाँ

उर्दू की सर्वश्रेष्ठ ग़ज़लें : सं० नूरनबी अब्बासी २।।)

विज्ञान

दो गज़ ज़मीन : टालस्टाय ३)

आगामी मास के आकर्षण

जीवन-दर्शन

आपका व्यक्तित्व : आनन्द कुमार ४।।)

उपन्यास

तन के उजले मन के काले : जमनादास 'अख्तर' ४)

नसीम : शौकत थानवी ३।।।)

काव्य

चन्द्रलोक (सचित्र) : बसन्तकुमार चटर्जी २।।)

अन्य महत्त्वपूर्ण प्रकाशन

काव्य—

दीवाने ग़ालिब (उर्दू काव्य) : सं० मुग़नी अमरोहवी नूरनबी अब्बासी ६)

राजनीतिक व ऐतिहासिक—

मेवाड़ : टॉड ३।।।)

बाचा खान : फ़ारिग बुखारी ६)

नेहरू विश्व-शान्ति की खोज में : ओमप्रकाश गुप्ता ४।।)

आध्यात्मिक—

जीना सीखो : देसराज व गन्धर्व ३)

नाटक—

जब पर्दा उठा : हास्य एकांकी : प्रकाश पण्डित ४।)

मेरे नाटक : रवीन्द्रनाथ टैगोर ३।।)

डाकघर : रवीन्द्रनाथ टैगोर ।।=)

कहानियाँ—

उड़ानें : कृष्णचन्द्र ३।।)

एक खत एक खुशबू : कृष्णचन्द्र ३।)

सीमान्त : रवीन्द्रनाथ टैगोर २।।)

चाँद सितारे : टैगोर २।।)

आँचल और आंसू : शिक्षा रानी निगम ३।।)

पागल : खलील जिब्रान १।।)

लायसेंस : मिन्टो ३।।)

उपन्यास—

एक नदी दो पाट : गुलशन नन्दा ४।)

पत्थर के होंठ : गुलशन नन्दा ३।।।)

बादल छँट गए : कृष्णचन्द्र ३)

ललिताङ्गी : यादवचन्द्र जैन ३।।।)

इन्शा अल्लाह : शौकत थानवी ३)

कुतिया : शौकत थानवी ४।)

कार्टून : शौकत थानवी ४।)

चार सौ बीस : शौकत थानवी ३।)

साँच को आँच : शौकत थानवी ३।।।)

मिट्टी का कलंक : यादवेन्द्र शर्मा चन्द्र ३)

तूलिका : सोमर सेट मॉम ५।)

धरती की बेटी : कमल शुक्ल ३।।)

राख की परतें : कमल शुक्ल ३।)

एक ही पतवार : शिवव्रतलाल वर्मन ३।)

शाही लकड़हारा : शिवव्रतलाल वर्मन ३।।)

प्रेम पुजारिन : पं० सुदर्शन २।)

कौन किसी का ? : रवीन्द्रनाथ टैगोर २।)

समाज का अत्याचार : शरत् चन्द्र चटर्जी २।।।)

काश्मीर की बेटी : जमनादास 'अख्तर' २।।।)

आग : जमनादास 'अख्तर' २।।)

आँसू : जमनादास 'अख्तर' ३।)

बुर्दा फरोश : जमनादास 'अख्तर' २।)

शैतान पुजारी : अनु० तीर्थराम २।।)

विज्ञान—

वैज्ञानिक चाँद : बसन्तकुमार चटर्जी १।।)

विज्ञान का चमत्कार : देसराज व गन्धर्व ।।=)

विज्ञान के मनोरंजन : श्री शरण ।।=)

कालिदास साहित्य—(अनु० श्री शरण)

रघुवंश, मेघदूत, विक्रमोर्वशी, कुमारसम्भव, अभिज्ञान शाकुन्तल, मालविकाग्निमित्र, नलोदय

मूल्य प्रत्येक का १)

व्यापारियों और लायब्रेरियों को विशेष सुविधा, बड़े सूचीपत्र और विवरण के लिए लिखिये।

नारायण दत्त सहगल एण्ड सन्ज़, दरीबा कलां, देहली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तकालय, १९५७, पृ० १५२, डं० क्रा०, २·५० रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

लेखक के १४ साहित्यिक निबन्धों का संकलन।

—शान्तिप्रिय द्विवेदी : **धरातल** : काशी, ज्ञान मण्डल पुस्तक भण्डार लि०, २००५ वि०, पृ० १४७, डं० क्रा०, २·७५ रु०, उ० प्र०, (५१-५२)।

उद्योग, संस्कृति और कला का स्वाभाविक समन्वयात्मक निबन्ध-संग्रह।

—शान्तिप्रिय द्विवेदी : **पथ चिह्न** : काशी, भारतीय ज्ञानपीठ, पृ० १११, डं० क्रा०, २ रु०, उ० प्र०, (५०)।

लेखक द्वारा अपनी स्वर्गीया बहन को भारतमाता की आत्मा के रूप में स्मरण करके अपने युग और जीवन सम्बन्धी लिखित ६ निबन्धों का संकलन।

—शान्तिप्रिय द्विवेदी : **पद्मनाभिका** : वाराणसी, कल्याणदास एण्ड ब्रदर्स, २०१३ वि०, पृ० १५४, डं० क्रा०, ६ रु०, उ० प्र०।

लेखक के ९ निबन्धों का संग्रह।

—शान्तिप्रिय द्विवेदी : **प्रतिष्ठान** : इलाहाबाद, इण्डियन प्रेस लि०, १९५३, पृ० २२५, डं० क्रा०, ३ रु०, वि० प्र०, (५४-५५)।

जीवन और साहित्य के संस्थापक व्यक्तिगत, समीक्षात्मक निबन्ध एवं संस्मरण।

—शान्तिप्रिय द्विवेदी : **साकल्य** : वाराणसी, हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, १९५५, पृ० २५६, डं० क्रा०, ४ रु०, उ० प्र०, (५५-५६)।

लेखक के १६ विविध निबन्धों का संग्रह।

—शितिकण्ठ मिश्र (डॉ०), (भूमिका हजारीप्रसाद द्विवेदी) : **खड़ी बोली का आन्दोलन** : काशी, नागरी प्रचारिणी सभा, २०१३ वि०, पृ० ३६६, डिं०, ७ रु०, उ० प्र०, (५६-५७)।

खड़ी बोली की उत्पत्ति से आधुनिक विविध प्रवृत्तियों तक के विकास का विवेचन। काशी विश्वविद्यालय द्वारा पी-एच० डी० की उपाधि के लिए स्वीकृत प्रबन्ध।

—शिवदानसिंह चौहान : **साहित्यानुशीलन** : दिल्ली, आत्माराम एण्ड सन्स, १९५५, पृ० २९०, डिं०, ६ रु०, उ० प्र०, (५५-५६)।

साहित्य सम्बन्धी १७ और मूल्यांकन सम्बन्धी १७ निबन्धों का संग्रह।

—सद्गुरुशरण अवस्थी : **बुद्धितरंग** : कानपुर, साहित्य निकेतन, १९५०, पृ० १७८, डं० क्रा०, २·२५ रु०, उ० प्र०, (५२)।

लेखक के उच्चकोटि के विचार-प्रवर्तक कुछ साहित्यिक निबन्धों का संकलन।

—सुधाकर पाण्डेय : **सदा सुहागिन रूठ गई** : बनारस, हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, १९५४, पृ० १४३, डिं०, ३ रु०, उ० प्र०।

लेखक के आत्मव्यंजक १८ निबन्धों का संकलन।

पत्र साहित्य

—बैजनाथ सिंह 'विनोद' : **द्विवेदी पत्रावली** : काशी, भारतीय ज्ञानपीठ, १९५४, पृ० २२६, डं० क्रा०, (सचित्र), २·५० रु०, उ० प्र०, (५५)।

द्विवेदीजी के १८४ पत्रों का संकलन।

हास्य-व्यंग्य साहित्य

—अनन्तगोपाल शेवड़े : **तीसरी भूख** : इलाहाबाद, नीलाभ प्रकाशन, १९५५, पृ० १३०, डं० क्रा०, २·५० रु०, उ० प्र०, (५६-५७)।

१२ ललित रोचक हास्य-व्यंग भरे निबन्धों का संग्रह।

—कमला चौधरी (श्रीमती) : **आपन मरन जगत कं हांसी** : मेरठ, साहित्य सेवा सदन, १९५४, पृ० ११२, डिं०, ३ रु०, वि० प्र०, (५४-५५)।

९ अवधी, १० हिन्दी और २ उर्दू की (कुल २१) हास्य-व्यंगात्मक कविताएँ।

—कान्तानाथ पांडेय 'चोंच' : **ठाकुर ठेंगासिंह** : बनारस, पुस्तक सदन, २०१४ वि०, पृ० १७६, डं० क्रा०, ३ रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

हास्य-रस का लघु उपन्यास।

—कृष्णदेवप्रसाद गौड़ : **बिजली** : वाराणसी, कल्याणदास एण्ड ब्रदर्स, २०१३ वि०, पृ० १३५, डं० क्रा०, २.५० रु०, उ० प्र०।

हास्य-रस की ८६ रचनाएँ।

—कृष्णदेवप्रसाद गौड़ : **हुक्का पानी** : वाराणसी, पराग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशन, १९५७, पृ० १४८, ड० क्रा०, ३ रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

हास्य-व्यंग्य-प्रधान ३० आत्मव्यंजक निबन्धों का संग्रह।

—गोपालप्रसाद व्यास : **मैंने कहा** : दिल्ली, आत्माराम एण्ड सन्स, १९५१, पृ० १२३, डि०, (सचित्र), ३ रु०, उ० प्र०।

शिष्ट, सामाजिक, हास्य एवं व्यंग्य-विनोदों से परिपूर्ण १५ मौलिक तथा सचित्र निबन्धों का संग्रह।

—चन्द्रभूषण त्रिवेदी (रमई काका) : **फुहार** : लखनऊ, ग्राम साहित्य मन्दिर, १९५६, पृ० ९४, ड० क्रा०, १.२५ रु०, उ० प्र०, (५६-५७)।

हास्य-रस की कविताओं का संग्रह।

—बरसानेलाल चतुर्वेदी : **हाथी के पंख** : मथुरा, झिलमिल प्रकाशन, २०१३ वि०, पृ० १००, ड० क्रा०, १.५० रु०, उ० प्र०, (५६-५७)।

विनोदपूर्ण १८ लेखों का संग्रह।

—मोहनलाल गुप्त : **बनारसी रईस** : बनारस, चौधरी एण्ड सन्स, १९५६, पृ० १२५, ड० क्रा०, २.२५ रु०, उ० प्र०, (५६-५७)।

हास्य के व्यक्तिव्यंजक २१ निबन्धों का संकलन।

—मोहनलाल गुप्त : **राम झरोखा** : बनारस, मधु प्रकाशन, पृ० १६०, ड० क्रा०, उ० प्र०, (५५)।

हास्य-रस की कविताएँ।

—वासुदेव गोस्वामी : **बुद्धि के ठेकेदार** : रीवां, गोस्वामी पुस्तक सदन, १९५५, पृ० ८२, ड० क्रा०, १.२५ रु०, उ० प्र०, (५६-५७) तथा वि० प्र०, (५५-५६)।

परिष्कृत हास्य-रस के १४ लेख।

लोक-साहित्य

—कृष्णदेव उपाध्याय (डॉ०) : **लोक साहित्य की भूमिका** : प्रयाग, साहित्य भवन लि०, १९५७, पृ० ३१८, डि०, ७.५० रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

लोक-नाट्य को छोड़कर लोक-साहित्य के समस्त मुख्य रूपों का विवेचन।

—नरेन्द्र धीर : **मैं धरती पंजाब की** : खन्ना (पंजाब), क्रान्ति प्रकाशन, (मुख्य वि० राजकमल प्रकाशन), पृ० १९६, ड० क्रा०, ३.५० रु०, के० स० द्वि० वि० पु० प्रति०।

पंजाब के व्यक्तित्व, सभ्यता एवं संस्कृति की द्योतक पंजाबी लोक-साहित्य की परिचयात्मक पुस्तक।

लोक-गीत

—उमाशंकर शुक्ल : **बुन्देलखण्ड के लोकगीत** : इलाहाबाद, इण्डियन प्रेस लि०, २०१० वि०, पृ० १४८, डि०, २.२५ रु०, विं० प्र०, (५३-५४)।

बुन्देलखण्ड के विविध लोक-गीतों का समीक्षात्मक अध्ययन।

—सत्येन्द्र (डॉ०, सम्पा०) : **ब्रज लोक संस्कृति** : मथुरा, ब्रज साहित्य मण्डल, २००५ वि०, पृ० २२७, डि०, (सचित्र), ४ रु०, ना० प्र० स०।

लोक-जीवन और लोक-साहित्य के अध्ययन की प्रणाली पर प्रकाश डालने वाला ग्रन्थ। ब्रज की लोक-संस्कृति का विशेष संदर्भ सहित।

—कृष्णदेव उपाध्याय : **भोजपुरी ग्रामगीत** : प्रयाग,

हिन्दी के लोकप्रिय कवि

बच्चन

की दो नवीन अनूठी रचनाएँ

गीता साहित्य को अनोखी देन

जन-गीता

तुलसीकृत रामचरितमानस की लोकप्रिय शैली में सरस रूपान्तर !

बुद्ध और नाचघर

'हिन्दी ब्लैक्क वर्स' में बच्चन की स्फुट मौलिक कविताएँ

शीघ्र ही प्रकाशित हो रही हैं !

राजपाल एण्ड सन्ज़

कश्मीरी गेट, दिल्ली-६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी साहित्य सम्मेलन, २००० वि०, पृ० ३६८, ड०क्रा०, ४.५० रु०, ना० प्र० स० ।

भोजपुरी क्षेत्र के विविध लोकगीतों का संकलन और उनकी व्याख्या ।

—कृष्णलाल हंस : **निमाड़ी लोकगीत :** महा० शा० ।

—गोविन्द चातक (डॉ०) : **गढ़वाली लोकगीत** : देहरादून, जुगलकिशोर एण्ड कं०, पृ० ४००, ड० क्रा०, ५ रु०, उ० प्र०, (५७-५८) ।

गढ़वाली लोकगीत मूल, हिन्दी अनुवाद, टिप्पणियों तथा परिचयात्मक भूमिका सहित ।

—जगदीश त्रिगुणायत : **बाँसरी बज रही :** पटना, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, १९५७, पृ० ७२२, (सचित्र), ८ रु०, उ० प्र०, (५७-५८) ।

आदिवासी क्षेत्र के विशेषत: मुण्डा लोकगीतों का अनुवाद संग्रह । प्रथम खण्ड में मुण्डा भाषा और उसके साहित्य का परिचय । परिशिष्ट में एक मानचित्र तथा अन्य सामग्री ।

—रामनरेश त्रिपाठी : **ग्राम साहित्य** : प्रयाग, हिन्दी मन्दिर, १९५१, पृ० ३७२, ड० क्रा०, ५ रु०, उ० प्र०, (५३) ।

सोहर, अन्न प्राशन, मुण्डन, जनेऊ, नहछू और विवाह के गीतों का संकलन ।

—रामनरेश त्रिपाठी : **ग्राम साहित्य, दूसरा भाग** : दिल्ली, आत्माराम एण्ड सन्स, १९५२, पृ० ३३७, डि०, ७ रु०, उ० प्र०, (५३) ।

ज्ञानवर्द्धक और मनोरंजक लोक-कथाओं का संग्रह ।

—शिवसहाय चतुर्वेदी : **बुन्देली लोकगीत** : महा० शा० ।

—श्रीचन्द्र जैन : **विन्ध्य प्रदेश के लोकगीत :** (करमा) दिल्ली, राजपाल एण्ड सन्स, पृ० ४७, ड० क्रा०, ८७ न० पै०, विं० प्र० ।

विन्ध्य के आदिवासियों में प्रचलित करमा नृत्य के साथ गाये जाने वाले गीतों का संक्षिप्त संकलन व्याख्या सहित ।

—श्रीचन्द्र जैन : **विन्ध्य प्रदेश के आदिवासियों के गीत :** उ० प्र०, (५६-५७) ।

—श्रीचन्द्र जैन : **विन्ध्य के लोक-कवि** : वि० प्र० ।

—राम 'अनिल' : **कनउजी लोकगीत :** लखनऊ, लखनऊ विश्वविद्यालय, १९५७, पृ० २९५, ड० क्रा०, ४ रु०, उ० प्र०, (५७-५८) ।

पाँच अध्यायों में कनउजी लोकगीतों की पृष्ठभूमि का सांगोपांग विवेचन । परिशिष्ट में कुछ कनउजी लोक-गीतों का संग्रह ।

लोक-कथाएँ

—गोविन्द चातक (डॉ०) : **गढ़वाली लोक-कथाएँ** : देहरादून, मोहनी प्रकाशन, १९५८, पृ० २५०, ड० क्रा०, ३ रु०, बद्रीनाथ टेम्पल कमेटी द्वारा पुरस्कृत ।

गढ़वाल की लोक-कथाएँ मूल, हिन्दी अनुवाद, टिप्पणियों सहित ।

—पुरुषोत्तम मेनारिया : **राजस्थान की लोक कथाएँ** : दिल्ली, आत्माराम एण्ड सन्स, १९५४, पृ० ४०, फु० स्के०, (सचित्र), १.२५ रु०, के० स० तथा राज० स०, (५४-५५) ।

राजस्थान की १२ लोक-कथाओं का संग्रह ।

श्री हरजीमल डालमिया पुरस्कार समिति
तथा
उत्तर प्रदेश शासन द्वारा पुरस्कृत

राधावल्लभ सम्प्रदाय :
सिद्धान्त और साहित्य

भक्ति-सिद्धांत और साहित्य का गवेषणात्मक, विवेचनात्मक और तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करने वाला ग्रन्थ

लेखक—डॉ० विजयेन्द्र स्नातक एम० ए०, पी-एच० डी०, रीडर, हिंदी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय ।

राधावल्लभ सम्प्रदाय के सिद्धान्त और साहित्य का पहली बार हस्तलिखित ग्रन्थों के आधार पर इस शोध-ग्रन्थ में सर्वाङ्गीण विवेचन किया गया है । माधुर्य भक्ति और ब्रज के भक्ति-सम्प्रदायों के मर्म को हृदयङ्गम करने में इस ग्रन्थ से महत्त्वपूर्ण सहायता मिलेगी । भक्ति और शृङ्गार के रहस्य को समझने तथा रासलीला आदि के तत्त्वशोध में यह ग्रन्थ पथ-प्रदर्शक सिद्ध होगा । उत्तरार्द्ध खण्ड में साहित्य का अध्ययन नितांत मौलिक एवं हिन्दी साहित्य की समृद्धि में योग देने वाला है ।

नेशनल पब्लिशिंग हाउस
नई सड़क, दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

—राजशेष गिरि राव, के० : **आंध्र की लोक कथाएँ** : दिल्ली, आत्माराम एण्ड सन्स, १९५५, पृ० ५८, फु० स्के०, १·५० रु०, के० स०, (५६)।

आंध्र की चौदह लोक-कथाओं का संग्रह।

—शिवसहाय चतुर्वेदी : **गौने की विदा** : पटना, अजन्ता प्रेस, १९५३, पृ० १६४, ड० क्रा०, २ रु०, विं० प्र०, (५३-५४)।

बुन्देलखण्ड की लोक-कथाएँ।

—शिवसहाय चतुर्वेदी : **पाषाण नगरी** : दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, १९५०, पृ० २०४, ड० क्रा०, ३·५० रु०, उ० प्र०, (५२)।

बुन्देलखण्ड की लोक-कहानियां।

—श्रीचन्द्र जैन : **विन्ध्यभूमि की लोक कथाएँ** : दिल्ली, आत्माराम एण्ड सन्स, १९५४, पृ० ४३, फु० स्के०, (सचित्र), १ रु०, के० स० बाल प्रति० (५४) तथा वि० प्र०।

बालोपयोगी लोक-कथाओं का सँग्रह।

—श्रीचन्द्र जैन : **विन्ध्यभूमि की अमर कथाएँ** : वि० प्र०।

—सत्येन्द्र (डॉ०) : **ब्रज की लोक कहानियां** : मथुरा, ब्रज साहित्य मण्डल, २००४ वि०, पृ० १८७, डि०, ३·२५ रु०, ना० प्र० स०, काशी।

८ वर्गों में विभक्त ब्रज की विविध लोक-कथाओं का संग्रह।

उर्दू-साहित्य

—एहतमाम हुसैन (सैयद), अनु० शमशेर बहादुरसिंह : **उर्दू साहित्य का इतिहास** : दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, १९५७, पृ० ३२७, ड० क्रा०, ६ रु०, उ० प्र०, (५५-५६)।

प्रत्येक साहित्यिक की शैली, विचारधारा एवं व्यक्तिगत विशेषता सहित उर्दू साहित्य का सर्वांगीण संक्षिप्त इतिहास।

उर्दू-साहित्य-काव्य

—अयोध्याप्रसाद गोयलीय : **शेरओसखुन, पांच भागों में** : काशी, भारतीय ज्ञानपीठ, १९५१, प्र० भा०, पृ० ७७७, ड० क्रा०, ८ रु०, उ० प्र०, (५२)।

द्वितीय भाग, पृ० ३२१, ३ रु०, लखनऊ स्कूल के शायर।

तृतीय भाग, पृ० २६३, ३ रु०, मौजूदा दौर के गजलगो शायर।

चतुर्थ भाग, पृ० २५५, ३ रु०, ख्यातिप्राप्त वयोवृद्ध शायर।

पंचम भाग, पृ० २५४, ३ रु०, युवक शायर।

प्रारम्भ से सन् १९०० तक की उर्दू शायरी का प्रामाणिक इतिहास, निष्पक्ष आलोचना और इस अवधि में हुए प्रायः सभी गजलगो शायरों की श्रेष्ठतम रचनाओं का संकलन और परिचय।

—अयोध्याप्रसाद गोयलीय : **शेरओ शायरी** : काशी, भारतीय ज्ञानपीठ, १९५०, पृ० ६३६, ड० क्रा०, ८ रु०, उ० प्र०, (५२)।

प्राचीन और वर्तमान कवियों में सर्वप्रधान, लोकप्रिय ३१ कलाकारों के मर्मस्पर्शी पद्यों का संग्रह और उर्दू कविता की गतिविधि का आलोचनात्मक परिचय।

—एजाज़ हुसैन (सम्पा०) : **गजलों की बादशाह मीर** : इलाहाबाद, लॉ जर्नल प्रेस, १९५५, पृ० २८७, ड० क्रा०, २·५० रु०, उ० प्र०, (५५-५६)।

महाकवि मीर की गजलों, मसनवियों एवं रूबाइयों का संग्रह।

—एजाज़ हुसैन (डॉ०, सम्पा०) : **अकबर इलाहाबादी** : इलाहाबाद, लॉ जर्नल प्रेस, १९५४, पृ० १६०, ड० क्रा०, २·५० रु०, उ० प्र०, (५५-५६)।

शायर का परिचय, संक्षिप्त आलोचना एवं चुनी हुई कविताओं का संग्रह।

—कृष्णदेव प्रसाद गौड़ : **ग़ालिब की कविता** : वाराणसी, प्रसाद परिषद्, २०१४ वि०, पृ० ४७६, ड० क्रा०, (सचित्र) १० रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

ग़ालिब की समस्त उर्दू कविताएँ, प्रत्येक शेर पर टीका, उस पर टिप्पणी तथा काव्य की आलोचना।

—हीरालाल चोपड़ा : **डाक्टर इकबाल और उनकी शायरी** : वाराणसी, हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, १९५६, पृ० २०८, ड० क्रा०, ३·५० रु०, उ० प्र०, (५६-५७)।

डॉ० इकबाल का परिचय और उनकी शायरी का संक्षिप्त संकलन।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डॉ० प्रेमनारायण टंडन के पाँच नवीन महत्त्वपूर्ण प्रकाशन

उ० प्र० सरकार द्वारा पुरस्कृत और लखनऊ वि० वि० द्वारा पी-एच० डी० के लिए स्वीकृत थीसिस

सूर की भाषा

विषय-सूची—(१) व्रजभाषा और सूर की भाषा के अध्ययन का इतिहास, (२) व्रजभाषा—उसका विकास और सूर का भाषा-ज्ञान, (३) सूर की भाषा का वैज्ञानिक अध्ययन, (४) सूर की भाषा का व्याकरणिक अध्ययन, (५) सूर की भाषा का व्यावहारिक और शास्त्रीय अध्ययन। (६) सांस्कृतिक दृष्टि से सूर की भाषा का महत्व, (७) उपसंहार—समकालीन और परवर्ती व्रजभाषा कवियों से सूर की भाषा की तुलना एवं अध्ययन का सारांश।

परिशिष्ट—(१) सूर-काव्य में प्रयुक्त शब्दों की संख्या, (२) सूर-साहित्य और उसकी सम्पादन-समस्या, (३) नामानुक्रमणिका।

उत्तर प्रदेश सरकार ने अप्रैल, १९५८ में लेखक को ७००) का पुरस्कार देकर सम्मानित किया है।

रायल अठपेजी साइज़ ● पृष्ठ-संख्या सवा छह सौ ● मू० २०)

भाषा अध्ययन के आधार

प्रस्तुत पुस्तक में, काव्यांगों में भाषा का स्थान, भाषा के विभिन्न रूप और उनका विकास, भाषा के अंग, शब्द-शक्ति, काव्यत्व किस अर्थ में, ध्वनि, गुण, वृत्ति और रीति, विषय पात्र और मनोभावों का भाषा और वाक्य-रचना पर प्रभाव, सूक्तियाँ, मुहावरे और कहावतों के प्रयोग, आदर्श भाषा की विशेषताएँ एवं रस, अलंकार और छन्द का भाषा से सम्बन्ध, आदि विषयों पर प्रकाश डाला गया है। हिन्दी में अपने ढंग का सर्वप्रथम प्रकाशन। रायल अठपेजी साइज़, सजिल्द मू० ७॥)

सूर-साहित्य का सांस्कृतिक अध्ययन

प्रस्तुत पुस्तक में सूरदास के समकालीन समाज की सांस्कृतिक विचारधारा का परिचय देने के लिए उसके सामाजिक, पौराणिक, धार्मिक और सामान्य विश्वासों के साथ-साथ शकुन-अपशकुन और स्वप्न-सम्बन्धी विश्वासों के अतिरिक्त भारतीय कवियों में प्रसिद्ध बातों और भारतीय संस्कृति के प्रमुख अंगों—पर्वोत्सवों, संस्कारों और कलाकौशल—पर भी प्रकाश डाला गया है। सूर-साहित्य के ही नहीं, हिंदी के किसी भी एक कवि के काव्य के इतने विशद सांस्कृतिक अध्ययन का हिंदी में यह प्रथम प्रयास है। रायल अठपेजी, मू० ५)

हिन्दी-साहित्य : कुछ विचार

इसमें डॉ० टंडन के हिन्दी-कविता-सम्बन्धी नौ तथा हिन्दी-गद्य-सम्बन्धी पाँच उच्च कोटि के निबन्ध हैं। उनकी सूची इस प्रकार है—

१–व्रजभाषा की विशेषताएँ, २–पृथ्वीराज रासो, ३–सूरसागर, ४–साहित्य लहरी, ५–सूर का वात्सल्य-वर्णन : कुछ प्रसंग, ६–भ्रमर गीत प्रसंग, ७–तुलसी का राम-रूप-वर्णन, ८–तुलसी का काव्यादर्श, ९–साकेत के कुछ पात्र १०–राजस्थानी गद्य, ११–व्रजभाषा का गद्य-साहित्य, १२–द्विवेदी जी का सम्पादन-कौशल, १३–प्रेमचंदजी के उपन्यासों की मुख्य समस्याएँ, १४–प्रसादजी का 'चन्द्रगुप्त' नाटक। डिमाई, सजिल्द, मू० ७॥)

अजातशत्रु और अन्य एकांकी

डॉ० टंडन का यह पाँचवाँ नवीनतम एकांकी संग्रह है। इसमें तपेदिक का रोगी, समानता संघ, शीलवती, अजातशत्रु, उपक्रम और बनवास के पूर्व की रात शीर्षक छह एकांकी संकलित हैं। सभी एकांकी कला की दृष्टि से सुन्दर और सुरुचिपूर्ण हैं। मू० २)

नोट—पेशगी मूल्य भेजने पर डाक-व्यय माफ।

हिन्दी-साहित्य-भण्डार, गंगाप्रसाद रोड, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारत सरकार द्वारा पुरस्कृत

साइन्स की कहानियाँ

—उमाशंकर

बालकों और प्रौढ़ों के लिए इस पुस्तक से भौतिक-शास्त्र, रसायन-शास्त्र और जीव-विज्ञान के कठिन प्रश्नों को बड़े ही सरल और मनोरंजक ढंग से कहानियों के रूप में समझाया गया है।

"साइन्स की कहानियों को हिन्दुस्तानी में पेश करने का विचार बहुत ही सुन्दर है और इसलिए मैं इस पुस्तक का स्वागत करता हूँ। मेरे विचार में हमारे बच्चों के लिए जरूरी है कि उनकी शिक्षा की बुनियाद वैज्ञानिक हो।"

मूल्य ३।।।) —जवाहरलाल नेहरू

अमर आशा

—श्रीमन्नारायण

इसमें अग्रवाल जी की दो प्रकार की कविताएँ हैं: एक वे जिन्हें शुद्ध साहित्यिक क्षेत्र में स्थान मिलेगा, दूसरी वे जिन्हें सामयिक साहित्य में।

"....हिन्दी तथा हिन्दुस्तानी रचनाओं की गंगा-यमुना का यह संगम अपूर्व है। जहाँ साहित्यकार इसमें रस पायेंगे, वहाँ राष्ट्र-प्रेमी इसकी राष्ट्रीय चेतना से अनुप्राणित रचनाओं में अपने मन के गीत पायेंगे।"

मूल्य ३।।।) —मोहनलाल द्विवेदी

उमर खैयाम की रूबाइयाँ

—रघुवंशलाल गुप्त

हिन्दी में उमर खैयाम की रूबाइयों के अनुवाद कई निकल चुके हैं, पर रघुवंशलाल गुप्त के इस अनुवाद में जो जिन्दगी है, जो माधुर्य है, वह आपको कहीं और नहीं मिलेगा।

"....श्री रघुवंश के अनुवाद में हमें उमर की आत्मा के दर्शन होते हैं..."

मूल्य ३) —अमरनाथ झा

दीपशिखा

—महादेवी वर्मा

इसमें पद्मभूषण महादेवी वर्मा के बनाए ५२ पद्य हैं जो महादेवीजी की ही लिखावट में छपे हैं और प्रत्येक पद्य के भाव उन्हीं के बनाये हुए सुन्दर चित्रों में चित्रित हैं। यह पुस्तक पूरी आर्ट पेपर पर १२"×९" साइज में छपी है और इस बार एक आकर्षक और सुन्दर आवरण-पृष्ठ भी दिया गया है। उपहार देने के लिए अति उचित और योग्य है। मूल्य २२)

मैं ज़रूर रोऊँगी

—बलवन्तसिंह

कहानियों के इस संग्रह में बलवन्तसिंह ने जिन्दगी के हर मूड को अपनी कला से उजागर करने की कोशिश की है। १३ कहानियों का यह संग्रह जीवन के अनेक मूडों को प्रकट करता है। मूल्य ३)

किताबिस्तान : इलाहाबाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संस्कृत, पालि एवं प्राकृत साहित्य

—चन्द्रबली पाण्डेय : **कालिदास** : बनारस, मोतीलाल बनारसीदास, २०११ वि०, पृ० ६२६, ड० क्रा०, ३.५० रु०, उ० प्र०, (५५)।

महाकवि कालिदास का जीवन वृत्त एवं उनके ग्रन्थों की सप्रमाण मीमांसा।

—भोलाशंकर व्यास (डॉ०) : **संस्कृत कवि दर्शन** : बनारस, चौखम्भा विद्या भवन, २०१२ वि०, पृ० ५७५, ड० क्रा०, ६ रु०, उ० प्र०, (५६-५७)।

संस्कृत साहित्य के ६ कवियों, ८ नाटककारों, ४ गद्यकारों एवं दो मुक्तक कवियों का समीक्षात्मक अध्ययन।

—मनोहरलाल गौड़ (डॉ०) : **आचार्य क्षेमेन्द्र** : अलीगढ़, भारत प्रकाशन मन्दिर, पृ० ११२, डि०, ४ रु०, उ० प्र०, (५६-५७)।

आचार्य क्षेमेन्द्र के समीक्षा-सिद्धान्त, कवि-शिक्षा एवं छन्द-विचार विषयक पुस्तकों—(१) 'औचित्य विचार चर्चा', (२) 'कवि कण्ठाभरण' (३) 'सुवृत्त तिलक'—का और इन तीनों में प्रतिपादित उनके तीनों प्रस्थानों का विकास तथा समीक्षा।

—राजीवलोचन अग्निहोत्री : **संस्कृत साहित्य गांधव नरेशों** की देन : वि० प्र०, (५५)।

—वासुदेवशरण अग्रवाल : **हर्षचरित एक सांस्कृतिक अध्ययन** : पटना, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, २००७ वि०, पृ० २२३, डि०, ९.५० रु०, हि० सा० स० मंगला०, (२०१० वि०)।

सांस्कृतिक सामग्री की दृष्टि से बाणभट्ट के 'हर्षचरित' का अध्ययन। २८ फलकों पर लगभग १०० चित्र सहित।

पालि साहित्य

—भरतसिंह उपाध्याय : **पालि साहित्य का इतिहास** : प्रयाग, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, २००८ वि०, पृ० ७३३, १० रु०, के० स० प्र० वि० पु० प्रति०।

पालि-साहित्य के विविध अंगों का विवेचनात्मक इतिहास।

अपभ्रंश साहित्य

—हरिवंश कोछड़ : **अपभ्रंश साहित्य** : दिल्ली, भारतीय साहित्य मन्दिर (हि० अ० प० दिल्ली वि० वि० के लिए), २०१३ वि०, डि०, १० रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

साहित्यिक दृष्टि से अपभ्रंश साहित्य का अध्ययन। दिल्ली विश्वविद्यालय द्वारा पी-एच० डी० की उपाधि के लिए स्वीकृत प्रबन्ध।

अन्य साहित्य

—केशरी नारायण शुक्ल और श्रीमती फिलिप मेरी एम० केम्प : **रूसी साहित्य** : बनारस, सरस्वती मन्दिर, १९५१, पृ० २०६, डि०, ४.५० रु०, उ० प्र०, (१९५२)।

रूसी साहित्य के विज्ञ लेखकों की प्रामाणिक पुस्तकों के आधार पर रूसियों की साहित्यिक और संस्कृति-सम्बन्धी अपनी निजी भावना की अभिव्यक्ति का काल-क्रमानुसार परिचय।

—वीर राजेन्द्र ऋषि : **रूसी लोक साहित्य** : दिल्ली, आत्माराम एण्ड सन्स, १९५६, पृ० १५१, (सचित्र) डि०, ४ रु०, उ० प्र०, (५६-५७)।

'क्नीगा ओ फोल्कल्वोरये' नामक मूल रूसी ग्रन्थ के आधार पर लिखित रूसी लोक-साहित्य।

—विनोदशंकर व्यास : **यूरोपीय साहित्य** : बनारस, सत्-साहित्य प्रकाशन गृह, १९५५, पृ० १४५, ड० क्रा०, २ रु०, उ० प्र०।

पूर्वकाल के यहूदी, यूनानी और लैटिन साहित्य के विकास का विवरण।

—प्रतेन्द्रकुमार : **शैली** : अलीगढ़, भारत प्रकाशन मन्दिर, पृ० २१—जीवन-वृत्त, पृ० ५७—काव्यसाधना, पृ० ९५—काव्य लोक, डि०, के० स० द्वि० प्रति०।

अंग्रेजी के प्रख्यात रोमानी कवि परसीबिसी शैली का जीवन-वृत्त, काव्य-साधना और काव्यलोक।

इतिहास

इतिहास, सामान्य

—सुतीक्ष्ण मुनि उदासी (सम्पा०) : **गाथा संवत्सरी** : काशी, श्री साधु वेला आश्रम, २०१२ वि०, पृ० २८७, ड० क्रा०, २.५० रु०, उ० प्र०, (५६-५७)।

संसार-भर की सामान्यतः और भारत की विशेषतः

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तीन श्रेष्ठ कृतियाँ

१. रणधीर सिनहा की रचनाएँ

(पहला चयन)

कविताएँ, कहानियाँ, नाटक, रिपोर्ताज, लघु-कथाएँ, निबन्ध, संस्मरण, व्यंग्य-चित्र, आत्मालाप, डायरी आदि। दस प्रकार में रचित २५ रचनाओं का अनुपम संग्रह जो हिन्दी-साहित्य में पहली बार प्रकाशित हुआ है।

मूल्य मात्र २.५०

•

२. क्वार की साँझ

रामनरेश पाठक की कविताएँ। नई हिन्दी कविता की ५१ कविताएँ, जो एक नये धरातल की ओर संकेत कर रही हैं।

मूल्य मात्र २.५०

•

३. आकलन (पहला भाग)

हिन्दी में मौलिक तथा पहला प्रयास। रणधीर सिनहा कृत आलोचना साहित्य का प्रयोग।

मूल्य ३ रुपया

केवल एक सौ प्रतियाँ बच रही हैं।

प्रकाशक

श्रेष्ठ साहित्यागार

सिनहा लाइब्रेरी रोड,
पटना-१

सभी प्रमुख घटनाओं तथा महापुरुषों की जीवनियों ... प्रमुख तिथि-क्रमाली।

भूगोल

—उजागरसिंह : **भारत का नवीन आर्थिक भूगोल** इलाहाबाद, स्टूडेण्ट्स फ्रेंड्स, १९५४, पृ० ५५३, डि० (सचित्र) आंकड़ों एवं मानचित्रों से युक्त, ७.५० रु० उ० प्र०, (५५-५६)।

विभाजित भारत की वर्तमान समस्याओं को ध्यान में रखते हुए प्राकृतिक वातावरण, प्रसाधन, कृषि, उद्योग धन्धों, वाणिज्य एवं आर्थिक परिस्थितियों की तुलनात्मक विवेचना।

—कृपाशंकर गौड़ : **भारत की भौगोलिक समीक्षा** वाराणसी, हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, १९५७, पृ० ५६... रॉ०, (सचित्र) १० रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

भारत के भौतिक, आर्थिक, प्रादेशिक और सांस्कृतिक भूगोल का विस्तृत विवेचन, भारतीय विश्वविद्यालयों की कक्षाओं के लिए लिखित।

—कृपाशंकर गौड़ : **भौतिक भूगोल के सिद्धान्त** : उ० प्र० (५७-५८)।

—चतुर्भुज मामोरिया : **आर्थिक और वाणिज्य भूगोल** आगरा, गयाप्रसाद एण्ड सन्स, १९५७, पृ० १२०४, डि० १५ रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

आँकड़ों, मानचित्रों एवं चित्रों से युक्त, बी० ए०, बी० कॉम० और एम० ए० की कक्षाओं के लिए भूगोल विषयक पाठ्य-ग्रन्थ।

—जनार्दनप्रसाद श्रीवास्तव : **भू सैद्धान्तिकी** : जौनपुर, अम्बिका प्रकाशन, १९५५, पृ० ९१, डि०, १.७५ रु० (सचित्र) वि० प्र०, (५३-५४)।

भूगोल और भूतत्त्व के सिद्धान्त।

—महेश्वरप्रसाद करण : **मानव भूगोल के सिद्धान्त** उ० प्र०, (५७ ५८)।

—बागेश्वरीप्रसाद वर्मा : **जापान, चीन और दक्षिण-पूर्वी एशिया** : इलाहाबाद, भारत प्रेस, १९५५, पृ० १... ड० क्रा०, १.८८ रु०, उ० प्र०, (५५-५६)।

बी० ए० और इंटर के विद्यार्थियों के लिए भौगोलिक ...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दृष्टिकोण से लिखित ।

—रामस्वरूप वशिष्ठ : **भूगोल के भौतिक आधार** : दिल्ली, आत्माराम एण्ड सन्स, १९५३, पृ० ३२२, डि०, ६ रु०, उ० प्र०, (५५) ।

व्यक्ति के भौतिक वातावरण के विभिन्न रूपों की व्याख्या, पृथ्वी, वायु-मण्डल आदि का वैज्ञानिक विवेचन ।

—श्रीकृष्णदत्त भट्ट : **भारत का आर्थिक भूगोल** : उ० प्र०, (५०) ।

यात्रा और भ्रमण

—कृष्णवंश सिंह बघेल : **हिमालय के प्रदेश में** : वि० प्र०, (५५-५६) ।

—खाण्डेलकर, आर० आर० : **हालैंड में पच्चीस दिन** : बनारस, ज्ञान मण्डल लि०, २०११ वि०, पृ० १५९, इ० क्रा०, (सचित्र), ३ रु०, उ० प्र०, (५५-५६) ।

लेखक द्वारा अपनी हालैण्ड-यात्रा के २५ दिनों का वर्णन, २३ चित्रों सहित ।

—शुकदेव दुबे : **खोज के पथ पर** : प्रयाग, छात्रहितकारी पुस्तक माला, १९५२, पृ० ५६, ड० क्रा०, ५० न० पै०, वि० प्र०, (५४-५५) ।

भौगोलिक साहसिक अभियान (बाल-साहित्य) ।

—भगवतशरण उपाध्याय : **कलकत्ता से पेकिंग** : दिल्ली, राजपाल एण्ड सन्स, पृ० १७३, ड० क्रा०, ३.५० रु०, उ० प्र०, (५५-५६) ।

यात्रा-सम्बन्धी संस्मरण ।

—यशपाल : **राह बीती** : लखनऊ, विप्लव कार्यालय, १९५६, पृ० १७९, डि०, ३.५० रु०, उ० प्र०, (५७-५८) ।

लेखक की पूर्वी यूरोप यात्रा के अनुभव एवं संस्मरण ।

—राजवल्लभ ओझा : **बदलते दृश्य** : इलाहाबाद, हिन्दी भवन, १९५४, पृ० २६४, डि०, ६ रु०, उ० प्र०, (५५) ।

—श्रीनिधि सिद्धान्तालंकार : **शिवालक की घाटियों में** : दिल्ली, आत्माराम एण्ड सन्स, १९५३, पृ० २३९, (सचित्र), डि०, ५ रु०, उ० प्र०, (५५) ।

शिवालक की घाटियों का १६ शीर्षकों में स्वानुभूत सजीव वर्णन ।

—सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय' : **अरे यायावर**

गोरखपुर, लखनऊ, आगरा, विक्रम, जबलपुर, काशी तथा अन्य विश्वविद्यालयों के लिए स्वीकृत पाठ्य-ग्रन्थ

निबन्ध-नवनीत :
सम्पादक—डॉ० लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय ३·००

श्री चन्द्रावली नाटिका (भारतेन्दु रचित)
सम्पादक—डॉ० लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय १·५०

भारत-दुर्दशा :
सम्पादक—डॉ० लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय १·००

काव्य-धारा :
सम्पादक—डॉ० गोपीनाथ तिवारी एवं डॉ० रामचन्द्र तिवारी ३·००

भूषण-मञ्जूषा :
सम्पादक—डॉ० व्रजकिशोर मिश्र २·२५

वेलिक्रिसन रुकमणी री :
सम्पादक—डॉ० आनन्द प्रकाश दीक्षित ५·००

*रीतिकालीन हिन्दी कविता और सेनापति :
लेखक—डॉ० रामचन्द्र तिवारी १·५०

*हिन्दी का गद्य-साहित्य :
लेखक—डॉ० रामचन्द्र तिवारी ६·००

*काव्य-शास्त्र :
लेखक—डॉ० भगीरथ मिश्र ५·५०

शिक्षा-सिद्धान्त एवं दर्शन :
लेखक—प्रोफेसर सत्यदेवसिंह ४·५०

*चिह्नित पुस्तकें उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा पुरस्कृत हैं ।

प्रकाशक

विश्वविद्यालय प्रकाशन

नखास चौक, गोरखपुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहेगा याद : इलाहाबाद, सरस्वती प्रेस, १९५३, पृ० २२८, डि० क्रा०, (सचित्र), ६ रु०, उ० प्र०, (५४)।

लेखक द्वारा अंकित रेखाचित्र, स्केच और अलंकृतियाँ।

—सत्यवती मल्लिक (श्रीमती) : **अमर पथ** : दिल्ली, अतरचन्द कपूर एण्ड सन्स, १९५४, पृ० १२४, डि०, (सचित्र), ३ रु०, उ० प्र०, (५५-५६)।

यात्रा सम्बन्धी संस्मरण।

—सत्यभक्त (स्वामी) : **नया संसार** : वर्धा, सत्याश्रम, पृ० १४०, ड० क्रा०, १.५० रु०, उ० प्र०, (५२-५३)।

डेढ़सौ वर्ष बाद बनने वाले नये संसार में भ्रमण करने वाले एक यात्री का भ्रमण-वृत्तान्त।

जीवनी, आत्मकथा

—गंगाप्रसाद उपाध्याय : **जीवन चक्र** : इलाहाबाद, कला प्रेस, १९५४, पृ० ५००, ड० क्रा०, (सचित्र), ५ रु०, उ० प्र०, (५५)।

लेखक की आत्मकथा।

—देवीदत्त शुक्ल : **सम्पादक के पच्चीस वर्ष** : प्रयाग, कल्याण मन्दिर, १९५६, पृ० १५८, रॉ०, ४ रु०, उ० प्र०, (५६-५७)।

'सरस्वती' के सम्पादक पंडित देवीदत्त शुक्ल के सम्पादक-जीवन के २५ वर्षों (१९१९-१९४५) के संस्मरण।

—यशपाल : **सिंहावलोकन** : लखनऊ, विप्लव कार्यालय, प्रथम भाग, १९५१, पृ० २०६, डि०, (सचित्र), ५ रु०, द्वितीय भाग, १९५२, पृ० २६४, डि० (सचित्र), ५.५० रु०, तृतीय भाग, १९५५, पृ० १९५, डि०, (सचित्र), ४.५० रु०।

सशस्त्र क्रान्ति की प्रामाणिक कहानी। हिन्दुस्तानी समाजवादी-प्रजातन्त्र सेना द्वारा भारत में सशस्त्र क्रान्ति की चेष्टा के सम्बन्ध में लेखक के संस्मरण।

—रवीन्द्रनाथ टैगोर (मू० ले०), (अनु० धन्यकुमार जैन) : **जीवन स्मृति** : कलकत्ता, रवीन्द्र साहित्य मन्दिर, पृ० १८३, ड० क्रा०, २.५० रु०, के० स० प्र० वि० पु० प्रति०।

रवीन्द्र-साहित्य का अठारहवाँ भाग। टैगोर महोदय की आत्मकथा का अंश।

—राजेन्द्रप्रसाद (डॉ०) : **आत्मकथा** : पटना, सं... संसार, १९४७, पृ० ६५६, रॉ०, (सचित्र) १२ रु... बि० रा० प०, (५४-५५) तथा ना० प्र०... से भी।

वर्तमान राष्ट्रपति डॉ० राजेन्द्रप्रसादजी की आ... कथा।

—रामवृक्ष बेनीपुरी : **जंजीरें और दीवारें** : दि... राजपाल एण्ड सन्स, १९५७, पृ० २८२, ड०... ४.२५ रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

३० शीर्षकों के अन्तर्गत लेखक के जेल-जीव... संस्मरण।

—शान्तिप्रिय द्विवेदी : **परिव्राजक की प्रजा** : इलाह... इण्डियन प्रेस लि०, १९५२, पृ० २०८, ड०... ३.५० रु०, उ० प्र०, (५३)।

अपनी साहित्यिक आत्म-कथा।

जीवनी

—अशोक : **गांधीजी का विद्यार्थी जीवन** : दिल्ली, स... साहित्य मण्डल, १९५७, पृ० ३८, ड० क्रा०, ३१ न... के० स० जन सा० प्रति०, (५३)।

आत्मकथा के आधार पर गांधीजी के विद्यार्थी-... की झाँकी।

—क्षेमचन्द्र 'सुमन' : **नये भारत के नये निर्माता** : उ०... (५१)।

—चन्द्रबली त्रिपाठी : **धर्मराज युधिष्ठिर** : बस्ती, ले... द्वारा, १९५२, पृ० ३३४, ड० क्रा०, ५ रु०, उ० प्र...

धर्मराज युधिष्ठिर की जीवनी।

—प्रमोदकुमार : **नेहरू और भारतीय राजनीति** : ल... अध्यापक प्रकाशन मण्डल, पृ० ३२८, ३ रु०, उ०... (५५-५६)।

नेहरूजी की जीवनी तथा उनके राजनीतिक... का विस्तृत अध्ययन।

—बनारसीदास चतुर्वेदी : **रेखा-चित्र** : काशी, भार... ज्ञानपीठ, १९५२, पृ० ३७५, ड० क्रा०, ४ रु०, वि०... (५३-५४)।

जीवनी सम्बन्धी ४० रेखाचित्र।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रत्येक पुस्तकालय, विक्रेता, विद्वान् एवं पाठकों की आवश्यकता की पूर्ति के लिए
प्रसाद साहित्य के अधिकारी विद्वान्
पं० सुधाकर पाण्डेय रचित तीन

बहुमूल्य प्रतिष्ठित अमूल्य

प्रकाशन

कामायनी समीक्षा
नूतन दृष्टिकोण से कामायनी पर विचार-विमर्श और नयी मान्य स्थापनाएँ। ३ रु०

प्रसाद काव्य कोश
प्रसाद काव्य में व्यवहृत प्रत्येक शब्द का व्याख्यात्मक विश्लेषण। १६ रु०

प्रसाद की कविताएँ
प्रसादजी की प्रत्येक काव्य-उपलब्धि और युग की ऐतिहासिक गतिविधि का अपूर्व आलोचनात्मक विवेचन। १ रु०

अन्य महत्त्वपूर्ण नवीनतम प्रकाशन

गालिब की कविता	: बेढब बनारसी	१०·००
हुक्का पानी	: बेढब बनारसी	३·००
सुचिताव	: 'रुद्र' काशिकेय	४·५०
पुष्प नगर	: कविवर 'आदर्श'	६·००
साहित्य-शास्त्रीय-समाधान	: शंकरदेव अवतरे	६·००
मार्क्सवाद और साहित्य	: महेन्द्रचन्द्र राय	४·५०
सिकन्दर का आक्रमण और पश्चिमोत्तर भारत	: बलराम श्रीवास्तव	३·००
जो गाता हूँ	: सुधाकर पाण्डेय	३·००
नीहारिका	: सुधाकर पाण्डेय	१·५०

आराधना प्रकाशन
६४/४४ गोला दीनानाथ, वाराणसी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

—बनारसीदास चतुर्वेदी : **हमारे आराध्य** : काशी, भारतीय ज्ञानपीठ, १९५२, पृ० २६०, डि० क्रा०, ३ रु०, उ० प्र०, (५३)।

१७ महान् व्यक्तियों के सम्बन्ध में रेखाचित्र तथा शब्द चित्र।

—बलदेव उपाध्याय : **श्री शंकराचार्य** : इलाहाबाद, हिन्दुस्तानी एकेडेमी, १९५०, पृ० ३०४, रॉ०, ७·५० रु०, उ० प्र०, (५१)।

श्री शंकराचार्य की जीवनी तथा उनके उपदेशों का प्रामाणिक विवरण।

—मदनमोहन मिश्र : **विंध्यप्रदेश की अमर आत्माएँ** : वि० प्र०, (५३-५४)।

—लक्ष्मीनारायण गर्ग : **हमारे संगीत रत्न** : हाथरस, संगीत कार्यालय, १९५७, पृ० ७००, डि०, (सचित्र), १५ रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

भारतीय संगीतज्ञों की जीवनी।

—विद्यावती (कुमारी) 'मालविका' : **आदर्श बौद्ध महिलाएँ** : सारनाथ, भारतीय महाबोधि सभा, २४९९ बुद्धाब्द, पृ० १२०, डि० क्रा०, १·५० रु०, उ० प्र०, (५६-५७)।

३१ बौद्ध महिलाओं की जीवन-झांकी।

—विनोदशंकर व्यास : **दिन और रात** : बनारस, पुस्तक-मन्दिर, १९५०, पृ० १५८, डि० क्रा०, २ रु०, उ० प्र०, (५२)।

कुछ प्रमुख साहित्यकारों के जीवन का यथार्थ चित्रण।

—विश्वामित्र शर्मा : **बड़ों का बचपन** : दिल्ली, राजहंस प्रकाशन, १९५६, पृ० ६०, फु० स्के०, (सचित्र), २·२५ रु०, के० स० (५७)।

भारत के कुछ महापुरुषों की संक्षिप्त जीवनी। किशोरों के लिए लिखित।

—विष्णु प्रभाकर : **बाजीप्रभु देश पांडे** : दिल्ली, सस्ता साहित्य मण्डल, १९५५, पृ० ३०, डि० क्रा०, (सचित्र), ३१ न० पै०, के० स० जन सा० प्रति०, (५५)।

महाराज शिवाजी के सेनापति श्री बाजीराव देशपांडे के देश-प्रेम की कहानी (प्रौढ़ोपयोगी, सरल भाषा एवं रोचक शैली)।

—शुकदेव दुबे : **खुदीराम बोस** : वि० प्र०, (५५-५६)।

—शचीरानी गुर्टू (श्रीमती) : **विश्व की महान् महिलाएँ** : दिल्ली, युग प्रकाशन, १९४८, पृ० २०२, डि०, (सचित्र), ५ रु०, उ० प्र०, (५२)।

विश्व की प्रतिनिधि २२ नारियों के सचित्र रेखाचित्र।

—सुशीला नैयर : **बापू की कारावास कहानी** : दिल्ली, सस्ता साहित्य मण्डल, १९५०, पृ० ४५६, (सचित्र), डि०, १० रु०, के० स० प्र० वि० पु० प्रति०।

आगाखां महल में बापू के २१ मास की कारावास कहानी।

भेंट, साक्षात्कार

—पद्मसिंह शर्मा 'कमलेश' : **मैं इनसे मिला** (पहली किश्त) : दिल्ली, आत्माराम एण्ड सन्स, १९५२, पृ० २००, डि० क्रा०, ३ रु०, उ० प्र०, (५३)।

दूसरी किश्त, १९५२, पृ० २४६, डि० क्रा०, ३·५० रु०, उ० प्र०, (५३)।

हिन्दी के कुछ प्रमुख साहित्यकारों से इन्टरव्यू।

संस्मरण

—बनारसीदास चतुर्वेदी : **संस्मरण** : काशी, भारतीय ज्ञानपीठ, १९५२, पृ० २५१, डि० क्रा०, ३ रु०, उ० प्र०, (५२-५३)।

२१ साहित्यकारों तथा कुछ अन्य व्यक्तियों के सम्बन्ध में रोचक संस्मरण।

प्राचीन इतिहास एवं संस्कृति

—कान्त सागर (मुनि) : **खोज की पगडण्डियां** : काशी, भारतीय ज्ञानपीठ, १९५३, पृ० २७५, डि० क्रा०, ४ रु०, उ० प्र०, (५५)।

ललितकला, लिपि और भौगोलिक यात्रा, इन तीन भागों में विभक्त एवं खोजपूर्ण प्रतिपादन।

—कान्त सागर (मुनि) : **खण्डहरों का वैभव** : काशी, भारतीय ज्ञानपीठ, १९५३, पृ० ४३६, (सचित्र) डि० क्रा०, २ रु०, उ० प्र०, (५५)।

भारतीय पुरातत्त्व की गरिमा का द्योतक ग्रन्थ।

—जयचन्द विद्यालंकार : **भारतीय कृष्टि का क्रम**...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे प्रकाशन

अभिनव प्रकाशन—'भारत के संत-महात्मा'—ले० रामलाल : भारत के ११४ संत-महात्माओं के जीवन-चरित्र और उपदेश का अपूर्व अमृतकलश, मू० रुपये १०)

उपन्यास

सिंदूर की राख : कश्मीरीलाल ज़ाकिर	३.००
अमरनाथ : शरच्चन्द्र चट्टोपाध्याय	२.५०
मेरी पति-विजय : रमणलाल देसाई, अनु० श्यामलाल मेढ़	६.००
काम और कामिनी : प्रेमा कंटक, अनु० परदेशी	६.००
आम्रपाली : रामचन्द्र ठाकुर	४.५०
मगधपति : 'धूमकेतु', अनु० परदेशी	५.००
बावन पत्ते : कृष्णचन्द्र	५.५०
नगर-सुन्दरी : 'धूमकेतु', अनु० कि० र० टंडन	४.२५
महामात्य चाणक्य : 'धूमकेतु', अनु० आ० विभुदेव	४.५०
चौलादेवी : 'धूमकेतु', अनु० वीरेन्द्रकुमार जैन	५.५०
राज संन्यासी : 'धूमकेतु', अनु० श्यामू संन्यासी	५.५०
भगवान् बुद्ध की आत्मकथा : परदेशी	४.००
बीरबल : रामचन्द्र ठाकुर	४.५०
मीरा प्रेम दिवानी : रामचन्द्र ठाकुर	५.००
नर्तकी : उमाकान्त	५.५०
सर्व मंगला : मामा वरेरकर, अनु० आ० विभुदेव	३.००
नया रास्ता : रतीलाल त्रिवेदी, अनु० दर्शन	३.७५
तूफ़ान : जॉर्ज स्टुअर्ट, अनु० परदेशी	२.००
काला पानी : ईश्वर पेटलीकर, अनु० विभुदेव	३.००
प्रलय : रमणलाल देसाई, अनु० मगनलाल जैन	५.५०

कहानी-संग्रह

नगीने : पं० सुदर्शन	३.००
पनघट : ,,	३.५०
पुष्प-लता : ,,	२.५०
दीपाली : ,,	२.५०
सुदर्शन-सुधा : ,,	४.००
विद्रोही आत्माएँ : खलील जिब्रान, सुदर्शन	२.७५
पाप का पुण्य : 'रावी'	१.७५
मेरी श्रेष्ठ कहानी : (लब्धप्रतिष्ठ कथाकारों की श्रेष्ठ कहानियों का संग्रह)	४.००
श्रेष्ठ हास्य-कथाएँ : (हास्य एवं व्यंग्य से परिपूर्ण कथाओं का संग्रह)	४.००
सपनों का टुकड़ा : कुलभूषण	२.५०

किशोर साहित्यमाला

सुलेमान का ख़ज़ाना : कुलभूषण	१.५०
दबी आग : (उपन्यास) रमणलाल देसाई	१.७५
दरियालाल : आ० गुणवन्तराय, अनु० आ० विभुदेव	२.००
अब्राहम लिंकन : अनु० वीरेन्द्रकुमार जैन	२.००
फूलमाला भाग १ : पं० सुदर्शन	१.५०
,, ,, २ : ,, ,,	१.६२
खटपटलाल : पं० सुदर्शन	१.५०
लाल पन्ने : आनन्दप्रकाश जैन	१.७५
मेरी जीवन कहानी : कु० हेलन केलर	२.००
अँगूठी का मुकदमा : पं० सुदर्शन	१.२५
महापुरुषों की कहानियाँ : आचार्य विभुदेव	२.००
बेन्जामिन फ्रेंकलिन : (द्वि० चित्र) अनु० परदेशी	२.५०
अमर सुहागिन : झवेरचन्द मेघाणी, अनु० वीरेन्द्रकुमार जैन	१.५०
सुनहरी नदी का राजा : जॉन रस्कीन, अनु० आ० विभुदेव	०.७५
काशीनाथ : शरच्चन्द्र चट्टोपाध्याय	०.७५
उद्धार : ,, ,,	०.७५
दिव्यचक्षु : (संक्षिप्त) रमणलाल देसाई	२.००
पहली अविराम उड़ान : चार्ल्स० ए० लिंडबर्ग	२.००
अणुशक्ति : गोर्डन इवान्स, अनु० के० श्यामलाल	१.५०
हेनरी फोर्ड : (सचित्र जीवनी) अनु० परदेशी	२.००
मेवाड़ का अरुणोदय : (सचित्र) अनु० एम. एल. मुंशी	२.००

अन्य प्रकाशन

संत ज्ञानेश्वर : प्रसिद्ध संत की चित्रमय जीवन-कथा—आकर्षक द्विरंगी चित्रों में। मुखपृष्ठ संत ज्ञानेश्वर के पचरंगी चित्र से सुशोभित है।	०.६०
सिंहासन बत्तीसी : चक्रवर्ती राजा विक्रमादित्य की कहानी सुन्दर द्विरंगी चित्रों में। सुघड़ छपाई, द्विरंगी मुखपृष्ठ, बढ़िया गेट-अप !	०.७५
ठक्कर बापा : प्रसिद्ध लोक-सेवक व हरिजन और बनवासी के महान् उद्धारक की जीवनी (सचित्र)	०.६०
डॉ० अल्बर्ट स्वीट्ज़र: काले नीग्रो के प्राणदाता—महान् गोरे जन-सेवक की सचित्र जीवनी	०.६०

वोरा एण्ड कम्पनी पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड

३, राउन्ड बिल्डिंग, बम्बई–२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इलाहाबाद, हिन्दी भवन, १९५५, पृ० २६८, ड० क्रा०, (सचित्र), ७ रु०, के० स० तृ० वि० पु० प्रति० ।

भारत का तथ्यपूर्ण सांस्कृतिक इतिहास। परिशिष्ट में १०६ चित्र।

—बलदेव उपाध्याय : **वैदिक साहित्य और संस्कृति** : काशी, शारदा मन्दिर, पृ० ५७९, ड० क्रा०, ५.५० रु०, उ० प्र०, (५५-५६) ।

वैदिक साहित्य और वैदिक संस्कृति का परिचयात्मक प्रामाणिक ग्रन्थ। (एम० ए० परीक्षा का पाठ्य-ग्रन्थ)।

—भगवतशरण उपाध्याय : **कालिदास का भारत भाग १** : काशी, भारतीय ज्ञानपीठ, १९५४, पृ० ३४४, ड० क्रा०, ४ रु०, उ० प्र०, (५५) ।

कालिदासकालीन भौगोलिक सामग्री, राजनीति और शासन एवं सामाजिक जीवन की व्याख्या।

—भगवतशरण उपाध्याय : **भारतीय संस्कृति की कहानी** : दिल्ली, राजपाल एण्ड सन्स, १९५७, पृ० ८४, ड० क्रा०, (सचित्र) १.२५ रु०, के० स० जन सा० प्रति० (५५) ।

प्रौढ़ोपयोगी सरल एवं रोचक भाषा में भारतीय संस्कृति का परिचय।

—मंगलदेव शास्त्री (डॉ०) : **भारतीय संस्कृति का विकास (वैदिक धारा)** : बनारस, काशी विद्यापीठ, १९५६, पृ० ३१७, ७ रु०, उ० प्र०, (५६-५७) ।

विज्ञानमूलक ऐतिहासिक दृष्टि के आधार पर भारतीय संस्कृति की वैदिक धारा के विकास का विवेचन।

—रांगेय राघव : **प्राचीन भारतीय परम्परा और इतिहास** : दिल्ली, आत्माराम एण्ड सन्स, १९५३, पृ० ५१८, १२ रु०, हर० डा० पु० ।

प्रागैतिहासिक भारत और उसका भौगोलिक विवेचन, मानचित्रों एवं आंकड़ों सहित।

—राधाकृष्ण शर्मा (प्रो०) : **दुनिया की कहानी** : इलाहाबाद, किताब महल, प्रथम भाग, १९५३, पृ० २८६, डि०, ५ रु०, द्वि० भाग, १९५६, पृ० ३१८, डि०, ५ रु०, वि० रा० प०, (५७-५८) ।

सृष्टि के प्रारम्भिक काल से अब तक के मानव के सांस्कृतिक एवं राजनीतिक विकास-क्रम का शृंखलाबद्ध अध्ययन।

—राम अवतार : **भारत की अध्यात्ममूलक संस्कृति** : उ० प्र०, (५२) ।

—रामजी उपाध्याय (डॉ०) : **भारत की प्राचीन संस्कृति** : प्रयाग, किताब महल, १९४८, पृ० २८३, डि०, ७.५० रु०, उ० प्र०, (५०) ।

वैदिक काल से सम्राट् हर्षवर्द्धन के काल तक की भारतीय संस्कृति का सारगर्भित विवेचन।

—रामधारीसिंह 'दिनकर', (भू० ले० जवाहरलाल नेहरू) : **संस्कृति के चार अध्याय** : दिल्ली, राजपाल एण्ड सन्स, १९५६, पृ० ६६०, डि०, १५ रु०, उ० प्र०, (५६-५७)।

चार विस्तृत अध्यायों में संस्कृति का विवेचन।

१. भारतीय जनता की रचना और हिन्दू संस्कृति का आविर्भाव, २. प्राचीन हिन्दुत्व से विद्रोह, ३. हिन्दू संस्कृति और इस्लाम, ४. भारतीय संस्कृति और यूरोप।

—रामेश्वर गुप्त : **मानव की कहानी (दो भागों में)** : व्यावर, (राजस्थान), चेतनागार, १९५१, प्रथम भाग, पृ० ७६१, द्वि० भाग, पृ० ७६२ से १३६८ तक, ड० क्रा०, (सचित्र), रेखाचित्र सहित, दोनों भागों का मूल्य १६ रु०, उ० प्र०, (५२) ।

ज्ञान-विज्ञान और इतिहास के तथ्यों पर आधारित सृष्टि और मानव-विकास का इतिहास, पहला भाग, सृष्टि के आदि से १५०० ई० तक, दूसरा भाग, १५०० से १९५० ई० तक।

—वासुदेवशरण अग्रवाल : **पाणिनिकालीन भारतवर्ष** : बनारस, मोतीलाल बनारसीदास, २०१२ वि०, पृ० ५४०, रॉ०, १० रु०, उ० प्र०, (५५-५६) ।

पाणिनि की अष्टाध्यायी का सांस्कृतिक अध्ययन, पाणिनिकालीन भूगोल का एक मानचित्र तथा अनुक्रमणिका सहित।

—विमलचन्द्र पांडेय : **विश्व की सभ्यताएँ** : इलाहाबाद, नव भारती प्रकाशन, १९५४, पृ० ५३६, ड० क्रा०, ७·५० रु०, उ० प्र०, (५५) ।

विश्व की विभिन्न सभ्यताओं का दिग्दर्शन।

—राहुल सांकृत्यायन : **बौद्ध संस्कृति** : कलकत्ता, आधुनिक पुस्तक भवन, १९५२, पृ० ४८५, रॉ०, (सचित्र), ११ रु०, उ० प्र०, (५३) ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाँच भागों में—भारत, लंका, बर्मा, जावा, इण्डोनेशिया, कंबुज, थाइलैण्ड, चीन आदि देशों में फैली हुई बौद्ध संस्कृति का गवेषणात्मक विवेचन।

—सतीशचन्द्र काला : **सिन्धु सभ्यता** : इलाहाबाद, हिन्दुस्तानी एकेडेमी, १९५५, पृ० १०२, रॉ०, (सचित्र), ५ रु०, उ० प्र०, (५५-५६)।

९ अध्यायों में सिन्धु-सभ्यता का प्रामाणिक एवं रोचक वर्णन; परिशिष्ट में १४ चित्र।

—सत्यभक्त (स्वामी) : **संस्कृति समस्या** : वर्धा, सत्याश्रम, १९५२, पृ० १५०, ड० क्रा०, १·५०, उ० प्र०, (५३)।

मानव-संस्कृति सम्बन्धी २१ निबन्धों का संकलन।

इतिहास, यूरोप

—सत्यकेतु विद्यालंकार : **योरप का आधुनिक इतिहास** : मसूरी, सरस्वती सदन, १९५६, पृ० १०४७, डि०, १५ रु०, उ० प्र०, (५१)।

आधुनिक यूरोप का इतिहास (१७८९ से १९५५ तक)।

इतिहास, एशिया

—सत्यकेतु विद्यालंकार : **एशिया का आधुनिक इतिहास, प्रथम भाग** : मसूरी, सरस्वती सदन, १९५२, पृ० ६०७, ९·५० रु०, उ० प्र०, (५४)।

चीन, जापान, कोरिया, इन्डोचाइना, फिलिप्पीन, इण्डोनेशिया, थाइलैण्ड, मलाया और बर्मा का इतिहास, मानचित्र सहित।

इतिहास, भारत

—अतहर अब्बास रिज़वी : **आर्य तुर्ककालीन भारत** : उ० प्र०, (५६-५७)।

—अतहर अब्बास रिज़वी : **खिलजीकालीन भारत** : के० स० तथा उ० प्र०, (५५-५६)।

—अतहर अब्बास रिज़वी : **तुगलककालीन भारत** : उ० प्र०, (५६-५७)।

—अवधबिहारी पांडेय : **पूर्व-मध्यकालीन भारत** : कानपुर, गौतम ब्रदर्स, १९५४, पृ० ४४६, डि०, ७·५० रु०, उ० प्र०, (५५)।

विश्वविद्यालय की कक्षाओं के लिए लिखित पूर्व-मध्यकालीन भारत का इतिहास चित्रों एवं मानचित्रों सहित।

—कृष्णदत्त वाजपेयी : **ब्रज का इतिहास, प्र० खण्ड** : मथुरा, ब्रज साहित्य मण्डल, २०११ वि०, पृ० २७०, डि०, ५ रु०, उ० प्र०, (५५-५६)।

ब्रज का इतिहास मानचित्रों सहित।

—कृष्णा, मेहता (श्रीमती) : **काश्मीर पर हमला** : दिल्ली, सस्ता साहित्य मण्डल, १९५८, पृ० १६८, ड० क्रा०, २ रु०, उ० प्र०, (५२-५३)।

कश्मीर पर कबाइलियों के आक्रमण के वर्णन की एक आपबीती कहानी।

—केशवचन्द्र मिश्र : **चन्देल और उनका राजत्वकाल** : काशी, नागरी प्रचारिणी सभा, २०११ वि०, पृ० ३३५, डि०, (सचित्र), ८ रु०, उ० प्र०, (५५) तथा वि० प्र०, (५४-५५)।

चन्देल शासकों के ऐतिहासिक तथ्यों का संकलन, चयन एवं समीक्षण। परिशिष्ट में १५ चित्र।

हिन्दी के
यथार्थवादी कथाकार
शैवाल सत्यार्थी
की ग्यारह कहानियों का
अनूठा संकलन

और पहिये घूम रहे थे

•भूमिका—उपन्यास-सम्राट् श्री वृन्दावनलाल वर्मा
•कसौटी पर—डॉ० शिवमंगलसिंह 'सुमन'

सुन्दर, सजिल्द, सुरुचिपूर्ण—
मूल्य दो रुपये आठ आने

ज्ञानमन्दिर प्रकाशन
लश्कर (ग्वालियर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

—पारसनाथसिंह : **जगत सेठ** : प्रयाग, भारती भण्डार, २००७ वि०, पृ० ४८४, डि०, ६·५० रु०, बि० रा० प०, (५१-५२)।

जगत सेठ और बंगाल में अंग्रेजी राज्य की नींव का वर्णन। जगत सेठ की वंशावली सहित।

—प्राणनाथ सेठ : **हमारा भारत** : दिल्ली, सर्वोदय प्रकाशन मन्दिर, पृ० ५२, ड० क्रा०, के० स० जन सा० चतुर्थ प्रति०, (५८)।

प्रौढ़ तथा बालोपयोगी साहित्य (भारतवर्ष की सामान्य जानकारी)।

—भगवतशरण उपाध्याय : **भारत की कहानी** : दिल्ली, राजपाल एण्ड सन्स, १९५६, पृ० ९१, (सचित्र), ड० क्रा०, १·२५ रु०, के० स० जन सा० प्रति०, (५४)।

छोटे बच्चों एवं अशिक्षित प्रौढ़ों के लिए भारतीय इतिहास।

—भगवतीप्रसाद पांथरी : **हर्षवर्द्धन शीलादित्य** : बनारस, जगत शंखधर, १९५३, पृ० १७२, ड० क्रा०, ३·५० रु०, उ० प्र०, (५५)।

उच्च कक्षाओं के लिए लिखित हर्षवर्द्धन शीलादित्य पर एक प्रामाणिक किन्तु संक्षिप्त कृति।

—यदुनन्दन कपूर : **अशोक** : अलीगढ़, कालेज बुक स्टोर्स, १९५५, पृ० २५६, डि०, (सचित्र), ६ रु०, उ० प्र०, (५५-५६)।

मनोवैज्ञानिक स्तर पर अशोक के जीवन तथा कार्यों का आलोचनात्मक अध्ययन।

—राजकुमार : **राजनीतिक भारत** : वाराणसी, हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, १९५६, पृ० ५६०, डि०, १० रु०, उ० प्र०, (५६-५७)।

आँकड़ों और तालिकाओं से युक्त भारत का १७५७ से १९५६ तक का राजनीतिक दृष्टिकोण से अध्ययन।

—राहुल सांकृत्यायन : **हिमालय परिचय (गढ़वाल)** : इलाहाबाद, लॉ जरनल प्रेस, १९५३, पृ० ५९६, ड० क्रा०, (सचित्र), १० रु०, उ० प्र०, (५३)।

गढ़वाल का भौगोलिक, ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक परिचय।

—लक्ष्मीकान्त त्रिपाठी और नारायणप्रसाद अरोड़ा : **कानपुर का इतिहास** : कानपुर, कानपुर इतिहास समिति, १९५०, पृ० ५५८, ड० क्रा०, (सचित्र), १० रु०, उ० प्र०, (५१)।

कानपुर का भौगोलिक, प्राकृतिक एवं ऐतिहासिक क्रमबद्ध इतिहास (१५ अध्याय, ९६ चित्र)।

—लक्ष्मीशंकर व्यास : **महान चौलुक्य कुमारपाल** : काशी, भारतीय ज्ञानपीठ, १९५४, पृ० २८७, ड० क्रा०, ४ रु०, उ० प्र०, (५२)।

बारहवीं शती के अन्तिम हिन्दू-नरेश चौलुक्य कुमारपाल का ऐतिहासिक अध्ययन।

—वासुदेव उपाध्याय : **भारतीय सिक्के** : इलाहाबाद, भारती भण्डार, २००५ वि०, पृ० २६०, डि०, (सचित्र), ५ रु०, उ० प्र०, (५०), ना० प्र० सभा, काशी से पदक प्राप्त।

विभिन्न काल के भारतीय शासकों के सिक्कों का सचित्र प्रामाणिक विवेचन।

—वासुदेव गोस्वामी : **विद्रोही बानपुर** : दतिया, सहयोगी प्रकाशन मन्दिर, १९५४, पृ० ७५, ड० क्रा०, (सचित्र), १.७५ रु०, विं० प्र०, (५३-५४)।

सन् '५७ के गदर का एक विस्तृत अध्याय।

—विश्वनाथ मुकर्जी : **काशी, अतीत और वर्तमान** : बनारस, विश्व साहित्य सदन, १९५६, पृ० १८०, ड० क्रा०, २.५० रु०, उ० प्र०, (५६-५७)।

काशी के इतिहास, नागरिक जीवन, काव्य-जीवन और मस्ती का विशद् और सुन्दर वर्णन।

—शांडिल्य : **काला पानी** : नई दिल्ली, सस्ता साहित्य मण्डल, १९५६, पृ० ३२, ड० क्रा०, ३७ न० पै०, के० स० द्वारा अ० प्रौ० सा० प्रति०, (५७)।

अण्डमान, निकोबार द्वीपों का रोचक परिचय।

—शिवदानसिंह चौहान : **काश्मीर देश व संस्कृति** : दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, १९५०, पृ० २०७, डि०, ५ रु०, उ० प्र०, (५२)।

काश्मीर का ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक परिचय।

—सन्तराम : **अलबरूनी का भारत** : प्रयाग, इण्डियन प्रेस, १९२८, के० स० प्र० वि० पु० प्रति०।

ऐतिहासिक अध्ययन।

—हरिहरनिवास द्विवेदी : **त्रिपुरी** : मुरार, विद्या मन्दिर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशन, २०१० वि०, पृ० ८४, रॉ०, (सचित्र), २ रु०, उ० प्र०, (५५)।

विदिशा, पद्मावती और बाघ का सचित्र विवेचन।

—सन्तराम वत्स्य : **राजा भोज** : दिल्ली, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, २०१२ वि०, पृ० ४८, डि०, (सचित्र), १ रु०, के० स० जन० सा० प्रति०, (५६)।

राजा भोज के जीवन की झाँकी सरल रोचक भाषा में।

—सत्यकेतु विद्यालंकार : **पाटलीपुत्र की कथा** : इलाहाबाद, हिन्दुस्तानी एकेडेमी, १९४९, पृ० ७१०, ड० क्रा०, १० रु०, उ० प्र०, (५२)।

मगध साम्राज्य के उत्थान और पतन का विवेचन।

इतिहास, नेपाल

—काशीप्रसाद श्रीवास्तव : **नेपाल की कहानी** : दिल्ली, आत्माराम एण्ड सन्स, १९५५, पृ० २६३, डि०, (सचित्र), ८ रु०, उ० प्र०, (५५-५६)।

नेपाल का इतिहास ६१ चित्रों एवं लेखक-परिचय सहित।

—परिपूर्णानन्द पैन्यूली, (भूमिका ले० डॉ० सम्पूर्णानन्द) : **नेपाल का पुनर्जागरण** : टिहरी गढ़वाल, जन साहित्य परिषद्, १९५१, पृ० १५४, ड० क्रा०, २ रु०, उ० प्र०, (५२)।

नेपाल का संक्षिप्त इतिहास आधुनिक पुनर्जागरण तक।

वृहत्तर भारत

—बैजनाथपुरी (डॉ०) : **भारत और कम्बुज** : दिल्ली, भारतीय साहित्य मन्दिर, १९५७, पृ० १७८, ड० क्रा०, (सचित्र), ४ रु०, उ० प्र०, (५७-५८)।

हिन्दचीन में विद्यमान भारतीय प्राचीन उपनिवेश कम्बुज देश का दो खण्डों में सर्वांगीण संक्षिप्त वर्णन।

—रघुराजसिंह 'रंजन' (प्रो०), (भूमिका ले० डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल) : **हमारे पड़ोसी देश** : ग्वालियर, विद्यामन्दिर प्रकाशन, १९५५, पृ० १४२, (सचित्र), ड० क्रा०, २·५० रु०, उ० प्र०, (५५-५६)।

स्याम, हिन्दचीन, सिंहल का वर्णन।

परिशिष्ट

अन्य पुरस्कृत पुस्तकें[1]

—अयोध्याप्रसाद झा : **स्वर्ण अभियान** : वि० प्र०, (५४-५५)।

—उर्मिला बनर्जी : **अपना पराया** : वि० प्र०, (५५-५६)।

—कंचनलता सब्बरवाल : **संकल्प** : उ० प्र०, (५५)।

—कमला चौधरी : **प्रसादी कमण्डल** : उ० प्र०, (५६-५७)।

—कुँवरचन्द्र प्रकाश सिंह : **जनकवि जगनिक** : उ० प्र०, (५७-५८)।

—कुँवरचन्द्र प्रकाश सिंह : **बा और बापू** : उ० प्र०, (५६-५७)।

—कुसुमकुमारी चतुर्वेदी : **बाबा तुलसी** : वि० प्र०, (५४-५५)।

—गंगाप्रसाद कौशल : **वीर बालक** : के० स०, (५६)।

—गुलाबचन्द्र काला : **राजस्थान परिचय ग्रन्थ** : रा०, (५४-५५)।

—गोकुलचन्द्र शर्मा : **अभिनय रामायण** : उ० प्र०, (५५-५६)।

—गोविन्द शरण : **घरौंदा, भाग १** : के० स०, (५६)।

—गौरीशंकर लहरी : **अंगारों की सदिया** : महा० शा०।

—जनार्दन प्रसाद श्रीवास्तव : **उदधि** : वि० प्र०, (५५-५६)।

१. इन पुस्तकों का विवरण हमें प्राप्त नहीं हो सका, इसलिए इनकी सूची एक स्थान पर प्रकाशित की जा रही है।

—**सम्पादक**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

—नरोत्तमदास स्वामी : **महान् बालक** : रा०, (५४-५५)।
—नर्मदाप्रसाद मिश्र : **कलयुग के सतजुगी सपूत** : वि० प्र०, (५२-५३)।
—निरंकारदेव सेवक : **धूप छाया** : उ० प्र०, (५६-५७)।
—निरंकारदेव सेवक : **रिमझिम** : वि० प्र०, (५२-५३)।
—परमात्मानन्द शर्मा : **छत्रपति** : उ० प्र०, (५२)।
—पुरुषोत्तमलाल जैन : **दिव्य ध्वनि** : महा० शा०।
—प्रभुदयाल गोस्वामी : **खलिहान की रात** : वि० प्र०, (५५-५६)।
—बद्रीनारायण शुक्ल : **टिमटिम** : महा० शा०।
—बालचन्द्र जैन : **कलिंग चक्रवर्ती** : वि० प्र०, (५३-५४)।
—बेनीप्रसाद सिंह : **स्वर्ग** : उ० प्र०, (५२)।
—भगवतशरण उपाध्याय : **यह सोने का देश** : के० स०, (५६)।
—भैयालाल व्यास : **आग पानी** : वि० प्र०, (५२-५३)।
—महावीरप्रसाद अग्रवाल : **आठ सेर चावल** : वि० प्र०, (५४-५५)।
—रघुवरदयाल मिश्र : **हैदरअली** : के० स०।
—रविकमल मिश्र : **श्रम का मूल्य** : उ० प्र०, (५७-५८)।
—रहीम, एस० ए० : **मार्गदर्शी महात्मा** : के० स०,(५६)।
—राजकुमारी विन्दल : **हमारी समस्याएँ** : उ० प्र०,(५१)।
—रामउजागर दुबे : **कर्म प्रधान** : उ० प्र०, (५७-५८)।
—रामऋषि शुक्ल : **उन्मेष** : उ० प्र०, (५७-५८)।
—रामकुमार वर्मा : **विजयपर्व** : उ० प्र०, (५६-५७)।
—राममूर्ति अंचल : **अचला** : उ० प्र०, (५७-५८)।
—रामावतार : **सिद्धान्त सार** : उ० प्र०, (५०)।
—लीला सिंधवी (श्रीमती) : **सुहाग रागिनी** : वि० प्र०, (५४-५५)।
—विश्वनाथ तिवारी : **मानचित्र निरूपण** : उ० प्र०, (५६-५७)।
—ब्रजकिशोर वर्मा 'श्याम' : **विप्लव के अग्रदूत** : वि० प्र०, (५४-५५)।
—शिरोदकार, एस०के० : **बातचीत, एक से पाँच भागों में** : के० स०, (५६)।
—शीला शर्मा : **धरती माता** : के० स०, (५५)।
—शीला शर्मा : **मछलियों का देश** : वि० प्र०, (५६-५७)।
—श्याम तिवारी : **दूर्विअक्षत** : उ० प्र०, (५६-५७)।
—श्रीचन्द्र जैन : **भुइयाँ परे हैं लाल** : वि० प्र०।
—सत्यभक्त (स्वामी) : **ईमान** : उ० प्र०, (५२-५३)।
—सत्यभक्त (स्वामी) : **भावगीत** : उ० प्र०, (५२-५३)।
—सत्यभूषण तथा शोभारानी : **विज्ञान दर्शन चित्रावली** : के० स०, (५६)।
—सद्गुरुशरण अवस्थी : **साहित्य तरंग** : उ० प्र०, (५६-५७)।
—सुरेशसिंह : **जीवन की दुनियाँ** : के० स०, (५६)।
—हबीबुर्रहमान शास्त्री : **तत्त्व प्रकाश** : उ०प्र०,(५६-५७)।
—हरगोविन्द गुप्त : **गाँव का मेरुदंड किसान** : वि० प्र०, (५४) तथा उ० प्र०, (५५)।
—हरिमोहनलाल श्रीवास्तव : **भारत भक्ति** : वि० प्र०, (५२-५३)।
—हरिमोहनलाल श्रीवास्तव : **शिशु बोध** : वि० प्र०, (५३-५४)।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी लेखक-चित्रावली

मूल्य १५) मात्र

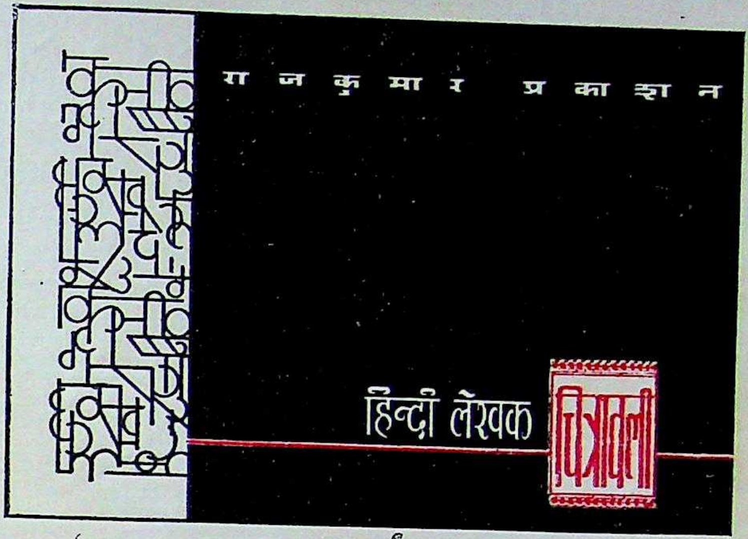

'हिन्दी लेखक-चित्रावली' लम्बी प्रतीक्षा के बाद अब छपकर तैयार है, और इसकी प्रतियाँ ग्राहकों को भेजी जा रही हैं। इसमें निम्न २५ लेखकों के चित्र प्रकाशित किये गए हैं :

सर्वश्री भारतेन्दु हरिश्चन्द्र
आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी
अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'
प्रेमचन्द
आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी
महादेवी वर्मा
सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'
रामधारीसिंह 'दिनकर'
जैनेन्द्र कुमार
रामवृक्ष बेनीपुरी
भगवतीचरण वर्मा
सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय'
उपेन्द्रनाथ 'अश्क'
आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
श्याम सुन्दरदास
जयशंकर प्रसाद
राहुल सांकृत्यायन
शिवपूजन सहाय
सुमित्रानन्दन पन्त
मैथिलीशरण गुप्त
माखनलाल चतुर्वेदी
वृन्दावनलाल वर्मा
इलाचन्द्र जोशी
लक्ष्मीनारायण मिश्र
यशपाल

प्रत्येक चित्र सर्वोत्तम विदेशी आर्ट पेपर पर मुद्रित है और उसके नीचे लेखक व उसकी मुख्य कृतियों का संक्षिप्त परिचय दिया गया है। हिन्दी में पहली बार इस प्रकार का एल्बम प्रकाशित हुआ है। किसी भी हिन्दी प्रेमी व संस्था के लिए इस 'चित्रावली' का आकर्षण स्वाभाविक है।

यदि आपने अब तक आर्डर न भेजा हो तो आज ही लिखें :

राजकुमार प्रकाशन, प्रयाग

की ओर से प्रकाशक

राजकमल

राजकमल प्रकाशन

दिल्ली बम्बई इलाहाबाद पटना मद्रास

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Regd. No. D – 594

भारत सरकार द्वारा

शिक्षण संस्थाओं, ग्राम पंचायतों, स्कूल लायब्रेरियों, कम्यूनिटी प्रोजेक्टों, टैकनिकल इन्स्टीट्यूटों, सामाजिक व शासकीय संस्थाओं द्वारा अपनाया जाने वाला उच्चतम साहित्य यहाँ से लीजिए।

देहली में पुस्तकों की बड़ी दुकान

हमारी प्रकाशित टैकनिकल, इण्डस्ट्रियल तथा अन्य सभी प्रकार के साहित्य की पुस्तकों के अतिरिक्त

भारत के प्रायः सभी प्रमुख हिन्दी प्रकाशकों द्वारा प्रकाशित उत्कृष्ट तथा उपयोगी समीक्षात्मक साहित्य, उपन्यास, कहानी, नाटक, एकांकी, जीवन-चरित्र, आत्म-कथाएँ, ग्रामोपयोगी, महिलोपयोगी, नवयुवकोपयोगी, समाज-शिक्षण, प्रौढ़-साहित्य, मनोविज्ञान, शिक्षा-विज्ञान, इतिहास, राजनीतिक विज्ञान, वनस्पति-विज्ञान, जन्तु-विज्ञान, भौतिक-विज्ञान, रसायन-विज्ञान, नीति-विज्ञान, संगीत-विज्ञान, तर्क-शास्त्र, समाज-शास्त्र, धार्मिक तथा अध्यात्म साहित्य और ज्योतिष सम्बन्धी, तिजारती, तिब्बी, डाक्टरी, आयुर्वेदिक, होम्योपैथिक, जन्त्र-मन्त्र-तन्त्र, पूजापाठ, बालोपयोगी और स्त्रियोपयोगी तथा साथ-साथ हर प्रकार के उपन्यास, कहानियाँ आदि आकर्षक पुस्तकें आपको हमारे यहाँ सुविधा से मिलेंगी। हिन्दी में हर एक विषय की पुस्तक के लिए हमें लिखें।

हमारे प्रकाशन के बिना आपकी लायब्रेरी निश्चित रूप से अधूरी और आपका साहित्य विशेष रूप से अधूरा है और विशेषकर टैकनिकल, इण्डस्ट्रियल तथा एग्रीकल्चरल साहित्य, जिसकी आज के समय में सबसे अधिक आवश्यकता है, विशेष रूप से प्रकाशित किया गया है। आप अपने संग्रह को पूर्ण और साहित्य-रुचि को पूर्ण करने के लिए अपने शहर के मुख्य पुस्तक-विक्रेता से हमारे निश्चित मूल्य पर हमारे प्रकाशन प्राप्त करें, इसके अतिरिक्त हमें सीधा भी लिख सकते हैं—

हिन्दी की पुस्तकों का वृहद् सूचीपत्र केवल पच्चीस नये पैसे के टिकट डाक खर्च के लिए भेजकर मुफ्त मँगाइये

आवश्यक सूचना—हिन्दी के साथ-साथ हमारे यहाँ उर्दू तथा गुरुमुखी की भी हर प्रकार की पुस्तकें हर समय तैयार मिलती हैं।

लायब्रेरियों तथा पुस्तक-विक्रेताओं को पर्याप्त कमीशन

गवर्नमेंट आर्डर सप्लायर

देहाती पुस्तक भण्डार, चावड़ी बाजार, दिल्ली

PHONE : 20030

लोकल ग्राहकों को फोन द्वारा माल सप्लाई करने का पूरा प्रबन्ध है।

श्री देवराज, मैनेजिंग डाइरेक्टर, राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, दिल्ली के लिए
श्री गोपीनाथ सेठ द्वारा नवीन प्रेस, दिल्ली में मुद्रित।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वर्ष ६ सितम्बर, १९५८ अंक १

प्रकाशन

वार्षिक रु० २.०० एक प्रति २१ नये पैसे

समाचार

प्रति मास नियमित रूप से हिन्दी प्रकाशनों की सूचना पुस्तक विक्रेताओं और पुस्तकालयों तक पहुंचाने वाला मासिक

प्रख्यात उपन्यासकार श्री वृन्दावनलाल वर्मा के जीवन और साहित्य पर प्रकाश डालने वाला अनुपम ग्रन्थ

वृन्दावनलाल वर्मा : व्यक्तित्व और कृतित्व

लेखक : डॉक्टर पद्मसिंह शर्मा 'कमलेश', एम० ए०, पी-एच० डी०

(आगरा कालिज, आगरा)

प्रसिद्ध साहित्यकारों की दृष्टि में

बाबू गुलाबराय, एम० ए०, डी० लिट्० (सम्मानार्थ)

"इस पुस्तक से वर्मा जी के कृतित्व की एक समग्र और सुसम्बद्ध झाँकी मिलती है।"

डॉक्टर धीरेन्द्र वर्मा, एम० ए०, डी० लिट्०

"वृन्दावनलाल वर्मा पर अभी तक कोई भी आलोचनात्मक ग्रन्थ उपलब्ध नहीं था। इस सुन्दर तथा विस्तृत अध्ययन से यह कमी पूरी होती है।"

डॉक्टर विश्वनाथ प्रसाद, एम० ए०, पी-एच० डी०

"वर्मा जी के ऐतिहासिक और सामाजिक उपन्यासों एवं नाटकों की तात्त्विक मीमांसा इस ग्रन्थ में बहुत पाण्डित्यपूर्ण ढंग से की गई है।"

डॉक्टर सत्येन्द्र, एम० ए०, पी-एच० डी०

"इस एक ही पुस्तक में वर्मा जी के नाटकों, उपन्यासों, कहानियों तथा एकांकियों का मूल्यांकन सरल भाषा में और संक्षेप में मिल जाता है।"

डॉक्टर मुन्शीराम शर्मा, एम० ए०, डी० लिट्०

"जितनी सहृदयता और निकटता से लेखक ने वर्मा जी की कृतियों को परखा है, उतनी अन्य आलोचनाओं में दृष्टिगत नहीं होती।"

डॉक्टर माताप्रसाद गुप्त, एम० ए०, डी० लिट्०

"वर्मा जी के साहित्य का अध्ययन करने वालों को इस ग्रन्थ से पर्याप्त सहायता प्राप्त होगी।"

डॉक्टर लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय, एम० ए०, डी० लिट्०

"यह ग्रन्थ निःसन्देह वर्मा जी के साहित्य को समझने में अत्यन्त उपयोगी सिद्ध होगा।"

मूल्य : चार रुपये मात्र

सर्वोदय प्रकाशन मन्दिर,

नई सड़क, दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारत सरकार द्वारा

शिक्षण संस्थाओं, ग्राम पंचायतों, स्कूल लायब्रेरियों, कम्यूनिटी प्रोजेक्टों, टैकनिकल इन्स्टीट्यूटों, सामाजिक व शासकीय संस्थाओं द्वारा अपनाया जाने वाला उच्चतम साहित्य यहाँ से लीजिए।

देहली में पुस्तकों की बड़ी दुकान

हमारी प्रकाशित टैकनिकल, इण्डस्ट्रियल तथा अन्य सभी प्रकार के साहित्य की पुस्तकों के अतिरिक्त

भारत के प्रायः सभी प्रमुख हिन्दी प्रकाशकों द्वारा प्रकाशित उत्कृष्ट तथा उपयोगी समीक्षात्मक साहित्य, उपन्यास, कहानी, नाटक, एकांकी, जीवन-चरित्र, आत्म-कथाएँ, ग्रामोपयोगी, महिलोपयोगी, नवयुवकोपयोगी, समाज-शिक्षण, प्रौढ़-साहित्य, मनोविज्ञान, शिक्षा-विज्ञान, इतिहास, राजनीतिक विज्ञान, वनस्पति-विज्ञान, जन्तु-विज्ञान, भौतिक-विज्ञान, रसायन-विज्ञान, नीति-विज्ञान, संगीत-विज्ञान, तर्क-शास्त्र, समाज-शास्त्र, धार्मिक तथा अध्यात्म साहित्य और ज्योतिष सम्बन्धी, तिजारती, तिब्बी, डाक्टरी, आयुर्वेदिक, होम्योपैथिक, जन्त्र-मन्त्र-तन्त्र, पूजापाठ, बालोपयोगी और स्त्रियोपयोगी तथा साथ-साथ हर प्रकार के उपन्यास, कहानियाँ आदि आकर्षक पुस्तकें आपको हमारे यहाँ सुविधा से मिलेंगी। हिन्दी में हर एक विषय की पुस्तक के लिए हमें लिखें।

हमारे प्रकाशन के बिना आपकी लायब्रेरी निश्चित रूप से अधूरी और आपका साहित्य विशेष रूप से अधूरा है और विशेषकर टैकनिकल, इण्डस्ट्रियल तथा एग्रीकल्चरल साहित्य, जिसकी आज के समय में सबसे अधिक आवश्यकता है, विशेष रूप से प्रकाशित किया गया है। आप अपने संग्रह को पूर्ण और साहित्य-रुचि को पूर्ण करने के लिए अपने शहर के मुख्य पुस्तक-विक्रेता से हमारे निश्चित मूल्य पर हमारे प्रकाशन प्राप्त करें, इसके अतिरिक्त हमें सीधा भी लिख सकते हैं—

हिन्दी की पुस्तकों का वृहद् सूचीपत्र केवल पच्चीस नये पैसे के टिकट डाक खर्च के लिए भेजकर मुफ्त मँगाइये

आवश्यक सूचना—हिन्दी के साथ-साथ हमारे यहाँ उर्दू तथा गुरुमुखी की भी हर प्रकार की पुस्तकें हर समय तैयार मिलती हैं।

लायब्रेरियों तथा पुस्तक-विक्रेताओं को पर्याप्त कमीशन

गवर्नमेण्ट आर्डर सप्लायर

देहाती पुस्तक भण्डार, चावड़ी बाजार, दिल्ली

PHONE : 20030

लोकल ग्राहकों को फोन द्वारा माल सप्लाई करने का पूरा प्रबन्ध है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशन समाचार

: वर्ष ६ :
: अंक १ :

सम्पादक : श्रों प्रकाश, डायरेक्टर इंचार्ज, राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड

हिन्दी के ग्यारह विभिन्न प्रकाशकों ने २३ अगस्त, ५८ को इलाहाबाद में मिलकर निश्चय किया कि वे अपने प्रकाशन एक नवम्बर से उन्हीं पुस्तक-विक्रेताओं को बेचेंगे जो उन्हें प्रकाशित मूल्य पर ही बेचने के अनुबन्ध पर हस्ताक्षर कर देंगे। किन दशाओं में किन-किन ग्राहकों को कमीशन की कितनी-कितनी सुविधा दी जा सकती है, इस सम्बन्ध में भी उचित निर्णय लिये गए हैं और उन निर्णयों को सम्मिलित रूप से लागू करने के लिए **संयुक्त हिन्दी-प्रकाशक** नाम की एक नई संस्था आयोजित हो रही है। इस संस्था का मुख्य, शायद एकमात्र, उद्देश्य पुस्तकों की उचित मूल्यों पर बिक्री पर नियन्त्रण रखने का है; **अखिल भारतीय हिन्दी-प्रकाशक संघ** के कार्य और उद्देश्यों की पूर्ति में इससे पर्याप्त सहायता मिलेगी।

मालूम हुआ है कि पत्र-व्यवहार द्वारा कुछ अन्य प्रकाशकों ने भी **संयुक्त हिन्दी-प्रकाशक** के प्रस्तावों से सहमति दरशाई है और आशा है कि १ नवम्बर तक हिन्दी की प्रमुखतम प्रकाशन-संस्थाएँ हिन्दी की पुस्तकों की बिक्री सम्बन्धी अव्यवस्था को दूर करने के इस प्रयास में अपना सहयोग देना स्वीकार कर लेंगी।

हिन्दी-प्रकाशनों की बिक्री में जो धाँधली आज बरसों से चल रही है, उसमें अच्छे पुस्तक-विक्रेताओं के लिए पनपने की गुंजाइश नहीं है; प्रकाशित मूल्य पर मनमाना कमीशन फुटकर ग्राहकों, पुस्तकालयों तथा सरकारी आर्डरों पर काट दिया जाता है; पुस्तक-विक्रेता को अपनी पूँजी और श्रम पर उचित लाभ नहीं मिल पाता। यही कारण है कि प्रकाशकों को, जिनकी संख्या १९४७ के बाद काफ़ी बढ़ी है, अपने प्रकाशन बेचने के लिए पुस्तक-विक्रेता भी बनना पड़ता है। इसमें व्यय का अनुपात अधिक होने के बावजूद भी, अच्छे पुस्तक-विक्रेताओं के प्रायः अभाव में, उनके पास कोई दूसरा चारा नहीं है। यदि इस धाँधली को किसी प्रकार रोका जा सके तो पुस्तक-विक्रेताओं को प्राप्य लाभ की मात्रा में उतनी वृद्धि हो सकेगी जो अतिरिक्त पूँजी और श्रम को इस व्यवसाय की ओर आकर्षित कर सके। विदेशों के पुस्तक-व्यवसायों ने आधी शती से अधिक अरसा हुआ, इसी प्रकार की धाँधली को अपने यहाँ से इसी प्रकार के कदम उठाकर हटाया था जिन्हें **संयुक्त हिन्दी-प्रकाशक** आज उठाने जा रहे हैं।

बिक्री सम्बन्धी जो नियम बनाये जा रहे हैं, उनका जितनी कड़ाई से पालन हो सका, हिन्दी प्रकाशन-व्यवसाय का भविष्य उतना ही सुरक्षित और उज्ज्वल होगा। आज हिन्दी की पुस्तकों की बिक्री का आधार अधिकांश में सरकारी अनुदान प्राप्त करने वाली संस्थाओं द्वारा की जाने वाली खरीद पर है। पुस्तक-विक्रेता अपने यहाँ हिन्दी के नये-नये प्रकाशनों को सदैव स्टॉक करने का 'रिस्क' उठाने को तैयार नहीं होते और परिणामतः हिन्दी के पाठक-ग्राहक-वर्ग का निर्माण नहीं हो पा रहा है। प्रकाशन-व्यवसाय के लिए यह घातक प्रवृत्ति **संयुक्त हिन्दी-प्रकाशक** के निर्णयों के कार्यान्वित होने पर अवश्य रुकेगी। इस ओर प्रयत्नशील प्रकाशकों की सद्बुद्धि और सत्प्रयासों का सब ओर से स्वागत होना चाहिए और अन्य प्रकाशकों एवं पुस्तक-विक्रेताओं का अधिकाधिक सहयोग उन्हें अपेक्षित और देय है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस मास के नये प्रकाशन

हिन्दी के लोक प्रिय कवि 'बच्चन' द्वारा
'रामचरितमानस' की सरस शैली पर
श्रीमद्भगवद्गीता का पद्यानुवाद

जनगीता

मूल्य : ३·००

डॉ० रांगेय राघव का नवीन उपन्यास

राई और पर्वत

मूल्य : ३·००

गॉल्सवर्दी के अमर नाटक LOYALTIES
का अनुवाद

मन के बन्धन

अनुवादक—डॉ० रांगेय राघव
मूल्य : २·००

ज्ञान-विज्ञान सीरीज़ की दो नवीन पुस्तकें

उत्तरी तथा दक्षिणी ध्रुवों की कहानी
ज्वालामुखी और भूचाल की कहानी

प्रत्येक का मूल्य : केवल दो रुपये

जिगर
मुरादाबादी
जीवनी और संकलन
संपादक—प्रकाश पंडित
मूल्य : डेढ़ रुपया

किशोरोपयोगी उपन्यास
तीसमारखाँ
(DON QUIXOTE)
मूल्य : डेढ़ रुपया

राजपाल एण्ड सन्ज़, कश्मीरी गेट, दिल्ली-६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देश-विदेश से

मास्को में राज्यीय प्रकाशकों की ओर से, प्रसिद्ध सोवियत विद्वान् ग्रिगोरी इल्यिन की 'भारत की प्राचीन नगरी तक्षशिला' से सम्बन्धित खोजों का प्रकाशन इतिहास रूप में किया गया है। पुरातत्त्व सम्बन्धी आँकड़ों व तथ्यों के अतिरिक्त इसमें प्राचीन रोमन, ग्रीक व चीनी इतिहासकारों की रचनाओं में से तक्षशिला सम्बन्धी उद्धरण का समावेश भी है।

* * *

सोवियत विद्वन्मण्डली द्वारा प्रणीत तथा इतिहास के डॉ० अलेक्सी ग्रोकोव और प्रो० व्लादिमीर वालाबुशेविच द्वारा सम्पादित 'आधुनिक भारतवर्ष का इतिहास(१९१८-५६)' शीघ्र ही छपकर तैयार हो जायगा। इसके अतिरिक्त रूस में प्राचीन भारतीय साहित्यिक रचनाओं का अनुवाद भी किया जा रहा है जिससे कि ये रचनाएँ व्यापक सोवियत पाठक-वर्ग को सहज ही उपलब्ध हो सकें। 'महाभारत' के दूसरे पर्व का अनुवाद शीघ्र प्रकाशित हो रहा है! 'आदि पर्व' का अनुवाद १९५० में प्रकाशित हुआ था।

* * *

मास्को और लेनिनग्राद के कुछ स्कूलों के पाठ्य-क्रम में पिछले कुछ वर्षों से हिन्दी और उर्दू भाषाएँ शामिल की गई हैं। इसके बाद शीघ्र ही प्रथम वर्ष के अध्ययन के लिए हिन्दी भाषा की पाठ्य-पुस्तक ताशकंत के पाठ्य-पुस्तक प्रकाशन गृह ने प्रकाशित की। श्री कामताप्रसाद गुरु के 'हिन्दी व्याकरण' का रूसी अनुवाद अत्यन्त उपयोगी सिद्ध हुआ है।

विदेशी साहित्य प्रकाशन गृह से शीघ्र ही हिन्दी-रूसी और बंगाली-रूसी मुहावरों की छोटी-छोटी पुस्तकें प्रकाशित होंगी।

* * *

दिल्ली में काग़ज़ के वितरण के सम्बन्ध में जो धाँधली चल रही है, पुस्तक-विक्रेता संघ, दिल्ली की ओर से उसका विरोध प्रकट किया जा रहा है और संघ ने सरकार व मिल मालिकों से अनुरोध किया है कि वे उपभोक्ताओं में काग़ज़ के वितरण के लिए उचित प्रबन्ध करें।

* * *

राजस्थान में कुछ पाठ्य-पुस्तकों के राष्ट्रीयकरण के बाद पुस्तकें पाने में पुस्तक-विक्रेताओं एवं छात्रों को अत्यन्त कठिनाई का अनुभव हो रहा है। विक्रेताओं की ओर से सम्बन्धित विभाग को आर्डर व अग्रिम राशि भेजे जाने के बावजूद भी, महीनों न तो पुस्तकें प्राप्त होती हैं और न ही देरी का कारण बताया जाता है। सरकारी विभाग की इस नीति से न केवल विक्रेताओं को हानि होती है अपितु स्कूलों के विद्यार्थी भी पाठ्य-पुस्तक न मिलने के कारण परेशान होते हैं।

* * *

कहा जाता है कि भारत सरकार ने पाकिस्तान सरकार के सामने सुझाव रखा है कि वे दोनों एक-दूसरे के देशों के लेखकों, गायकों तथा फिल्म-निर्माताओं के कापीराइट संरक्षण के लिए एक समझौता कर लें। पाकिस्तान से स्वीकारात्मक उत्तर पाने पर केन्द्रीय वैज्ञानिक अनुसन्धान और सांस्कृतिक विषयों का मन्त्रालय इस समझौते की रूप-रेखा तैयार कर लेगा। इस समय दोनों देशों में एक-दूसरे देश के लेखकों के कापीराइट का सम्मान नहीं किया जा रहा है।

* * *

सेंट्रल रेफ़रेंस लाइब्रेरी की ओर से प्रकाशित होने वाली त्रैमासिक प्रकाशन-सूची (इंडियन नैशनल बिब्लियोग्राफ़ी) के सम्पादक श्री बी० एस० केशवन के अनुसार भारतीय विधान के अन्तर्गत १४ भाषाओं में प्रतिवर्ष लगभग २० हजार पुस्तकें प्रकाशित होती हैं। इस प्रकाशन-सूची का प्रथम अंक, जिसमें १ अक्तूबर से ३१ दिसम्बर, ५७ में देश में छपी सब पुस्तकों की सूची है, १५ अगस्त, ५८ को सम्पादक श्री केशवन ने प्रधान मन्त्री श्री नेहरू को भेंट किया।

* * *

(शेष पृष्ठ ३१ पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सस्ते मूल्य की पुस्तकों का प्रकाशन और वितरण

कुलभूषण

यूनेस्को के तत्वावधान में भारत सरकार की ओर से संयुक्त राज्य अमरीका, ब्रिटेन, हालैंड, जर्मनी और सोवियत रूस की प्रकाशन संस्थाओं के किये गए सर्वेक्षण का प्रतिवेदन।

अध्याय—१

अध्ययन किसलिए ?

देश में साक्षरता-प्रसार के सम्बन्ध में भारत सरकार को जिन अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा है उनमें से जनता के लिए कम मूल्य पर अच्छी और पठनीय सामग्री को उपलब्ध बनाने की समस्या भी प्रमुख है।

सन् १९४७ में स्वतन्त्रता प्राप्त करने के बाद से ही बहुत सी सरकारी और गैर-सरकारी संस्थाएं इस समस्या के समाधान में लगी हैं कि किस तरह उस व्यक्ति के लिए, जिसने नया-नया पढ़ना-लिखना आरम्भ किया है, और जो पुस्तकों में छपे हुए मोटे-मोटे अक्षरों को लड़खड़ाती अँगुलियों से टटोलता है, ऐसी पठनीय और सचित्र सामग्री उपलब्ध की जाय जो पढ़ना-लिखना सीखने वाले लोगों के लिए उपयुक्त हो। हमारे यहां ऐसी सामग्री की बड़ी कमी है।

किन्तु धीरे-धीरे यह तथ्य उभरकर सामने आ रहा है कि नया-नया अक्षर-ज्ञान प्राप्त करने वाले अथवा उस व्यक्ति के लिए, जिसने पढ़ना-लिखना आरम्भ ही किया हो, किसी पुस्तक का मोटे टाइप में छपा होना ही पर्याप्त नहीं है बल्कि आवश्यकता इस बात की है कि नई परम्पराओं और प्रगति के ज्ञान तथा मनोरंजन की प्यास को तृप्त करने के लिए मुद्रित पुस्तकों को पढ़ने की रुचि उनमें उत्पन्न की जाय। वैसे भी एक सामान्य वयस्क को विभिन्न विषयों पर लिखी गई सामग्री की आवश्यकता होती है। उसमें विभिन्न भाषाओं के वर्गीकृत काव्य और विज्ञान तथा शिल्प-शास्त्र से सम्बन्धित पुस्तकों को पढ़ने की प्यास होती है ताकि उस तथ्य के द्वारा, जिसके माध्यम से संसार ने इतनी प्रगति कर ली है, उसका दृष्टिकोण विकसित हो सके और उसके चिन्तन के सीमान्तों का भी विस्तार हो सके।

इसमें सन्देह नहीं है कि भारतवर्ष की मासिक पत्रिकाएं ऐसी अनेक प्रकाशन-संस्थाओं की सूचना देती हैं जिन्होंने उपयुक्त विषयों पर पर्याप्त पुस्तकें छापी हैं। किन्तु उनका सीमा-क्षेत्र और प्रकाशन पाठकों की कमी और मूल्यों की अधिकता के कारण सीमित है। पाठकों की संख्या सीमित इसलिए है कि हमारे यहाँ केवल हस्ताक्षर कर सकने वाले साक्षरों को मिलाकर भी दस प्रतिशत पढ़े-लिखे लोग हैं। मूल्य की अधिकता पुस्तकों की सीमित बिक्री का दूसरा कारण है क्योंकि हमारे यहाँ प्रति व्यक्ति की आय का अनुपात बहुत नीचा है। अत: पुस्तकों की सीमित खपत के कारण हमारे यहाँ यह व्यवसाय अपनी पुरानी पद्धतियों से मुक्त नहीं हो पाता। पुस्तकें केवल स्कूल, कालिजों और नगरों के क्षेत्र तक ही पहुँच पाती हैं, फलस्वरूप दूसरे क्षेत्र उपेक्षित रह जाते हैं और उनके पास तक पठनीय सामग्री नहीं पहुँच पाती।

पुस्तक-प्रकाशन और उनके वितरण की पद्धतियों का अध्ययन करने का उद्देश्य यह था कि अच्छी, सस्ती और सुरुचिपूर्ण कागज पर छपी हुई पुस्तकें एक रुपया अथवा एक रुपया पच्चीस नए पैसे से पाठकों को किस प्रकार उपलब्ध बनाई जायें। मेरे सामने इंगलैण्ड की पेंग्युन बुक्स और अमरीका की सिगनैट और पॉकेट बुक सीरीज के उदाहरण मौजूद थे जो उन देशों और संसार के अन्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अंग्रेजी भाषा जानने वालों के लिए वरदान सिद्ध हो चुके हैं। पुस्तक-प्रकाशन की पद्धतियों के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त करने के साथ प्रकाशकों से सम्पादकीय पद्धतियों के सम्बन्ध में भी कुछ प्रश्न पूछे गए, अतः उनके निष्कर्ष भी इस विवरण में सम्मिलित कर दिये गए हैं।

विश्व-भर की समस्त पुस्तकों के सम्पादन, उत्पादन और वितरण की पद्धतियों का न्यायसंगत सर्वेक्षण करना सम्भव नहीं है। यह बड़ा कठिन कार्य है, लेकिन एक बार इस कठिन दायित्व का भार ले लेने के बाद मैंने अनुभव किया कि यह तो और भी अन्याय होगा यदि मैं प्रकाशनों के सम्बन्ध में केवल मोटी-मोटी बातें नोट कर लूं और लेखकों, अनुवादकों, सम्पादकों, मुद्रकों, जिल्दसाजों तथा विक्रेताओं से सम्बन्धित उस महत्त्वपूर्ण पहलू पर ध्यान न दूं, जो अपने शारीरिक और मानसिक साधनों से किसी पुस्तक को बिक्री के योग्य बनाते हैं—उस पुस्तक को जो विचारों की सार्थवाहिनी होती है।

इस अवसर पर मैं जारिया (पश्चिमी अफ्रीका), न्यूयार्क, शिकागो, वाशिंगटन, लन्दन, ग्लासगो, हैम्सट्डन, स्तीचवेमैन, फ्रेंकफर्ट, बर्लिन और मास्को के प्रकाशन-गृहों, प्रकाशन-संस्थाओं और पुस्तक-भंडारों के समस्त अधिकारियों और कार्यकर्त्ताओं का धन्यवाद करता हूँ जिनके मूल्यवान और निःस्वार्थ सहयोग के बिना मेरे लिए इस सर्वेक्षण को पूरा करना असम्भव था। अन्त में मैं यूनेस्को के 'एक्सचेंज आफ पर्सन्स सर्विस विभाग' को धन्यवाद देता हूँ जिसकी सहायता से कम-से-कम समय में इस सर्वेक्षण को पूरा करने की सुविधा मुझे मिली।

अध्याय—२

यूरोप और रूस में सस्ते कागज पर छपने वाली पुस्तकों का संक्षिप्त इतिहास

मजबूत पट्ठे और सख्त कवर की पुस्तकों की जगह मुलायम और सादे कागज पर छपी पुस्तकों को 'पेपर बैक बुक्स' अथवा कम मूल्य पर उपलब्ध होने वाली पुस्तकें कहा जाता है। अब इस प्रकार की पुस्तकों का अर्थ उन पुस्तकों से लगाया जाने लगा है जो अच्छे न्यूज़प्रिंट पर छपें और सादे कागज की जिल्द के साथ कम मूल्य पर बाजार में बड़ी संख्या में बिकें। 'पेपर बैक' की यह पद्धति सामान्य व्यक्ति के लिए बीसवीं शताब्दी का एक चमत्कार है। न्यू अमरीकन लायब्रेरी के श्री कर्ट ईनोक ने इस सम्बन्ध में एक लेख भी लिखा है, जिसका शीर्षक है 'पेपर बाउन्ड बुक बीसवीं शती का चमत्कार।" किन्तु वास्तव में जैसा श्री ईनोक भी स्वीकार करते हैं 'पेपर बैक' की पद्धति का उन्नीसवीं शताब्दी में ही आविष्कार हो चुका था। हाँ, बीसवीं शताब्दी में यह अपने चरम उत्कर्ष पर पहुँची।

यूरोप में 'पेपर बैक' का आरम्भ सन् १८३७ में तोचनीज़ संस्करणों की उन अंग्रेजी पुस्तकों के प्रकाशन से हुआ जिनमें बहुत से अंग्रेज और अमरीकी लेखकों की रचनाएँ संकलित थीं। ये पुस्तकें गैर-अंग्रेजी भाषी देशों में बेचने के लिए लीपज़िग में छापी गईं। शीघ्र ही इस प्रकाशनमाला की पुस्तकों की संख्या पाँच हजार तक पहुँच गई जो बड़ी महत्त्वपूर्ण सफलता मानी जाती है।

इसी बीच इंगलैण्ड में श्री स्मिथ ने सन् १८४८ में जो पहला रेलवे स्टाल खोला था उसके लिए 'रेलवे लायब्रेरी', 'दी टन ग्रंडरीड लायब्रेरी' तथा 'ट्रेवलर्स लायब्रेरी' नामक मालाओं में ऐसी पुस्तकें छापी थीं। यह प्रायः कम मूल्य वाले ऐसे उपन्यास थे जिनका मूल्य ६ पैंस से एक शिलिंग ६ पैंस प्रति पुस्तक तक होता था।

सन् १८६७ के अन्तर्गत जर्मनी में 'रेक्लन यूनीवर्सल' की स्थापना हुई, जिसने प्रतिमास बड़े आकार के स्थान पर छोटे आकार में दस नई पुस्तकें प्रकाशित करनी आरम्भ कीं। उनकी एक पुस्तक का मूल्य ३० भारतीय नये पैसों के बराबर होता था। पचास वर्ष के थोड़े से समय में इन्होंने लगभग ६,००० नई पुस्तकें प्रकाशित कीं और इस काल में उन्होंने जर्मनी भाषा के वर्गीकृत काव्यों की एक करोड़ साठ लाख, यूनानी तथा रोमन काव्यों की ८५०,००० और दर्शन सम्बन्धी ग्रन्थों की ५,००,००० प्रतियाँ बेचीं। यह बात अवश्य है कि पचास वर्षों के अन्तर्गत पुस्तकों की इतनी बड़ी खपत जर्मनी में 'सोसायटी फॉर एजूकेशन' द्वारा स्थापित १,३७,००० पुस्तकालयों और २२,००० चलने फिरने वाले पुस्तकालयों के कारण भी हुई।

सन् १९३२ के अन्तर्गत 'एलबेटरोज माडर्न कांटी-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नेंटल लायब्रेरी' की स्थापना हुई, जिसने सन् १६३५ में विख्यात तोचनीज प्रकाशन-संस्था की व्यवस्था भी अपने हाथ में ले ली। इस संस्था ने भी ४०० ऐसी पुस्तकें प्रकाशित कीं। तोचनीज और एलबैट रोज़ ने मिलकर जो प्रकाशन किये, उसी के आधार पर इंगलैण्ड, यूरोप और संयुक्तराज्य अमरीका में भी प्रकाशित होने वाली पेपर बैंक पुस्तकों को आये दिन छापा जा रहा है।

सन् १६३५ में सौ पौण्ड की साधारण-सी पूंजी को लेकर आज की सर्वाधिक लोकप्रिय संस्था 'पैंग्युन बुक' की नींव पड़ी। इसके उपरान्त इंगलैण्ड में 'ह्वाइट सर्किल नॉवेल्स,' 'कोनताना बुक्स' और 'पान बुक्स' जैसी अन्य संस्थाएँ भी इस क्षेत्र में प्रविष्ट हुई। हालैंड की 'प्रिज्न बुक्स,' फ्रांस की 'लासुई' तथा 'हैचिड बुक्स', इटली की 'फैल्ट्रीनिली' तथा 'अर्नाल्डो बुक्स', जर्मनी की 'उल्सटीन', 'टो-टो-टो' तथा 'फिशर बुक्स' जैसी पेपर बैंक पुस्तकों की संस्थाएँ यूरोप के अनेक देशों में आज दिन विद्यमान हैं।

संयुक्त राज्य अमरीका में पेपर बैंक बुक्स का व्यवसाय सन् १८८० के लगभग एक दूसरे रूप में 'पत्र-पत्रिकाओं के बिना बँधे परिशिष्टों' से आरम्भ हुआ। अंग्रेज़ी लेखकों की ये कृतियाँ, जो अमरीका में कापीराइट के नियमों से मुक्त थीं, कुछ साहसी प्रकाशकों ने प्रकाशित कीं। उन्नत छपाई की सुविधाओं तथा पत्र-पत्रिकाओं के लिए स्वीकृति, और कम डाक-व्यय का लाभ उठाकर वे लोग इस स्थिति में थे कि ये पुस्तकें भारी संख्या में अमरीका में कहीं भी बहुत थोड़े खर्च से भेजी जा सकती थीं। अतः कम मूल्य पर उपन्यास और अन्य पठनीय सामग्री तैयार करने वाला एक नया उद्योग वहाँ पनपना शुरू हो गया। किन्तु सन् १८८३ में यह धन्धा तब बन्द हो गया जब अमरीकी डाक विभाग ने इन परिशिष्टों के भेजने पर पुस्तकों पर आने वाला डाक-व्यय लेना आरम्भ कर दिया। वहाँ का कम मूल्य की पुस्तकों का पहला आन्दोलन इस प्रकार समाप्त हुआ।

अमरीका ने लगभग ३० वर्ष तक इस व्यवसाय को आरम्भ करने का कोई यत्न नहीं किया। किन्तु सन् १८६७ में लकड़ी की लुगदी का कागज पुस्तकों के लिए इस्तेमाल होने लगा और उसके प्रयोग के साथ यह आन्दोलन दूसरे रूप में फिर शुरू हो गया।

सन् १८७३ ई० में 'दि न्यूयार्क ट्रिब्यून' ने विज्ञान सम्बन्धी विषयों पर अतिरिक्त परिशिष्ट प्रकाशित करने का क्रम आरम्भ किया जो बाद में 'ट्रिब्यून नोवेल्स' में प्रकाशित होने लगा।

सन् १८७५ ई० में होनेली, गेसैटी और लाएड ऑफ शिकागो द्वारा प्रकाशित कम मूल्य वाले उपन्यासों की 'लेक लाइड लाइब्रेरी' का उदय हुआ। इसके उपरान्त के १४ वर्षों में इस क्षेत्र में रिवरसाइड लाइब्रेरी, फायरसाइड लाइब्रेरी और होम लाइब्रेरी आदि के नाम से पुस्तकें छापने वाली १४ अन्य संस्थाएँ और आईं।

पाकेट बुक संस्था की श्री फ्रीमैन लुइस ने लिखा है, "पिछले २० वर्षों में कम मूल्य वाली पुस्तकों की लाइब्रेरियाँ अमरीकी पुस्तक व्यापार के क्षेत्र में सर्वाधिक चर्चा का विषय रही हैं। इन संस्थाओं द्वारा अपनी पुस्तकें बेचने के लिए अपनाये गए साधनों तथा प्रतियोगिता में पड़कर सुललित रूप से प्रकाशित होने वाली पुस्तकों के सामने और आने वाले गतिरोध तथा अमरीकी पाठकों के मस्तिष्क को मन चाहा बना देने की उनकी क्षमता—यहाँ जो समस्याएँ आज हमारे सामने हैं पिछले वर्षों में ये और भी भयानक थीं। उन लोगों के लिए जो तात्कालिक समस्याओं को सुलझाने में अतीत की सहायता लेना पसन्द करते हैं यह बात विशेष रुचि से पढ़ने योग्य है कि उस समय सस्ते मूल्यों पर बिकने वाली पुस्तकें जो भी प्रकाशित होती थीं वे प्रायः मौलिक होती थीं तथा उसी पुस्तक का उसी शीर्षक से अच्छे कागज और कपड़े की जिल्द वाला संस्करण छापने का आम रिवाज था।"

सन् १८६३ ई० में अन्तर्राष्ट्रीय कापीराइट अधिनियम (१८६१) के रूप में एक दूसरी स्थिति ऐसी पैदा हुई जिसने अंग्रेज लेखकों की कृतियों को बिना आज्ञा लिये छापने की स्वतन्त्रता अमरीकी प्रकाशकों के हाथ से छीन ली।

सन् १६३० में फिर एक लहर आई। तब लारेंस ई० स्पीवक द्वारा प्रकाशित मॉडर्न ऐज बुक्स, हिलमैन नॉवेल्स और रहस्यात्मक कहानियों के रूप में इस व्यवसाय का

(शेष पृष्ठ ३६ पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे १६५८ के अभिनव प्रकाशन

नाटक

नए हाथ (पुरस्कृत)	विनोद रस्तोगी	२·००
सुजाता	गोविन्दवल्लभ पंत	१·५०
उधार का पति	वनमाला भवालकर	१·००
अभिज्ञान शाकुन्तल	इन्दुशेखर	३·००
सुबह का भूला (सचित्र)	श्रीकृष्ण	१·००
जानहार	बेगम कुदसिया जैदी	२·००

एकांकी

रंगारंग	चिरंजीत	२·५०
विषकन्या (सचित्र)	गोविन्दवल्लभ पंत	२·५०

उपन्यास

काली लड़की	रजनी पनिकर	३·००
अशू	अमृता प्रीतम	३·००
अधूरी तस्वीर	वसन्त प्रभा	३·००

कविता

बादर बरस गयो	'नीरज'	३·००
आसावरी (सचित्र)	,,	३·००
दो गीत	,,	१·५०
लहर पुकारे	,,	२·००
नदी किनारे	,,	२·००
सागर के सीप (सचित्र)	भारतभूषण	३·५०
धरती के बोल (सचित्र)	जयनाथ 'नलिन'	३·५०
प्रेमी का उपहार	मूल० रवीन्द्रनाथ टैगोर अनु० दयालकृष्ण शर्मा	३·००
मेरे गीत	ललित गोस्वामी	२·००
मन्थन	मुनि बुद्धमल	२·००
शेक्सपियर के सॉनेट	अनु० राजेन्द्र द्विवेदी	२·५०

जीवन : आत्म-चरित्र

आत्मकथा रामप्रसाद 'बिस्मिल'	सं. बनारसीदास चतुर्वेदी	२·५०
महान मनीषी	जगन्नाथप्रसाद मिश्र	३·००

मनोरंजन-विनोद

कुछ सच : कुछ झूठ (सचित्र)	गोपालप्रसाद व्यास	४·००
हास-परिहास	अरुण, एम० ए०	३·००

राजनीति

ग्रेट ब्रिटेन का संविधान	योगेन्द्र मल्लिक	४·००
संयुक्त राज्य अमेरिका का संविधान	योगेन्द्र मल्लिक	४·००
भारतीय प्रशासन	के० आर० बम्बवाल	५·००
शासन-पथ-निदर्शन	राजर्षि पुरुषोत्तमदास टण्डन	६·००

अन्य

दैनिक गृहोपयोगी विज्ञान	श्रीकृष्ण सरल	४·००
मनोरम कश्मीर (सचित्र)	मोहनकृष्ण दर	५·००
क्यों और कैसे ? (सचित्र)	मनोहरलाल वर्मा	४·००
कृषि यन्त्र शास्त्र (सचित्र)	ब्रह्मदेव गुप्त	२·००
चित्रज्ञान का सारांश	जमादार रामकुवार	२.५०
पढ़ाने की कला	गिलबर्ट हायेट	६.५०

सचित्र लोक-कथा-माला

केरल की लोककथाएँ	ज्ञानेन्द्रकुमार भटनागर	१·५०
भोजपुर की लोककथाएँ	शिवमूर्तिसिंह वत्स	१·२५
कुमाऊँ की लोककथाएँ	'शैलेश' मटियानी	१·५०
बारामण्डल की लोककथाएँ	शैलेश' मटियानी	१·५०

चित्रमय-कथा-माला

महाभारत (रंगीन)		२·००
सम्राट् चन्द्रगुप्त		१·२५

सचित्र बाल-साहित्य

पुराणों की कहानियाँ	राजबहादुर सिंह	२·००
नीम हकीम	सावित्रीदेवी वर्मा	१·००
इंसान कभी नहीं हारा	सावित्रीदेवी वर्मा	१·००
साहसी बालक	जे० डी० वैश्य	१·००
चींटों का बदला	स्वदेशकुमार	१·००
अंकुर का सपना	धर्मपाल शास्त्री	१·००
जवाहर और कमला	जहूरबख्श	०·५०
मोहन का चरखा	जहूरबख्श	०·२५
बकरी माँ	दयाशंकर मिश्र दद्दा	०·५०

आत्माराम एण्ड सन्स, काश्मीरी गेट, दिल्ली-६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेखकीय मञ्च

श्री आर०एस० पाण्डे द्वारा पंचवर्षीय योजना से सम्बन्धित निम्न पाण्डुलिपियाँ जो प्रकाशक लेना चाहें वे लेखक से इस पते पर पत्र-व्यवहार करें—मार्फत श्री अनन्त दूबे, नं० २ गंज, पो० बेतिया, जिला चम्पारण। पाण्डुलिपियों के नाम हैं—'ग्रामराज', 'आदर्श नारी जगत्', व 'आदर्श पुरुष जगत्'।

* * *

प्रो० गोविन्दलाल माथुर, प्राध्यापक अंग्रेजी विभाग, जसवन्त कालेज, जोधपुर सूचना देते हैं कि उनके पास राजस्थानी भाषा में कुछ पुस्तकों की पाण्डुलिपियाँ प्रकाशनार्थ तैयार हैं। जो सज्जन छापना चाहें उपरोक्त पते पर पत्र-व्यवहार करें।

* * *

श्री शिवनन्दन झा (अश्क) सूचना देते हैं कि उनके पास विभिन्न विषयों पर प्रकाशनार्थ ग्यारह पाण्डुलिपियाँ तैयार हैं। इच्छुक प्रकाशक निम्न पते पर सम्पर्क स्थापित करें—ग्राम बुधामा, पत्रालय खाड़ा बुधामा, वाया बिहपुर, जिला सहरसा (बिहार)।

* * *

श्री श्रवण कुमार दिव्य, पंचवर्षीय योजना प्रचार कार्यालय, भिड़े का बाडा, जयेन्द्र गंज, लश्कर–ग्वालियर सूचित करते हैं कि उनके पास लगभग २५ कहानियों का एक संग्रह तैयार है। ये कहानियाँ विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रही हैं। इच्छुक प्रकाशकगण उपरोक्त पते पर पत्र-व्यवहार करें।

* * *

श्री सूरज प्रकाश कपूर, ११३६४, ईदगाह रोड, नई दिल्ली के पास एक कहानी-संग्रह प्रस्तुत है। इच्छुक प्रकाशक पत्र-व्यवहार करें।

* * *

श्री तेजकुमार बंम 'निर्मोही' के पास विभिन्न लोक-कथाओं की पाण्डुलिपियाँ तैयार हैं। जो प्रकाशक छापना चाहें निम्न पते पर लिखें: सती मार्ग नं० १, उज्जैन।

* * *

श्री ए० सीतारामम्, गवर्नमेण्ट आर्ट्स कालेज, विद्या नगर, राजमुन्दरी से सूचित करते हैं कि उनके पास 'आन्ध्र वाङ्मय का विकास' शीर्षक से उनके चौदह निबन्धों का एक संग्रह तथा 'कलापूर्णोदय' नामक उपन्यास प्रकाशनार्थ तैयार हैं। जो प्रकाशक छापना चाहें, उपरिलिखित पते पर पत्र-व्यवहार करें।

* * *

पटना से श्री सुरेन्द्र प्रसाद 'जमुआर' सूचित करते हैं कि उनके पास 'साहित्य-निबन्धालोक' नाम से एक निबन्ध-संकलन प्रकाशनार्थ तैयार है। जो सज्जन छापना चाहें उपरोक्त सज्जन से लोक साहित्य परिषद, दुजरा, पटना-१ के पते पर पत्र-व्यवहार करें।

* * *

श्री विमल अहल्यायन, १६/२७ हाथी गली, वाराणसी से सूचना देते हैं कि उनके पास एक सामाजिक उपन्यास 'सलोनी' प्रकाशनार्थ तैयार है। प्रकाशक उपरोक्त पते पर सम्पर्क स्थापित करें।

* * *

श्री जगदीश राय 'विकल' सूचना देते हैं कि उनके पास विभिन्न विषयों की पाण्डुलिपियाँ तैयार हैं, जो प्रकाशकगण इन्हें प्रकाशित करना चाहें इस पते पर लिखें—श्री जे० राय 'विकल' मार्फत ग्रोवर स्टोर, महादेवा रोड, आरा (बिहार)।

* * *

श्री तारा 'निर्विरोध' के पास चार पाण्डुलिपियाँ प्रकाशनार्थ तैयार हैं, जिनके प्रकाशन के लिए किसी अच्छे प्रकाशक की आवश्यकता है। इस सम्बन्ध में निम्न पते पर लिखें: सी-१३८, विजय मन्दिर, गांधी नगर, जयपुर।

* * *

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आलोचना के नैतिक (?) प्रतिमान

हिमांशु श्रीवास्तव

इस पत्र में साधारणतया स्थान पाने वाले लेखों से इस लेख का विषय-भेद होने के बावजूद इसे दिलचस्पी से पढ़ा जायगा। स्वस्थ आलोचना की परम्परा की हिन्दी को जरूरत है।

सर्वप्रथम मैं यह स्वीकार कर लेता हूँ कि न तो मैं आलोचक हूँ और न किसी रचना-विशेष पर बोलने का मेरा अधिकार है। राष्ट्रभारती का पुनीत कलश भरने में बहुत से साहित्यकार प्रयत्नशील हैं। मुझसे भी जो बना है, किया है और आगे काम करने की सदिच्छा बनी है। प्रस्तुत लेख में मुझे हिन्दी के मान्य आलोचकों पर छींटाकशी करनी है, आप ऐसी धारणा न बना लें। वर्तमान आलोचना की गतिविधि से थोड़ा परिचित होने का सौभाग्य मुझे भी प्राप्त हुआ है, और उसी के आधार पर मैं हिन्दी के साहित्यकारों के नाम अपने विचार प्रेषित करना चाहता हूँ कि वे अपने को बिलकुल 'बेचारा' न समझें। प्रश्न उठेगा कि आखिर हिन्दी का साहित्यकार अपने को 'बेचारा' न समझे, तो क्या करे? ख्याति दिलवाने की गारण्टी तो ये आलोचक बन्धु ही लेते हैं, तो आखिर उन्हें छोड़कर हम कहाँ जायँ?

परन्तु इस प्रकार के हलके प्रश्नोत्तरों से बात बनने वाली नहीं है। यदि आप ५०० पृष्ठों के उपन्यास लिख सकते हैं, यदि आप महाकाव्य की रचना कर सकते हैं, तो आपमें वह प्रतिभा और आत्मबल भी होना चाहिए कि आलोचना की आत्मा और धर्म-मर्म को समझें और जहाँ आपको फतवे दिये जायँ, वहाँ आप शिष्ट एवं आलोचना की भाषा में उसका उत्तर भी दें। कहा जा सकता है कि इससे कुछ होगा नहीं, बल्कि केवल विवाद बढ़ेगा। मेरा निवेदन यह है कि साहित्य-शास्त्र तो विवाद का विषय है ही यदि आपको अपने कमजोर पहलू को स्वीकारने में संकोच नहीं, तो आलोचकों के कमजोर पहलू को स्पष्ट करने में आपको एतराज नहीं होना चाहिए।

प्रेमचन्द के समकालीन साहित्यकारों से यह बात छिपी न होगी कि उनके जीवन-पर्यन्त अवध उपाध्याय हमेशा उनके उपन्यासों की छीछालेदर करते रहे और आप देख रहे हैं कि आज साहित्य के क्षेत्र में प्रेमचन्दजी का क्या स्थान है और अवध उपाध्याय का क्या स्थान है। वयोवृद्ध साहित्य-मनीषी आचार्य शिवपूजन सहाय ने मुझे बताया कि जब किसी पत्र में प्रेमचन्दजी की रचनाओं की कटु आलोचना प्रकाशित होती थी, तो उसे देखकर उनके चेहरे पर तनिक भी शिकन नहीं आती थी और इस प्रकार हँसते थे कि उनकी हँसी की फुहारों में प्रकाशित आलोचना का अस्तित्व जैसे बह जाता था, फिर उसका कहीं पता भी न चलता। निश्चय ही मैं यह नहीं कहना चाहता कि हम चुप रहें या हँसकर टाल दें। प्रेमचन्द के युग में अस्सी प्रतिशत ईमानदार आलोचक थे और उनके कथन या लेखन में निर्माण का योग होता था। आज के युग में तो बीस प्रतिशत भी खरे आलोचना की खोज की जाय, तो आपको परेशानी होगी। दिक्कत यह है कि आलोचकों की मर्यादा उसी हद तक होती है, जब प्रस्तुत रचना की आलोचना की जाय, यहाँ तो रचना की आलोचना पीछे और व्यक्ति की आलोचना पहले होती है। उदाहरण के लिए 'वसुधा' में प्रकाशित प्रभाकर माचवे की काव्य पुस्तक 'स्वप्न भंग' की आलोचना देखिए। और आज का प्रबुद्ध पाठक सचमुच इतना अबोध नहीं होता कि ये नैतिक (?) प्रतिमान उसकी समझ में नहीं आते। यह तो आप जानते ही हैं कि आजकल आलोचना की भाषा में एक और शास्त्रीय चमत्कार का समावेश किया जाने लगा है। वह शास्त्रीय चमत्कार है, सीधी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बात को भी टेढ़े ढंग से कहना, पंक्ति में कुछ ऐसे शब्द डाल देना, जिन्हें समझने के लिए आपको किसी कोषकार की शरण लेनी पड़े। परन्तु, इस तरह कठिनता या जटिलता के निर्माण से बात बनती नहीं है। किसी पागल को आप कह सकते हैं कि 'उसका मस्तिष्क विकृत हो गया है', या 'वह अपने में नहीं है', बात समान-सी लगती है। आलोचकों का यह दावा पूर्णतया भ्रामक है कि वे जो कहते हैं, लोग उसे समझ नहीं पाते। जब संसार के इने-गिने आलोचकों की बातें लोग समझ लेते हैं, तो मात्र हिन्दी के आलोचकों की बातें समझ में न आयें, यह तो 'मोटा मुँह, बड़ी बात', को चरितार्थ करने वाला दावा है। आज के आलोचक इतने व्यक्तिवादी हो गए हैं कि आप नई प्रतिभाओं की बातें छोड़िये, मैं कहता हूँ कि आज के युग में, यदि प्रेमचन्दजी भी होते, तो उन्हें उचित ख्याति नहीं मिल पाती।

एक संकेत मैं यह कर दूँ कि आज के अधिकांश आलोचक ऐसे भी हैं, जो कई रचनाओं की आलोचना करते समय भूल-विशेष को पकड़ ही नहीं पाते। उदाहरण के लिए जैनेन्द्रजी के उपन्यास 'सुखदा' और 'विवर्त' को लीजिये। इन दोनों उपन्यासों पर बहुत लोगों ने बहुत-कुछ लिखा, पक्ष और विपक्ष दोनों में। कुछ लोगों ने यह कहा कि 'सुखदा' रविबाबू के 'घर-बाहर' का रूपान्तर-मात्र है। कुछ लोगों ने यह कहा कि ये दो उपन्यास हिन्दी-उपन्यास-साहित्य की महान् उपलब्धि हैं। कुछ आलोचकों ने यह कहा कि इन उपन्यासों में कुछ नहीं बल्कि दोनों उपन्यासों का हाल वैसा ही है, जैसे दो शीशियों में एक किस्म का मिक्श्चर हो। परन्तु जैनेन्द्रजी से किसी आलोचक ने यह प्रश्न नहीं किया कि इन दो उपन्यासों में जो क्रान्तिकारियों के दल हैं, वे किस प्रकार की क्रान्ति करना चाहते हैं? क्या वे विदेशी हुकूमत के विरुद्ध, मौजूदा सरकार के विरुद्ध या पूँजीवादी व्यवस्था के विरुद्ध क्रान्ति करना चाहते हैं? और, निश्चय ही इन उपन्यासों में उन प्रश्नों का उत्तर नहीं हैं।

बार-बार यह वाक्य दुहराया जाने लगा है कि हिन्दी साहित्य में गत्यवरोध अपना पैर टिकाये है। इस सम्बन्ध में मुझे यह निवेदन करना है कि हिन्दी साहित्य की उपलब्धि ही क्या है? आचार्य रामचन्द्र शुक्ल द्वारा लिखित 'हिन्दी साहित्य का इतिहास', प्रेमचन्द-लिखित 'गोदान' और प्रसादजी-लिखित 'कामायनी' के बाद वस्तुतः काम आगे नहीं बढ़ पाया है। यदि आप आलोचना को साहित्य से भिन्न नहीं मानते, तो मैं यह कहने के लिए बाध्य हूँ कि यदि हिन्दी-साहित्य अभी शैशवकाल से गुजर रहा है तो हिन्दी का आलोचना-साहित्य अभी गर्भस्थ है। आपको अब तक ऐसे कितने साहित्यकारों से मिलने का मौका मिला है, जिन्होंने यह स्वीकार किया है कि अमुक आलोचक ने हमारा पथ-प्रदर्शन किया है? हिन्दी के अधिकांश आलोचक लेखकों को 'अध्ययनहीन' कहते आ रहे हैं और व्यंग्य के रूप में 'स्वयंभू आचार्य' भी कहते हैं। लेकिन उन आलोचकों को क्या कहा जाय, जो बिना किसी रचना-विशेष को पढ़े उस पर अपनी उचित या अनुचित सम्मति की मुहर लगा देते हैं?

अभी इसी माह एक सम्मान्य आलोचक महोदय ने अपने लेख में इस बात का उल्लेख किया है कि पाठक पुस्तकों की 'रिव्यू' पढ़कर पुस्तक नहीं पढ़ता। प्रश्न उठता है कि आप ऐसी 'रिव्यू' लिखते ही क्यों हैं जिसका असर पाठक पर पड़ता ही नहीं? निश्चय ही आपकी 'रिव्यू लेखन कला' में कहीं महान् हल्कापन बैठा है, जो अपने को पाठक की पैनी दृष्टि से बचा नहीं सकता है। बंगला के आलोचक सजनीकान्त दास भी 'रिव्यू' लिखते हैं और उनका असर पाठकों पर पड़ता है। 'माडर्न रिव्यू' में अनेक पुस्तकों की 'रिव्यू' छपती है और पाठकों पर उसका प्रभाव पड़ता है। आलोचकों के सामने दिक्कत तो यह होती है कि उनके सामने हमेशा मित्रता-निर्वाह का लाल प्रश्न-चिह्न झलमलाता रहता है। इस प्रसंग में एक और मनोरंजक बात कह दूँ, तो इसके माध्यम से बात कुछ और स्पष्ट हो जाय। कुछ रोज हुए, मैं एक दैनिक पत्र के रविवासरीय अंक के सम्पादक के पास बैठा था। उन्होंने मुझसे पूछा, "कृपया यह बताइये कि आजकल हिन्दी का सर्वश्रेष्ठ उपन्यासकार और सर्वश्रेष्ठ आलोचक कौन है?" मैं सर खुजलाने लगा—किसका नाम लूँ, किसका नाम न लूँ। अन्त में मैंने नामोल्लेख के सम्बन्ध में अपनी असमर्थता प्रगट की। वे स्वयं बोले, "परेशान होने की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सौन्दर्य, प्रकृति और जीवन के
कवि, गायक और द्रष्टा

श्री सुमित्रानन्दन पन्त

की कृतियों के प्रकाशन की अभिनव योजना

अतिमा

अतिमा का द्वितीय संस्करण सितम्बर '५८ के द्वितीय सप्ताह में प्रकाशित होगा। मूल्य ४ रुपये मात्र।

चिदम्बरा

कवि के पिछले कुछ अरसे की कविताओं में से उत्कृष्टतम कविताओं का कवि द्वारा स्वयं किया हुआ चयन। नवम्बर '५८ तक प्रकाशित हो जायगा।

पल्लव, स्वर्णधूलि, युगवाणी

के नये संस्करण इस वर्ष के अन्त तक छप जायँगे।

राजकमल

राजकमल प्रकाशन

दिल्ली बम्बई इलाहाबाद पटना मद्रास

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आवश्यकता नहीं। सर्वश्रेष्ठ आलाचक मैं और सर्वश्रेष्ठ उन्यासकार आप।"

मुझे आश्चर्य हुआ। मैंने पूछा, "आपने यह कैसे कहा?"

वे बोले, "बात स्पष्ट है। आप मेरी प्रशंसा कीजिये, मैं आपकी प्रशंसा करूँ।"

इस पर हम लोग देर तक हँसते रहते। यदि मेरा स्मरण मुझे धोखा नहीं दे रहा है, तो मुझे याद है कि लखनऊ से प्रकाशित 'उत्तरा' में हंसराज रहबर ने मोहनसिंह सेंगर की जीवनी और प्रशंसा प्रकाशित कराई थी और 'नया समाज' में मोहनसिंह सेंगर ने हंसराज रहबर की। इस प्रकार का नैतिक (?) आदान-प्रदान हिन्दी-साहित्य को कहाँ ले जायगा, इसका निर्णय तो साहित्य के कानूनी परामर्शदाताओं के हाथों में है।

उक्त प्रकार के कई प्रमाण इन पंक्तियों के लेखक के पास हैं। कितने गिनाऊँ? अभी कुछ रोज हुए, फणीश्वनाथ रेणु का उपन्यास निकला 'परती : परिकथा'। एक ओर से उसकी भरपूर प्रशंसा हुई, दूसरी ओर से स्तरहीन शिकायतें। लेखक के प्रथम उपन्यास 'मैला आंचल' के सर्वाधिक प्रशंसक ने 'परती : परिकथा' के विषय में ऐसी आलोचना लिखी, जिसे आलोचना की संज्ञा देना मुश्किल जान पड़ता है। उनका मतलब यह था कि 'परती : परिकथा' में कुछ नहीं है। 'मैला आंचल' की महान् उपलब्धि 'परती : परिकथा' में बिलकुल शून्य हो जाय यह कैसे सम्भव है? बार-बार यह प्रश्न उठ रहा है कि 'परती : परिकथा में कथा का स्रोत कहाँ है? क्या यह नहीं कहा जा सकता कि कथा का स्रोत तो नहीं है, किन्तु शिल्प का स्रोत है। लेखक कथा का कलाकार न होकर भी शिल्प का सफल कलाकार है? शिल्प का अभाव क्या कलाकार को पीछे नहीं खींच ले जाता? आखिर जनसाधारण और एक कलाकार में यही तो अन्तर होता है। जनसाधारण के बीच जो घटनाएँ घटती हैं, वे जनसाधारण से छिपी तो नहीं रहतीं, लेकिन जब एक साहित्यकार घटना-विशेष से प्रभावित होकर अपने शिल्प-बोध के माध्यम से उसे व्यक्त करता है, तो हम उसे कला की संज्ञा दे देते हैं। 'परती : परिकथा' में परानपुर के जनजीवन के चित्र हैं। वे चित्र वहाँ के निवासियों के हृदय में भी विद्यमान होंगे, लेकिन रेणु ने उन्हीं चित्रों को अपने शिल्प की छेनी-हथौड़ी से तराशकर 'परती : परिकथा' का रूप दिया है।

अभी इधर हाल में हिन्दी-साहित्य के सम्मानित आलोचक डॉ० रामखेलावन पाण्डेय ने 'हिन्दी प्रकाशन और लोक-रुचि' शीर्षक लेख के अन्तर्गत यह विचार व्यक्त किया है कि "पूर्णिया, दरभंगा अथवा छपरे के एक लाख निवासियों की भाषा को टकसाली बनाने वाले ग्रन्थ हिन्दी के ग्यारह करोड़ पाठकों के पल्ले नहीं पड़ते, तो इसमें दोष किसका माना जाय?"

स्पष्ट है कि उक्त पंक्ति में विद्वान् आलोचक ने क्रमशः फणीश्वरनाथ रेणु, नागार्जुन और इन पंक्तियों के लेखक पर व्यंग्य किया है। शायद वे यह भी कहना चाहते हैं कि आंचलिक भाषा के प्रति इन उपन्यासकारों का आग्रह सबके लिए स्वीकार्य नहीं है। प्रश्न यह उठता है कि जब कि हिन्दी में इन तीनों लेखकों के अलावा और लेखकों ने भी आंचलिक उपन्यास लिखे हैं, तो केवल इन तीनों पर ही क्यों व्यंग्य किया गया? यदि आंचलिक उपन्यासों की चर्चा की जाय, तो शिवप्रसाद मिश्र की 'बहती गंगा', ज्वालाप्रसाद केसर लिखित 'पुखराज', यज्ञदत्त शर्मा लिखित 'परिवार', यादवेन्द्रचन्द्र शर्मा लिखित 'मिट्टी का कलंक' और शिवनारायण श्रीवास्तव लिखित 'धुआँ', 'आग और इंसान' आदि उपन्यासों की भी चर्चा की जानी चाहिए। इन सभी उपन्यासों में खड़ी बोली के माध्यम से आंचलिक भाषाओं और मुहावरों का प्रयोग किया गया है। क्या ऐसा नहीं कहा जा सकता कि सामान्य आलोचक ने इन उपन्यासों को नहीं पढ़ा है, या जान-बूझकर उन्हें टाल दिया है, या लेखक इन अपेक्षित सूचनाओं से अपने को खाली पाता है, या उसने जान-बूझकर केवल नागार्जुन, रेणु और हिमांशु श्रीवास्तव पर ही व्यंग्य किया है।

एक ओर तो ये आलोचक कहते हैं कि आलोचना निष्पक्ष होनी चाहिए, और दूसरी ओर देखा जाता है कि आलोचना में या तो लेखक-विशेष पर व्यंग्य किया जाता है या किसी अपने 'मित्र लेखक' की प्रशंसा की जाती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विद्वान् आलोचक का यह भी दावा हो सकता है कि आंचलिक शब्दों के प्रयोग से यह सम्भव है कि अन्य भाषा-भाषी उसे समझ न सकें। हो सकता है कि अनुवाद में भी दिक्कत हो। निवेदन यह है कि हिन्दी भाषा के अलावा अन्य भारतीय भाषाओं में भी आंचलिक शब्दों के प्रयोग हुए हैं। हिन्दी के उपन्यासकारों ने ऐसा करके कोई अपराध नहीं किया है, बल्कि आंचलिक शब्दों को परिनिष्ठित हिन्दी में सम्मिलित करके भाषा को धनी बनाया है। कम-से-कम डॉ० उदयनारायण तिवारी ऐसा स्वीकार करते हैं। बात आती है अनुवाद की। अनुवाद में तो मूल का आनन्द आ ही नहीं सकता। फिर विद्वानों का यह कथन है कि अन्य विदेशी भाषाओं से, जैसे फ्रेन्च, स्पेनिश, जर्मन, रूसी और चीनी आदि भाषाओं के जो उपन्यास अनूदित होकर, अंग्रेज़ी भाषा के माध्यम से हमारे सामने आते हैं, उनमें मूल का रस नहीं मिलता। मैं जानना चाहता हूँ कि यह सारा दोष क्या आंचलिकता का ही है? क्या विदेशी भाषा की भी समस्त कृतियाँ आंचलिक ही होती हैं? अंग्रेजी के समस्त जानकारों का कथन है कि स्वयं अंग्रेजी भाषा के ही कई उपन्यास ऐसे होते हैं, जिनके प्रत्येक शब्द का तत्सम अर्थ वे नहीं जानते, मात्र भाव से अर्थ निकाल लिया जाता है। इसका अर्थ तो यह नहीं होता कि वे सारे उपन्यास उपेक्षणीय हैं?

एक निवेदन और करना चाहता हूँ। हिन्दी के लेखकों पर आलोचकगण अन्य भाषाओं की रचनाओं से भाव-ग्रहण का दोषारोपण करते हैं। मगर आलोचकों का क्या हाल है? मैं तो आये दिन देख रहा हूँ कि दस पुस्तकों का एक 'आर्क' बनाकर सामने रख लिया जाता है और झट एक आलोचनात्मक निबन्ध तैयार करके कहीं दिखाने के लिए भेज दिया जाता है। अर्थात् 'काता और ले दौड़े।' खैर, यहाँ तक तो गनीमत है। होता यहाँ तक है कि आपका आलोचना क्षेत्र में, चाहे जैसे भी, थोड़ा नाम हो गया है। आप विश्वविद्यालय में पुस्तक-निर्धारण-समिति के सदस्य हैं। फल यह होता है कि प्रकाशक आपके पास पुस्तकों के लिए दौड़ते हैं। आप स्वयं तो नहीं लिख पाते, क्योंकि दल के संगठन से आपको अवकाश ही नहीं मिलता। झट किसी शिष्य को आदेश मिलता है कि वह अमुक प्रकार की एक पुस्तक तैयार कर दे, और फिर बाजार में देखिये, पुस्तक पर स्वनाम-धन्य आलोचक का नाम, लेखक के रूप में छपा है। वास्तव में इस प्रकार के लेखन का भार या तो षष्ठ वर्ष के छात्र लेते हैं या कोई भूतपूर्व शिष्य, जो अभी कहीं कालेज में 'रंगरूट लेक्चरार' होता है। परिणाम यह होता है कि अपने लाख प्रभाव के बावजूद पुस्तक चल नहीं पाती और बेचारे प्रकाशक का गला कटता है। छपाई, कागज, जिल्द बँधाई के साथ पूरे संस्करण की रायल्टी आप पुस्तक के बाजार में आते-आते टान लेते हैं। मुसीबत यह है कि बेचारा प्रकाशक भीतर-ही-भीतर हाय मारता है और बाहर उफ तक नहीं करता, यानी "मरते हैं पर जिक्र नहीं करते"। मतलब चुपके-चुपके प्यार करते हैं। क्योंकि उसे 'भविष्य की उमीदें' दिलाई जाती हैं और प्रकाशक बेचारा अपने को 'दो पाटों के बीच' घिरा पाता है।

मुझे यह कहना है कि जिस प्रकार हम स्वस्थ आलोचना का स्वागत करने को तैयार रहते हैं, उसी प्रकार हमें अस्वस्थ आलोचनाओं की उपेक्षा भी करनी चाहिए, और यदि हमें अधिक विवश किया जाय, तो हम उत्तर देने को भी तैयार रहें और दें। मेरे इस कथन का यह अर्थ कदापि न लगाया जाय कि हिन्दी के लेखक अपनी रचनाओं में साहित्य-सम्मत तत्त्वों की अवहेलना करें। मनुष्य रूपी आलोचक से सम्भव है कि आप बच जायँ, किन्तु काल रूपी आलोचक आपकी भूलों को कभी क्षमा नहीं करेगा। सबसे बड़ा आलोचक तो समय होता है, जो काट-छाँटकर स्थायी सामग्री को चिरस्थायी बना देता है और बाकी को भाग्य के भरोसे छोड़ देता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशकीय मञ्च

सुनने में आया है कि अमरीकन सूचना विभाग के दिल्ली स्थित कार्यालय ने भारत के कुछ प्रकाशकों को अपने खर्च पर अमरीका-भ्रमण के लिए भेजने का निश्चय किया है। यह भी पता चला है कि हिन्दी के एक प्रकाशक महोदय इस भ्रमण के लिए अपना नाम स्वीकृत करवाने में सफल हो गए हैं!

* * *

राजस्थान में स्वीकृत अंग्रेजी की तीसरी रीडर में, जिसके लेखक और सम्पादक डॉ० उमराव बहादुर एम० ए०, पी-एच० डी० और प्रो० एस० जे० माथुर हैं, लिखा है कि आबू रोड से आबू पर्वत डेढ़ मील की दूरी पर है जब कि वास्तव में आबू पर्वत की दूरी १८ मील है। इसी पुस्तक में यह भी लिखा है कि देलवाड़ा के मन्दिरों में बौद्ध-प्रतिमाएँ हैं और उनकी छतों पर हिन्दू-शास्त्रों की कहानियाँ चित्रों द्वारा प्रदर्शित की गई हैं। वास्तविकता यह है कि देलवाड़े के मन्दिर जैन मन्दिर हैं और उनमें स्थापित मूर्तियाँ जैन तीर्थंकरों की हैं। मन्दिरों की छतों पर जैन कथाओं को चित्रित किया गया है।

ऐसी पुस्तक को पाठ्यक्रम में स्वीकृत करने वाले अधिकारी धन्य हैं!

* * *

आंध्र प्रदेश के मुख्य मन्त्री श्री संजीव रेड्डी ने ८ अगस्त, १९५८ को हैदराबाद में कहा कि अगले वर्ष से राष्ट्रीयकृत पाठ्यपुस्तकों की सप्लाई में देरी न हुआ करेगी। इस वर्ष स्कूलों के खुलने के दो मास बाद तक छात्रों को पुस्तकें नहीं मिल सकी थीं।

* * *

बिहार सरकार ने हिन्दी की **धरती और इन्सान** नाम की पुस्तक को इस आधार पर जब्त कर लिया है कि उससे मुसलमानों की धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुँचती है। पुस्तक लोक संस्कृति मण्डल, छपरा द्वारा प्रकाशित की गई है।

* * *

केरल की सरकार ने विरोधी दलों के इस अभियोग का खण्डन किया है कि सरकार द्वारा प्रकाशित पाठ्यपुस्तकों द्वारा साम्यवादी विचारधारा का प्रचार करने का प्रयत्न किया जा रहा है।

* * *

प्राइमरी तथा हायर सेकण्डरी कक्षाओं का पाठ्यपुस्तकों में गांधीवादी दर्शन और विचारधारा के पाठ सम्मिलित करने की सम्भावनाओं पर विचार करने के लिए उत्तर प्रदेश की सरकार ने दस व्यक्तियों की एक समिति का आयोजन किया है। इस समिति के अध्यक्ष डॉ० रामप्रसाद त्रिपाठी होंगे तथा मन्त्री डॉ० एम० सी० पन्त।

* * *

कहा जाता है कि सरस्वती प्रेस की श्री श्रीपतराय द्वारा प्रकाशित **हिन्दी प्रबोध** नाम की पाठ्यपुस्तक के चार भागों को मध्यप्रदेश की सरकार ने **बाल भारती** के नाम से स्वयं प्रचारित कर दिया है, और सरकार ने उनकी पुस्तक के केवल मुखपृष्ठ को ही बदला है।

* * *

दिल्ली के बोर्ड आफ हायर सेकण्डरी एजुकेशन ने एक विज्ञप्ति द्वारा घोषित किया है कि पाठ्यपुस्तकें सबमिट करने की अन्तिम तारीख ३१ जुलाई से बढ़ाकर ३० सितम्बर १९५८ तक कर दी गई है। सबमिट की जाने वाली पुस्तकों की ९-९ प्रतियाँ भेजनी आवश्यक हैं।

* * *

भारत सरकार के सूचना व प्रसार मन्त्रालय की ओर से पुस्तकों के मुद्रण व डिजाइनिंग की चौथी प्रतियोगिता व प्रदर्शनी नवम्बर १९५८ में होगी। प्रतियोगिता में केवल वही पुस्तकें भेजी जा सकेंगी, जिनका प्रकाशन १५ अगस्त, १९५७ से १४ अगस्त १९५८ के बीच हुआ हो। पुस्तकें भेजने की अन्तिम तिथि १ अक्तूबर है। पुस्तकें रजिस्ट्री से निम्न पते पर भेजी जायँ : श्री एम० एस० सामन्त, एग्ज़िबीशन आफिसर १२–ए ब्लाक, जामनगर हाउस, शाहजहाँ रोड, नई दिल्ली।

(शेष पृष्ठ ३६ पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अच्छी पुस्तकों का प्रकाशन

सुरेन्द्रपाल सिंह

प्रेस कापी तैयार करने से लेकर पुस्तक की जिल्दबन्दी तक की प्रकाशकीय प्रक्रियाओं पर एक विहंगम दृष्टि ।

'अच्छी पुस्तकों' के प्रकाशन का अर्थ यहाँ 'अच्छी पाण्डुलिपियों' के प्रकाशन से नहीं है। प्रकाशन के लिए अच्छी पाण्डुलिपियों का चुनाव करना अपने-आप में एक अलग कार्य है। लेखक जब पाण्डुलिपि प्रकाशक के लिए दे चुकता है तभी प्रकाशक का अपना मुख्य काम शुरू होता है। प्रकाशक जब पूरी जिम्मेदारी और कुशलता से अपना काम करता है तभी कोई भी पाण्डुलिपि 'अच्छी पुस्तक' की संज्ञा से विभूषित हो पाती है। पाण्डुलिपि यदि असाधारण कोटि की हुई तो कुछ लोग उसे खराब ढंग से प्रकाशित होने पर भी खरीद अवश्य लेते हैं लेकिन उसके रूप-रंग तथा आकार-प्रकार के प्रति नाक-भौं सिकोड़कर ही। प्रकाशन के लिए आने वाली बहुत कम पाण्डुलिपियाँ असाधारण कोटि की होती हैं, यह एक सर्वमान्य बात है। इसमें सन्देह नहीं कि प्रकाशक अच्छी ही पाण्डुलिपियाँ प्रकाशन के लिए चुनता है लेकिन किसी अच्छी पाण्डुलिपि को अच्छी पुस्तक की संज्ञा दिलाने के लिए उसका अच्छे ढंग से प्रकाशित होना भी आवश्यक है। प्रकाशन एक कलात्मक व्यवसाय है। चित्रकार जिस प्रकार बदरंग फलक पर साधारण-सी तूलिका की सहायता और रंगों के संयोजन से एक दर्शनीय चित्र बना देता है उसी प्रकार प्रकाशक भी कहीं की ईंट और कहीं का रोड़ा लेकर एक ऐसी वस्तु प्रस्तुत कर देता है जो दर्शनीय भी होती है और पठनीय भी। कोई भी व्यक्ति यदि वह कलात्मक अभिरुचि तथा मौलिक सूझ-बूझ का नहीं है तो एक सफल प्रकाशक कभी नहीं बन सकता। पाण्डुलिपि हाथ में लेने के बाद प्रकाशक एक-एक करके उसे कई प्रक्रियाओं में से गुज़ारता है और निरन्तर इस बात के लिए सावधान रहता है कि पुस्तक का रूप ग्रहण कर चुकने पर वह खूब आकर्षक और त्रुटि-रहित हो।

प्रेस कापी

सबसे पहले प्रकाशक प्रत्येक पाण्डुलिपि अपने सम्पादक को देता है जो उसे प्रेस कापी का रूप प्रदान करता है। बड़े दुर्भाग्य की बात है कि हमारे यहाँ आज भी कितने ही तथाकथित बड़े प्रकाशक ऐसे हैं जो 'पाण्डुलिपि' और 'प्रेस कापी' का अन्तर ही नहीं समझते और पाण्डुलिपि हाथ में आते ही उसे सीधे मुद्रण के लिए दे देते हैं। 'सम्पादक' शब्द का अर्थ वे यही समझते हैं कि जो व्यक्ति पत्र-पत्रिकाओं आदि की सामग्री-चयन तथा मुद्रण-व्यवस्था के लिए उत्तरदायी हो। जब तक किसी भी पाण्डुलिपि की प्रेसकापी अच्छी तरह तैयार न की गई रहेगी तब तक उसका ठीक ढंग से मुद्रण हो पाना सम्भव नहीं। और अच्छी प्रेस कापी वही तैयार कर सकता है जिसे मुद्रण-प्रक्रिया का व्यक्तिगत अनुभव हो। प्रेसकापी तैयार करने में मुद्रणाक्षरों के आकार-प्रकार का चुनाव एक प्रमुख कार्य है जिसमें काफी सावधानी बरतनी पड़ती है। किस विषय की पुस्तक में और कहाँ-कहाँ किस आकार-प्रकार का मुद्रणाक्षर प्रयुक्त होना चाहिए इस बात की समझ प्रेसकापी तैयार करने वाले को अच्छी तरह होना चाहिए। छोटे बच्चों के लिए प्रस्तुत की जाने वाली पुस्तक में महीन मुद्रणाक्षरों का प्रयोग और किसी शब्दकोष में मोटे मुद्रणाक्षरों का प्रयोग किसी भी दशा में नहीं किया जा सकता। इसी तरह शीर्षकों, उपशीर्षकों तथा सामान्य अंशों के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिए क्रमशः मोटे और महीन मुद्रणाक्षरों का प्रयोग किया जाना चाहिए। हिन्दी में मुद्रणाक्षरों की बहुत कम किस्में उपलब्ध हैं, लेकिन जो हैं उन्हीं की सहायता से पुस्तक को अधिक-से-अधिक आकर्षक बनाने का प्रयास किया जाना चाहिए। पुस्तक के विभिन्न अंशों की स्पेसिंग और ले-आउट का काम भी प्रेसकापी तैयार करते समय कर लेना जरूरी है।

चित्रांकन तथा ब्लाक

प्रेसकापी तैयार कराने के साथ-ही-साथ आवश्यक चित्रांकन तैयार करवाने तथा उनके ब्लाक बनवाने का काम भी हो जाना चाहिए। पाण्डुलिपि प्रेस में दे देने के बाद जल्दी-जल्दी में चित्रांकन और ब्लाक तैयार करवाने में काम खराब हो जाने का भय रहता है। विषय-वस्तु के अनुसार चित्रांकन की रंगयोजना तथा पुस्तक की प्रतियों की संख्या के अनुसार ब्लाक की प्लेट और चित्रांकन के अनुसार ब्लाक बनाने के ढंग आदि का निर्णय कर लेना चाहिए। ठीक ढंग के चित्रांकनों तथा ब्लाकों से छपाई अच्छी होती है और पुस्तक की चारुता में चार चाँद लग जाते हैं। चित्रांकन तैयार करवाते समय लेखक, सम्पादक, कलानिर्देशक तथा चित्रकार का पारस्परिक सहयोग आवश्यक है और ब्लाक तैयार करवाते समय प्रोडक्शन इन्चार्ज, चित्रकार तथा मुद्रक का।

प्रूफ संशोधन

प्रेसकापी, चित्रांकन तथा ब्लाक आदि तैयार करवा लेने के बाद फिर मुद्रण की बारी आती है। मुद्रक को पाण्डुलिपि सौंप देने के बाद प्रकाशक को सबसे अधिक सावधानी प्रूफ संशोधन के सम्बन्ध में बरतनी चाहिए। प्रकाशक का अपना एक कुशल प्रूफरीडर अवश्य होना चाहिए जिसे प्रूफ संशोधन की टेकनीकल बातों के अतिरिक्त भाषा की शुद्धता, ले-आउट, मुद्रण-सम्बन्धी गलतियों से सम्बन्धित अन्य बातों का अच्छा ज्ञान होना चाहिए। कुछ प्रकाशक लेखक द्वारा पढ़े हुए प्रूफ पर ही सन्तोष करके मुद्रण की आज्ञा दे देते हैं। लेखक से एक बार उसकी पुस्तक का प्रूफ अवश्य पढ़वा लिया जाना चाहिए, लेकिन उसके बाद किसी कुशल प्रूफरीडर से अन्तिम प्रूफ पढ़वा लेना जरूरी है। हिन्दी में प्रूफ रीडिंग पर बहुत कम ध्यान दिया जाता है, यही कारण है कि पुस्तकें भ्रष्ट छपती हैं। एक तो प्रूफरीडरों को पैसे बहुत कम दिये जाते हैं जिससे वे पर्याप्त परिश्रम नहीं करते। दूसरे अधिकांश प्रूफरीडर प्रायः अर्धशिक्षित ही होते हैं। यह स्थिति तब तक दूर नहीं हो सकती जब तक प्रूफ-संशोधन पर पर्याप्त धन व्यय नहीं किया जाने लगेगा और योग्य प्रूफरीडरों से ही प्रूफ पढ़वाने की परम्परा न स्थापित की जायगी। अन्तिम प्रूफ पढ़ते समय यह देख लेना भी आवश्यक है कि जितने भी निर्देश मुद्रक को दिये गए थे उन सबका सम्यक् पालन हो गया है या नहीं। अधिक प्रतियाँ छापनी हों तो मुद्रक को यह आदेश दे देना चाहिए कि कुछ हजार प्रतियाँ छप चुकने के बाद अन्तिम प्रूफ से मिलान करवाते रहें जिससे छपाई के समय यदि कोई टाइप टूट गया हो या निकलकर गिर गया हो तो उसे ठीक कर लिया जाय। मुद्रणाक्षरों का दबाव और स्याही की छाप आवश्यकता से अधिक न हो इस बात का भी ध्यान रखना चाहिए।

काग़ज़

मुद्रण के लिए पाण्डुलिपि देने के पहले ही काग़ज़ का चुनाव भी कर लेना चाहिए। किस तरह की पुस्तक कैसे काग़ज़ पर छपनी चाहिए, यह निर्णय कर लेना बहुत महत्त्व रखता है। कभी-कभी काग़ज़ के दाम में किफ़ायत करने के चक्कर में पुस्तक की पूरी शोभा ही मारी जाती है और थोड़ी बचत लाभ देने के बदले लागत भी डुबा देती है। पूरी किताब-भर का काग़ज़ एक साथ ही खरीदकर छपाई शुरू करानी चाहिए, क्योंकि बाज़ार में हमेशा एक तरह का काग़ज़ उपलब्ध नहीं होता और अगर आधी पुस्तक एक रंग के काग़ज़ पर छपी हो और आधी दूसरे रंग के काग़ज़ पर तो वह वैसी ही लगती है जैसे किसी व्यक्ति का चेहरा थोड़ी दूर बिलकुल गोरा-चिट्टा हो और थोड़ी दूर एकदम काला। पुस्तकें छापने के लिए न्यूज़प्रिंट का इस्तेमाल भी वांछनीय नहीं है।

रूपसज्जा

छपाई का काम समाप्त होते-न-होते उसके आवरण-पृष्ठ का चित्र आदि तैयार करवा लेना चाहिए। आवरण-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रत्येक पुस्तकालय में संग्रह करने योग्य पुस्तकें

कोश

बृहत् हिन्दी कोश	सम्पादक कालिकाप्रसाद : लेदर क्लाथ राजवल्लभ सहाय जिल्द मू०	२५.००
	मुकुन्दीलाल श्रीवास्तव चमड़े की जिल्द	३२.००
ज्ञान शब्दकोश	सम्पा० मुकुन्दीलाल श्रीवास्तव	१५.००
पारिभाषिक शब्दकोश	सम्पा० मुकुन्दीलाल श्रीवास्तव	४.००

राजनीतिक पुस्तकें

भारतीय राजनीति— विक्टोरिया से नेहरू तक	रामगोपाल एम० ए०	११.००
राष्ट्रीयता और समाजवाद	आचार्य नरेन्द्रदेव	११.००
अन्तर्राष्ट्रीय विधान	डॉ० सम्पूर्णानन्द	११.००
चीन कल और आज	के० एम० पणिक्कर	५.००
राजनीतिशास्त्र	प्राणनाथ विद्यालंकार	४.५०
जापान की राजनीतिक प्रगति	अनु० लक्ष्मणनारायण गर्दे	५.५०
चीन और भारत	अम्बिकाप्रसाद वाजपेयी	१.५०

धर्म और दर्शन

सूफीमत साधना और साहित्य	रामपूजन तिवारी	११.००
विश्व के धर्म प्रवर्तक	रघुनाथसिंह एम० पी०	६.५०
वैज्ञानिक अद्वैतवाद	स्व० रामदास गौड़ एम० ए०	२.२५
चिद्विलास	डॉ० सम्पूर्णानन्द	५.००
दर्शन का प्रयोजन	डॉ० भगवानदास	३.५०
नीतिशास्त्र	सुश्री शान्ति जोशी	८.००

पत्रकारिता

पत्र और पत्रकार	माननीय पं० कमलापति त्रिपाठी तथा पुरुषोत्तमदास टण्डन 'पत्रकार'	६.५०
भारतीय पत्रकार कला	सम्पादक रौलेण्ड ई० वूल्सले	६.५०
समाचारपत्रों का इतिहास	पं० अम्बिकाप्रसाद वाजपेयी	६.५०
आधुनिक पत्रकार कला	रा० र० खाडिलकर	४.००

मनोविज्ञान

शिक्षा मनोविज्ञान	हंसराज भाटिया	४.५०

भ्रमण

इंग्लैण्ड में पचीस दिन	रा० र० खाडिलकर	३.००
आर्याना	रघुनाथसिंह एम० पी०	३.००

इतिहास

भारतवर्ष का इतिहास	एक इतिहास प्रेमी	८.००
पश्चिमी यूरोप, प्रथम भाग	अनुवादक छविनाथ पाण्डेय एम० ए०, एल-एल० बी०	४.५०
गांधी हत्याकाण्ड	सम्पादक विहंगम	५.००
आजाद हिन्द फौज और उसके तीन अफसरों का मुकदमा	३५० पृष्ठों की ऐतिहासिक पुस्तक	२.००

संस्मरण

जेल के वे दिन	विजयालक्ष्मी पंडित	२.५०
कुछ स्मरणीय मुकदमे	श्री कैलाशनाथ काटजू	८.००
मेरे बचपन की कहानी	श्रीमती नयनतारा सहगल	६.००

साहित्य

वक्रोक्ति और अभिव्यंजना	रामनरेश वर्मा एम० ए०	४.५०
गीतिकाव्य	प्रो० रामखेलावन एम० ए०	५.५०
तुलसीदास और उनका युग	डॉ० राजपति दीक्षित	८.००
सामयिकी	शान्तिप्रिय द्विवेदी	४.००
धरातल	शान्तिप्रिय द्विवेदी	२.७५
कल्पलता	आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी	२.५०

कथा साहित्य

उलूकतन्त्र	बलदेवप्रसाद मिश्र	२.००
शव साधन	बलदेवप्रसाद मिश्र	२.५०
तूफान	सर्वश्रेष्ठ कहानी-लेखकों की कहानियों का संग्रह	२.५०

उपन्यास

पुनर्जीवन	महात्मा टालस्टाय	६.५०
कर्त्तव्याघात	देवनारायण द्विवेदी	४.५०
नूतन ब्रह्मचारी	स्वर्गीय पं० बालकृष्ण भट्ट	०.६३
देशभक्त और देशद्रोही		२.५०
बयालीस	प्रतापनारायण श्रीवास्तव	४.५०
गेंजी की कहानी	मुरासाकी शिकाबू	४.५०

आदर्श जीवन चरित्र

सरदार पृथ्वीसिंह	राहुल सांकृत्यायन	४.००

विज्ञान

विज्ञान की प्रगति	भगवतीप्रसाद श्रीवास्तव	३.५०
विज्ञान के चमत्कार	भगवतीप्रसाद श्रीवास्तव	२.७५
परमाणु शक्ति	भगवतीप्रसाद श्रीवास्तव	२.७५
घरेलू बिजली	भगवतीप्रसाद श्रीवास्तव	४.००
सरल विज्ञान	भगवतीप्रसाद श्रीवास्तव	१.०६

ज्ञानमण्डल लिमिटेड, वाराणसी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चित्र बहुत भड़कीला हो या सादा यह पुस्तक की विषय-सामग्री पर निर्भर करता है। उदाहरण के लिए छोटे बच्चों के लिए प्रस्तुत की जाने वाली पुस्तकों का आवरण-चित्र बहुरंगा तथा खूब भड़कीला होना चाहिए और अगर कोई शास्त्रीय ग्रन्थ हो तो उसके आवरण-चित्र में पर्याप्त सादगी होनी चाहिए। चित्र चाहे भड़कीला हो या सादा लेकिन वह सुरुचिपूर्ण और कलात्मक अवश्य होना चाहिए। आवरण चित्र तैयार करवाने की ओर हिन्दी के प्रकाशक पहले बहुत कम ध्यान देते थे, लेकिन अब धीरे-धीरे स्थिति बदल रही है।

आवरण-चित्र में कम-से-कम तीन रंगों का प्रयोग अवश्य होना चाहिए क्योंकि एक या दो रंग में वांछित प्रभाव उत्पन्न कर पाने के लिए बड़े कौशल की आवश्यकता होती है।

आवरण-चित्र की रंग-योजना उसका ब्लाक बनवाने तथा छपाई कराने में काफी सावधानी तथा सूझ-बूझ की आवश्यकता होती है। आवरण-पृष्ठ ग्राहकों को पुस्तक की ओर आकर्षित करने के लिए वही काम करता है जो फूल की मोहक पंखड़ियाँ मधुमक्खियों को आकर्षित करने के लिए करती हैं। आवरण-चित्र तैयार करवाते समय चित्रकार को पुस्तक के सही आकार के नमूने की प्रति अवश्य देनी चाहिए जिससे आवरण-चित्र सही आकार का बन सके।

बाइंडिंग

जैसे-जैसे पुस्तक के फर्मे छपते जायें वैसे-वैसे उसे जिल्दसाज़ (बाइंडर) के यहाँ पहुँचाते जाना चाहिए जिससे उनकी फोल्डिंग धीरे-धीरे होती चली जाय और जब अन्तिम फर्मा छप जाय तो उसके कुछ ही समय बाद बाइंडिंग का काम खतम हो जाय। सारे फर्मे एक साथ बाइण्डर के यहाँ पहुँचाने से बाइंडिंग में काफी समय लग जाता है और अगर जल्दी की जाती है तो काम खराब होने का अन्देशा रहता है। जिस आकार-प्रकार की पुस्तक होती है उसकी बाइंडिंग की किस्म भी वैसी ही होनी चाहिए। पुस्तक की सिलाई कैसी हो इस पर भी काफी ध्यान देना चाहिए। बच्चों की पुस्तकों और काफी मोटी पुस्तकों के लिए तार की सिलाई का इस्तेमाल नहीं करना चाहिए। बच्चों की पुस्तकों की सिलाई यदि तार से कराई जाय तो पढ़ते समय नन्हे बच्चों के हाथों आदि में जंग लगे हुए तार के सिरे से खरोंच लग जाने का खतरा रहता है और मोटी पुस्तकों की सिलाई तार से कराने पर उनका छपा हुआ अंश इस तरह दब जाता है कि पाठक को पढ़ने में बड़ी कठिनाई होती है और पढ़ने के प्रयास में सिलाई ही उधड़ जाती है। पतली पुस्तकों के लिए बीच की सिलाई (जिसके लिए विशेष क्रम से छपाई करानी होती है) और मोटी पुस्तकों के लिए जुजबन्दी (तानी) की सिलाई करानी चाहिए। सिलाई के लिए इस्तेमाल किया जाने वाला तागा काफी महीन और मजबूत होना चाहिए।

कटिंग करने या जिल्द जड़ने में ज़रा-सी भी लापरवाही बरतने से सारे परिश्रम पर पानी फिर जाने का खतरा रहता है। पुस्तक के आकार-प्रकार के अनुसार ही जिल्द मोटी या पतली होनी चाहिए। इसमें सन्देह नहीं जितना खर्च पूरी पुस्तक छापने में लगता है लगभग उतना ही बाइंडिंग कराने में लग जाता है, लेकिन सही और चुस्त बाइंडिंग से ही पुस्तक का पूरा सौन्दर्य निखर पाता है। बाइंडिंग हमेशा ऐसी होनी चाहिए जो खूबसूरत भी हो और मज़बूत भी।

मुख्य बात

पुस्तक-प्रकाशन के सम्बन्ध में जो सबसे प्रमुख बात है वह यह है कि पुस्तकें जीवन के लिए कुछ उस प्रकार से आवश्यक नहीं हैं जैसे अन्न या अन्य भौतिक आवश्यकता की वस्तुएँ; इसलिए उन्हें ऐसा आकर्षक बनाने की आवश्यकता है कि ग्राहक बरबस उन्हें खरीदने के लिए लालायित हो जाय। पुस्तकों की लागत और लाभांश लौटने में पर्याप्त समय लगता है। अतः इस बात का ध्यान भी रखना चाहिए कि पुस्तक को अत्यधिक आकर्षक बनाने के मोह में कहीं इतना व्यय न कर दिया जाय कि लाभांश तो दूर लागत ही लौटने की अवधि अनन्त हो जाय।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तक-परिचय

उपन्यास

रहस्यमयी : विश्वविख्यात उपन्यासकार सर एच० राइडर हैगर्ड की अमर कृति "She" का श्री रामनाथ 'सुमन' द्वारा प्रस्तुत किया गया हिन्दी रूपान्तर है। कथानक रोचक, रोमांचक तथा रहस्यपूर्ण है और एक बार शुरू करके बिना समाप्त किये छोड़ने को जी ही नहीं चाहता। अफ्रीकी जीवन से लेखक का घनिष्ठ परिचय है इसीलिए उसने अपने इस उपन्यास का कथा-क्षेत्र अफ्रीका महाद्वीप को ही चुना है जो इस रहस्यपूर्ण कथानक के लिए अत्यन्त उपयुक्त प्रदेश है। दो हज़ार वर्ष तक प्रियतम की आकुल प्रतीक्षा ....मिलन-क्षण की वियोग-वेला में अत्यन्त करुण और पीड़ाप्रद परिणति....अगले जन्म में पुनः संयोग की निष्ठा ...यही है 'रहस्यमयी' का कथातत्त्व जिसे उपन्यासकार ने अपनी चमत्कारपूर्ण शैली तथा रचना-कौशल से एक अनुपम कथाकृति के रूप में ढाल दिया है। 'रहस्यमयी' का प्रकाशन हुआ है **राजपाल एण्ड सन्ज़, दिल्ली** से और मूल्य है ५) रु०।

* * *

आदरणीय : तेलुगु भाषी हिन्दी-कथाकार श्री ए० रमेश चौधरी आरिगपूडि का नवीनतम उपन्यास है। समाज में सम्मानित और श्रेष्ठ समझे जाने वाले जन अन्दर से कितने पोले होते हैं यही इस उपन्यास में भी आरिगपूडि ने दिखाया है। श्री आर० टी० एम० सी० कृष्णन चेट्टियार तथा उनके साथियों के रूप में उपन्यासकार ने हमारे आज के समाज में निम्न तथा मध्यवर्ग की नसों से बरबस रक्त खींचकर खूद मोटे होने वाले एक ऐसे वर्ग का चित्र अंकित किया है जो अनैतिक व्यवसाय तथा भ्रष्टाचार की नींव पर ही अपना कीर्ति-शोध खड़ा कर रहा है। उपन्यास का कथानक काफी रोचक है और भाषा सरल। सफाई-छपाई साफ़ सुथरी है। **भारती साहित्य सदन** ने इसे प्रकाशित किया है और मूल्य है ४) रु०।

* * *

दूध-गाछ : श्री देवेन्द्र सत्यार्थी का नव प्रकाशित उपन्यास है। लोक-साहित्य के मनीषी अन्वेषक होने के कारण श्री सत्यार्थी ने लोक जीवन को बहुत निकट से देखा और परखा है। यही कारण है कि उनके उपन्यासों के पात्रों में एक ऐसी सजीवता और कथानकों में ताजगी मिलती है जो उनके विस्तृत अनुभव और गहरी सूझ-बूझ की परिचायक है। प्रस्तुत उपन्यास में शास्त्रीय संगीत तथा नृत्य को व्यापक जनसमुदाय तक पहुँचाने की समस्या उठाई गई है। केरल की शस्य-श्यामला भूमि पर सागर ने शंखधरन के संगीत को जन्म दिया और सागर ने ही बम्बई में इरावती को नृत्य तथा अभिनय की दीक्षा दी। शंख के संगीत द्वारा उसका मातृत्व जाग उठा। बम्बई के मीनाबाजार में कला के दूध-गाछ को उगाने में असमर्थ होकर शंख अपनी जन्म-भूमि को लौट जाता है, जहाँ सागर उसकी प्रतिभा को मर्यादावान बनाता है। सागर का अहर्निश मुखरित संगीत अन्त तक बना रहता है जिसका एक ही घोष है—माँ भी दूध-गाछ है, और कला भी। पूरे उपन्यास का वातावरण इतना रागात्मक है कि पाठक निरन्तर एक मधुर वृत्ति का अनुभव करता है। इसका प्रकाशन हुआ है **राजकमल प्रकाशन, दिल्ली**, इलाहाबाद, बम्बई, पटना, मद्रास से और मूल्य है ६) रु०।

* * *

आँख मिचौली : श्री नारायण द० गाडगिल का पहला उपन्यास है। इसमें लेखक ने बम्बई के सामाजिक जीवन का चित्र अंकित किया है। फिल्मी दुनिया से सम्बन्धित शहर के निवासियों की झाँकी इसमें पाठकों को देखने को मिलेगी। २८४ पृष्ठ के इस सजिल्द उपन्यास का प्रकाशन **भारती साहित्य मन्दिर, दिल्ली** ने किया है और मूल्य है चार रुपये पचास नये पैसे।

* * *

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धन्य भिक्षु : भारती साहित्य मन्दिर, दिल्ली ने ही प्रकाशित किया है। इसके लेखक हैं श्री रमेश चौधरी 'आरिगपूडि'। श्री आरिगपूडि के इधर कई उपन्यास हिन्दी में प्रकाशित हुए हैं। मूलत: दाक्षिणात्य होते हुए भी उन्होंने हिन्दी लिखने में जो कुशलता प्राप्त की है, वह प्रशंसनीय है। इस उपन्यास में सातवाहनकालीन कथा को आधार बनाया गया है। क्राउन साइज़ के २०० पृष्ठ का यह उपन्यास तीन रुपये बारह आने में मिल सकता है।

* * *

जब खेत जागे : उर्दू के प्रसिद्ध कथाकार श्री किशनचन्द के उपन्यास का हिन्दी अनुवाद है। यद्यपि इसमें कहीं भी अनुवाद होने का उल्लेख नहीं है, और न ही अनुवादक का नाम प्रकाशित किया गया है। इस उपन्यास में लेखक ने आंध्र के किसानों की समस्याओं का चित्रण किया है। क्राउन साइज़ के ११८ पृष्ठ के इस उपन्यास का प्रकाशन **बम्बई बुक हाउस, बम्बई** द्वारा हुआ है और वहीं से तीन रुपये में मिलता है।

* * *

जाड़े की धूप : श्रीमती रजनी पनिकर का छठा उपन्यास है और इसका प्रकाशन हुआ है **न्यू एज पब्लिशर्स प्राइवेट लि०, कलकत्ता** द्वारा। डिमाई साइज़ के ११३ पृष्ठ का यह सुमुद्रित और आकर्षक कवर वाला उपन्यास प्रकाशक से २ रुपये ५० नये पैसे में मिलता है। उपन्यास में जिन समस्याओं को उठाया गया है वे हमारी-आपकी सबकी हैं, अतः यह पठनीय बन पड़ा है।

* * *

नाटक

संरक्षक : श्री हरिकृष्ण 'प्रेमी' का नवीनतम नाटक है। इसमें लेखक ने उस समय की झाँकी प्रस्तुत की है जब अंग्रेज भारत में अपने राज्य का विस्तार कर रहे थे। राजस्थान के इतिहास से जिस घटना को लेकर नाटककार ने उसे अपनी कला का माध्यम बनाया है, वह अभूतपूर्व बन पड़ी है। क्राउन साइज के १६४ पृष्ठ का यह सजिल्द नाटक **भारती साहित्य मन्दिर, दिल्ली** ने प्रकाशित किया है और वहीं से ढाई रुपये में मिलता है।

* * *

सुजाता : श्री गोविन्दवल्लभ पन्त का नवीनतम नाटक है। इसका प्रकाशन हुआ है **आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली** द्वारा। इसमें नाटककार ने नगर, गाँव और व्यक्ति में जीवन, जागरण और जातीयता के विकास का महत्त्व प्रतिपादित किया है। मनोरंजन के लक्ष्य को लेखक ने अन्तर्दर्शन द्वारा सफलीभूत किया है। क्राउन साइज के ९६ पृष्ठ का यह सजिल्द नाटक प्रकाशक से एक रुपये ५० नये पैसे में मिलता है।

* * *

जानहार : श्रीमती कुदसिया जैदी का नाटक है। यह अलेक्जेन्डर ड्यूमा को आधार बनाकर लिखा गया है। नाटक की भाषा बिलकुल उर्दू है। इसे देवनागरी लिपि में देखकर नाटक-प्रेमी जनता कदाचित पसन्द करे। क्राउन साइज के १०० पृष्ठ के इस सजिल्द नाटक का प्रकाशन **आत्माराम एण्ड सन्स** ने किया है और वहीं से दो रुपये में प्राप्य है।

* * *

बाबू : तेलुगु भाषा के सिद्धहस्त लेखक आचार्य आत्रेय की 'एन० जी० ओ०' नामक कृति का हिन्दी अनुवाद है। इसमें लेखक ने मध्यम वर्ग का जीता-जागता चित्र उपस्थित किया है। इसमें मध्यम वर्ग के बाबुओं का जो चित्र लेखक ने अंकित किया है, वह हमारी समाज-व्यवस्था पर करारा व्यंग्य है। क्राउन साइज के ८२ पृष्ठ के इस नाटक का प्रकाशन **बम्बई बुक हाउस, बम्बई** द्वारा हुआ ही और वहीं से दो रुपये में प्राप्त किया जा सकता है।

* * *

नई फसल : श्री छेदीलाल गुप्त द्वारा लिखित नाटक है। इसकी मूल भावभूमि में समाज के वर्तमान अनेक जटिल प्रश्नों का समाधान लेखक ने प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। क्राउन साइज के ९४ पृष्ठ का यह छोटा सा नाटक भी **बम्बई प्रकाशन, बम्बई** की ओर से प्रकाशित हुआ है और वहीं से एक रुपया ५० नये पैसे में मिलता है।

* * *

अनजान रास्ता : श्री डी० के० राय चौधरी (आनन्द)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का नव प्रकाशित लघुनाटक है। भारतीय पंचवर्षीय योजना को आधार मानकर लिखा गया यह सामाजिक नाटक स्वातन्त्र्योत्तर ग्रामीण जीवन का एक जीता-जागता चित्र प्रस्तुत करता है। जमींदारी उन्मूलन के बाद ग्रामीण क्षेत्रों में जो जागरण हुआ है। उसीको विकास की सही दिशा दिखलाना इस नाटक का उद्देश्य है। नाटक का कथानक करुण भी है और प्रेरणाप्रद भी। कथोपकथन सहज तथा स्वाभाविक हैं जिनके कारण नाटक पाठनीय ही नहीं अभिनेय भी बन गया है। इसका प्रकाशन हुआ है राजकिशोर प्रकाशन, इलाहाबाद से और मूल्य है १) रु० १० नये पैसे।

* * *

मृत्युञ्जय : हिन्दी के वयोवृद्ध तथा ख्यातिप्राप्त नाटककार श्री लक्ष्मीनारायण मिश्र की नवीनतम कृति है। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के जीवन पर लिखे गए इस नाटक में प्रयास यह किया गया है कि बापू का सम्पूर्ण जीवन, उनका जीवन-दर्शन, उनके सम्पर्क के विशिष्ट-विशिष्ट लोग तथा राष्ट्रीय आन्दोलन सम्बन्धी सभी प्रमुख बातें आ जायें। नाटककार अपने ढंग से इस प्रयास में सफल भी हुआ है लेकिन इस नाटक को यथार्थ कम कवि-कल्पना ही अधिक मानना चाहिए। बापू तथा अन्य लोगों के मुँह से जो कुछ कहलवाया गया है उसमें से अधिकांश नाटककार के अपने मस्तिष्क की उपज है। पूरा नाटक शेक्सपियर के नाटकों के विरुद्ध एक भीषण किन्तु शस्त्रहीन अभियान है। सच-मुच यह एक विलक्षण कृति है। कथोपकथन इतने लम्बे, अस्वाभाविक तथा उबा देने वाले हैं कि न तो यह नाटक पठनीय ही बन सका है और न अभिनेय ही। इसका प्रकाशन हुआ है शिक्षा-भारती, दिल्ली–६ से और मूल्य है ३)।

* * *

मेरी पसन्द : हिन्दी के प्रसिद्ध उपन्यासकार श्री गुरुदत्त का नवप्रकाशित नाटक है। अपने इस सामाजिक नाटक में श्री गुरुदत्त ने हमारी आज की विवाह-व्यवस्था की समस्या उठाई है। दहेज और लड़की देखकर विवाह करना ये दो प्रमुख समस्याएँ इस सम्बन्ध में प्रमुख रूप धारण किये हुए हैं। अपने ढंग से श्री गुरुदत्त ने इन दोनों समस्याओं का समाधान भी प्रस्तुत किया है जिससे हो सकता है कोई

उर्दू के
लोकप्रिय शायर

उनकी बेहतरीन

ग़ज़लें, नज़्में, शेर, रुबाइयाँ पढ़िए !

प्रत्येक शायर पर अलग पुस्तक है जिसमें उसकी चुनी हुई शायरी के अलावा बड़ी ही रोचक शैली में उसकी जीवनी दी गई है। कठिन उर्दू शब्दों के अर्थ भी साथ ही दे दिये हैं ताकि आप पूरी तरह आज की उर्दू शायरी का लुत्फ़ उठा सकें। पुस्तकें सचित्र हैं और सजिल्द भी। आप इन पुस्तकों को अवश्य ही पसन्द करेंगे।

जीवनी और संकलन

ग़ालिब	:	१॥)
जोश मलीहाबादी	:	१॥)
इक़बाल	:	१॥)
साहिर लुधियानवी	:	१॥)
फ़ैज़ अहमद फ़ैज़	:	१॥)
सरदार जाफ़री	:	१॥)
मजाज़	:	१॥)
हफ़ीज़ जालंधरी	:	१॥)
जिगर मुरादाबादी	:	१॥)

राजपाल एण्ड सन्ज़

कश्मीरी गेट, दिल्ली-६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सहमत हो कोई न हो लेकिन जिस रोचक कथानक को उन्होंने अपनी कृति में अपनाया है वह पठनीय तो है ही। लेकिन थोड़े से परिवर्तन के साथ यह नाटक अभिनेय भी बनाया जा सकता है। सस्ते ढंग की बचकानी कविताओं का समावेश यदि इसमें न किया गया होता तो अच्छा रहता। इसका प्रकाशन हुआ है **भारती साहित्य सदन**, नई दिल्ली से और मूल्य है २) ५० न० पैसे।

* * *

आषाढ का एक दिन : ग्रामबाला मल्लिका और कवि गुरु कालिदास के बीच मृदु-प्रणय की कल्पना पर आधारित तीन अंकों का एक भावसिक्त नाटक। सफल कहानीकार श्री मोहन राकेश ने इस नाटक में भी सफलता प्राप्त की है। साहित्य को राज्याश्रय मिले या नहीं, यदि आज की इस चर्चागत समस्या को नाटक से दूर रखा जा सकता तो वह दो अतीव सरल हृदयों के प्रणय की अद्भुत कथा कह सकता था। **राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली** द्वारा प्रकाशित १२० पृष्ठों की इस सजिल्द पुस्तक का मूल्य २) रुपये है।

* * *

नई फसल : श्री छेदीलाल गुप्त का नवप्रकाशित एकांकी संग्रह है। इसमें कुल ३ एकांकी हैं। पहला है 'अजायबघर', दूसरा 'प्रलय के बन्धन' और तीसरा है 'नई फसल'। आज़ादी के बाद गाँवों और शहर के जीवन में जो विकृतियाँ और परिवर्तन उत्पन्न हुए हैं उन्हीं का चित्रण इन नाटकों में है। पहले एकांकी में ज़मींदारी उन्मूलन के फलस्वरूप उत्पन्न विकृति का चित्रण है तो दूसरे में शहर के कुण्ठा-ग्रस्त जीवन का चित्र प्रस्तुत किया गया है, तीसरे एकांकी 'नई फसल' में अदम्य आशा तथा विश्वास के साथ अनाचारों तथा कठिनाइयों से जूझते हुए गरीब ग्रामीणों का सशक्त चित्र खींचा गया है। ये एकांकी पठनीय तो हैं ही अभिनेय भी हैं। सफाई छपाई सुन्दर है। इसका प्रकाशन हुआ है **जनरल ट्रेडिंग कम्पनी, कलकत्ता–७** से और मूल्य है १) रु० ५० न० पै०।

* * *

कविता

धरती के बोल : कवि श्री जयनाथ 'नलिन' की कविताओं का नवीनतम संग्रह है। इसकी भूमिका आचार्य विनय-मोहन शर्मा ने लिखी है और प्रकाशन किया है **आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली** ने। प्रायः सभी कविताओं में कवि की अनुभूति यथार्थ का अंकन करने में पूर्णतः सफल हुई है। इन कविताओं में पाठकों को जहाँ छायावाद युग की भावना का प्रतिफलन मिलेगा, वहाँ वे आज के प्रगतिवादी और यथार्थवादी धारा के वर्णन में भी किसी से पीछे नहीं हैं। डिमाई साइज के १२२ पृष्ठ की पुस्तक प्रकाशक से तीन रुपये पचास नये पैसे में प्राप्त की जा सकती है।

* * *

मन्थन : में जैन मुनि बुद्धमल्ल की चिन्तनपरक ४४ नवीनतम कविताओं का संकलन प्रस्तुत किया गया है। इसका प्रकाशन हुआ है **आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली** द्वारा। भूमिका में श्री रामधारीसिंह 'दिनकर' ने यह ठीक ही लिखा है कि "बुद्धमल्ल जी चिन्तक कवि हैं तथा उनकी अधिकांश रचनाओं के भीतर विचारों की रीढ़ स्पष्ट दिखाई देती है। उनकी कविताएँ केवल वाचन और श्रवण करने की ही वस्तु नहीं हैं, वे चिन्तन और मनन की भी सामग्री प्रस्तुत करती हैं। डिमाई साइज के ६२ पृष्ठ की यह पुस्तक प्रकाशक से दो रुपये में प्राप्य है।

* * *

पुष्पनगर : कविवर दुर्गाप्रसाद रस्तौगी 'आदर्श' द्वारा लिखित महाकाव्य है। इसमें कवि ने गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर के प्रति श्रद्धा सुमनांजलि समर्पित की हैं। मुक्तवृत्त में लिखे गए इस काव्य की प्रस्तावना डॉक्टर हजारीप्रसाद द्विवेदी ने लिखी है। उन्होंने लिखा है —"आदर्श जी का वक्तव्य विषय बहुत सरल और मनोहर है। उनमें कल्पना की सुकुमारता है। बीच-बीच में उनके इस काव्य में सुन्दर सरस मोहक पद मिले हैं जो नगीने की तरह जड़े हुए हैं।" डिमाई साइज के २३२ पृष्ठ के इस काव्य का प्रकाशन **आराधना प्रकाशन, गोला दीनानाथ, वाराणसी** द्वारा हुआ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साहित्य और समीक्षा—नई चेतना

साहित्य प्रकाशन के सहयोगी विद्वानों का 'साहित्य और समीक्षा' ग्रन्थमाला के अन्तर्गत निम्न आलोचनात्मक ग्रन्थों का प्रकाशन

(१)

हिन्दी एकांकी उद्भव और विकास
हिन्दी नाटक उद्भव और विकास
हिन्दी उपन्यास उद्भव और विकास
हिन्दी कहानी उद्भव और विकास
हिन्दी आलोचना उद्भव और विकास
हिन्दी कविता उद्भव और विकास

(प्राचीन और नवीन : दो खंड)

(२)

देवकीनन्दन खत्री साहित्य और समीक्षा
भारतेन्दु साहित्य और समीक्षा
प्रेमचन्द साहित्य और समीक्षा
रामचन्द्र शुक्ल साहित्य और समीक्षा
टैगौर साहित्य और समीक्षा
शरत साहित्य और समीक्षा
प्रसाद साहित्य और समीक्षा
मैथिलीशरण गुप्त साहित्य और समीक्षा
निराला साहित्य और समीक्षा
बृन्दावनलाल वर्मा साहित्य और समीक्षा
महादेवी साहित्य और समीक्षा
पंत साहित्य और समीक्षा
नन्ददुलारे वाजपेयी साहित्य और समीक्षा
हजारीप्रसाद द्विवेदी साहित्य और समीक्षा
चतुरसेन साहित्य और समीक्षा
भगवतीप्रसाद साहित्य और समीक्षा
जैनेन्द्र साहित्य और समीक्षा
यज्ञदत्त शर्मा साहित्य और समीक्षा
यशपाल साहित्य और समीक्षा
उदयशंकर भट्ट साहित्य और समीक्षा
इलाचन्द्र साहित्य और समीक्षा
दिनकर साहित्य और समीक्षा

उक्त विषयों पर जो लेखक महानुभाव आलोचनात्मक कार्य कर रहे हैं पत्र-व्यवहार करें—

साहित्य प्रकाशन, मालीवाड़ा, दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है और छः रुपये में प्राप्त किया जा सकता है।

*   *   *

दो गीत : में कवि नीरज द्वारा लिखी गई उनकी 'मृत्यु गीत' और 'जीवन गीत' नामक दो लम्बी कविताएँ हैं। दोनों ही कविताएँ कवि नीरज के व्यक्तित्व और कृतित्व को समझने में सहायक हो सकती हैं। डिमाई साइज के ६४ पृष्ठ की इस सजिल्द पुस्तक का प्रकाशन **आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली द्वारा हुआ है** और वहीं से एक रुपया आठ आने में मिल सकती है।

*   *   *

सागर के बीच : में युवक कवि श्री भारत भूषण की ५१ कविताएँ प्रस्तुत की गई हैं। सारी ही कविताएँ सचित्र हैं और कहीं-कहीं चित्र अत्यन्त सुन्दर बन पड़े हैं। संग्रह की कुछ कविताएँ अत्यन्त मनोहारी और प्रेरक हैं। डिमाई साइज की १२० पृष्ठ की यह सजिल्द पुस्तक **आत्माराम एण्ड सन्स दिल्ली** ने प्रकाशित की है और वहीं से तीन रुपये आठ आने में मिलती है।

*   *   *

कहानी

आधी रात का सूरज : में श्री शमशेरसिंह नरूला की दस प्रगतिशील कहानियों का संग्रह है। ये सभी कहानियाँ किसी समय 'हंस' में प्रकाशित हुई थीं और उस समय हिन्दी प्रेमी जनता ने इनका पर्याप्त स्वागत किया था। क्राउन साइज के १५१ पृष्ठ की इस सजिल्द पुस्तक का प्रकाशन **राजकमल प्रकाशन, दिल्ली** की ओर से हुआ है और वहीं से दो रुपये ५० नये पैसे में मिल सकती है।

*   *   *

७० श्रेष्ठ कहानियां : श्री उपेन्द्रनाथ 'अश्क' द्वारा अब तक लिखित दो सौ कहानियों में से चुनी हुई ७० श्रेष्ठ कहानियों का यह संकलन **नीलाभ प्रकाशन गृह, इलाहाबाद** ने प्रकाशित किया है। अश्क की कहानियाँ रोज़मर्रा के अनुभवों और अनुभूतियों पर आधारित होती हैं, और इसीलिए पाठक उनमें जीवन के स्पन्दन का आसानी से स्पर्श कर सकते हैं। 'अश्क' के कहानी कहने के शिल्प का विकास संग्रह की विभिन्न कहानियों के शिल्प से जाना जा सकता है जिन पर लेखन-तिथि दे दी गई है। छोटी-बड़ी, सहृदय के मर्म को छूने वाली, सामाजिक असंगतियों का पर्दाफाश करने वाली, मनोवैज्ञानिक—सभी प्रकार की कहानियाँ इस रोचक संग्रह में पढ़ने को मिल जाती हैं। डिमाई आकार के ६१० पृष्ठों की सुमुद्रित, सजिल्द पुस्तक का मूल्य १५ रुपये है।

*   *   *

संस्कृत वाङ्मय

भारत सावित्री : डॉक्टर वासुदेवशरण अग्रवाल द्वारा प्रस्तुत महाभारत के आदि पर्व से विराट् पर्व तक का एक सर्वथा नवीन एवं सारगर्भित अध्ययन है। युद्ध के अन्त तक का अंश दूसरे भाग में रहेगा और शेष तीसरे भाग में। पुस्तक का नाम 'भारत सावित्री' महाभारत के अन्त में आए 'धर्म' शब्द के आधार पर रखा गया है। इस ग्रन्थ में विद्वान लेखक ने महाभारत-युद्ध की कथा निमित्त मात्र ही दी है। वास्तव में यह ग्रन्थ धर्म-संहिता के रूप में ही प्रस्तुत किया गया है। 'महाभारत' जैसे महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ की यह व्याख्या वास्तव में हिन्दी के प्रत्येक पाठक के लिए उपादेय तथा संग्रहणीय है। क्राउन साइज के ३४८ पृष्ठ का यह ग्रन्थ **सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली** की ओर से प्रकाशित हुआ है और वहीं से साढ़े तीन रुपये में मिल सकता है।

*   *   *

रामायणकालीन समाज : में डॉ० शान्तिकुमार नानूराम व्यास ने पुस्तक के प्रारम्भ में वाल्मीकि और उनका काल पर विचार करके बाद में क्रमशः आर्य और अनार्य, राक्षस, वानर, वर्ण, आश्रम, परिवार, विवाह, प्रेम, नारी घर में, नारी-समाज में, आर्थिक जीवन, प्रशासन और युद्ध आदि शीर्षकों में 'वाल्मीकि रामायण' में चित्रित सामाजिक, आर्थिक एवं प्रशासनिक व्यवस्था का अध्ययन प्रस्तुत किया है। सामान्यतः संस्कृत-साहित्य और सामान्यतः वाल्मीकि रामायण के प्रेमी पाठकों के लिए यह पुस्तक एक सन्दर्भ कोष का काम देगी। क्राउन साइज के ३२० पृष्ठ की इस सजिल्द पुस्तक का प्रकाशन **सस्ता साहित्य मण्डल** ने किया है और वहीं से चार रुपये में प्राप्य है।

*   *   *

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रामायणकालीन संस्कृति : श्री डॉ० शान्तिकुमार नानूराम व्यास द्वारा लिखित ग्रन्थ है। वास्तव में यह पुस्तक पहली पुस्तक का ही एक अंग है। इसमें उन्होंने सर्वप्रथम रामायण के सांस्कृतिक महत्त्व पर व्यापक रूप से प्रकाश डालकर बाद में आचार-विचार, वेश-भूषा, खान-पान, क्रीड़ा-विनोद, शिक्षा, साहित्य, विज्ञान, कला-कौशल, नगर, आश्रम, धर्म, दर्शन, स्वर्ण युग और भारतीय संस्कृति पर रामायण का प्रभाव आदि विभिन्न शीर्षकों के अन्तर्गत 'वाल्मीकि रामायण' में चित्रित आचार-विचार, कला, साहित्य, विज्ञान, धर्म और दर्शन का सर्वाङ्गीण अध्ययन प्रस्तुत किया है। पहली पुस्तक की भाँति यह भी अत्यन्त उपादेय है। इसका प्रकाशन भी **सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली** ने किया है और इसमें क्राउन साइज के ३४० पृष्ठ हैं। इस सजिल्द पुस्तक का मूल्य चार रुपये है।

* * *

अभिज्ञान शाकुन्तल : में प्रो० इन्दुशेखर ने महाकवि कालिदास की विख्यात कृति 'अभिज्ञान शाकुन्तल' का हिन्दी अनुवाद प्रस्तुत किया है। इस अनुवाद की प्रमुख विशेषता यह है कि इसमें पहले श्री उदयशंकर भट्ट द्वारा लिखित 'प्रस्तावना' है और बाद में अनुवादक द्वारा प्रस्तुत लगभग ६२ पृष्ठ की विशद भूमिका है। इसमें अनुवादक महोदय ने कालिदास के काव्य पर विचार करके उसमें 'अभिज्ञान शाकुन्तल' का महत्त्व प्रतिपादित किया है। भूमिका में अनुवादक ने सबसे पहले संस्कृत नाटक की उत्पत्ति तथा स्वरूप पर व्यापक प्रकाश डालकर कालिदास के जीवन-वृत्त और उसकी रचनाओं के सम्बन्ध में बड़ी ही उपयोगी जानकारी दी है। इसमें कालिदास का काल-निर्णय, कथा-वस्तु, कथा के अन्य स्रोत, कालिदास द्वारा मूल कथा में परिवर्तन, कालिदास की कविता, शाकुन्तल के संस्करण और उनकी लोकप्रियता, शाकुन्तल की विशेषताएँ और मार्मिक प्रसंग और पात्र-परिचय आदि अनेक विषयों पर विचार किया गया है। क्राउन साइज के १०६ पृष्ठ की यह सजिल्द पुस्तक **आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली** ने प्रकाशित की है और वहीं से तीन रुपये में प्राप्य है।

* * *

आलोचना, निबन्ध

हिन्दी काव्यादर्श : आचार्य दण्डी के विख्यात संस्कृत-ग्रन्थ 'काव्यादर्श' का सुसंपादित हिन्दी रूपान्तर है। संस्कृत साहित्य शास्त्र के इस महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ का रूपान्तर प्रस्तुत करते समय श्री रणवीरसिंह एम० ए० ने सिद्धान्तसूत्रों की बोधगम्यता का पर्याप्त ध्यान रखा है और इस बात की भी सावधानी बरती है कि कहीं अर्थ का अनर्थ न हो जाय। अनुवादक ने ग्रन्थ के आरम्भ में एक विस्तृत भूमिका जोड़कर आचार्य दण्डी के जीवन का परिचय तथा साहित्य का सम्यक् विश्लेषण प्रस्तुत किया है। टिप्पणियों के कारण यह ग्रन्थ और भी उपयोगी बन गया है। हिन्दी अनुसन्धान समिति, दिल्ली की ओर से **ओरिएण्टल बुक डिपो, दिल्ली** ने इसका प्रकाशन किया है और मूल्य है ४) रु०।

* * *

माता पिता ने हमारा विवाह कर दिया

वह नौकरी करते रहे
मैं रोटी पकाती रही।
कभी हंस लिया, कभी झगड़ लिया।
कभी बेटा हो गया,
कभी बेटी हो गई।
हमने समझा इसी का नाम विवाह है
परन्तु जब 'विवाहित आनन्द' और
'पत्नी-पथ-प्रदर्शक' पढ़े
तो पता चला कि वह तो विवाह न था।
विवाहित जीवन के माधुर्य का रहस्य
तो हमने अब पाया है। (...लीला)
कविराज हरनाम दास बी. ए.,
गौरी शंकर मन्दिर, चांदनी चौक, देहली।
ये पुस्तकें सब बुकसेलर और रेलवे
बुकस्टाल बेचते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिद्धान्तालोचन : प्रो० धर्मचन्द्र सन्त व प्रो० बलदेव कृष्ण द्वारा लिखित आलोचना विषयक एक सिद्धान्त-ग्रन्थ है। इसमें हिन्दी के लगभग समस्त साहिय रूपों की सैद्धान्तिक समीक्षा का निर्देश इसमें किया गया है। संक्षिप्त रूप से इसमें समझाया गया है कि अमुक साहित्य-रूप की उत्कृष्टता या निकृष्टता की कसौटी क्या है। लेखकों ने अपना यह ग्रन्थ प्रस्तुत करने में भारतीय तथा पाश्चात्य दोनों ही आलोचना-सिद्धान्तों का सहारा लिया है। इण्टर तथा बी० ए० के विद्यार्थियों तथा जिज्ञासु-वृत्ति के सामान्य पाठकों के लिए यह ग्रन्थ उपयोगी है। इसका प्रकाशन किया है **ओरिएण्टल बुकडिपो, दिल्ली** ने और मूल्य है ४) रु० २५ न० पै०।

* * *

महाकवि प्रसाद में डॉ० विजयेन्द्र स्नातक और डॉ० रामेश्वरलाल खण्डेलवाल ने कवि प्रसाद की काव्य-कृतियों तथा प्रवृत्तियों का समीक्षात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया है। प्रसाद के काव्य के अध्येताओं के लिए यह पुस्तक सर्वथा उपयोगी है। प्रारम्भ में लेखकों ने प्रसादजी की जीवनी देकर उनके काव्य-क्षेत्र में प्रवेश पर विशद प्रकाश डाला और अन्त में उनके काव्य में वर्णित प्रेम, सौन्दर्य, प्रकृति-वर्णन और छायावाद आदि पर रोचक वर्णन भी प्रस्तुत किया है। क्राउन साइज़ के २४० पृष्ठ की इस पुस्तक का प्रकाशन **भारती साहित्य मन्दिर, दिल्ली** की ओर से हुआ है और वहाँ से तीन रुपये पचास नये पैसे में मिलती है।

* * *

सटक सीताराम : प्रो० संसारचन्द्र एम० ए० के हास्य-व्यंग्यपूर्ण लघु-निबन्धों का संग्रह है। हिन्दी में हास्य-व्यंग्य की नितान्त कमी है और वह भी शिष्ट हास्य की। प्रस्तुत संग्रह के निबन्ध बड़े ही हल्के फुल्के ढंग से हमारे रोजमर्रा के जीवन पर व्यंग्य भी करते हैं और गुदगुदाते भी हैं। सटक सीताराम से हिन्दी पाठकों का पर्याप्त मनोरंजन होगा, इसमें सन्देह नहीं। इसका प्रकाशन हुआ है **ओरिएण्टल बुक डिपो, दिल्ली** से और मूल्य है ३) रु०।

* * *

द्विवेदी युग के साहित्यकारों के कुछ पत्र : श्री बैजनाथसिंह विनोद द्वारा सम्पादित तथा **हिन्दुस्तानी एकेडेमी,** द्वारा प्रकाशित एक उपयोगी ग्रन्थ है। इसमें आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी, पं० पद्मसिंह शर्मा, पं० श्रीधर पाठक, श्री बालमुकुन्द गुप्त, पं० बालकृष्ण भट्ट तथा आचार्य रामचन्द्र शुक्ल आदि के कुछ महत्त्वपूर्ण पत्र संकलित हैं। सम्पादक ने इन पत्रों के संकलन में निश्चय ही बड़ा परिश्रम किया है और हिन्दी साहित्य को एक बहुमूल्य भेंट दी है। इन पत्रों में सबसे महत्त्वपूर्ण द्विवेदीजी के पत्र हैं या वे पत्र हैं जो द्विवेदीजी को लिखे गए हैं। इन पत्रों से उक्त साहित्यकारों के व्यक्तित्व तथा कृतित्व के अतिरिक्त तत्कालीन साहित्यिक परिस्थितियों आदि के सम्बन्ध में पर्याप्त जानकारी मिलती है। इस पत्र-संकलन से पाठकों का मनोरंजन तो होगा ही साथ ही शोध-कर्ताओं तथा जिज्ञासुओं को कितनी ही महत्त्वपूर्ण बातों का पता भी चलेगा। इस उपयोगी ग्रन्थ का मूल्य है ५) रु० मात्र।

* * *

शिक्षा-विज्ञान

शिक्षा की समस्या में महात्मा गांधी के अब तक के 'शिक्षा' के सम्बन्ध में लिखे गए लेखों और प्रवचनों का संकलन प्रस्तुत किया गया है। 'असहयोग और आधुनिक शिक्षा', 'राष्ट्रीय शिक्षा का प्रयोग', 'हरिजनों की शिक्षा', 'निराकरण की दिशा' और 'वर्धा योजना' शीर्षक इन पाँच अध्यायों में बापू जी की शिक्षा-सम्बन्धी विभिन्न प्रवृत्तियों का परिचय मिलता है। क्राउन साइज के ३८४ पृष्ठों की इस पुस्तक का प्रकाशन **नवजीवन प्रकाशन मन्दिर, अहमदाबाद** ने किया है और वहीं से २ रुपये ५० नये पैसे में मिलती है।

* * *

बुनियादी शिक्षा के सिद्धान्त : ११२ पृष्ठों की इस पुस्तिका में १३ अध्यायों में शिक्षा सिद्धान्तों की विवेचना की गई है—लेखकद्वय हैं : श्री के० सी० मलैया तथा श्रीमती विद्यावती मलैया। आज बुनियादी शिक्षा को भारतीय शिक्षा का आधार माना जा चुका है, इसलिए इस सम्बन्ध में प्रामाणिक साहित्य की अतीव आवश्यकता है। यह पुस्तिका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री गुरुदत्त की चिर-प्रतीक्षित रचना

छ ल ना

मूल्य ६)

कुछ लोग कम्यूनिज़्म को केवल मात्र आर्थिक अव्यवस्था दूर करने का उपाय समझते हैं। वास्तव में ऐसा नहीं है। यदि ऐसा होता तो मानव-इतिहास के नवीन अर्थ, शिक्षा की रूपरेखा में परिवर्तन और विवाहादि सभी विषयों पर नवीन आचरण न किया जाता। प्रस्तुत पुस्तक में उक्त विषय की युक्तियुक्त विवेचना पढ़िए। उपन्यास रोचकता में अन्यतम है।

हमारे दो नवीन प्रकाशन

१. **मेरी पसन्द (नाटक)**—हिन्दी-जगत् के सर्वप्रसिद्ध उपन्यासकार श्री गुरुदत्त का यह प्रथम प्रकाशित नाटक है। रोचकता में उपन्यासों से किसी प्रकार भी कम नहीं।

२. **आदरणीय (उपन्यास)**—दक्षिण भारत के प्रथम हिन्दी उपन्यासकार, 'खरे-खोटे' के ख्याति-प्राप्त, अन्य कई रचनाओं के रचयिता श्री आरिगपूडि का यह नवीन उपन्यास है। सरल भाषा, रोचक शैली श्री आरिगपूडि की विशेषता है।

हमारे प्रकाशन

१. विकृत छाया	मू०	४॥)	१२. कला	मू०	५)
२. भावुकता का मूल्य	,,	६)	१३. दासता के नए रूप	,,	६)
३. बहती रेता	,,	५)	१४. पत्रलता	,,	७)
४. विश्वासघात	,,	५॥)	१५. धरती और धन	,,	६)
५. विडम्बना	,,	६)	१६. छलना	,,	६)
६. देश की हत्या	,,	५॥)	१७. मेरी पसन्द (नाटक)	,,	२॥)
७. वाम मार्ग	,,	७)	१८. अन्तिम यात्रा	,,	१)
८. विलोम गति	,,	५)	१९. आदरणीय	,,	४)
९. गुण्ठन	,,	५)	२०. भूले-भटके	,,	३)
१०. मानव	,,	५)	२१. खरे-खोटे	,,	५)
११. आवरण	,,	५)	२२. अलका (कविता-संग्रह)	,,	२॥।)

भारती साहित्य सदन

३०/९० कनॉट सरकस, नई दिल्ली–१

नोट—श्री गुरुदत्त का सम्पूर्ण सैट हमारे सदन से प्राप्य है। विक्रेताओं तथा पुस्तकालयों को उचित सुविधायें दी जाती हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आगामी मास के

हमारे नये प्रकाशन

मैं नेहरू से मिला : तिबौर मॉंड

—श्री नेहरू से लेखक की चार लम्बी और टेप रिकार्ड की गई मुलाकातों का ब्यौरा, जिसमें नेहरू ने लेखक द्वारा पूछे गए राजनीति व समाज-विषयक प्रत्येक प्रश्न का विस्तार से उत्तर दिया है। श्री नेहरू और उनके विचारों को समझने के लिए अद्वितीय पुस्तक। पुस्तक का अधिकांश श्री नेहरू के अपने शब्दों में ही है। मूल्य ३·५० रु०।

ओ अप्रस्तुत मन :

—भारतभूषण अग्रवाल की कविताओं का द्वितीय संग्रह। विचारोत्तेजक भूमिका। मूल्य ४ रुपये मात्र।

भारतीय सांस्कृतिक इतिहास की समीक्षा : डॉ० बैजनाथ पुरी

—भारतीय संस्कृति के विभिन्न पहलुओं का ऐतिहासिक विश्लेषण। मूल्य ४ रुपये मात्र।

राजकमल

राजकमल
प्रकाशन प्राइवेट लि:
दिल्ली इलाहाबाद बम्बई पटना मद्रास

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भी इसी ओर किया गया सफल प्रयास है। प्रकाशक हैं संमिलन एण्ड कम्पनी, कलकत्ता ; मूल्य १ रुपया ७५ नये पैसे।

* * *

आश्रम रचना अथवा आश्रमी शिक्षा (तीसरा भाग) में गुजराती लेखक श्री जुगतराम दवे के आश्रमी शिक्षा और वहाँ के सामाजिक सिद्धान्तों का संकलन है। इसके अध्ययन से पाठकों को महात्मा जी के आश्रम और उसके शिक्षा-सम्बन्धी पक्ष पर विस्तृत जानकारी मिल सकेगी। डिमाई साइज के १५६ पृष्ठ की यह पुस्तक प्रकाशक से डेढ़ रुपये में मिल सकती है। प्रकाशक है **नवजीवन प्रकाशन मन्दिर, अहमदाबाद।**

* * *

संस्मरण

गांधी-नास्तिक-संवाद में गोराजी रामचन्द्र राव ने गांधीजी से हुए विभिन्न भेंट-प्रसंगों का रोचक शैली में वर्णन किया है। इन संस्मरणों में कुछ आध्यात्मिक प्रश्नों पर गांधीजी द्वारा समाधान प्रस्तुत किया गया है। क्राउन साइज के ६४ पृष्ठ की इस पुस्तक का प्रकाशन भी **नवजीवन प्रकाशन मन्दिर, अहमदाबाद** ने किया है और वहीं से ६२ नये पैसे में मिलती है।

* * *

अमर शहीद रामप्रसाद 'बिस्मिल' की आत्म-कथा का सम्पादन प्रसिद्ध पत्रकार श्री बनारसीदास चतुर्वेदी ने किया है। इसमें प्रसिद्ध क्रान्तिकारी अमरशहीद श्री रामप्रसाद 'बिस्मिल' द्वारा जेल में फाँसी से दो दिन पूर्व लिखी हुई आत्म-कथा प्रकाशित है। अपने सम्पादकीय वक्तव्य में श्री चतुर्वेदी ने इसे हिन्दी की सर्वश्रेष्ठ आत्म-कथा सिद्ध किया है, क्या भाषा और क्या भाव दोनों ही दृष्टियों से बिस्मिल का आत्म-चरित एक अद्भुत ग्रन्थ है। इसकी भूमिका श्री भगवानदास माहौर ने लिखी है और परिशिष्ट में श्री मन्मथनाथ गुप्त द्वारा लिखित 'पृष्ठभूमि' तथा श्री शिव वर्मा लिखित 'मेरी डायरी का एक पृष्ठ' शीर्षक से अमर शहीद बिस्मिल की माता का एक शब्दचित्र प्रकाशित किया गया है। क्राउन साइज के १६८ पृष्ठ की यह सजिल्द पुस्तक **आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली** ने प्रकाशित की है और वहीं से दो रुपये ५० नये पैसे में मिल सकती है।

* * *

डा० बाबा साहेब आँबेडकर में श्री विजयकुमार पुजारी ने भारतीय मनु डॉ० आँबेडकर के जीवन और कार्यों पर विस्तार से प्रकाश डाला है। पुस्तक के २५ अध्यायों में लेखक ने उनकी बहुमुखी प्रतिभा के विषय में रोचक जानकारी प्रस्तुत करके हिन्दी के जीवनी-साहित्य में एक और अभिवृद्धि की है। क्राउन साइज के २०८ पृष्ठों की यह सजिल्द पुस्तक लेखक ने स्वयं प्रकाशित की है और उन्हीं से ३४०, कृष्णनगर, पो० गांधीनगर, दिल्ली के पते से तीन रुपये में प्राप्य है।

* * *

बालोपयोगी

ओरिएण्टल बुकडिपो, दिल्ली ने इधर बच्चों तथा नव-साक्षर प्रौढ़ों के लिए **हमारे पड़ोसी देश** नाम से एक उपयोगी पुस्तकमाला का प्रकाशन आरम्भ किया है। इसके अन्तर्गत अभी तक तीन पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं 'बर्मा', 'चीन', 'इण्डोनेशिया'। ७५ न० पै० मूल्य की इन छोटी-छोटी पुस्तकों में उक्त देशों की भौगोलिक, राजनीतिक, सामाजिक तथा आर्थिक परिस्थितियों के अतिरिक्त वहाँ के इतिहास तथा संस्कृति का भी परिचय बड़े रोचक ढंग से प्रस्तुत किया गया है। स्थान-स्थान पर दिये गए चित्रों के कारण ये और भी रोचक तथा बोधगम्य बन गई हैं। सरल भाषा-शैली में लिखी गई ये पुस्तकें अवश्य ही लोकप्रिय होंगी ऐसा विश्वास है। सफाई-छपाई साफ-सुथरी है तथा आवरण पृष्ठ आकर्षक तथा सुरुचिपूर्ण हैं।

* * *

पुराणों की कहानियाँ में ठा० राजबहादुरसिंह ने पुराणों के विभिन्न प्रसंगों में से चुनकर कई कहानियाँ प्रस्तुत की हैं। इनमें बालकों को भारत की प्राचीन संस्कृति की झलक देखने को मिलेगी। कापी साइज के १२४ पृष्ठ की इस पुस्तक का प्रकाशन **आत्माराम एण्ड सन्स द्वारा हुआ है**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किशोरों के लिए

रोचक और सरल

उपन्यास

इस पुस्तक माला के अन्तर्गत प्रकाशित सभी पुस्तकें विश्व-बाल साहित्य की अनुपम निधियां हैं जिनसे बच्चों और किशोरों को अद्भुत प्रेरणा मिलती है।

ये उपन्यास

बहुरंगे आवरण और अनेकों चित्रों से सुसज्जित हैं। प्रत्येक का मूल्य डेढ़ रुपया है।

उपहार और पुरस्कार

में देने योग्य......

गुलिवर की यात्राएँ (GULLIVER'S TRAVELS)

खजाने की खोज में (TREASURE ISLAND)

रॉबिन्सन क्रूसो (ROBINSON CRUSOE)

कठपुतला (PINNOCHIO)

जादूनगरी (ALICE IN WONDERLAND)

रॉबिनहुड (ROBINHOOD)

वीर सिपाही (IVANHOE)

तीसमारखाँ (DON QUIXOTE)

राजपाल एन्ड सन्ज़ दिल्ली-६

और वहीं से दो रुपये में मिलती है।

* * *

बापू की कहानी में श्रीमती कृष्णा हठीसिंह ने राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के जीवन तथा कार्यों के सम्बन्ध में सरल और रोचक शैली में प्रकाश डाला है। पुस्तक में यथा-प्रसंग चित्र भी दे दिये गए हैं, **बम्बई प्रकाशन लिमिटेड, बम्बई** द्वारा प्रकाशित ९० पृष्ठ की इस पुस्तक का मूल्य २ रुपये २५ नये पैसे है।

* * *

मनोविज्ञान

मनोविश्लेषण : सिगमण्ड फ्रायड के 'ए जनरल इण्ट्रोडक्शन टु साइको-एनेलिसिस' का यह पूर्ण और प्रामाणिक अनुवाद (अनुवादक श्री देवेन्द्रकुमार वेदालंकार) **राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली** द्वारा प्रकाशित हुआ है। इस प्रकार के ग्रन्थों के अनुवाद राष्ट्रभाषा हिन्दी के अभावों की पूर्ति के लिए परम आवश्यक हैं, प्रकाशक इसलिए वास्तव में बधाई के पात्र हैं।

डिमाई आकार के ४१४ पृष्ठ, पक्की जिल्द, अच्छी छपाई, मूल्य १० रुपये मात्र।

* * *

विविध

भारत शिल्प के षडङ्ग : वात्स्यायन के कामसूत्र में चित्रकला के ६ अंगों का वर्णन किया गया है : रूपभेद, प्रमाण, भाव, लावण्य-योजना, सादृश्य तथा वर्णिकाभंग। प्रकारान्तर से ये षडङ्ग पाँचवीं शती में चीन भी पहुँचे—चीनी चित्रकला के षडङ्गों में भारतीय शिल्प के षडङ्गों का बिम्ब बहुत स्पष्ट दिखाई पड़ता है। श्री अवनीन्द्रनाथ ठाकुर ने इस निबन्धावली में इन षडङ्गों का विवेचन अद्वितीय पाण्डित्य और सुबोध शब्दावली में किया है।

रायल आकार के ४० पृष्ठों की इस पुस्तक का प्रकाश **नया साहित्य प्रकाशन, इलाहाबाद** ने किया है—अनुवादक श्री महादेव साहा हैं, मूल्य १·५० नये पैसे मात्र।

* *

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दैनिक गृहोपयोगी विज्ञान में श्री श्रीकृष्ण और मनमोहन 'सरल' ने जीवन में प्रतिदिन काम में आने वाले दो हजार से भी अधिक सुझावों का संकलन प्रस्तुत किया है। यह पुस्तक प्रत्येक परिवार में संग्रह करने योग्य है। डिमाई साइज के १६० पृष्ठ की इस पुस्तक का प्रकाशन **आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली** ने किया है और वहीं से चार रुपये में मिलती है।

* * *

मनोरम काश्मीर में श्री मोहनकृष्ण दर ने वहाँ की प्रकृति-दर्शन, लोग, कला और साहित्य के सम्बन्ध में रोचक और विस्तृत प्रकाश डाला है। कशमीर के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त करने के लिए यह पुस्तक सर्वथा उपादेय और संग्रहणीय है। पुस्तक में यत्र-तत्र बहुत से चित्र भी दे दिये गए हैं, जिनसे इसकी उपयोगिता बढ़ गई है। डिमाई साइज के १६४ पृष्ठों की यह सजिल्द पुस्तक **आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली** ने प्रकाशित की है और वहीं से पाँच रुपये में प्राप्य है।

* * *

कला अंक : हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग की पत्रिका का यह भव्य विशेषांक **कला अंक** के नाम से प्रकाशित हुआ है। अधिकारी विद्वानों का सहयोग सम्पादकों को मिला है। इसमें कला, भारतीय पौराणिक कालीन कला, संस्कृत साहित्य में चित्रकला सम्बन्धी शब्दावली, भारतीय कला के विविध अंगों का सर्वेक्षण, वास्तुशिल्प, नगर-निर्माण, रंगमंच, नृत्य, लोक-कला आदि सम्बन्धी विषयों पर लेख प्रकाशित हुए हैं। रायल आकार के ५२२ पृष्ठों में ५४ लेख हैं; इनके अतिरिक्त श्री अवनीन्द्रनाथ ठाकुर की पुस्तक 'भारत शिल्प के षडङ्ग' का तथा विष्णुधर्मोत्तर पुराण के एक भाग 'चित्रसूत्रम्' का सम्पूर्ण अनुवाद भी दिया गया है। मूल्य आठ रुपये मात्र।

* * *

(पृष्ठ ३ का शेष)

इंगलैण्ड के प्रकाशकों ने इधर पुस्तक-विक्रेताओं से सहयोग करने का एक नया मार्ग निकाला है। पुस्तक-विक्रेता किसी विशिष्ट प्रकाशक की पुस्तकों का स्थानीय पत्रों में विज्ञापन करते हैं और विज्ञापन के बिल की रकम प्रकाशक तथा पुस्तक-विक्रेता द्वारा मिल के चुकाई जाती है।

* * *

अमेरिका की एक प्रसिद्ध प्रकाशन संस्था—डबल डे—के रिसर्च डायरेक्टर श्री लियोनार्ड शैट्ज़किन ने न्यूयार्क में पुस्तकों की बिक्री बढ़ाने के प्रश्न पर अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि "हम लोगों के सामने जो मुख्य समस्या है, वह यह है : हम प्रकाशकों का यह दायित्व है कि हम पुस्तकों की परचून बिक्री को उन लोगों के लिए अधिक लाभप्रद बनाएँ जो इस व्यापार में हैं ताकि यह लाभ उनके लिए आकर्षक बन सके, जो इस व्यवसाय में नहीं हैं।" उन्होंने कहा कि यद्यपि अमेरिका में घोड़ों का उपयोग कम हो रहा है फिर भी घोड़ों का नाल बनाने वालों की संख्या १८,००० है जबकि उस देश में पुस्तकों की केवल ७,००० दूकानें हैं। पुस्तकों की अच्छी बिक्री करने वाली दूकानों की संख्या, उनके अनुसार, ३५०० से अधिक नहीं है।

* * *

जर्मनी में पुस्तकों की बिक्री का विश्लेषण विभिन्न विषयों के अनुसार इस प्रकार है : जनरल पुस्तकें, उपन्यास व कहानी, बाल-साहित्य तथा धार्मिक पुस्तकें—३७·९%, टेकनिकल, वैज्ञानिक तथा पाठ्यपुस्तकें—३७·४%, सामयिक तथा विविध, संगीत तथा चित्र सम्बन्धी—२४·७%। सामान्य पुस्तकों पर पुस्तक-विक्रेताओं को ३५% कमीशन मिलता है तथा टेकनिकल, वैज्ञानिक एवं पाठ्य-पुस्तकों पर २५%। प्रायः सभी प्रकाशकों के प्रतिनिधि पुस्तक-विक्रेताओं से मिलने के लिए देश भर का चक्कर लगाया करते हैं। प्रकाशकों को जनरल साहित्य पर ४३·७% का, तथा वैज्ञानिक और टेकनिकल साहित्य पर ४५·९% का ग्रॉस लाभ होता है। जनरल साहित्य पर यह लाभ अन्त में केवल ४·८% का नेट लाभ रह जाता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रत्येक पुस्तकालय के लिए अनुपम प्रकाशन

इसी मास के प्रकाशन

उपन्यास
सूखे पेड़, सब्ज़ पत्ते : गुलशन नन्दा ५)
आंचल में दूध आंखों में पानी : यादवेन्द्र शर्मा चन्द्र ५)
ग़ज़ाला : शौकत थानवी ३।।)

कहानियाँ
उर्दू की सर्वश्रेष्ठ ग़ज़लें : सं० नूरनबी अब्बासी २।।)

विज्ञान
दो गज़ ज़मीन : टालस्टाय ३)

आगामी मास के आकर्षण

जीवन-दर्शन
आपका व्यक्तित्व : आनन्द कुमार ४।।)

उपन्यास
तन के उजले मन के काले : जमनादास 'अख्तर' ४)
नसीम : शौकत थानवी ३।।)

काव्य
चन्द्रलोक (सचित्र) : बसन्तकुमार चटर्जी २।।)

अन्य महत्त्वपूर्ण प्रकाशन

काव्य—
दीवाने ग़ालिब (उर्दू काव्य) : सं० मुग़नी अमरोहवी नूरनबी अब्बासी ६)

राजनीतिक व ऐतिहासिक—
मेवाड़ : टॉड ३।।)
बाचा खान : फ़ारिग बुख़ारी ६)
नेहरू विश्व-शान्ति की खोज में : ओमप्रकाश गुप्ता ४।।)

आध्यात्मिक—
जीना सीखो : देसराज व गन्धर्व ३)

नाटक—
जब पर्दा उठा : हास्य एकांकी : प्रकाश पण्डित ४।)
मेरे नाटक : रवीन्द्रनाथ टैगोर ३।।)
डाकघर : रवीन्द्रनाथ टैगोर ।।=)

कहानियाँ—
उड़ानें : कृष्णचन्द्र ३।।)
एक खत एक खुशबू : कृष्णचन्द्र ३।)
सीमान्त : रवीन्द्रनाथ टैगोर २।।)
चाँद सितारे : टैगोर २।।)
आंचल और आंसू : शिक्षा रानी निगम ३।।)
पागल : ख़लील जिब्रान १।।)
लायसेंस : मिन्टो ३।।)

उपन्यास—
एक नदी दो पाट : गुलशन नन्दा ४।)
पत्थर के होंठ : गुलशन नन्दा ३।।)
बादल छँट गए : कृष्णचन्द्र ३)
ललिताङ्ग : यादवचन्द्र जैन ३।।)
इन्शा अल्लाह : शौकत थानवी ३)
कुतिया : शौकत थानवी ४।)
कार्टून : शौकत थानवी ४।)
चार सौ बीस : शौकत थानवी ३।)
सांच को आंच : शौकत थानवी ३।।)
मिट्टी का कलंक : यादवेन्द्र शर्मा चन्द्र ३)
तूलिका : सोमर सेट मॉम ५।)
धरती की बेटी : कमल शुक्ल ३।।)
राख की परतें : कमल शुक्ल ३।)
एक ही पतवार : शिवब्रतलाल वर्मन ३।)
शाही लकड़हारा : शिवब्रतलाल वर्मन ३।।)
प्रेम पुजारिन : पं० सुदर्शन २।)
कौन किसी का ? : रवीन्द्रनाथ टैगोर २।)
समाज का अत्याचार : शरत् चन्द्र चटर्जी २।।)
काश्मीर की बेटी : जमनादास 'अख्तर' २।।)
आग : जमनादास 'अख्तर' २।।)
आंसू : जमनादास 'अख्तर' ३।)
बुर्दा फरोश : जमनादास 'अख्तर' २।)
शैतान पुजारी : अनु० तीर्थराम २।।)

विज्ञान—
वैज्ञानिक चांद : बसन्तकुमार चटर्जी १।।)
विज्ञान का चमत्कार : देसराज व गन्धर्व ।।=)
विज्ञान के मनोरंजन : श्री शरण ।।=)

कालिदास साहित्य—(अनु० श्री शरण)
रघुवंश, मेघदूत, विक्रमोर्वशी, कुमारसम्भव, अभिज्ञान शाकुन्तल, मालविकाग्निमित्र, नलोदय
मूल्य प्रत्येक का १।)

व्यापारियों और लायब्रेरियों को विशेष सुविधा, बड़े सूचीपत्र और विवरण के लिए लिखिये।

नारायण दत्त सहगल एण्ड सन्ज़, दरीबा कलां, देहली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आगामी मास के प्रकाशन

आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली
—आसवारी, श्री नीरज
—लहर पुकारे, श्री नीरज
—नदी किनारे, श्री नीरज
—क्यों और कैसे, श्री मनोहरलाल वर्मा, सामान्य ज्ञान
—अधूरी तस्वीर, श्री वसन्त प्रभा, उपन्यास
—महान मनीषी, श्री जगन्नाथ प्रसाद मिश्र, जीवन चरित्र
—विषकन्या, श्री गोविन्द वल्लभ पन्त, एकांकी संग्रह

ओरिएण्टल बुकडिपो, दिल्ली
—श्रमदान, श्री इन्द्रसेनसिंह 'भावुक'
—अछूत का बेटा, श्री इन्द्रसेनसिंह 'भावुक'

क्रान्ति प्रकाशन, खन्ना
—तीन आकर्षण : एक बिन्दु, श्री यश गुलाटी

भारती पुस्तक भण्डार, दिल्ली
—शम्पिग फिटिंग हैण्ड बुक, श्री रामलाल वाली
—कारपेण्ट्री मास्टर, निरंजनसिंह वाँधी
—इलेक्ट्रिक जनरल, श्री नरेन्द्र नाथ
—लॉक स्मिथ, श्री नरेन्द्र नाथ

भारती पुस्तक मन्दिर, कलकत्ता
—ज्वाला और जल, हरिशंकर परसाई
—मनु की बेटियां, छेदीलाल गुप्त
—मानवी, प्रो० प्र० दीपक

भारती भण्डार, इलाहाबाद
—रेशमी टाई, पु० मु०, डॉ० रामकुमार वर्मा
—निर्वासित, पु० मु०, श्री इलाचन्द्र जोशी
—तितली, पु० मु०, श्री जयशंकर प्रसाद
—प्रेत और छाया, पु० मु०, श्री इलाचन्द्र जोशी

राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
—मैं नेहरू से मिला, तिबौर माँड
—मध्यकालीन हिन्दी गद्य, हरिमोहन श्रीवास्तव
—लोक-परलोक, उदयशंकर भट्ट
—श्री अप्रस्तुत मन, भारतभूषण अग्रवाल
—भारतीय सांस्कृतिक इतिहास की समीक्षा, डॉ० बैजनाथ पुरी

राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली
—झोंपड़ी से राष्ट्रपति भवन तक, अब्राहम लिंकन की जीवनी
—उदात्त का स्वरूप, डॉ० नगेन्द्र और श्री नेमिचन्द्र जैन
—बेन्जामिन फ्रेंकलिन, आत्मकथा
—रहस्य और रोमांस की कहानियाँ, एडगर ऐलन पो
—गालिब : जीवनी और संकलन, पु० मु०
—साहिर : जीवनी और संकलन, पु० मु०
—मजाज़ : जीवनी और संकलन, पु० मु०
—जोश : जीवनी और संकलन, पु० मु०
—इकबाल : जीवनी और संकलन, पु० मु०
—फ़ैज़ : जीवनी और संकलन, पु० मु०

राजहंस प्रकाशन, दिल्ली
—अपना इलाज आप खुद कीजिए, आचार्य चतुरसेन
—केरल (भारत परिचयमाला), डॉ० प्रभाकर माचवे
—गुबारे खातिर, स्व० मौलाना आज़ाद, संस्मरण
—तूफान के बादल, श्री मन्मथनाथ गुप्त, उपन्यास

साहित्य संगम, लुधियाना
—तीन उपन्यास, श्री सत्यपाल आनन्द
—महाराजा रणजीतसिंह, श्री रौशनलाल आहूजा

साहित्य सदन, मवाना (मेरठ)
—प्यास एक : रूप दो, श्री मनमोहन सरल, कहानी संग्रह

सुरेन्द्र एण्ड कं०, इलाहाबाद
—नवाब खुरपा बहादुर, श्री अजमबेग चुगताई; अनु० श्री प्रेम अग्रवाल
—चन्द्रनाथ, शरत, अनु० प्रेम अग्रवाल
—गीतांजलि, टैगोर, अनु० श्री प्रेम अग्रवाल

हिन्दी साहित्य संसार, दिल्ली
—महात्मा कबीर, प्रो० भारत भूषण सरोज
—पृथ्वीराज रासो के दो अध्याय, प्रो० भारत भूषण सरोज

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अगस्त मास के प्रकाशन

आलोचना—निबन्ध

दानबहादुर पाठक, **जायसी की काव्य साधना**, ३१२, क्रा०, हिन्दी साहित्य संसार, दिल्ली
महादेवी वर्मा, **अतीत के चलचित्र**, पु० मु०, क्रा०, भारती भण्डार, इलाहाबाद
शम्भूनाथ पाण्डेय डॉ०, सम्पा०, **गद्य साहित्य का उद्‌भव और विकास**, २५०, क्रा०, सरस्वती पुस्तक सदन, आगरा

इण्डस्ट्रियल, टैकनीकल

कृष्णानन्द शर्मा, **आटोमोबाइल इंजीनियरिंग**, ६१६, क्रा०, देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली
कृष्णानन्द शर्मा, **मोटर ड्राईविंग**, पु० मु०, २६४, क्रा०, देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली
नरेन्द्रनाथ, **इलैक्ट्रिक गाइड**, पु० मु०, ७६६, क्रा०, देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली
नरेन्द्रनाथ, **इलैक्ट्रिक मोटर्स**, ५७६, क्रा०, देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली
मदनलाल आर्टिस्ट, **सीमेण्ट की जालियों के डिजाइन**, क्रा०, देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली

इतिहास—राजनीति

योगेन्द्र मल्लिक, **संयुक्त राज्य अमरीका का संविधान**, १६८, डि०, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली
राधाकृष्ण शर्मा, **प्राचीन भारत-प्रारम्भ से १२०० ई० तक**, २७८, डि०, रस्तोगी एण्ड क०, मेरठ

उपन्यास

अज़ीम बेग चुगताई, अनु० प्रेम अग्रवाल, **शरीर बीबी**, १४४, क्रा०, सुरेन्द्र एण्ड क०, इलाहाबाद
आरिगपूडि, **आदरणीय**, २४२, क्रा०, भारतीय साहित्य सदन, नई दिल्ली
गुरुदत्त, **उमड़ती घटाएँ**, पु० मु०, ४१२, क्रा०, ओरिएण्टल बुक डिपो, दिल्ली
गुरुदत्त, **छलना**, ३८४, क्रा०, मकरन्द प्रकाशन, नई दिल्ली
जार्ज मारडीकियन, **धरती का स्वर्ग**, १७६, ड० क्रा०, भारतीय प्रकाशन मण्डल, वाराणसी
बंकिम बाबू, अनु० प्रेम अग्रवाल, **इन्दिरा**, २००, क्रा०, सुरेन्द्र एण्ड क०, इलाहाबाद
रघुवीरशरण 'मित्र', **कांपती आवाज़**, पु० मु०, २०८, क्रा०, भारतीय साहित्य प्रकाशन, मेरठ
रघुवीरशरण 'मित्र', **बलिदान**, पु० मु०, ३२०, ड० क्रा०, भारतीय साहित्य प्रकाशन, मेरठ
रघुवीरशरण 'मित्र', **राख की दुल्हन**, पु० मु०, ४०८, क्रा०, भारतीय साहित्य प्रकाशन, मेरठ
रघुवीरशरण 'मित्र', **सोने की राख**, पु० मु०, २०८, क्रा०, भारतीय साहित्य प्रकाशन, मेरठ
रांगेय राघव, डॉ०, **राई और पर्वत**, २००, क्रा०, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली
शंकर सुलतानपुरी, **शमा बुझ गई**, १३६, क्रा०, सुरेन्द्र एण्ड कं०, इलाहाबाद
हैनरी राइडर हैगर्ड, अनु० रामनाथ 'सुमन', **रहस्यमयी**, २९२, क्रा०, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कविता-शायरी

ग्रजित कुमार, **अकेले कण्ठ की पुकार**, डि०, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, इलाहाबाद, बम्बई — ३.००
ग़ालिब बनारसी, संकलनकर्ता, **दोस्तों की शायरी**, १०८, क्रा०, भारतीय प्रकाशन मण्डल, वाराणसी — २.५०
जयशंकर प्रसाद, **आंसू**, पु० मु०, ८०, क्रा०, भारती भण्डार, इलाहाबाद — १.००
नीरज, **दो गीत**, ७२, डि०, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली — १.५०
प्रकाश पण्डित, सम्पा०, **जिगर मुरादाबादी : जीवनी और संकलन**, १३०, क्रा०, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली — १.५०
प्रकाश पण्डित, सम्पा०, **हफ़ीज़ जलन्धरी : जीवनी और संकलन**, १२५, क्रा०, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली — १.५०
बेदिल बनारसी, **रूहे सुखन**, पु० मु०, १७६, क्रा०, कल्याणदास ब्रदर्स, वाराणसी — ३.००
रमेश द्विवेदी, **शेक्सपीयर की चतुर्दशपदियां**, ६८, डि०, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली — २.५०
हरिवंशराय 'बच्चन' डा०, अनु०, **जन गीता**, २००, क्रा०, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली — ३.००
हरिवंशराय 'बच्चन' डॉ०, **बुद्ध और नाचघर**, २००, क्रा०, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली — ३.००

कहानी

महेन्द्र सिंह नरूला, **आधी रात का सूरज**, १५१, क्रा०, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, इलाहाबाद, बम्बई — २.५०
शेखर जोशी, **कोसी का घटवार**, क्रा०, नया साहित्य प्रकाशन, इलाहाबाद — ३.००
सरोज तथा भट्ट, **सरस कहानी संग्रह**, पु० मु०, १००, क्रा०, ओरिएण्टल बुक डिपो, दिल्ली — १.२५

नाटक

गुरुदत्त, **मेरी पसन्द**, १२४, क्रा०, भारती साहित्य सदन, नई दिल्ली — २.५०
जयशंकर प्रसाद, **चन्द्रगुप्त**, पु० मु०, क्रा०, भारती भण्डार, इलाहाबाद — ३.००
जयशंकर प्रसाद, **ध्रुवस्वामिनी**, पु० मु०, ड० क्रा०, भारती भण्डार, इलाहाबाद — ०.७५
विष्णु प्रभाकर, **प्रकाश और परछाईं**, पु० मु०, १६०, क्रा०, भारतीय साहित्य प्रकाशन, मेरठ — ३.००
शेक्सपीयर, अनु० डॉ० रांगेय राघव, **निष्फल प्रेम**, १५०, क्रा०, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली — २.००
शेक्सपीयर, अनु० डॉ० रांगेय राघव, **भूल भुलैयां**, १५०, क्रा०, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली — २.००

बाल साहित्य—प्रौढ़ साहित्य

आर्मस्ट्रांगस्पैरी, अनु० महावीर अधिकारी, **कोलम्बस**, १८०, क्रा०, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली — २.००
डा० एम० फ्रीमैन, अनु० विराज, **एटम की कहानी**, क्रा०, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली — २.००
मार्टिन रेनल्ड, अनु० धर्मपाल, **वायुयान की कहानी**, १५५, क्रा०, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली — २.००
शैपराइन, अनु० के० सागर, **टेलीफोन की कहानी**, १२८, क्रा०, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली — २.००
चित्रसेन, **मेरे फल चित्र**, ३६, क्रा०, भारती प्रेस प्रकाशन, इलाहाबाद — १.००
चित्रसेन, **मेरे पक्षी मित्र**, ३६, क्रा०, भारती प्रेस प्रकाशन, इलाहाबाद — १.००
बहादुर बख्श, **जवाहर और कमला**, ३२, क्रा०, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली — ०.५०
महेन्द्र कुमार भटनागर, **केरल की लोक कथाएं**, ३२, कापी साइज़, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली — १.००
यशपाल शास्त्री, **अंकुर का सपना**, ४०, कापी साइज़, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली — १.२५
मोहनलाल चत्ता, **काश्मीर की लोक कथाएं**, पु० मु०, ६४, कापी साइज़, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली — १.५०
महाभारत, पु० मु०, ४०, कापी साइज़, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली — २.००
विमल भाई, **सभ्यता की कहानियां**, ४०, डि०, जनता साहित्य सदन, आगरा — ०.७५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीकृष्ण चरित्र, पु० मु०, ३२, कापी साइज, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली १.२५
शैलेश मटियानी, **बारा मण्डल की लोककथाएँ**, ४८, कापी साइज़, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली १.५०
स्वदेश कुमार, **चींटों का बदला**, ३६, कापी साइज़, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली १.००
सम्राट् चन्द्रगुप्त, ४०, कापी साइज, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली १.२५
सावित्री देवी वर्मा, **उत्तर भारत की लाक कथाएँ**, पु० मु०, ६०, कापी साइज, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली १.२५
सावित्री देवी वर्मा, **जंगल ज्योति**, पु० मु०, ७४, कापी साइज, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली १.५०

विविध

गिलबर्ट हाईट, **पढ़ाने की कला**, २३२, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली ५.००
नरेन्द्र धीर, **में धरती पंजाब की**, पु० मु०, २००, क्रा०, साहित्य संगम, लुधियाना ३.५०
फायड, अनु० देवेन्द्रकुमार वेदालंकार, **मनोविश्लेषण**, ४१४, रायल, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली १०.००
भगवानदास डॉ०, **विविधार्थ**, ७००, क्रा०, कल्याणदास ब्रदर्स, वाराणसी ६.००
रामस्वरूप वशिष्ठ, **भूगोल के भौतिक आधार**, पु० मु०, ३८४, डि०, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली ७.००

(पृष्ठ १४ का शेष)

प्रत्येक एण्ट्री के साथ निम्न सूचना देना आवश्यक है।

(१) पुस्तक किस श्रेणी के लिए भेजी जा रही है: बच्चों की पुस्तकें, सचित्र पुस्तकें, आर्ट पर पुस्तकें (अलग-अलग श्रेणी के लिए अलग-अलग पुस्तकें भेजी जानी हैं।)
(२) प्रकाशक व विज्ञापक का नाम व पूरा पता
(३) आर्टिस्ट या डिजाइनर का नाम
(४) मुद्रक
(५) मुद्रण का ढंग
(६) व्यवहार में लाये गए रंगों के नम्बर व नाम
(७) पुस्तक का विषय
(८) कागज का प्रकार

* * *

राजस्थान प्रकाशक एवं पुस्तक-विक्रेता संघ, जोधपुर के कामचलाऊ अध्यक्ष ने एक परिपत्र द्वारा राजस्थान के समस्त प्रकाशकों एवं पुस्तक-विक्रेताओं से संगठित होकर कार्य करने की अपील की है। राजस्थान सरकार द्वारा कक्षा १ से ६ तक की राष्ट्रीयकरण की गई पुस्तकों को पुस्तक-विक्रेताओं को विक्रयार्थ न देने के निर्णय के विरोध-स्वरूप वहाँ के नगरों में हड़ताल की गई तथा प्रस्ताव पास किये गए। किन्तु इस दिशा में सफलता प्राप्त करने के लिए एक दृढ़ संगठन की आवश्यकता है ताकि पुस्तक-व्यवसाय से सम्बन्धित सभी सदस्य एक निश्चित नीति पर चलकर अपने उद्योग की उन्नति में हाथ बँटा सकें।

(पृष्ठ ६ का शेष)

पुनरावर्तन हुआ। किन्तु वास्तविक पुनरावर्तन आठ वर्ष बाद हुआ। सन् १९३९ में रोबर्ट एफ० डी० ग्राफ ने पॉकेट बुक माला के अन्तर्गत पहले ३४ ग्रन्थ प्रकाशित किये और कुल मिलाकर १५,०८,००० प्रतियाँ इन्होंने बेचीं। दूसरे वर्ष ५३ शीर्षकों से पुस्तकें छपीं जिनकी ४५,५४,००० प्रतियाँ बिकीं।

सन् १९४१ में एबेन बुक्स संस्था की स्थापना हुई। सन् १९४२ में इंगलैण्ड की पेंग्विन बुक्स संस्था की शाखा आरम्भ हुई। बैन्टन बुक्स, न्यू अमेरिकन लाइब्रेरी, डेल-राइन बुक्स, डैल बुक्स और पापुलर लायब्रेरी जैसी संस्थाएँ एक के बाद एक तेजी से बनती चली गईं। युद्धकालीन मूल्य वृद्धि के कारण लाभ उठाने के लिए प्रकाशक लोग २५ सैन्ट प्रति पुस्तक के हिसाब से सादे कागज की जिल्द वाली इन पुस्तकों को धड़ाधड़ बेचते रहे।

सन् १९५१ में ९५० शीर्षकों से पुस्तकें छपीं और सस्ते मूल्य वाली ये पुस्तकें २,३०,००,००० में बिकीं। सन् १९५३ में १,०६१ पुस्तकें प्रकाशित हुई जो २,९२,००,००० की संख्या में कुल मिलाकर बिकीं। (सन् १९५३ में इन प्रकाशन संस्थाओं ने कुल मिलाकर ५०-६० लाख डालर रायल्टी के दिये।)

क्रमशः

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी साहित्य कोश

के प्रकाशन की महत्त्वपूर्ण घोषणा

हिन्दी-साहित्य के अध्ययन, अध्यापन तथा अनुशीलन में प्रत्येक विद्यार्थी, अध्यापक, अनुसन्धानकर्ता और पाठक को एक ऐसे ग्रन्थ की आवश्यकता का अनुभव निरन्तर होता है, जिसकी सहायता से हिन्दी में प्रयुक्त अनेकानेक प्राचीन और नवीन साहित्यिक, पारिभाषिक शब्दों का प्रामाणिक अर्थ, साहित्य की गतिविधि को संचालित एवं प्रभावित करने वाले वादों और प्रवृत्तियों का ऐतिहासिक और शास्त्रीय परिचय, साहित्यिक भाषा और बोलियों का भाषा-वैज्ञानिक विवेचन तथा शिष्ट और लोक-साहित्य के विभिन्न अंगों की उपयोगी जानकारी प्राप्त हो सके। सभी उन्नत साहित्यों में इस प्रकार के दर्जनों छोटे-बड़े विश्व कोश हैं, जो भाषा और साहित्य के सभी श्रेणी के अध्येताओं और पाठकों के लिए उपयोगी ज्ञानभण्डार तात्कालिक रूप से उपलब्ध करते हैं। हिन्दी के इसी भारी अभाव की पूर्ति के लिए हिन्दी साहित्य कोश की आयोजना हमने पिछले वर्ष प्रस्तुत की थी, जो अब पूर्ण हो चुकी है। आशा है कि १५ अगस्त सन् १९५८ तक कोश प्रकाशित हो जायगा।

इस हिन्दी साहित्य कोश को वैज्ञानिक रूप देने के लिए प्रयत्न किया गया है कि उसमें दी गई सामग्री साहित्य के सामयिक वाद-विवादों का परिचय देते हुए भी उनसे अप्रभावित रहकर शुद्ध बौद्धिक स्तर पर यथासम्भव तटस्थ रूप में उपस्थित की जाय तथा उसकी प्रामाणिकता यथासम्भव सर्वमान्य और स्थायित्वपूर्ण हो। इस उद्देश्य की पूर्ति को ध्यान में रखते हुए इस कोश-रचना के लिए एक सम्पादक-मण्डल संघटित किया गया था, जिसने हिन्दी के अस्सी से अधिक विशेषज्ञ और अधिकारी विद्वानों द्वारा विभिन्न विषयों पर लेख और टिप्पणियां लिखवाकर उन्हें कोशबद्ध किया है। उक्त सम्पादक-मण्डल के सदस्य हैं—डॉ० धीरेन्द्र वर्मा (प्रधान), डॉ० व्रजेश्वर वर्मा, डॉ० धर्मवीर भारती, श्री रामस्वरूप चतुर्वेदी तथा डॉ० रघुवंश (संयोजक)। प्रस्तुत साहित्य कोश में निम्नलिखित विषयों में प्रयुक्त होने वाले पारिभाषिक शब्द संकलित किये गए हैं—

१. प्राचीन साहित्यशास्त्र—रस, ध्वनि, अलंकार, छन्द आदि
२. पाश्चात्य साहित्यशास्त्र
३. साहित्य के विविध रूप
४. साहित्य में प्रयुक्त दार्शनिक, मनोवैज्ञानिक तथा समाजशास्त्रीय सिद्धान्त
५. साहित्य के विविध वाद तथा प्रवृत्तियाँ—प्राचीन और आधुनिक
६. लोक-साहित्य
७. हिन्दी भाषा, उसकी जनपदीय बोलियाँ, प्राचीन तथा आधुनिक भारतीय आर्य-भाषाओं तथा सम्बद्ध आर्य-भाषाओं का परिचयात्मक विवरण।

मूल्य बीस रुपये मात्र

कोश की सामग्री प्रस्तुत करने वाले लेखकों के नाम कोश में यथास्थान दिये गए हैं। इस महत्वपूर्ण आयोजन में हिन्दी के सभी मान्य तथा प्रतिष्ठित लेखकों का सहयोग प्राप्त हुआ।

हमारे अन्य कोश

बृहत् हिन्दी कोश	२५)	ज्ञान शब्द कोश	१५)
पारिभाषिक शब्द कोश	४)	बृहत् अंग्रेजी हिन्दी कोश	(प्रेस में)

प्रकाशक : ज्ञानमण्डल लिमिटेड, वाराणसी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Regd. No. D.—594

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजकमल पॉकेट बुक्स

राजकमल प्रकाशन

का

अभिनव, क्रान्तिकारी प्रयास

पहले ६ उत्कृष्ट प्रकाशन

१९५९ के आरम्भ में प्रकाशित हो रहे हैं

जिनमें

- ★ २ हिन्दी के लोकप्रिय उपन्यास
- ★ १ उत्कृष्ट अनूदित उपन्यास
- ★ १ हिन्दी का सुगम कोश
- ★ २ विज्ञान सम्बन्धी पुस्तक तथा
- ★ १ अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति के दार्शनिक का दर्शनशास्त्र

पाठकों को सस्ते दामों में अच्छे-से-अच्छा साहित्य देने का पहला गैर-सरकारी प्रयास

राजकमल

राजकमल

प्रकाशन प्राइवेट लिः

दिल्ली इलाहाबाद, बम्बई पटना मदास

श्री देवराज, मैनेजिंग डाइरेक्टर, राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, दिल्ली के लिए
श्री गोपीनाथ सेठ द्वारा नवीन प्रेस, दिल्ली में मुद्रित।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

D.—594

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वर्ष ६ अक्तूबर, १९५८ अंक २

प्रकाशन समाचार

वार्षिक रु० ३.०० एक प्रति ३१ नये पैसे

प्रति मास नियमित रूप से हिन्दी प्रकाशनों की सूचना पुस्तक विक्रेताओं और पुस्तकालयों तक पहुचाने वाला मासिक

अन्तर्राष्ट्रीय-विकास-सम्बन्धी राष्ट्रभाषा में सर्वप्रथम प्रयास

हिन्दी रूसी शिक्षक

लेखक : संग्राम सिंह चौधरी, एम० ए०, साहित्यरत्न

भारतीय विश्वविद्यालयों में रूसी भाषा के अध्ययन के लिये स्वीकृत तथा बिना अध्यापक के हिन्दी माध्यम द्वारा रूसी भाषा सीखने के लिए एक-मात्र पुस्तक है। व्याकरण भी सोदाहरण विस्तृत रूप से समझाया गया है। साइज १८×२२/८, पृष्ठ संख्या ४०४, मूल्य १०)

हमारे अन्य साहित्यिक प्रकाशन

१. **जायसी ग्रन्थावली :** (संशोधित एवं परिवर्द्धित संस्करण)
—ले० डॉ० मनमोहन गौतम एम० ए० १०)

२. **विद्यापति पदावली :**
—ले० आ० कुमुद विद्यालंकार ६)

३. **साकेत सौरभ :**
—ले० श्री नगीनचन्द सहगल, एम० ए० १०)

४. **निबन्ध रत्नाकर :** (संशोधित एवं परिवर्द्धित द्वितीय संस्करण)
—ले० कुमुद विद्यालंकार, डॉ० मनमोहन गौतम आदि ५॥)

हर प्रकार की पंजाब यूनिवर्सिटी की रत्न, भूषण, प्रभाकर, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग की साहित्य-रत्न, मध्यमा, प्रथमा, प्रयाग महिला विद्यापीठ की प्रवेशिका विद्या-विनोदिनी, विदुषी, सरस्वती, दिल्ली व पंजाब की मैट्रिक, एफ० ए०, बी० ए०, एम० ए० की पुस्तकें मिलने का एकमात्र स्थान—सूचीपत्र मुफ़्त मँगाइए :

रीगल बुक डिपो

नई सड़क, दिल्ली-६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारत सरकार द्वारा

शिक्षण संस्थाओं, ग्राम पंचायतों, स्कूल लायब्रेरियों, कम्यूनिटी प्रोजेक्टों, टैकनिकल इन्स्टीट्यूटों, सामाजिक व शासकीय संस्थाओं द्वारा अपनाया जाने वाला उच्चतम साहित्य यहाँ से लीजिए।

देहली में पुस्तकों की बड़ी दुकान

हमारी प्रकाशित टैकनिकल, इण्डस्ट्रियल तथा अन्य सभी प्रकार के साहित्य की पुस्तकों के अतिरिक्त

भारत के प्रायः सभी प्रमुख हिन्दी प्रकाशकों द्वारा प्रकाशित उत्कृष्ट तथा उपयोगी समीक्षात्मक साहित्य, उपन्यास, कहानी, नाटक, एकांकी, जीवन-चरित्र, आत्म-कथाएँ, ग्रामोपयोगी, महिलोपयोगी, नवयुवकोपयोगी, समाज-शिक्षण, प्रौढ़-साहित्य, मनोविज्ञान, शिक्षा-विज्ञान, इतिहास, राजनीतिक विज्ञान, वनस्पति-विज्ञान, जन्तु-विज्ञान, भौतिक-विज्ञान, रसायन-विज्ञान, नीति-विज्ञान, संगीत-विज्ञान, तर्क-शास्त्र, समाज-शास्त्र, धार्मिक तथा अध्यात्म साहित्य और ज्योतिष सम्बन्धी, तिजारती, तिब्बी, डाक्टरी, आयुर्वेदिक, होम्योपैथिक, जन्त्र-मन्त्र-तन्त्र, पूजापाठ, बालोपयोगी और स्त्रियोपयोगी तथा साथ-साथ हर प्रकार के उपन्यास, कहानियाँ आदि आकर्षक पुस्तकें आपको हमारे यहाँ सुविधा से मिलेंगी। हिन्दी में हर एक विषय की पुस्तक के लिए हमें लिखें।

हमारे प्रकाशन के बिना आपकी लायब्रेरी निश्चित रूप से अधूरी और आपका साहित्य विशेष रूप से अधूरा है और विशेषकर टैकनिकल, इण्डस्ट्रियल तथा एग्रीकल्चरल साहित्य, जिसकी आज के समय में सबसे अधिक आवश्यकता है, विशेष रूप से प्रकाशित किया गया है। आप अपने संग्रह को पूर्ण और साहित्य-रुचि को पूर्ण करने के लिए अपने शहर के मुख्य पुस्तक-विक्रेता से हमारे निश्चित मूल्य पर हमारे प्रकाशन प्राप्त करें, इसके अतिरिक्त हमें सीधा भी लिख सकते हैं—

हिन्दी की पुस्तकों का वृहद् सूचीपत्र केवल पच्चीस नये पैसे के टिकट डाक खर्च के लिए भेजकर मुफ्त मँगाइये

आवश्यक सूचना—हिन्दी के साथ-साथ हमारे यहाँ उर्दू तथा गुरुमुखी की भी हर प्रकार की पुस्तकें हर समय तैयार मिलती हैं।

लायब्रेरियों तथा पुस्तक-विक्रेताओं को पर्याप्त कमीशन

गवर्नमेण्ट आर्डर सप्लायर

देहाती पुस्तक भण्डार, चावड़ी बाजार, दिल्ली

PHONE : 20030

लोकल ग्राहकों को फोन द्वारा माल सप्लाई करने का पूरा प्रबन्ध है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशन समाचार

: वर्ष ६ :
: अंक २ :

(सं)पादक : ओं प्रकाश, डायरेक्टर इंचार्ज, राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड

(...)ः सितम्बर से ४ अक्तूबर, ५८ तक **प्रकाशन तथा पुस्तक-(व्य)वसाय सेमिनार** जिस अनन्य सफलता से सम्पन्न हुआ (...) उसके लिए **अखिल भारतीय हिन्दी-प्रकाशक संघ** के (अधि)कारी बधाई के पात्र हैं। इस प्रकार का सेमिनार (भा)रत में, शायद एशिया में, पहली बार ही आयोजित (कि)या गया है। देश के विभिन्न क्षेत्रों से आए ६४ प्रकाशकों (ने इ)सकी प्रत्येक बैठक में नियमित रूप से भाग लिया। (से)मिनार की सफलता उनके इस कष्टसाध्य सहयोग (के) बिना पूरी नहीं हो सकती थी। इनके अतिरिक्त कुछ (अ)सामान्य लेखकों, पुस्तकालयाध्यक्षों तथा केन्द्रीय शिक्षा-(वि)भाग के अधिकारी भी पर्यवेक्षक के रूप में सेमिनार की (वि)भिन्न गोष्ठियों में दिलचस्पी लेते रहे। प्रकाशन तथा (पुस्त)क-व्यवसाय के प्रायः सभी पक्षों पर वार्ताएँ हुईं और (क)हा जा सकता है कि अधिकांश वार्ताएँ सारगर्भित तथा (वि)चारोत्तेजक थीं, और उन्हें पढ़ने वालों ने अपने तथा देश-(वि)देशों के अनुभवों तथा विचारों का निचोड़ उनमें दे (दि)या था।

इंगलैण्ड तथा अमरीका में पुस्तक-व्यवसाय की स्थिति (का) सूक्ष्म निरीक्षण दो वार्ताओं में किया गया और हमें (आ)शा है कि इन देशों के अनुभव व उदाहरण समक्ष रखते (हुए) भारतीय प्रकाशक भी प्रगति के मार्ग पर अग्रसर होंगे। (का)पीराईट ऐक्ट से सम्बन्धित वार्ता शायद प्रकाशकों के (लिए) सबसे अधिक ज्ञानवर्द्धक रही, क्योंकि व्यवसाय के इस (मह)त्वपूर्ण पहलू से विरला ही प्रकाशक पहले परिचित (र)हा होगा।

इस सेमिनार से न केवल वही जिन्होंने उपस्थित होकर इसकी कार्यवाही में भाग लिया वरन् वे भी जो नहीं आ सके, लाभान्वित होंगे। सेमिनार की वार्ताएँ तथा उनके साथ हुए विचार-विनिमय हिन्दी-प्रकाशन तथा पुस्तक-व्यवसाय में स्वस्थ प्रवृत्तियों को जन्म दे सकते हैं और सम्बन्धित व्यवसायियों को व्यवहार-पक्ष में अधिक निपुणता और आधुनिक तरीकों को अपनाने पर बाध्य कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त इस प्रकार के सम्मेलनों का सामाजिक पक्ष भी कम महत्त्व का नहीं होता, इतनी बड़ी संख्या में पुस्तक-व्यवसायियों को सात दिन रोज़ मिलने-जुलने का तथा एक-दूसरे को अधिक समीप से जानने-पहचानने का अवसर मिला, यह छोटी बात नहीं है। इस निकट सम्पर्क के परिणामस्वरूप आपस में सहयोग और व्यवसाय में तरक्की की सम्भावनाएँ स्पष्ट हैं।

सेमिनार के अन्तिम दिन एक वक्तव्य स्वीकृत किया गया जिसमें सात दिन के विचार-विनिमय की परिणति-स्वरूप ग्यारह प्रस्ताव सम्मिलित थे। ये प्रस्ताव **अखिल भारतीय हिन्दी-प्रकाशक संघ** तथा साधारणतया हिन्दी के सब प्रकाशकों एवं पुस्तक-व्यवसायियों के लिए मार्ग-निर्देशन का कार्य करेंगे। यदि इन्हें कार्यान्वित किया जायगा तो हिन्दी-प्रकाशन तेजी से उन्नति की ओर अग्रसर हो सकेगा। उदाहरणस्वरूप यदि अ० भा० हि० प्र० संघ केवल हिन्दी अक्षरी (स्पेलिंग) में एकरूपता लाने में ही सफल हो सके, जिस ओर सक्रिय कदम उठाया गया है, तो यह हिन्दी साहित्य की बड़ी सेवा होगी, इसमें सन्देह नहीं है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस मास के नये प्रकाशन

हिन्दी के लोकप्रिय कवि
डॉ० हरिवंश राय 'बच्चन' की
मुक्त छन्द में लिखी गई मौलिक कविताओं का संग्रह

बुद्ध और नाचघर

मूल्य ३.०० रु०

मेरा पहला प्यार

तुर्गनेव के प्रसिद्ध लघु उपन्यासों 'माई फ़र्स्ट लव' और 'आस्या' का हिन्दी अनुवाद

अनुवादक : शिवदान सिंह चौहान और विजय चौहान

मूल्य २.५० रु०

ज्ञान-विज्ञान सीरीज़ की नवीन पुस्तकें

मौसम की कहानी
समुद्र की कहानी
रसायन की कहानी

प्रत्येक का मूल्य २.०० रु०

उर्दू के लोकप्रिय शायर सीरीज़ के अन्तर्गत

हफ़ीज़ जालंधरी

जीवनी और संकलन

सम्पादक : प्रकाश पंडित   मूल्य १.५० रु०

सभी पुस्तकें अपने स्थानीय पुस्तक-विक्रेताओं से खरीदें

राजपाल एण्ड सन्ज़, कश्मीरी गेट, दिल्ली-६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संग्रह

प्रकाशन व पुस्तक-व्यवसाय सेमिनार

दिल्ली में २८ सितम्बर से ४ अक्तूबर, १९५८ तक 'अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ' द्वारा आयोजित विचार-गोष्ठी का संक्षिप्त विवरण।

अखिल भारतीय हिन्दी-प्रकाशक संघ की ओर से आयोजित 'प्रकाशन व पुस्तक-व्यवसाय सेमिनार' दिल्ली में २८ सितम्बर से ४ अक्तूबर तक सम्पन्न हो गया। इस सेमिनार का उद्घाटन भारत सरकार के शिक्षामन्त्री डॉक्टर कालूलाल श्रीमाली द्वारा सम्पन्न हुआ। इस सेमिनार की सफलता के लिए जहाँ देश-विदेश के अनेक गण्यमान्य प्रकाशकों, शिक्षा-शास्त्रियों और नेताओं ने शुभकामना के सन्देश भेजे वहाँ देश के कोने-कोने से पधारे हुए ६४ प्रकाशकों ने इसकी विचार-गोष्ठियों में सक्रिय भाग लिया। यही नहीं कि इस सेमिनार में केवल प्रकाशक तथा विक्रेता सम्मिलित हुए, बल्कि अनेक मूर्धन्य लेखकों, शिक्षा-शास्त्रियों और साहित्य-प्रेमियों ने भी इस अवसर पर आयोजित विचार-गोष्ठियों में सम्मिलित होकर देश के पुस्तक-व्यवसाय से सम्बन्धित अनेक समस्याओं का समाधान प्रस्तुत किया।

इस सेमिनार का सबसे मुख्य और महत्त्वपूर्ण आयोजन वे गोष्ठियाँ थीं, जिनमें पुस्तक-प्रकाशन-व्यवसाय की पांडुलिपि-प्राप्ति, लेखकों से अनुबन्ध, उनका सम्पादन, मुद्रण, साज-सज्जा, विज्ञापन, प्रचार-प्रसार तथा थोक विक्रय आदि अनेक महत्त्वपूर्ण समस्याओं के सम्बन्ध में प्रत्येक विषय के अधिकारी व्यक्तियों द्वारा व्यापक प्रकाश डाला गया। यही नहीं कि इन गोष्ठियों में वक्ताओं ने इस व्यवसाय के सैद्धान्तिक रूप पर ही विचार किया हो, बल्कि इसके व्यावहारिक पक्ष पर भी पर्याप्त विचार-विनिमय हुआ। सस्ती पुस्तकों के प्रकाशन, बाल तथा प्रौढ़ साहित्य का निर्माण, अमरीका तथा इंगलैण्ड में पुस्तक प्रकाशन, कापी राइट कानून, पुस्तक-संस्थान का आन्तरिक प्रबन्ध और उसके आर्थिक लेखे-जोखे के विषय में भी इन विषयों के विशेषज्ञों द्वारा पर्याप्त ज्ञानवर्द्धक वार्ताएँ प्रस्तुत की गईं।

इन विचार-गोष्ठियों का सबसे मनोरंजक और महत्त्वपूर्ण अंग प्रत्येक वार्ता के बाद होने वाले प्रश्नोत्तर थे। इन प्रश्नोत्तरों से यह प्रकट होता था कि देश के प्रकाशक और लेखक अब पूर्ण जागरूक हैं और वे अपने कर्तव्यों से विमुख नहीं हैं। सबसे दिलचस्प विचार-गोष्ठियाँ कापीराइट कानून और 'लेखक-प्रकाशक-सम्बन्ध' पर रहीं। इनमें अनेक लेखकों तथा प्रकाशकों ने सन्तुलित भाषा और शिष्ट शब्दावली में अपने-अपने पक्ष की कठिनाइयों पर प्रकाश डाला। इन विचार-गोष्ठियों में पढ़ी जाने वाली वार्ताएँ और उनके अन्त में दिये गए विचार-विनिमय के अंश को देखकर पाठक सहज ही में इस निश्चय पर पहुँच सकेंगे कि इनका स्तर पर्याप्त उन्नत और ज्ञानवर्द्धक था।

सेमिनार में सम्मिलित होने वाले प्रकाशकों तथा पुस्तक-प्रतिनिधियों के स्वागत-सम्मान और मनोरंजन में भी इस समारोह के आयोजकों ने कोई कमी नहीं रखी और प्रतिदिन मनोरंजन के भी अनेक साधन प्रस्तुत किये गए। इस आयोजन की गोष्ठियों और अन्य अनेक कार्यक्रमों को देखकर ऐसा अनुभव होता था कि सभी प्रकाशक जैसे एक ही परिवार के सदस्य हों। उनमें किसी भी प्रकार का भेदभाव प्रतीत नहीं होता था।

पुस्तक–जगत् के लिए विषय के महत्व और विचार-विमर्श का उच्च स्तर देखते हुए इस अवसर पर दी गई वार्ताओं और परिसंवादों को 'प्रकाशन समाचार' के कुछ अंकों में प्रकाशित किया जा रहा है। विश्वास है कि इनसे न केवल प्रकाशक अपितु लेखक व अन्य पाठक भी लाभान्वित होंगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ के

प्रधान मन्त्री का वक्तव्य

दीनानाथ मलहोत्रा

प्रकाशन व पुस्तक-व्यवसाय सेमिनार के उद्घाटन के अवसर पर दिया गया यह वक्तव्य प्रकाशन व्यवसाय की मूलभूत समस्याओं पर प्रकाश डालता है।

इस 'प्रकाशन व पुस्तक-व्यवसाय सेमिनार' का आयोजन अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ की ओर से किया गया है। भारत के प्रायः सभी प्रमुख हिन्दी प्रकाशक एवं साहित्यिक संस्थान इस संघ के सदस्य हैं और हमारा यह प्रकाशक-संघ अन्तर्राष्ट्रीय प्रकाशक संघ से सम्बद्ध होने के साथ-साथ उसमें भारत का प्रतिनिधित्व भी करता है। सन् १९५६ में फ्लोरेन्स (इटली) में होने वाली अन्तर्राष्ट्रीय प्रकाशक-कांग्रेस में हमारे संघ के प्रतिनिधियों ने सम्मिलित होकर उसमें सक्रिय भाग लिया था।

आज संघ के तत्त्वावधान में आयोजित प्रकाशन व पुस्तक-व्यवसाय-सेमिनार के उद्घाटन के अवसर पर हमें यह कहते हुए प्रसन्नता एवं सन्तोष है कि यह अपने ढंग का एक ऐसा सर्वप्रथम आयोजन है जो भारत में और सम्भवतः एशिया में पहली बार, गैर-सरकारी आधार पर, मुख्यतः प्रकाशकों के अपने उद्योग से किया जा रहा है, और हमें इसमें आशा से कहीं अधिक प्रारम्भिक सफलता प्राप्त हुई है। इस सेमिनार में भाग लेने के लिए जहाँ देश के कोने-कोने से अनेक अनुभवी, गण्यमान्य एवं सफल प्रकाशक पधारे हैं, वहाँ भारत सरकार के शिक्षा मन्त्रालय द्वारा भी हमें यथोचित सहयोग प्राप्त हुआ है। सेमिनार की विभिन्न बैठकों में ये सब प्रकाशक प्रकाशन तथा पुस्तक-व्यवसाय की समस्याओं पर गम्भीरतापूर्वक विचार-विमर्श करेंगे। प्रत्येक समस्या पर उस विषय के विशेषज्ञ आध घण्टे की लिखित वार्ता देंगे, जिसके बाद उसी विषय पर प्रश्नोत्तर होंगे और इस प्रकार उस समस्या का स्पष्ट रूप और सम्भव समाधान सामने आ जायगा। इस सेमिनार की सभी वार्ताएँ योग्य वक्ताओं ने बड़े मनोयोग से तैयार की हैं और निश्चय ही प्रकाशन-व्यवसाय-सम्बन्धी साहित्य में इनका महत्त्वपूर्ण स्थान माना जायगा। ये सभी वार्ताएँ अलग-अलग भी प्रकाशित की गई हैं और सेमिनार की समाप्ति पर उन पर किये गए वाद-विवाद तथा टिप्पणियों सहित वे पुस्तक के रूप में भी प्रकाशित होंगी।

भले ही यह 'सेमिनार' हिन्दी प्रकाशकों का है, परन्तु निस्सन्देह इससे सभी प्रादेशिक भाषाओं के प्रकाशक भी लाभान्वित होंगे, क्योंकि प्रकाशन व पुस्तक-व्यवसाय की सभी समस्याएँ मूलतः एक-जैसी हैं। चाहे बंगला के प्रकाशक हों, अथवा तेलुगु-तमिल के, वे गुजराती में प्रकाशन करते हों या मराठी में, उनकी समस्याएँ बहुत-कुछ वही हैं जो हिन्दी-प्रकाशकों की हैं। इसलिए यह सेमिनार, सभी भारतीय भाषाओं के प्रकाशकों को नई विचार-सामग्री देगा ही, साथ ही कुछ अंशों तक मार्ग-निर्देशन भी करेगा।

प्रकाशक का कार्य बड़े उत्तरदायित्व का है। वस्तुतः

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह राष्ट्र-निर्माण का एक महत्त्वपूर्ण कार्य है। अच्छे साहित्य के प्रकाशन द्वारा, प्रकाशक नये लेखकों, नई प्रतिभाओं को प्रकाश में लाता है, साहित्य के भण्डार की सर्वतोन्मुखी श्रीवृद्धि करता है और इस प्रकार देश के नागरिकों और भावी नागरिकों, बच्चों और किशोरों को अच्छे स्तर का सन्तुलित, मानसिक भोजन जुटाकर, उनके नैतिक, मानसिक एवं सामाजिक स्तर को उन्नत करने में सहायक होता है। परन्तु यह खेद का विषय है कि राष्ट्र-निर्माण के इस महत्त्वपूर्ण कार्य में संलग्न प्रकाशक-वर्ग को हमारे देश में कभी भी उनका उचित स्थान अथवा श्रेय नहीं दिया गया। अभी तक प्रकाशकों के सम्बन्ध में अनेक भ्रान्तिपूर्ण धारणाएँ हमारे देश के कुछ अग्रगण्य व्यक्तियों में हैं, और प्रकाशकों को उपेक्षा की दृष्टि से देखा जाता रहा है। परन्तु इस प्रतिकूल वातावरण में भी प्रकाशक अपना कर्तव्य बराबर निभाते आ रहे हैं, और विशेषतः पिछले दस वर्षों में हिन्दी-प्रकाशन-क्षेत्र में आश्चर्यजनक प्रगति हुई है। भारतीय प्रकाशक अब जागरूक होकर, साहित्य के भण्डार की अभिवृद्धि करने में कटिबद्ध हैं। परन्तु अभी हमारे सामने अनेक कठिनाइयाँ हैं और अनेक समस्याएँ भी। आज हम हिन्दी-प्रकाशक संगठित रूप से उन पर विचार करने के लिए, इस सेमिनार में भाग ले रहे हैं। पहली बार सभी समस्याओं पर वैज्ञानिक ढंग से गम्भीरतापूर्वक विचार किया जायगा। और यदि इस सेमिनार के फलस्वरूप प्रकाशन-व्यवसाय को एक सुनिश्चित विज्ञान का रूप मिल सका और प्रकाशन की समस्याओं को समझने और सुलझाने में वैज्ञानिक दृष्टिकोण का परिचलन हो पाया, तो निस्सन्देह यह आयोजन सफल माना जायगा।

अब मैं आपका ध्यान प्रकाशन-जगत् की कुछ सामयिक समस्याओं की ओर आकर्षित करना चाहूँगा।

१. कागज की समस्या—कागज़ का भाव निरन्तर तेज़ी से बढ़ता ही जा रहा है। आज से एक वर्ष पहले कागज़ का भाव ६५ नये पैसे प्रति पौण्ड था और आज ११० नये पैसे प्रति पौण्ड पर भी कागज़ आसानी से प्राप्य नहीं है। हमारे देश में कागज़ की खपत उत्तरोत्तर बढ़ रही है और कागज़ का उत्पादन अपेक्षाकृत बहुत कम है। कागज़ का ब्लैक-मार्केट शुरू हो चुका है और इसकी रोक-थाम के लिए कोई कदम नहीं उठाया गया। कागज़ के मिल-मालिकों और व्यापारियों की इस मुनाफ़ाखोरी और ब्लैक-मार्केट का परिणाम यह हो रहा है कि बच्चों के लिए टैक्स-बुकें दिन-प्रतिदिन मँहगी होती जा रही हैं। साधारण स्थिति के माता-पिता बोझ से दबे जा रहे हैं। नवसाक्षरों को सस्ती पुस्तकें न मिलने के कारण साक्षरता आन्दोलन का ध्येय ही खतरे में पड़ रहा है। साधारण पाठक, जो पुस्तकों को पहले ही आवश्यक सूची में नहीं रखते, अब मँहगाई के कारण पुस्तकों से बिलकुल विमुख हो रहे हैं। यह स्थिति प्रकाशकों के लिए कितनी चिन्ताजनक है, यह स्पष्ट ही है। अब इस स्थिति का सामना कैसे किया जाय, इस सम्बन्ध में कुछ व्यावहारिक सुझाव ये है—

(क) सरकार शीघ्र ही एक जाँच-समिति नियुक्त करके कागज़ के बढ़े हुए मिल-रेटों तथा कागज़ के डिस्ट्रीब्यूटरों और व्यापारियों के अनुचित कमीशन की पड़ताल

हमारे नवीन प्रकाशन

उपन्यास

खरगोश का सपना	:	कृष्णचन्द्र	२·००
चालाक खरगोश	:	,,	१·७५
मुण्डे मुण्डे मतिर्भिन्ना	:	श्री सत्य	२·५०

किशोर साहित्य (रंगीन चित्रों सहित)

अमर ज्योति	:	मोहन	१·२५
सयाना मूरख	:	कृष्णचन्द्र	१·२५
मौत की मौत	:	,,	०·६०
सोने की सन्दूकची	:	,,	१·२५
पृथ्वी के पड़ोसी	:	मोहन	१·५०

बम्बई प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड
१६, ओल्ड कस्टम हाउस रोड
बम्बई–१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करे और उनका उचित स्तर निश्चित करे। टैरिफ़-बोर्ड द्वारा इस सम्बन्ध में कुछ जाँच हो रही है, परन्तु आवश्यकता है कि तात्कालिक कार्यवाही की जाय।

(ख) काग़ज़ के वर्तमान संकट के निराकरण के लिए, संकटकालीन स्थिति मानकर काग़ज़ का सीमित आयात किया जाय अन्यथा काग़ज़ की स्थिति सुधरती नहीं दीखती।

(ग) प्रकाशकों को सहकारी रूप में मिलों से सीधा निर्धारित मूल्य पर काग़ज़ उनकी आवश्यकतानुसार मिल सकने की व्यवस्था की जाय।

(घ) पब्लिक और प्राइवेट दोनों सेक्टरों के अन्तर्गत सफ़ेद काग़ज़ के उत्पादन के लिए नई मिलें खोलने की व्यवस्था शीघ्रातिशीघ्र की जाय।

२. पुस्तकों का राष्ट्रीयकरण—इस सम्बन्ध में हम सरकार से केवल यही आग्रह करेंगे कि राष्ट्रीयकरण के अन्तर्गत वह केवल उन विषयों पर ही पुस्तकें स्वयं प्रकाशित करे जिन पर साधारणतया प्रकाशक, आर्थिक अथवा अन्य कारणों से प्रकाशन नहीं कर पा रहे। सिद्धान्त यह होना चाहिए कि हम एक-दूसरे के पूरक बनें, प्रतिद्वन्द्वी नहीं। इस सम्बन्ध में प्रकाशक के नाते हमारी आशंकाओं को दूर करने के लिए सरकार का कर्तव्य है कि वह स्पष्ट घोषणा करे कि पुस्तकों के राष्ट्रीयकरण के अन्तर्गत केवल उच्च वैज्ञानिक तथा टैक्निकल विषयों के ग्रन्थ, विशेष ढंग के कोष व संदर्भ-ग्रन्थ, शोध-ग्रन्थ, कानून तथा अन्य इसी प्रकार के विशिष्ट विषयों पर ही पुस्तकें प्रकाशित की जायें, न कि साधारण प्रकाशकों की भाँति अनूदित उपन्यास, कविता-संग्रह, लोक-कथाएँ, आलोचनात्मक पुस्तकें आदि। भारत सरकार द्वारा स्थापित नेशनल बुक ट्रस्ट और चिल्ड्रन बुक ट्रस्ट की प्रकाशन नीति क्या होगी, यह अभी तक स्पष्ट नहीं है, और यह भी पता नहीं कि वे पुस्तको का मूल्य-निर्धारण किस आधार पर करेंगे? हमारा इस विषय में चिन्तित होना स्वाभाविक है। प्रकाशन-व्यवसाय इस समय विषम परिस्थितियों में से गुजरकर अपने पाँव पर खड़ा होने का प्रयत्न कर रहा है। सरकार की ओर से हमें सहयोग मिलना चाहिए, अनुचित प्रतिद्वन्द्विता नहीं।

३. सरकार के साथ प्रकाशकों का सहयोग—प्रकाशन एक विज्ञान है और कला भी। अनुभवी और विशेषज्ञ प्रकाशक अच्छी पुस्तकें उचित मूल्य पर प्रकाशित कर पाते हैं। यदि सरकार अपनी विभिन्न प्रकाशन-योजनाओं के लिए प्रकाशकों का सहयोग ले तो कम व्यय में सुन्दर प्रकाशन हो सकेंगे। इससे जहाँ एक ओर सरकार की राष्ट्रीय धन की बचत होगी, दूसरी ओर प्रकाशकों को भी पनपने का अवसर मिलेगा। एक अतिरिक्त लाभ यह भी होगा कि इन पुस्तकों का प्रचार और खपत अन्य सरकारी प्रकाशनों से कहीं अधिक हो पायगा। टैक्नीकल और वैज्ञानिक साहित्य इस प्रकार सरकारी सहायता से बहुत शीघ्र ही विभिन्न प्रकाशकों के सहयोग से प्रकाशित किया जा सकता है। क्या हमारी सरकार हमारे सहयोग व सेवाओं को स्वीकार करेगी?

४. टेंडर सिस्टम—पुस्तकों की सरकारी ख़रीद के समय कमीशन के सम्बन्ध में टेण्डर माँगने की प्रथा और सबसे अधिक कमीशन को ही प्रधानता देना कितना ग़लत है, और फिर भी आज तक यही प्रथा चली आ रही है। ज़रा सोचिए, अच्छी-बुरी सभी पुस्तकों को एक तराज़ू में तोलना कहाँ तक उचित है? प्रत्येक पुस्तक अपने में एक इकाई है। उसका मूल्य निर्भर करता है उसके विषय पर, उसके लेखक पर, कागज़, छपाई और जिल्द की उत्तमता पर, और इन्हीं कारणों से उस पर कमीशन अन्य उसी विषय की मिलती-जुलती पुस्तकों से भिन्न हो सकता है। यह मानी हुई बात है कि अधिक कमीशन की 'सस्ती' पुस्तक, कम कमीशन की 'मँहगी' पुस्तक से बहुत मँहगी पड़ती है। हमारी यह माँग सर्वथा उचित है कि पुस्तकों की सरकारी ख़रीद के लिए कमीशन के टेण्डर माँगने की प्रथा बन्द की जाय। अधिक कमीशन के चक्कर में पड़कर घटिया पुस्तकों से सरकारी पुस्तकालयों को भर देना राष्ट्रीय धन का अपव्यय तो है ही, इससे अच्छे प्रकाशकों को भी घटिया प्रकाशकों से मात खानी पड़ती है और इस प्रकार सत्साहित्य के प्रकाशन से निराश होना पड़ता है। इस सम्बन्ध में हमारा विनम्र सुझाव यह है कि सरकार की ओर से पुस्तकें ख़रीदने के सम्बन्ध में यह नीति घोषित हो और उसे सभी सरकारी विभाग, स्कूल, कॉलेज, लाइ-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ह मा रे न ये प्र का श न

: संस्मरण, नाटक, कहानियाँ, उपन्यास :

साहित्यिक संस्मरण

लेव तोलसतोय, श्रीमती तोलसतोया, एन्तोन चेखव, व्लादिमीर कोरोलेंको ग्रादि ग्रपने समकालीन साहित्यकारों पर मैक्सिम गोर्की के सरस, सजीव एवं शिक्षाप्रद संस्मरण जो प्रत्येक साहित्यिक का जीवित चित्र नेत्रों के सामने प्रस्तुत कर देते हैं। हिन्दी में पहली बार ग्रनूदित। ग्राकर्षक तिरंगा ग्रावरण।

पृ० सं० : २२० ● मूल्य : ३.५०

तलछट

[नाटक]

गोर्की के सर्वप्रसिद्ध नाटक 'लोग्रर डेप्थ्स' का ग्रनुवाद। इस नाटक को विदेशों में ग्रनेक बार खेला जा चुका था, किन्तु हिन्दी में यह ग्रभी तक उपलब्ध नहीं था। ग्रनुवाद करते समय रंगमंच की समस्याग्रों को ध्यान में रखा गया है, ग्रस्तु, भाषा ग्रत्यन्त सरल ग्रौर सुबोध है। यह नाटक देहातों में भी खेला जा सकता है।

पृ० सं० : ११६ ● मूल्य : २.००

कुप्रीन की कहानियाँ

रूस के महान् मानवतावादी लेखक ग्रलेक्जेंडर कुप्रीन की ग्राठ छोटी-बड़ी कहानियों का ग्रनूठा संग्रह। कल्पना, हैदराबाद, के शब्दों में : 'हिन्दी के पाठकों के लिए उनका ग्रनुवाद प्रस्तुत करने के लिए प्रकाशक बधाई के पात्र हैं!" ये कहानियाँ भी लगभग उतनी ही लोकप्रिय होंगी जितनी 'गाड़ी वालों का कटरा' पुस्तक हुई। पचरंगा ग्रावरण, स्वयं में एक ग्राकर्षण है।

पृ० सं० : ३८३ ● मूल्य : ६.५०

नेकी ग्रौर बदी
तथा
ग्रन्य कहानियाँ

विश्व के व्यंग्य-लेखकों में साल्तीकोव शेद्रीन का ग्रक्षुण्ण स्थान है। प्रस्तुत संग्रह में उनकी १६ चुटीली कहानियाँ संग्रहीत हैं, 'नेकी ग्रौर बदी', 'दो बड़े ग्रफसर', 'कपटी ग्रखबारिया', 'सत्य की खोज में' ग्रादि विश्वप्रसिद्ध कहानियाँ हैं। जगह-जगह मनोरंजक चित्रों ग्रौर ग्राकर्षक ग्रावरण ने पुस्तक की लोकप्रियता बढ़ा दी है।

पृ० सं० : १८८ ● मूल्य : ४.००

इक्कीस रूसी कहानियाँ

हिन्दू, मद्रास, के शब्दों में : "इसमें क्रान्ति से पूर्व के तथा ग्राधुनिक सभी प्रमुख लेखकों की कहानियाँ संग्रहीत हैं जो रूसी साहित्य की विकास-धारा की ग्रद्भुत परिचायक हैं। वे सभी लेखक इसमें मौजूद हैं जिन्होंने साहित्य संसार में ग्रपना ग्रमिट स्थान बना लिया है, ग्रौर कुछ तो ग्रपनी श्रेष्ठतम रचनाग्रों के साथ। ग्रनुवाद की भाषा ग्रत्यन्त उत्कृष्ट कोटि की है।"

पृ० सं० : २८४ ● मूल्य : ५.००

पराजय

[उपन्यास]

पहाड़ियों पर चढ़ता, घने जंगलों ग्रौर दलदली खाइयों को पार करता छापेमारों का एक दस्ता शत्रुग्रों की घेरेबन्दी को चीरकर ग्रद्भुत गति से ग्रागे बढ़ता है, किन्तु एक साथी की गद्दारी के कारण ग्रन्त में केवल १६ छापेमार बचते हैं। इस पराजय के बाद भी उस उद्देश्य की हार नहीं हुई जिसके लिए ये छापेमार शहीद हुए।

इस उपन्यास ने ही फादेयेव को विश्व-विख्यात किया।

पृ० सं० : २०६ ● मूल्य : ४.००

दास्तान-ए-नसरुद्दीन

[उपन्यास]

ग्रमृत पत्रिका, इलाहाबाद के शब्दों में : "उपन्यास की टेकनीक ग्रौर भाषा के क्या कहने! इसमें 'ग्रलिफ लैला' ग्रौर 'भूतनाथ' का मज़ा ग्रा जाता है। पाठक उपन्यास को छोड़ नहीं सकता, वह ग्रन्त तक पढ़ते जाने के लिए विवश हो जाता है। उपन्यास समाप्त होने पर उसे राहत मिलती है, सन्तोष होता है, गर्व होता है····!"

पृ० सं० : २१६ ● मूल्य : ५०.०

: प्रत्येक पुस्तक का डाकखर्च ग्रलग :

पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस (प्राइवेट) लिमिटेड

एम० एम० रोड, नई दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे सितम्बर मास के

प्रकाशन

१. पुस्तक-वर्गीकरण-कला

श्री द्वारकाप्रसाद शास्त्री

पुस्तकाध्यक्ष : हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन

प्रस्तुत पुस्तक लेखक की पुस्तकालय-विज्ञान पर चौथी कृति है। इसमें पुस्तकालयों की वर्गीकरण पद्धति पर प्रकाश डाला गया है। प्रत्येक पुस्तकालय के लिए संग्रहणीय।

मूल्य : ५·०० रुपया

२. माध्यम में

डॉ० शम्भूनाथ सिंह

छायावादी कवि डॉ० शम्भूनाथ सिंह की नवीनतम कविताओं का संकलन।

मूल्य : २ रुपया ७५ नये पैसे

३. अतृप्त

साहित्याचार्य 'मग'

वासनाओं से अभिभूत एक ऐसे मानव की जीवनी, जो विषयानुरक्त होकर एक स्त्री के सौन्दर्य-दीप की लपट में जलकर राख हो गया।

मूल्य : ४ रुपया ७५ नये पैसे

४. भारत के नृत्य—'कथकली'

५. भारत की शिल्पकथाएँ—'भरहुत'

जगदीशचन्द्र

'कथकली' नृत्य और 'भरहुत' की शिल्पकथा का नवीन शैली में रोचक वर्णन, किशोर-साहित्य में 'प्रचारक' का साहसपूर्ण प्रयास। नयनाभिराम कवर, आर्ट-पेपर पर मुद्रित, अलभ्य चित्रों से युक्त प्रत्येक पुस्तक का

मूल्य : १ रुपया २५ नये पैसे

स्थानीय विक्रेताओं से प्राप्त कीजिये अथवा लिखिये—

हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय

पो० बाक्स नं० ७०, ज्ञानवापी, वाराणसी-१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रेणियाँ अपनाएँ कि पुस्तकों पर केवल साढ़े बारह प्रतिशत निश्चित कमीशन से अधिक की माँग न की जाय। इसे निर्धारित सरकारी कमीशन-दर माना जाय और फिर, पुस्तकें खरीदते समय चुन-चुनकर अच्छी-से-अच्छी पुस्तकें इस कमीशन पर खरीदी जायँ, क्योंकि सभी विषयों का उच्चकोटि का साहित्य इस कमीशन पर ही प्राप्य है। आर्डर उस पुस्तक-विक्रेता को दिया जाय जिसकी कार्य-क्षमता, साख, व्यवहार और योग्यता आदि अधिक विश्वसनीय हों, अथवा जहाँ से पुस्तकें लेना अधिक सुविधाजनक हो।

५. डाक दरों में कमी हो—पुस्तकों के व्यापक प्रचार और विकास के लिए यह आवश्यक है कि देश के कोने-कोने से, सुदूर देहातों से भी, पुस्तक-प्रेमी पाठक पत्र लिखकर, घर बैठे अपनी पसन्द की पुस्तकें डाक द्वारा मँगा सकें। परन्तु यह तभी सम्भव है यदि डाक के रेट बहुत कम हों। सभी सभ्य देशों में पुस्तकों के लिए डाक-दर विशेष रियायती रखी जाती हैं; क्योंकि पुस्तकें राष्ट्र को शिक्षित, सुसंस्कृत बनाने का प्रमुख माध्यम हैं। परन्तु, हमारे देश में डाक-दरें इतनी बढ़ी हुई हैं कि एक रुपये की पुस्तकें वी० पी० से मँगाने पर साढ़े चौदह आने डाक-व्यय पाठक को देना पड़ जाता है। क्या यह स्थिति चिन्तनीय नहीं ? पुस्तकों की डाक-दर के विषय में सरकार को कोरा व्यावसायिक दृष्टिकोण नहीं रखना चाहिए। जहाँ साक्षरता आन्दोलन पर करोड़ों रुपये खर्च किये जाते हैं, वहाँ केवल कुछ लाख रुपये की हानि से, केवल पुस्तकों पर डाक-दरें घटाकर, पुस्तकों के प्रचार को बहुत बढ़ावा दिया जा सकता है।

६. नेशनल बुक लीग—पुस्तकों को सामाजिक जीवन का एक अंग बनाने के लिए और जनता में पुस्तकें पढ़ने की रुचि डालने और उसे बढ़ावा देने के लिए, एक व्यापक आन्दोलन की आवश्यकता है जिसमें सरकार, प्रकाशक, लेखक और देश व समाज के कर्णधार मिलकर काम करें। इस आन्दोलन का रूप इंगलैंड की 'नेशनल बुक लीग' के सदृश होना चाहिए। यह आन्दोलन सर्वथा सांस्कृतिक आधार पर चलाया जाना चाहिए।

७. प्रकाशकों के लिए सरकारी पुरस्कार—अच्छे लेखकों के लिए सरकार की ओर से पुरस्कार हैं, अच्छा छपाई करने वाले मुद्रकों को भी प्रतिवर्ष पुरस्कार दिए जाते हैं और उन्हें सम्मानित किया जाता है, परन्तु अच्छी पुस्तकों के प्रकाशकों के लिए कभी किसी ने पुरस्कार अथवा प्रोत्साहन देने की आवश्यकता नहीं समझी। पुरस्कार-प्रणाली में पुरस्कृत पुस्तकों के प्रकाशकों को भी उनका उचित स्थान एवं श्रेय दिया जाना चाहिए। कहा जा सकता है कि प्रकाशकों से, पुरस्कृत पुस्तकों की इकट्ठी प्रतियाँ खरीदी जाती हैं, वह क्या प्रोत्साहन नहीं है ? वास्तविक स्थिति यह है कि केवल केन्द्रीय सरकार नव-साक्षर और बाल-साहित्य-प्रतियोगिता में पुरस्कृत पुस्तकों की १५०० तथा २००० प्रतियाँ खरीदती है, वह भी २५ प्रतिशत कमीशन पर। प्रायः ऐसी पुस्तकों का मूल्य लगभग ५० नये पैसे होता है। २५ प्रतिशत कमीशन काटने पर १५०० प्रतियों का मूल्य ५६२ रु० ५० नये पैसे होता है, जिस पर प्रकाशक का लाभांश ५६ रुपये से अधिक नहीं है। क्या यह लाभ प्रकाशक के लिए कोई उचित प्रोत्साहन है ? अन्य किसी भी पुरस्कार के समय पुरस्कृत पुस्तक की प्रतियाँ नहीं खरीदी जातीं—न उत्तर प्रदेश में, न मध्य प्रदेश में, न साहित्य अकादमी द्वारा।

होना यह चाहिए कि लेखकों की भाँति प्रकाशकों को भी नकद पुरस्कार दिये जायँ ताकि नये-पुराने लेखकों की उत्कृष्ट परन्तु संदिग्ध मार्केट वेल्यू की पुस्तकों के प्रकाशन में सम्भावित हानि की चिन्ता से मुक्त होकर, प्रकाशक नये प्रतिभाशाली लेखकों को प्रकाश में ला सकें और उत्कृष्ट साहित्य से हिन्दी की श्रीवृद्धि हो। इस समय तो यह स्थिति है कि प्रकाशक को इस योग्य भी नहीं समझा जाता कि पुरस्कृत पुस्तक के प्रकाशन में उसने जो श्रम और साधना की, उसके फलस्वरूप उसे प्रशंसा के दो शब्द ही दिये जायँ। प्रकाशक का नाम भी पुरस्कार-घोषणा में नहीं दिया जाता। काश, अब तो लोग साहित्य-सृजन में प्रकाशक के कार्य को उसकी उचित पृष्ठभूमि में देखते और उसे उसका यथोचित सम्मान देते ! पाण्डुलिपि को चित्रण, मुद्रण, संशोधन आदि की अनेक सीढ़ियों से गुजारकर एक सुरुचिपूर्ण पुस्तक के रूप में प्रकाशित कर पाना केवल-मात्र यान्त्रिक क्रिया नहीं है, उसके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पीछे प्रकाशक की अनवरत साधना होती है। इसे वे लेखक अवश्य समझते हैं जिन्हें अच्छे प्रकाशकों को निकट सम्पर्क से देखने का अवसर मिला हो। प्रकाशक के हाथों पाण्डुलिपि का मानो एक दूसरा जन्म होता है। लेखक को उसका उचित स्थान अवश्य मिले, परन्तु साथ ही प्रकाशक को भी उसका उचित स्थान और सम्मान मिलना ही चाहिए। तभी, साहित्य की सर्वतोमुखी उन्नति होगी।

भारत सरकार ने इस वर्ष से उत्कृष्ट फिल्मों के निर्माता को २५,००० रु० नकद पुरस्कार देने की घोषणा की है। फिल्म-निर्माता, फिल्म का कहानी-लेखक, कवि या संगीतकार नहीं होता, बल्कि प्रकाशक की भाँति वह संयोजक होता है—उस सारी प्रक्रिया का जिससे फिल्म प्रकाश में आती है। उसे नक़द पुरस्कार सरकार ने इस सिद्धान्त पर देना स्वीकार किया है कि उत्कृष्ट फिल्मों के सृजन में जो अधिक हानि की सम्भावना रहती है, उसका एक सीमा तक निराकरण इस नकद पुरस्कार से हो जाय और फिल्म-निर्माता अच्छी फिल्मों के सृजन में पूरे मनोयोग से जुट सकें। यही सिद्धान्त प्रकाशन-क्षेत्र के लिए भी क्यों न अपनाया जाय और प्रकाशकों के लिए नकद पुरस्कारों की व्यवस्था की जाय ताकि वे निश्चिन्त होकर विभिन्न विषयों की नये-पुराने लेखकों की उत्कृष्ट कृतियों को प्रकाश में लाने में अग्रसर हों।

इस सम्बन्ध में कुछ सुझाव निम्नलिखित हैं—

१—विभिन्न विषयों के उत्कृष्ट प्रकाशनों पर, प्रकाशकों के लिए नकद पुरस्कार तथा प्रमाण-पत्र देने की, सरकार की ओर से परम्परा स्थापित की जाय। ऐसे पुरस्कार की राशि, लेखक को दिये जाने वाले पुरस्कार से कम नहीं होनी चाहिए। यदि नकद पुरस्कारों की स्थापना में कुछ अधिक समय लग जाने की सम्भावना हो तो सुवर्ण व रजत-पदक और प्रमाण-पत्र देने की परिपाटी तो इसी वर्ष से आरम्भ की जा सकती है।

२—प्रत्येक पुरस्कृत पुस्तक, चाहे वह केन्द्रीय सरकार, किसी राज्य सरकार अथवा किसी अन्य सरकारी मान्यता-प्राप्त संस्था द्वारा पुरस्कृत हो, पुरस्कार की घोषणा के दिन से देश के सभी शिक्षा-विभागों द्वारा लाइब्रेरियों के लिए स्वतः स्वीकृत पुस्तक मान ली जाय।

३—प्रत्येक पुरस्कृत पुस्तक की कम-से-कम एक निश्चित संख्या में कुछ प्रतियाँ अवश्य खरीदी जायँ। ऐसे अनेक उदाहरण हैं कि लेखक को १००० या २२०० रुपये का पुरस्कार प्राप्त हो जाने पर भी, पुरस्कृत पुस्तक की दो-तीन सौ पुस्तकें भी, प्रकाशक नहीं बेच पाता। यदि पुस्तक अच्छी है और उस पर लेखक को पुरस्कार दिया जा सकता है तो निश्चय ही राज्य द्वारा अपनी सभी लाइब्रेरियों और शिक्षण-संस्थाओं के लिए उस पुस्तक की एक-एक प्रति देने की व्यवस्था करना सर्वथा उचित होगा। अभी हमारे देश में पुस्तकों के प्रति यह जागरुकता नहीं कि पुरस्कार की घोषणा पढ़कर लाइब्रेरियां या पाठक उस पुस्तक को खरीदने के लिए उत्सुक हों।

४—नये लेखक की सर्वप्रथम प्रकाशित कृति यदि पुरस्कृत हो तो उस पर उसके प्रकाशक को विशेष पुरस्कार दिया जाय, क्योंकि उसने साहित्य-आकाश में एक नये नक्षत्र को प्रकाशित किया। प्रकाशकों को इस विशेष पुरस्कार से नई प्रतिभा को ढूँढ़ने और प्रकाश में लाने के लिए उचित प्रोत्साहन मिलेगा। न जाने कितने प्रेमचन्द, रवीन्द्र और निराला इस देश की मिट्टी में विद्यमान हैं। ठीक अवसर, परिस्थितियों और प्रोत्साहन से ये बीज कब अंकुर बनकर फूट पड़ें और इन नवकुसुमित पुष्पों से हमारे देश का साहित्य-उद्यान लहलहा उठे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाण्डुलिपियों का चुनाव और लेखकों से अनुबन्ध

देवराज

प्रकाशन व पुस्तक-व्यवसाय सेमिनार में पढ़ी गई यह पहली वार्ता प्रस्तुत विषय पर पर्याप्त सन्तुलित दृष्टिकोण से प्रस्तुत की गई है।

विद्वानों व बुद्धिजीवियों की सभा में निःसंकोच प्रवेश पाने वाले प्रकाशक से चिन्तन, मनन और अध्ययन की योग्यता के साथ-साथ जो व्यवसाय-बुद्धि अपेक्षित है उसके आधार पर यह आशा करना स्वाभाविक ही है कि प्राप्य पूँजी की पृष्ठभूमि में वह अपनी क्षमताओं का अनुमान करके इस व्यवसाय में अपनी सीमाओं का निर्माण कर लेगा। किन्तु दुर्भाग्यवश हिन्दी पुस्तक-प्रकाशक अब तक इस आशा की पूर्ति में असमर्थ रहे हैं। कारण कदाचित् यह है कि प्रकाशन-व्यवसाय जैसे विस्तृत क्षेत्र का पहले से अनुमान लगा लेना किसी भी नवागंतुक के लिए सर्वथा असम्भव है। उपन्यास-कहानी-नाटक भी इसके अंग हैं और पहली श्रेणी में पढ़ाए जाने वाला कायदा भी। विज्ञान, बाल-साहित्य, मनोविज्ञान, गणित-शास्त्र, साहित्यालोचन, संस्, चिकित्सा-शास्त्र, चित्र-कला, इतिहास, संगीत, कानून, जीव-विज्ञान, स्थापत्य-कला, अध्यात्म, ज्योतिष-शास्त्र, स्वास्थ्य, अर्थशास्त्र, इंडस्ट्रियल व टैकनिकल साहित्य इस विशाल क्षेत्र के थोड़े से विभाग हैं। उपविभागों की संख्या हज़ारों तक पहुँचती है। किसी भी प्रकाशक के लिए, भले ही वह कितनी भी बड़ी पूँजी का स्वामी हो, प्रत्येक प्रकाशन-क्षेत्र में प्रवेश असम्भव है। हिन्दी-प्रकाशक प्रायः लंगर उठा लेने के बाद ही वायु-प्रवाह देखते हुए दिशा का निर्णय करते हैं। यह ठीक है कि बिना अग्रिम योजना के भी यह दिशा-निर्धारण हो ही जाता है, किन्तु यह प्रकाशक की अपनी रुचि या स्वेच्छा से नहीं बल्कि परिस्थितियों के दबाव से होता है और भविष्य की दीर्घकालीन योजनाओं में बाधक सिद्ध हो सकता है।

प्रकाशक का कार्य-क्षेत्र

किसी भी प्रकाशक के कार्य-क्षेत्र का विस्तार उसकी पूँजी की मात्रा पर निर्भर करता है। थोड़ी पूँजी में (प्रकाशन-कार्य के लिए बीस पच्चीस हज़ार रुपये तक 'थोड़ी पूँजी' ही कही जायगी) सम्भवतः उसे केवल उपन्यासों या किसी अन्य एकमात्र विषय के प्रकाशन तक अपनी सक्रियता को सीमित रखना होगा। अनुभव से देखा गया है कि साधारण पुस्तकों के प्रकाशन में औसतन (छोटी-बड़ी पुस्तकों को मिलाकर) प्रति पुस्तक ढाई हज़ार रुपये लागत आती है। परिणामस्वरूप प्रतिवर्ष एक लाख रुपये प्रकाशन में लगाने की क्षमता रखने वाला प्रकाशक भी अधिक-से-अधिक ४० साधारण नई पुस्तकें ही प्रकाशित कर सकता है, यद्यपि पुनर्मुद्रण की आवश्यकताओं को देखते हुए यह संख्या ३० से अधिक नहीं रह जाती। इस प्रकार यदि किसी भी विषय में अपनी सक्रियता बनाए रखने के लिए कम-से-कम ६ साधारण आकार की पुस्तकें प्रतिवर्ष प्रकाशित करे तो वह अपने कार्य-क्षेत्र के लिए अधिक-से-अधिक ५ विषय चुन सकता है। यह भी तब ही सम्भव है जब कि उसका झुकाव केवल ललित साहित्य की ओर हो, क्योंकि अन्य वैज्ञानिक विषयों या वास्तविक शोध-ग्रन्थों पर लागत इतनी अधिक रहती है कि इतनी लागत-क्षमता में एक से अधिक विषय का चुनाव असम्भव है। प्रकाशक की सफलता तथा उसके उद्देश्य की प्राप्ति अन्ततः एक निर्दिष्ट क्षेत्र में उसकी सक्रियता पर निर्भर करती है, न कि एक विशालतर क्षेत्र में उसके अनियन्त्रित प्रयास पर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तकालयों के लिए

अनुपम भेंट

१.	वाह रे आंसू : शुकदेवसिंह 'सौरभ'	७·००
२.	स्वयं सिद्धा : मणिलाल वन्द्योपाध्याय	३·५०
३.	गोरा : रवीन्द्रनाथ टैगोर	६·००
४.	रूस की सर्वश्रेष्ठ कहानियां : अनु० बलभद्र ठाकुर	२·५०
५.	निराश प्रणयी : पुश्किन	२·००
६.	नैतिक जीवन : रघुनाथप्रसाद पाठक	२·५०
७.	विश्व शान्ति का सन्देश : स्वामी विवेकानन्द	२·५०
८.	कर्म योग : " "	२·००
९.	भक्ति योग : " "	२·००
१०.	भक्ति और वेदान्त : " "	२·००
११.	आगे बढ़ो : स्वेट मार्डन	१·५०
१२.	सफलता की कुञ्जी : स्वामी रामतीर्थ	१·००
१३.	उपनिषदों की कथाएँ : हिमांशु श्रीवास्तव	१·२५
१४.	चरित्र निर्माण की कथाएँ : " "	१·२५
१५.	विद्यार्थी जीवन : महात्मा नारायण स्वामी	१·५०
१६.	भारतीय शिष्टाचार : सन्तराम वत्स्य	०·७५
१७.	देश-देश की लोक-कथाएँ : " "	०·७५
१८.	झलकियाँ : जगन्नाथ शर्मा	०·७५
१९.	जातक कथाएं : " "	०·७५

नोटः—सभी पुस्तकों के नवीनतम संस्करण प्राप्य हैं।

प्रकाशक

सन्मार्ग प्रकाशन

लाजपत राय मार्केट, दिल्ली

प्रकाशक के लिए अपने कार्य-क्षेत्र का निर्णय जितना सुगम हो सकता है, उसका पालन शायद उतना ही कठिन। उदाहरणार्थ यद्यपि उसने केवल बाल-साहित्य प्रकाशित करने का निर्णय किया है तो भी उसे एक अच्छे उपन्यास की पाण्डुलिपि, जो अनायास ही उसके हाथ में आ गई हो, लौटाने में संकोच स्वाभाविक होगा। किन्तु ऐसी प्रत्येक स्थिति में उसके लिए कदाचित् संयम का उपदेश ही लाभदायक रहेगा, क्योंकि अपने क्षेत्र से बाहर का कोई भी एकाकी प्रयास, चाहे वह कितना भी महत्त्वपूर्ण क्यों न हो, उसकी अपनी संस्था का आधार सुदृढ़ और सुस्पष्ट करने के पिछले प्रयत्नों को क्षीण करने की ओर गतिशील होता है। वास्तव में यदि प्रकाशक की सब आर्थिक कठिनाइयों का मूल उसके कार्य-क्षेत्र की त्रुटिपूर्ण कल्पना व परिचालन को मान लिया जाय तो विशेष अत्युक्ति न होगी।

पाठ्य-पुस्तकों का उल्लेख इस सन्दर्भ में अनायास ही नहीं छूट गया है। भारत की विशिष्ट परिस्थितियों के दबाव के कारण, या हमारे चरित्र की आधारभूत दुर्बलताओं के कारण, आज पाठ्य-पुस्तकों का प्रकाशन उत्कृष्ट गौरव-प्रद प्रकाशन-क्षेत्र न रहकर, एक साधारण ही नहीं बल्कि निम्न स्तर का व्यवसाय-मात्र रह गया है, जिसका वास्तविक पुस्तक-प्रकाशन से तनिक भी सम्बन्ध नहीं। प्रकाशन-व्यवसाय की जिन समस्याओं का अध्ययन इस लेख में किया गया है कदाचित् ही उनमें से किसी का सम्बन्ध पाठ्य-पुस्तकों के प्रकाशन से हो।

राज्यीय, केन्द्रीय अथवा विदेशी सरकारों या संस्थाओं द्वारा अनुदान-प्राप्त पुस्तकों के प्रकाशन की समस्याएँ भी इस लेख की सीमा से परे हैं, क्योंकि प्रकाशन का ध्येय भिन्न होने के कारण इनकी साधारण पुस्तक-प्रकाशन की समस्याओं से संगति नहीं बैठती।

प्रकाशन-कार्यक्रम

अन्य किसी भी व्यवसाय की परम्पराओं के विपरीत प्रकाशन-व्यवसाय में वर्षों के सफल संचालन के बाद भी प्रकाशक से प्रतिक्षण पूर्ण सतर्कता अपेक्षित है। इस सृजनात्मक व्यवसाय में विभिन्न प्रकार के प्रभाव—सशक्त तथा अन्य—प्रकाशक की सम्पूर्ण पूर्व-निर्धारित योजनाओं को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विचलित कर देने की क्षमता रखते हैं। इसी कारण प्रत्येक प्रकाशक के लिए प्रतिवर्ष अपने प्रकाशन-कार्यक्रम की रूप-रेखा पहले से तैयार कर लेना लाभप्रद होता है। पिछले वर्षों के अनुभव के आधार पर प्रकाशक को किसी वर्ष के लिए अपनी बिक्री व प्रकाशन-क्षमता का सही अनुमान कर लेना कठिन नहीं है। मान लीजिए कि अपने अनुमान से वह आगामी वर्ष में एक लाख रुपये पुस्तक-प्रकाशन में लगाने की स्थिति में होगा। उसके लिए कार्यक्षेत्र के विभिन्न विभागों में इस लागत-क्षमता को निम्न प्रकार बांट लेना उचित है :

पुनर्मुद्रण	रु० २०,०००
कथा-साहित्य	रु० २०,०००
प्रौढ़-साहित्य	रु० १०,०००
वैज्ञानिक व इण्डस्ट्रियल साहित्य	रु० २५,०००
आलोचना तथा छात्रोपयोगी साहित्य	रु० २०,०००
अनिर्दिष्ट	रु० ५,०००
कुल योग	रु० १,००,०००

इस प्रकार पूरे कार्य-क्षेत्र में अपनी क्षमता का पहले से विभाजन कर लेने से अनेक लाभ हैं। इससे प्रकाशक के व्यवसाय में एक सुनियन्त्रित योजना का जन्म तो होगा ही, परिस्थितियों के अवांछित दबाव से रक्षा का साधन भी उसे प्राप्त होगा। एक बड़ा लाभ यह भी होगा कि कार्य-व्यस्तता में भी उसके कार्य-क्षेत्र का प्रत्येक गौण विभाग उसकी योजना से लाभान्वित होगा। यह लाभ थोड़ी पूँजी वाले प्रकाशक को अपेक्षाकृत अधिक होगा, इसमें सन्देह नहीं।

विभिन्न प्रकाशन-क्षेत्रों के लिए प्राप्य पूँजी का वर्ष-भर के लिए विभाजन कर लेने के बाद प्रकाशक का कार्य सुगम हो जाता है। उसे अपने पास पड़ी हुई पाण्डुलिपियों का अवलोकन करके और अन्य वचनबद्ध अपेक्षित पाण्डुलिपियों का हिसाब देखकर यह जान लेना कठिन नहीं है कि आगामी वर्ष के लिए उसे कितने लागत-मूल्य की नयी पाण्डुलिपियों का प्रबन्ध किसी विषय-विशेष के लिए करना है। और यहीं से उसकी उत्कृष्ट पाण्डुलिपियों की खोज प्रारम्भ होती है।

उत्कृष्ट पाण्डुलिपियाँ कहाँ हैं ?

ऐसी पुस्तकों का अन्वेषण, जो आलोचकों व अपने

सौन्दर्य और प्रकृति के सहज कवि

श्री सुमित्रानन्दन पंत

की काव्य-कृतियों का प्रकाशन

•

अतिमा

कवि की इसी शीर्षक की पुस्तक का दूसरा संस्करण, नई रूप-सज्जा के साथ। मूल्य ४ रुपये मात्र। २५ अक्तूबर तक प्रकाशित हो जायगा।

•

पल्लव

दूसरा संस्करण अक्तूबर के अन्त तक प्रकाशित होगा।

•

चिदम्बरा

पंतजी की २० वर्ष की कविताओं में से कवि द्वारा स्वयं चुनी हुई श्रेष्ठतम कविताओं का संकलन। नवम्बर के अन्त तक यह संकलन प्रकाशित हो जायगा।

•

राजकमल प्रकाशन

दिल्ली, बम्बई, इलाहाबाद, पटना, मद्रास

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषय के प्रबुद्ध पाठकों द्वारा उत्कृष्ट मानी जायँ और जिनकी बिक्री की सम्भावनाएँ आशाप्रद हों, प्रत्येक प्रकाशक का प्रमुख व्यापार है। फिर भी हिन्दी प्रकाशन-क्षेत्र में ऐसे बहुत कम प्रकाशक हैं जो इस दिशा में सतत जागरूक हों। हिन्दी के अधिकांश प्रकाशक लेखकों से स्वयं सम्पर्क स्थापित करने के बजाय, उनके द्वारा स्वेच्छा से भेजी गई पाण्डुलिपियों में से ही अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति कर लेते हैं। स्पष्टतः चुनाव का क्षेत्र सीमित हो जाने से इन पाण्डुलिपियों का स्तर गिरेगा ही, यद्यपि इस तरह से प्राप्त की गई कुछ पुस्तकें अन्य किसी भी पुस्तक के समक्ष सगौरव रखी जा सकती हैं। भारत में 'साहित्यिक प्रतिनिधि' जैसी संस्था के अभाव में किसी भी प्रकाशक के लिए उचित यही है कि वह अपने प्रकाशन-क्षेत्र से संबंधित लेखकों, विशेषज्ञों व प्राध्यापकों से सम्पर्क बनाए रखे, जिससे यथासमय उसे वाञ्छित पाण्डुलिपियाँ प्राप्त हो जायँ, चाहे वे उसकी अपनी योजनानुसार तैयार की गई हों या उसकी प्रकाशन-योजना में अन्यथा खप जाती हों। साथ-ही-साथ पत्र-व्यवहार द्वारा तरुण लेखकों से उत्कृष्ट पाण्डुलिपियाँ खोज निकालने का प्रयास तो आवश्यक है ही।

ललित साहित्य की उत्कृष्ट पाण्डुलिपियों के लिए अपेक्षया उतनी दौड़-धूप की आवश्यकता नहीं रहती जितनी अन्य गम्भीर वैज्ञानिक पुस्तकों और शोध-ग्रन्थों के लिए। विषय जितना ही जटिल होगा उसके विशेषज्ञ उतने ही कम मिलेंगे, और उनकी व्यस्तताओं में उनसे पुस्तक रूप में कुछ लिखा लेना उतना ही दुःसाध्य होगा। फिर भी यह शाश्वत सत्य कि 'उद्यम और सतत प्रयास सफलता के मार्ग का स्वतः निर्माण करते हैं' प्रकाशन-क्षेत्र पर कहीं अधिक सुगमता से चरितार्थ होता है। लिपिक, सम्बन्धित साहित्य व अन्य ईप्सित सहायता मिल जाने पर लगभग कोई भी विशेषज्ञ अपना ज्ञान लिपिबद्ध करना स्वीकार कर लेगा। अनुभव-वृद्धि के साथ प्रत्येक प्रकाशक का अपने क्षेत्र से सम्बन्धित विशेषज्ञों से परिचय भी बढ़ता है और उनसे कोई पुस्तक लिखवाने में सफल होकर उसे आर्थिक लाभ भी होता है एवं साहित्य की श्रीवृद्धि का श्रेय भी प्राप्त होता है। एक सक्रिय प्रकाशक और सुगमता से प्राप्य पाण्डुलिपियों पर सन्तोष कर लेने वाले प्रकाशक का यह अन्तर उनकी प्रकाशन-सूची के माध्यम से प्रत्येक पाठक पर स्पष्ट अंकित होता रहता है।

यहाँ लेखकों से—विशेषकर ललित साहित्य के लेखकों से—पत्र-व्यवहार करने के विषय में कुछ कह देना भी अत्यन्त आवश्यक है। उनकी संवेदनशीलता और जागृत अहं, प्रकाशक पर अविश्वास और स्वभावगत अव्यावहारिकता, किसी भी प्रकाशक को व्यवहार में अधिक सतर्क रहने पर बाध्य करते हैं। इस दिशा में पत्र-व्यवहार तथा अन्य किसी भी प्रकार के आदान-प्रदान में स्पष्टता रखना ही एकमात्र ऐसा उपाय है जिससे न केवल लेखकों से भविष्य में पैदा होने वाली ग़लतफ़हमियों से दूर रहा जा सकता है, अपितु सम्बन्धों को अधिक मधुर व चिरस्थायी भी बनाया जा सकता है। व्यवहृत शब्दों व वाक्यों से प्रकाशक का आशय पूर्णतया स्पष्ट हो जाना चाहिए। संकोचवश या भूलवश कथनीय का शेष रह जाना शंकामय स्थितियों को जन्म दे सकता है।

पाण्डुलिपि का आगमन

प्रत्येक पाण्डुलिपि की प्राप्ति, चाहे वह किसी लेखक द्वारा स्वयं अवलोकनार्थ भेजी गई हो, पत्र-व्यवहार द्वारा मँगवाई गई हो, या अपनी योजनानुसार लिखवाई गई हो, प्रकाशक के लिए महत्त्वपूर्ण घटना है, क्योंकि इसमें उसकी सफलता व लाभ बीज रूप में विद्यमान रहते हैं। पाण्डुलिपि के साथ बहुधा लेखक आत्म-श्लाघा एवं पुस्तक की असीमित सम्भावनाओं से सम्बन्धित 'दो शब्द' मौखिक या लिखित रूप में प्रकाशक तक पहुँचा देना आवश्यक समझता है, जिसकी सूचना के बिना, उसके विचार में, व्यवसायी प्रकाशक उसकी कृति से न्याय न कर पाएगा। यथार्थदर्शी प्रकाशक के लिए अतिरंजित व असंगत अभिव्यक्ति की उपेक्षा करके अपना ध्यान पाण्डुलिपि के वस्तुगत मूल्यांकन पर केन्द्रित करने के अतिरिक्त दूसरा मार्ग नहीं है।

पाण्डुलिपि टाइप की हुई भी हो सकती है और हस्तलिखित भी। इधर लेखकों में उन्हें टाइप कर लेने अथवा करवा लेने का चलन बढ़ रहा है, फिर भी प्रकाशक के पास अधिकतर हस्तलिखित पाण्डुलिपियां ही पहुँचती हैं। पाण्डुलिपि की रूप-सज्जा देखकर उसके गुण-दोषों का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तकालयों के लिए संग्रह करने योग्य पुस्तकें

ऋतम्भरा :	डॉ० सुनीतिकुमार चाटुर्ज्या	३·५०
मेरी कालिज डायरी :	डॉ० धीरेन्द्र वर्मा	१·५०
भारतीय साहित्य की सांस्कृतिक रेखाएं :	श्री परशुराम चतुर्वेदी	४·००
बौद्ध साहित्य की सांस्कृतिक झलक :	श्री परशुराम चतुर्वेदी	३·५०
मध्यकालीन प्रेम साधना :	श्री परशुराम चतुर्वेदी	३.५०
मध्यकालीन धर्म साधना :	डॉ० हजारीप्रसाद द्विवेदी	४·००
विचार और वितर्क :	डॉ० हजारी प्रसाद द्विवेदी	३·००
साहित्यावलोकन :	डॉ० विनय मोहन शर्मा	३·००
गद्य पथ :	श्री सुमित्रानन्दन पन्त	३·००
दिल की बात :	श्री गुरुदयाल मल्लिक	३·००
प्रकृति और काव्य (संस्कृत) :	डॉ० रघुवंश	६·५०
नयी कविता :	श्री विशम्भर मानव	४·००
लोकगीतों की सामाजिक व्याख्या :	श्री कृष्णदास	४·००
सूरदास और भगवद्भक्ति :	डॉ० मुन्शीराम शर्मा	२·५०
संस्कृति-संगम :	आचार्य क्षितिमोहन सेन	३·००
भारतवर्ष में जाति-भेद :	आचार्य क्षितिमोहन सेन	२·००
शिल्प कथा :	आचार्य नन्दलाल वसु	१·२५
कला और संस्कृति :	डॉ० वासुदेव शरण अग्रवाल	५·००
प्राचीन लोकोत्सव :	श्री मन्मथराय	२·५०
देश-विदेश में मनोरंजन :	श्री मन्मथराय	४·००
सौन्दर्य शास्त्र :	डॉ० हरद्वारी लाल शर्मा	३·००
श्रीमती क्यूरी :	श्री लाल बहादुर शास्त्री	३·५०
चीन का भाग्य :	श्री कृष्ण किंकर सिंह	८·००

साहित्य भवन प्राइवेट लिमिटेड

इलाहाबाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनुमान लगाना असम्भव है, यद्यपि अनुभव के आधार पर प्रत्येक प्रकाशक, जाने या अनजाने, पाण्डुलिपि को देखकर ही एक अर्थपूर्ण धारणा मन में बना लेता है। एक अग्रणी विदेशी प्रकाशक के कथनानुसार 'प्रत्येक साफ-सुथरी, सुन्दर जिल्द में बँधी पाण्डुलिपि देखते ही हमें सतर्क हो जाना चाहिए।' यदि हम इस पुरानी धारणा पर विश्वास करके कि 'योग्य और श्रेष्ठ व्यक्तियों की हस्त-लिपि अस्पष्ट और अपठनीय होती है' प्रत्येक गन्दी पाण्डुलिपि को साफ़ पाण्डुलिपि से अधिक महत्त्व देने लगें या इसके विपरीत केवल साफ-सुथरी पाण्डुलिपियाँ ही अवलोकनार्थ स्वीकार करें तो स्पष्टतः अपने हित में अनेक गलत निर्णय कर बैठेंगे। पाण्डुलिपि तैयार करने व भेजने के ढंग से हम लेखक की योग्यता से अधिक उसके स्वभाव का अनुमान कर सकते हैं। प्रकाशन के विषय में निर्णय तो हमें पाण्डुलिपि की उचित जाँच-पड़ताल के बाद ही करना होगा।

सर स्टैनले अनविन ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'ट्रुथ एबाउट पब्लिशिंग' में परामर्श दिया है कि पाण्डुलिपि का परीक्षण आरम्भ करने से पहले प्रकाशक को चाहिए कि उसका विवरण—लेखक का नाम व पता, विषय, प्राप्ति की तिथि, लेखक द्वारा विशेष आदेश आदि—एक रजिस्टर में चढ़ा ले और उसके आगे पाण्डुलिपि की गतिविधि का रिकार्ड रखने के लिए उस 'रीडर' का नाम लिख ले जिसे पाण्डुलिपि पढ़ने व राय देने के लिए दी गई है। उनके विचार में इस प्रकार पाण्डुलिपि खो जाने का भय न रहेगा। यद्यपि अधिकतर भारतीय प्रकाशकों के सम्मुख पाण्डुलिपियों का आवागमन कम होने के कारण उनके खो जाने की समस्या नहीं उठती, फिर भी भविष्य में कार्य-विस्तार की आकांक्षा रखने वाले प्रत्येक प्रकाशक के लिए यह सुझाव उपयोगी हो सकता है। इससे न केवल अपना रिकार्ड सही रखने में उसे सहायता मिलेगी बल्कि कुछ और शीर्षक जोड़ देने पर यही रजिस्टर भविष्य में तट-स्थित पाण्डुलिपियों के विषय में निर्णय लेने के लिए स्थूल आधार भी प्रदान करेगा। इन शीर्षकों में परामर्शदाता की रिपोर्ट का सारांश, प्रकाशक का निर्णय व प्रकाशित पुस्तकों की प्रथम छः मास तथा एक वर्ष में बिक्री की संख्या समाविष्ट की जा सकती है। उत्तरोत्तर प्रगति करते हुए प्रकाशक के लिए अन्ततः यह एक रजिस्टर ही नहीं वस्तुतः दो रजिस्टर रखने अनिवार्य हो जायँगे—एक पाण्डुलिपियों के लिए, और दूसरा प्रकाशित पुस्तकों के सम्पूर्ण विवरण के लिए।

पाण्डुलिपि का परीक्षण

लेखक की सामाजिक स्थिति, व्यक्तित्व अथवा पूर्वार्जित ख्याति से प्रभावित होकर या प्रचलित विषय देखकर ही पुस्तकों के प्रकाशन का निर्णय कर लेने वाले प्रकाशकों की संख्या पर्याप्त है। भारतीय पुस्तकों का यदि स्वतन्त्र सर्वेक्षण किया जाय तो उसका अधिकांश इसी प्रकार प्रकाशित पाया जायगा। वास्तव में पाण्डुलिपियों का उचित परीक्षण तथा उनकी प्रकाशन-योग्यता के निष्पक्ष निर्णय पर ही प्रकाशक का व्यवसाय और साहित्य की श्रीवृद्धि निर्भर है। यही कारण है कि पुस्तक-व्यवसाय के इस पहलू पर विश्व के मान्य प्रकाशकों की अत्यधिक महत्त्व देने की प्रवृत्ति छोटे या बड़े प्रत्येक प्रकाशक के लिए अनुकरणीय है।

पाण्डुलिपि-परीक्षण की सामान्य पद्धति प्रत्येक पाण्डुलिपि उस विषय के किसी विशेषज्ञ के पास पारिश्रमिक देकर अवलोकनार्थ भेजने की है। ललित साहित्य का निरीक्षण किसी निष्पक्ष आलोचक द्वारा कराया जा सकता है, जो न केवल पुस्तक की प्रकाशन-योग्यता पर अपनी सम्मति प्रदान करेगा, अपितु उसे ध्यान से देखकर उसमें सुधार करने के सुझाव भी देगा। अनुभव से देखा गया है कि इस प्रकार के सुझाव किसी भी पुस्तक के अन्तर्निहित मूल्य की वृद्धि करने में सहायक होते हैं। इसी प्रकार अन्य विषयों की पाण्डुलिपियाँ भी विज्ञ प्राध्यापकों व विशेषज्ञों के सामने सम्मत्यर्थ रखी जा सकती हैं। पाण्डुलिपि का विषय 'मन का शून्य में प्रतिष्ठापन' हो या 'विद्युत्-संवहन', उसके लिए योग्य निरीक्षक मिल ही जाते हैं। ऐसे निरीक्षकों की योग्यता की कसौटी उस विषय का ज्ञान और गम्भीर अध्ययन ही है, स्वयं साहित्य का प्रणयन नहीं।

परिशुद्ध अध्ययन की दृष्टि से परीक्षक की रिपोर्ट का विभाजन विषयानुसार भाषा, शैली, कथानक, विषय-सामग्री आदि कुछ निश्चित खण्डों में किया जा सकता है, जिससे परीक्षक को अपने कार्य में दिशा-निर्देश मिलेगा। अपनी सूची में सफल पुस्तकों का सूक्ष्म निरीक्षण करके प्रत्येक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खण्ड के लिए कम-अधिक नम्बर भी निर्धारित किये जा सकते हैं। इनके आधार पर पुस्तक की भावी सफलता का अनुमान पर्याप्त बारीकी से करके यथासम्भव उसके दुर्वल पक्ष का प्रकाशन से पहले सुधार किया जा सकता है।

एक बड़ी प्रकाशन संस्था के लिए अपने कार्यालय में पाण्डुलिपि-परीक्षकों व सम्पादकों की सवैतनिक नियुक्ति भी सम्भव है। कार्यालय के निकट सम्पर्क में रहने से संस्था की कार्य-पद्धति व नीति से वे पूर्णतया परिचित हो जाते हैं और प्रत्येक प्रस्ताव पर तदनुरूप निर्णय देने में समर्थ होते हैं। लेकिन इस पद्धति से यह भय भी बना रहता है कि यह निकटता उन परीक्षकों के स्वतन्त्र दृष्टिकोण को प्रभावित करे और उनकी निरपेक्ष सम्मति देने की क्षमता क्रमशः क्षीण होती चली जाय। एक ही व्यक्ति व व्यक्ति-समूह से प्रतिदिन, प्रतिमाह, प्रतिवर्ष एक ही ढर्रे का बौद्धिक कार्य एक ही ताज़गी से करते रहने की आशा नहीं की जा सकती।

पाण्डुलिपि का अवलोकन संस्था के कर्मचारियों द्वारा किया जाय या स्वतन्त्र परीक्षकों द्वारा इसका निर्णय प्रत्येक प्रकाशक के लिए परिस्थितियाँ स्वयं कर देती हैं। स्वतन्त्र व्यक्तियों द्वारा पुस्तकों का परीक्षण अपेक्षया मँहगा रहता है। वैतनिक कर्मचारियों से पाण्डुलिपि-सम्पादन और प्रेस कापी आदि तैयार करने का जो अतिरिक्त कार्य लिया जा सकता है स्वतन्त्र परीक्षक नियुक्त करके प्रकाशक उससे वंचित रह जाते हैं। नये-नये परीक्षकों को प्रकाशक का निजी दृष्टिकोण समझा पाने में भी कठिनाइयाँ हो सकती हैं। पक्ष-विपक्ष में जो कुछ भी कहा जाय, एक प्रगतिशील प्रकाशक को अपने कार्यालय में सम्पादकों की नियुक्ति करनी ही होती है, जिन्हें साधारण पाण्डुलिपियों के निरीक्षण का काम भी सौंप दिया जाता है। किन्तु विशिष्ट पाण्डुलिपियों के परीक्षण के लिए उन्हें भी स्वतन्त्र परीक्षकों पर ही निर्भर रहना होगा। नये व छोटे प्रकाशक प्रत्येक अवस्था में यह कार्य परिचित विद्वानों के भरोसे छोड़ने को विवश हैं।

परीक्षक को देय राशि विषय व आकार को देखते हुए लघु उपन्यास के लिए २५ रुपये से लेकर बृहदाकार टैकनीकल पुस्तक पर ५०० रुपये तक कुछ भी हो सकती है। यह व्यय आरम्भ में यदि प्रकाशक के लिए दुःसह भी हो तो अन्ततः कई गुना लाभांश देने वाला प्रमाणित होगा, विशेषकर यदि परीक्षक से केवल सम्मति न लेकर सुझाव भी लिये जायँ।

प्रकाशक द्वारा प्राप्त प्रत्येक पाण्डुलिपि परीक्षण-व्यय के योग्य ही हो, ऐसी बात नहीं है। उसके पास ऐसी अनेक पाण्डुलिपियाँ आती रहती हैं जो उसके प्रकाशन-क्षेत्र से बाहर होने के कारण अथवा स्पष्ट रूप से निम्न स्तर की होने के कारण विचारणीय नहीं होतीं। ऐसी पाण्डुलिपियों पर व्यर्थ का व्यय न उठाकर लौटा देना ही श्रेयस्कर है। इस प्रक्रिया में केवल किसी प्रकाशनीय पाण्डुलिपि के लौट जाने की आशंका नहीं रहनी चाहिए। इसके विपरीत कुछ ऐसी इनी-गिनी पाण्डुलिपियाँ भी हो सकती हैं जो असाधारण योग्यता के विशेषज्ञों द्वारा लिखी जाने के कारण परीक्षणार्थ न भेजी जाकर सीधे सम्पादक के पास परिवर्तन-परिवर्द्धन आदि के सुझाव के लिए भेजी जा सकती हैं। किन्तु इनकी संख्या नितान्त सीमित रहती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वांछित निष्पक्षता का उच्च स्तर बनाए रखने के लिए परीक्षक का नाम व उसकी रिपोर्ट सर्वदा गोपनीय है, यह कहने की आवश्यकता नहीं। पाण्डुलिपि की प्रकाशन-योग्यता की जाँच की जायगी, यह तथ्य भी यथासंभव लेखक पर प्रकट न किया जाना चाहिए, क्योंकि कोई विरला ही लेखक इस परिस्थिति को बिना उत्तेजनापूर्ण विरोध के स्वीकार कर सकेगा।

अन्य निर्णायक तत्त्व

प्रकाशक के लिए पाण्डुलिपि-परीक्षक निर्णायक नहीं, केवल पथ-प्रदर्शक है; वह अन्तिम निर्णय के लिए स्थूल आधार ही प्रदान करता है। वास्तव में व्यावसायिक दृष्टि-कोण से प्रत्येक पाण्डुलिपि की जाँच किये बिना प्रकाशन का निश्चय करना जुआ-मात्र कहा जा सकता है। अनेक उच्चकोटि की पुस्तकें सीमित रुचि की होने के कारण बिक्री की दृष्टि से सामान्य अथवा नगण्य कही जा सकती हैं। बाल-साहित्य की व अन्य सचित्र पुस्तकें विषय-वस्तु के अनुसार प्रकाशन-योग्य होने पर भी व्यय और उच्चतम संभावित मूल्य के अनुमान के आधार पर व्यावसायिक दृष्टिकोण से त्याज्य प्रमाणित हो जाया करती हैं। इन समस्याओं को देखते हुए प्रकाशक के लिए यह आवश्यक है कि पाण्डुलिपि की स्वीकृति देने से पहले पुस्तक की रूप-रेखा और प्रथम संस्करण के परिमाण का अग्रिम निश्चय करके पाण्डुलिपि को व्यावसायिक दृष्टिकोण से भी परख ले।

इस व्यावसायिक परीक्षण के लिए प्रकाशक साधारणतया एक अनुमान-पत्र का आश्रय लेते हैं, जिसमें विशिष्ट आकार में पुस्तक की पृष्ठ-संख्या, चित्रों आदि के आधार पर एक निश्चित संख्या में प्रकाशित करने पर काग़ज़, छपाई, जिल्दबन्दी, कवर डिज़ाइन, ब्लाक आदि का विस्तृत व्यय अंकित कर लिया जाता है। यह अनुमान-पत्र एक ही दृष्टि में पुस्तक का आर्थिक लेखा-जोखा हमारे समक्ष प्रस्तुत करता है, जिसका संस्करण के समाप्त होने की अनुमानित अवधि से संतुलन करके वास्तविक लाभ या हानि का अनुमान किया जा सकता है। इस सन्दर्भ में यह कहना आवश्यक है कि बाल-साहित्य व बहु-चित्रित पुस्तकों के चित्रण व ब्लाक का व्यय अंशतः अगले संस्करण पर भी बाँटा जा सकता है।

संस्करण के परिमाण का अनुमान प्रकाशक के लिए कठिन समस्या है। ज्यों-ज्यों संस्करण में प्रतियों की संख्या बढ़ती है, प्रत्येक प्रति पर उसका लाभांश भी बढ़ता है, किन्तु अनबिकी प्रतियाँ बची रहने का भय भी उसी अनुपात में बढ़ता रहता है। इस विषय में व्यवहार्य मध्य-मार्ग एक ही हो सकता है—जितनी प्रतियाँ उचित अवधि में बिक पाने की आशा हो, संस्करण उतना ही बड़ा होना चाहिए; और हिन्दी-प्रकाशन-क्षेत्र के अनुभव से इसके लिए लगभग तीन वर्ष की अवधि ही उचित मानी जा सकती है।

पुस्तक के आकार तथा जिल्द, कवर आदि का चुनाव प्रकाशन-गृह की प्रथा और विश्व-साहित्य की परम्पराओं पर निर्भर करता है। विश्व-साहित्य में साधारणतया कथा-साहित्य, छोटी कक्षाओं की पाठ्य-पुस्तकों आदि के लिए डबल-क्राउन १६वाँ, कविता, निबन्ध, राजनीति, अर्थशास्त्र और अन्य गम्भीर विषयों के लिए डिमाई ८वाँ, अभिनन्दन, स्मारक तथा शोध-ग्रन्थ आदि के लिए रायल ८वाँ और सचित्र कलात्मक पुस्तकों के लिए इससे भी बड़े आकार का उपयोग किया जाता है। बाल-साहित्य के लिए चित्र, कथा और आयु-वर्ग के अनुसार कापी-साइज़ से लेकर डबल-क्राउन ४थे आकार तक का प्रयोग होता है। बाल-साहित्य की छोटी पुस्तकों तथा सस्ती पुस्तक-मालाओं को छोड़कर अन्य बड़ी पुस्तकें सर्वत्र जुज़बन्दी सिलाई के ऊपर गत्ते की पक्की जिल्द में तैयार होती हैं, सिवाय फ्रांस के जहाँ अधिकतर मोटे काग़ज़ या कार्ड के कवर का प्रचलन है। पुस्तक के ऊपर अलग जैकेट का प्रचलन भी इंग्लैंड, अमरीका, रूस तथा अन्य प्रगतिशील देशों में है। इन सब सर्वमान्य नियमों के अपवाद भी यत्र-तत्र विद्यमान हैं। वास्तव में पुस्तक की पठनीयता तथा बहिर्सौन्दर्य को हानि पहुँचाए बिना मितव्ययता व अन्य कारणों से प्रथाओं का उल्लंघन भी समझ में आ सकता है, किन्तु इधर भारत में आकार व कवर आदि के क्षेत्र में ऐसे भौंडे प्रयोग होने लगे हैं कि उन्हें जितनी जल्दी समाप्त किया जाय, साहित्य और व्यवसाय की प्रतिष्ठा के लिए उतना ही श्रेयस्कर है।

काग़ज़ का चुनाव-क्षेत्र हमारे लिए अत्यन्त सीमित है। विदेशी काग़ज़ का आयात समाप्तप्राय है। पुस्तकों के संभा-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चित मूल्य को दृष्टि में रखते हुए प्रकाशक हल्के या मोटे सफ़ेद प्रिंटिंग काग़ज़ का चुनाव कर सकता है; बहुत हुआ तो उसका चुनाव एण्टीक काग़ज़ तक जाता है, जिसमें पुस्तक की मोटाई कुछ अधिक दीखने लगती है। सुपर कैलेण्डर या इमिटेशन आर्ट काग़ज़ का उपयोग साधारणतया हाफटोन ब्लाकों वाली पुस्तकों के लिए ही किया जाता है। न्यूज़प्रिंट सस्ती पुस्तक-माला के अतिरिक्त अन्य पुस्तकों में व्यवहृत नहीं होता। आफसेट काग़ज़ विशेषतः आफसेट की छपाई के लिए बना है, जिस मुद्रण-पद्धति का उपयोग अब तक भारतीय पुस्तक-प्रकाशन के लिए नगण्य-सा ही है। अन्य देशों की भाँति हमारे यहाँ भी सामान्य पुस्तकों के लिए उपयुक्त विविध प्रकार का काग़ज़ शीघ्र प्राप्य होगा, अग्रणी पुस्तक-प्रकाशक इसी आशा में हैं।

पुस्तक के उचित मूल्य-निर्धारण के लिए लागत या आकार आदि से सम्बन्धित जो भी नियम बनाए जाते हैं वे सन्दर्भ-विशेष में भ्रान्तियुक्त प्रमाणित हो सकते हैं। यदि ऐसा न हो तो किसी भी पुस्तक का प्रकाशन कर देने में हानि की आशंका न रहे। प्रत्येक प्रकाशक अपने अनुभव से जानता है कि अनुसन्धान-ग्रन्थ व ख्यातनामा लेखकों की पुस्तकें अपेक्षा कृत अधिक मूल्य पर भी बिकेंगी, क्योंकि उनके लिए उसे नये सिरे से ग्राहकों की खोज नहीं करनी होगी। सुन्दर, सुमुद्रित तथा सुविज्ञापित पुस्तकों के लिए भी कुछ ऊँचा मूल्य रखने की गुंजाइश रहती है, किन्तु इसकी अपनी सीमाएँ हैं। इसके विपरीत नये लेखक की मध्य स्तर की पुस्तक का मूल्य अपेक्षया कम रखना होगा, उसके मुद्रण में आप कितना भी व्यय क्यों न करें। वास्तव में प्रत्येक पुस्तक स्वयं में एक इकाई है और उसका अधिकतम उचित मूल्य अपने विशिष्ट महत्त्व और बिक्री की सम्भावनाओं पर ही निर्भर करता है।

अब प्रस्तावित पुस्तक के विषय में समस्त ज्ञातव्य तथ्य प्रकाशक के समक्ष प्रस्तुत हैं—विषय-वस्तु का मूल्यांकन भी है और अनुमान-पत्र के रूप में पुस्तक की आर्थिक सम्भावनाएँ भी। इस दशा में पाण्डुलिपि स्वीकार

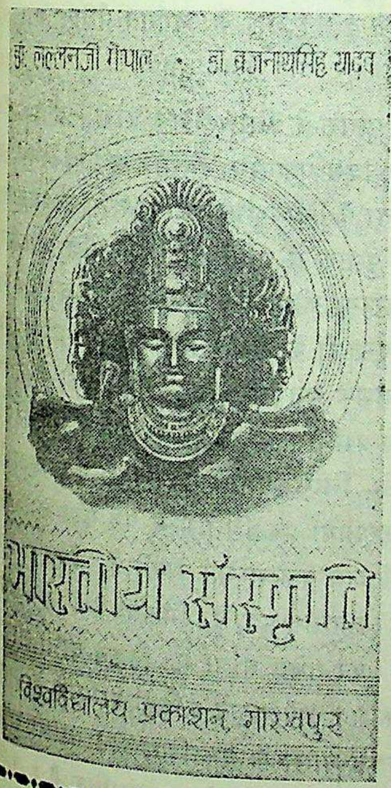

जिज्ञासु पाठकों तथा विद्यार्थियों के लिए
एक महत्त्वपूर्ण कृति

भारतीय संस्कृति

सम्पादक तथा भूमिका-लेखक
डॉ० गोविन्दचन्द्र पांडे
अध्यक्ष, प्राचीन इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्त्व विभाग,
गोरखपुर विश्वविद्यालय

भारतीय संस्कृति के मूल तत्त्वों का विवेचनात्मक अध्ययन प्रयाग विश्वविद्यालय के विद्वान् अध्यापकों ने इस कृति में प्रस्तुत किया है। यह प्रथम कृति है जिसमें ऐतिहासिक विवरण मात्र न देकर प्रवृत्तिगत विशेषता को आधार बनाया गया है।

भारत के सभी विश्वविद्यालयों के विद्यार्थियों के लिए यह पुस्तक अनिवार्य है।

मूल्य : साढ़े पाँच रुपये

विश्वविद्यालय प्रकाशन
नखास चौक, गोरखपुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथवा अस्वीकार करने का उसका निर्णय सरल और स्वाभाविक होगा।

अस्वीकृत पाण्डुलिपियाँ

स्वीकृति अथवा अस्वीकृति के निर्णय से लेखक को शीघ्र सूचित किया जाना चाहिए। स्वीकृति के पत्र में ही रायल्टी की दर तथा सम्भावित प्रकाशन-तिथि का उल्लेख रहे तो भविष्य में होने वाली ग़लतफहमियों से बचा जा सकता है। अस्वीकृत पाण्डुलिपि भी अविलम्ब लौटाई जानी आवश्यक है। अस्वीकृति का पत्र यदि दृढ़, शिष्ट तथा स्पष्ट न होगा तो लेखक से सम्बन्ध-विच्छेद अवश्यंभावी है। इस पत्र में पाण्डुलिपि के गुण-दोषों का बखान असंगत ही नहीं, अनुचित भी है, यद्यपि लेखक-विशेष के सन्दर्भ में पाण्डुलिपि के किसी विशिष्ट पक्ष की दुर्बलता का उल्लेख अनिवार्यतः अनिष्टकर नहीं होना चाहिए। साधारणतया प्रकाशक की असमर्थता का प्रदर्शन-मात्र अस्वीकृति के लिए पर्याप्त कारण है।

पाण्डुलिपि लौटाने की इस संकोचपूर्ण परिस्थिति की पुनरावृत्ति को यथासम्भव नियन्त्रण में रखना प्रकाशक की अपनी प्रतिष्ठा के लिए अभीष्ट है। अवलोकनार्थ केवल उतनी ही और वही पाण्डुलिपियाँ एकत्रित की जानी चाहिएँ, जिनके प्रकाशन-योग्य प्रमाणित होने पर, प्रकाशन की आकांक्षा व क्षमता प्रकाशक में हो। अपने कार्यक्षेत्र और सुनिश्चित कार्यक्रम से बाहर की पाण्डुलिपियाँ आमन्त्रित न करना ही प्रकाशक के हित में है। वैसे भी, आल्मारियों की शोभा बढ़ाने के लिए अन्धाधुन्ध पाण्डुलिपियाँ संचित करते रहना स्वस्थ प्रवृत्ति नहीं है, क्योंकि यह अपच की कष्टप्रद भावना को जन्म देती है, जिससे प्रकाशक पुरानी और नई पाण्डुलिपियों में से कुछ को त्यागने को विवश हो जाता है। इस विषय में अनुभवजनित आदर्श नियम एक वर्ष की लागत-क्षमता से अधिक पाण्डुलिपियाँ किसी भी समय एकत्रित न करने का है, क्योंकि किसी भी लेखक को स्वीकृति के बाद प्रकाशन के लिए एक वर्ष से अधिक प्रतीक्षा असह्य प्रतीत होगी।

लेखकों से अनुबन्ध

लेखक द्वारा प्रस्तावित पाण्डुलिपि की स्वीकृति पुस्तक-प्रकाशन के लिए पर्याप्त नहीं है। लेखक द्वारा हस्ताक्षरित अनुबन्ध ही प्रकाशक को वैधानिक रूप से प्रकाशन के अधिकार प्रदान करता है। अनुबन्ध का प्रस्ताव लेखक के समक्ष रखने में प्रकाशक को संकोच की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि भविष्य में यह लिखित अनुबन्ध ही लेखक और प्रकाशक के सम्बन्धों को अनुशासित करेगा। इन सम्बन्धों की रूप-रेखा अनुबन्ध में समाविष्ट धाराओं के अनुपात में ही स्पष्ट व असन्दिग्ध होगी।

उचित समय पर, अर्थात् मुद्रण आरम्भ करने से पहले ही, अनुबन्ध कर लेने में विशेष समस्याएँ उत्पन्न नहीं होतीं। इसे भारतीय लेखक की अव्यावहारिकता मान लीजिए अथवा उसकी आर्थिक स्थिति, प्रकाशक द्वारा प्रस्तावित शर्तें उसे साधारणतया मान्य रहती हैं। इस दृष्टि से प्रकाशक का दायित्व और भी बढ़ जाता है। हिन्दी-प्रकाशन-व्यवसाय के शिशुकाल में कुछेक प्रकाशकों की अदूरदर्शिता के कारण अब तक समस्त हिन्दी प्रकाशक-जगत् को शोषक घोषित किया जाता रहा है। इसका प्रतिकार पिछले दशक में सजग हिन्दी प्रकाशकों द्वारा सुचारु रूप से हुआ है और आशा की जानी चाहिए कि भविष्य में लेखक व प्रकाशक के वर्गगत नैतिक मानदण्ड की तुलना का अवसर फिर न आएगा।

अनुबन्ध में पुस्तक के लिए लेखक द्वारा प्राप्य पारिश्रमिक को अज्ञानवश एकमात्र विचार अथवा विवाद का विषय माना जाता है। अर्थशास्त्र के सामान्य नियमानुसार लेखक का ध्येय पुस्तक से अधिकतम धन-राशि प्राप्त करने का है, उसकी गणना की पद्धति कुछ भी क्यों न हो। यही कारण है कि पुस्तकों के प्रचार-प्रसार पर पर्याप्त व्यय करने वाला प्रकाशक अनुभवी लेखक को बिक्री के आधार पर अधिक लाभ-प्राप्ति का आश्वासन देकर रायल्टी की दर कम करने के लिए सुगमता से सहमत कर लेता है। यह दर साधारणतया प्रकाशित मूल्य पर सवा छः प्रतिशत से १५ प्रतिशत तक सम्भव रहती है, जिसके यथार्थ अंक का संकेत अनुमान-पत्र में मिलता है। कम प्रयास से अधिक मूल्य पर यथेष्ट मात्रा में बिकने वाली लाभप्रद पुस्तकों पर प्रकाशक अपेक्षाकृत अधिक रायल्टी दे सकता है। सस्ती पुस्तक-माला में प्रकाशित होने वाली पुस्तकों की रायल्टी की दर कम रहनी स्वाभाविक है। सचित्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तकों पर भी रायल्टी की दर कम होती है, क्योंकि इनके निर्माण में व्यय के साथ-साथ प्रकाशक का अपना सृजनात्मक योगदान भी लेखक से किसी प्रकार कम नहीं रहता।

तात्कालिक परिस्थितियों के दबाव में एकमुश्त राशि लेकर कॉपीराइट बेचने का प्रस्ताव भी अनेक बार लेखकों द्वारा किया जाता है। प्रकाशक के लिए इस अतिरिक्त सन्दिग्ध लाभ के लोभ का संवरण अत्यावश्यक है, क्योंकि कालान्तर तथा सन्दर्भ-विशेष में अनिवार्यतः इस व्यापार को प्रकाशक द्वारा लेखक का शोषण कहा जायगा, और सर्वविदित है कि लोकमत प्रकाशक के अनुकूल न होगा। वैधानिक रूप से भी लेखकों को इस प्रकार के अनुबन्ध स्वेच्छानुसार तोड़ने के अधिकार देने की सम्भावनाएँ बढ़ती जा रही हैं। केवल अनूदित, निजी आदेशानुसार लिखवाई गई तथा बाल-साहित्य आदि की सचित्र पुस्तकों के लिए इस सामान्य नियम का उल्लंघन सम्भवतः क्षम्य समझा जा सकता है, क्योंकि इनमें अन्य तत्वों का समावेश होने के कारण लेखक की मौलिक अनुप्रेरणा का महत्त्व अपेक्षाकृत कम हो जाता है।

लेखक द्वारा प्रकाशन-अधिकारों के समर्पण की अवधि का उल्लेख किसी भी अनुबन्ध का महत्त्वपूर्ण अंग है। इन अधिकारों का प्रकाशक के हित में चिरकाल के लिए परित्याग पर्याप्त समय के लिए संकोच का विषय रहा है। किन्तु दीर्घकालीन अनुभव से अब सिद्ध हो चुका है कि किसी सीमित काल अथवा संस्करण-मात्र के लिए प्रकाशन-अधिकार का प्रकाशक को प्रतिदान निश्चित रूप से लेखक व प्रकाशक दोनों के हित में नहीं है। इसमें न केवल प्रथम संस्करण में पुस्तक के प्रचार द्वारा आगामी संस्करणों का मार्ग प्रशस्त करने वाले प्रकाशक से अन्याय निहित है, अपितु पुस्तक की अपनी प्रतिष्ठा पर आघात भी है। स्पष्टतः जिस प्रकाशक ने सफलतापूर्वक एक संस्करण का विक्रय किया है उसके पास भावी संस्करणों के लिए भी लेखक का हित सुरक्षित है। अनुबन्ध में प्रकाशक द्वारा उचित समय में पुस्तक का पुनर्मुद्रण न किये जाने की स्थिति में यह अधिकार लेखक के पास प्रत्यावर्तित हो जाने का उल्लेख रहता ही है। इस आधार पर लेखक

भगवद्गीता की बुद्धिवादी समीक्षा

• • •

शंकराचार्य से लेकर विनोबा भावे तक भगवद्गीता के जितने भी भाष्य व टीकाएँ हैं, वे सभी वैदिकों की हैं, ईश्वरवादियों की हैं, आत्मवादियों की हैं। किसी अवैदिक, अनीश्वरवादी, अनात्मवादी, बुद्धिवादी द्वारा लिखी गई भगवद्गीता की यह प्रथम समीक्षा है।

भदन्त आनन्द कौसल्यायन

• • •

दुरंगा आवरण : पृष्ठ २७८ : मूल्य ५ ००

हंस प्रकाशन

९३, जीरो रोड, इलाहाबाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निःशंक होकर असीमित काल के लिए प्रकाशनाधिकार प्रकाशक को हस्तान्तरित कर सकता है।

अनुवाद के अधिकारों का उल्लेख भी अनुबन्ध में आवश्यक है। इस विषय में कोई निश्चित नियम निर्धारित नहीं किया जा सकता, किन्तु लेखक के हित में यही है कि अपने पास स्वयं प्रबन्ध न होने की स्थिति में अपने विस्तृत सम्पर्क द्वारा प्रयत्न करने के लिए ये अधिकार प्रकाशक को सौंप दे। यही साधारण नियम फिल्म आदि के अधिकारों के लिए लागू होता है। इन अधिकारों से प्राप्त आय का अधिकांश भाग (लगभग ७५ प्रतिशत) प्रकाशक द्वारा लेखक को दिये जाने का उल्लेख अनुबन्ध में कर दिया जाता है, जिससे लेखक को विशेष आर्थिक हानि की आशंका नहीं रहती।

लेखक को बिना मूल्य दी जाने वाली प्रतियों की संख्या के विषय में विवाद की सम्भावना नहीं है। इसके लिए साधारणतया ६ प्रतियाँ उचित मानी जाती हैं, हालांकि विदेशों में केवल २ प्रतियाँ देने की प्रथा है। लेखक द्वारा माँग होने पर कुछ प्रकाशक अधिकतम २५ प्रतियाँ बिना मूल्य देने में भी संकोच नहीं करते। निर्दिष्ट प्रतियों से अधिक की आवश्यकता होने पर प्रत्येक अनुबन्ध लेखक को लगभग दो-तिहाई मूल्य पर प्रतियाँ क्रय करने का अधिकार देता है—किन्तु केवल वितरण के लिए, विक्रय के लिए नहीं। पुस्तक के निर्बाध वितरण के विरोध में किसी भी अनुभवहीन लेखक के समक्ष यह तथ्य रखा जा सकता है कि जो मित्र पुस्तक को क्रय-योग्य नहीं मानता वह वास्तव में इस उपहार के योग्य पात्र नहीं है।

अनुबन्ध में उन सब परिस्थितियों का उल्लेख भी आवश्यक है, जिनमें लेखक को रायल्टी से वंचित रखा जा सकता है। उदाहरणार्थ, लेखक को दी गई अथवा समालोचनार्थ व पुस्तक के हित में भेंट-स्वरूप प्रेषित प्रतियों पर रायल्टी नहीं दी जाती। अग्निकांड में अथवा किसी दैवी प्रकोप से विनष्ट प्रतियों पर भी रायल्टी देय नहीं रहती। पुराना अविक्रीत स्टाक लागत से कम मूल्य पर विक्रय करने पर भी लेखक रायल्टी का अधिकारी नहीं माना जाता, यद्यपि ऐसी स्थिति में निर्धारित मूल्य पर स्टाक क्रय करने का सर्वप्रथम अवसर उसे दिया जाना न्याय्य ही नहीं, अनुबन्ध में उल्लेखनीय भी है।

पुस्तक में किसी अन्य व्यक्ति के कॉपीराइट का उल्लंघन न होने अथवा वैधानिक दृष्टि से किसी की मान-मर्यादा भंग न करने का लेखक द्वारा आश्वासन भी अनुबन्ध का महत्त्वपूर्ण अंग है। पुस्तक की विषय-सामग्री से सम्बन्धित कॉपीराइट-उल्लंघन या मान-हानि के आधार पर प्रकाशक पर की गई किसी भी माँग के लिए प्रकाशक की क्षतिपूर्ति का दायित्व लेखक पर रहता है।

अन्ततः अनुबन्ध प्रकाशक द्वारा बिक्री, स्टाक व रायल्टी का लेखा प्रस्तुत करने का समय निर्धारित करता है। प्रकाशक के आर्थिक वर्ष की समाप्ति ही इसके लिए सर्वोपयुक्त अवसर है, यद्यपि कुछेक प्रकाशक वर्ष में दो बार रायल्टी देकर अपने आर्थिक दायित्व का विभाजन कर लेना अधिक सुविधाजनक समझते हैं। किसी भी दशा में हिसाब की तैयारी अथवा रायल्टी के भुगतान के लिए प्रत्येक अनुबन्ध में लगभग दो मास का अतिरिक्त समय देने की व्यवस्था अभीष्ट है।

उपर्युक्त मुख्य धाराओं के अतिरिक्त अनुबन्ध में अनुक्रमणिका, प्रूफ़-संशोधन, पुनर्मुद्रण के समय पुस्तक-परिशोधन आदि के लेखक पर दायित्व का अथवा किन्हीं अन्य पारस्परिक निर्णयों का उल्लेख भी किया जा सकता है। अन्त में लेखक व प्रकाशक के बीच विवाद उठ खड़ा होने की स्थिति में मध्यस्थ-निर्णय की सामान्य धारा जोड़ दी जाती है।

अनुबन्ध के सूत्र में बँधकर लेखक अपनी पुस्तक द्वारा साहित्य-समृद्धि का शेष कर्त्तव्य प्रकाशक को अर्पित करने के उपरान्त चिन्ता-मुक्त हो जाता है। कर्मनिष्ठ प्रकाशक के लिए भी यश व अर्थोपार्जन का यह प्रसंग उल्लासप्रद होगा ही, किन्तु पाण्डुलिपि के माध्यम से सुरुचिपूर्ण प्रकाशन और तत्पश्चात् सन्तोषपूर्ण वितरण की उसकी योग्यता का परीक्षण अभी शेष है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तकों का सम्पादन, मुद्रण तथा रूप-सज्जा

बालकृष्ण

मुद्रण से पहले पुस्तक के सम्पादन और रूपसज्जा आदि की समस्याओं को हिन्दी प्रकाशकों द्वारा अब तक उचित महत्त्व प्रदान नहीं किया गया है। इस विषय पर यह लेख प्रकाशकों द्वारा गौर से पढ़ा जायगा, ऐसी आशा है।

सम्पादन

आजकल अधिकांश प्रकाशक लेखक से प्राप्त पाण्डुलिपि को ज्यों-की-त्यों मुद्रण के लिए भेज देते हैं—वे उसके सम्पादन की आवश्यकता नहीं समझते। किसी विख्यात लेखक की पाण्डुलिपि के सम्पादन की आवश्यकता तो इसीलिए नहीं समझी जाती कि वह एक विख्यात लेखक की कृति है। किन्तु साधारणतया नये लेखकों की कृतियों का सम्पादन भी नहीं कराया जाता। उधर बहुत-से लेखक भी यह पसन्द नहीं करते कि कोई व्यक्ति, चाहे वह कितना ही बड़ा विद्वान् क्यों न हो, उनकी कृति में कोई परिवर्तन करे। वे स्वयं भी अपनी पाण्डुलिपि को दोहराने का कष्ट नहीं उठाते। उनमें यह भावना उत्पन्न करने की बहुत आवश्यकता है कि साधारणतया उचित प्रकार के व्यक्ति द्वारा पुस्तक का सम्पादन होने से पुस्तक में सुधार होने की आशा की जा सकती है। लेखक चाहे पुराना और मँजा हुआ हो, चाहे नया, कुछ विशेष विषयों के विशेषज्ञ लेखकों की कृतियों को छोड़कर पाण्डुलिपि का सम्पादन तो होना ही चाहिए।

सम्पादन-कार्य के दो पहलू हैं—एक तो उसके विषय-वस्तु (मैटर) का संशोधन एवं काट-छाँट करने का कार्य; और दूसरा मुद्रण के लिए उसकी प्रेस-कापी तैयार करने का कार्य। एक तीसरा पहलू भी है—और वह है भाषा-सम्बन्धी साधारण सुधार; जैसे शब्दों की अक्षरी में एक-रूपता, लाना, तथा विराम-चिह्नों का यथास्थान प्रयोग, आदि।

अधिकारी विद्वान् द्वारा सम्पादन-संशोधन

पाण्डुलिपि प्रकाशनार्थ स्वीकार करने का यह अर्थ नहीं है कि हम उसे ज्यों-का-त्यों छापने के लिए बाध्य हो गए। पुस्तक जिस विषय पर है उस विषय के अधिकारी विद्वान् से यदि पुस्तक का संशोधन एवं सम्पादन करा लिया जाय तो वह कृति चाहे किसी बड़े और विख्यात लेखक की ही हो, यह बहुत सम्भव है कि सम्पादन के बाद उस पुस्तक का रूप निखर आए। किन्तु यह बात स्पष्ट है कि कोई भी प्रकाशन-संस्था, चाहे वह कितनी भी बड़ी क्यों न हो, यह सामर्थ्य नहीं रख सकती कि वह विज्ञान, कानून, साहित्य, इतिहास, अर्थशास्त्र आदि विभिन्न विषयों की पुस्तकों की पाण्डुलिपियाँ सम्पादित कराने के लिए अधिकारी विद्वानों को अपने यहाँ वैतनिक रूप में रक्खे। किन्तु इस कठिनाई का समाधान तो होना ही चाहिए। समाधान यही है कि हम उचित पारिश्रमिक देकर सम्बन्धित विषय के अधिकारी विद्वानों से पाण्डुलिपि का सम्पादन करा लें। यह पारिश्रमिक या तो लेखकों को देना चाहिए या प्रकाशक और लेखक मिलकर यह भार वहन कर सकते हैं। उचित सम्पादन से पुस्तक का स्तर और उपादेयता बढ़ जाती है। पुस्तक की विषय-वस्तु में कई बार बहुत सुन्दर सुधार और निखार आ जाता है। उसके अनावश्यक एवं निरर्थक भाग कट जाते हैं और विषय का गठन सुन्दर हो जाता है। इससे जहाँ पुस्तक की विक्रय-क्षमता बढ़ने से प्रकाशक को लाभ होता है वहाँ पुस्तक के परिष्कार एवं सुधार से लेखक की ख्याति बढ़ती

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है और इस तरह लेखक को भी इसका लाभ पहुँचता है। सम्पादन के फलस्वरूप नये लेखकों की कृतियों का रूप निखर जाने की तो और भी अधिक सम्भावना है। हाँ, सम्पादन के परिणाम-स्वरूप यदि पाण्डुलिपि में कोई बड़े परिवर्तन किये जाने हों या अधिक काट-छाँट करनी आवश्यक समझी जाय तो इस सम्बन्ध में लेखक की सहमति अवश्य प्राप्त कर लेनी चाहिए।

मुद्रण के लिए पाण्डुलिपि का सम्पादन

सम्पादन-कार्य का दूसरा पहलू या चरण है मुद्रण के लिए पाण्डुलिपि को समुचित रूप प्रदान करना या दूसरे शब्दों में, प्रेस-कापी तैयार करना। इस सम्पादन के बाद पाण्डुलिपि का वैसा ही रूप हो जाना चाहिए जैसा कि हम मुद्रित पुस्तक का देखना चाहते हैं।

इस सम्बन्ध में पहली आवश्यक बात यह है कि प्रकाशन-संस्था यह आग्रह करे कि लेखक पाण्डुलिपि को टाइप कराके दें। टाइप की दो बल्कि तीन प्रतियाँ करा लेनी चाहिएँ। टाइप कराने से कम-से-कम पुस्तक की एक प्रति लेखक के पास रहेगी। यदि पुस्तक की एक ही हस्तलिखित प्रति हो और वह खो जाय तो हो सकता है कि एक अमूल्य कृति संसार से नष्ट हो जाय। किसी पुस्तक को दोबारा लिखना लेखक के लिए कष्टप्रद और दुःसाध्य कार्य तो होता ही है, कई बार यह कार्य असम्भव भी होता है। सुरक्षा के अतिरिक्त टाइप-कापी होने से सम्पादन और मुद्रण में भी बड़ी सुविधा होती है।

यदि लेखक पाण्डुलिपि को टाइप कराने में असमर्थ हो तो प्रकाशकों को अपने यहाँ उसे टाइप कराने की व्यवस्था करनी चाहिए। टाइप कराने से प्रकाशक और लेखक दोनों को ही लाभ है इसलिए टाइप कराने का खर्च दोनों को मिलकर वहन करने में आपत्ति नहीं होनी चाहिए।

यदि लेखक स्वयं पाण्डुलिपि को टाइप न करा सकें और उनसे हस्तलिखित प्रति लेने की विवशता हो तो इस बात का आग्रह किया जाना चाहिए कि लेखक हस्तलिखित प्रति को कागज़ के एक ओर लिखें और कागज का एक-तिहाई भाग मार्जिन के रूप में खाली छोड़ें, तथा लेखन सुन्दर और सुपाठ्य हो। अनेक उच्चकोटि की महान् रचनाओं का कई बार मुद्रण-सम्बन्धी अशुद्धियों के कारण सत्यानाश हो जाता है और इन अशुद्धियों के लिए यदि पूरे तौर पर नहीं तो आंशिक रूप में तो निश्चय ही पाण्डुलिपि की भद्दी लिखाई ज़िम्मेदार होती है। यदि प्रकाशन-संस्था एक नगर में है और लेखक दूसरे नगर में, और प्रूफ़ लेखक के पास न भेजे जा सकें (कितने ही लेखक प्रूफ़-संशोधन की कला से अनभिज्ञ भी होते हैं) और प्रकाशक को स्वयं अपनी जिम्मेदारी पर प्रूफ़ पास करके पुस्तक का मुद्रण कराना हो तो हस्तलिखित प्रति का ठीक रूप एवं अवस्था में आना और भी अनिवार्य हो जाता है।

सारी पाण्डुलिपि एक ही आकार के कागज़ों पर लिखी या टाइप की हुई होनी चाहिए। डॉ० पट्टाभि सीतारमैया 'कांग्रेस का इतिहास' नामक विख्यात ग्रन्थ के लेखक हैं। डाक्टर महोदय किसी चीज़ को व्यर्थ फेंकना बहुत बुरा समझते हैं। उनके पास सैकड़ों पत्र रोज़ आते थे और उनमें से अनेकों पत्रों का कुछ भाग कोरा होता था। वे उन खाली भागों को काट-काटकर अपने पास रख लेते थे। साथ ही सब लिफ़ाफ़ों को चिपकने वाली जगहों पर से खोलकर उन षट्कोणाकार कागज़ों को भी रख लेते थे। उन्होंने अपना समूचा ग्रन्थ कागज के इन विभिन्न आकार के टुकड़ों पर लिख डाला था। मितव्ययता की दृष्टि से यह कार्य प्रशंसा के योग्य हो सकता है किन्तु प्रकाशक और मुद्रक के लिए तो यही बात सुविधाजनक है कि सारी पाण्डुलिपि एक ही आकार के कागज़ों पर लिखी गई हो या टाइप कराई गई हो।

पाण्डुलिपि प्रकाशक के अपने प्रोडक्शन-विभाग में आने के बाद उसका मुद्रण की दृष्टि से सम्पादन होना चाहिए। इस कार्य के लिए प्रत्येक प्रकाशन-संस्था में एक सम्पादक होना चाहिए, जो प्रोडक्शन की तकनीक से पूरी तरह परिचित हो और साथ ही सब प्रकार की पुस्तकों का एक प्रकार का जनरल-एडीटर भी हो। उसे पुस्तक के सम्बन्ध में दो बातें करनी होंगी :

(१) साधारण सम्पादन; और

(२) मुद्रण-सम्बन्धी आवश्यक निर्णय—जैसे पुस्तक के आकार, टाइप, कागज, मेज़र, चित्रों और डस्ट-कवर के डिज़ाइन तथा रंगों आदि के सम्बन्ध में निर्णय।

इन दोनों बातों के अन्तर्गत कई आवश्यक बातें आती

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रत्येक पुस्तकालय में संग्रह करने योग्य पुस्तकें

कोश

बृहत् हिन्दी कोश	सम्पादक कालिकाप्रसाद : लेदर क्लाथ	
	राजवल्लभ सहाय जिल्द मू०	२५.००
	मुकुन्दीलाल श्रीवास्तव चमड़े की जिल्द	३२.००
ज्ञान शब्दकोश	सम्पा० मुकुन्दीलाल श्रीवास्तव	१५.००
पारिभाषिक शब्दकोश	सम्पा० मुकुन्दीलाल श्रीवास्तव	४.००

राजनीतिक पुस्तकें

भारतीय राजनीति—विक्टोरिया से नेहरू तक	रामगोपाल एम० ए०	११.००
राष्ट्रीयता और समाजवाद	आचार्य नरेन्द्रदेव	११.००
अन्तर्राष्ट्रीय विधान	डॉ० सम्पूर्णानन्द	११.००
चीन कल और आज	के० एम० पणिक्कर	५.००
राजनीतिशास्त्र	प्राणनाथ विद्यालंकार	४.५०
जापान की राजनीतिक प्रगति	अनु० लक्ष्मणनारायण गर्दे	५.५०
चीन और भारत	अम्बिकाप्रसाद वाजपेयी	१.५०

धर्म और दर्शन

सूफ़ीमत साधना और साहित्य	रामपूजन तिवारी	११.००
विश्व के धर्म प्रवर्तक	रघुनाथसिंह एम० पी०	६.५०
वैज्ञानिक अद्वैतवाद	स्व० रामदास गौड़ एम० ए०	२.२५
चिद्विलास	डॉ० सम्पूर्णानन्द	५.००
दर्शन का प्रयोजन	डॉ० भगवानदास	३.५०
नीतिशास्त्र	सुश्री शान्ति जोशी	८.००

पत्रकारिता

पत्र और पत्रकार	माननीय पं० कमलापति त्रिपाठी तथा पुरुषोत्तमदास टण्डन 'पत्रकार'	६.५०
भारतीय पत्रकार कला	सम्पादक रौलेण्ड ई० वूल्सले	६.५०
समाचारपत्रों का इतिहास	पं० अम्बिकाप्रसाद वाजपेयी	६.५०
आधुनिक पत्रकार कला	रा० र० खाडिलकर	४.००

मनोविज्ञान

शिक्षा मनोविज्ञान	हंसराज भाटिया	४.५०

भ्रमण

हालैण्ड में पचीस दिन	रा० र० खाडिलकर	३.००
आर्याना	रघुनाथसिंह एम० पी०	३.००

इतिहास

भारतवर्ष का इतिहास	एक इतिहास प्रेमी	८.००
पश्चिमी यूरोप, प्रथम भाग	अनुवादक छविनाथ पाण्डेय एम० ए०, एल-एल० बी०	४.५०
गांधी हत्याकाण्ड	सम्पादक विहंगम	५.००
आज़ाद हिन्द फौज और उसके तीन अफ़सरों का मुक़दमा	३५० पृष्ठों की ऐतिहासिक पुस्तक	२.००

संस्मरण

जेल के वे दिन	विजयालक्ष्मी पंडित	२.५०
कुछ स्मरणीय मुकदमे	श्री कैलाशनाथ काटजू	८.००
मेरे बचपन की कहानी	श्रीमती नयनतारा सहगल	६.००

साहित्य

वक्रोक्ति और अभिव्यंजना	रामनरेश वर्मा एम० ए०	४.५०
गीतिकाव्य	प्रो० रामखेलावन एम० ए०	५.५०
तुलसीदास और उनका युग	डॉ० राजपति दीक्षित	८.००
सामयिकी	शान्तिप्रिय द्विवेदी	४.००
धरातल	शान्तिप्रिय द्विवेदी	२.७५
कल्पलता	आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी	२.५०

कथा साहित्य

उलूकतन्त्र	बलदेवप्रसाद मिश्र	२.००
शव साधन	बलदेवप्रसाद मिश्र	२.५०
तूफ़ान	सर्वश्रेष्ठ कहानी-लेखकों की कहानियों का संग्रह	२.५०

उपन्यास

पुनर्जीवन	महात्मा टालस्टाय	६.५०
कर्त्तव्याघात	देवनारायण द्विवेदी	४.५०
नूतन ब्रह्मचारी	स्वर्गीय पं० बालकृष्ण भट्ट	०.६३
देशभक्त और देशद्रोही		२.५०
बयालीस	प्रतापनारायण श्रीवास्तव	४.५०
गेंजी की कहानी	मुरासाकी शिकाबू	४.५०

आदर्श जीवन चरित्र

सरदार पृथ्वीसिंह	राहुल सांकृत्यायन	४.००

विज्ञान

विज्ञान की प्रगति	भगवतीप्रसाद श्रीवास्तव	३.५०
विज्ञान के चमत्कार	भगवतीप्रसाद श्रीवास्तव	२.७५
परमाणु शक्ति	भगवतीप्रसाद श्रीवास्तव	२.७५
घरेलू बिजली	भगवतीप्रसाद श्रीवास्तव	४.००
सरल विज्ञान	भगवतीप्रसाद श्रीवास्तव	१.०६

ज्ञानमण्डल लिमिटेड, वाराणसी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैं जिन पर अब हम विचार करते हैं :

प्रारम्भिक पृष्ठों का सम्पादन

पहले हम सम्पादन-कार्य को लेते हैं। इसमें सबसे पहले प्रारम्भिक पृष्ठों (Fly-pages) के सम्पादन का कार्य आता है। इन पृष्ठों में मुख-पृष्ठ (टाइटिल), प्रिंट-लाइन वाला पृष्ठ, समर्पण-पृष्ठ, आमुख (Foreword), भूमिका तथा विषय-सूची आदि आते हैं।

टाइटिल-पेज का कोई एक निश्चित रूप तय करना न तो सम्भव है, न ही वांछनीय। इस सम्बन्ध में केवल इतना ही कहा जा सकता है कि टाइटिल सरल हो या अलंकृत, तथा उसमें कैसे टाइपों का प्रयोग किया जाय—ये बातें पुस्तक के विषय से ताल-मेल रखती हुई होनी चाहिएँ।

पुस्तक के नाम के सम्बन्ध में भी सम्पादक को विचार करना चाहिए। यदि नाम दुर्बोध हो, उसका उच्चारण कठिन हो, वह अधिक लम्बा हो, पुस्तक की विषय-वस्तु का कुछ भी संकेत न देता हो, अथवा उसके सम्बन्ध में भ्रम उत्पन्न करने वाला हो तो लेखक से परामर्श लेकर पुस्तक का नाम बदल देना चाहिए।

टाइटिल-पेज पर पुस्तक का नाम, लेखक का नाम, यदि पुस्तक अनूदित ग्रंथ हो तो अनुवादक का नाम, और प्रकाशन-गृह का नाम तथा पता होना चाहिए। यदि पुस्तक में कलात्मक और काफी संख्या में चित्र दिये गए हैं तो चित्रकार का नाम भी देना चाहिए। टाइटिल-पृष्ठ की पुश्त वाले पृष्ठ पर पुस्तक के प्रकाशन का महीना तथा वर्ष, मूल्य, कापीराइट यदि हो तो उसका उल्लेख तथा उसका अन्तर्राष्ट्रीय चिन्ह Ⓒ तथा मुद्रण संस्था का नाम व पता होना चाहिए।

इन दोनों पृष्ठों का मैटर ठीक करके सम्पादक को चाहिए कि वह समर्पण-पृष्ठ, आमुख, भूमिका तथा विषय-सूची आदि के पृष्ठ ठीक इसी सिलसिले में रखे।

मुख्य पुस्तक का सम्पादन

फिर मुख्य पुस्तक का सम्पादन आता है। इसमें यह देखना चाहिए कि पुस्तक उचित लम्बाई के अध्यायों में विभक्त की गई है या नहीं। जहाँ तक हो सके (और इस कार्य में यदि लेखक की सहायता की आवश्यकता हो तो ले लेनी चाहिए) अध्याय बहुत असम और असंतुलित नहीं होने चाहिएँ। एक अध्याय का अन्त लम्बी यात्रा में पड़ाव के समान है। पुस्तक-यात्री अध्याय समाप्त करके मानो एक पड़ाव पर पहुँचकर मानसिक आराम करना चाहता है। दूसरे इस भाग-दौड़ और व्यस्तता के युग में अधिकांश लोगों के लिए यह सम्भव नहीं है कि वे कई घण्टों में समाप्त होने वाला एक अध्याय एक बार बैठकर समाप्त करें।

अध्यायों के उचित विभाजन के बाद सम्पादक को यह देखना चाहिए कि प्रत्येक अध्याय का विभाजन उचित लम्बाई के अनुच्छेदों में किया गया है या नहीं। यदि ऐसा नहीं किया गया है तो सम्पादक को यह कार्य स्वयं कर देना चाहिए। प्रत्येक अनुच्छेद के प्रारम्भ होने के स्थान को एक विशेष चिह्न द्वारा निर्दिष्ट कर देना चाहिए।

जिन-जिन टाइपों का प्रयोग शीर्षकों में तथा उपशीर्षकों में किया जाना है उनका वहाँ-वहाँ स्पष्ट निर्देश दे देना चाहिए। सारी पुस्तक में समान स्थलों के लिए तथा समान महत्व के शीर्षकों के लिए समान टाइपों का निर्देश देना चाहिए।

यदि पुस्तक में फुटनोट दिये गए हैं तो उनका एक ही ढंग रखना चाहिए—चाहे उनका जहाँ रेफरेंस आया है उसी पृष्ठ के नीचे दें, चाहे प्रत्येक अध्याय के अन्त में दें, चाहे सारी पुस्तक के अन्त में।

यदि पुस्तक में उद्धरण दिये गए हैं तो उनके मूल स्रोत का उल्लेख करने की भी समान विधि अपनानी चाहिए। उनके लिए प्रयुक्त किये जाने वाले टाइपों का भी यथास्थान निर्देश कर देना चाहिए।

यदि कविता की पुस्तक है तो उसके विभिन्न छन्दों के सैटिंग का निर्देश भी सम्पादक को देना चाहिए।

चित्रों के नीचे यदि captions दिये गए हैं तो सम्पादक को देखना चाहिए कि या तो captions सभी चित्रों के नीचे दिये जायँ या किसी के भी नीचे न दिये जाएं। Captions में प्रयुक्त किये जाने वाले टाइप भी समान रखने चाहिएँ और उनका यथास्थान निर्देश कर देना चाहिए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चित्रों के सम्बन्ध में निर्णय

चित्रों की समस्या भी मैं सम्पादन के अन्तर्गत लेता हूं। पाण्डुलिपि पढ़कर सम्पादक को यह विचार तथा निर्णय करना चाहिए कि पुस्तक में चित्रों की आवश्यकता है या नहीं। बालकों तथा नवसाक्षरों के लिए जो पुस्तकें प्रकाशित की जानी हों उनमें तो अवश्य ही चित्र होने चाहिएँ; अन्य प्रकार की पुस्तकों के सम्बन्ध में सोचना होगा। कुछ विषय ऐसे हैं जिनमें चित्र अनिवार्य हैं—जैसे विज्ञान, कृषि, यात्रा, भूगोल, पुरातत्त्व आदि तथा प्राविधिक पुस्तकें।

यदि यह तय हो जाय कि पुस्तक में चित्र देने चाहिएँ तो यह प्रश्न सामने आता है कि चित्र कितने और किस प्रकार के हों। चित्र देने के दो अभिप्राय होते हैं—एक तो किसी दुर्बोध बात को स्पष्ट करना, दूसरे पुस्तक को अलंकृत करना। विज्ञान, कृषि, यात्रा, भूगोल-सम्बन्धी पुस्तकों, प्राविधिक पुस्तकों तथा इसी प्रकार की अन्य पुस्तकों में तो चित्र, डायाग्राम, मानचित्र आदि देने का अभिप्राय केवल दुर्बोध विषयों को स्पष्ट करना ही होता है। किन्तु बालकों तथा नवसाक्षरों के साहित्य में पुस्तक को अलंकृत करने (और इस तरह उसे सुग्राह्य अथवा नयनाभिराम बनाने) का उद्देश्य भी होता है। उद्देश्य चाहे कोई भी हो, किन्तु यह ध्यान रखना चाहिए कि चित्र न तो बहुत अधिक हों, न बहुत कम। इस सम्बन्ध में पुस्तक की तुलना किसी नारी से की जा सकती है। अत्यन्त सुन्दर नारी का सौन्दर्य भी अत्यधिक अलंकारों के प्रयोग से दब जाता है और दूसरी ओर साधारण-से-साधारण स्त्री भी अलंकारों और मेक-अप की सहायता से अपने शरीर को कुछ आकर्षक बना लेती है। दूसरी उपमा मैं संगीत के क्षेत्र से देना चाहता हूँ। जहाँ एक ओर निपुण-से-निपुण गायक का गायन भी वाद्य-यन्त्र की सहायता से अधिक मधुर और आकर्षक बन जाता है, वहाँ दूसरी ओर यदि वाद्य यन्त्र की आवाज इतनी ऊँची हो जाय कि वह गायक की आवाज को दबा दे तो गायन बिगड़ जाता है। यही दृष्टिकोण चित्रों के सम्बन्ध में अपनाना चाहिए।

चित्रों में आवश्यक बातें स्पष्ट रूप से उभरनी चाहिएँ। बच्चों की पुस्तकों के लिए यह बात बहुत महत्त्व रखती है। अनावश्यक तथा बहुत सारी वस्तुओं को चित्र में देने से मुख्य चित्रणीय बात की ओर से ध्यान हट जाता है। मैंने बच्चों की एक पुस्तक में संसद्-भवन का एक चित्र देखा जिसमें चित्र के तीन-चौथाई अग्रभाग (foreground) में पेड़ आदि थे और पीछे, थोड़े-से स्थान में संसद्-भवन, जो चित्र में अच्छी तरह दिखाई भी नहीं दे रहा था। चित्रों के आकार का भी ध्यान रखना चाहिए। छोटे बच्चों की पुस्तकों में बड़े-बड़े चित्र होने चाहिएँ। साथ ही जितनी चीजें चित्र में दिखलानी आवश्यक हों उनको ध्यान में रखकर चित्र का आकार तय करना चाहिए।

विराम-चिह्नों का प्रयोग

विराम-चिह्नों के सम्बन्ध में भी हिन्दी में बहुत घपला है। अधिकांश लेखक बहुत कम विराम-चिह्न लगाते हैं। यथास्थान आवश्यक विराम-चिह्न लगाना सम्पादक के आवश्यक कार्यों में से एक है। चूँकि हमने अधिकांश विराम-चिह्न अंग्रेजी भाषा से लिये हैं और उस भाषा में इनके प्रयोग के लिए निश्चित नियम हैं, इसलिए हिन्दी में भी उन्हीं नियमों का पालन किया जा सकता है। साधारणतया प्रेस-कॉपी में विराम-चिह्न नहीं लगाए जाते, बल्कि प्रूफ़-संशोधन के समय उन्हें लगाया जाता है, जिससे प्रेस में बड़ी गड़बड़ होती है और विराम-चिह्नों-सम्बन्धी बहुत-सी अशुद्धियाँ भी रह जाती हैं।

शब्दों की अक्षरी-सम्बन्धी सम्पादन-कार्य

इस वार्ता के प्रारम्भ में मैंने सम्पादन-कार्य के दो मुख्य पहलुओं के अतिरिक्त एक तीसरे पहलू का भी उल्लेख किया था और वह है भाषा-सम्बन्धी। उसके विषय में भी दो-तीन बातें कहनी आवश्यक हैं। यहाँ मेरा संकेत किसी लेखक की मूल भाषा की ओर नहीं है। बहुत-से लेखक अपनी मूल भाषा में कोई संशोधन नहीं चाहते; और यदि इस प्रकार का संशोधन होना आवश्यक हो ही तो यह कार्य उस विषय के उस अधिकारी विद्वान् द्वारा होना चाहिए जिससे पाण्डुलिपि का संशोधन एवं परिष्कार कराया जाय। किन्तु प्रकाशक के अपने कार्यालय में जो सम्पादन उसका अपना सम्पादक प्रेस-कॉपी तैयार करते समय करता है उसके अन्तर्गत भाषा का कुछ अन्य प्रकार का संशोधन आता है। मेरा संकेत शब्दों की अक्षरी (स्पेलिंग), अनुस्वार और अनुनासिक अक्षरों के प्रयोग,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डॉ० लक्ष्मीनारायण लाल
का
नवीन उपन्यास
रूपाजीवा
प्रेस में है।
अगले अंक में उसके सम्बन्ध में
अधिक जानकारी की
प्रतीक्षा करें।
राजकमल
राजकमल
प्रकाशन प्राइवेट लि:
दिल्ली : इलाहाबाद : बम्बई : पटना : मद्रास

योजक (हाइफ़न) के प्रयोग, चन्द्र-बिन्दु अथवा अनुस्वार के प्रयोग तथा समस्त (संयुक्त) शब्दों की लेखन-विधि तथा विभक्तियों को शब्दों के साथ लगाने या न लगाने की समस्याओं की ओर है। उल्लिखित बातों में हिन्दी-जगत् में बड़ी गड़बड़ है। 'जाएँ' लिखें या 'जायें', 'गए' लिखें या 'गये', 'चाहिये' लिखें या 'चाहिए', 'लिए' लिखें या 'लिये' इत्यादि—इस सम्बन्ध में हिन्दी विद्वानों में बड़ा मतभेद है। यही बात आधे 'ङ', 'ञ' और 'न' के सम्बन्ध में है। कुछ विद्वान् 'गंगा' को 'गङ्गा' (अर्थात् आधे ङ के साथ) लिखने का आग्रह करते हैं और दूसरे विद्वान् अनुस्वार के साथ लिखना भी शुद्ध मानते हैं। अर्धचन्द्र-बिन्दु के प्रयोग में तो और भी अधिक चपला है। समस्त (संयुक्त) शब्दों में से किन शब्दों को इकट्ठा एक शब्द बनाकर लिखा जाय और किनके बीच में हाइफ़न लगाया जाय—इसका भी कोई निश्चित नियम नहीं है। विभक्तियाँ शब्द के साथ जोड़ी जायँ या अलग रक्खी जायँ—इस प्रश्न पर भी दो मत हैं। शब्दों का प्रामाणिक रूप स्थिर करना तथा जिन समस्याओं की ओर संकेत किया गया है, उनका समाधान करना अत्यन्त महत्त्वपूर्ण और आवश्यक कार्य है। यह कार्य वास्तव में भाषा-शास्त्रियों, विद्वानों, हिन्दी-संस्थाओं तथा भारत-सरकार का है। किन्तु जब तक इन प्रश्नों पर निश्चयात्मक निर्णय न हो तब तक प्रकाशक क्या करें? बहुत-से लेखक अपने प्रयोगों पर आग्रह करते हैं। यदि वे आग्रह नहीं करते तो प्रूफ़-संशोधक इस सम्बन्ध में अपना अलग-अलग मत रखते हैं और उसके परिपालन के लिए मुद्रक से आग्रह करते हैं। बल्कि प्रायः देखा यह गया है कि उनका कोई निश्चित मत होता ही नहीं। जब जैसा मन में आया शब्दों का रूप बना दिया।

हिन्दी शब्दों की अक्षरी के अतिरिक्त यह कठिनाई अंग्रेज़ी तथा अन्य विदेशी भाषाओं के शब्दों की हिन्दी-अक्षरी के सम्बन्ध में और भी जटिल है।

इस समस्या का समाधान, जैसा कि मैंने अभी-अभी कहा है, अखिल-भारतीय स्तर पर होना चाहिए। किन्तु जब तक यह स्थिति न आये तब तक प्रकाशन-संस्थाएँ अपनी एक निश्चित नियमावली बना सकती हैं। पाण्डुलिपि के सम्पादन के समय सारी पाण्डुलिपि के शब्दों का लेखन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक ही ढंग से कर देना चाहिए।

यदि हमारा संघ एक सब-कमिटी बनाकर शब्दों के प्रामाणिक रूप स्थिर कर दे और उन प्रामाणिक रूपों का प्रयोग भारत के समस्त प्रकाशन-गृह करने लग जायें तो यह हिन्दी-भाषा की एक बड़ी सेवा होगी और हम कम-से-कम इस एक समस्या का बोझ अपने विद्वानों, लेखकों, हिन्दी-संस्थाओं और भारत-सरकार के कंधों पर से उतार सकेंगे।

विदेशी नामों की अक्षरी

अक्षरी-सम्बन्धी एक नई कठिनाई विदेशी पुस्तकों के अनुवाद के सम्बन्ध में आने लगी है। विदेशी लोगों के नामों, पहाड़ों, नदियों, नगरों, ग्रामों आदि के ठीक उच्चारण का पता न होने से यह पता नहीं चलता कि हिन्दी में उनकी अक्षरी ठीक बन पाई है या नहीं। वैसे तो विदेशी नामों का ठीक उच्चारण ज्ञात करना मूलत: अनुवादक का काम है, किन्तु कई बार यह कार्य अनुवादक के वश का नहीं होता। ऐसी स्थिति में प्रकाशन-गृहों को भारत-स्थित विदेशी दूतावासों के Cultural Attachés से सहायता ले लेनी चाहिए। उच्चकोटि के विदेशी ग्रन्थों के प्रामाणिक अनुवादों के सम्बन्ध में यह सावधानी अत्यन्त आवश्यक है। नामों का ठीक उच्चारण ज्ञात करके सम्पादन के समय उन नामों की अक्षरी तदनुसार कर देनी चाहिए। साथ ही यह ध्यान रखना भी बहुत आवश्यक है कि समूची अनूदित कापी में एक नाम की अक्षरी एक-जैसी ही हो।

'क़', 'ख़', 'ग़', 'ज़' तथा 'फ़' का प्रश्न

यहाँ एक प्रश्न उर्दू-फ़ारसी के 'क़', 'ख़', 'ग़', 'ज़' और 'फ़' का भी विचारणीय है। इन अक्षरों का प्रयोग हिन्दी में होना चाहिए या नहीं, इस सम्बन्ध में विद्वानों में मतभेद है। 'शुद्ध भाषा' के पक्ष वाले इनके प्रयोग के विरुद्ध हैं। और जो इनके प्रयोग के पक्ष में हैं वे भी अपनी सम्मति के पक्ष में इस 'शुद्धवादिता' को ही युक्ति के रूप में पेश करते हैं। जब से विदेशी भाषाओं की पुस्तकों के अनुवाद हिन्दी में आने लगे हैं तब से यह समस्या और भी जटिल हो गई है। अंग्रेजी नामों में 'फ़' और 'ज़' आवाज़ों का काफ़ी प्रयोग होता है। रूसी भाषा में भी 'ख़', 'ज़' और 'फ़' बहुत मिलते हैं। अन्य कई विदेशी भाषाओं में

विश्व के महान् नाटककार

शेक्सपियर

अनुवादक

डॉ० रांगेय राघव

वेनिस का सौदागर

रोमियो जूलियट

जूलियस सीज़र

जैसा तुम चाहो

तिल का ताड़

बारहवीं रात

सम्राट् लियर

निष्फल प्रेम

भूल भुलैयाँ

एक सपना

परिवर्त्तन

हैमलेट

मैकबेथ

ऑथेलो

तूफ़ान

प्रत्येक का मूल्य दो रुपये

राजपाल एण्ड सन्ज़

कश्मीरी गेट, दिल्ली-६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भी यही स्थिति है। यद्यपि यह प्रश्न कि इन आवाज़ों को हिन्दी भाषा में स्थान दिया जाय या न दिया जाय मुख्यत: भाषा शास्त्रियों से सम्बन्ध रखता है, किन्तु मेरी राय में हमें ये आवाज़ें और ये अक्षर अपना लेने चाहिएँ। समय की आवश्यकताओं के अनुसार वर्णमाला में घटा-बढ़ी की जा सकती है। बड़ी 'ॠ' और 'ऌ' 'ॡ' का हिन्दी वर्णमाला से बहिष्कृत किया जाना तथा 'ड़' और 'ढ़' का उसमें सम्मिलित किया जाना इस बात के प्रमाण हैं कि वर्णमाला में परिवर्तन करना समय की आवश्यकताओं के अनुसार एक आवश्यक कार्य है। अस्तु, इस प्रश्न पर अन्ततः जो भी निर्णय हो, यह बात तो निश्चित है ही कि सम्पादन के समय यह ध्यान रखा जाय कि समूची पाण्डुलिपि में एक ही नियम का पालन हो।

पाण्डुलिपि का पृष्ठांकन

समूची पाण्डुलिपि के पन्नों पर ऊपर, दाएँ हाथ के कोने पर एक से लगाकर अन्त तक पृष्ठ-संख्या डाल देनी चाहिए।

मुद्रण

पाण्डुलिपि का सम्पादन हो लेने के पश्चात् प्रकाशक के सामने उसके मुद्रण का प्रश्न आता है। पुस्तक का क्या आकार हो, उसे किस कागज़ पर और किस टाइप अथवा टाइपों में छापा जाय, इत्यादि बातों का निश्चय करना होता है। हम अब मुद्रण-सम्बन्धी मुख्य-मुख्य समस्याओं पर विचार करते हैं।

पुस्तक का आकार

पहला प्रश्न आकार का आता है। आकार का निश्चय साधारणतया तीन दृष्टिकोणों से किया जाता है: पुस्तक किस विषय पर है; वह पाठकों के किस वर्ग के लिए प्रकाशित की जा रही है; तथा पुस्तक का वांछित मूल्य। पुस्तक का विषय क्या है, यह बात इसलिए महत्त्व रखती है कि कुछ विषयों के लिए बड़े आकार में पुस्तकें छापने की परम्परा लगभग निर्धारित हो चुकी है। उदाहरण के रूप में विज्ञान, इंजीनियरिंग, कानून, अनुसंधान, पुरातत्त्व, दर्शन-शास्त्र, आलोचना, रेफ़ेंस, क्लासिक्स, महाकाव्य आदि विषयों पर प्रकाशित होने वाले ग्रन्थ बड़े आकार में ही शोभा पाते हैं। पुस्तक के आकार का विषय की महत्ता, गम्भीरता एवं गुरुता से थोड़ा-बहुत सम्बन्ध अवश्य है—इस बात से इन्कार नहीं किया जा सकता।

आकार के सम्बन्ध में दूसरा दृष्टिकोण यह है कि पाठकों के किस वर्ग के लिए अमुक पुस्तक प्रकाशित की जा रही है। पुस्तक बच्चों के लिए है, या बड़ों के लिए; स्कूली-विद्यार्थियों के लिए है या कालिज के विद्यार्थियों के लिए; यात्रा में पढ़ने के लिए है या नित्य पूजा-उपासना के समय पाठ के लिए, अर्थात् जिस वर्ग के पाठकों के लिए पुस्तक प्रकाशित की जा रही है उसकी सुविधा सर्वोपरि होनी चाहिए और उसी दृष्टिकोण से पुस्तक के आकार का निर्णय करना चाहिए।

पहले से ही निर्धारित अथवा विशेष वांछित मूल्य पर पुस्तक बेचने के लिए पुस्तक का आकार बड़ा-छोटा करने की नीति कोई अच्छी नीति नहीं है। पुस्तक का विषय और पुस्तकों के सम्भावित पाठकों का वर्ग इन्हीं दो दृष्टिकोणों से पुस्तक का आकार तय किया जाना चाहिए।

टाइप का चुनाव

टाइप के प्रश्न का निर्णय भी बहुत-कुछ इन्हीं दो बातों पर निर्भर करता है और करना चाहिए। बच्चों की पुस्तकों के लिए तो विशेष रूप से उनकी आयु के अनुसार मोटे अथवा अधिक मोटे टाइपों का चुनाव होना चाहिए। वृद्धजनों के लिए तथा नव साक्षरों के लिए भी मोटे टाइप होने चाहिएँ। पुस्तक के लिए जो टाइप चुना जाय उसीके अनुरूप अर्थात् उससे ताल-मेल खाते हुए टाइप ही अध्यायों के शीर्षकों, अध्यायों के बीच में आने वाले उप-शीर्षकों, फुटनोटों, उद्धरणों, चित्रों के नीचे के कैप्शनों आदि के लिए चुने जाने चाहिएँ। पुस्तक का सुन्दर गेट-अप बनाने के लिए उचित टाइपों का चुनाव बहुत महत्त्व रखता है। टाइप के प्रसंग में में यहाँ एक बात की ओर आप लोगों का ध्यान विशेष रूप से आकर्षित करना चाहता हूँ। चूंकि अंग्रेज़ी में 10 pt. 8 pt. और 6 pt. के टाइप चलते हैं, इसलिए हमें हिन्दी में भी इन टाइपों का निर्माण और प्रयोग करना चाहिए—कुछ ऐसी धारणा हम लोगों में बन गई है, और प्रतिदिन यह धारणा बल पकड़ती जा रही है। कुछ टाइप-फाउण्ड्रियों ने इस क्षेत्र में साहस दिखलाया भी है और १० तथा ८ प्वाइंट में टाइप बनाये हैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चित्र-कथा....

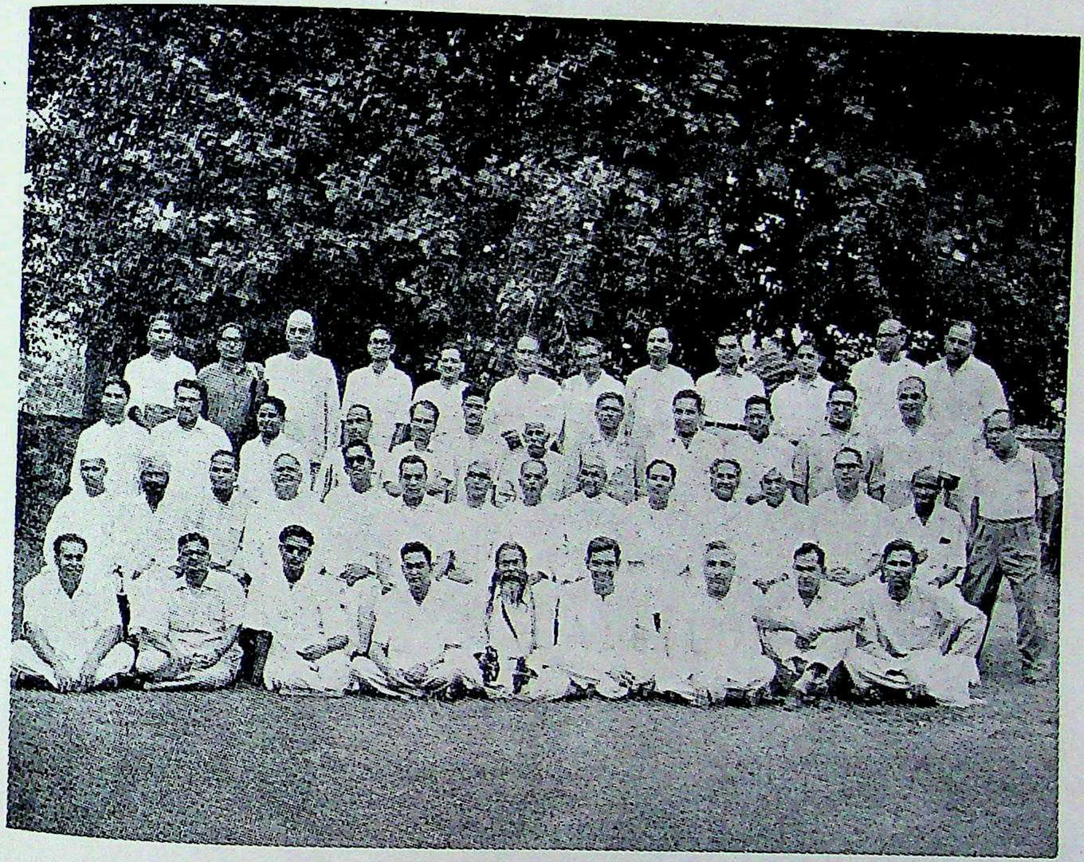

अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक-संघ द्वारा आयोजित प्रकाशन व पुस्तक-व्यवसाय सेमिनार में भाग लेने वाले सदस्यों का समूह-चित्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाएँ—श्री सोहनसिंह निर्माण की
विषय पर बोल

दाएँ—श्री कृष्णचन्द्र न-व्यवसाय
ठन और उसकी ति श्री दे
द्विवेदी अपने वि हैं।

ऊपर—विदाई समारो हिन्दी प्रक
की कार्यका।

बाएँ—विचार गोष्ठी लेखक, एक
एक मुद्रक, एक एक पुस्तका
ने भाग लिया

दाएँ—'अमरीका में पर वार्ता
श्री टी०

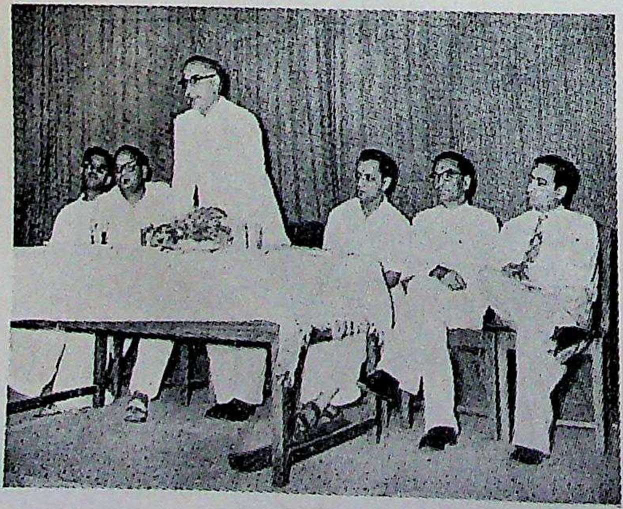

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

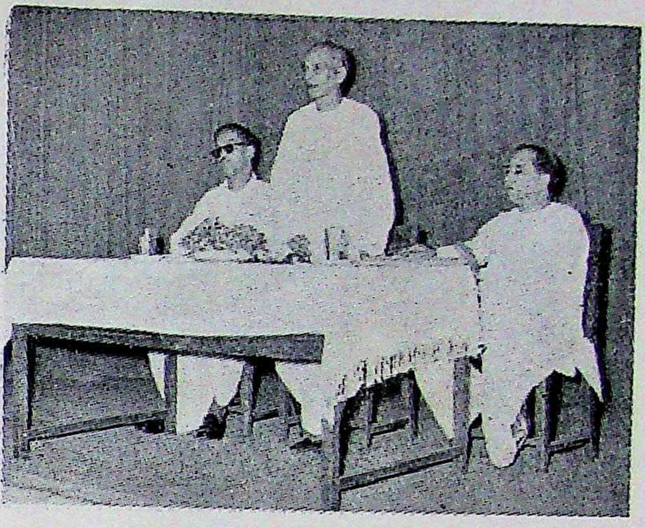

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

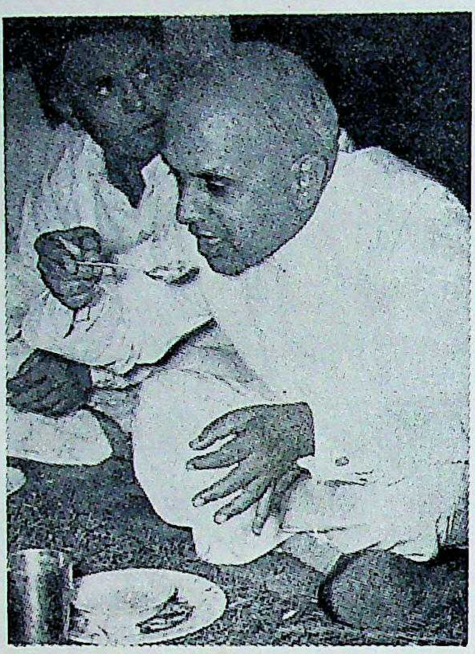

दिल्ली के प्रकाशकों द्वारा प्रतिदिन दिये गए सहभोज अत्यधिक थकान को दूर रखने में सहायक हुए। कुछेक में सांस्कृतिक कार्यक्रम को भी स्थान मिला।

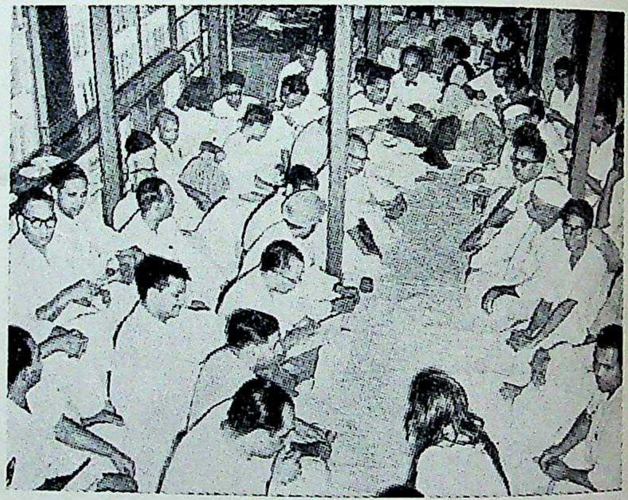

ऊपर—श्री रामलाल पुरी प्रकाशन-कार्य की तरह भोजन में भी पूर्ण तन्मयता से संलग्न हैं।

बीच में—राजकमल प्रकाशन द्वारा दिये गए सहभोज के बाद संगीत का कार्यक्रम।

बाएँ—सेमिनार के संचालन से ही उदरपूर्ति होते न देख कष्ट-साध्य प्रक्रिया में श्री दीनानाथ मलहोत्रा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(बल्कि सुना गया है कि ६ प्वाइंट टाइप भी बनाया जा रहा है)। हम यह भूल जाते हैं कि अंग्रेज़ी के अक्षरों में ऊपर-नीचे मात्राएँ नहीं होतीं। हिन्दी के छोटे टाइपों का मुख्य शरीर इतना छोटा हो जाता है कि उससे पाठकों की आँखों पर बुरा प्रभाव पड़ सकता है। मैं बहुत बारीक टाइपों के प्रयोग के विरोध में अपनी आवाज़ उठाना चाहता हूं। टाइप का प्रश्न सीधे तौर पर पाठक की आँखों से सम्बन्धित है और शिक्षा के दिनोंदिन अधिकाधिक प्रसार के कारण यह प्रश्न राष्ट्रीय रूप धारण कर रहा है। बारीक टाइपों में छपी हुई पुस्तकों के पढ़ने से निःसन्देह पाठक की आँखों पर बुरा प्रभाव पड़ता है। बच्चे, बड़े, बूढ़े सभी के लिए नेत्र-ज्योति का प्रश्न अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। टाइपों के चुनाव के समय हमें इस प्रश्न को अवश्य सामने रखना चाहिए।

पृष्ठ की लम्बाई-चौड़ाई

पुस्तक के आकार और टाइप का निर्णय करने के बाद मुद्रण के लिए पंक्ति की चौड़ाई और पृष्ठ की लम्बाई का प्रश्न हमारे सामने आता है। इस सम्बन्ध में यद्यपि कोई निर्विवाद नियम नहीं बनाया जा सकता, किन्तु मोटा दृष्टिकोण इस प्रश्न को तय करने में यही रखना चाहिए कि पृष्ठ के चारों ओर मार्जिन उचित और सुन्दर हो। मार्जिन पुस्तक के गेट-अप पर बहुत प्रभाव डालता है। अधिक मार्जिन से पुस्तक की सुन्दरता बढ़ती है और कम मार्जिन से पुस्तक भद्दी लगती है। अधिक लम्बा-चौड़ा पृष्ठ देखकर कुछ पाठक भी घबरा जाते हैं। हमारे देश में पुस्तकों के जो चार-पाँच अधिक चालू साइज़ हैं उनके पृष्ठों के मुद्रित मैटर की जो लम्बाई-चौड़ाई प्रयोगों के बाद तथा व्यावहारिक दृष्टि से स्टैंडर्ड मानी जाती है वे इस प्रकार हैं—

२०×३०/१६	—	२२×३६ ऐम
१८×२२/८	—	२४×४२ ,,
१७×२७/८	—	३०×४० ,,
२०×२६/८	—	२८×४६ ,,
२०×३०/८	—	३४×४८ ,,

यद्यपि विशेष परिस्थितियों में पृष्ठ की लम्बाई-चौड़ाई घटाई भी जा सकती है और बढ़ाई भी, किन्तु उचित नाप-मान यही लगते हैं, जो यहाँ दिये गए हैं।

स्पेस और लेड

लाइनों के बीच में लेड कौन-सी डाली जाय—यह प्रश्न भी पुस्तक की सुन्दरता और सुपाठ्यता से सम्बन्धित है। मोनो टाइप के युग से पहले प्रायः हैंड-कास्ट १२ प्वाइंट ब्लैक-फेस टाइप पुस्तकों के मुद्रण में प्रयुक्त होता था और उसमें दो लाइनों के बीच में ३-३ प्वाइंट की दो लेडें अच्छी लगती थीं। फिर सफेद फ़ेस और गुट्टा टाइप चले, उनमें ३ प्वाइंट की १ लेड डालने की परिपाटी चल पड़ी। फिर मोनो टाइपों का युग आया। मोनो टाइप १२ प्वाइंट में भी आम तौर पर ३ प्वाइंट की १ लेड डालने का रिवाज चलता है। किन्तु कुछ दिनों से कुछ पुस्तकों में ३ की बजाय २ प्वाइंट की लेड डालने की परिपाटी चल पड़ी है। अब १½ प्वाइंट की लेडें भी बनाई जा रही हैं और कई पुस्तकें बिना लेड के भी मुद्रित कराई जाती हैं। इसी प्रकार की स्थिति शब्दों के बीच में दी जाने वाली स्पेसों के सम्बन्ध में है। मेरे विचार में हिन्दी में ३ प्वाइंट से कम की लेड नहीं दी जानी चाहिए। मैं समझता हूँ कि शब्दों के बीच की स्पेसें, लाइनों के बीच की लेडें तथा अध्यायों के अन्त में पृष्ठ पर छूटी हुई खाली जगह की समता किसी नगर की गलियों, सड़कों और पार्कों के साथ की जा सकती है। अच्छा मार्जिन छोड़ने और शब्दों तथा लाइनों के बीच में उचित स्पेस और लेड डालने से शब्दों और लाइनों को 'सांस लेने का स्थान' मिल जाता है, पुस्तक सुन्दर लगती है और पाठक को पुस्तक पढ़ने में सहूलियत होती है।

लाइनों की अधिक चौड़ाई, शब्दों के बीच में कम स्पेसें तथा लाइनों के बीच में पतली लेडें साधारणतया पुस्तक की पृष्ठ-संख्या कम करने के उद्देश्य से दी जाती हैं। किन्तु इस सम्बन्ध में चादर के अनुसार पांव पसारने का नियम उचित नहीं है। सुन्दर गेट-अप का कम कलेवर रखने की वेदी पर बलिदान नहीं करना चाहिए।

फ़ोलियो

प्रत्येक पुस्तक में दाएँ बाएँ दोनों ओर के पृष्ठों पर ऊपर फ़ोलियो भी अवश्य होने चाहिएँ। साधारणतया बाईं ओर के पृष्ठों पर पुस्तक का नाम और दाईं ओर के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पृष्ठों पर अध्याय का शीर्षक रहना चाहिए, किन्तु पुस्तक के विषय के अनुसार इसे बदला भी जा सकता है। पुस्तकों के आवरण (डस्ट-कवर) तथा साधारण कवर-पेपर का बाहरी टाइटिल पेज बहुत दिन नहीं चलते, और अन्दर का मुख पृष्ठ (Inner Title-page) भी कई बार फट जाता है। ऐसी स्थिति में यदि पृष्ठों पर फ़ोलियों में पुस्तक का नाम न दिया गया हो तो यह पता लगाना कठिन हो जाता है कि अमुक पुस्तक कौन-सी है।

नया अध्याय, नया पृष्ठ

विभिन्न अध्याय अथवा खण्ड 'रन-ग्रोन' किये जायँ या प्रत्येक अध्याय नये पृष्ठ से प्रारम्भ किया जाय, इस सम्बन्ध में पहले कहा जा चुका है। यहाँ यह दोहराना अनुचित नहीं होगा कि प्रत्येक अध्याय को नये पृष्ठ से ही प्रारम्भ करना चाहिए।

निर्देश-पत्रिका

उपरोक्त सब बातें एक निर्देश-पत्रिका पर लिखकर प्रेस में पाण्डुलिपि के साथ ही भेज देनी चाहिएँ। उस पत्रिका पर ये बातें होनी चाहिएँ—पुस्तक का आकार, पृष्ठ का मेज़र, टाइप, फ़ोलियो में क्या दिया जाय तथा अध्याय नये पृष्ठ पर दिये जायँ या (यदि बहुत विवशता हो तो) उन्हें रन-ग्रोन दिया जाय। साथ ही उस पत्रिका पर यह भी देना चाहिए कि पुस्तक की कितनी प्रतियाँ छापी जायँ और पुस्तक किस कागज पर छपेगी। ऐसी पत्रिका अथवा फ़ार्म छपवाए जा सकते हैं और उनमें उचित खानापूरी की जा सकती है। उसकी एक प्रति प्रकाशक के कार्यालय में भी रहनी चाहिए। इसी पत्रिका पर मुद्रण समाप्त करने की तिथि भी दी जा सकती है। यदि पुस्तक में रंगीन छपाई होनी हो तो इस सम्बन्ध में भी आवश्यक निर्देश उस पर दिये जा सकते हैं। यदि और कोई आवश्यक निर्देश हो तो वह भी उसी पर दिया जाना चाहिए।

काग़ज़ का चुनाव

पुस्तक के लिए उचित प्रकार के काग़ज़ का चुनाव भी एक महत्त्वपूर्ण समस्या है। काग़ज़ का चुनाव जहाँ एक ओर पुस्तक के वांछित मूल्य पर निर्भर करता है वहाँ दूसरी ओर यह दृष्टिकोण भी सामने रखना चाहिए कि पुस्तक की प्रतियाँ कितने दिन तक चलने की अथवा चलाए जाने की सम्भावना है। पुस्तकालयों में रखी जाने वाली पुस्तकों के लिए मोटे और मज़बूत काग़ज़ का होना अत्यन्त आवश्यक है। अच्छे मुद्रण के लिए ७ बातें आवश्यक हैं उनमें से एक काग़ज़ भी है। उसी मशीन पर, उसी टाइप से और उसी प्रेस में दो भिन्न क्वालिटी के काग़ज़ों पर वही पुस्तक छापी जाय तो उनकी सुन्दरता में बहुत अन्तर दिखाई देगा। हम लोग पाश्चात्य देशों की-सी छपाई चाहते हैं, और यह अत्यन्त वांछनीय बात है। किन्तु खेद है कि हमारे देश में उत्तम क्वालिटी का काग़ज़ नहीं बनता। एक ही मिल का एक ही पौंडेज का काग़ज़ कुछ दिनों के अन्तर से लिया जाय तो दोनों लौटों (lots) के काग़ज़ में शेड का अन्तर हो जाता है। इस कारण यदि किसी पुस्तक के लिए दो-तीन बार काग़ज़ लेना पड़े तो पुस्तक का मुद्रण दोषपूर्ण हो जाता है। काग़ज़ का आयात नियन्त्रित होने से अच्छी क्वालिटी के काग़ज़ की उपलब्धि लगभग असम्भव हो गई है। पाश्चात्य देशों की छपाई का

कविराज हरनाम दास बी० ए० की
सन् १९२३ से विख्यात रचनाएँ

विवाहित आनन्द (१९२४ से साढ़े चार लाख बिक चुकी है) हिन्दी, उर्दू १); पंजाबी, गुजराती, मराठी १।।); अंग्रेजी २); तेलगू २।); सस्ता संस्करण हिन्दी ।।।), उर्दू १)।
पत्नी पथ-प्रदर्शक (१९२६ से तीन लाख बिक चुकी है) हिन्दी, उर्दू, पंजाबी १।।)।
केवल भोजन द्वारा स्वास्थ्य (१९२३ से तीन लाख बिक चुकी है) हिन्दी १।); उर्दू, पंजाबी १।।)।
स्वास्थ्य शिक्षा (एक लाख बिक चुकी है) हिन्दी, उर्दू १।।)।
गर्भवती, प्रसूता और बालक (एक लाख बिक चुकी है)
जीवन-यात्रा (उतार-चढ़ाव; फूल और कांटे)—नई रचना १।।)।
यौवन रक्षा हिन्दी, उर्दू =); पंजाबी ≡)।

पता—**कविराज हरनाम दास बी० ए० एण्ड सन्ज़,**
गौरीशंकर मन्दिर (लाल किले के पास) चाँदनी चौक, दिल्ली-६

PHARMACY AND PUBLICATIONS
सुखदाता
KAVIRAJ HARNAM DAS B.A. & SONS, DELHI.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...र प्राप्त करने के लिए वैसे ही साधन भी होने चाहिएँ। और अच्छी क्वालिटी का कागज़ निःसन्देह उत्तम छपाई के साधनों में एक महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। मैं समझता हूँ कि संघ को यह मामला पेपर-मिलों के साथ उठाना चाहिए और कुछ बढ़िया क्वालिटी के कागज़ों के निर्माण पर ज़ोर देना चाहिए—चाहे वे अभी थोड़ी मात्रा में ही क्यों न बनाए जायँ। कुछ विशेष क्वालिटी के कागज़ों का आयात भी मुद्रा-सम्बन्धी कठिनाइयों के बावजूद भारत सरकार पर ज़ोर डालकर सम्भव किया जा सकता है। निःसन्देह अच्छी पुस्तकों का प्रकाशन (विशेषकर टिकाऊपन की दृष्टि से) राष्ट्रहित के अन्तर्गत आ जाता है।

पुस्तक के कलेवर का, जहाँ तक सम्भव हो, ठीक-ठीक अनुमान लगाकर एक पुस्तक का पूरा कागज़ एक बार खरीदकर प्रेस में भेज देना चाहिए।

कागज़ का चुनाव किसी अंश तक मौसम पर भी निर्भर करता है। कागज़ में थोड़ी नमी होने से मुद्रण अच्छा होता है। यदि वायु में नमी की मात्रा (Humidity) थोड़ी अधिक हो तो मुद्रण पर उसका अच्छा प्रभाव पड़ता है। गर्मी के खुश्क मौसम में एंटिक कागज़ (नमी की मात्रा कम होने के कारण) उपयुक्त नहीं रहता।

यदि पुस्तक की पृष्ठ-संख्या कम हो तो मोटा कागज़ प्रयोग में लाना चाहिए ताकि पुस्तक का कलेवर अच्छा लगे।

सचित्र पुस्तकों के लिए चिकना कागज़ होना चाहिए। ऐसे चित्र छापने से कोई लाभ नहीं, जो एक धब्बे के समान दिखाई दें। यदि रनिंग मैटर में हाफ़टोन ब्लाक जाने हैं तो चिकने कागज़ का प्रयोग और भी आवश्यक हो जाता है और रंगीन छपाई के लिए चिकने या आफ़सैट पेपर का प्रयोग (छपाई की विधि के अनुसार) अनिवार्य हो जाता है।

कागज़ के चुनाव में पुस्तक में प्रयुक्त किया जाने वाला टाइप भी कुछ महत्त्व रखता है। जैसे पतले टाइप से एंटिक कागज़ पर अच्छा मुद्रण हो जाता है, किन्तु मोटे टाइप में नहीं।

ब्लाक

कागज़ और ब्लाकों का अन्योन्याश्रय सम्बन्ध है। यदि ब्लाक पहले ही बने हुए हैं और वे हाफ़टोन या लाइन हैं तो इस स्थिति में कागज़ का चुनाव ब्लाकों के अनुसार होना चाहिए। किन्तु यदि डिज़ाइन और ब्लाक बनाने हैं तो उन्हें चुने हुए कागज़ के अनुसार बनवाया जाना चाहिए। हाफ़टोन ब्लाकों की सूरत में यह बहुत आवश्यक है कि कागज़ के अनुसार उनकी स्क्रीन रखी जाय। यह नहीं होना चाहिए कि ब्लाक १३३ स्क्रीन के बनवा लिए जायँ और हम उन्हें न्यूज़ प्रिंट या एंटिक पेपर पर छाप लें या ६५ स्क्रीन के ब्लाक बनवा लें और उन्हें आर्ट पेपर पर छापने लग जायँ।

प्रेस का चुनाव

उत्तम मुद्रण के लिए मैंने अभी यह कहा था कि इसके लिए ७ बातें आवश्यक हैं। वे हैं—

(१) मशीन की अवस्था अच्छी हो;

(२) टाइप नया या अच्छी हालत में हो और उसका कागज़ आदि के अनुसार ठीक चुनाव हो;

(३) स्याही अच्छी क्वालिटी की हो;

दो महत्त्वपूर्ण प्रकाशन

काव्य में उदात्त तत्त्व

डॉ० नगेन्द्र, एम० ए०, डी० लिट्०
द्वारा आचार्य लोंगिनुस के विश्व-प्रसिद्ध ग्रन्थ
'पेरि इप्सुस' का सरल हिन्दी अनुवाद
मूल्य ३.०० रु०

सुकवि समीक्षा

डॉ० दशरथ ओझा, एम० ए०, पी-एच० डी०
डॉ० विजयेन्द्र स्नातक, एम० ए०, पी-एच० डी०
प्राचीन तथा अर्वाचीन कवियों का जीवन-परिचय
तथा उनकी कृतियों पर प्रतिनिधि समीक्षा
मूल्य ५.०० रु०

राजपाल एण्ड सन्ज़
कश्मीरी गेट, दिल्ली-६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(४) कागज़ ठीक ढंग का हो;
(५) प्रेस का व्यवस्था-विभाग उत्तम हो;
(६) प्रेस के कर्मचारी दक्ष हों; और
(७) मौसम;

इन बातों में से कागज़ के सम्बन्ध में मैं काफ़ी कह चुका हूँ। मौसम अपने वश से बाहर की बात है—यद्यपि एयर-कंडीशनिंग की भाँति पश्चिमी देशों में मशीन-रूम की नमी को भी नियन्त्रित कर लिया जाता है और ऐसा यहाँ भी किया जा सकता है। शेष ५ बातों की छान-बीन करके प्रेस का चुनाव करना चाहिए।

नमूने का पेज

प्रेस के साथ यह व्यवस्था तय होनी चाहिए कि प्रेस में पाण्डुलिपि आने के बाद प्रेस एक पेज नमूने का बनाकर (जिसे निर्दिष्ट लम्बाई-चौड़ाई में तथा टाइप एवं टाइपों में सैट किया जाय) प्रकाशक के पास उसकी स्वीकृति के लिए भेज दे।

प्रूफ़-संशोधन

पुस्तक में अशुद्धियाँ न रहने पायें, यह एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण बात है, और इस पर जितना भी बल दिया जाय कम है। बच्चों की पुस्तकों, रेफरेंस-पुस्तकों, डिक्शनरियों, वैज्ञानिक एवं प्राविधिक पुस्तकों, कानूनी पुस्तकों आदि में अशुद्धियों का न रहना और भी आवश्यक है। प्रूफ़-संशोधन के समय मैटर में कोई परिवर्तन नहीं करना चाहिए। यदि पहले ही पाण्डुलिपि का ठीक सम्पादन कर दिया जाय तो किसी परिवर्तन की आवश्यकता रहती ही नहीं। पेज-प्रूफ़ में परिवर्तन करने से सारा सैटिंग बिगड़ जाता है और कई बार नई अशुद्धियाँ उत्पन्न हो जाती हैं। परिवर्तनों के कारण मुद्रक को भी परेशानी होती है और प्रूफ़ बार-बार देखने की आवश्यकता के कारण पुस्तक की प्रगति रुकती है, जिससे प्रकाशक को भी हानि होती है। अधिक परिवर्तनों के कारण कई बार प्रकाशक को अनावश्यक खर्च का बोझ भी उठाना पड़ता है।

हमारे अक्तूबर मास के प्रकाशन

• किशोर साहित्य		
बीरबल की गपशप :	ओमप्रकाश बेरी	१·२५
बीरबल की गागर-सागर :	,, ,,	१·२५
बीरबल का ज्ञान-ध्यान :	,, ,,	१·२५
• उपन्यास		
पुलिस :	राजकुमार	४·००
भूख और तृप्ति :	सरस्वती सरण 'कैफ'	६·००
• बाल साहित्य		
मुन्नू के मित्र :	कुलभूषण	१·२५
कैरमबोर्ड की परियाँ :	शारदा मिश्र	१·२५
• कहानी संग्रह		
मृत्यु की मीनार :	कृष्णचन्द्र 'भिक्खु'	२·५०
• शोध ग्रन्थ		
काव्य रूपों के मूल स्रोत और उनका विकास :	डॉ॰ शकुन्तला दुबे	१५·००

स्थानीय पुस्तक-विक्रेताओं से प्राप्त करें या सीधे हमें लिखें।

हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, ज्ञानवापी, वाराणसी-१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह बड़े खेद का विषय है कि हमारे यहाँ प्रूफ़-संशोधन-कला का प्रशिक्षण देने का कोई प्रबन्ध नहीं है। इस कला के प्रशिक्षण की भारत के प्रत्येक मुद्रण-केन्द्र में कोई-न-कोई व्यवस्था होनी चाहिए और प्रशिक्षित प्रूफ़-संशोधकों को प्रमाण-पत्र दिये जाने चाहिएँ। प्रूफ़-संशोधक भाषा के अच्छे जानकार तो होने ही चाहिएँ, साथ ही उन्हें प्रिंटिंग की तकनीक का भी अच्छा ज्ञान होना चाहिए।

लेखकों से प्रूफ़ पढ़वाया जाय या नहीं, यह भी एक प्रश्न है। बहुत-से लेखक प्रूफ़-संशोधन की कला और तकनीक से अनभिज्ञ होते हैं। दूसरे आम तौर पर देखा गया है कि लेखक प्रूफ़ पढ़ते समय मैटर में संशोधन एवं काट-छांट करने का लोभ संवरण नहीं कर पाते और प्रूफ़-संशोधन के समय परिवर्तन करने के परिणामों के सम्बन्ध में पहले कहा जा चुका है। यदि पुस्तक का सम्पादन ठीक ढंग से हो चुका है तो मैं समझता हूँ कि लेखकों से प्रूफ़-संशोधन का कार्य नहीं कराना चाहिए।

हिन्दी में प्रूफ़-संशोधन के चिह्न भी बनाए जाने चाहिएँ। यह बड़े दुःख की बात है कि हम अभी तक अंग्रेज़ी के चिह्नों का ही प्रयोग हिन्दी में करते हैं।

प्रगति-पट्ट

प्रत्येक प्रकाशन-संस्था में प्रोडक्शन-इन्चार्ज के कमरे में एक बड़ा-सा बोर्ड लगा होना चाहिए, जिस पर प्रत्येक पुस्तक की प्रगति का नक्शा होना चाहिए। पुस्तक का नाम, अनुमानित फ़ार्म-संख्या, टाइप, काग़ज, आकार, किस प्रेस में छप रही है, प्रेस में देने की तिथि, मुद्रण समाप्त करने की तिथि, विभिन्न फ़ार्मों की दैनिक प्रगति, इत्यादि बातें उस पट्ट पर लिखनी चाहिएँ।

जिल्द-बंधी

अन्त में जिल्द-बंधी का प्रश्न आता है। यह वास्तव में एक अलग वार्ता का विषय है। यहाँ मैं केवल इतना ही कहना चाहता हूँ कि हमारे देश में पक्की, मज़बूत जिल्द बँधवाने की ओर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है।

किशोर पाठकों के लिए उपहार और पुरस्कार में देने योग्य—

विश्वसाहित्य के अमर उपन्यास

पहली बार हिन्दी में प्रकाशित

अनेक चित्रों और रंग-बिरंगे आकर्षक आवरणों से सुसज्जित

गुलिवर की यात्राएँ (Gulliver's Travels)
रॉबिनहुड (Robinhood)
रॉबिन्सन क्रूसो (Robinson Crusoe)
आश्चर्य लोक (Alice in Wonderland)
कठपुतला (Pinnochio)
तीसमारखाँ (Don Quixote)
वीर सिपाही (Ivanhoe)
खजाने की खोज में (Treasure Island)

राजपाल एण्ड सन्ज़
कश्मीरी गेट, दिल्ली—६

अनुवादक : श्री श्रीकान्त व्यास
प्रत्येक का मूल्य : डेढ़ रुपया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तकालयों को, और उन सज्जनों को जो घर में निजी पुस्तकालय रखने का शौक रखते हैं, इस बात की बड़ी शिकायत है कि महँगी-से-महँगी पुस्तकों की जिल्दें भी बहुत दिन नहीं चलतीं। बच्चों की पुस्तकों की जिल्द भी बहुत पक्की होनी चाहिए, क्योंकि उनके हाथों में भी पुस्तकों के शीघ्र फटने की पूरी सम्भावना होती है। सिलाई जहाँ तक सम्भव हो जुज़बन्दी की होनी चाहिए।

वैसे भी पुस्तक को सुन्दर अथवा असुन्दर बनाने में जिल्द-बंधी का बड़ा महत्त्वपूर्ण भाग है। जिल्द-बंधी का काम यदि देखा जाय तो दर्जी के काम की तरह है, जो सस्ते कपड़े की बढ़िया सिलाई करके और बढ़िया कपड़े की खराब सिलाई करके बहुत अन्तर पैदा कर सकता है।

रूप-सज्जा (गेट-अप)

रूप-सज्जा कोई अलग विषय नहीं है। अब तक जो कुछ कहा गया है वह सब रूप-सज्जा पर प्रभाव डालता है। हाँ, इस खण्ड के अन्तर्गत आवरण (डस्ट-कवर) का प्रश्न रह जाता है। डस्ट-कवर दिया जाय या नहीं—इस प्रश्न पर भी प्रकाशकों में मतभेद है। भारत की आर्थिक स्थिति और सस्ती पुस्तकें प्रकाशित करने की आवश्यकता को ध्यान में रखा जाय तो ऐसा लगता है कि आज के युग में बिना डस्ट कवर के भी काम चल सकता है। किन्तु पुस्तक को आकर्षक बनाने के लिए डस्ट-कवर का दिया जाना आवश्यक प्रतीत होता है। यही नहीं बल्कि डस्ट-कवर को सुन्दर और आकर्षक बनाना भी आवश्यक प्रतीत होता है। कोई चीज कितने दिन तक चलती है—केवल यही दृष्टिकोण किसी वस्तु के निर्माण के सम्बन्ध में नहीं अपनाया जाता। प्रत्येक उद्योग में वस्तु की बाह्य रूप-सज्जा भी विक्रय-क्षमता बढ़ाने की दृष्टि से महत्त्व रखती है।

यदि डस्ट-कवर देना ही हो तो उसको सादा रखना चाहिए या रंगीन और उसे किस कागज पर छापना चाहिए—इन प्रश्नों का निर्णय बहुत हद तक दो बातों पर निर्भर करता है—एक तो यह कि पुस्तक किस स्तर की है—उसका विषय गम्भीर है या हल्का-फुल्का और दूसरा यह कि वह किस वर्ग के पाठक के लिए अभिप्रेत है। मोटी बात यह है कि डस्ट-कवर का डिज़ाइन तथा उसके रंगों आदि का पुस्तक के अन्दर के मैटर, रंग, चित्रों तथा सामूहिक गेट-अप से पूरा तालमेल होना चाहिए।

जैसा कि मैं अभी कह चुका हूँ, गेट-अप कोई अलग चीज नहीं है। पूरी पुस्तक की शक्ल-सूरत, रूप-रंग, एक-रस होने चाहिएँ। इस बात को स्पष्ट करने के लिए मैं नारी की पुनः उपमा देना चाहता हूँ। नारी के विभिन्न अंगों की आदर्श सुन्दरता के लिए कवियों और कलाकारों ने कुछ प्रतिमान निश्चित किये हैं—ऐसी आँखें, ऐसे केश, ऐसी कमर, ऐसा रंग आदि। यदि किसी स्त्री का केवल एक अंग आदर्श सौन्दर्य लिये हुए हो, किन्तु शेष अंग असुन्दर हों तो वह स्त्री सुन्दर नहीं लगेगी। दूसरी ओर यदि किसी स्त्री के समस्त अंग उन आदर्श नापमानों पर पूरे उतरते हों, किन्तु एक अंग खराब या विकृत या असुन्दर हो तो उस स्त्री की सारी सुन्दरता बिगड़ जाती है। फिर यदि किसी स्त्री का आकार, आकृति, अंग-सौष्ठव, आदि सब ठीक और सुन्दर हों भी और उस स्त्री के कपड़े गंदे या अस्त-व्यस्त हों, उसने अलंकार या तो बहुत अधिक पहन रखे हों या बिलकुल ही न पहने हों और प्रसाधन भी या तो कुरुचिपूर्ण कर रखा हो, या आवश्यकता से अधिक या बिलकुल ही न कर रखा हो तो भी उसकी सुन्दरता पूरी तरह नहीं निखरती; बल्कि कई बार वह निश्चित रूप से भद्दी लगने लगती है। पुस्तक की रूप-सज्जा की भी यही स्थिति है। उसके केवल एक या दो अंशों के बहुत बढ़िया होने से पुस्तक का गेट-अप सुन्दर नहीं बन पायगा। उसकी सुन्दरता के जो विभिन्न अंग हैं वे सब अपनी-अपनी जगह ठीक होने चाहिएँ—अच्छा कागज, उचित मार्जिन, शब्दों तथा लाइनों के बीच में उचित स्पेस और लेड, अच्छा टाइप, तथा पुस्तक के मैटर, उद्धरण, फुटनोट, शीर्षकों और उपशीर्षकों के टाइपों में उचित सन्तुलन, समान स्याही, यदि पुस्तक में चित्र हों तो सुन्दर, सुरुचिपूर्ण चित्र, यदि रंगीन छपाई हो तो रंगों का सुरुचिपूर्ण चुनाव और संयोजन, मैटर का उचित सम्पादन, अशुद्धियों का अभाव तथा ठीक ढंग का डस्ट-कवर—इन सबसे, तथा अन्य इसी प्रकार की बातों से मिलकर, पुस्तक की रूप-सज्जा बनती है। एक भी अंग खराब होने से पुस्तक की रूप-सज्जा बिगड़ जाती है। और जब हम

(शेष पृष्ठ ९६ पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिनकरजी की तीन नवीनतम कृतियाँ

काव्य की भूमिका

कवि के ग्यारह आलोचनात्मक निबन्धों का संग्रह—कविता की मुख्य प्रवृत्तियों, प्रेरणाओं, अभीष्ट तथा परख आदि की समस्याओं को समझने के लिए परम उपयोगी पुस्तक । मूल्य ४ रुपये मात्र ।

पन्त, प्रसाद और मैथिलीशरण

कविश्रेष्ठ श्री दिनकर जी द्वारा तीन अन्य प्रमुख कवियों के कृतित्व की गहनताओं को प्रकाशित करने वाले तीन निबन्धों का संकलन मू० ४) मात्र ।

वेणुवन

विभिन्न साहित्यिक विषयों पर एवं साहित्यिकों पर कवि के सूक्ष्म विश्लेषणात्मक, सरस निबन्धों का संग्रह । मू० ३) मात्र ।

दिनकरजी की अन्य कृतियाँ

सीपी और शंख : देश-विदेशी भाषाओं की कुछ अनन्य कविताओं का प्रतिबिम्ब लिये हुए इन कविताओं में पाठकों को नया रस मिलेगा । मूल्य २.५० न० पै०

नये सुभाषित : कई सौ विषयों पर दिनकरजी की लगभग दो सौ सूक्तियाँ । मूल्य १.५० न० पै०

चक्रवाल : कवि के रेणुका से लेकर 'नील कुसुम' तक प्रकाशित काव्य-ग्रन्थों में से प्रत्येक की कुछ चुनी हुई एक सौ रचनाएँ । आरम्भ में ८० पृष्ठ की सारगर्भित, महत्त्वपूर्ण भूमिका । मूल्य १० रुपये मात्र

उजली आग : लघु-कथाओं, विचारोत्तेजक गद्य-काव्य तथा निबन्धों का संग्रह । मूल्य ३ रुपये मात्र

देश-विदेश :	२)	नीलकुसुम	३)
कुरुक्षेत्र :	३॥)	रश्मिरथी	५)
हुंकार :	२॥)	रेणुका	३)
रसवन्ती :	२॥)	द्वन्द्वगीत	१॥)
सामधेनी :	२॥)	इतिहास के आँसू	३)
दिल्ली :	॥=)	बापू	१॥)
नीम के पत्ते :	१)	राष्ट्रभाषा और राष्ट्रीय एकता	३)
रेती के फूल :	२॥)	हमारी सांस्कृतिक एकता	३)
मिट्टी की ओर :	४)	अर्धनारीश्वर	५)

दिनकर विरचित बाल-साहित्य

मिर्च का मज़ा	॥)	सूरज का ब्याह	॥)	भारत की सांस्कृतिक कहानी	१)
धूपछाँह	१॥)	चित्तौर का साका	१)	बाल रश्मिरथी	१)
बाल कुरुक्षेत्र	१)	हमारा देश	१॥)		

उदयाचल

आर्यकुमार रोड, पटना-४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशकीय मञ्च

भारत सरकार के शिक्षा मन्त्रालय ने हिन्दी की निम्न-लिखित प्रौढ़ोपयोगी पुस्तकों को पाँच-पाँच सौ रुपये के पुरस्कार देने की घोषणा की है : (१) **गर्मी की कहानी,** लेखक श्री सरस्वती ब्रह्मानन्द एवं श्री नरेश वेदी, (२) **राधाकृष्ण,** ले० श्री चतुरसेन शास्त्री, (३) **मंगू भैया,** ले० श्री लीला अवस्थी, (४) **हर्षवर्धन,** ले० श्री प्रेमचन्द महेश, (५) **सुक्खू का बेटा,** ले० श्री वेदप्रकाश एम० ए०, (६) **देश यों आगे बढ़ेगा,** ले० श्री सुशीला, (७) **काश्मीर,** ले० श्री विश्वमित्र शर्मा।

इनके अतिरिक्त तीन पुस्तकों को पुरस्कार न देकर उनकी केवल प्रतियाँ ही खरीदी जायेंगी : (१) **कितना सुन्दर देश हमारा,** श्री भगवतशरण उपाध्याय, (२) **संयुक्त राष्ट्र संस्था,** तथा (३) **हमारा भारत**। ये दोनों दिल्ली लाइब्रेरी बोर्ड द्वारा प्रकाशित की गई हैं।

* *

विद्या-विहार, देहरादून द्वारा प्रकाशित श्री सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार कृत **समाजशास्त्र के मूल तत्व** को १२००) का इस वर्ष का 'मंगलाप्रसाद पारितोषिक' दिया गया है।

* *

विहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना ने सूचित किया है कि इस वर्ष निम्नलिखित विषयों के श्रेष्ठ मौलिक ग्रन्थों को एक-एक हज़ार के छः पुरस्कार दिये जायेंगे।

इन छः पुरस्कारों में दो पुरस्कार अखिल भारतीय स्तर के होंगे और शेष चार बिहार के ग्रन्थकारों के लिए।

अखिल भारतीय स्तर के पुरस्कारों के लिए दो विषय निश्चित हैं—

(१) मनोविश्लेषण (साइकोऐनेलिसिस), (२) श्रम और समाज-कल्याण (लेबर एण्ड सोशल वेलफेयर)

बिहारी के लेखकों के लिए चार विषय निर्धारित हैं—

(१) नाटक (गीति-नाट्य और एकांकी-संग्रह सम्मिलित) (२) गांधी-साहित्य, (३) व्यक्तिगत निबन्ध (पर्सनल एसेज) (४) भूगोल

उपर्युक्त पुरस्कार-प्रतियोगिता में सन् १९४७ ई० के बाद की प्रकाशित पुस्तकें ही स्वीकृत होंगी। पुरस्कार के लिए भेजी जाने वाली प्रत्येक पुस्तक की सात-सात प्रतियाँ परिषद्-कार्यालय में ३१ अक्टूबर, १९५८ ई० तक अवश्य ही पहुँच जानी चाहिए। प्रत्येक पुस्तक पर यह लिखा होना चाहिए कि वह किस विषय की प्रतियोगिता में भेजी गई है। प्रत्येक पुस्तक के साथ एक स्पष्ट लिखित पत्रक संलग्न रहना चाहिए, जिसमें पूरा विवरण अंकित हो—पुस्तक और प्रकाशक के नाम और पते, प्रकाशन-वर्ष, लेखक का वर्तमान पूरा पता, विषय।

(१) रेलवे-पार्सल से भेजी जाने वाली पुस्तकों के लिए पता—

ईस्टर्न रेलवे, पटना जंकशन और नॉर्थ-ईस्टर्न रेलवे, महेन्द्रूघाट

(२) डाक से भेजी जाने वाली पुस्तकों के लिए पता—
संचालक, बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद, कदमकुआँ, पटना-३

* * *

पटना के 'नवीन लेखक संघ' ने श्री मधुकर गंगाधर को उनके कहानी-संग्रह **तीन रंग तेरह चित्र** पर 'हरिशंकर स्वर्णपदक' प्रदान किया है। प्राप्त सूचनाओं के अनुसार इस प्रतियोगिता में १२ कहानीकारों ने भाग लिया। निर्णायक श्री वृन्दावनलाल वर्मा, डॉ० रामविलास शर्मा तथा श्री रावी थे।

* * *

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाल-साहित्य के निर्माण की समस्या

सोहनसिंह

बाल-साहित्य के निर्माण में हिन्दी प्रकाशकों के सामने अनेक तरह की समस्याएँ उपस्थित होती हैं। इस लेख में बाल-साहित्य की विषय-सामग्री पर रोचक ढंग से प्रकाश डाला गया है।

सौभाग्यवश बाल-साहित्य के निर्माण में मेरी प्रारम्भ से ही अत्यधिक रुचि रही है। अपने भोलेपन और सादगी के कारण बालकों में निर्मल आत्मा की जो निश्छल झलक दिखाई देती है, वह मेरे मन को मोह लेती है। यही कारण है कि अत्यधिक व्यस्त रहते हुए भी मैंने बाल-साहित्य के पठन, मनन और निर्माण में पर्याप्त रस अनुभव किया है। यद्यपि मैं अपने को इस विषय का विशेषज्ञ नहीं समझता, किन्तु अपनी इस लगन से प्रेरित होकर ही आज आपके सामने उपस्थित हुआ हूँ।

रात की कली का सवेरा होते-होते एक विकसित फूल बन जाना भी जीवन का एक अद्भुत चमत्कार है; भले ही हम इस चमत्कार से अपनी आँखें चुरा लें। इसी तरह एक नवजात शिशु का कुछ वर्षों में एक सन्त, ज्ञानी या शूरवीर हो जाना भी जीवन का एक चमत्कार है; भले ही हम इस चमत्कार से भी अपनी आँखें चुरा लें। मेरा यह दृढ़ विश्वास है कि यद्यपि यह घटना किसी के वश की बात नहीं, परन्तु फिर भी हमें यह साफ दिखाई देता है कि मानव समाज में कुछ ऐसी प्रवृत्तियाँ अवश्य हैं जो एक संवेदनशील शिशु को अपनी ओर आकर्षित करती हैं। इन प्रवृत्तियों में एक प्रमुखतम प्रवृत्ति 'साहित्य' भी है। जो साहित्य बच्चों को प्यारा लगता है, चाहे वह किसी भी व्यक्ति ने, किसी भी वर्ग के व्यक्ति के लिए लिखा हो, वह बाल-साहित्य है। बाल-साहित्य शैशव की दैवी सामग्री से मनुष्य को निर्माण करने वाली एक अद्भुत वस्तु है। मैं तो यहाँ तक कहूँगा कि धन्य हैं वे लोग कि जिन्होंने अपने जीवन का श्रेष्ठतम अंश बाल-साहित्य को घड़ने में अर्पित कर दिया है, क्योंकि वास्तव में उनका जीवन भावी भारत के निर्माण में लगा हुआ समझना चाहिए।

मैं समझता हूँ कि इस सम्मेलन का एक प्रमुख उद्देश्य इस बात पर भी विचार करना है कि यहाँ बाल-साहित्य के लेखन और प्रकाशन को कैसे बढ़ावा मिले और उसके लेखन में प्रगति किस प्रकार हो? इस विषय में आप मुझसे अधिक समझदार हैं। निरन्तर अध्ययन करते रहने और कुछ मित्रों से प्राय: इस विषय में विचार-विनिमय करने के परिणामस्वरूप मेरे मन में, कैसा बाल-साहित्य श्रेष्ठ होता है, इस सम्बन्ध में कुछ धारणाएँ बद्धमूल अवश्य हो गई हैं। अपनी उन धारणाओं में से कुछ के सम्बन्ध में आपके सामने प्रकाश डालूँगा। ये उचित हैं या अनुचित इसके सम्बन्ध में न तो मैं निर्णय कर सकता हूँ और न आप; इसका निर्णय तो बच्चों पर ही छोड़ा जा सकता है।

हम अपने इस छोटे-से अध्ययन में बच्चे की आयु के साथ-साथ बढ़ेंगे। अपने जन्म के दो वर्ष बाद तक तो बच्चे को इस जगत् के ताने-बाने के सम्बन्ध में कुछ-कुछ सूझने लगता है। दृश्यमान, स्पर्शमान और श्रवणमान आदि वस्तुओं की गड़बड़ में उसको कुछ विवेक होने लगता है। इस तरल संसार से ऐसी भी कुछ वस्तुएँ बनकर निकलती हैं कि जिनके साथ बच्चा अपने विश्वास के बल पर मूक सम्बन्ध स्थापित कर सकता है। इसी समय से बच्चे की जागरूक और चेतन मानव-आत्मा चित्रों की ओर आकर्षित होना प्रारम्भ कर देती है। इसी प्रकार जानी-पहचानी आवाजें भी बच्चे को आकर्षित कर लेती हैं। दिन-प्रतिदिन के जीवन में जानी, सुनी और देखी हुई चीजों का तसवीरों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

या ध्वनियों में अंकित करना ही बाल-साहित्य की सबसे पहली सीढ़ी है। ये तसवीरें और ध्वनियाँ बच्चों के दैनिक जीवन में से ही ली जानी चाहिएँ। पहले तो बच्चा रंगीन तसवीरों को ही पहचानता है और आखिर तक उनसे ही अपना प्यार निबाहता है; किन्तु २½ वर्ष से आगे काली और सफेद तसवीरें भी उसको अच्छी लगने लगती हैं। रंगों में से भी काला, पीला, लाल, हरा और नीला मूल रंग ही सर्वप्रथम इस सम्बन्ध में उसका शौक उभारते हैं। बाद में धीरे-धीरे इन रंगों के बजाय वास्तविक रंगों में ही उसका दिल लगने लगता है।

हम जिस आयु का उल्लेख कर रहे हैं, उसमें बच्चा स्वयं तो पढ़ नहीं सकता, उसकी माँ, या बड़े भाई-बहन अथवा पास-पड़ोस वाले ही उसको पढ़कर सुना सकते हैं या उसे तसवीरें दिखा सकते हैं। इन तसवीरों के माध्यम से घरेलू चीजों, घरेलू जीव-जन्तुओं और घरेलू शब्दों तथा ध्वनियों में हम बच्चे के मानस को गुदगुदा सकते हैं। कुत्ता 'भौं-भौं', बिल्ली 'म्याऊँ-म्याऊँ' और घोड़ा 'टप-टप' करता है। तथा हवाई जहाज़, 'घुर्र-घुर्र' की आवाज करके ऊपर उठता है। इन सब तसवीरों को देखकर और ध्वनियों को सुनकर अनजान शिशु की आँखें भोले हिरन की नाईं चौड़ी खुल जाती हैं।

भगवान् जाने क्या बात है, किन्तु है यह सोलहों आने सच, कि इस उम्र से लेकर ६ वर्ष तक देखे और समझे हुए जानवर बड़े मनुष्यों से अधिक बच्चों के मन में नई चेतना उत्पन्न करते हैं। कदाचित् इसका एक कारण यह भी हो कि वे भी अपने क्रोध या प्यार में बड़े आदमियों की भाँति चतुर और चालाक न होकर बच्चों की भाँति ही भोले और सरल होते हैं।

धीरे-धीरे आगे चलकर बच्चों में मानव की चेतन आत्मा लय (Rhythm) का आनन्द अनुभव करती है। वैसे तो यह लय एक सृष्टि-व्यापी वस्तु है, दिन-रात का यह चक्र, ऋतुओं का आवर्तन, जीवन-मरण की अद्भुत लीला आदि सभी सांसारिक लय के अटूट अंग हैं। किन्तु बच्चे के ध्यान और स्मृति का क्षेत्र विस्तृत न होने के कारण बच्चों के साहित्य में लय का स्थान धीरे-धीरे उभर आता है। बच्चों की प्यारी तथा भोली कहानियों में हमारा यह कथन और भी निखरकर सामने आता है। जैसे कि चिड़िया और कौए तथा मछुवे की कहानी में। ये कहानियाँ उस शैली में कही गई हैं, जो बच्चों को अच्छी लगती है। हम कहेंगे 'वहाँ कुत्ते, बिल्लियाँ और घोड़े थे।' किन्तु एक बच्चा यह सुनकर अधिक प्रसन्न होगा—'वहाँ कुत्ते थे, वहाँ बिल्लियाँ थीं, और वहाँ घोड़े भी थे।'

धीरे-धीरे सांसारिक वस्तुओं का निरन्तर प्रवर्धमान-रूप बच्चों को अपनी ओर आकर्षित कर लेता है। इसका परिणाम यह होता है कि बच्चा हर चीज का स्वाद अलग-अलग चखना चाहता है। वह जाति के जंगल से उन्हें निकालकर ही खुश होता है। 'उसने कोट पहना' यह एक फीकी-सी, साधारण-सी बात है। परन्तु इसे यों कहा जाय तो ठीक रहेगा कि 'उसने मोटे और लाल बटनों वाला नीला कोट पहना' तो देखिये कि बच्चे के कान और नेत्र कैसे आपकी ओर दौड़ते हैं।

किसी चीज़ या जीव का नाम भी उसके व्यक्तित्व का एक अनोखा अंग है। नाम बच्चों को बहुत प्यारे लगते हैं। एक बच्चे का कुत्ता 'कुत्ता' थोड़े ही है! वह तो 'मोती' है। फिर नाम-नाम में अन्तर होता है। पहले तो देखे और सुने हुए नाम ही नाम होते हैं; परन्तु बाद में, मानो पाँच-छः साल की आयु से तो अगड़म-बगड़म नामों में भी एक जादू की-सी तासीर लगने लगती है और किशोर अवस्था तक पहुँचने तक यह जादू धीरे-धीरे बढ़ता ही जाता है। भला, किशोरीलाल भी किसी राक्षस या योद्धा का नाम होगा? वह तो होगा भड़सूनाथ या मदना। आप सबने 'बूढ़े आदमी का दस्ताना' नामक एक बाल-पुस्तक का नाम तो अवश्य ही सुना होगा। इस कहानी में लय है, यह बच्चों को बहुत प्यारी लगती है। फिर भी बच्चों के लिए आधा मज़ा इस कहानी में आये जानवरों के नामों में है—थूथनचन्द सूअर, घोंघानाथ भालू, कुदकू-फुदकू मेंढक आदि।

विभिन्न सांसारिक वस्तुओं को एक हवाई दुनिया से निकालकर बच्चों की जीती-जागती दुनिया में लाने का नामों के अतिरिक्त एक और भी ढंग है—गणन ढंग। चार वर्ष की आयु से यह ढंग अपना काम प्रारम्भ करता है। यदि आप बालक की आत्मा को खुश करना चाहते हैं तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यों न कहिए कि एक लड़के के पास कई गाय, बकरियाँ और घोड़े थे, बल्कि इसे यों कहना अधिक उपयुक्त होगा—'पुल्लू के घर सात गाय थीं, नौ बकरियाँ थीं, और उन्नीस घोड़े थे।' अंग्रेजी की वैण्डागैग द्वारा लिखित एक पुस्तक है 'मिलियन्स ऑफ कैट्स'। यदि बच्चा इस पुस्तक को एक बार पढ़ ले तो उसे भूल नहीं सकता। कहा जाता है कि अब तक लाखों बच्चों की अनभ्यस्त अंगुलियों ने इस किताब का पन्ना-पन्ना अलग किया होगा। इसका प्रमुख कारण पुस्तक में आए हुए 'सैकड़ों और हज़ारों और लाखों और करोड़ों और अरबों बिल्लियाँ' की लय का जादू है।

छोटे बच्चों के साहित्य के निर्माण का मूल विषय एक ही है: यह कि दुखी का सुख को पा लेना, एक भोले-भाले निर्बल और दीन व्यक्ति की जय, और चालाक तथा बलवान और अपने-आपको बहुत-कुछ समझने वाले व्यक्ति की हार। पहले तो यह विषय लय के जोर से प्लाट के बिना ही थोड़े-से समय में, थोड़े-से शब्दों में थोड़े-से व्यक्तियों से ही निभता है। फिर धीरे-धीरे ज्यों-ज्यों बच्चे की मानसिक शक्तियाँ निखरने लगती हैं त्यों-त्यों प्लाट बढ़ता जाता है, वह लम्बा-चौड़ा और गहरा होता जाता है और उसमें नाटकीय ढंग आना शुरू हो जाता है। आप एक ओर चिड़िया तथा कौए की कहानी और दूसरी ओर हा-बसन्त की कहानी की मन में कल्पना कीजिये।

आजकल कविताओं तथा कहानियों को बच्चों के साहित्य में सर्वप्रथम स्थान दिया जाता है। परन्तु बच्चों का साहित्य इससे भी अधिक विशाल है। बाल-साहित्य के मर्मी लेखकों और प्रकाशकों को चाहिए कि वे पुरानी परम्परा वाले साहित्य का भी ध्यान रखें तथा उसे माँजने, सँवारने और सजाने के प्रयत्न में कोई कसर न छोड़ें।

साहित्य में दैनिक जीवन के सुख-दुख की भोली-भाली प्रवृत्तियाँ प्रायः छन्दबद्ध ही होती हैं। मैं पंजाबी के कुछ उदाहरण देने के लिए आपसे क्षमा चाहता हूँ—

काले और घनघोर बादलों को घिरता देखकर किसका मन नहीं नाच उठता। बच्चों का तो फिर इन्हें देखकर शरीर ही क्या वाणी भी नाच उठती है। परिणामस्वरूप वे सब मिलकर गाते हैं—

"कालियाँ इट्टाँ, काले रोड़
रब्बा, मींह वरहा दे जोरों जोर।"

अपने छोटे भाई के लिए एक भाई या बहन का गर्व इन पंक्तियों में इस प्रकार प्रकट होता है—

"आका बाका तली तड़ाका
नाइयाँ दे घर काली कुत्ती
साडे घर बीबा काका।"

और शताब्दियों से ही पंजाबी माँ या बाप अपने बच्चे को पास में सुलाकर उससे कहते हैं—"मेरी बात बतावे तो जानूँ?"

"आ ढांगा जा ढांगा विच टल्लमटल्लियाँ
औण कूँजाँ देण बच्चे नदी नहावण चल्लियाँ।"

बच्चे आपस में खेलते हुए कहते हैं—"पहले बारी कौन लेगा?" इसका उन्होंने एक विचित्र तरीका निकाल लिया। एक बच्चा एक-एक शब्द पर अलग-अलग साथी को उँगली से छूता हुआ बोलता है—

"उक्कड़ दुक्कड़ भम्भा भौ
अस्सी नब्बे पूरे सौ
सौ पकाइयाँ रोटियाँ
ते इक पकाया गुल्ला
खाण वाला खा गया
रह गया बागड़ बिल्ला।"

और जिस बेचारे बालक पर 'बिल्ला' शब्द कहते ही उँगली रखी गई, वह एकदम बाहर।

यह भी बच्चों का साहित्य है और बच्चे इसे बड़े चाव से पढ़ते हैं। भारत की प्रायः सभी भाषाओं में यह साहित्य मौजूद है। हमें चाहिए कि बच्चों के लिए इस प्रकार के साहित्य को ही प्रोत्साहन दें।

अब तक हमने दो से छः साल तक के बच्चों के लिए लिखे गए साहित्य पर विचार किया। अब हम आगे सात से नौ-दस साल तक के बच्चों के लिए लिखे जाने वाले साहित्य के सम्बन्ध में विचार करेंगे। इससे पहले कि इस विषय में विचार किया जाय, मैं एक बात कुछ विस्तार से बता देना चाहूँगा। बहुत-से सज्जन साहित्य का नाम लेते ही देवता के सामने बैठे हुए पुजारी की भाँति गम्भीर हो जाते हैं और उपनिषदों आदि के मन्त्रों के उच्चारण की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भाँति इस प्रकार कहना प्रारम्भ कर देते हैं कि हमें ऐसा बाल-साहित्य तैयार करना चाहिए कि जिसे पढ़कर हमारे बच्चों का ग्राचरण ऊँचा हो, वे देशभक्त बनें, वे दीन-दुखियों की रक्षा के लिए ग्रपने प्राण तक न्योछावर करने में संकोच न करें। ये सब बातें ठीक होते हुए भी उचित नहीं कही जा सकतीं। बाल-साहित्य के जो लेखक एकदम ही बच्चों पर 'हमें बनाने वाले भगवान्' का गुण-गान करने की बात थोपते हैं वे उनकी मानसिक प्रवृत्तियों से सर्वथा ग्रपरिचित हैं। वे यह नहीं समझते कि जब तक किसी के मन में ज्ञान की ग्रमृत-धारा नहीं फूट पड़ती तब तक उसका प्रेय ही उसका श्रेय है। विशेषतः बच्चों को भला बनाने का एक मात्र ढंग है उनको सुखी बनाना। बच्चों के साहित्य का प्रथम उद्देश्य उनकी कल्पना-शक्ति को जगाकर उन्हें ग्रानन्द देना है। इस ग्रानन्द में ग्रौर समाज की भलाई में कोई विरोध हो ही नहीं सकता।

छः-सात साल की ग्रायु से बच्चों में ग्रागामी मनुष्य का ग्राभास होने लगता है। घर से बाहर पैर रखते ही

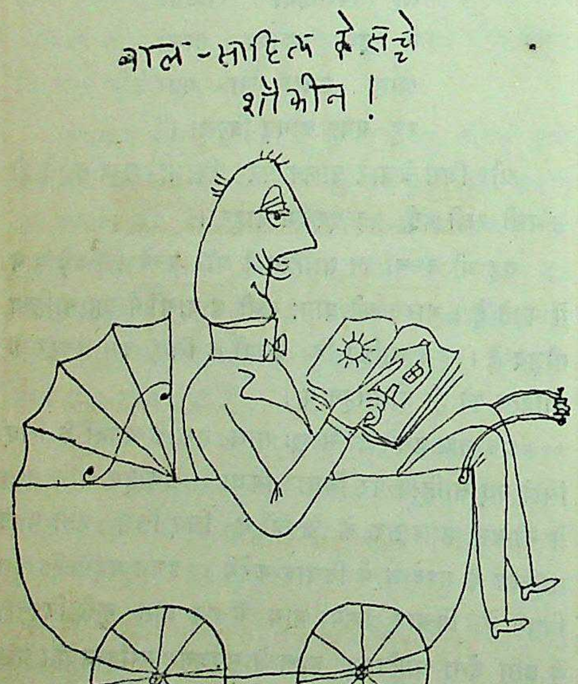

वह बड़े ग्रादमियों के कामों को भली प्रकार समझने लगता है। प्रेम, वैर, प्रसन्नता, शोक, ग्रच्छाई-बुराई, मित्र-भक्ति ग्रौर मित्र-द्रोह के जो भाव बड़े ग्रादमियों के मन को झँझोड़ते हैं, वे ही उसके मन को भी उभारते हैं। बालक वे सब काम तुरन्त करना चाहता है जो उसके सामने बड़े ग्रादमी करते हैं, यद्यपि ग्रब तक उसमें इतना बल नहीं होता कि वह बड़ों के मुकाबले में खड़ा हो सके। इसलिए वह बड़े ग्रादमियों के संसार की ग्राज़माइश ग्रपनी कल्पना के संसार में ही करता है। राजा-रानी की कहानियाँ, देव-परियों की कहानियाँ, जानवरों की कहानियाँ, सौतेली माँ के दुर्व्यवहार से छुड़ाने वाले भले लोगों की कहानियाँ ग्रौर लोक-कथाएँ—इस ग्रायु के बालकों के लिए लिखे जाने वाले साहित्य की मूल स्रोत हैं। यह राजा-रानी ग्रौर सौतेली माँ बच्चों की दुनिया से इतनी दूर हैं कि इन्हें ग्राँच तो नहीं लगती; किन्तु इनसे सांसारिक सुख-दुःख का ग्रनुभव ग्रवश्य मिल जाता है।

इस ग्रायु में बालक ग्रपने माता-पिता, भाई-बहन ग्रौर निकटवर्ती दुनिया से निकलकर बाहर बहुत बड़ी दुनिया में पैर रखता है, ग्रौर ग्रपने नये संगी-साथी बनाता है। उनकी कल्पना में इसी प्रकार की छायाएँ प्रतिबिम्बित होती हैं। इस ग्रायु के बच्चों के लिए लिखे गए श्रेष्ठ साहित्य में ग्राप देखेंगे कि इनकी कहानियों का नायक प्रायः जब घर से बाहर जाता है तब ग्रनेक मुसीबतें उठाने के बाद ही उसका कल्याण होता है। रूप बसन्त की कहानी इसका उदाहरण है।

इस स्तर के साहित्य से भले ग्रौर बुरे कामों का बोध भी बच्चे को होना ग्रावश्यक है। बाल्यावस्था के प्रथम चरण में तो बच्चों के लिए सुख ग्रौर दुःख दो ही चीजें महत्त्वपूर्ण होती हैं, किन्तु धीरे-धीरे ग्रागे चलकर वह पाप ग्रौर पुण्य की बात भी समझने लगता है। भले ही वह बात सीधी-सादी हो। बुरा वह है जो बुरे काम करे, ग्रौर जिसे ग्रपने बुरे कामों का बदला ग्राज नहीं तो कल ग्रवश्य ही भुगतना पड़ेगा। ग्रच्छा वह है, जिस पर भले ही मुसीबतों के पहाड़ टूटें, किन्तु ग्रन्त में उसे सुख ही मिलेगा। इस भोली-भाली दुनिया में किसी काम का दुख से ग्रन्त होना सर्वथा ग्रसम्भव है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसी आयु में बच्चों का मन प्रकृति की ओर आकर्षित होता है। फूलों में परियों की मुसकान दिखाई देती है। पक्षी प्रायः उन्हें किसी दैवी संसार से सन्देश लाने वाले अलौकिक जीव प्रतीत होते हैं। उन्हें नदी के प्रवाह में भी कोई भेद-सा जान पड़ता है। वायु को भी वे एक बन्धन-हीन परी समझते हैं। एण्डरसन की परियों की कहानियों का सर्वोत्तम आनन्द इस प्राकृतिक मनोरंजन के कारण ही है। हमने यह देख लिया कि घर से बाहर पैर निकालना इस आयु के साहित्य का एक चिह्न है। प्राकृतिक सौन्दर्य के आभास का इससे घनिष्ठ सम्बन्ध है। इनके सम्मिश्रण से ही बाल-साहित्य के निर्माण में श्रेष्ठता आती है।

उत्तेजित कल्पना का एक रूप डींग मारना भी है। ऐसी कहानियों में बच्चे जो आनन्द अनुभव करते हैं, वह देखने की ही वस्तु है। पंजाब में एक लोक-कथा बहुत प्रचलित है, जिसमें एक नायक के दादा के पास एक ऐसी घोड़ी थी, जिसकी पीठ के घाव में सात बीघे भूमि बन जाती थी, दूसरे नायक के दादा के यहाँ एक ऐसा बैल था, जिसका एक सींग लाहौर और दूसरा पेशावर पहुँचा देता था, इत्यादि। एक बार मैं यह कहानी अपने बच्चों को सुना बैठा—बस, फिर मुझे यह कहानी उनको बहुत दिन तक बार-बार सुनानी पड़ी।

बात यह है कि नौ दस साल के बच्चे में उसका अपना 'अहम्' जागने लगता है। यह आश्चर्यजनक तत्त्व उस पर एक जादू-सा डाल देता है। स्वयं अपनी त्रुटियाँ और कमज़ोरियाँ समझना तो बड़ी उम्र की बात है। उसे यह समझना होता है कि 'मैं' क्या कर सकता हूँ और क्या नहीं कर सकता। उसकी यह धारणा कल्पना के संसार में ही बनती है। डींग हाँकना भी आत्मा की अबाध शक्ति का रूप है—मेरी अपनी आत्मा नहीं, तो किसी और की। आत्मा एक कारण है, परन्तु क्योंकि इस आत्मा के अस्तित्व का अभी तक पता नहीं लग सका, इसलिए यह जादू का रूप धारण कर लेता है। इस आयु के बच्चों के लिए यह कोई असम्भव घटना नहीं कि एक देव या परी अपनी इच्छा से कभी कोई पक्षी बन जाय या कभी फूल और वर्षा का रूप धारण कर ले। यह हेतु के कच्चे आभास का फल है।

इस आत्म-चेतना के कारण ही बच्चे में बौद्धिक अंश भी जगने लगता है और उसमें धीरे-धीरे दक्षता की भावना पैदा होने लगती है। बुद्धि से काम लेना और दूसरों से अपना काम निकलवाना इस आयु के रोचक साहित्य का एक सुन्दर अंश बन जाता है।

भाषा की दृष्टि से इस आयु के बालकों में बहुत उन्नति होती है। छः साल के बच्चे का शब्द-भण्डार उसके दैनिक व्यवहार का शब्द-भण्डार ही होता है—लगभग ढाई हजार शब्द। परन्तु नौ-दस साल के बच्चे का शब्द-भण्डार साढ़े तीन हजार तक भी हो सकता है और इसमें बहुत-से शब्द दैनिक प्रयोग से दूर के भी देखने को मिल जाते हैं।

छोटे बच्चों के साहित्य में तो शैली का कोई विशेष स्थान नहीं, किन्तु इस आयु के बच्चे बढ़िया और ऐसे-वैसे साहित्य के अन्तर को समझते हैं तथा वे अच्छे साहित्य से आनन्द प्राप्त करने को उत्सुक रहते हैं।

चित्रों की महत्ता इस आयु में भी चलती है, परन्तु इस महत्त्व का भेद और है। दो से छः या सात साल तक तो तसवीरें भी अपनी कहानी कहती हैं। शब्द कानों द्वारा

फ्रायड

महान मनोविज्ञानवेत्ता सिगमंड फ्रायड की अमर कृति

मनोविश्लेषण

'ए जनरल इन्ट्रोडक्शन टु साइकोएनेलिसिस' का पूर्ण और प्रामाणिक हिन्दी अनुवाद

मूल्य दस रुपए

राजपाल एण्ड सन्ज़,
कश्मीरी गेट, दिल्ली-६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साहित्य अकादेमी

का नवीनतम प्रकाशन

एकोत्तरशती

कवि-गौरव रवीन्द्रनाथ ठाकुर की चुनी हुई १०१ कविताओं का संग्रह। मूल बंगला भाषा की ये कविताएँ नागरी लिपि में प्रकाशित हो रही हैं, बंगला शब्दों के अर्थ साथ में दे दिये गए हैं।

अक्तूबर के अन्त तक प्राप्य

•

इस पुस्तक के एक ही साथ दो संस्करण प्रकाशित हो रहे हैं :

सामान्य संस्करण ८.०० रुपये,
राज संस्करण ९.०० रुपये।

•

साहित्य अकादेमी की ओर से एकमात्र वितरक

राजकमल
प्रकाशन प्राइवेट लि:
दिल्ली इलाहाबाद बम्बई पटना मद्रास

और तसवीरें आँखों द्वारा दोनों एक ही कहानी कहते हैं। परन्तु नौ-दस साल के बच्चे के लिए किसी अजानी, किसी नई और किसी सुन्दर वस्तु को वे सामने लाती हैं। उनका अर्थ केवल कहानी कहना ही नहीं, बल्कि विषय की सुन्दरता को बढ़ाने के साथ-साथ बालकों की कल्पना को पंख लगाना भी है। वे चित्रकार वास्तव में धन्यवाद के पात्र हैं, जो अपने चित्रों के द्वारा यह चमत्कार उत्पन्न कर सकें।

दस वर्ष के बाद बच्चे का वास्तविक भाव (सेन्स ऑफ रियलिटी) विकसित होने लगता है। कार्य तथा कारण का मेल जादू की नगरी से हटकर इस दुनिया में आ जाता है। फिर भी बाल-सुलभ कल्पना परियों और लोक-कथाओं की दुनिया से हटकर एकदम वास्तविक जगत् में नहीं आ धमकती। लोक-कथाओं से आगे चलकर बालक की आत्मा पुराने वीर योद्धाओं के साहसिक कार्यों का वर्णन पढ़ने में उल्लास का अनुभव करती है। दस या ग्यारह वर्ष का यही समय है, जब कि बच्चों को रामायण और महाभारत-जैसी पुस्तकें पढ़ने को दी जायँ।

वीर योद्धाओं की गाथाएँ इस आयु के बालकों का मानसिक भोजन हैं। हमें यह निःसंकोच स्वीकार करना होगा कि हमारे लेखक और प्रकाशक यह भोजन बच्चों को यथोचित मात्रा में नहीं दे पा रहे। हमारे अपने ही देश के इतिहास में इस प्रकार की कहानियों के भरे भण्डार छिपे पड़े हैं। इसके बाद संसार के अन्य देशों की वीर-गाथाएँ भी सुन्दर तथा सचित्र पुस्तकों के रूप में परोसकर हमें अपने बच्चों के सामने रखनी होंगी।

वीर योद्धाओं की गाथाओं से आगे चलकर बच्चा ऐतिहासिक और आधुनिक महापुरुषों की जीवनियों पर आता है। इसके बाद जल्दी ही उपन्यास शुरू हो जाते हैं।

दस-बारह वर्ष की आयु में ही लड़कों और लड़कियों के पढ़ने की रुचि में अन्तर पड़ना शुरू हो जाता है। लड़कियाँ प्रायः घर और स्कूल की कहानियाँ, रोमांच की कहानियाँ, जीवनियाँ, और विशेषतः स्त्रियों की जीवनियाँ और अन्य उपयोगी साहित्य माँगती हैं। इसके विपरीत लड़के उद्दाम साहस, खेल, विज्ञान, यात्रा, युद्ध तथा पुरुषार्थ-रहस्य वाला साहित्य पढ़ना अधिक पसन्द करते हैं। सारांशतः इस उम्र के बच्चों का साहित्य सर्वाङ्गीण और जीवन विस्तृत हो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाता है।

बुराई और भलाई की लड़ाई का चिरन्तन विषय ही इस आयु के बच्चों के साहित्य का विषय है। परन्तु दस वर्ष से पहले और बाद के बच्चों के साहित्य के स्तर में बहुत अन्तर है। पहली बात तो यह है कि छोटे बच्चे के लिए बुराई और भलाई शारीरिक सुख-दुःख के ही समान है, परन्तु बड़े बच्चे के लिए इनका अर्थ और भी महत्त्वपूर्ण है। इसके लिए मित्रों तथा साथियों से छूटना ही दुःख है और साथियों की भलाई के लिए अपने-आपको न्योछावर करना ही सुख है। देशद्रोह बुराई है और देश के लिए कुर्बानी परम पुण्य। उसके लिए मानसिक अंधेरा एक बुराई है और ज्ञान की जगमगाती ज्योति बहुत बड़ी वस्तु। ज्यों-ज्यों बच्चा बड़ा होता जाता है त्यों-त्यों भलाई-बुराई और पुण्य-पाप को समझने की उसकी चेतना भी बढ़ती जाती है। दुःख और क्लेश के बाण तीखे होते जाते हैं और दुखियों तथा दर्दमन्दों की आह में उसकी तड़प तीव्र होती जाती है और शायद हँसी भी इसी कारण आगे से खिलखिलाती जाती है। धीरे-धीरे साहित्य में विचार और उनका स्थान पा लेते हैं, और बच्चा अपने अन्दर के संसार को समझने लगता है, तभी तो मित्र-भक्ति, देश-भक्ति, गुरु-भक्ति आदि अनेक महत्त्वपूर्ण भावनाएँ जो मनुष्यों को परस्पर जीवन-मरण के मौलिक बन्धनों में बाँधती हैं, न केवल मनुष्यों को ही बल्कि मनुष्यों और पशुओं को भी इसी बन्धन में लाती हैं—इस आयु में प्रबल होने लगती हैं। तीसरे, जहाँ पहले दुःख और सुख किसी दैवी शक्ति के माध्यम से होता था, अब उसके लिए बालक उद्यम की आवश्यकता समझता है। दुख और सुख के बीच इस आयु में पुरुषार्थ, संग्राम, अथक प्रयत्न और कठिन साधनाएँ आती हैं और इन्हीं के कारण इस स्तर के साहित्य में साहस, शूरवीरता, हठ और बौद्धिक चमत्कारों का एक ऐसा स्थान है, जो छुड़ाने से भी नहीं छूट सकता।

इस आयु के बच्चों के साहित्य में शैली का स्थान अत्यन्त आवश्यक और महत्त्वपूर्ण है। न केवल वीरगाथाओं, बल्कि वैज्ञानिक लेखों, जीवनियों और दूसरे प्रकार के साहित्य में भी श्रेष्ठ शैली तथा रुचिकर शब्दावली साहित्य से शरमाते हुए बच्चे को भी अपनी गोदी में लाकर सुख

हिन्दी प्रकाशन में एक नया प्रयास

दशकोण

रीडर्स डायजेस्ट द्वारा सार-रूप में प्रकाशित संसार की सर्वश्रेष्ठ तथा सबसे लोकप्रिय पुस्तकों का हिन्दी भाषा में प्रथम संकलन

- जीवन के सभी पहलुओं पर प्रकाश डालने वाली इन सर्वश्रेष्ठ तथा सर्वाधिक लोकप्रिय रचनाओं को सार-रूप में **रीडर्स डायजेस्ट** के २ करोड़ से अधिक पाठक १३ भाषाओं में पढ़ते हैं।
- इनमें से सबसे अच्छी रचनाओं को चुनकर फिर अलग-से संग्रहों के रूप में प्रकाशित किया जाता है, जिनके २५ लाख से अधिक स्थायी ग्राहक हैं।
- सार-रूप में प्रकाशित होने से पहले भी लाखों लोग इन पुस्तकों को इनके अनेक संस्करणों में मूल रूप से पढ़ते हैं, और लाखों-करोड़ों लोग इन पुस्तकों पर आधारित फ़िल्में देखते हैं।

हिन्दी में इस प्रकार का संग्रह प्रकाशित करने का यह प्रथम प्रयास इस उद्देश्य से किया जा रहा है कि जिन सर्वश्रेष्ठ रचनाओं को संसार की दूसरी भाषाओं में लाखों-करोड़ों लोगों ने पढ़ा तथा सराहा है उनसे सार-रूप में परिचय प्राप्त करके हिन्दी पाठक भी लाभान्वित हो सकें। हमें विश्वास है कि हिन्दी पाठक इसका स्वागत करके हमें प्रोत्साहन देंगे।

लगभग ५०० पृष्ठ • मूल्य लगभग ६।।)

(अक्तूबर के अन्त तक प्रकाशित हो जायगी)

एलाइड पब्लिशर्स

आसफ़ अली रोड, **नई दिल्ली**

टेलीफोन : २६३५४ तार का पता : **फ़ोरम**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रदान करती हैं। इस आयु के साहित्य का मर्म भी अत्यन्त साधारण है। उसमें वे गुण होने चाहिएँ जो एक अच्छी छोटी कहानी में—तीव्र गति, जीवन की एक विद्युत् झलक, और पात्र गठे तथा सँवरे। पाठक प्रारम्भ में ही कहानी में कूद पड़ता है या किसी भारी समस्या के सामने आ खड़ा होता है। नाटक के समान उसमें जीवन-धारा के थम जाने का और फिर तीव्र वेग से वह निकलने का आनन्द होता है। बातचीत चुस्त, काम की और सूझ-बूझ बढ़ाने वाली होती है। वस्तुओं, दृश्यों और व्यक्तियों का वर्णन ऐसा नहीं होता कि कहानी वहीं जम जाय। विचार हिम्मत हारे हुए लोगों के न होकर वीरों के हों। याद रखिए कि साहस, लगन और दृढ़ता ही इस आयु के बालकों के लिए लिखे गए साहित्य की जान है। फिर कहीं-कहीं मजाक की, भद्दे पन पर हँसी की ! अपने-आपको भूल जाने की छूट भी दीजिए।

दस-ग्यारह साल के बच्चे में बढ़ने का चाव बहुत जोर से उमगता है और कभी-कभी तो वह इस शौक में अपने-आपको भूल-सा ही जाता है। इसका अर्थ यह है कि इस आयु के बच्चों का साहित्य तैयार करने वाले लेखकों और प्रकाशकों की जिम्मेदारी बहुत बड़ी है। फिर इस आयु के बच्चे में उमंग भी होती है। वह चाहता है कि कैसे वह इन त्रुटियों से भरे जगत् को अपने मानस-स्वर्ग के मान-चित्र में उतार ले। इससे लेखकों और प्रकाशकों की जिम्मेदारी और भी बढ़ जाती है, क्योंकि उन्हें बच्चों को न केवल साहित्य ही देना है, बल्कि ऐसा श्रेष्ठ साहित्य देना है जिससे बच्चे की कल्पना को पंख लगें, और जो उनको शूरवीर, सन्त, वैज्ञानिक या कर्मयोगी होने की उमंगों से ऊँचा उठा ले।

हमने इस छोटे-से अध्याय में बाल-साहित्य के भिन्न-भिन्न रूपों का सिंहावलोकन किया है। कैसे वह सचित्र पुस्तकों से प्रारम्भ होता है। फिर छोटी, सादी और लययुक्त कहानियों का सृजन होता है। जो बच्चों को रोज-ब-रोज देखी-सुनी चीजों का काल्पनिक आनन्द दिलाती हैं। साथ-ही-साथ खेल के या जीवन के साधारण अनुभव को लययुक्त भाषा में बाँध देने वाले लोक-छन्द, पहेलियाँ भी लिखी जायँ। धीरे-धीरे ये लोक-छन्द और कहानियाँ लम्बी होती जायँ और उनमें नये-नये रंग भरे जाते रहें। फिर लोक-कथाएँ, परियों और देवी-देवताओं की कहानियाँ। इसके बाद वीर-गाथाएँ, जीवनियाँ और अन्त में सर्वाङ्गीण विस्तृत साहित्य। हमने यह भी देखा है कि वह कौन-सी चीज है जो प्रत्येक स्तर के साहित्य को श्रेष्ठ बनाती है।

ऐसे बाल-साहित्य को कैसे तैयार किया जाय और उसे कैसे बच्चों तक पहुँचाया जाय, इस सम्बन्ध में भी हमारे सामने अनेक जटिल समस्याएँ आ खड़ी होती हैं। कैसे लेखक तैयार किये जायँ, और कैसे उनको उत्तम साहित्य तैयार करने का अवसर तथा प्रोत्साहन प्रदान किया जाय, कैसे प्रकाशकों को प्रकाशन-सामग्री और उसकी खपत के लिए विशाल क्षेत्र प्रदान किया जाय, और अन्त में प्रकाशित पुस्तकों को कैसे पत्रों, सूचनाओं प्रदर्शनियों और स्कूलों द्वारा न केवल बच्चों के ही सामने लाया जाय, परन्तु उनमें पढ़ने की रुचि कैसे जाग्रत की जाय, आदि बातें विचारणीय हैं। हमारी निर्धनता ने इस समस्याओं को और भी जटिल बना दिया है। फिर भी हर्ष की बात है कि जिन संस्थाओं पर इस महान् काम की जिम्मेदारी है, वे सचेत हो गई हैं।

और अब केवल कुछ समय की ही बात है कि हमारी आगे आने वाली पीढ़ियों के बच्चों को श्रेष्ठ साहित्य के सभी अधिकार सम्पूर्ण रूप से मिलेंगे। कुछ वर्षों से सरकार भी इस प्रयत्न में लगी है और उसे इस प्रयत्न में लेखकों और प्रकाशकों का हार्दिक सहयोग भी प्राप्त हुआ है परन्तु मेरा विश्वास है कि सरकार इस काम को ठेल तो सकती है, किन्तु आगे नहीं बढ़ा सकती। सच पूछिये तो इस काम की ठोस जिम्मेदारी प्रकाशकों के ही कन्धों पर है और यह समारोह इस बात का सूचक है कि वे अपने उत्तरदायित्व को सँभालने के लिए उत्सुक हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिहार एवं विभिन्न राज्य सरकारों द्वारा स्वीकृत

बुनियादी एवं समाज-शिक्षण-प्रशिक्षण केन्द्रों के शिक्षकों, विकास योजनाओं और पंचवर्षीय योजना के अन्तर्गत शिक्षा-क्षेत्र में कार्य करने वाले अधिकारियों के दैनिक कार्य की सहायक पुस्तकें—

(समाज-शिक्षा की सहायक पुस्तकें)

१. सामाजिक शिक्षा और समाज सेवा : ६·७५
लें० डॉ० धर्मेन्द्र ब्रह्मचारी शास्त्री, एम० ए०, पी-एच० डी०, ए० आई० ई० (लन्दन) लोक-शिक्षा निर्देशक (बिहार)।

२. समाज शिक्षा में वयस्क मनोविज्ञान : १·७५
लेखक—प्रो० सौरिन्द्र नाथ सरकार, एम० ए० लेक्चरर तथा मनोविज्ञान विभाग, रांची कॉलेज।

३. भारतीय गाँवों में प्रसार एवं कल्याण कार्य : ५·२५
ले०—श्री रंग तिवारी, बी० ए० डिप० इन० एड० उप प्राचार्य—प्रसार प्रशिक्षण केन्द्र; मुजफ्फरपुर।

४. विकास की ओर : ०·६२
लेखक—वीरभद्र वरनवाल, समाज-शिक्षा नियोजक, पटना, (प्रौढ़ों के लिए विकास योजनाओं पर लिखा हुआ एक अनूठा नाटक)।

५. समाज शिक्षा की क्रियाशीलने : (प्रेस में)
लेखक—श्री कृष्णकान्त सिंह उपशिक्षा मन्त्री (बिहार राज्य)।

(सरल एवं सुपाठ्य भाषा में—कृषि-शिक्षा-क्षेत्र में हमारी अनुपम भेंट)

१. आधुनिक कृषि विज्ञान एवं कृषि प्रसार : (प्रेस में)
लेखक—श्री एम० एच० जानी, प्राचार्य, कृषि विद्यालय भागलपुर तथा श्री दुर्गाप्रसाद श्रीवास्तव, लेक्चरर कृषि विद्यालय, डुमराँव।

बिहार शिक्षा विभाग द्वारा स्वीकृत निम्न एवं उच्च बुनियादी प्रशिक्षण विद्यालयों के लिए पाठ्य पुस्तकें—

(बुनियादी शिक्षा साहित्य)

१. बुनियादी शिक्षा में समवाय : ५·२५
लेखक—श्री द्वारिका सिंह सचिव, बुनियादी शिक्षा बोर्ड, बिहार।

२. बुनियादी शिक्षा में विभिन्न विषयों की शिक्षण विधि : ५·२५
लेखक—श्री द्वारिका सिंह सचिव, बुनियादी शिक्षा बोर्ड, बिहार।

(छठा संस्करण)

3. **Correlation in Basic Education.** **Rs. 5·50**
(For, Non Hindi speaking area)
Sri Dwarika Singh, M. A. Secretary; Basic Education Board (Bihar)

प्रकाशक

मगध राजधानी प्रकाशन

खजांची रोड, पटना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रत्येक पुस्तकालय के लिए अनुपम प्रकाशन

सितम्बर मास के प्रकाशन

उपन्यास

सूखे पेड़, सब्ज़ पत्ते : गुलशन नन्दा ४।)
आंचल में दूध आंखों में पानी : यादवेन्द्र शर्मा चन्द्र ५)
ग़ज़ाला : शौकत थानवी ३।।।)

काव्य

उर्दू की सर्वश्रेष्ठ ग़ज़लें : सं० नूरनबी अब्बासी २।।)

कहानियाँ

दो गज़ ज़मीन : टालस्टाय ३)

अक्तूबर मास के प्रकाशन

स्पोर्टस

खेलें कैसे ? : पी० एन० अग्रवाल ५।।)

उपन्यास

तन के उजले मन के काले : जमनादास 'अख्तर' ३।।)
नसीम : शौकत थानवी ३।।।)

विज्ञान

चन्द्रलोक (सचित्र) : बसन्तकुमार चटर्जी २।।)

काव्य

ज़फ़र की ग़ज़लें : नूरनबी अब्बासी २।।)

अन्य महत्त्वपूर्ण प्रकाशन

काव्य—

दीवाने ग़ालिब (उर्दू काव्य) : सं० मुग़नी अमरोहवी नूरनबी अब्बासी ६)

राजनीतिक व ऐतिहासिक——

मेवाड़ : टॉड ३।।।)
बाचा खान : फ़ारिग़ बुख़ारी ६)
नेहरू विश्व-शान्ति की खोज में : ओमप्रकाश गुप्ता ४।।)

आध्यात्मिक—

जीना सीखो : देसराज व गन्धर्व ३)

नाटक—

जब पर्दा उठा : हास्य एकांकी : प्रकाश पण्डित ४।)
मेरे नाटक : रवीन्द्रनाथ टैगोर ३।।)
डाकघर : रवीन्द्रनाथ टैगोर ।।≈)

कहानियाँ—

उड़ानें : कृष्णचन्द्र ३।।)
एक ख़त एक ख़ुशबू : कृष्णचन्द्र ३।)
सीमान्त : रवीन्द्रनाथ टैगोर २।।)
चाँद सितारे : टैगोर २।।)
आंचल और आंसू : शिक्षा रानी निगम ३।।)
पागल : ख़लील जिब्रान १।।)
लायसेंस : मिन्टो ३।।)

उपन्यास—

एक नदी दो पाट : गुलशन नन्दा ४।)
पत्थर के होंठ : गुलशन नन्दा ३।।।)
बादल छँट गए : कृष्णचन्द्र ३)
ललिताङ्ग : यादवचन्द्र जैन ३।।।)

इन्शा अल्लाह : शौकत थानवी ३)
कुतिया : शौकत थानवी ४।)
कार्टून : शौकत थानवी ४।)
चार सौ बीस : शौकत थानवी ३।)
सांच को आंच : शौकत थानवी ३।।।)
मिट्टी का कलंक : यादवेन्द्र शर्मा चन्द्र ३)
तूलिका : सोमर सेट मॉम ५।)
धरती की बेटी : कमल शुक्ल ३।।)
राख की परतें : कमल शुक्ल ३।)
एक ही पतवार : शिवव्रतलाल वर्मन ३।)
शाही लकड़हारा : शिवव्रतलाल वर्मन ३।।)
प्रेम पुजारिन : पं० सुदर्शन २।)
कौन किसी का ? : रवीन्द्रनाथ टैगोर २।)
समाज का अत्याचार : शरत् चन्द्र चटर्जी २।।।)
काश्मीर की बेटी : जमनादास 'अख्तर' २।।।)
आग : जमनादास 'अख्तर' २।।)
आंसू : जमनादास 'अख्तर' ३।)
बुर्दा फरोश : जमनादास 'अख्तर' २।)
शैतान पुजारी : अनु० तीर्थराम २।।)

विज्ञान—

वैज्ञानिक चाँद : बसन्तकुमार चटर्जी १।।)
विज्ञान का चमत्कार : देसराज व गन्धर्व ।।≈)
विज्ञान के मनोरंजन : श्री शरण ।।≈)

कालिदास साहित्य—(अनु० श्री शरण)

रघुवंश, मेघदूत, विक्रमोर्वशी, कुमारसम्भव, अभिज्ञान शाकुन्तल, मालविकाग्निमित्र, नलोदय
मूल्य प्रत्येक का १)

व्यापारियों और लायब्रेरियों को विशेष सुविधा, बड़े सूचीपत्र और विवरण के लिए लिखिये।

नारायण दत्त सहगल एण्ड सन्ज़, दरीबा कलां, देहली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सस्ती पुस्तकों का प्रकाशन

कुलभूषण

पिछले वर्षों में कुछ सरकारी-गैर सरकारी क्षेत्रों का ध्यान विस्तृत प्रचार के लिए सस्ती पुस्तकों के प्रकाशन की ओर गया है। इस लेख में विदेशी अनुभवों के आधार पर सस्ती पुस्तक-मालाओं की समस्याओं पर गहरा विचार किया गया है, जिससे प्रकाशक लाभान्वित होंगे।

...छले कुछ दिनों से भारतीय प्रकाशक सस्ती पुस्तकों ...प्रति काफ़ी दिलचस्पी दिखा रहे हैं। हमारे देश में ...लैण्ड और अमरीका से आई हुई अंग्रेज़ी पुस्तकें काफ़ी ...मों से लोकप्रिय हैं। कोई भी व्यक्ति दिल्ली के चाँदनी ...क से, कलकत्ता के चौरंगी से, और बम्बई की हार्नबी ...ड से गुज़रते समय इस तथ्य से इन्कार नहीं कर सकता ...साधारण जनता के लिए ऐसी पुस्तकों का आकर्षण ...धारण नहीं, बहुत अधिक है। पेंगुइन और पाकेट बुक ...नाम हैं जो सभी पढ़े लिखे भारतीय जानते-पहचानते ...। खेद का विषय है कि अंग्रेज़ी पढ़े-लिखे व्यक्तियों के ...ए प्राप्य यह सुविधा, भारतीय भाषा-भाषियों के लिए ...भी तक प्राप्य नहीं हो सकी; सच कहा जाय तो अब ...मय आ गया है कि हम इस दशा में आमूल परिवर्तन की ...त सोचना आरम्भ करें।

सबसे पहले परिभाषा की बात है। सस्ती पुस्तकों से ...मारा तात्पर्य क्या है? सस्ते सफेद काग़ज़ पर छपी जिल्द-...हित पुस्तकों की उस सिरीज़ को 'पेपर-बैक' कहते हैं, जो ...ते दामों में और एक-ही जैसे दामों में प्राप्य हो। केवल ...सी सजिल्द पुस्तक को हम 'पेपर-बैक' नहीं कह सकते। ...किसी एक विषय पर लिखी सिरीज़ को 'पेपर बैंक' ...हा जा सकता है। 'पेपर-बैक' वे पुस्तकें हैं जो मज़बूत ...ठों में बंधी बाज़ार में बिकने वाली मँहगी पुस्तकों के सस्ते ...करण हैं, अथवा नई लिखी सस्ते दामों वाली पुस्तकें हैं, ...न्हें सामान्य जनता आसानी से खरीद सकती है। संक्षेप ...में कहा जाय तो पेंगुइन, पेलिकन, पाकेट बुक, कालिन्स ...आदि कुछ सिरीज़ अंग्रेज़ी पेपर-बैक पुस्तकों के उत्कृष्ट नमूने हैं।

ऐसी पुस्तकों के प्रकाशन और वितरण से सम्बन्धित मुख्य प्रश्न कौन-कौन-से हैं? अन्य सामान्य पुस्तकों की भाँति इस प्रकार की पुस्तकों के प्रकाशन से सम्बन्धित भी तीन ही प्रश्न मुख्य हैं—(१) सम्पादकीय प्रश्न : उपयुक्त पुस्तकों व विषयों का चयन करना; (२) निर्माण का प्रश्न : प्रकाशन करने के सस्ते-से-सस्ते साधनों को जुटाना; और (३) विक्रय-प्रश्न : पुस्तकें बेचने के लिए दुकानों और स्टालों का अथवा नये बिक्री के केन्द्रों का फैलाव, ताकि पुस्तकें जल्दी-से-जल्दी बड़ी संख्या में बिक सकें।

'पेपर-बैक' पुस्तकों के पश्चिमी विचार की सफलता की कुन्जी उपर्युक्त तीन विभागों के कार्य की ऐसी व्यवस्था है जो व्यवसाय के ढांचे पर बनी हो। जैसा कि एक अमरीकन पेपर बैक-प्रकाशक संस्था के अधिकारी ने मुझसे कहा, "हम किसी अन्य बिक्री के माल की भाँति ही पुस्तकों की बिक्री करते हैं—जैसे दाँत-मंजन की ट्यूब हो या नहाने के साबुन की बट्टी हो!"

सबसे पहला प्रश्न पाण्डुलिपियों अथवा पुस्तकों के चयन का है। सामान्य प्रकाशन से विपरीत, सस्ती पुस्तकों के प्रकाशन में इस दिशा में अधिकतर अधिक कार्य की आवश्यकता नहीं होती। संयुक्त राष्ट्र अमरीका में, और ब्रिटेन में तथा अन्य यूरोपीय देशों में भी 'पेपर-बैक' के लिए अधिकतर मज़बूत पुट्ठों की पुस्तकों में से चुनाव किया जाता है। कथा-कहानी और उपन्यास तथा अन्य विषयों पर पुस्तकें साधारण प्रकाशक छापते ही हैं, उपर्युक्त पाण्डुलिपियों की तलाश, पाण्डुलिपियों का सुधार और सम्पादन, सन्दर्भों के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सही होने की जांच-पड़ताल, कापीराइट की सिरदर्दी—सभी कार्य पूरे हो चुके होते हैं। आलोचकों और पाठकों की राय भी उपलब्ध होती है। बस, 'पेपर-बैक'-प्रकाशक का कार्य केवल इतना होता है कि वह पुस्तक की अनुमानित माँग का अन्दाज़ा सही-सही लगा ले और उसीके अनुसार पहला सस्ता संस्करण प्रकाशित करे।

पुनर्मुद्रण के अलावा सस्ती पुस्तकों का प्रत्येक प्रकाशक खुद भी कुछ मूल पुस्तकों का आयोजन करता है। ऐसी पुस्तकों के लिए प्रकाशक की सभी सिरदर्दियों को उसे पूरा करना पड़ता है; मगर अधिकतर ऐसी पुस्तकें आटे में नमक के बराबर ही होती हैं।

संयुक्त राष्ट्र अमरीका में सस्ती पुस्तकों के भिन्न-भिन्न प्रकाशकों में अच्छी पुस्तकें प्राप्त करने के लिए काफ़ी सख्त होड़ चलती है। नतीजा यह होता है कि प्रकाशक प्रत्येक प्रकाशनाधीन पुस्तक के सस्ते संस्करण के लिए बोलियाँ देते हैं। प्रकाशन से पूर्व ही पुस्तकों की प्रूफ़-कापियाँ सस्ती पुस्तकों के प्रकाशकों के पास आने लगती हैं—ताकि अग्रिम रायल्टी की बोली बुलाई जा सके। अगर पुस्तक हालीवुड में फ़िल्मीकरण के लिए बिक चुकी है, अगर मास की पुस्तक के रूप में उसका चुनाव हो चुका है, अगर पुस्तक ड्रामा बनकर खेली जाने वाली है—तो अग्रिम रायल्टी की बोली अधिक होगी। एक पुस्तक के लिए तो पाकेट बुक्स ने १०६,००० डालर तक दिए हैं; वह पुस्तक है रूआर्क का उपन्यास 'समथिंग ऑफ़ वेल्यू', जिसके कई सस्ते संस्करणों की ३०-४० लाख प्रतियाँ बिक चुकी हैं। बोली बोलने की इस प्रथा को अब प्रकाशक बन्द करना चाहते हैं, क्योंकि डर इस बात का है कि अच्छी पुस्तकें प्राप्त करने की इस होड़ में कभी-कभी बोली बहुत बढ़ जाती है, और इसके फलस्वरूप किसी समय भी सस्ती पुस्तकों के प्रकाशकों का दिवाला निकल सकता है।

जीवन-यात्रा

क्या जवानी, क्या बुढ़ापा सभी स्त्री-पुरुषों को अपने-अपने जीवन में समय-समय पर उतार-चढ़ाव, सुख-दुख, सम्पत्ति-विपत्ति, अमीरी-गरीबी, मान-अपमान, शादियाँ-गमियाँ, अपने-परायों से शिकायतें, भाग्य की निष्ठुरता, प्रयत्नों की निष्फलता, विचित्र-विचित्र समस्याओं का सामना होता है। जीवन-यात्रा उसी की सफल है जो स्थिति और समय के अनुकूल बिल्कुल ठीक व्यवहार करके अपना अभीष्ट सिद्ध करता है।

उपर्युक्त स्थितियों में ज्योति-स्तम्भ का काम देने को इस पुस्तक की रचना की गई है। दृष्टान्त रूप से बीसियों मनोरंजक जगबीतियों का वर्णन करके, प्रत्येक समस्या का सुलझाव उपस्थित करने में अपने ५५ वर्ष के असंख्य अनुभवों से कविराज जी ने पाठकों को उपकृत और लाभान्वित किया है। २८० पृष्ठ। मूल्य १॥)।

पता—कविराज हरनाम दास
बी० ए० एण्ड सन्ज़,
गौरीशंकर मन्दिर (लाल किले के पास) चांदनी चौक, दिल्ली-६

PHARMACY AND PUBLICATIONS
सुखदाता
KAVIRAJ HARNAM DAS B.A. & SONS, DELHI.

इंगलैण्ड में स्थिति ऐसी नहीं है। वहाँ भी अग्रिम रायल्टी की प्रथा तो है, मगर अग्रिम रायल्टी की रकम इतनी अधिक नहीं है। ज्यादातर यह अग्रिम रकम १०० पौंड से २०० पौंड तक ही सीमित रहती है।

मौलिक पुस्तकों के लिए प्रकाशकों के प्रयत्न विशेष विषयों तक ही सीमित रहते हैं। अमरीका में ऐसे विशिष्ट विषयों पर पुस्तकें, जिनकी माँग निरन्तर बनी रहती है, मजबूत पुट्ठों वाले प्रकाशक सस्ते संस्करणों में नहीं आने देते। उदाहरण के लिए शिशु-पालन और पाक-विज्ञान पर पुस्तकों की बहुत माँग है और पुनर्मुद्रण उपर्युक्त अवस्था में सम्भव नहीं। इसलिए सस्ती पुस्तकों के प्रकाशक विशेष लेखकों द्वारा ऐसी पुस्तकें लिखवाते हैं और उनके लिए पर्याप्त अग्रिम रायल्टी भी देते हैं ताकि लेखक अपना मूल्यवान समय इस काम में लगा सकें। पाकेट-बुक्स वालों की एक सफल पुस्तक डॉ० स्पाक द्वारा लिखित "बेबी एण्ड चाइल्ड केअर" तीन-चार संशोधित संस्करणों में प्रकाशित हो चुकी है और इसकी कई लाख प्रतियाँ बिक चुकी हैं। इसके अलावा यही प्रकाशक कुछ विशेष शब्द-कोषों का भी प्रकाशन कर रहे हैं।

इंग्लैण्ड में पेलिकन सिरीज़ के लिए (जो 'पेंगुइन बुक्स' नामक संस्था प्रकाशित करती है) अधिकतर मौलिक पुस्तकें ही लिखाई जाती हैं—और कभी-कभी ऐसा भी होता है कि पहले सस्ते संस्करण में छपकर पुस्तकें मँहगे संस्करण में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाती हैं।

सस्ती पुस्तकों के प्रकाशन में एक विशिष्ट सम्पादकीय दृष्टिकोण ध्यान में रखा जाता है। एक तो यह कि पुस्तक विशेषज्ञ के लिए नहीं, जन-साधारण की दिलचस्पी को ध्यान में रखकर लिखी जानी चाहिए। यदि पुस्तक बहुत ज्ञानपूर्ण है और केवल कुछ बहुत ही ज्ञानी-मानी व्यक्ति ही उसे समझ सकते हैं तो कोई प्रकाशक अपना पैसा उस पुस्तक पर लगाने को तैयार नहीं होगा। प्रसिद्ध लेखकों की पुस्तकें आसानी से बिक जाती हैं, मगर पुस्तक यदि अच्छी नहीं है, तो बड़े-से-बड़ा नाम भी उसे बेचने में समर्थ नहीं होगा। पुस्तक अच्छी होनी चाहिए, यह पहली आवश्यकता है।

बालकों की पुस्तकों के क्षेत्र में, प्रकाशक अधिकतर स्कूल जाने की उम्र से छोटे बच्चों के लिए ही प्रकाशन करते हैं; कारण यह कि एक बार स्कूल में भरती होकर बच्चे को अन्य पुस्तकें पढ़ने का समय बहुत कम मिल पाता है। सबसे लोकप्रिय पुस्तकें पुरानी कथाओं पर आधारित हैं और इसके बाद नम्बर उन पुस्तकों का आता है जो फ़िल्मी चरित्रों पर आधारित रहती हैं, जैसे वाल्ट डिस्नी का 'सिंडरेला'। सरल नई पुस्तकें भी प्रकाशित की जाती हैं, मगर उनमें दिलचस्पी के पुट के साथ-साथ शिक्षा के सिद्धान्तों का पालन भी आवश्यक है। इस क्षेत्र में अमरीका के प्रकाशक साइमन एण्ड शूस्टर अपनी लिटल गोल्डन लाइब्रेरी द्वारा काफी ख्याति प्राप्त कर चुके हैं। इस सिरीज़ में २०० से अधिक पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। ग्रासेट एण्ड डनलप की इस दिशा में काफी ख्याति प्राप्त कर चुके हैं। इंगलैण्ड और अन्य यूरोपीय देशों में इस प्रकार की मिलती-जुलती सिरीज़ नहीं पाई जाती। पेंगुइन वालों की पफ़िन और प्टार्मिक बुक्स ने अभी तक कुछ अधिक सफलता प्राप्त नहीं की है।

सस्ती पुस्तकों की छपाई और जिल्दबन्दी के तरीके वैसे ही हैं जैसे अन्य बड़ी संख्या में निर्मित वस्तुओं के लिए प्रयोग में लाए जाते हैं। अमरीका में इन पुस्तकों को छापने के लिए अधिकतर 'फ्लैशड़ी' नामक मशीन इस्तेमाल में लाई जाती है, जो कागज़ की रीलों से छापती है। यह मशीन १२८ पृष्ठों की १८०० प्रतियाँ एक घण्टे में छाप डालती है। एक ओर से कागज़ मशीन के भीतर जाता है और दूसरी ओर से तहे-तहाए फ़र्मे बाहर निकलते जाते हैं। जिल्दबन्दी के लिए शेरिडन आटोमैटिक बाइंडर का प्रयोग होता है। फ़र्मे एकत्रित होते हैं, उनके पुट्ठे का भाग कटता है और उसमें नालियाँ बनाई जाती हैं, गोंद लगाकर पृष्ठों को आपस में जोड़ा जाता है और ४ अथवा ५ रंगों का चमकीला आवरण लगाकर—तीन ओर से स्वचालित कटाई की मशीन द्वारा कटकर, पुस्तकें डिब्बों में भर दी जाती हैं। छपाई और जिल्दबन्दी के काम की गति का अन्दाज़ा इससे लगाया जा सकता है कि ३८४ पृष्ठ की एक पुस्तक की २५०,००० प्रतियों की (कम्पोजिंग कार्य को छोड़कर) छपाई, जिल्दबन्दी और गत्ते के डिब्बों में भराई (पुस्तकें डिब्बों में भरकर रखी जाती हैं और एक डिब्बे में तीस पुस्तकें आती हैं) २८ घण्टे में पूरी हो जाती है।

फ़्लैशड़ी मशीन पर छपाई रबड़ के प्लेटों द्वारा होती है। रबड़ के प्लेटों के उपयोग का आरम्भ द्वितीय महायुद्ध के बाद से अपनाया गया है। इसका सबसे बड़ा लाभ यह है कि जहाँ टाइप टूट सकता है, या उखड़कर छिटक

हमारे उत्कृष्ट प्रकाशन

उपन्यास

जब खेत जागे	: कृष्णचन्द्र	३·००
यात्रा	: साने गुरुजी	४·००
जहाँ बर्फ गिरती है	: ए० हमीद	३.५०
झील और कमल	: अनु० श्यामू संन्यासी	६·००

कहानियाँ

निशानियाँ	: उपेन्द्रनाथ 'अश्क'	३·००

नाटक

बाबू	: आचार्य आत्रेय	२·००
नेपथ्य	: आरिगपूडि	३·००

जीवनी (रंगीन चित्र सहित)

बापू की कहानी	: कृष्णा हठीसिंह	२·२५

बम्बई प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड

१६, ओल्ड, कस्टम हाऊस रोड,

बम्बई–१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उर्दू के
लोकप्रिय शायर

उनकी बेहतरीन

ग़ज़लें, नज़्में, शेर, रुबाइयाँ पढ़िए !

प्रत्येक शायर पर अलग पुस्तक है जिसमें उसकी चुनी हुई शायरी के अलावा बड़ी ही रोचक शैली में उसकी जीवनी दी गई है। कठिन उर्दू शब्दों के अर्थ भी साथ ही दे दिये हैं ताकि आप पूरी तरह आज की उर्दू शायरी का लुत्फ़ उठा सकें। पुस्तकें सचित्र हैं और सजिल्द भी। आप इन पुस्तकों को अवश्य ही पसन्द करेंगे।

जीवनी और संकलन

गालिब	:	१।।)
जोश मलीहाबादी	:	१।।)
इक़बाल	:	१।।)
साहिर लुधियानवी	:	१।।)
फ़ैज़ अहमद फ़ैज़	:	१।।)
सरदार जाफ़री	:	१।।)
मजाज़	:	१।।)
हफ़ीज़ जालंधरी	:	१।।)
जिगर मुरादाबादी	:	१।।)
फ़िराक़ गोरखपुरी	:	१।।)

राजपाल एण्ड सन्ज़

कश्मीरी गेट, दिल्ली-६

सकता है, वहाँ रबड़ के प्लेट के अक्षर बिलकुल सुरक्षित रहते हैं। इसके अलावा रबड़ के प्लेटों द्वारा दस-पन्द्रह लाख प्रतियों की छपाई बिलकुल स्पष्ट आती है, जब कि धातु के प्लेट घिसने लगते हैं। तीसरे, इन रबड़ के प्लेटों से मूल्यवान धातु की बचत होती है और ये रबड़ के प्लेट आसानी से एअर-कंडीशन किये गए गोदामों में काफ़ी दिन तक सुरक्षित रखे जा सकते हैं।

इंगलैंड में छापने के लिए परफ़ेक्टर मशीन इस्तेमाल की जाती है और यह भी १२८ पृष्ठ एक साथ छापती है। यहाँ भी आजकल रबड़ के प्लेटों द्वारा छपाई की जाती है। १९३०-४० में यहाँ सस्ती पुस्तकों को साधारण रीति से तागे से सिलाई करके बाँधा जाता था, मगर अब द्वितीय महायुद्ध के उपरान्त यहाँ भी गोंद से बाँधी पुस्तकों का चलन हो गया है और लगभग सभी जगह शेरीडन बाइंडर का प्रयोग होता है। अमरीका के चरण-चिन्हों पर चलकर इंगलैंड और यूरोप के सभी देशों ने अपनी सस्ती पुस्तकों की जिल्दबन्दी गोंद वाली कर ली है।

अब हम इन सस्ती पुस्तकों पर लागत के प्रश्न पर आते हैं। इस विषय में मैं यहाँ दो महत्त्वपूर्ण प्रकाशकों के लागत के आँकड़े देना चाहता हूँ, जिससे हमारे देश में सस्ती पुस्तकों के प्रकाशन-कार्य में आप लोगों का थोड़ा-बहुत मार्ग-दर्शन हो सके। इनमें से एक अमरीका के प्रकाशक हैं और दूसरे इंगलैंड के।

अमरीका में सस्ती पुस्तकों के बिक्री के दाम इस प्रकार हैं—

२५० पृष्ठों की पुस्तक के दाम		२५ सेंट प्रति	कापी
४३२ ,,	,,	३५ ,,	,,
७२० ,,	,,	५० ,,	,,

बाजार में २५ सेंट पर बिकने वाली पुस्तक पर खर्च का विभाजन इस प्रकार है —

भीतर के पृष्ठों की छपाई व कागज के दाम (लगभग १ सेंट प्रति १०० पृष्ठ)	२ सेंट (८%)
कवर का कागज, डिजाइन प्लेट्स, और छपाई	१ सेंट (४%)
फ़र्मों की तहाई और जिल्दबन्दी	२ सेंट (८%)
लेखक की रॉयल्टी	१ सेंट (४%)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गाड़ी भाड़ा (प्रेस से गोदाम तक)	१ सेंट (४%)
थोक व्यापारी का कमीशन	२ सेंट (८%)
ऊपर का खर्च (स्टाफ़, इत्यादि)	५ सेंट (२०%)
लाभ	१ सेंट (४%)
कुल जमा	१५ सेंट

यहाँ यह कहना आवश्यक है कि इन सस्ती पुस्तकों पर विक्रेता को ४०% कमीशन दिया जाता है, ताकि अधिक-से-अधिक बिक्री करने के लिए उसे उत्साह मिले। ८% कमीशन थोक व्यापारी का इसमें जोड़ दिया जाय, तो कुल कमीशन ४८% हो जाता है। इस पर भी विक्रेताओं के विषय में प्रकाशकों की यह शिकायत रहती है कि वे पुस्तकों की उचित देख-भाल, और स्टॉक की पूरी जांच नहीं करते। सभी प्रकाशक अपने प्रतिनिधियों को विक्रेताओं के यहाँ भेजते हैं; इनका कार्य यह होता है कि वे स्टॉक को देखें, प्रत्येक पुस्तक की बिक्री की जाँच करके न बिकने वाली पुस्तकें हटा लें और बिकने वाली पुस्तकों की प्रतियाँ बढ़ा दें, क्योंकि अक्सर यह देखा गया है कि एक मुहल्ले में न बिकने वाली पुस्तकें दूसरे मुहल्ले में बहुत अच्छी प्रकार बिक जाती हैं।

इंगलैंड में सस्ती पुस्तकों के बिक्री के मूल्य इस प्रकार है—

१६० पृष्ठ की पुस्तक का मूल्य	२ शिलिंग
२२५ " "	२ शि० ६ पें०
३००-४०० " "	३ शि० ६ पें०

कुछ पुस्तकें ऐसी भी हैं जो ५ शि० और ६ शि० ६ पें० पर बिकती हैं।

अमरीका की प्रथा से विपरीत, इंगलैंड में प्रत्येक सस्ती पुस्तक का मूल्य उस पर आई हुई लागत के आधार पर निर्धारित किया जाता है। २०,००० के संस्करण में छपी छोटी पुस्तक का मूल्य एक अन्य ६०,००० के संस्करण में छपी बड़ी पुस्तक के मुकाबले में अधिक हो सकता है। लागत से ३ अथवा ३½ गुना मूल्य रखने का सामान्य नियम है, मगर प्रत्येक पुस्तक का मूल्य ऐसी इकाइयों में रखा जाता है, जो वहाँ के सिक्कों से मेल खाए।

बाजार में २ शि० ६ पें० पर बिकने वाली पुस्तक पर लागत का विभाजन इस प्रकार है—

भारत के सन्त महात्मा

ले० रामलाल

(भारत के ११४ सन्त-महात्माओं के जीवन-चरित्र और उपदेश का अपूर्व अमृत-कलश)

मूल्य सेवार्थ केवल दस रुपये

साइज़ क्राउन १६, पृ० सं० १०२६, सुन्दर तिरंगा मुखपृष्ठ, आकर्षक छपाई, बढ़िया कागज़ व गेटअप, मज़बूत जिल्द।

अपने ढंग का यह अनोखा अमूल्य ग्रन्थ सन्त-महात्माओं के मनमोहक तिरंगे व इकरंगे चित्रों से भी सुशोभित है।

हमारे नये उपन्यास

चौलुक्यवंशी उपन्यासमाला

चौलादेवी : 'धूमकेतु'	५.५०
राजसंन्यासी : "	५.५०
कर्णावती : "	६.००

गुप्तकालीन उपन्यासमाला

वैशाली : 'धूमकेतु'	५.५०
नगरसुन्दरी : "	४.२५
मगधपति : "	५.००
महामात्य चाणक्य : 'धूमकेतु'	४.५०

* * *

मेरी पति-विजय : रमणलाल देसाई	६.००
प्रलय : "	५.५०
सिंदूर की राख : कश्मीरीलाल ज़ाकिर	३.००
काम और कामिनी : प्रेमा कंटक	६.००
अमरनाथ : शरच्चन्द्र चट्टोपाध्याय	२.५०
तूफ़ान : अनु. परदेशी	२.००

अन्य नये प्रकाशन

अर्थशास्त्र का परिचय : अनु. महेंद्र मिश्र, एम.ए.	२.००
व्यापार के नवक्षितिज : परदेशी	२.००
आर्थिक साम्राज्यवाद : आलफ्रेड ज़ोबरमान	१.००
महान् परिवर्तन : अनु. ए. के. जैन	२.००
त्याग का देवता : परदेशी	०.६०
सपनों के विधाता : "	०.६०
सागर में उजाला : कपिला ठाकोर, बी. ए.	०.६०

वोरा एण्ड कम्पनी पब्लिशर्स प्रा० लि०

३, राउन्ड बिल्डिंग, बम्बई-२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काग़ज़	३.७५ पें०	(१२.५%)
छपाई और जिल्दबन्दी	७.२५ "	(२४.१७%)
लेखक की रायल्टी	२.२५ "	(७.५%)
घर और गाड़ी का किराया, विज्ञापन	२.५६ "	(८.५३%)
वेतन, दफ़्तर का खर्च, पेंशन इत्यादि	२.३९ "	(७.९६%)
थोक व्यापारी और विक्रेता	१०.६३ "	(३५.४४%)
टैक्स	०.५९ "	(१.९७%)
लाभ	०.५८ "	(१.९३%)
कुल जमा	३० पें० अर्थात् २ शि० ६पें०	

जहाँ अमरीका में ४८% कमीशन दिया जाता है, वहाँ इंगलेंड में कुल ३५.४४% कमीशन ही दिया जाता है। इस कम कमीशन के साथ ही दोनों देशों की बिक्री-पद्धति भी भिन्न-भिन्न है। प्रथम, दोनों देशों में संस्करण अलग-अलग बल के हैं। इंग्लैंड में प्रथम सस्ता संस्करण २०,००० से ३०,००० तक का होता है और कहीं-कहीं तो १५,००० प्रतियों का संस्करण भी पाया जाता है। अमरीका में प्रथम संस्करण कम-से-कम दो लाख प्रतियों का होता है और अधिकतर पुस्तकें ५-६ लाख के प्रथम संस्करण में प्रकाशित होती हैं। दूसरे, बेचने के उपाय भी दोनों देशों में भिन्न हैं। इंगलेंड में पुस्तकों की प्रतियाँ आर्डर के अनुसार और उसी अनुपात में भेजी जाती हैं। अमरीका में शत-प्रतिशत वापसी की शर्त पर पुस्तकें विक्रेताओं में बाँटी जाती हैं। तीसरे जहाँ इंगलेंड में कागज, छपाई, और जिल्दबन्दी पर खर्च बिक्री के मूल्य का ३६% भाग है, वहाँ अमरीका में यह २०% है। लेखक की रायल्टी इंगलेंड में ७½% है, जो कहीं कहीं अच्छे लेखकों के लिए १०% तक बढ़ाई जा सकती है; अमरीका में रायल्टी ४% से अधिक नहीं दी जाती—शायद इसलिए कि वहाँ के संस्करण बहुत बड़े होते हैं।

और अब अन्त में हम बिक्री के केन्द्रों के विषय पर आते हैं, जिनके द्वारा पुस्तकें पाठकों के हाथों में पहुँचती हैं।

अमरीका में बिक्री का संयोजन ३००० पुस्तक-विक्रेताओं और एक लाख अन्य दुकानों के द्वारा होता है। मुख्यतः पुस्तकों का वितरण आठ सौ थोक एजेंसियों द्वारा होता है और उन्हें शत-प्रतिशत वापसी की गारंटी दी जाती है। इस प्रकार विक्रेता कुछ भी जोखम नहीं उठाता; उसे तो बस इतना स्थान उपलब्ध करना पड़ता है जिसमें पुस्तकें रखी जा सकें। दुकानों पर सब्जी बिकती हो या तम्बाकू, दवाइयाँ बिकती हों अथवा कापियाँ और कागज—कुछ भी बिकता हो, वे आसानी से सस्ती किताबें भी रख लेते हैं। बस, थोक एजेंसियों के उन तक पहुँचने की देर है—और एक नया बिक्री-केन्द्र उनके लिए खुल जाता है।

सर्वप्रथम इन थोक-एजेंसियों का काम समाचार-पत्रों और पाक्षिक पत्रों का वितरण करना था, मगर जब सस्ती पुस्तकों का चलन आरम्भ हुआ, तो इन्हीं पत्र-एजेंसियों का उपयोग किया गया, ताकि बहुत बड़े पैमाने पर इन पुस्तकों का वितरण कुछ ही दिनों में सम्पन्न हो जाय। पत्र-वाहकों और पत्र बेचने के स्टालों के अलावा इन एजेंसियों ने अन्य सामान्य चीजें बेचने वाले दुकानदारों को भी राजी कर लिया कि वे अपने यहाँ पुस्तकों के कुछ रैक रख लें।

इन्हीं उपायों के कारण ही वहाँ किसी अच्छी पुस्तक के सस्ते संस्करण की एक वर्ष में कई-कई लाख प्रतियाँ बिक जाती हैं। थोक एजेंसियों के अलावा, स्कूलों में सीधी बिक्री २०% कमीशन पर की जाती है। कुछ संख्या फ़ौजी छावनियों, सैनिक केन्द्रों और विदेशों में भी बिकती है। विदेशों में उल्लेखनीय देश एशिया और दक्षिणी अमरीका के हैं।

बच्चों की पुस्तकें (लिटल गोल्डन बुक्स, इत्यादि) भी इन्हीं बिक्री-केन्द्रों द्वारा बेची जाती हैं, मगर एक अंतर के साथ; इन पुस्तकों का वितरण मुख्यतः ऐसी दुकानों में होता है, जहाँ खरीदारी के लिए अक्सर महिलाएँ आती हों, जिनमें से मुख्य है अमरीका की सुपर-मार्केट, जहाँ फल, सब्जियाँ, मक्खन, बंद डिब्बों में भरे हुए खाने के पदार्थ आदि बिकते हैं। इन पुस्तकों में से प्रत्येक का संस्करण साढ़े तीन लाख का होता है—डेवी—क्राकेट—पुस्तकों की तो २५ लाख प्रतियाँ बिक चुकी हैं। प्रतिवर्ष इन पुस्तकों की कुल मिलाकर पाँच करोड़ प्रतियाँ बिकती हैं, जो सचमुच एक श्रेयस्कर बात है!

इंगलेंड में ज्यादातर बिक्री पुस्तक-विक्रेताओं द्वारा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ही होती है—इसलिए वहाँ इतने अधिक बिक्री-केन्द्र नहीं हैं, जितने अमरीका में। उदाहरणस्वरूप, पेंगुइन बुक्स संस्था ६ अथवा अधिक पुस्तकों के आर्डर पर ३३ १/३% कमीशन देती है। ६ प्रतियों से कम के आर्डर पर १६ २/३% कमीशन दिया जाता है। भेजने का खर्च सदा प्रकाशक उठाता है। कुल संस्करणों के आधे भाग की—पेंगुइन अकेली एक करोड़ प्रतियाँ १९५५ में बेच चुकी है—विदेशों में खपत होती है—जिनमें प्रधान हैं आस्ट्रेलिया, भारत और अफ्रीका।

यह है संक्षेप में इंगलैंड और अमरीका में सस्ती पुस्तकों के प्रकाशन और वितरण का चित्र। १९३५ ई० में जब पहले-पहल पेंगुइन की पुस्तकें तैयार होकर बाजार में आईं, तो कई शंकाप्रसादों ने अपना सिर हिलाकर कहा था, "नहीं, यह प्रयोग कभी सफल नहीं हो सकता!" मगर पेंगुइन संस्था के पीछे जो मस्तिष्क थे, उन्हें अपने विचार पर भरोसा था। सो अन्त में उनकी जीत हुई और अपने ध्येय में उन्हें सफलता मिली। उनका ध्येय था साधारण आय के व्यक्तियों के लिए संसार की महान् और सुन्दर पुस्तकें प्राप्य करना। सस्ती पुस्तकों की सफलता सचमुच इस बात का प्रमाण है कि लोकराज साधारण नागरिक तक पहुँच चुका है।

हम भारतवासियों का, जो लोकराज की दहलीज़ पर खड़े हैं, लोकराज और स्वतन्त्रता के प्रति एक कर्त्तव्य है। एक कर्ज़ है, जो हमें और आपको अदा करना है। वह कर्ज़ यह है कि हम उन तक सस्ती मगर ज्ञान-मनोरंजन-पूर्ण पुस्तकें पहुँचाएं। अगर हम सफल हुए तो लोकराज हमारे जीवन में समोकर पनपेगा; और अगर कहीं हम असफल हुए, तो फिर···

अपनी मंजिल पर पहुँचने के रास्ते पर अनेक बाधाएँ उपस्थित हैं। अच्छे छापेखानों की हमारे देश में काफी कमी है; छपाई की महँगाई भी सर्वविदित है; कागज का भाव दिन-दूना रात-चौगुना बढ़ रहा है। बड़ी संख्या में पुस्तक-प्रकाशन के ढंग हमारे देश में अज्ञात ही हैं। पुस्तकों की बिक्री के लिए हमारे देश में ऐसा प्रायोजन नहीं, जो किसी भी दृष्टि से अमरीका अथवा इंगलैंड से

(शेष पृष्ठ ९३ पर)

राजकमल पॉकेट बुक्स

पुस्तकालयों, पुस्तक-विक्रेताओं एवं लेखकों से निवेदन

हमने १९५९ के प्रारम्भ से सस्ते दाम की कच्ची जिल्द की पुस्तकें प्रकाशित करने की जो योजना बनाई है उसकी पहली ६ पुस्तकों का निर्णय भी हो गया है। अगले अंक में इन पुस्तकों के विवरण की प्रतीक्षा करें। इस विषय में यदि कोई पाठक, लेखक, पुस्तक-विक्रेता या पुस्तकालयाध्यक्ष इस पुस्तक-माला को अधिक लोकप्रिय बनाने के लिए भविष्य में पुस्तकों के चुनाव-सम्बन्धी अथवा अन्य कोई भी सुझाव हमें दें तो हम इसके लिए आभारी होंगे।

आपकी सुविचारित सम्मति की प्रतीक्षा है।

राजकमल
प्रकाशन प्राइवेट लि०
दिल्ली : इलाहाबाद : बम्बई : पटना : मद्रास

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आगामी मास के प्रकाशन

अपर इण्डिया पब्लिशिंग हाउस लि० लखनऊ
—राजनीति शास्त्र, श्री आशीर्वादम्
—बनस्पति शास्त्र भाग २, दत्त व सक्सेना

आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली
—मास्टर जी, श्री आनन्द प्रकाश जैन
—रिश्वत के अनेक ढंग, श्री देवराज दिनेश
—बोरीवली, बोरीबन्दर और मैं, श्री शैलेश भटियानी

देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली
—विश्व कर्म दर्पण, श्री राम अवतार वीर

धनपतराय एण्ड सन्स, दिल्ली
—भारत का ब्रिटिश इतिहास, श्री कृपालसिंह नारंग

नया साहित्य प्रकाशन, इलाहाबाद
—भूदान, श्री मार्कण्डेय, कहानी-संग्रह

नीलकमल प्रकाशन, कानपुर
—अपने देश की कहानी, श्री एन० दीक्षित
—सदाचार और व्यवहार, श्री एन० दीक्षित
—घायल, श्री कृष्ण गोपाल 'आबिद'
—मृग मरीचिका, पु० मु०, श्री कृष्ण गोपाल 'आबिद'

नीलाभ प्रकाशन गृह, इलाहाबाद
—डाची, श्री उपेन्द्रनाथ अश्क, प्रौढ़ोपयोगी कहानी-संग्रह
—मोती, श्री उपेन्द्रनाथ अश्क, प्रौढ़ोपयोगी कहानी-संग्रह
—काकड़ा का तेली, श्री उपेन्द्रनाथ अश्क, कहानी
—माँ, श्री उपेन्द्रनाथ अश्क, प्रौढ़ोपयोगी कहानी-संग्रह

नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली
—अग्नि पुराण का काव्य शास्त्रीय भाग, श्री रामलाल वर्मा
—चन्द्रगुप्त और चाणक्य, श्री भगवतशरण उपाध्याय
—पिया, पु० मु०, श्रीमती उषादेवी मित्रा

बम्बई प्रकाशन प्राइवेट लि०, बम्बई
—सुबह का खोया, श्री सूर्यकुमार जोशी
—पृथ्वी के पड़ोसी, श्री मोहन
—मध्य मार्ग, बालज़ाक
—प्राइड एण्ड प्रेजुडिस, हिन्दी रूपान्तर, जेन ऑस्टन
—सेन्स एण्ड सेन्सिबिलिटी, रूपान्तर, जेन ऑस्टन

भारतीय ज्ञानपीठ, बनारस
—शायरी के नये दौर, भाग २, श्री अयोध्याप्रसाद गोयलीय
—मोतिया वाली कहानियां, श्री करतारसिंह दुग्गल

भारतीय साहित्य प्रकाशन, मेरठ
—हमारे सन्त, श्री रघुवीर शरण 'मित्र'
—हमारे नीतिकार, श्री विश्व प्रकाश दीक्षित 'बटुक'
—कदम मिलाते बढ़े चलो, श्री रघुवीर शरण 'मित्र'
—कहानियां अमर हैं, श्री रघुवीर शरण 'मित्र'

राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, इलाहाबाद, बम्बई
—रूपाजीवा, उपन्यास, डॉ० लक्ष्मीनारायणलाल
—चिदम्बरा, श्री सुमित्रानन्दन पन्त
—अतिमा, पु० मु०, श्री सुमित्रानन्दन पन्त

राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली
—मेरा पहला प्यार, अलेक्जेण्डर इवानोविच तुर्गनेव, अनु०, श्री शिवदानसिंह चौहान
—सम्राट् अशोक, श्री प्राणनाथ वानप्रस्थी
—चन्द्रशेखर आज़ाद, श्री प्राणनाथ वानप्रस्थी

सन्मार्ग प्रकाशन, दिल्ली
—उर्दू की हास्य-रस कहानियाँ, श्री जगन्नाथ शर्मा
—बड़ों के व्यंग्य-विनोद, श्री हिमांशु श्रीवास्तव
—महानता की सच्ची कहानियाँ, श्री हिमांशु श्रीवास्तव
—संस्कारों के बन्धन, श्री अभय कुमार 'यौधेय'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

—कल्पना, श्री रामकृष्ण 'कौशल'

सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली

—सतवंती : मालवी–मालवी लोककथाएँ, श्री चन्द्र शेखर दुबे
—तमिल साहित्य और संस्कृति, श्री अवधनन्दन
—परमहंस की कथाएँ, श्री महावीर प्रसाद पोद्दार
—समुद्र के जीव जन्तु, श्री सुरेशसिंह
—कथा सरित्सागर, श्री गोपालकृष्ण कौल
—विराट, स्टीफन ज्विग, अनु०, श्री यशपाल जैन
—पत्रव्यवहार (दो भाग), सम्पा० श्री रामकृष्ण बजाज, श्री जमनालाल बजाज से हुआ पत्र-व्यवहार
—कांग्रेस का इतिहास (संक्षिप्त), श्री पट्टाभि सीतारमैया

हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर (प्राइवेट) लि०, बम्बई

—प्राचीन काव्य सौरभ, सम्पा० श्री शिवसहाय पाठक, व श्री जगदम्बा शास्त्री
—चार चार, श्री प्रेमेन्द्र मित्र, अनु० श्री मदनलाल जैन, उपन्यास
—शेर का सवार, श्री भबानी भट्टाचार्य, उपन्यास, अनु० श्री शान्ता जैन

हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी

—बीरबल का ज्ञान ध्यान, श्री ओमप्रकाश बेरी
—बीरबल की गागर सागर, श्री ओमप्रकाश बेरी
—बीरबल की गप शप, श्री ओमप्रकाश बेरी
—मुन्नू के मित्र, बाल साहित्य, श्री कुलभूषण,
—कैरम बोर्ड की परियां, बाल साहित्य, श्री शारदा मिश्र
—पुलिस, श्री राजकुमार, उपन्यास
—भूख और तृप्ति, उपन्यास, श्री सरस्वती सरन 'कैफ़'
—मृत्यु की मीनार, कहानी-संग्रह, श्री कृष्णचन्द्र भिक्खू
—काव्य रूपों के मूल स्रोत और उनका विकास

हिन्दी साहित्य कुटीर, वाराणसी

—प्राणायाम मीमांसा, ठा० विजय बहादुरसिंह

हिन्दी साहित्य संसार, दिल्ली

—घाटी की परियाँ, खलील जिब्रान
—रासो के दो अध्याय, प्रो० भारत भूषण 'सरोज' व श्री ओमप्रकाश सिंघल
—जायसी और उनका पद्मावत, प्रो० दानबहादुर पाठक व श्री जीवन प्रकाश जोशी
—भाषा विज्ञान एवं हिन्दी भाषा का इतिहास, पु० मु०, प्रो० भारत भूषण 'सरोज'

(पृष्ठ ९१ का शेष)

फैल सके। फिर भी हमें अपना काम आरम्भ करना है—किसी स्थान से, किसी भी तरह, और अभी, इसी वक्त !

दूसरे देशों में पाई जाने वाली सस्ती पुस्तकों की प्रकाशन-प्रणाली पर पर्याप्त ज्ञान हमारे पास उपलब्ध है। मेरी अपनी लिखी हुई इस विषय पर विस्तृत रिपोर्ट (Production & Distribution of Paper Back Popular Books) प्रेस में है और कुछ ही दिनों में शिक्षा मन्त्रालय के प्रकाशन विभाग से उपलब्ध हो सकेगी। इसके अलावा कई अन्य सज्जन और संस्थाएँ हैं, जिनसे जानकारी प्राप्त की जा सकती है। हमें तो बस एक कदम उठाना है—एक नया कदम !

अन्त में मैं आपसे एक प्रार्थना करना चाहता हूँ—आप इस आकर्षक कार्य की ओर अग्रसर हों ! कोई कारण नहीं कि आप अपने प्रयास में सफल न हों।

उत्साह और एक सौ पौंड की पूँजी के साथ आरम्भ करके पेंगुइन बुक्स संस्था आज संसार-भर पर छा गई है।[1] इंगलेंड की यह संस्था आज सभी अन्य संस्थाओं में अपना सिर गर्व से ऊँचा उठा सकती है। मुझे विश्वास है कि कुछ हजार रुपयों की पूँजी आप भी इस कार्य में लगा सकते हैं। रही बात उत्साह की, तो उसके विषय में मुझे रत्ती-भर भी सन्देह नहीं है। आप सब यहाँ अपनी समस्याओं पर विचार-विनिमय करने के लिए एकत्रित हुए हैं—यह क्या आपके उत्साह का कम प्रमाण है !

---

१. सिलाई के बिना, गोंद द्वारा जिल्द बाँधने की कई सस्ती मशीनों का ब्योरा आपको मेरी उपर्युक्त रिपोर्ट में मिल सकता है। उदाहरणार्थ 'एहलमैन लुम्बेक क्विक थ्री' बाइंडिंग मशीन के दाम केवल ४,६०० मार्क (लगभग ७,००० रुपये) हैं—और यह मशीन H. Ehlermann, K. G., Verden/Aller (west Germany) से मंगाई जा सकती है। यह मशीन एक घंटे में ३०० मोटी पुस्तकें और ६०० तक पतली पुस्तकें बाँध सकती है, और इसे चलाने के लिए केवल दो व्यक्ति पर्याप्त हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सितम्बर मास के प्रकाशन

आलोचना, निबन्ध, संस्कृति

अत्रिदेवजी गुप्त, **प्राचीन भारत में प्रसाधन**, २१६, क्रा०, भारतीय ज्ञानपीठ, बनारस ३.५०
आदित्येश्वर कौशिक, **अशोक हिन्दी शब्दकोष**, पु० मु०, ७३६, क्रा०, हिन्दी साहित्य संसार, दिल्ली ३.७५
उमाकान्त डॉ०, **मैथिलीशरण गुप्त : कवि और भारतीय संस्कृति के आख्याता**, ४८२, रायल नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, दिल्ली १५.००
चतुरसेन शास्त्री, **भारतीय संस्कृति का इतिहास**, १०००, डि०, रस्तोगी एण्ड सन्स, मेरठ १५.००
भारत भूषण 'सरोज', **जयहिन्द निबन्धमाला**, पु० मु० ४२४, क्रा०, हिन्दी साहित्य संसार, दिल्ली २.५०
भारत भूषण 'सरोज', **महात्मा कबीर**, २०८, क्रा०, हिन्दी साहित्य संसार, दिल्ली २.५०
वि० स० खांडेकर, **चांदनी**, ३५३, क्रा०, देशमुख अणि कम्पनी, पूना ७.००
शा० ना० व्यास, **रामायणकालीन संस्कृति**, ३३८, क्रा०, सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली ४.००
शा० ना० व्यास, **रामायणकालीन समाज**, ३२०, क्रा०, सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली ४.००

इण्डस्ट्रिल-टैकनिकल

कृष्णानन्द शर्मा, **वर्कशाप प्रेक्टिस**, ४०८, क्रा०, देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली १०.००
के० प्रसाद, **प्राकृतिक चिकित्सा सार**, ५०८, क्रा०, देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली ६.००
रामअवतार वीर, **बिल्डिंग कन्स्ट्रक्शन हैण्ड बुक**, १०००, ड० क्रा०, देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली २५.००
रामनारायण, **दांतों की चिकित्सा**, ६४, क्रा०, देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली १.२५
लाड़ली मोहन, **साग-सब्जी उगाओ**, १०४, क्रा०, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली २.००
श्री कृष्ण-मनमोहन सरल, **मिट्टी का काम**, १२८, क्रा०, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली २.५०

उपन्यास

अलेक्जेंडर ड्यूमा, अनु० सिद्धगोपाल, **कलाकार कैदी**, २३०, क्रा०, हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर प्राइवेट लि०, बम्बई ३.५०
आचार्य मग, **अतृप्त**, ३०१, क्रा०, हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी ४.७५
उदयशंकर भट्ट, **लोक परलोक**, २०६, क्रा०, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, इलाहाबाद, बम्बई ३.५०
कृष्णचन्द्र, **खरगोश का सपना**, ८२, क्रा०, बम्बई प्रकाशन प्राइवेट लि०, बम्बई २.००
कृष्णचन्द्र, **चालाक खरगोश**, ७२, क्रा०, बम्बई प्रकाशन प्राइवेट लि०, बम्बई १.७५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रघुवीर शरण 'मित्र', **आग और पानी**, पु० मु०, ५०८, क्रा०, भारतीय साहित्य प्रकाशन, मेरठ ७·००
वि० स० खांडेकर, **रुपहले बादल**, २४४, क्रा०, देशमुख अरिण कम्पनी, पूना ५·००

कविता

नानक देव, अनु० वियोगी हरि, **जपुजी**, ३२, क्रा०, सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली ०·३५
नीरज, **नदी किनारे** ६८, क्रा०, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली १·५०
भारत भूषण अग्रवाल, **ओ अप्रस्तुत मन**, १५१, डि०, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, इलाहाबाद, बम्बई ४·००
राजेन्द्र द्विवेदी, **शेक्सपियर के सानेट**, १२०, डि०, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली ३·००
राजेन्द्र शर्मा, **ज्ञान सतसई**, ११२, डि०, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली ३·००

कहानी

भास, **तीन नाटक**, ३२, क्रा०, सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली ०·३७
सुभद्रा कुमारी चौहान, **उन्मादिनी**, पु० मु०, १२०, क्रा०, हंस प्रकाशन, इलाहाबाद २·५०
सुभद्रा कुमारी चौहान, **सीधे-सादे चित्र** पु० मु०, १२०, क्रा०, हंस प्रकाशन, इलाहाबाद २·५०

धार्मिक

पन्नालाल जी साहित्याचार्य अनु०, **जीवनधर चम्पू**, ३४४, २२ × २६/८, भारतीय ज्ञानपीठ, बनारस ८·००
पन्नालाल जी साहित्याचार्य अनु०, **पद्मपुराण**, ५४८, २२ × २६/८, भारतीय ज्ञानपीठ बनारस १०·००
भदन्त आनन्द कौसल्यायन, **भगवद्गीता की बुद्धिवादी समीक्षा**, २७८, क्रा०, हंस प्रकाशन, इलाहाबाद ५·००
वियोगी हरि, **सन्त सुधा सार (संक्षिप्त)**, ५२४, क्रा०, सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली ५·००
विश्वम्भर सहाय प्रेमी, **राजतिलक**, ३२, क्रा०, सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली ०·३७
विश्वम्भर सहाय प्रेमी, **रामदूत अंगद**, ३२, क्रा०, सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली ०·३७
विश्वम्भर सहाय प्रेमी, **लंका दहन**, ३२, क्रा०, सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली ०·३७
विश्वम्भर सहाय प्रेमी, **लंका विजय**, ३२, क्रा०, सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली ०·३७
विश्वम्भर सहाय प्रेमी, **लक्ष्मण शक्ति**, ३२, क्रा०, सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली ०·३७
विश्वम्भर सहाय प्रेमी, **सीता की खोज**, ३२, क्रा०, सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली ०·३७
विश्वम्भर सहाय प्रेमी, **सुग्रीव से मित्रता**, ३२, क्रा०, सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली ०·३७
हरिभाऊ उपाध्याय, **युगधर्म**, १५०, क्रा०, सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली १·७५

नाटक

गोविन्द वल्लभ पन्त, **विष कन्या**, १६०, क्रा०, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली ३·००
जगन्नाथ प्रसाद मिश्र, **महान् मनीषी**, १७६, क्रा०, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली ३·००
मौरिस मेटरीलंक, अनु० डा० कामिल बुल्के, **नील पंछी**, १००, रायल, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना २·५०
विष्णु प्रभाकर, **बारह एकांकी**, २६०, क्रा०, भारतीय ज्ञानपीठ, बनारस ३·५०

नृत्य-संगीत

जगदीशचन्द्र, **भारत के नृत्य : कथकली**, ४०, कापी साइज, हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी १·२५
सुदामालाल श्रीवास्तव, **सरल संगीतकार, प्रथम भाग**, ६६, क्रा०, संगीत पुस्तक भवन, शिवपुर (वाराणसी) १·२५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुदामालाल श्रीवास्तव, **सरल संगीतकार, द्वितीय भाग**, ११२, क्रा०, संगीत पुस्तक भवन, शिवपुर (वाराणसी) १·२५

बाल साहित्य—प्रौढ़ साहित्य

कमलेश, **बाणभट्ट**, ७०, क्रा०, नया साहित्य प्रकाशन, इलाहाबाद १·५०
गौरीशंकर 'लहरी', **चिड़िया जीती राजा हारा**, ३२, कापी साइज, सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली १·००
जगदीशचन्द्र, **भारत की शिल्प कथाएँ**, ४६, कापी साइज, हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी १·२५
नारायणदत्त पांडे, **सयाना शेरू**, २८, कापी साइज़, सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली १·००
ब्रह्मानन्द, नरेश वेदी, **गरमी की कहानी**, ४८, क्रा०, सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली १·५०
मुरारीलाल शर्मा, **बुढ़िया की सूझ**, ३२, कापी साइज़, सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली १·००
रघुवीर शरण 'मित्र', **महापुरुष**, पु० मु०, क्रा०, भारतीय साहित्य प्रकाशन, मेरठ १·००
विष्णु प्रभाकर, **कुन्ती के बेटे**, ३२, कापी साइज, सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली १·००
हरिकृष्ण प्रेमी, **हम आज़ाद हुए**, ४०, कापी साइज, सर्वोदय प्रकाशन मन्दिर, दिल्ली २·२५

विविध

ग० वा० मावलंकर, **मेरे संस्मरण**, १८६, क्रा०, सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली २·००
गांधी जी, **कंगाली ऐसे दूर होगी**, ४०, क्रा०, सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली ०·४०
गांधी जी, **कताई यज्ञ है**, ४६, क्रा०, सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली ०·२५
गांधी जी, **ग्राम सेवा यों करें**, ३७, क्रा०, सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली ०·२५
गांधी जी, **स्त्रियां यह करें**, ४६, क्रा०, सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली ०·२५
गिलबर्ट हायेट, **पढ़ाने की कला**, २३२, डि०, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली ६·५०
तिबौर मॉड, **मैं नहरू से मिला**, १५४, क्रा०, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, इलाहाबाद, बम्बई ३·५०
मनोहरलाल वर्मा, **क्यों और कैसे**, १५२, डि०, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली ४·००
मो० क० गांधी, **देश सेवकों के संस्मरण**, १५२, क्रा०, सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली १·२५
विश्वनाथ मुखर्जी, **बना रहे बनारस**, १८८, क्रा०, भारतीय ज्ञानपीठ, बनारस १·२५

समाज शास्त्र

कामता प्रसाद, **तीन साथी : धरती बैल किसान**, ४८, क्रा०, अन्तर्राष्ट्रीय प्रकाशन मण्डल, पटना ०·७५
ब्रजविहारी पाण्डे, **समाज शिक्षा और उसका नवीन रूप**, १५०, क्रा०, अन्तर्राष्ट्रीय प्रकाशन मण्डल, पटना २·५०
सत्यप्रकाश मिलिंद, **श्रमदान**, ३२, क्रा०, सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली ०·२५

(पृष्ठ ७२ का शेष)

पुस्तक को एक नज़र से देखते हैं तो यद्यपि उसके अंगों का, अलंकार और प्रसाधन इत्यादि का अलग-अलग विश्लेषण नहीं करते, बल्कि सारे अंश सामूहिक रूप से हमारे मन पर प्रभाव डालते हैं और पुस्तक हमें सामूहिक रूप से आकर्षक या अनाकर्षक लगती है; किन्तु हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि उसको यह रूप प्रदान करने में कई बातों का योगदान सम्मिलित है; और प्रत्येक अंश एवं बात पर अलग-अलग पूरा ध्यान देने से ही वह सामूहिक प्रभाव उत्पन्न होता है जिसे हम सौन्दर्य के नाम से पुकारते हैं, और इसी सौन्दर्य को हम प्रकाशक की भाषा में 'गेट-अप' कहते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे नये प्रकाशन

लोक परलोक

श्री उदयशंकर भट्ट के इस नवीनतम उपन्यास में आधुनिक काल के सम्पर्कस्वरूप गंगा-तट पर बसे एक तीर्थ-स्थान के जीवन, क्रियाकलाप और विचार-भूमि के परिवर्तन की कहानी कही गई है। इस संघर्ष युग में व्यक्ति की सफलता समाज की पृष्ठ-भूमि में ही संभव है, यह इस रोचक कथा का सार कहा जा सकता है। यह उपन्यास धारावाहिक रूप में "धर्मयुग" में प्रकाशित होकर सर्वप्रशंसित हुआ है। मूल्य ३.५० मात्र।

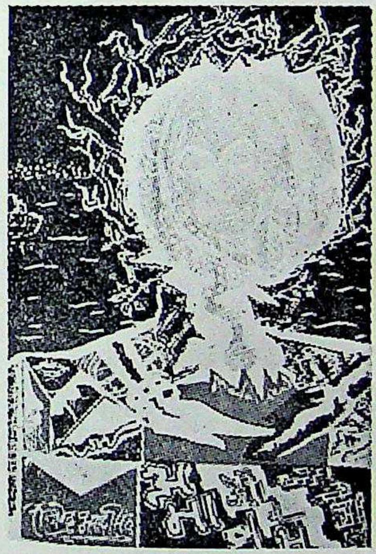

अमावस और जुगनू

(उपन्यास)

- प्रौढ़ और सामान्य व्यक्तित्व के बदले अप्रौढ़ और असाधारण व्यक्तित्व के विकास की प्रक्रिया···
- घिसी-पिटी और थोथी सामाजिकता के बदले कुण्ठित परिवेश और स्थितियों से नई पीढ़ी का संघर्ष····
- छिछली मनोवैज्ञानिकता के बदले गहनतर मनोद्वेगों का कलात्मक और समस्यामूलक प्रतिफलन····
- स्थूल, शुष्क और उबास-भरी शैली के बदले सूक्ष्म, बिम्ब-पूर्ण और प्रतीक-भरी सम्मोहक शैलियाँ।

लेखक श्री राजेन्द्रप्रसाद सिंह। मूल्य ८ रुपये मात्र।

•

मैं नेहरू से मिला

श्री तिबौर मांड ने विभिन्न विषयों पर श्री जवाहर लाल नेहरू से चार मुलाकातें की थीं जिनका प्रत्येक शब्द टेप रिकार्ड पर उतार लिया गया था। श्री नेहरू के व्यक्तित्व पर विभिन्न प्रभावों से, देश की राजनीति और समाज-संगठन से, विश्व के राजनीतिक दावपेंचों और युद्ध व शान्ति की समस्याओं से श्री नेहरू के ही शब्दों में परिचित होने के लिए यह पुस्तक पठनीय एवं ग्राह्य है।

मूल्य ३ रुपये ५० नये पैसे।

•

राजकमल

राजकमल प्रकाशन

दिल्ली बम्बई इलाहाबाद पटना मद्रास

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Regd. No. D.—594

श्रीमती सुभद्राकुमारी चौहान की चार अमर कृतियाँ

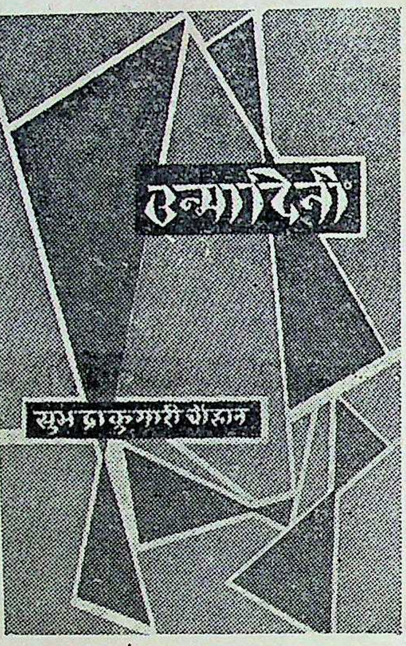

उन्मादिनी

हमारे पारिवारिक जीवन की ये सहज ममतापूर्ण कहानियाँ अवश्य आपका मर्म स्पर्श करेंगी। हमारे वर्तमान सामाजिक जीवन में नारी की जो वेदना है, वही इन कहानियों में वाणी पा गई है।

कला की दृष्टि से इन कहानियों में एक संयत प्रौढ़ता है जो कि इसकी अपनी चीज़ है, जिसमें एक साथ ही सादगी और कला का निखार दोनों चीजें पाई जाती हैं।

१२७ पृष्ठ : **आकर्षक दुरंगा आवरण**

सीधे सादे चित्र

मध्यवर्ग के यानी हमारे-आपके जीवन से ली गई इन कहानियों में इतनी शक्ति है और पाठक के मर्म को छूने का एक ऐसा गुण है जो दूसरी जगह ज़रा मुश्किल से मिलता है। इन कहानियों में कला के नाम पर कलबाज़ी नहीं, कहानी के माध्यम से जीवन के सीधे-सादे चित्र प्रस्तुत करने की अनूठी कला है।

१२० पृष्ठ : **आकर्षक कलेवर**

मुकुल (कविता-संग्रह) **बिखरे मोती** (कहानियाँ)

प्रत्येक का मूल्य रु० २.५०

हंस प्रकाशन, ९३, ज़ीरो रोड, इलाहाबाद

श्री देवराज, मैनेजिंग डाइरेक्टर, राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, दिल्ली के लिए
श्री गोपीनाथ सेठ द्वारा नवीन प्रेस, दिल्ली में मुद्रित।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

वर्ष ६ नवम्बर, १९५८ अंक ३

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशन समाचार

वार्षिक रु० ३.०० एक प्रति ३१ नये पैसे

प्रति मास नियमित रूप से हिन्दी प्रकाशनों की सूचना पुस्तक विक्रेताओं और पुस्तकालयों तक पहुंचाने वाला मासिक

राजकमल पॉकेट बुक्स

कुछ महत्त्वपूर्ण सूचनाएँ

- राजकमल पॉकेट बुक्स किसी देशी-विदेशी सरकार द्वारा अनुदान प्राप्त पुस्तकों के प्रकाशन की योजना नहीं है। इसकी पुस्तकों का चयन केवल पाठक-वर्ग की अभिरुचि और पुस्तकों के उच्च स्तर को देखकर ही किया गया है।
- इस योजना के अन्तर्गत फिलहाल तीन विभिन्न मूल्यों की पुस्तकें प्रकाशित की जायँगी—१·२५ रुपये, १·७५ रुपये और २·५० रुपये, और इन वर्गों की अधिकतम पृष्ठ संख्या क्रमशः १६०, २४० और ३५२ होगी।
- सब पुस्तकें सफेद प्रिंटिंग कागज़ पर छपेंगी, न्यूज़प्रिंट पर नहीं। इनकी सिलाई जुज़बन्दी की रहेगी और ऊपर तीन रंग का आकर्षक कवर होगा।
- पहली छः उत्कृष्ट पुस्तकों का प्रकाशन मार्च १९५९ तक निश्चित रूप से हो जायगा।

- इन पुस्तकों के वितरण में विशेष दिलचस्पी रखने वाले पुस्तक-विक्रेता व न्यूज एजेंट पत्र-व्यवहार करें।

राजकमल

राजकमल प्रकाशन

दिल्ली बम्बई इलाहाबाद पटना मद्रास

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी-जगत् के सर्वप्रसिद्ध-श्रेष्ठ उपन्यासकार

श्री गुरुदत्त की अनुपम रचना

एक और अनेक

मूल्य ६)

चिर-प्रतीक्षा उपरान्त प्रकाशित हो गई है।

आस्तिकवाद—इसका पूजापाठ तथा सामाजिक रीति-रिवाजों से सम्बन्ध और कहे जाने वाले भिन्न-भिन्न मतों से इसका सामञ्जस्य पुस्तक का आधार विषय है।

एक और अनेक—अपने विषय का अनूठा एवं अनुपम उपन्यास है तथा श्री गुरुदत्त के अन्य २७ प्रकाशित उपन्यासों के समान रोचकता में अन्यतम है।

श्री गुरुदत्त की रचनाएँ

१. एक और अनेक	मू०	६)	१५. वाम मार्ग	मू०	७)
२. छलना	,,	६)	१६. उमड़ती घटाएँ	,,	६)
३. धरती और धन	,,	६)	१७. देश की हत्या	,,	५॥)
४. मेरी पसन्द (नाटक)	,,	२॥)	१८. मायाजाल	,,	५)
५. नगर परिमोहन	,,	५॥)	१९. प्रवंचना	,,	५)
६. पत्रलता	,,	७)	२०. विडम्बना	,,	६)
७. दासता के नए रूप	,,	६)	२१. विश्वासघात	,,	५॥)
८. कला	,,	५)	२२. बहती रेता	,,	५)
९. सहस्रबाहु	,,	६)	२३. भावुकता का मूल्य	,,	६)
१०. आवरण	,,	५)	२४. विकृत छाया	,,	४॥)
११. लुढ़कते पत्थर	,,	५॥)	२५. उन्मुक्त प्रेम	,,	६)
१२. मानव	,,	५)	२६. स्वराज्यदान	,,	६)
१३. गुण्ठन	,,	५)	२७. पथिक	,,	६)
१४. विलोम गति	मू०	५)	२८. स्वाधीनता के पथ पर	,,	६)

२९. अन्तिम यात्रा मूल्य १)

दक्षिण भारत के प्रथम हिन्दी उपन्यासकार

श्री ए० रमेश चौधरी 'आरिगपूडि' की रचनाएँ

१. भूले-भटके मू० ३); २. खरे-खोटे मू० ५); ३. आदरणीय मू० ४)

भारती साहित्य सदन

३०/९०, कनॉट सरकस, नई दिल्ली—१

नोट—पुस्तक-विक्रेताओं एवं पुस्तकालयों को उचित सुविधाएँ दी जाती हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशन समाचार

: वर्ष ६ :
: अंक ३ :

सम्पादक : श्रीं प्रकाश, डायरेक्टर इंचार्ज, राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड

गत मास दिल्ली में प्रकाशन व पुस्तक-व्यवसाय सेमिनार में एक गोष्ठी लेखक और प्रकाशक सम्बन्धों पर हुई थी। गोष्ठी की मुख्य वार्ता में तथा उसके बाद हुए विचार-विनिमय में लेखकों और प्रकाशकों के बीच की भ्रांतियों और परस्पर आरोपों पर खेद प्रकट किया गया था। कुछ प्रकाशक लेखकों को पारिश्रमिक अथवा रायल्टी की देय रकम ठीक समय पर नहीं देते, हिसाब में गड़-बड़ी करते हैं, इस पर गोष्ठी में एकत्रित प्रकाशकों ने उतना ही क्षोभ व्यक्त किया जितना कि लेखकों के प्रतिनिधियों ने। लेखक-विभ्रम का कारण कुछ वक्ताओं ने पैसे को प्रकाशक-वर्ग ने लेखकों के एक गलत प्रकार के अहम् को तथा कुछ लेखकों द्वारा प्रकाशकीय समस्याओं और व्यवस्था की ठीक जानकारी के अभाव को बताया। प्रकाशन के व्यावसायिक पहलुओं की अनभिज्ञता की झलक तो प्रायः सभी लेखकों द्वारा गोष्ठी में कहे गये विचारों और मन्तव्यों में स्पष्ट हो जाती थी।

यहाँ हम एक विशिष्ट प्रकाशकीय समस्या की ओर इशारा कर रहे हैं जिसे कुछ लेखकों ने—गोष्ठी में श्री रामधारीसिंह 'दिनकर' तथा श्री चन्द्रगुप्त विद्यालंकार ने तथा गोष्ठी से बाहर अनेक अन्य ने प्रकाशकों द्वारा लेखकों के शोषण का नया एवं अनैतिक तरीका कहकर पुकारा है। कुछ प्रकाशक उन पुस्तकों पर अपना मुद्रणांक (imprint) दे देते हैं जिनके मुद्रण तथा निर्माण पर कुल व्यय लेखक ने किया होता है। इस व्यवस्था में वितरण के लिए कमीशन की जो दर तय की जाती है, उसे काट-कर बिक्री से प्राप्त शेष रकम लेखक को निर्धारित समय पर दी जाया करती है और व्यवसाय-पक्ष में यह विशिष्ट पुस्तक हर माने में उस प्रकाशक की मानी जाती है जिस का उस पर प्रकाशक के रूप में नाम गया है।

कहा गया है कि यह लेखक का शोषण है, लेखक 'अपनी पत्नी के जेवर बेचकर' ऐसी पुस्तक के मुद्रण में रुपया लगाने को बाध्य होता है; जिस लेखक की पत्नी के पास इतना जेवर नहीं है, वह अपनी कृतियों के प्रकाशन से वंचित रह जाता है। फिर, प्रकाशक लेखक को यह अधिकार नहीं देता कि वह स्वयं भी इस पुस्तक की बिक्री कर सके, अथवा यह ढिंढोरा पीट सके कि इस पर कुल व्यय उसने किया है, प्रकाशक ने नहीं; प्रकाशक, उदाहरण के लिए, चालीस या इससे भी अधिक कमीशन 'मार' लेता है, लेखक बेचारे को बचता क्या है! यदि प्रकाशक अपने वितरण-संगठन के बल पर पुस्तक को बेच पाने में सफल हो जाता है तो कहा जाता है कि यदि प्रकाशक पुस्तक को बेच सकता था तो उसने अपनी पूँजी ही उसमें क्यों न लगाई, लेखक को उसके लिए मजबूर क्यों किया? पुस्तक के बिक जाने के तथ्य की ओर इशारा करके इस प्रकाशकीय 'बहाने' का मजाक किया जाता है कि वे ऐसी पुस्तकों में रुपया लगाने में संकोच करते हैं जिन की अधिक बिक्री की सम्भावना न हो, इत्यादि-इत्यादि।

प्रकाशक के रूप में जो इस व्यवसाय की दुरूहता और कष्टसाध्य सफलता के भेद से परिचित हैं, हमें ईमानदारी से इन आरोपों में कुछ सार भी दीख नहीं पड़ता—न

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शोषण के, न अनैतिकता के। यहाँ हम लेखकों द्वारा प्रायः कही गई और ऊपर उद्धृत बातों पर विचार करेंगे।

लेखक को क्या और क्यों विवशता होती है कि रुपया जुटाकर अपनी कृति के मुद्रण आदि का वह प्रबन्ध करे ? क्या कोई प्रकाशक उसे मजबूर करता है कि आप की कृति पुस्तक के रूप में छपकर बहुत अधिक बिक सकती है, इसलिए आप रुपये का किसी तरह इन्तजाम कीजिए और उस पर नाम मेरा जाने दीजिए ? क्या यह सत्य नहीं है कि विभिन्न सरकारों द्वारा वितरित होने वाले अखबारों अथवा विभिन्न सरकारों द्वारा पुरस्कारों के लिए की जाने वाली बड़ी-बड़ी खरीदों को नजर में रखकर ही अधिकांश लेखक प्रकाशकों के पास पहुँचते हैं कि मैं रुपया लगा दूँगा, आप मेरी कृति को देख लीजिए, उसपर अपना मुद्रणांक दीजिए तथा उसकी बिक्री की व्यवस्था कीजिये ?

यह ठीक है कि प्रकाशक के पास लेखक तभी ऐसे सुझाव के साथ पहुँचता है जब कि प्रकाशनार्थ उसकी कृति सामान्य ढंग से स्वीकृत न हो सकी हो, अथवा लेखक अपनी पुस्तक की बिक्री के प्रति इतना आश्वस्त हो कि वह लेखकीय लाभांश के अतिरिक्त कुछ पूँजी लगाकर प्रकाशकीय लाभांश भी प्राप्त करना चाहता हो। अच्छा प्रकाशक अच्छी पाण्डुलिपि को अपनी पूँजी-व्यवस्था तथा समय की सीमाओं के अनुसार सदैव प्रकाशित करना चाहेगा। लेखक के लिए अपनी कृतियों को प्रकाशित देखने की—बिना एक क्षण गँवाये पुस्तकाकार देखने की—उत्कट लालसा समझ में आ सकती है, लेकिन प्रकाशक इस लालसा के कार्यान्वयन की वैसी ही इच्छा से प्रेरित होकर तो अपना व्यवसाय नहीं चला सकता। प्रकाशक प्रस्तावित कृति को यदि अपने मुद्रणांकसे हलका नहीं पाता तो वह अपना नाम देना तथा वितरण का कुल दायित्व स्वीकार कर लेता है। इंग्लैण्ड में इस प्रकार के प्रकाशनों को 'एजेंसी' प्रकाशन तथा अमरीका में 'वैनिटी' प्रकाशन कहा जाता है।

इसमें प्रकाशक ने लेखक का शोषण कैसे किया ? सुझाव बड़े जोरदार शब्दों में तथा कई बार तो तरह-तरह के दबावों के साथ लेखक की ओर से आता है, बिना किसी प्रकार की प्रकाशकीय व्यवस्था किये लेखक को अपने पारिश्रमिक के अतिरिक्त प्रकाशकीय लाभ भी मिलता है (शायद यह कहना प्रासंगिक होगा कि 'प्रकाशन' का अर्थ किसी पुस्तक के मुद्रण में नहीं होता, प्रकाशन-कार्य पुस्तक के छप जाने के बाद ही आरम्भ होता है)। यदि पुस्तक अच्छी हुई और साथ ही यदि सम्बन्धित प्रकाशक की वितरण-व्यवस्था अच्छी हुई तो लेखक को यश तथा अर्थ दोनों का लाभ होता हैं; उसकी पूँजी नफे के साथ उसे वापिस मिल जाती है।

कोई प्रकाशक तभी सफल हो सकेगा जब कि वह योजना बनाकर अपना काम करे। लेखकीय योजनाओं से उसका तालमेल बहुत अधिक सम्भव नहीं है, या यों कहें कि बहुत ही कम स्थितियों में सम्भव है। ऐसी कृतियों के लिए भी अपना पैसा लगाने का लेखकीय अनुरोध प्रकाशकों के सामने कभी-कभी आया करता है जिस पर वह स्वयं, लेकिन कुछ समय के बाद शायद छः मास या एक वर्ष के बाद, रुपया लगाने को तैयार हो सकता था। प्रकाशन सम्बन्धी अपनी अन्य योजनाओं और व्यस्तताओं के कारण प्रकाशक लेखक की पुस्तक को तुरन्त प्रकाशित नहीं कर सकता, इस स्थिति में भी यदि प्रकाशक लेखक का अनुरोध मान लेता है तो किसने किसका शोषण किया ?

यह सम्भव है कि कई अच्छी कृतियाँ प्रकाशन से वंचित रह जाती हों, लेकिन 'अच्छाई' की व्याख्या में भी तो मतभेद हो सकता है। आज की सामाजिक, आर्थिक व्यवस्था में प्रकाशन की दृष्टि में, 'अच्छी' कृति का अर्थ है—उस हद तक किसी कृति में पाठकों को अच्छा लगने की सम्भावना होना कि वह उसे खरीदने के लिए रुपया खर्च कर सके। इस व्याख्या में अनैतिकता जरूर है लेकिन इसके लिए दोषी प्रकाशक नहीं वरन् आज के समाज की कुल वह व्यवस्था है जिसमें विस्तार एवं कार्य-व्यवहार की मूल प्रेरणा और स्वीकृति व्यक्तिगत मुनाफ़ा है, मौलिकता अलौकिकता अथवा उपयोगिता नहीं ! न प्रत्येक उस कृति को 'अच्छा' कहने की गलतफ़हमी हमें है जो प्रकाशित हो गई, पैसा चाहे प्रकाशक ने लगाया हो, अथवा लेखक ने लगाया हो !

एक बार अपना मुद्रणांक देने के बाद प्रकाशक को उस पुस्तक को अपने ही अन्य प्रकाशनों की तरह मानना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पड़ता है। यदि ऐसी पुस्तक उसके यहाँ के अतिरिक्त अन्य स्थानों से भी बिकती रहे तो प्रकाशक की साख को बट्टा लगता है और अन्ततः पुस्तक की बिक्री कम हो सकती है जिसे ही विशेष रूप से ध्यान में रखते हुए सम्बन्धित लेखक ने प्रकाशक से ऐसी व्यवस्था के लिए कहा था। आश्चर्य है कि कुछ लेखक इतनी छोटी-सी बात को नहीं समझते—लेकिन इसमें भी अधिक आश्चर्य की शायद बात नहीं है—ये वही लेखक होते हैं जो अपने सम्बन्धों और प्रभावों का किन्हीं बड़ी-बड़ी सरकारी, अर्ध-सरकारी अथवा गैर-सरकारी खरीदों में सफलतापूर्वक उपयोग कर सकते हैं—उन्हें इस बात से खीझ हो सकती है कि उनके सम्बन्धों और प्रभावों का फ़ायदा प्रकाशक तक पहुँचे, यद्यपि वे भूल जाते हैं कि इन्हीं सम्बन्धों और प्रस्तावों को मजबूत और सार्थक करने की एक कड़ी के रूप में वह पहले उस प्रकाशक का उपयोग भी कर चुके हैं!

प्रकाशक, यदि वह स्वयं पुस्तक-विक्रेता भी हो तो, लेखकों से इस व्यवस्था में भी प्रायः उतना ही कमीशन लेता है जितना कि वह किसी अन्य प्रकाशक के यहाँ से छपी हुई पुस्तक के वितरण के लिए लेता, फिर सम्बन्धित लेखकों की पैरवी करने वालों को इस व्यवस्था में शोषण की बू कहाँ से आती है? शायद वे समझते हों कि प्रकाशक ने ४० प्रतिशत यदि कमीशन लिया तो नफे का बहुत बड़ा हिस्सा पा लिया। वे शायद यह भूल जाते हों कि इस ४० प्रतिशत कमीशन में से पुस्तक-विक्रेताओं को २५ से ३३ प्रतिशत तक कमीशन दे देना पड़ता है, कुछ प्रचार-प्रसार पर भी खर्च करना पड़ता है, अन्ततः ऐसी व्यवस्था करने वाले प्रकाशक को ५ प्रतिशत से अधिक नहीं बचता, चाहे उसके व्यावसायिक खर्चों का अनुपात बिक्री पर १५ प्रतिशत ही क्यों न हों।

अच्छी व्यवस्था वाला प्रकाशक आज के हिन्दी-पुस्तक-व्यवसाय की परिस्थितियों में किसी भी पुस्तक की इतनी प्रतियाँ तो बेच ही सकता है कि उस पर लगी हुई पूँजी लौट आए। अधिकांश प्रकाशित पुस्तकें पुस्तकालयों द्वारा खरीदी जाती हैं, सो उन तक सीधा या पुस्तक-विक्रेताओं के माध्यम से पहुँच सकने वाला प्रकाशक अपने मुद्रणांक और व्यवस्था की सहायता से शायद कोई भी पुस्तक बेच सकेगा। लेकिन इस तर्क को इस बात के लिए प्रयुक्त नहीं किया जा सकता कि यदि प्रकाशक पुस्तक को बेच सकता था तो उसने इस पर पूँजी भी अपनी क्यों न लगाई? अच्छा प्रकाशक उसी पुस्तक पर अपनी पूँजी और समय को लगाना चाहेगा जिसकी बिक्री की सम्भावनाएँ एक संस्करण में ही चुक के न रह जायँ। सफल प्रकाशक और सफल पुस्तक (कृति नहीं) भी, वही है जिसकी माँग कम-से-कम एक-दो दशक पर्यन्त तो चले ही, जिसके कई संस्करण प्रकाशित किये जा सकें।

आज कई लेखक प्रकाशन का कार्य भी स्वयं करने लगे हैं, उनमें से कई ने वितरण-सम्बन्धी अपनी व्यवस्था भी अच्छी कर ली है, लेकिन कुछ ऐसे भी हैं जो अपना नाम प्रकाशक के रूप में देते हुए वितरण का दायित्व अन्य संस्थाओं पर छोड़ देते हैं। इनमें तथा उन लेखकों में जो प्रकाशक के रूप में अपना नाम नहीं देते, मुख्य भेद क्या इसी बात का नहीं है कि वे पुस्तक की बिक्री में अपने प्रकाशकीय नाम का कोई महत्त्व नहीं समझते, जो दूसरे प्रकाशक के मुद्रणांक को अच्छी बिक्री की बेहतर गारंटी मानते हैं?

हमारी समझ में लेखक-वर्ग की ओर से 'एजेंसी' प्रकाशनों के तथा सम्बन्धित प्रकाशकों के विरुद्ध इस प्रकार के आक्षेप बिना विशेष सोच-विचार के ही किये गए हैं। हमने जो प्रकाशकीय दृष्टिकोण यहाँ रखा है, आशा है उससे अधिकांश लेखकों को सन्तोष प्राप्त होगा। लेकिन हम उन लेखकों के लिए क्या कहें जो पहले तो स्वयं इस प्रकार की व्यवस्था के लिए किसी प्रकाशक को 'मजबूर' करते हैं और फिर स्वयं उस प्रकाशक को शोषक कहकर लेखक-बंधुओं में शोषित होने का स्वाँग भरते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस मास के प्रकाशन

मानव की भोग-लिप्सा
का नग्न चित्रण

अजनबी

सूर्यकुमार जोशी का
नया उपन्यास

मूल्य ३·५०

नथेनियल हार्थान
के उपन्यास 'स्कारलैटलैटर'
का अनुवाद

कलंक

अनुवादक : आशुतोष

मूल्य ३·००

उर्दू के लोकप्रिय शायर सीरीज़ की नई पुस्तकें

ज़ौक़

और उनकी शायरी

मीर तक़ी मीर

और उनकी शायरी

प्रत्येक का मूल्य १·५०

किशोरों के लिए उपन्यास

डेविड कॉपरफ़ील्ड

कैदी की करामात

प्रत्येक का मूल्य १·५०

ज्ञान-विज्ञान सीरीज़

सितारों की कहानी

मूल्य २·००

किशोरों के लिए
जीवन-चरित्र

चन्द्रशेखर आज़ाद

सरदार भगतसिंह

सम्राट् अशोक

लेखक : प्राणनाथ वानप्रस्थी

प्रत्येक का मूल्य ०·५०

राजपाल एण्ड सन्ज़, कश्मीरी गेट, दिल्ली-६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशन-कार्य का आर्थिक लेखा-जोखा

दीनानाथ मलहोत्रा

प्रकाशन-व्यवसाय के आर्थिक लेखे-जोखे के विषय में जन-साधारण और अनुभवहीन प्रकाशकों में भी जो भ्रान्तियाँ हैं, उनका इस लेख में निवारण किया गया है।

भ्रांतियाँ

प्रकाशन-कार्य एक बड़ा अद्भुत व्यवसाय है और इसका आर्थिक लेखा-जोखा एक ऐसा विषय है कि जिसके सम्बन्ध में बहुत-सी ग़लतफ़हमियाँ प्रचलित हैं। बड़े-बड़े सुशिक्षित व शिक्षाविद् भी इसका ठीक ज्ञान नहीं रखते। एक बार किसी कार्य के लिए हम एक शिष्टमण्डल लेकर भारत सरकार के एक प्रमुख मन्त्री से मिलने गये तो उन्होंने भी कहा कि आप प्रकाशकों को क्या चिन्ता है, आपका व्यवसाय तो बहुत अधिक लाभप्रद है। यदि चार आने पुस्तक की लागत आए तो एक रुपया आप लोग उसका दाम रखते हैं और बारह आने आपको लाभ होता है, आपके व्यवसाय में तो चौगुना लाभ है। अतएव यदि काग़ज़ का दाम थोड़ा बढ़ भी गया तो आपको कोई हानि नहीं। परन्तु दूसरे ही क्षण उन्होंने यह भी कह दिया कि पुस्तकों पर तो ५० प्रतिशत से ६० प्रतिशत तक कमीशन मिल जाता है। इस व्यवसाय के आर्थिक ढाँचे के सम्बन्ध में इतनी गहरी और विस्तृत भ्रान्तियाँ हैं कि जिनकी कोई सीमा नहीं। परन्तु इसमें सबसे विचित्र बात यह है कि ये ग़लतफ़हमियाँ न केवल जन-साधारण ग्राहकों, लायब्रेरियनों, लेखकों व पुस्तक-विक्रेताओं को, बल्कि प्रकाशकों को स्वयं भी इस हिसाब-किताब के बारे में बहुत-सी भ्रान्तियाँ हैं। उन्होंने भी पूरी तरह से यह जानने का प्रयत्न नहीं किया कि जो कुछ प्रकाशन-कार्य वे कर रहे हैं, उसका आर्थिक लेखा-जोखा क्या है, उसमें कितना खर्च है, कितना लाभ है और कितने अंश में ऊपरी मोटे रूप से दिखाई देने वाला लाभ केवल आत्म-प्रवंचना ही है।

इसका एक कारण तो यह भी है कि बिलकुल छोटे स्तर पर प्रकाशन-कार्य करने वाले प्रकाशक अपना ठीक ढंग से हिसाब नहीं बनाते और यदि कोई बनाते भी हैं तो वह बिलकुल अधूरा-सा होता है। उसके अतिरिक्त उन पुस्तकों के प्रचार व बिक्री के लिए न तो वे कोई बाकायदा व्यवस्था करते हैं और न ही उस पर कोई खर्च डालते हैं। परिणामतः उनकी पुस्तकें नहीं बिक पातीं और वे अपने गोदाम में पड़ी पुस्तकों के ढेर के छपे मूल्य को उनकी संख्या से गुणा करके अपनी सम्पत्ति व आय का मन-ही-मन लेखा बनाते रहते हैं। अपने गोदाम में पड़ी पुस्तकों के दाम में से वे केवल इससे पूर्व पुस्तकों के कागज व छपाई पर किया हुआ खर्च ही निकालते हैं। या ज़रा इससे अधिक सयाने हुए, तो उसमें से पुस्तक-विक्रेताओं को दिये जाने वाले कमीशन की राशि को घटा लेते हैं। बस उनकी दृष्टि में यह उनकी कमाई का हिसाब बन जाता है। इस राशि के जोड़-तोड़ का बार-बार हिसाब आँककर वे मन-ही-मन हवाई किले बनाकर फूले नहीं समाते कि उनके गोदाम के अन्दर इतने लाख रुपये की सम्पत्ति पड़ी है। वे यह बात बिलकुल भूल जाते हैं कि पुस्तकों के स्टॉक का मूल्य उनके बिक जाने पर ही है। यदि वे न बिकें तो उनका मूल्य रद्दी के भाव ही आँकना चाहिए। छपी हुई पुस्तकों से कहीं अधिक दाम तो कोरे कागज के रिमों का मिल जाता है। एक आना या दो पैसे प्रति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पौंड दाम कम कीजिये, तो खड़े-खड़े काग़ज़ का सारा गोदाम उठवाया जा सकता है, परन्तु छपी हुई पुस्तकों का स्टॉक तो आवश्यकता के समय चौथाई दाम पर भी नहीं उठता और न ही कोई बैंक या व्यक्ति उस स्टॉक की जमानत पर रुपया ही देने को तैयार होता है।

प्रकाशक की सम्पत्ति

जो अनुभवी प्रकाशक हैं और जो प्रकाशन-कार्य को अच्छी तरह से समझते हैं, उन्हें अपने गोदामों में पड़े हुए माल के बारे में ग़लतफ़हमी नहीं होती। वे तो गोदाम में रखे माल को देखकर प्रसन्न होने के बजाय घबराहट व चिन्ता का अनुभव करते हैं। आर्थिक दृष्टि से वस्तुतः सफल प्रकाशक वह है जिसके गोदाम ठसाठस भरे न रहकर बारम्बार नई पुस्तकों के आने व पुस्तकों के बिकते रहने के कारण भरते व खाली होते रहें। प्रकाशक की सम्पत्ति उसके भरे हुए गोदामों में नहीं, बल्कि उसके उस व्यावसायिक संगठन में निहित है जिसके द्वारा वह अपनी प्रकाशित पुस्तकों को बेच लेता है। प्रेसों में पुस्तकें छपवा लेने में तो कोई विशेष कमाल नहीं। कुछेक प्रकाशक सुन्दर व सुरुचिपूर्ण पुस्तकें छपवाते हैं और कुछेक प्रकाशक कई बार उतने ही पैसे खर्च करके भी घटिया व भौंडी पुस्तकें ही छपवा पाते हैं। आर्थिक दृष्टि से यह भेद अधिक महत्त्वपूर्ण नहीं। प्रकाशक की सच्ची सफलता तो इस बात में है कि वह छपी हुई पुस्तकों को कितनी शीघ्रता से बेच पाता है। पुस्तकों को शीघ्रातिशीघ्र अच्छे ढंग से बेच लेने की क्षमता जिसमें हो वही सफल प्रकाशक है। पुस्तकें छापना तो मुद्रक का काम है। अनाड़ी प्रकाशक भी अच्छे प्रेस को पाण्डुलिपि सौंपकर कभी-कभी सुन्दर पुस्तक छपवा सकता है। प्रकाशक का सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण काम तो पुस्तक छप जाने के बाद आरम्भ होता है। प्रकाशक का शाब्दिक अर्थ है पुस्तक को प्रकाश में लाने वाला। पुस्तक छप जाने के बाद उसको देश-विदेश के पुस्तक-विक्रेताओं, लाइब्रेरियों व सीधे पाठकों तक पहुँचा देने का नाम प्रकाशन है। लोगों तक पहुँच जाने से पुस्तक प्रकाशित होती है, अँधेरे गोदामों में छपी हुई पुस्तकों के ढेर लगा देने से तो पुस्तक अन्धकूप में जा गिरती है, प्रकाशित नहीं होती।

अतएव यह नितान्त आवश्यक है कि प्रकाशक के असली काम को समझकर और उस कार्य के संगठन में किये गए खर्च का महत्त्व भी जान लिया जाय।

प्रकाशन-कार्य का लेखा

इस दृष्टि से देखा जाय तो प्रकाशक के तीन मुख्य काम हैं—पहला लेखक से रॉयल्टी की शर्तें तय करना, दूसरा पुस्तक छपवाना और तीसरा एवं सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण उस पुस्तक के वितरण व बिक्री का प्रबन्ध करना। आर्थिक दृष्टि से प्रकाशक को इन तीनों कार्यों पर खर्च-ही-खर्च करना है। हाँ, पुस्तकों की बिक्री के फलस्वरूप जो राशि प्राप्त होती है, उसमें से पहले तो उसे पुस्तक छपवाने और बिक्री के संगठन में किया हुआ खर्च निकालना होता है और उसके बाद बची हुई राशि में से लेखक का भाग और अन्त में बचा हुआ प्रकाशक का लाभ होता है। किसी भी अच्छे प्रकाशन-गृह के आर्थिक लेखे में पुस्तकों की बिक्री से प्राप्त हुई राशि निम्न मदों पर और उसके आगे दिये गए प्रतिशत में खर्च होती है।

१. पुस्तक-निर्माण का खर्च	२७ प्रति० से ३३ प्रति० तक औसत ३० प्रति०
२. प्रकाशन-गृह के संगठन व प्रबन्ध का खर्च	१५ प्रति० से १७ प्रति० तक औसत १६ प्रति०
३. विज्ञापन	२ प्रतिशत से ४ प्रतिशत तक औसत २ प्रतिशत
४. पुस्तक-विक्रेता का कमीशन	२५ प्रति० से ३३ प्रति० तक औसत ३० प्रति०
५. लेखक का भाग	१० प्रति० से १५ प्रति० तक औसत १२ प्रति०
६. प्रकाशक का लाभ	७ प्रति० से १२ प्रतिशत तक औसत १० प्रति०

पुस्तक का जो भी दाम हो, उसमें ये मदें अवश्य सम्मिलित होती हैं। ऐसा हो सकता है कि किन्हीं प्रकाशकों के इन मदों पर किये गए खर्च के प्रतिशत में थोड़ी-बहुत भिन्नता भी हो। यह खर्च स्वेच्छा से प्रकाशित जनरल पुस्तकों के विषय में है। जिनका दाम राज्य अथवा विश्वविद्यालय के शिक्षा-अधिकारियों द्वारा निश्चित होता है, उन पाठ्य-पुस्तकों पर ये आँकड़े ठीक नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ठते। वे इससे भिन्न हैं, क्योंकि न तो उनके कमी-न इतने अधिक होते हैं और न ही अन्य खर्च इस मात्रा होते हैं। पाठ्य-पुस्तकों का आर्थिक ढाँचा इन जनरल तकों के आर्थिक ढाँचे से सर्वथा अलग है।

स्तक-निर्माण का खर्च

अब हम प्रकाशन-कार्य की भिन्न-भिन्न मदों पर किये खर्चों को लेते हैं। प्रकाशक को सबसे पहला खच स्तक के निर्माण में करना पड़ता है। इससे भी पहले ई बार लेखक को अगाऊ राशि रायल्टी के हिसाब में जाती है, जो कि रायल्टी के हिसाब में कट जाती है। काशक का प्रथम खर्च काग़ज़, छपाई, ब्लॉक, जिल्दबन्धी दि पर होता है। आजकल की प्रथा के अनुसार हर काशक अपनी पुस्तकों को अच्छी रूप-सज्जा देने के लिए तक-निर्माण पर अधिकाधिक खर्च करता है। खर्च करते वह पुस्तक-निर्माण के खर्च और उसके पुस्तक के दाम सम्बन्ध का ब्योरा प्रायः भूल जाता है। फिर भी वह त करने की पूरी चेष्टा करता है, परन्तु आज कई खर्च हैं जिन पर प्रकाशक का कोई चारा नहीं। सबसे ला खर्च तो काग़ज़ का ही है, जिसका भाव आज अक्तूबर ९५८ में ११० नये पैसे प्रति पौंड हो गया है और उस व पर भी देश में काग़ज़ का दुर्भिक्ष-सा है। काग़ज़ के पारियों के साथ मेल-जोल और उनसे अनुनय-विनय ही काग़ज़ मिल पाता है। आज से एक वर्ष पूर्व इसी ग़ज़ का भाव ६५ नया पैसा प्रति पौंड था। लगभग नया पैसा प्रति पौंड भाव बढ़ गया है। गत युद्ध के य में भी काग़ज़ का इतना ऊँचा भाव नहीं हुआ ा।

प्रकाशक का काम पुस्तक-प्रकाशन है; और पुस्तकें ाग़ज़ पर ही छपती हैं। कोई भी भाव हो, प्रकाशक को ना काम चलाने के लिए काग़ज़ खरीदना ही पड़ता है, रन्तु इस भाव पर काग़ज़ खरीदकर उसके व्यवसाय का चा ही पलट जाता है। या तो पुस्तकों के दाम इतने बढ़ ते हैं कि उनकी बिक्री पर बुरा प्रभाव पड़ता है अथवा दि प्रकाशक दाम नहीं बढ़ाता तो उसका अपना लाभांश हुत कम हो जाता है। पुस्तक-निर्माण के खर्च और स्तक के दाम के पारस्परिक अनुपात में कोई विशेष परिवर्तन नहीं किया जा सकता, क्योंकि इस सारे आर्थिक ढाँचे में जो खर्च की अन्य मदें हैं वे सभी बड़ी निश्चित व आवश्यक हैं। अब जहाँ तक इस अनुपात का सम्बन्ध है उसकी स्थिति यह है कि अमरीका-जैसे देशों में पुस्तक-निर्माण का खर्च पुस्तक के दाम का केवल २०%या २५% ही रखा जाता है, अर्थात् वे पुस्तक-निर्माण के खर्च से चौगुनी या पांच गुणी कीमत रखते हैं। परन्तु यहाँ तो पुस्तक-निर्माण का खर्च ३०% या ३३% तक भी ले जाना पड़ता है, क्योंकि पुस्तक का दाम निश्चित करते हुए जहाँ अपने खर्चों को देखना होता है, उसके साथ ही यह भी ध्यान देना होता है कि कहीं पुस्तक का दाम इतना अधिक न हो जाय कि वह खरीदार को अत्यधिक अखरे और पुस्तक की बिक्री ही न हो। पुस्तक का दाम निश्चित करते समय हर प्रकाशक के मस्तिष्क में ग्राहक के इस मनोविज्ञान का ध्यान अवश्य रहता है। अर्थशास्त्री बनकर यह कह देना कि प्रकाशक को अपने नियमानुसार चौगुना या ३०% के हिसाब से ही दाम रखना चाहिए, व्यावहारिक बात नहीं है। अर्थशास्त्र से भी अधिक महत्त्वपूर्ण पुस्तक को बेचकर अपना काम चलाते जाना है, पुस्तकों की रद्दी बनाना नहीं है। अतएव काग़ज़ व छपाई के बढ़ते हुए भावों के युग में सबसे बुरा प्रभाव प्रकाशक पर ही पड़ता है, उसका लाभांश ही सबसे पहले लुप्त होता है। पुस्तकों के दाम भी मनमाने नहीं बढ़ाए जा सकते। उसकी भी एक सीमा है। प्रकाशक को तो अन्ततः यहाँ तक भी जाना पड़ता है कि बिना कुछ कमाए ही किसी भी प्रकार से पुस्तक पर खर्च की गई रकम लौट आए, अन्यथा यदि वह न बिकने वाला 'डैड-स्टॉक' हो गया तो प्रकाशक बिलकुल ही पिट जाता है। यदि प्रकाशक रद्दी बेचने जाता है तो उसका भी भाव बहुत कम मिलता है, क्योंकि कबाड़ी कहता है कि यह जिल्द बँधी हुई पुस्तकों की रद्दी अधिक काम की नहीं, इससे तो सब्ज़ी-सौदा डालने वाले थैले भी नहीं बन सकते। केवल दाल-सेंवियाँ बेचने के लिए खोंचे वाले ही इसकी प्रतियाँ लेंगे। यह एक विचित्र विडम्बना है कि 'महान्' लेखकों द्वारा लिखित और प्रकाशकों की बड़े चाव से सुन्दर रूप-सज्जा में प्रकाशित पुस्तकों को कबाड़ी भी हेच समझकर ठुकरा दें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे अनमोल हिन्दी प्रकाशन

(हमारी पुस्तकों को देखकर लोग कह उठते हैं कि ये हिन्दी में अपने विषय की बेजोड़ और अद्वितीय हैं।)

(१) **हिन्दी के श्रेष्ठ साहित्यकार**—लेखक सिंहासन राय 'सिद्धेश'। इसमें हिन्दी के सर्वश्रेष्ठ साहित्यकारों की प्रामाणिक जीवनी, उनकी साहित्य-सेवा और भाषा-शैली का सुन्दर वर्णन है। मूल्य २॥)

(२) **वादविवाद और व्याख्यान प्रवेशिका**—लेखक तिवारी और राय। इनमें हाईस्कूलों और कॉलेजों में होने वाले वादविवाद (पक्ष और विपक्ष) और व्याख्यान-विषयों का ओजपूर्ण आकर्षक शैली में वर्णन है। मूल्य ३) मात्र

(३) **निबन्ध-भारती**—लेखक प्रो० 'सिद्धेश।' हाई-स्कूलों और हायर सेकण्ड्री स्कूलों की उच्च कक्षाओं के छात्रों के लिए हिन्दी निबन्ध की सर्वश्रेष्ठ पुस्तक। आधुनिक विषयों पर निबन्ध। मूल्य ३)

(४) **आर्थिक और व्यापारिक निबन्ध**—लेखक प्रोफेसर रूपनारायण उपाध्याय एम० ए०। कालेज के छात्रों के लिए। मूल्य ४)

(५) **निबन्धालोक**—लेखक प्रो० 'कमलेश'। मौलिक साहित्यिक निबन्ध। मूल्य ३)

प्राप्ति-स्थान

आदर्श पुस्तक भण्डार

५८, अपर चितपुर रोड, कलकत्ता-७

मायावी व्यवसाय

यह एक बड़ा मायावी व्यापार है, जिसे अंग्रेजी में 'ट्रैचरस' कहते हैं। यही कारण है कि इस व्यवसाय में देश के बड़े-बड़े उद्योगपति हाथ नहीं डालते। वे संसार-भर के अन्य सभी उद्योगों में रुचि रखते हैं, इसमें नहीं। इसमें लगाओ सोना, बन जाय रद्दी। कोई भी प्रकाशक अपने कितने भी अनुभव के आधार पर कभी निश्चित रूप से यह नहीं कह सकता कि जो पुस्तक वह प्रकाशित कर रहा है उसका क्या भाग्य होगा। प्रायः यदि कोई प्रकाशक दस पुस्तकें प्रकाशित करता है, तो उनमें से एक या दो बहुत अच्छी बिकने वाली सफल पुस्तकें होती हैं, तीन साधारणतया अच्छी बिकने वाली, तीन कम बिकने वाली और एक या दो अवश्य बिकने से रह जाती हैं और 'डैड स्टॉक' बन जाती हैं। इसीलिए बिड़ला, डालमिया या टाटा इस व्यवसाय में आने को तैयार नहीं। वैसे भी यह व्यवसाय रुपया कमाने के दृष्टि से कोई लाभ-प्रद व्यवसाय नहीं। सारे संसार में इस व्यवसाय की यही स्थिति है। अमरीका सबसे अधिक सम्पन्न देश है, जिसके विषय में लोग कहते हैं कि जहाँ हर व्यक्ति लखपति है और हर व्यवसाय सोना उगलता है। परन्तु वहाँ भी प्रकाशन-व्यवसाय अन्य व्यवसायों की तुलना में कुछ ऐसा ही समझा जाता है। दो-तीन वर्ष हुए यहाँ, दिल्ली में आये हुए अमरीका के एक बड़े प्रकाशक से मेरी भेंट हुई। भेंट के दौरान में काफी समय तक प्रकाशन-व्यवसाय के इसी लेखे-जोखे के सम्बन्ध में उससे मेरी बातचीत हुई। उसकी सारी बातें सुनने के बाद मैंने कहा कि इस हिसाब से तो आपके लाभांश का प्रतिशत बहुत ही कम है। तो उन्होंने कहा कि इस व्यवसाय में और रखा ही क्या है। अमरीका में तो यह कहावत प्रसिद्ध है कि यदि रुपया कमाना है तो मोटरें बेचने के व्यवसाय में जाओ, पुस्तक-अर्जित करने का व्यवसाय नहीं है। प्रकाशन धन-सम्पत्ति

यह एक ठोस वास्तविकता है, केवल अपने व्यवसाय के लाभ को छिपाने के लिए आँकड़ों का हेर-फेर नहीं। पाठ्य-पुस्तकों के प्रकाशन की स्थिति इससे कुछ भिन्न है। उसमें प्रकाशक कुछ रुपया भी बना पाते हैं। और यह भी एक सत्य है कि जनरल पुस्तकों के बहुत-से प्रकाशक अपने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यवसाय को जीवित रखने के लिए थोड़ी-बहुत पाठ्य-पुस्तकों का प्रकाशन भी करते रहते हैं। पाठ्य-पुस्तकों से प्रवाहित रुधिर द्वारा ही उनके जनरल पुस्तक-व्यवसाय को जीवन-शक्ति मिलती है। भारत में आज जनरल पुस्तकों की बिक्री इतनी कम है कि उसके आधार पर जनरल पुस्तकों के प्रकाशक के लिए पनपना बड़ा कठिन कार्य है। पिछले पचास वर्ष में कई जनरल पुस्तकों के प्रकाशक बड़े-बड़े महान् उद्देश्य सामने रखकर प्रकाशन-क्षेत्र में आये, परन्तु कुछेक वर्षों बाद ही वे काल की विस्मृति में विलीन हो गए। आज या तो उन प्रकाशन-गृहों के नाम भी नहीं हैं, अथवा यदि वे जीवित भी हैं तो भग्नावशेष स्थिति में ही। यह इस व्यवसाय के विषय में ऐसा कटु सत्य है कि जिससे मुख नहीं मोड़ा जा सकता। इस व्यवसाय में केवल धन अर्जित करना जिसका उद्देश्य हो, ऐसा व्यक्ति सुखी नहीं रह सकता। इसमें तो वही व्यक्ति चल सकते हैं जिनमें थोड़ी-बहुत पुस्तकों के विषय में रुचि हो और जो छोटी-छोटी किफ़ायतें करके परिश्रम से इस कठिन मीनाकारी के व्यवसाय को चलाने की क्षमता रखते हों। इसका यह अर्थ नहीं कि यह बड़े दानशील और उदार व्यक्तियों का व्यवसाय है। है तो यह भी व्यवसाय और आजीविका कमाने का साधन ही, केवल इसमें दृष्टिकोण तनिक भिन्न रखना पड़ता है। व्यवसाय और अध्यवसाय तथा आदर्श एवं व्यावहारिकता का सम्मिश्रण करना पड़ता है।

ये बातें प्रकाशन-कार्य के आर्थिक लेखे-जोखे से तो सीधी सम्बन्धित नहीं, परन्तु इनके जान लेने से प्रकाशन-कार्य का दृष्टिकोण पता लगता है और इसके आर्थिक प्रभावों व विषम कठिनाइयों के पूरक कौन-से साधन हैं उनका ज्ञान होता है। यदि प्रकाशक का दृष्टिकोण पता लग गया तो उसकी अर्थ-व्यवस्था के विभिन्न अंग समझने में भी कठिनाई नहीं होती। अस्तु।

संगठन व प्रबन्ध का खर्च

प्रकाशन-कार्य में दूसरा व सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण खर्च संगठन व प्रबन्ध-कार्य का है। यह एक ऐसा खर्च है जिसके द्वारा प्रकाशन-गृह चलता है और इसी खर्च के सहारे पुस्तकों का प्रकाशन सम्भव होता है और बिक्री

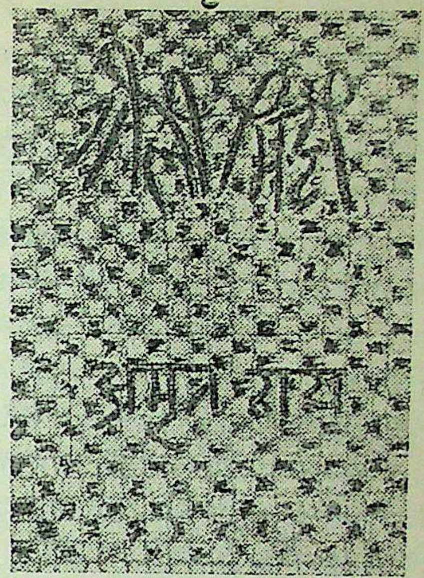

गीली मिट्टी

• • •

अमृत की कलम अब परिचय की मुहताज नहीं है। व्यंग्य के भीतर से झाँकती हुई उसकी स्वस्थ्य जीवन-दृष्टि, बातचीत का उसका ढंग, उसकी रवानी, दैनिक जीवन की सुख-दुःख की उसकी मार्मिक पकड़—ये सब चीज़ें खास उसकी अपनी हैं। इन्हीं से वह जाना-पहचाना जाता है।

अमृत की सोलह नयी कहानियों का यह संग्रह आधुनिक हिन्दी कहानी के बढ़े हुए क़दम की सशक्त सूचना है।

• • •

पृष्ठ संख्या डेढ़ सौ से ऊपर • मूल्य रु० ३.००

हंस प्रकाशन

९३, ज़ीरो रोड, इलाहाबाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का प्रबन्ध होता है। परन्तु यही प्रकाशन के खर्चों में एक ऐसी मद है जिसको जनसाधारण जानते ही नहीं और जानते-बूझते हुए भी भूल जाते हैं। प्रकाशन-कार्य क्या है? पुस्तक को लेखक से लेना, प्रेस में छपवाना, विज्ञापन करना, पुस्तक-विक्रेताओं तक पहुँचाना, लाइब्रेरियों तथा सीधे ग्राहकों तक भी पहुँचाना और इन सारे कार्यों को करने के लिए रुपया जुटाना, लेखक को रुपया देना, प्रेस को काग़ज़ खरीदकर देना, प्रेस से प्रूफ़ मँगवाकर प्रूफ़-रीडरों द्वारा जाँच करवाना, आर्टिस्ट से टाइटल कवर बनवाना, पुस्तकों के स्टॉक को गोदामों में रखना, उन गोदामों का बीमा करवाना, पत्र-व्यवहार के लिए स्टेशनरी छपवाना, क्लर्क, एकाउण्टेण्ट, सेल्जमैन, सम्पादक, विज्ञापन-अध्यक्ष, मैनेजर, दौरा करने वाले एजेण्ट, डिस्पैच करने वाले व्यक्ति और चपरासी रखना, बाहर से आये लेखकों, पुस्तक-विक्रेताओं, लाइब्रेरियनों व ग्राहकों की आवभगत करना; टेलीफोन, बिजली, दुकान, कार्यालय, गोदाम का किराया देना आदि ये सब प्रकाशन-कार्य को सम्पन्न करने के संगठन व प्रबन्ध के खर्च हैं। ये सब खर्च ही हैं, बिक्री व आमदनी इन खर्चों के किये गए संगठन के फलस्वरूप होती है। इन खर्चों के बिना प्रकाशन का कार्य संगठित नहीं होता। ये सारे खर्च अनिवार्य हैं। इन खर्चों को भूलकर इनकी राशि को प्रकाशक के लाभांश में गिनने की भूल मोटे रूप से की जाती है। प्रकाशक तो अर्थशास्त्र की परिभाषा के अनुसार संयोजक है, जो लेखक से पुस्तक लेकर, इस संगठन के आयोजन पर सारे खर्च करके, विज्ञापन पर खर्च करके, बिक्री में से लेखक आदि सभी को उनके निर्धारित भाग देकर जो-कुछ बचता है, केवल उसीका भागी होता है। प्रकाशक को तो संयोजक के रूप में अन्त में यदि कुछ बचे—वह कम हो या अधिक—वही प्राप्त होता है। सारे आयोजन में प्रकाशक ही हानि का जोखिम उठाने वाला है। शेष सभी लोग अपना-अपना निश्चित भाग लेकर एक ओर हो जाते हैं।

अब यदि संगठन व प्रबन्ध के खर्च के हिसाब का विश्लेषण किया जाय तो व्यवहार में यह पता लगता है कि एक लाख तक की बिक्री के आयोजन में तो इस खर्च की औसत २० प्रतिशत से भी अधिक बैठती है। व्यापार का स्तर, प्रतिष्ठा एवं सुव्यवस्था के लिए प्रकाशक को हर विभाग में पूरे कार्यकर्त्ता रखने पड़ते हैं, चाहे बिक्री एक लाख की हो अथवा दो लाख की, क्योंकि उसके बिना काम नहीं चलता। यदि व्यवसाय प्रवर्द्धमान हो तो विस्तार की दृष्टि से और भी अधिक खर्च करने पड़ते हैं। केवल दो या तीन लाख की बिक्री के ऊपर यह १६ प्रतिशत वाला खर्च का हिसाब ठीक बैठता है। हिसाब को फैलाकर देखा जाय तो २० प्रतिशत का अर्थ है कि वर्ष में एक लाख की बिक्री पर बीस हज़ार रुपया प्रबन्ध में खर्च होगा, अर्थात् प्रतिमास १६६६ रु० का खर्च होगा। अब एक लाख की पुस्तकें प्रकाशित करके उसके वितरण, बिक्री, हिसाब-किताब तथा अन्य मदों पर इतना या इससे अधिक खर्च हो जाना कोई बड़ी बात नहीं। इसमें मैनेजर तथा अन्य सभी कार्यकर्ताओं के वेतन, दौरा करने वाले एजेण्टों की यात्रा का किराया व भत्ता, दुकान, गोदाम व कार्यालय का किराया, स्टेशनरी, डाक-व्यय, आवभगत का खर्च, बिजली तथा टेलीफोन का बिल, गोदाम के बीमे की किश्त, बैंक का खर्च, टूट-फूट की मरम्मत, शिक्षा-विभागों में लाइब्रेरियों के लिए पुस्तकें स्वीकृत कराने का शुल्क, टेंडर भरने का शुल्क, पैकिंग का खर्च यदि वह निःशुल्क देने का नियम हो—ये सभी सम्मिलित हैं। यह स्पष्ट है कि इन सब खर्चों के लिए मासिक १६६६ रु० कम ही हैं, अधिक नहीं। बिक्री बढ़ जाने पर यही खर्च बढ़े व्यवसाय की बचतों के आधार पर १६ या १७ प्रतिशत तक आ जाता है। इसके अतिरिक्त अभी हमारे देश में इस प्रकार के व्यवसाय में प्रायः संयोजक स्वयं चौबीस घण्टे ही निःशुल्क काम करता है। वह अपने स्वास्थ्य, मनोरंजन व पारिवारिक जीवन के आमोद-प्रमोद की पूर्ण बलि दे देता है। यह संयोजक का दुगुना या तिगुना किया हुआ अतिरिक्त कार्य किसी भी दशा में पाँच सौ रुपये से कम मूल्य का नहीं होता। इस हिसाब से वर्ष-भर में प्रकाशन-गृह को संयोजक की साधारण वैध सेवाओं के अतिरिक्त लगभग छः हज़ार रुपये की निःशुल्क सेवाएँ प्राप्त हो जाती हैं और इसको यदि हम बीस हज़ार में जमा कर दें तो यह २६ हज़ार का खर्च एक लाख रुपये की बिक्री पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२६ प्रतिशत प्रबन्ध व संगठन का खर्च बैठ जाता है। यह सचमुच ही एक तथ्य है, जिसकी साक्षी सभी प्रकाशक दे सकते हैं। यही कारण है कि प्रायः प्रकाशकों का जीवन बड़ा तपस्वी-जैसा एवं आर्थिक दृष्टि से चिन्तायुक्त बना रहता है।

विज्ञापन

प्रकाशन-कार्य का एक बड़ा आवश्यक अंग विज्ञापन है, जिसके बिना प्रकाशन का शब्द ही सार्थक नहीं होता। लेखक से पाण्डुलिपि लेने से आरम्भ करके पुस्तक के प्रकाशित, वितरित व पूरी बिक्री हो जाने तक प्रकाशक को हर घड़ी पुस्तकों का विज्ञापन करना पड़ता है। आज विज्ञापन का युग है। यह सोचकर बैठ जाना कि यह तो एक महान् लेखक की पुस्तक है, सुन्दर ढंग से छपी है, दाम भी उचित हैं, स्वयमेव बिक जायगी, बिलकुल आत्म-प्रवंचना है। जब तक लोगों को पता ही न लगे कि अमुक खरीदने योग्य पुस्तक प्रकाशित हुई है, तब तक वे कैसे खरीदेंगे। विज्ञापन के बीसियों ढंग और अलग-अलग साधन हैं जिन पर यहाँ विस्तार से प्रकाश नहीं डाला जा सकता। यह अपने में एक पूरा विषय है। यहाँ तो विज्ञापन पर किये जाने वाले खर्च की चर्चा करनी है। दैनिक, साप्ताहिक, मासिक पत्रों में विज्ञापन, सूचीपत्र छपवाना, समालोचना के लिए निःशुल्क पुस्तकें भेजना, पुस्तकों के या अपने नाम के साइन-बोर्ड बनवाकर देना, रेलवे टाइम-टेबलों, टेलीफोन-डायरेक्टरियों में अपना नाम प्रकाशित करना, हैंड-बिल बाँटना, पुस्तक-विक्रेताओं को उनके नाम से सूचियाँ छपवाकर देना, उपहार में अपने नाम की विज्ञापक चीजें बाँटना—ये सभी विज्ञापन के साधन खर्च किये बिना सम्भव नहीं हो सकते। जो भी विज्ञापन पर खर्च करना है, वह प्रकाशन-कार्य के लेखे-जोखे को आँककर करना होता है। उदाहरण के रूप में ढाई रुपये दाम की एक पुस्तक लीजिये, जिसका दो हजार का संस्करण छापा गया हो। कुल वह पाँच हजार रुपये के छपे दाम की पुस्तकें हुईं। इसका दो प्रतिशत एक सौ रुपया हुआ। इस पुस्तक का पूरा संस्करण बिक जाने तक कुल इस पर एक सौ रुपया खर्च किया जा सकता है। परन्तु प्रायः वर्ष-भर में इसकी एक हजार प्रतियाँ बिकती हैं, तो पहले वर्ष पुस्तक प्रकाशित होने पर इस पुस्तक के हिसाब में केवल पचास रुपया ही खर्च किया जा सकता है। यदि दो प्रतिशत के स्थान पर किसी पुस्तक पर कुछ अधिक भी खर्च कर दिया जाय तो भी यह राशि इतनी नगण्य है कि पुस्तक का पूरा विज्ञापन ठीक ढंग से नहीं हो सकता। पुस्तक-विशेष के विज्ञापन के अतिरिक्त सारे प्रकाशन-गृह की बिक्री व प्रतिष्ठा बढ़ाने के लिए भी कई बार विज्ञापन करना पड़ता है। दैनिक पत्रों में विज्ञापन देने की दरें तो इतनी अधिक हैं कि कोई भी प्रकाशक नियमित रूप से दैनिक पत्रों में विज्ञापन नहीं दे सकता। केवल कभी-कभी अपना नाम प्रचारित रखने के लिए या किसी विशेष महत्त्वपूर्ण प्रकाशन पर ही इस साधन का उपयोग किया जा सकता है। यदि दैनिक पत्र में एक ऐसा विज्ञापन दें तो पचास रुपया लग जाता है। इसी प्रकार किसी एक पुस्तक पर विशेष सरकुलर छपवाकर भेजना भी बड़ा महँगा पड़ता है। छपे हुए सरकुलर को लिफाफे में डालकर भेजें तो ८ नये पैसे तो डाक-व्यय ही होता है। यदि दो हजार सरकुलर भेजो तो १६ हजार नये पैसे अर्थात् १६० रुपये केवल डाक-व्यय ही खर्च होगा। सरकुलर का कागज, छपाई व लिफाफों का दाम इसके अतिरिक्त होगा। इस प्रकार दो-ढाई सौ रुपये से कम में एक सरकुलर नहीं जा पाता। बड़े-बड़े सूचीपत्र छापकर बाँटना भी बड़ा खर्चीला काम है। जरा-सा भी विज्ञापन के लिए हाथ बढ़ाओ तो चार-पाँच प्रतिशत तो खर्च हो ही जाता है। यदि विज्ञापन न हो तो काम नहीं चलता। अतएव यह विज्ञापन का एक ऐसा अनिवार्य खर्च है जो हर प्रकाशन-कार्य में होता है।

पुस्तक-विक्रेता का कमीशन

पुस्तक-व्यवसाय में पुस्तक-विक्रेता प्रकाशक से कमीशन लेकर पुस्तकें खरीदते हैं और हमारे देश में छपे हुए दाम से लेकर पूरा प्रकाशक से मिला हुआ कमीशन तक छूट में ग्राहक को देकर पस्तकें बेच देते हैं। साधारणतया २५% कमीशन पुस्तक-विक्रेता के लिए उचित समझा जाता है जिससे कि वह खर्च निकालकर अपनी आजीविका कमा सके। इसके अतिरिक्त प्रकाशक प्रायः ५% और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अधिक कमीशन अपने बिक्री के नियमों के अन्तर्गत अधिक इकट्ठा माल लेने वालों को या स्थायी रूप से नियमित माल मँगवाने वालों को दे देते हैं। इसके भी ऊपर बड़े-बड़े प्रादेशिक वितरकों को ३% से ५% तक कमीशन दिया जाता है ताकि वे आगे प्रकाशक की दरों से ही पुस्तक-विक्रेताओं को पुस्तकें बेच सकें। यदि प्रकाशक का नियम फ्री डिलीवरी अर्थात् रेलभाड़े की छूट देने का हो तो प्रकाशक को दो या ढाई प्रतिशत और खर्च करना पड़ता है। इस प्रकार यह लगभग ३५% कमीशन में निकल जाता है। प्रकाशक की अधिकांश पुस्तकों की बिक्री पुस्तक-विक्रेताओं द्वारा ही होती है। अब यदि ऐसा मान लिया जाय कि आधी बिक्री २५% पर होती है, चौथाई पर ३५% कमीशन पड़ जाता है और बाकी चौथाई बिक्री प्रकाशक स्वयं सीधे लाइब्रेरियों को तथा फुटकर ग्राहकों को कम कमीशन पर पुस्तकें बेचकर कर लेते हैं तो कुल बिक्री पर औसतन प्रकाशकों को ३०% कमीशन देना पड़ता है।

अब साधारण रूप से यह ३०% कमीशन वाला हिसाब ठीक है, परन्तु आज हमारे देश में जो कमीशनों की होड़ का कुचक्र चल रहा है उसमें प्रायः प्रकाशक को इससे भी कहीं अधिक कमीशन देना पड़ जाता है। सरकारी विभागों द्वारा जो टैंडर सिस्टम से पुस्तकों की खरीद होती है उससे तो प्रकाशन-व्यवसाय का स्तर बहुत ही नीचे जा रहा है। सरकारी पुस्तकें खरीदने वाले अधिकारी वे पुस्तकें खरीदना चाहते हैं जिन पर कमीशन अधिक मिले। पुस्तक का दाम कुछ भी हो, पुस्तक के प्रकाशन का स्तर कितना ही घटिया हो, उन्हें तो केवल कमीशन अधिक चाहिए। परिणामतः घटिया पुस्तकें मँहगे दामों पर और अधिकाधिक कमीशन की बोली देकर बिकती हैं। सरकारी खरीद तो 'चार दिनों की चाँदनी' है। उसके बाद अन्ततोगत्वा जनता-जनार्दन की सच्ची कसौटी पर ही हर पुस्तक परखी जायगी। अतएव यह सामयिक लाभ उठाने के लिए अपने व्यावसायिक ढाँचे और ढर्रे को ही बदल देना अदूरदर्शिता है। परन्तु आज के युग का आदर्श यही है कि दूर किसने देखा है, आज तो मनमाना लाभ उठाओ। इसका एक दुष्परिणाम यह हो रहा है कि अच्छा प्रकाशन-व्यवसाय हानि उठा रहा है और घटिया पुस्तकें पनप रही हैं।

दूसरी ओर फुटकर ग्राहकों की बिक्री में भी पुस्तक-विक्रेताओं ने यही परिपाटी चला दी है कि अधिक कमीशन का लोभ देकर ग्राहकों को मँहगी पुस्तकें बेचो। परन्तु आज वह स्वयं उसी कुचक्र के पंजे में पड़ा कराह रहा है। वह उसकी जंजीरें नहीं तोड़ सकता। हर ग्राहक दनदनाता हुआ आता है और बढ़-बढ़कर कमीशन की माँग करता है। वह दस मिनट में सारे बाज़ार के पुस्तक-विक्रेताओं के भेद ले लेता है और पूरा कमीशन लेकर ही चैन लेता है। प्रकाशक पुस्तक-विक्रेता को चाहे ३०% दे या ३३%, पुस्तक-विक्रेता तो ५% से १०% तक ही बेचता है। पुस्तक-विक्रेता शरत्-साहित्य का वह संस्करण बेचना चाहता है जिस पर कमीशन अधिक हो, दाम चाहे दुगुना हो। बढ़िया छपे हुए, कम दाम के साधारण कमीशन के संस्करण बेचने में उसे कोई रुचि नहीं। अतएव आज प्रकाशक को बिक्री बढ़ाने के लिए अधिकाधिक कमीशन देना पड़ता है, इसके सिवा उसके लिए कोई चारा नहीं जब तक कि प्रकाशक व पुस्तक-विक्रेता-संघ कमीशन-सम्बन्धी कोई अनुशासन नहीं बनाते। प्रकाशक कमीशनों की होड़ में पिस रहा है। पुस्तकों की बिक्री का मापदण्ड आज कमीशन है, अच्छी पुस्तक नहीं।

लेखक का भाग

प्रकाशन-कार्य के आर्थिक ढांचे में लेखक की रायल्टी अथवा पारिश्रमिक बड़ा मुख्य स्थान रखता है। चाहे कोई लेखक रायल्टी के स्थान पर एक ही बार अपना पूरा पारिश्रमिक ले ले, बात वही बैठती है। एक ही बार पूरा पारिश्रमिक ले लेने वाला लेखक भी उसे मन-ही-मन रायल्टी के हिसाब से मिलाकर देख लेता है कि वह एक संस्करण पर या दो संस्करणों पर कितने प्रतिशत बैठती है। वैसे लेखक व प्रकाशक दोनों के लिए न्यायपूर्ण रायल्टी ही है। लेखक रायल्टी अधिक-से-अधिक चाहता है। वह १५% चाहता है, २०% भी चाहता है और यदि उसे २५% मिले तो उसे इन्कार नहीं। उचित रायल्टी क्या हो, यह लेखक व प्रकाशक के बीच विवादास्पद विषय है। लेखक अधिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चाहता है, प्रकाशक कम देना चाहता है, क्योंकि रायल्टी पुस्तक के दाम के साथ प्रतिशत के रूप में सम्बन्धित होने से पुस्तक के दाम पर प्रभाव डालती है। यदि रायल्टी १५% की बजाय २०% हो तो बाकी सभी लोग तो अपना-अपना भाग ले लेंगे, परन्तु प्रकाशक का अन्तिम लाभांश १०% के स्थान पर ५% ही रह जायगा जो कि प्रकाशन-कार्य चलाने के लिए बिलकुल ही अपर्याप्त है। स्वाभाविक रूप से उस ५% को पूरा करने के लिए प्रकाशक को पुस्तक का दाम अधिक रखना पड़ेगा जिससे पुस्तक की बिक्री पर प्रभाव पड़ेगा। बिक्री कम होगी तो लेखक व प्रकाशक दोनों को ही अन्ततोगत्वा कुल राशि कम प्राप्त होगी। आदर्श यह होना चाहिए कि पुस्तक की प्रतियाँ अधिक बिकें, चाहे प्रति पुस्तक बचतया रायल्टी कममिले।

विदेशों में प्रायः १०% रायल्टी की प्रथा है। केवल बहुत उच्चकोटि के लेखक मौलिक ग्रन्थों पर १५% लेते हैं, लेकिन वही लेखक सस्ते संस्करणों पर ५% भी ले लेते हैं। यहाँ पर नौसिखिया लेखक अपनी प्रथम रचना पर भी १५% या २०% से कम रायल्टी नहीं चाहता। इससे कम लेना वह अपनी मान-हानि समझता है। मेरे एक मित्र लेखक मुझसे १०% रायल्टी तय करके बाद में बदल गए और कहने लगे कि मुझे चाहे राशि कम मिले परन्तु मैं यह नहीं चाहता कि कोई यह जाने या सुने कि मैंने १०% रायल्टी के अनुबन्ध पर हस्ताक्षर किये हैं। उनके अड़े रहने पर मुझे १०% के स्थान पर १५% रायल्टी ही देनी पड़ी, क्योंकि मैंने उनसे मित्रतावश रायल्टी का अनुबन्ध पहले से नहीं लिखवाया था। अन्य प्रकाशकों की तरह मेरी भी यह भूल थी। वास्तव में अधिक रायल्टी के अनुबन्ध पर हस्ताक्षर करना अनैतिकता है। इससे पुस्तक की बिक्री नहीं हो पाती। किसी ऐसे लेखक की पुस्तक पर, जिसके नाम से ही पुस्तक की सहस्रों प्रतियाँ बिक जाती हों और प्रकाशक को अधिक विज्ञापन की आवश्यकता भी न पड़े, तो कुछ अधिक रायल्टी भी दी जा सकती है। आदर्श यही होना चाहिए कि लेखक व प्रकाशक अपना-अपना भाग सीमा में रखें और अधिक बिक्री से कुल अधिक लाभ की राशि पैदा करें। परन्तु यह बात तो लेखक के हाथ में है, प्रकाशक तो बचा हुआ लाभ ही पाता है।

कुछेक नये प्रकाशक अच्छे लेखकों की पुस्तकें प्राप्त करने के लिए अत्यधिक रायल्टी दे देते हैं, और भी सब मदों पर खूब खर्च करते हैं। उन्हें इस व्यवसाय के आर्थिक लेखे का पूरा ज्ञान नहीं होता। गत कुछेक वर्षों में भारत में कुछेक ऐसे प्रकाशक प्रकाशन-जगत् के आकाश पर देदीप्यमान नक्षत्र बनकर प्रकट हुए जिन्होंने लेखकों से लम्बी-लम्बी योजनाएँ, भारी-भरकम रायल्टियाँ तथा भरपूर अगाऊ रकमें तय कीं, परन्तु दो-तीन वर्ष में ही वे लुप्त हो गए। आज उनकी पुस्तकें कहीं-कहीं कबाड़ियों की दूकानों पर सरकारी नीलाम द्वारा प्राप्त हुई मिलती हैं। रायल्टी वह ठीक है, जो निभे। एक बड़े लेखक, जो बीस प्रतिशत रायल्टी से कम किसी प्रकाशक से बात नहीं करते थे, जब स्वयं प्रकाशक बन गए तो एक दिन अपने-आप ही कहने लगे कि केवल मोटी-मोटी रायल्टी की पुस्तकें प्रकाशित करके कोई प्रकाशक नहीं पनप सकता।

केवल भोजन द्वारा स्वास्थ्य प्राप्ति

यू० पी० और पंजाब सरकार के शिक्षा विभाग द्वारा स्कूलों के पुस्तकालयों, अध्यापकों आदि के लिये स्वीकृत।

मनुष्य के स्वास्थ्य का बनाना या बिगाड़ना बहुत कुछ भोजन पर ही निर्भर है। जवानों, बूढ़ों, हाथ का श्रम करने वाली माताओं तथा मोटे या पतले मनुष्यों के वास्ते भिन्न २ प्रकार का भोजन चाहिए। परन्तु आप हैं कि बिना सोचे-समझे हर वला खाये जाते हैं और इस तरह अपना स्वास्थ्य बिगाड़ लेते हैं। भोजन के विषय में यह पुस्तक आपकी बड़ी सहायता करेगी। इससे आप जान जायेंगे कि किस रोग में क्या खाना चाहिये। कौन चीज दिल, दिमाग को ताक़त देती है, कौन पाचन-शक्ति को और कौन रजवीर्य को पुष्ट करके शक्ति प्रदान करती है। अढ़ाई सौ पृष्ठों का सचित्र व सजिल्द पुस्तक का मूल्य ३।) है। उर्दू और पंजाबी में मूल्य ३॥) है। तीन लाख से अधिक बिक चुकी है।

पता—कविराज हरनाम दास
बी० ए० एण्ड सन्ज,
गौरीशंकर मन्दिर (लाल किले के पास) चांदनी चौक, दिल्ली-६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुछेक पुस्तकें बिना रायल्टी की भी होनी चाहिएँ ताकि प्रकाशक का कुल हिसाब का लेखा-जोखा ठीक हो सके। यह सचमुच ही ठीक है कि कुछेक पुस्तकें हर प्रकाशक के पास ऐसे अमर साहित्य की भी होनी चाहिएँ जिन पर रायल्टी न हो और अन्य सभी पुस्तकों पर उचित रायल्टी हो। औसत १२% से अधिक नहीं बैठनी चाहिए।

प्रकाशक का लाभांश

प्रकाशन यज्ञ में सम्मिलित होने वाले सभी कार्य-कर्ताओं का भाग दे देने के बाद जो बचता है, वही प्रकाशक का लाभ है। वह प्रायः बिक्री के दस प्रतिशत से अधिक नहीं होता। इसमें कई बाधाएँ, विघ्न व विपत्तियाँ आती हैं। जैसे किसान की खेती पर कभी वर्षा, कभी बाढ़, कभी अनावृष्टि के वज्राघात होते हैं और यदि इन सबसे वह बच जाय तो आजीविका अर्जित करता है और सभी बातें बिलकुल ठीक हो जायें तो सम्पन्न होता है, वैसे ही प्रकाशक को असफल पुस्तकों के वज्राघात, स्थान-स्थान पर बिलों की रकम मारे जाने के वज्राघात व 'डैड-स्टॉक' तथा दीमक की हानियों से बच जाने पर ही आजीविका मिलती है, और यदि कोई बहुत चल निकलने वाली पुस्तकें आ गईं तो सम्पन्नता भी प्राप्त होती है।

इन सब बातों का यह अर्थ है कि यहाँ के प्रकाशक विदेशों के प्रकाशकों की तरह पुस्तक की पांडुलिपि से लेकर अन्तिम बिक्री तक का पहले हिसाब बनाएँ। अन्दाज़े से दाम न रखें। यूरोप में तो हर प्रकाशन-गृह में एक डायरेक्टर प्रकाशन-गृह के आर्थिक ढाँचे पर हर समय दृष्टि रखता है। यदि किसी मद पर अत्यधिक खर्च हो रहा हो, तो उस विभाग के अध्यक्ष से बातचीत करके उस खर्च पर कमी करवाता है। वह एक प्रकार का वित्त-मन्त्री होता है। वह गोदामों में पड़े डैड स्टॉक की सूची पर दृष्टि डालकर उसकी बिक्री के लिए कुछ विशेष यत्न करने को कहता है। उसकी पैनी दृष्टि यह भी ध्यान रखती है कि कहाँ-कहाँ बचतें की जा सकती हैं। यदि छोटे प्रकाशक किसी अलग व्यक्ति को यह कार्य न सौंप सकें, तो उन्हें स्वयं हर महीने में एक-दो दिन के लिए अपने प्रकाशन-गृह का वित्त-मन्त्री बन जाना चाहिए।

पुस्तक अस्पताल

हर प्रकाशन-गृह में कुछ-न-कुछ पुस्तकें बिकने से रह जाती हैं। उन्हें रद्दी के भाव बेचने से पूर्व प्रकाशक यह यत्न अवश्य करता है कि किसी भी प्रकार वे रद्दी के भाव न बिककर पुस्तकों के रूप में ही बिकें। न बिकने वाली पुस्तकों का इलाज करना पड़ता है। कभी उनका नाम बदलना पड़ता है, कभी आवरण पृष्ठ का परिवर्तन करना पड़ता है, और कभी-कभी नई सूझ से बिलकुल कायाकल्प करना होता है जिससे पुस्तक जनता को नये रूप में जँच जाय और उसकी बिक्री हो। अमरीका में तो कई बड़े प्रकाशन-गृहों में 'पुस्तक-अस्पताल' नाम से अलग विभाग इसी काम के लिए बने हुए हैं जहाँ न बिकने वाली 'बीमार' पुस्तकों का इलाज होता है। भारत में भी सूझ-बूझ वाले प्रकाशकों ने कई बार न बिकने वाली पुस्तकों का रंग-रूप बदलकर उन्हें बिकने वाली पुस्तकें बना लिया और हानि से बच गये।

पुनर्मुद्रण

सफल प्रकाशक वही है जिसके पास कुछेक पुस्तकें अवश्य ऐसी हों जिनके बार-बार नये संस्करण व पुनर्मुद्रण हों। पहले संस्करण में प्रकाशक की बचत बहुत कम होती है। प्रकाशक का लाभ इसी में है कि उसकी अधिकाधिक पुस्तकें बार-बार छपने वाली हों। केवल एक ही संस्करण चलने वाली पुस्तकों के आधार पर कोई प्रकाशक पनप नहीं सकता। अतएव नई पाण्डुलिपियों को प्रकाशन के लिये चुनते समय, प्रकाशक को यह भी ध्यान रखना आवश्यक होता है कि यह पुस्तक एक ही संस्करण चलेगी अथवा इसकी माँग चिरस्थायी होगी।

इसी प्रकार प्रकाशन-व्यवसाय के हर कार्य पर आर्थिक सफलता की दृष्टि रखने से ही प्रकाशक जीवित रह सकता है। यह थोड़े लाभांश व छोटी-छोटी बचतों का व्यवसाय है, अतएव हर बचत की ओर ध्यान देना नितान्त आवश्यक है। चाहे कोई व्यक्ति इस कार्य को यज्ञ-रूप में देखे, परन्तु यज्ञ की सफलता भी इसी बात में निहित है कि यज्ञ की सामग्री का ठीक उपयोग हो जिससे यज्ञ सम्पन्न हो सके।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देश-विदेश से

अमरीका की प्रसिद्ध प्रकाशन-संस्था विलियम हाइनमान लिमिटेड ने सन् १९५७ में पुस्तकों की ६ करोड़ प्रतियों का प्रकाशन १ जनवरी, सन् १९५६ से ३१ दिसम्बर, १९५७ तक किया।

* * *

ब्रिटेन के बुकसेलर्स एसोसिएशन्स की कुल सदस्य-संख्या इस समय ३,१७१ है। पिछले एक वर्ष में केवल १९ सदस्य बढ़े हैं। किन्तु बुकसेलर्स एसोसिएशन के प्रवक्ता का कथन है कि वास्तव में गतवर्ष एसोसिएशन की सदस्यता प्राप्त करने के लिए १२२ नये प्रार्थना-पत्र आये थे। इस संस्था से ४७ पुराने सदस्यों ने त्याग-पत्र दिया और ५६ सदस्य वार्षिक चन्दा न देने के कारण अलग कर दिये गए।

* * *

इंगलैण्ड के सुप्रसिद्ध प्रकाशक श्री जे० ह्विटकर एण्ड सन्स लिमिटेड ने वहाँ के प्रकाशकों के नाम और पतों की एक वार्षिक सूची प्रकाशित की। इस सूची के अनुसार १९५४ में इंगलैण्ड के सारे प्रकाशकों की संख्या १,८०० थी। उपरोक्त प्रकाशकों में से केवल १,२२४ प्रकाशकों ने वास्तव में पुस्तकों का प्रकाशन किया था। ४३३ प्रकाशकों ने केवल एक-एक पुस्तक का प्रकाशन किया था। इसी प्रकार अमरीका में भी, 'अमेरिकन ट्रेड डाइरेक्टरी' ने प्रकाशकों की सूची में ९५० संस्थाओं का नाम और पता छापा था, जिनमें केवल ३३२ प्रकाशकों ने ही १९५३ में पाँच या इससे अधिक पुस्तकों का प्रकाशन किया था।

* * *

यूरोप के कुछ देशों में पुस्तक-विक्रेता तब तक स्वतन्त्र रूप से अपने व्यापार का श्रीगणेश नहीं करता जब तक वह क्रम से कई परीक्षाओं में उत्तीर्ण नहीं हो जाता। इन परीक्षाओं में कमर्शियल स्कूल की एक परीक्षा अनिवार्य समझी जाती है। मिसाल के तौर पर नार्वे में एक पुस्तक-विक्रेता के सहयोगी के लिए अनिवार्य नियम है कि वह परीक्षाओं में तो उत्तीर्ण हो ही और इसके बाद उसने प्रकाशन-व्यवसाय में कम-से-कम दस वर्ष काम किया हो। तभी वह अपनी स्वतन्त्र पुस्तक की दुकान खोल सकता है। अमरीका में उपरोक्त ढंग की शिक्षा और अनुभव पर तो ज़ोर कम दिया जाता है किन्तु नये व्यापारी की आर्थिक शक्ति अर्थात् पूँजी के सम्बन्ध में जाँच-पड़ताल अवश्य होती है।

* * *

इधर हाल में ही बिहार के सब जिला बोर्डों को स्थगित करके उनका काम ज़िला मजिस्ट्रेटों को सौंप दिया गया है। ज़िला बोर्डों का इस प्रकार स्थगन होने वाला है, यह बात कुछ मास पहले फैल गई थी। बिहार के जिला बोर्ड हिन्दी की हजारों रुपयों की पुस्तकों की खरीद करने वाले हैं, यह जानकर हिन्दी के अनेक प्रकाशकों ने अपने प्रतिनिधियों के चक्कर बिहार में लगवाये। जिस दिन पटना के ज़िला बोर्ड का काम वहाँ के मजिस्ट्रेट ने सम्भाला, पटना के ज़िला खजाने में बाकी ८५ नये पैसे की रकम शेष थी! प्रकाशक नोट कर लें।

* * *

केरल की सरकार ने इस अभियोग की जाँच के लिए एक गैर-सरकारी समिति नियुक्त की है कि राज्य के स्कूलों के लिए स्वीकृत पाठ्य-पुस्तकें साम्यवादी विचारों का प्रचार करने में सहायक होंगी। यह समिति अपनी छानबीन का नतीजा एक मास में प्रस्तुत कर देगी।

* * *

रूरल हायर एजुकेशन की राष्ट्रीय समिति की पाँचवीं बैठक के एक निर्णय के अनुसार चार व्यक्तियों की एक समिति निर्धारित की गई है जो रूरल इंस्टिच्यूट्स के स्नातकों के लिए एक वर्ष की अनिवार्य सामाजिक सेवा की योजना की रूपरेखा बनाएगी।

* * *

प्रकाशन व पुस्तक-व्यवसाय सेमिनार में अपनी वार्ता पढ़ते हुए ब्रिटिश कौंसिल के पुस्तकाध्यक्ष मि० जे० स्मीटन ने बताया कि ब्रिटेन में प्रतिव्यक्ति औसतन प्रतिमास दो पुस्तकें पढ़ता है, जबकि भारत में प्रतिव्यक्ति प्रतिवर्ष औसतन एक ही पुस्तक पढ़ता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रवीन्द्रनाथ ठाकुर

।। हिन्दीमें भाषान्तरित ग्रन्थावली ।।

मेरा बचपन

रवीन्द्रनाथके बाल्य-जीवनका उन्हींकी भाषामें सजीव वर्णन। आजसे सौ वर्ष पहलेके बंगाली जीवनका इतना सुन्दर और सजीव चित्र आपको अन्यत्र देखने को नहीं मिलेगा। गैसकी रोशनीवाला कलकत्ता जहाँ तम्बाकूका कश खींचकर बाबू लोग साझेकी बग्घियोंको छड़छड़ाते निकल जाते थे, जहाँकी गलियाँ 'बरिफ' की हाँक देनेवाले खोमचेवालोंसे मुखरित थीं, जहाँके अन्त:पुरकी छतें धूपमें बिथुरे अलक सुखानेवाली नव-वधुओंसे पूर्ण थीं।

कवर स्वयंरवीन्द्र नाथ द्वारा अंकित एक डिज़ाइन के आधारपर शिल्पी कृपालसिंह शेखावतने बनाया है। द्वितीय परिवर्द्धित सचित्र संस्करण। मूल्य दो रुपये तीस नये पैसे।

नटीकी पूजा

यह विश्वकविके बंगला नाटक 'नटीर पूजा' का सुलभ हिन्दी-अनुवादहै। इसमें आपको बौद्धकालीन भारतकी समाज-व्यवस्था, अहिंसा और त्यागकी सुनहली झलक मिलेगी। इस नाटकमें कविने इतिहासकी कारासे एक नई दुनिया खोलकर पाठकोंके सामने रख दी है। वह है नारीकी दुनिया। नाटकमें सब नारीपात्र हैं। हमें उनके द्वारा उपयुक्त क्रान्तिको एक बिल्कुल भिन्न दृष्टिकोणसे देखनेका अवसर मिलता है।

कवर शिल्पी नन्दलाल बसु द्वारा अंकित है। द्वितीय संस्करण। मूल्य दो रुपये मात्र।

फुलवाड़ी

यह रवीन्द्रनाथके मूल बंगला उपन्यास "मालञ्च" का हिन्दी अनुवाद है। यह पुस्तक रवीन्द्रनाथके उत्तरकालकी रचना है। इसमें शैली और भाषाकी विदग्ध प्रौढ़ता तथा मानव-चरित्रके विषयमें लेखकका तीक्ष्ण अवलोकन और ममता-पूर्ण समवेदन दोनों पर्याप्त मात्रामें विद्यमान हैं।

पुस्तक का बहिरंग सुप्रसिद्ध शिल्पी श्रीविनोदबिहारी मुखोपाध्यायके स्केच और उन्हींके अंकित कवरके द्वारा आकर्षक हो उठा है। मूल्य दो रुपये अस्सी नये पैसे।

चतुरंग

'चतुरंग' रवीन्द्रनाथके उपन्यासोंमें सर्वथा विशिष्ट स्थान रखता है। इसकी विषयवस्तु बहुत व्यापक है। इसमें चरित्रोंके अंतरालमें प्रवेश करके रवीन्द्रनाथने मानव-जीवन की अनेक रहस्यमयी और समस्यामूलक वृत्तियोंकी छान-बीन की है। उन स्थायी और बुनियादी प्रश्नोंपर उन्होंने प्रकाश भी डाला है जिनका इंगित हम अपने साधारण जीवनमें पाते तो हैं किन्तु जिन्हें अमूर्त आदर्श या काल्पनिक स्वप्न कहकर उड़ा देते हैं।

उपन्यासके बहाने लेखकने जीवन की जो व्याख्या प्रस्तुत की है, आशा है उससे कोई भी पाठक वंचित नहीं रहना चाहेगा। मूल्य डेढ़ रुपया मात्र।

दो बहनें

रवीन्द्रनाथने इस उपन्यासका आरम्भ इस प्रकार किया है: "स्त्रियाँ दो जातिकी होती हैं, ऐसा मैंने किसी-किसी पंडित से सुना है। एक जाति प्रधानतया माँ होती है, दूसरी प्रिया। ऋतुओंके साथ यदि तुलनाकी जाय तो माँ होती वर्षा ऋतु—वह जल देती है, फल देती है, ताप शमन करती है, ऊर्ध्व लोकसे अपने आपको विगलित कर देती है, शुष्कताको दूर करती है, अभावों को भर देती है।

"और प्रिय है वसन्त ऋतु। गंभीर है उसका रहस्य, मधुर है उसका मायामन्त्र। चञ्चलता उसकी रक्तमें तरङ्ग लहरा देती है और चित्तके उस मणिकोष्ठमें पहुँचती है जहाँ सोनेकी वीणामें एक निभृत तार चुपचाप झंकारकी प्रतीक्षामें पड़ा हुआ है; झंकार—जिससे समस्त देह और मनमें अनिर्वचनीयकी वाणी झंकृत हो उठती है।"

उपन्यास इन्हीं दो जातियोंकी नारियोंके जीवनकी एक झाँकी है जिसमें एक कर्मठ पुरुषकी उपस्थिति विचित्र संघर्ष का संचार करती है।

पुस्तक श्री हजारीप्रसाद द्विवेदी द्वारा अनूदित और कवर स्वयं रवीन्द्रनाथ द्वारा अंकित एक भावपूर्ण चित्रसे अलंकृत है। मूल्य दो रुपये अस्सी नये पैसे।

विश्वभारती

६/३ द्वारकानाथ ठाकुर लेन, कलकत्ता-७

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तकों की विक्रय-कला और उनका थोक वितरण

ओंप्रकाश

प्रकाशन-व्यवसाय का कठिनतम पहलू पुस्तकों की बिक्री है। यह लेख पुस्तकों की थोक व परचून बिक्री के महत्त्वपूर्ण विषय पर देश-विदेश के अनुभवों के दृष्टिकोण से प्रकाश डालता है।

र स्टैनले अन्विन ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'द ट्रुथ बाउट पब्लिशिंग' में फेलिक्स डान नाम के जर्मन कवि की एक कविता उद्धृत की है, जो इस प्रकार है: "पुस्तकें लिख पाना आसान है; आवश्यकता होती है केवल कलम और स्याही की, और अतीव सहनशील काग़ज़ की! पुस्तकों को छाप पाना कुछ अधिक कठिन काम है; क्योंकि प्रतिभा-सम्पन्न व्यक्ति लिखने के ऐसे ढंग में प्रायः मज़ा लेते हैं जो दूसरों द्वारा पढ़ा न जा सके। पुस्तकों को पढ़ पाना और भी कठिन काम है, क्योंकि नींद के हमलों से बच सकना सरल नहीं होता। लेकिन एक नश्वर व्यक्ति के लिए सब से अधिक कठिन काम है, पुस्तकों को बेच पाना!"

हमारे देश में प्रकाशन का अर्थ पुस्तक के छप जाने से ही मान लिया जाता है लेकिन पुस्तकों के मुद्रण को प्रकाशन नहीं कहा जाता। प्रकाशन का मुख्य कार्य तो छपाई के बाद ही आरम्भ होता है। वस्तुतः प्रकाशन का ध्येय किसी भी पुस्तक का पुस्तक-विक्रेताओं तथा विविध कोटियों के पुस्तकालयों के माध्यम से उसके पाठकों द्वारा खरीदा और पढ़ा जाना है।

हमारे देश में, विशेषतः हिन्दी-जगत् में, पुस्तकों की खरीद की वर्तमान स्थिति दयनीय ही कही जा सकती है। पुस्तकें पढ़ने की ओर हिन्दी-भाषियों की रुचि कम है, और खरीदने की ओर तो उससे भी कम। कुछ सीमा तक इसका कारण मध्यवर्ग की उत्तरोत्तर गिरती हुई क्रय-शक्ति को माना जा सकता है। द्वितीय महायुद्ध के परिणामस्वरूप मध्यवर्ग का ह्रास हुआ है और उसने पुस्तकों की खरीद पर काफी कुप्रभाव डाला है। जिन नये वर्गों के हाथ में रुपया आ रहा है, उनमें पुस्तक-पठन की परम्परा या प्रवृत्ति नहीं है, और शायद उन वर्गों को दृष्टि में रखकर कोई साहित्य लिखा या प्रकाशित भी नहीं किया जा रहा है। लेकिन इस विश्लेषण का यह आशय नहीं है कि हिन्दी-भाषियों में पुस्तकें पढ़ने और खरीदने की रुचि बढ़ाने के लिए प्रयत्न न किये जायँ। ये प्रयत्न केवल प्रकाशकीय रहें तो इनका ग़लत अभिप्राय लगाये जाने की गुन्जाइश है। पुस्तकें पढ़ने का प्रश्न शैक्षणिक, सांस्कृतिक और किसी गणतान्त्रिक राज्य के लिए आधारभूत महत्त्व का भी है, और इस रुचि के सम्वर्द्धन के लिए किये गए प्रचार-प्रसार में शासन, लेखकों, शिक्षा-शास्त्रियों एवं पुस्तक-विक्रेताओं को सहयोग देना चाहिए। देश में इस कार्य का उत्तरदायित्व इंग्लैण्ड की 'नैशनल बुक लीग'-जैसी किसी नव आयोजित संस्था को निबाहना चाहिए और इस दिशा में जितनी शीघ्र कदम उठाए जायँ, उचित होगा।

किसी भी पुस्तक को प्रकाशित करने का निश्चय करते समय एक कुशल प्रकाशक के लिए यह जानना आवश्यक है कि वह पुस्तक अन्त में किस प्रकार के व्यक्तियों एवं पुस्तकालयों द्वारा खरीदी जायगी। बिक्री के लिए विज्ञापन की व्यवस्था करते समय यह जानकारी बड़ी सहायक सिद्ध होती है। कई विदेशों में 'मार्केट रिसर्च' के नाम से विभिन्न स्थिति और क्षेत्रों के लोगों की पठन-सम्बन्धी रुचि से परिचय प्राप्त करने की कोशिशें की जाती हैं। हमारे देश में दुर्भाग्यवश प्रकाशकों द्वारा ऐसा नहीं किया जाता, जिसका दुष्परिणाम उन्हें प्रायः बहुत शीघ्र—छपाई के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाद पुस्तक की बिक्री का प्रश्न सामने आते ही—भोगना पड़ता है।

पुस्तकों के विज्ञापन का उद्देश्य क्या होता है? अमरीका में बारीकी से इस विज्ञापन के निम्नलिखित ध्येय समझे गए हैं: (१) पुस्तकों की बिक्री करना, (२) पाठकों की संख्या में वृद्धि करना, (३) पुस्तक-व्यवसायियों को प्रभावित करना, (४) अन्य लेखकों को प्रभावित करना, (५) पुस्तक-समालोचकों को प्रभावित करना, (६) बुक-क्लबों के लिए पुस्तकों के चुनाव करने वालों, सस्ते दामों में पुस्तकों के पेपर-बैक संस्करण प्रकाशित करने वाली संस्थाओं के निर्णायकों आदि को प्रभावित करना। इस अन्तिम उद्देश्य को छोड़कर शायद हमारे देश में भी कम अधिक मात्रा में पुस्तकों के विज्ञापन का यही उद्देश्य होता है—बुक-क्लबों का संयोजन और पेपर बैक की पुस्तकों के प्रकाशन का प्रारम्भ अभी तक नहीं हुआ है।

पुस्तकों के प्रचार के साधन हमारे देश में बहुत सीमित हैं। अन्य उद्योगों द्वारा उत्पादित दैनिक आवश्यकता की चीज़ों के प्रचार और विज्ञापन की तरह पुस्तकों का प्रचार और विज्ञापन नहीं किया जा सकता। प्रत्येक पुस्तक का निजी व्यक्तित्व होता है, और प्रकाशक को प्रत्येक नई पुस्तक के लिए उसके व्यक्तित्व के अनुसार प्रचार और विज्ञापन के तरीकों को अपनाना चाहिए। तेल और साबुन और दन्त-मंजनों के विज्ञापनों की नकल पुस्तकों के विज्ञापन के लिए नहीं की जा सकती। इन चीज़ों की ज़रूरत प्रत्येक व्यक्ति को प्रतिदिन होती है और उनकी खरीद भी बार-बार करनी पड़ती है। पुस्तकों के पढ़ने को—विशेषतः खरीदकर पढ़ने को—अपने जीवन का अभिन्न अंग मानने वालों की संख्या केवल हमारे देश में ही नहीं, हमसे कहीं अधिक सुपठित देशों के लोगों में भी कम है। यदि लोकप्रिय होकर बड़ी संख्या में पाठकों द्वारा खरीदी जाने वाली पुस्तकों को छोड़ दें तो अन्य प्रकाशित साहित्य विश्व की विविधरूपा संस्कृति और वर्तमान की मान्यताओं के लिए चुनौतीभरे विचारों का वाहक और इस कारण सबके लिए समान रूप से ग्राह्य नहीं होता। उनके लिए अन्य धन्धों और उद्योगों द्वारा प्रसारित और निर्मित वस्तुओं के समान सुनिश्चित मण्डियों में प्रचार सम्भव नहीं है। प्रकाशक का कर्तव्य तो प्रचार और विज्ञापन के साधनों द्वारा उन लोगों तक पहुँच पाना और उन्हें किसी विशिष्ट विषय की पुस्तक की खरीद करने के लिए प्रेरित करना भर ही है, जिससे उनकी रुचि का अनुमान किया जा सके।

प्रकाशक के लिए आवश्यक है कि अपनी पुस्तकों की खबर पुस्तक-विक्रेताओं, पुस्तकालयों तथा पाठकों तक पहुँचा दे। पुस्तक-विक्रेताओं और पुस्तकालयों को सूचित कर पाना अपेक्षाकृत सरल है—नियमित रूप से सूचीपत्र भेजकर ऐसा किया जा सकता है—लेकिन पाठक को अपने प्रकाशनों से सूचित रखना कठिनतर कार्य है। हिन्दी के पाठकों तक पहुँचने के लिए हमारे देश में कोई उत्तम तथा व्यापक माध्यम नहीं है—पाठक बहुत बड़े क्षेत्र में फैले हुए हैं—ऐसा कोई भी पत्र नहीं है जो इस सारे क्षेत्र में प्रभावशाली हो सके, और फिर यदि विभिन्न क्षेत्रों के पत्रों में विज्ञापन देने की बात सोची भी जा सके तो इन पत्रों की विज्ञापन की दरें इतनी अधिक होती हैं कि प्रकाशन-व्यवसाय की अर्थ-व्यवस्था को देखते हुए उनका उपयोग नहीं किया जा सकता। यदि हिन्दी के कुछ क्षेत्रीय और बड़े-बड़े दैनिक एवं साप्ताहिक पत्रों को पुस्तकों के विज्ञापन की दरों में कमी के लिए मनवाया जा सकता तो पुस्तकों के प्रचार का अच्छा साधन प्रस्तुत किया जा सकता था। दैनिक पत्रों के माध्यम के अभाव में साहित्यिक पत्रिकाओं में लाभपूर्वक विज्ञापन किया जा सकता है, यद्यपि हिन्दी की साहित्यिक पत्रिकाएँ भी इतनी कम संख्या में छपती हैं कि उनमें दिये गए विज्ञापनों का व्यय पूर्ण रूप से सार्थक नहीं कहा जा सकता। इधर कुछ वर्षों से पुस्तक-व्यवसाय-सम्बन्धी कुछ पत्रिकाएँ भी प्रकाशित होने लगी हैं। प्रकाशकों के लिए विज्ञापन का वे श्रेष्ठ साधन हैं, इसमें सन्देह नहीं। यदि प्रकाशकों का अधिक सहयोग इन पत्रिकाओं को मिल पाता तो ये पत्रिकाएँ प्रकाशन-व्यवसाय की यथेष्ट सेवा कर सकती थीं।

प्रोफेसर हैरल्ड लास्की ने एक अच्छे पुस्तक-विक्रेता को 'सभ्यता के जीवित आधार का एक अंश' कहकर पुकारा है और यह भी कहा है कि "संसार की सर्वश्रेष्ठ वस्तु विक्रयार्थ उनके पास रहती है।...एक अच्छे पुस्तक-विक्रेता के बिना कोई शहर आत्माहीन शरीर के समान है।" अपने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यवसाय के सांस्कृतिक महत्त्व से परिचित ऐसे पुस्तक-विक्रेताओं से अच्छे व्यक्तिगत सम्बन्ध बनाना प्रकाशक के लिए अत्यन्त आवश्यक है। पुस्तक-विक्रेता न केवल उन द्वारा प्रकाशित पुस्तकों की बिक्री का मुख्य और महत्त्वपूर्ण साधन है, वरन् पाठकों से प्रतिदिन सम्पर्क में आने के कारण पुस्तकों के विषय में लोक-रुचि से प्रकाशक को परिचित भी रख सकता है। लेकिन जहाँ प्रकाशन की सब प्रक्रियाओं का उत्तरदायित्व प्रकाशक के अपने कन्धों पर हो वहाँ इसकी सम्भावना कम हो जाती है और प्रकाशक को पुस्तक-विक्रेताओं से अपने सम्बन्ध सूचीपत्रों तथा अपने घुमक्कड़ प्रतिनिधियों के माध्यम से ही बनाए रखने पड़ते हैं।

आवश्यक तो यह है कि प्रकाशक किसी पाण्डुलिपि के स्वीकृत होने के साथ ही उसके प्रचार के लिए पहला कदम उठायें। हिन्दी के क्षेत्र में पुस्तक-प्रकाशन के बाद के विज्ञापन और प्रचार की ओर इधर ही कुछ अरसे से प्रकाशकों का ध्यान जाने लगा है, प्रकाशन के पूर्व प्रचार-प्रसार की बात तो दूर की है। पुस्तक के विषयानुसार तथा उसके सम्भावित खरीदारों की सूचियों के अनुसार उचित पतों पर उसकी पूर्व-सूचना भेज देनी चाहिए। इस प्रथम सूचना में पाण्डुलिपि तथा लेखक का संक्षिप्त परिचय दिया जा सकता है। यह भी सम्भव है कि अन्ततः पुस्तक के ब्लर्ब पर दी जाने वाली सामग्री का उपयोग इसमें जाय। इस सूचना में अनुमानित मूल्य का उल्लेख भी किया जा सकता है, लेकिन वह आवश्यक नहीं है। थोक पुस्तक-विक्रेताओं, परचून पुस्तक-विक्रेताओं तथा पुस्तकालयों को भी यह पूर्व-सूचना जानी चाहिए।

यदि प्रकाशक पुस्तक-उत्पादन की विभिन्न प्रक्रियाओं और उसके विविध निर्माण-स्तरों में नियमन ला सकें तो अन्ततः पुस्तकों का प्रचार और विज्ञापन अपेक्षाकृत सुगम और अधिक सफल हो सकता है। विदेशों में पुस्तकों के डस्ट जैकेट उनके मुद्रण से बहुत पहले तैयार हो जाते हैं। ब्लर्ब में पुस्तक के परिचय सहित पुस्तक-विक्रेताओं को भेजे जा सकने वाले ये डस्ट जैकेट अत्यन्त उपयोगी सिद्ध होते हैं। लेकिन पुस्तक के प्रकाशन से पूर्व इन जैकेटों का मुद्रण इस बात की अपेक्षा रखता है कि प्रकाशक ने इस बात का सही-सही अनुमान लगा लिया हो कि कोई पाण्डुलिपि छपकर कितने पृष्ठों में समायगी और प्रकाशक ने उसकी जिल्दबन्दी तथा उसके अन्तिम रूप का निश्चय भी कर लिया हो। डस्ट जैकेट में दिये गए परिचय को पढ़कर तथा पुस्तक की रूप-सज्जा (गेट-अप) को देखकर पुस्तक-विक्रेता को अपनी माँग का अन्दाज़ा लगाने में कहीं अधिक सहायता मिल सकती है।

हमारे यहाँ पुस्तक के मुद्रित होते ही उसे बेचना आरम्भ कर देने का रिवाज है। यदि पुस्तक उसके वास्तविक प्रकाशन की तारीख को देश-भर के पुस्तक-विक्रेताओं से मिल पाना सम्भव किया जा सके तो विज्ञापन के साधनों का अधिक प्रभावोत्पादक तरीकों से प्रयोग किया जा सकता है। प्रकाशन से पहले पुस्तक का प्रारूप (डमी कापी) थोक विक्रेताओं को भेजना लाभप्रद होगा। प्रकाशन से पूर्व या प्रकाशन-तिथि के साथ-साथ यदि पुस्तक की समीक्षाएँ भी देश के प्रमुख पत्रों में छप सकें तो पुस्तक की बिक्री पर अच्छा असर पड़ सकता है। लेकिन ये बातें तभी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

डॉ० जगदीश नारायण त्रिपाठी

एम० ए० (हिन्दी), एम० ए० (अँग्रेजी), पी-एच० डी०

कृत

महत्त्वपूर्ण आगामी प्रकाशन

१. आधुनिक हिन्दी-कविता में अलंकार-विधान १०.००

इस पुस्तक में छायावादी, प्रगति-प्रयोगवादी कविता का आलंकारिक दृष्टिकोण से हिन्दी-जगत् में प्रथम बार महत्त्वपूर्ण मूल्यांकन प्रस्तुत किया गया है। (प्रेस में)

२. वाणी-विभूषण ५.००

इसमें पौर्वात्य और पाश्चात्य अलंकारों का शास्त्रीय विवेचन प्रस्तुत किया गया है। इसके अतिरिक्त इसकी प्रमुख विशेषता यह है कि अलंकारों के उदाहरणों का चयन आधुनिक हिन्दी-कविता से किया गया है। (प्रेस में)

३. समीक्षात्मक निबन्ध ८.००

यह हिन्दी की उच्च कक्षाओं के लिये विचारणीय पुष्कला सामग्री प्रदान करने वाले उच्चकोटि के निबन्धों का संग्रह है। (प्रेस में)

४. भारतीय काव्य-सम्प्रदाय १.००

इस पुस्तक में काव्य की आत्मा से सम्बन्धित भारतीय काव्य-शास्त्रियों के अभिमतों की संक्षिप्त किन्तु सुस्पष्ट समीक्षा की गई है। (प्रकाशित)

५. नाटककार प्रसाद और उनका अजातशत्रु ३.००

इसमें प्रसाद की नाट्यकला की सामान्य विशेषताओं पर विचार करते हुए अजातशत्रु का सर्वाङ्गीण अध्ययन किया गया है। (प्रकाशित)

प्रकाशक

भारती-प्रतिष्ठान

१०८/१२१, पी० रोड, कानपुर

सम्भव हैं जब कि प्रकाशक अपने कार्यों में अधिक नियमितता लाएँ। पत्रों से समय पर समीक्षा करने का सहयोग प्रकाशक को उचित परिमाण में शायद तभी मिल सकता है जब कि वे उनमें नियमित रूप से विज्ञापन भी देने लगें, तथा पत्रों के सम्पादकों को समय पर की जाने वाली समीक्षाओं का महत्त्व समझा सकें। पुस्तक-प्रकाशन के महीनों बाद की जाने वाली समीक्षाओं से प्रकाशकों को किंचिद् प्रतिष्ठा-प्राप्ति के अतिरिक्त विज्ञापन-सम्बन्धी कोई लाभ नहीं पहुँचता। विदेशों में प्रकाशन से पूर्व की जाने वाली समीक्षाएँ प्रकाशकों के लिए विज्ञापन का एक महत्त्वपूर्ण साधन बन चुकी हैं।

पुस्तक-विक्रेताओं के पास नियमित रूप से सूचीपत्र भेजे जाने चाहिएँ, इसका प्रभाव तो हिन्दी-प्रकाशकों को मालूम हो चुका है, यह जान लेने के बाद भी कि बहुत कम पुस्तक-विक्रेता इन सूचीपत्रों का सही इस्तेमाल करते हैं। लेकिन पुस्तक-विक्रेताओं की सूचीपत्रों के प्रति इस उपेक्षा दृष्टि में कुछ अपराध प्रकाशकों का भी है। आकर्षणहीन, बिना रुचिविशेष के छपा हुआ एक ही सूचीपत्र बार-बार पाकर कौन उसे रद्दी की टोकरी में न फेंक देगा! यदि प्रकाशक वर्ष में चार सूचीपत्र निकालें, जिनमें पिछले तीन मास में प्रकाशित होने वाली पुस्तकों का परिचय, पृष्ठ-संख्या, आकार और मूल्य दिया गया हो और आगामी तीन मास में आनेवाले प्रकाशनों की सूचना हो, और अपने समस्त प्रकाशनों का एक बड़ा सूचीपत्र वर्ष के अन्त में एक बार पुस्तक-विक्रेताओं के पास भेज दिया करें तो अधिक उपयोगी हो। प्रत्येक नये प्रकाशन के सम्बन्ध में एक संक्षिप्त सूचना, जो प्रकाशन के पूर्व प्रचारित की जानी चाहिए, तिमाही सूचीपत्रों में, यदि उस पुस्तक के नाम का समावेश न हुआ हो तो, उनमें चिपकाई जा सकती है।

महत्त्व की गवेषणात्मक पुस्तकों के लिए विशेष परिचय-पुस्तिकाएँ प्रकाशित की जा सकती हैं। सामान्यतया कथा-साहित्य या कविता, नाटक आदि के लिए इस प्रकार की परिचय-पुस्तिकाओं का उपयोग सार्थक नहीं होगा; लेकिन आलोचनात्मक, शोधपूर्ण और सन्दर्भ-ग्रन्थों के लिए तथा वैज्ञानिक व तकनीकी साहित्य के लिए इस प्रकार की पुस्तिकाएँ छापकर इन विषयों में विशेष रुचि रखने वाले पाठकों और पुस्तक-विक्रेताओं को भेजी जा सकती हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विभिन्न विषयों में रुचि रखने वाले पाठकों, प्राध्यापकों और पुस्तकालयों आदि की सूचियाँ बनाकर रखना और उन्हें निरन्तर शुद्ध करते रहना किसी भी प्रकाशन-संस्था के लिए एक परम उपयोगी कार्य है। लेकिन शुद्ध और अद्यतन सूचियों से जितना लाभ हो सकता है, उसी अनुपात में नाम व पतों की अशुद्ध और पुरानी सूचियों से हानि भी सम्भव है। प्रचार आदि के इन सम्बन्धित कार्यों के लिए अलग से एक जिम्मेवार व्यक्ति इसलिए प्रायः सभी अच्छे प्रकाशकों को अपने यहाँ नियुक्त रखना चाहिए।

पुस्तकालयों और पाठकों को भेजी जाने वाली सूचनाओं में इस बात का उल्लेख सम्भवतः समीचीन होगा कि पुस्तकें उनके समीपस्थ अच्छे पुस्तक-विक्रेताओं से प्राप्य हैं, और अपने प्रकाशनों के बारे में इस प्रकार प्रचार करके वास्तव में प्रकाशक पुस्तक-विक्रेता की ही सहायता करता है। कई ऐसे प्रकाशन होने भी सम्भव हैं जिनका आर्डर भेजने में पुस्तक-विक्रेता संकोच करे—इस दिशा में प्रकाशक हाथ-पर-हाथ धरकर नहीं बैठ सकता। सामान्य पुस्तक-विक्रेता प्रायः तब तक असामान्य विषयों, विचारों एवं सामग्री की पुस्तकों की माँग नहीं करते जब तक कि उनकी माँग ग्राहक न करने लगें। उस माँग को भरसक पैदा करने का प्रयत्न करना प्रकाशक का उत्तरदायित्व है।

पुस्तक-विक्रेताओं की दूकानों में प्रदर्शन के लिए प्रकाशक अपनी महत्त्वपूर्ण पुस्तकों के बारे में पोस्टर और प्लेकर्ड आदि बनाकर भी भेज सकते हैं, लेकिन इस प्रकार की सामग्री उन्हीं विक्रेताओं को भेजना सार्थक होगा जिनके पास इनका सदुपयोग करने के लिए स्थान और रुचि हो। विज्ञापन का यह साधन केवल उन्हीं प्रकाशनों के लिए उपयुक्त सिद्ध हो सकता है जिनमें अतीव लोकप्रिय हो जाने की सम्भावना आँकी जाय।

सूचियों और पत्र-व्यवहार के अतिरिक्त किसी प्रकाशन-संस्था के लिए पुस्तकों के प्रचार का माध्यम उस संस्था के प्रतिनिधि करते हैं जो अपने-अपने क्षेत्रों के पुस्तक-विक्रेताओं से घनिष्ठ सम्पर्क रखते हैं। वर्ष में लगभग चार बार तो प्रत्येक पुस्तक-विक्रेता के पास इन प्रतिनिधियों को जाना ही चाहिए। हमारे देश में ही नहीं, विदेशों में भी यह देखा गया है कि पुस्तक-विक्रेता अपने बड़े आर्डर प्रका-

रत्न-राशि

दिल्ली विश्वविद्यालय के हिन्दी विभागाध्यक्ष
आलोचक प्रवर डॉ० नगेन्द्र
की आलोचना में काव्यानन्द देने वाली अनुपम कृतियाँ

भारतीय काव्य-शास्त्र की परम्परा	१६·०
देव और उनकी कविता	६·५०
रीति काव्य की भूमिका	५·५०
विचार और विश्लेषण	५·५०
विचार और विवेचन	४·५०
विचार और अनुभूति	४·५०
सियारामशरण गुप्त	५·५०
आधुनिक हिन्दी कविता की मुख्य प्रवृत्तियाँ	४·०

दिल्ली विश्वविद्यालय के हिन्दी प्राध्यापक
डॉ० विजयेन्द्र स्नातक की बहुप्रशंसित,
पुरस्कृत एवं अभिनन्दित देन

राधावल्लभ सम्प्रदाय : सिद्धान्त और साहित्य	१८·०
समीक्षात्मक निबन्ध	५·५०

अन्य आलोचनाञ्जलियाँ

मैथिलीशरण गुप्त : कवि और भारतीय संस्कृति के आख्याता : डॉ० उमाकान्त	१५·०
गुप्तजी की काव्य साधना	८·०
धूलि धूसरित मणियां : दमयन्ती एम० ए०, सीता बी० ए०	१५.०
आधुनिक हिन्दी कविता में प्रेम और सौन्दर्य : डॉ० रामेश्वर लाल खंडेलवाल	८·०
कविता में प्रकृति चित्रण ,,	४·०
हिन्दी साहित्य रत्नाकर : डॉ० विमलकुमार जैन	५·०
हिन्दी के अर्वाचीन रत्न ,,	७·०
जैनेन्द्र और उनके उपन्यास : रघुनाथ शरण आसानी	५·०

नेशनल पब्लिशिंग हाउस
९६, दरियागंज, दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शकों के प्रतिनिधियों की प्रतीक्षा में ही रोके रखते हैं। एक अच्छा प्रतिनिधि पुस्तक-विक्रेता को अपना आर्डर बनाने में बहुत सहायक सिद्ध हो सकता है और वह उसका इतना विश्वास भी प्राप्त कर सकता है कि आर्डर बनाने का कुल कार्य उसी पर छोड़ दे। अच्छा प्रतिनिधि कभी यह कोशिश नहीं करता कि पुस्तक-विक्रेता के सामर्थ्य की सीमा से बढ़कर उससे आर्डर प्राप्त कर ले; या उसे अपनी संस्था की न बिकने वाली पुस्तकें जड़ दे या कम बिकने वाली पुस्तकों की अधिक प्रतियां मँगवाने के लिए मनवा ले; क्योंकि वह जानता है कि ऐसा वह एक बार ही कर पायगा! पुस्तक-विक्रेता को विश्वास होना चाहिए कि अमुक प्रकाशक का प्रतिनिधि उसका हितैषी और मित्र है, और यदि कभी वह आर्डर देते वक्त भूल भी करने लगेगा तो प्रतिनिधि उसे टोक देगा।

प्रकाशकों के प्रतिनिधियों को अपनी संस्था के सब प्रकाशनों से सुपरिचित होना आवश्यक है। ललित साहित्य के अपने यहाँ के नये प्रकाशनों को उसे पढ़ते भी रहना चाहिए, ताकि उनके बारे में वह पुस्तक-विक्रेता से साधिकार बातचीत कर सके। अन्य विषयों की पुस्तकों की वस्तुगत सामग्री की रूपरेखा से परिचित होना भी उसके कार्य को आसान बनायगा। इन बातों के अतिरिक्त प्रतिनिधि को व्यवहार-कुशल होने के साथ-साथ अपनी संस्था के सम्मान के अनुकूल आचरण करने का ढंग आना भी आवश्यक है। पुस्तक-विक्रेताओं के माध्यम से पाठकों की जो प्रतिक्रिया अपनी संस्था के प्रकाशनों के बारे में सुनने में आती है, प्रतिनिधि उसे भी अपने कार्यालय तक पहुँचाते हैं। विदेशों में तो नई पाण्डुलिपियों के विषय में भी प्रकाशकों द्वारा अपने प्रतिनिधियों की राय लेने की प्रथा है, क्योंकि ग्राहकों की सम्भव प्रतिक्रिया का उन्हें अपेक्षाकृत अधिक ज्ञान होता है। हिन्दी के प्रकाशन-क्षेत्र में अभी ऐसे सजग और विवेक शील प्रतिनिधियों की संख्या कम है।

पुस्तकों के क्षेत्रीय विज्ञापन में प्रकाशक अच्छे पुस्तक-विक्रेताओं को सहयोग दे सकते हैं। विदेशों में ऐसे परीक्षण किये गए हैं और वे सफल भी हुए हैं। प्रकाशक का नाम दिये बिना पुस्तक-विक्रेता किसी स्थानीय पत्र में एक या एकाधिक पुस्तक-विशेष का विज्ञापन देता है और विज्ञापन का खर्च प्रकाशक और पुस्तक-विक्रेता आधा-आधा बाँट लेते हैं।

विज्ञापन और प्रचार-प्रसार के इन सब तरीकों को अपनाने के लिए प्रकाशकों को व्यय का पूर्वनिर्धारित लेखा-जोखा बना लेना चाहिए। हिन्दी के प्रकाशकों में शायद बहुत ही कम प्रकाशक प्रचार के खर्च की मद् को पुस्तक की लागत में जोड़ते हों। लागत में कागज, छपाई, जिल्दबन्दी, डिजाइन और ब्लाक आदि के खर्च को ही प्रायः जोड़ने का रिवाज है। इस स्थिति का पुस्तकों की बिक्री पर बुरा प्रभाव पड़ता है। विदेशों में पुस्तकों के प्रचार पर लगभग पुस्तक के मूल्य का दस प्रतिशत अंश व्यय किया जाता है, लेकिन इस प्रकार व्यय के अनुपात का कोई आदर्श मानदण्ड तय नहीं किया जा सकता। प्रत्येक पुस्तक पर उसकी अपनी प्रकृति के अनुसार प्रचार-सम्बन्धी व्यय किया जाना चाहिए; लेकिन प्रचार के इस व्यय को लागत में जोड़ने के सिद्धान्त की मान्यता आवश्यक है। पुस्तकों के बढ़े हुए मूल्य में इसका प्रभाव दिखाई पड़ेगा, लेकिन प्रचार और विज्ञापन की सहायता से बिक्री का अनुपात भी अपेक्षाकृत अवश्य बढ़ेगा, यह अनुभव सिद्ध है, और पुस्तकों की बढ़ी हुई बिक्री से उनके मूल्यों को कम रखने की सम्भावना हो सकती है।

अच्छा हो यदि 'पुस्तकें पढ़िये और खरीदकर पढ़िये' के देश-व्यापी विज्ञापन के लिए **अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ** के प्रचार-विभाग को हिन्दी के सब प्रकाशक निजी प्रकाशनों की नेट बिक्री का एक या आधा प्रतिशत अंश देना स्वीकार कर लें। आधा प्रतिशत के हिसाब से भी अनुमानतः वर्ष में १५ से २० हजार रुपये एकत्रित किये जा सकते हैं और मैं समझता हूँ कि केन्द्रीय शिक्षा मन्त्रालय एवं सांस्कृतिक विषयों के मन्त्रालय से उतनी ही रकम की माँग इस विज्ञापन-कोश के लिए की जा सकती है। देश-भर के पत्रों में सुनियोजित विज्ञापन और प्रचार का प्रभाव पुस्तकों की अधिकाधिक बिक्री के रूप में अवश्य दिखाई पड़ेगा और यदि पुस्तक की कम बिक्री से हम प्रकाशक आज चिन्तित हैं, देश का केन्द्रीय शिक्षा मन्त्रालय और सांस्कृतिक विषयों का मन्त्रालय तथा देश के शिक्षाविद् भी चिन्तित हैं, तो हमें इस ओर कदम उठाने के प्रश्न पर गम्भीरतापूर्वक सोच-विचार करना चाहिए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अब इस वार्ता की समस्या के दूसरे पक्ष पर आयें। थोक पुस्तक-विक्रेता प्रकाशक तथा सामान्य पुस्तक-विक्रेताओं के बीच की एक महत्त्वपूर्ण कड़ी है। वास्तव में संसार का शायद कोई भी व्यापार सीधा उत्पादक और उसके द्वारा उत्पादित वस्तुओं के ग्राहकों के बीच नहीं होता। यह ठीक है कि पुस्तकों के पाठक अन्ततः अपनी रुचि की पुस्तकें सामान्य पुस्तक-विक्रेताओं से ख़रीदते हैं। जैसे-जैसे प्रकाशन और पुस्तक-व्यवसाय का क्षेत्र बढ़ता जाता है, देश में प्रकाशकों और पुस्तक-विक्रेताओं की संख्या भी बढ़ती जा रही है। अनुभव से देखा गया है कि प्रकाशकों के लिए देश-भर के समस्त छोटे-छोटे पुस्तक-विक्रेताओं से सम्बन्ध रखना, उनसे हिसाब रखने के अलग-अलग खाते खोलना और उनसे नियमित रूप से पत्र-व्यवहार करते रहना इनमें से अनेक के साथ होने वाले व्यापार से प्राप्य लाभ के अनुपात में काफी मंहगा सिद्ध होता है। इसी प्रकार प्रत्येक समय साधारण पुस्तक-विक्रेता किसी एक प्रकाशक की इतनी पुस्तकें मंगवाने की स्थिति में नहीं होते कि वह उन्हें पाने के खर्च के अनुपात में उन पुस्तकों से उचित लाभ प्राप्त कर सकें। हमारे यहाँ अधिक संख्या तो ऐसे पुस्तक-विक्रेताओं की है जो एक समय में किसी पुस्तक की एक-एक या दो-दो प्रतियों से अधिक का आर्डर नहीं देते। इस प्रकार के आर्डरों की पूर्ति तथा प्राप्ति प्रकाशकों तथा पुस्तक-विक्रेताओं दोनों के लिए लाभप्रद नहीं होती और उन्नत पुस्तक-व्यवसाय वाले सब देशों में आज पुस्तकों के थोक वितरण की आवश्यकता और अनिवार्यता स्वीकार की जा चुकी है। हिन्दी क्षेत्र में अभी बहुत कम प्रकाशकों के यहाँ हिसाब इतना बारीकी से रखा जाता है कि वे पुस्तकों की एक-एक प्रति के आर्डरों की पूर्ति पर होने वाले आय और व्यय का विश्लेषण कर सकें। लेकिन जहाँ इस हिसाब की जाँच-पड़ताल की सम्भावनाएँ हैं वहाँ अन्य व्यापारों की तरह छोटे-छोटे खातों की अलाभकर प्रकृति को समझा जा चुका है। साधारण स्तर पर व्यवसाय करने वाले पुस्तक-विक्रेताओं के लिए भी सैकड़ों प्रकाशकों से पत्र-व्यवहार करना और उनके प्रकाशनों के छोटे-छोटे आर्डर देना अन्ततः लाभकर नहीं रहता; यदि किसी एक ही थोक विक्रेता के यहाँ से विभिन्न प्रकाशकों की पुस्तकें उचित कमीशन पर— अर्थात् प्रकाशकीय

हंस

साहित्य संकलन

सम्पादक
बालकृष्ण राव
अमृतराय

१

'हंस' साहित्य संकलन १ इतना सुन्दर निकला है, उसकी सामग्री इतनी बेजोड़ है कि सभी उसे देखकर हैरान हुए और हमारे पास देश के कोने-कोने से बधाई के पत्र आये हैं। प्रगतिशील साहित्य-आन्दोलन, जिसे दुश्मनों ने मरा हुआ समझ लिया था, यकबयक फिर इस शान के साथ ज़िन्दा हो उठेगा, इसका उन्हें सपने में भी क़यास न था।

पुराने लोगों में सुमित्रानन्दन पन्त, महादेवी वर्मा और हजारीप्रसाद द्विवेदी से लेकर नयों में कमलेश्वर, मार्कण्डेय, मोहन राकेश, श्रीकान्त वर्मा तक सभी इस संकलन के पन्नों में बैठे हुए हैं।

साहित्यकार की आस्था लेखमाला असाधारण महत्त्व की वस्तु है। कविताएँ, भ्रमण कहानी, कहानियाँ, व्यंग्य कृतियाँ, इण्टरव्यू, एकांकी, सम्पूर्ण उपन्यास इस अंक के विशेष अंग हैं।

डिमाई १/८ ● छपाई, रूप-सज्जा प्रथम श्रेणी की
४२५ पृष्ठ ● मूल्य रु० ६.५०

हंस प्रकाशन

९३, ज़ीरो रोड, इलाहाबाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथवा प्रकाशकीय से कुछ ही कम कमीशन पर—मिल सकें तो पुस्तक-विक्रेता अपने बहुत से समय और व्यय को बचा सकता है।

हमारे देश में प्रकाशकों और पुस्तक-विक्रेताओं की संख्या के प्रामाणिक आँकड़े प्राप्त नहीं हैं इसलिए हम ब्रिटेन की स्थिति पर विचार करें। 'राइटर्स एण्ड आर्टिस्ट्स ईयर बुक' के अनुसार ब्रिटेन में ४५० से अधिक प्रकाशक हैं और ७००० के लगभग पुस्तक-विक्रेता और पुस्तकालय, तथा ४५,००० पत्र-पत्रिकाएँ बेचने वाले, जिनमें से कुछ पुस्तकें बेचने का कार्य भी करते हैं। यह ठीक है कि ब्रिटेन में लगभग सौ प्रकाशक ही विशेष रूप से प्रकाशन-सम्बन्धी सक्रियताओं में संलग्न हैं लेकिन क्या इन सब पुस्तक-विक्रेताओं और प्रकाशकों द्वारा परस्पर पत्र-व्यवहार करना और लाभकर व्यापार-सम्बन्ध बनाने सम्भव हैं?

इस प्रकार के प्रयत्नों को आर्थिक दृष्टि से हानिकर समझते हुए ब्रिटेन तथा अन्य देशों के प्रकाशक और पुस्तक-विक्रेता पुस्तकों का थोक वितरण करने वाली संस्थाओं की सहायता लेते हैं। अमरीका में प्रकाशित पुस्तकों की लगभग ३५ प्रतिशत बिक्री थोक पुस्तक-विक्रेताओं द्वारा की जाती है।

पुस्तकों का थोक वितरण करने वाली संस्थाओं के दो रूप हो सकते हैं: एक तो पुस्तक-व्यवसायियों द्वारा सहकारी आधार पर आयोजित संस्थाएँ और दूसरी व्यक्तिगत व्यापारिक संस्थाएँ। संसार में पुस्तकों की सबसे अधिक संख्या प्रकाशित करने वाले देशों—ब्रिटेन, जापान, जर्मनी, अमरीका, फ्रांस और इटली—में व्यक्तिगत संस्थाएँ ही थोक वितरण का कार्य निभाती हैं। डेनमार्क, हॉलैंड, नॉर्वे, स्विट्ज़रलैंड, फिनलैंड और स्वीडन जैसे छोटे देशों में पुस्तकों का थोक वितरण सहकारी आधार पर होता है। दोनों प्रकार की प्रणालियों का मूल आधार वितरक संस्था को दी जाने वाली विशेष सुविधाएँ हैं—अतिरिक्त कमीशन की तथा कहीं-कहीं स्टॉक के बिक्री अथवा वापसी आधार पर होने की। यूरोप के अपेक्षाकृत छोटे देशों में, जहाँ छपने वाली पुस्तकों की संख्या इतनी अधिक तो नहीं है लेकिन जहाँ पुस्तक-व्यवसाय का संगठन बहुत मज़बूत हो चुका है, सहकारी थोक वितरण खूब सफल हुआ है। हॉलैंड के पुस्तक-व्यवसायियों की केन्द्रीय वितरण संस्था—सेण्ट्रल बोइखुई—को वितरण के सहकारी आधार का आदर्श माना गया है। यह संस्था पुस्तकों के प्रकाशकों से प्राप्त स्टॉक में से पुस्तक-बिक्री अथवा वापसी के आधार पर विक्रेताओं के आर्डरों की पूर्ति करती है। संस्था को स्कूली पुस्तकों पर २० प्रतिशत तथा जनरल पुस्तकों पर २५ प्रतिशत के सामान्य कमीशन के अतिरिक्त ६ प्रतिशत का अतिरिक्त कमीशन प्रकाशकों से मिलता है। संस्था के सदस्य-पुस्तक-विक्रेताओं को प्रकाशकीय कमीशन से ३ प्रतिशत कम कमीशन दिया जाता है और गैर सदस्यों को ४ प्रतिशत कम। इस प्रकार इस संस्था को थोक वितरण के आयोजन के व्ययों के लिए १२ से १३ प्रतिशत लाभ मिल जाता है, जो पर्याप्त पाया गया है। हॉलैंड में पुस्तक-व्यवसायियों की इसीसे सम्बद्ध एक दूसरी संस्था प्रकाशकों से प्राप्त पुस्तकों के पार्सलों को विभिन्न स्थानों पर, सबसे कम खर्च के तरीकों से, भिजवाने का प्रबन्ध करती है। इस व्यवस्था के लिए यह संस्था सदस्यों से लगभग २७ रुपये का वार्षिक शुल्क तथा प्रत्येक किलोग्राम वज़न के लिए लगभग १५० नये

एक महत्त्वपूर्ण प्रकाशन

काव्य में उदात्त तत्त्व

(आचार्य लोंगिनुस के काव्य-सिद्धान्तों का विवेचन और 'पेरि इप्सुस' का हिन्दी-अनुवाद)

भूमिका-लेखक
डॉ० नगेन्द्र, एम. ए., डी. लिट्

अनुवादक
डॉ० नगेन्द्र
श्री नेमिचन्द्र जैन

मूल्य—३.५० रु०

राजपाल एण्ड सन्ज़,
कश्मीरी गेट, दिल्ली-६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पैसे वसूल करती है। पुस्तक-विक्रेता से भाड़ा, पैकिंग तथा लगभग ९ नये पैसे प्रति पार्सल अलग से वसूले जाते हैं।

थोक वितरण की व्यक्तिगत व्यापारिक संस्थाओं के प्रति संसार में शायद कहीं भी प्रकाशक-वर्ग इतनी उदारता-पूर्ण दृष्टि नहीं अपना सका है जितनी कि सहकारी आधार पर आयोजित वितरण संस्थाओं की ओर। लेकिन उन बड़े-बड़े देशों में, जहाँ पुस्तक-प्रकाशन भी बड़ी संख्या में होता हो, सहकारी आधार पर वितरण की संस्थाएँ आयोजित करना सरल नहीं पाया गया है।

देखा गया है कि व्यक्तिगत संस्थाएँ अपने व्यवसाय से सम्बन्धित खर्चों को तब तक पूरा नहीं कर पातीं और तब तक लाभ नहीं कमा सकतीं जब तक कि वे स्टेशनरी और पत्र-पत्रिकाएँ अथवा अन्य ऐसी ही चीजें बेचने का धन्धा भी न करती हों, अन्यथा जब तक कि उनके पास पुस्तकों की परचून बिक्री के निजी माध्यम न हों। ब्रिटेन में इन थोक विक्रेताओं में से उच्चकोटि की व्यक्तिगत संस्थाओं को एक तिहाई के सामान्य कमीशन से १२½ प्रतिशत अतिरिक्त कमीशन मिलता है, कुछ को १० और कुछ तो ७½ अथवा ५ प्रतिशत के अतिरिक्त कमीशन पर ही काम करती हैं। 'यूनेस्को' द्वारा प्रकाशित पुस्तक 'बुक्स फ़ॉर ऑल' में श्री आर० ई० बार्कर ने लिखा है कि "कमीशन का यह अतिरिक्त लाभांश पुस्तकों का पर्याप्त स्टाक रखने वाले थोक विक्रेताओं के लिए, जो मुख्यतः पुस्तकों के व्यापार में ही संलग्न हों, आर्थिक दृष्टि से नितान्त अपर्याप्त होता है।" ब्रिटेन में पुस्तकों के थोक वितरण की एक बड़ी निजी संस्था—सिंपकिन मार्शल—की स्थापना १८वीं शती के अन्त में हुई थी और १९५५ में अपर्याप्त लाभांश के कारण उसे अपना काम बन्द करना पड़ा। गत महायुद्ध के समय तथा उसके बाद व्यापार चलाने के सब खर्चों में बहुत वृद्धि हो गई थी, लेकिन प्रकाशकों ने उसी अनुपात में इस संस्था को दिये जाने वाले अतिरिक्त कमीशन में वृद्धि नहीं की और अन्त में यहाँ के प्रकाशकों और पुस्तक-विक्रेताओं—दोनों—को समान रूप से उपयोगी इस संस्था को थोक वितरण के कार्य-क्षेत्र से बाहर हो जाना पड़ा। यह संस्था, और वैसी ही अन्य थोक-वितरण संस्थाएँ, सम्पूर्ण प्रकाशकीय कमीशन पर पुस्तकें नहीं बेचतीं; प्रायः २५ प्रतिशत पर ही जनरल पुस्तकों की बिक्री इनके द्वारा की जाती है। इसके बावजूद भी प्राप्य लाभांश को पर्याप्त नहीं पाया गया। मि० बार्कर ब्रिटेन में थोक वितरण की समस्या पर विचार करते हुए इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि "शायद अन्त में प्रकाशक और पुस्तक-विक्रेता दोनों को हॉलैंड के पुस्तक-व्यवसायियों के समान कुछ त्याग और बलिदान उस प्रकार की व्यावसायिक सेवाओं की प्राप्ति के लिए करना पड़ेगा जिनके बिना कि व्यवसाय वास्तव में सुनियोजित नहीं हो सकता।"

१९५४ में अमेरिका के ६ बड़े प्रकाशकों ने व्यवसाय के सुसंगठन पर सलाह-मशवरा देने वाली एक बड़ी फ़र्म को अपने से संबंधित हिसाबों के ब्यौरे सौंपे कि पुस्तकों के अलग-अलग वितरण पर होने वाले व्ययों को कम करने के ढंग सुझाये जायँ। इस छान-बीन के परिणामस्वरूप इनमें से प्रमुखतम प्रकाशक ने कहा कि "व्यक्तिगत रूप से इन भारी खर्चों से बचने का निदान पुस्तकों की थोक-वितरण प्रणाली के विस्तार में ही खोजना होगा।"

भारत में ५-६ वर्ष से ही हिन्दी की पुस्तकों के थोक-वितरण का कार्य प्रारम्भ हुआ है। शायद ही किसी अन्य भारतीय भाषा में (विधान के अन्तर्गत होने के कारण जिस में अंग्रेजी भी सम्मिलित की जा सकती है) प्रकाशित पुस्तकों के थोक वितरण की उतनी व्यवस्था हो जितनी कि हिन्दी में। हिन्दी के प्रकाशकों के इस सर्वविदित अनुभव के बावजूद, कि हिन्दी में अच्छी पुस्तकों की बिक्री कम है, मैं एक थोक वितरण संस्था की बात जानता हूँ कि वह एक वर्ष में हिन्दी की केवल अच्छी पुस्तकों की १५-१६ लाख रुपये की बिक्री करती है। हिन्दी-क्षेत्र में इस समय कई-एक संस्थाएँ थोक वितरण के महत्त्वपूर्ण कार्य को प्रायः प्रकाशकों से अपर्याप्त सहयोग के बावजूद भी प्रकाशकों एवं पुस्तक-विक्रेताओं के हितों में सम्पन्न कर रही हैं। प्रतिष्ठित और पुराने प्रकाशक प्रायः ५ से ८½ प्रतिशत अतिरिक्त कमीशन ही इन थोक वितरण संस्थाओं को देने को राजी होते हैं, जबकि कुछ दूसरों से १५ प्रतिशत तक भी मिल जाता है। फलाकर अतिरिक्त कमीशन की औसत ९ या १० प्रतिशत बैठती है जबकि एक सुव्यवस्थित थोक वित-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ण संस्था द्वारा की गई प्रति १०० रुपये की बिक्री पर १५ से १७ रुपये का खर्च कूता गया है। यदि हिन्दी में आज थोक वितरण की कतिपय संस्थाएँ पुस्तक-व्यवसाय के लिए अत्यन्त उपयोगी इस कार्य से अर्थहानि के कारण विमुख नहीं हुई तो केवल अपने प्रकाशनों से होने वाले लाभ के बल पर ही—सौभाग्य से ये सभी वितरण संस्थाएँ स्वयं प्रकाशक भी हैं।

अब हम देखें कि पुस्तकों की एक थोक वितरण संस्था से प्रकाशक और पुस्तक-विक्रेता को क्या-क्या अपेक्षा होती है। प्रकाशकों के लिए देश के कोने-कोने में फैले हुए पुस्तक-विक्रेताओं से सीधा सम्पर्क रखना न तो सम्भव होता है और न आर्थिक दृष्टि से लाभप्रद। थोक वितरक ऐसे पुस्तक-विक्रेताओं की माँगों की पूर्ति की ओर अपने प्रयासों का निर्देशन करते हैं जिन्हें किसी एक प्रकाशक की अधिक पुस्तकों की आवश्यकता न होकर अधिक प्रकाशकों की कम संख्या में पुस्तकों की आवश्यकता हो। थोक वितरक अपने यहाँ विभिन्न प्रकाशकों का अच्छा खासा स्टॉक सदा रखता है, चाहे उसे पुस्तकें बिक्री अथवा वापसी की शर्तों पर मिली हों अथवा वे पक्की खरीदकर रखी गई हों। उसे पुस्तक-विक्रेताओं को इस प्रकार की सूचना देने में सदा तैयार और समर्थ होना चाहिए कि कौन पुस्तक किस प्रकाशक के यहाँ से प्रकाशित हुई है, और अभी प्राप्य है या नहीं, और उसके विषय में अन्य व्यौरा क्या है। एक अच्छा थोक पुस्तक-विक्रेता प्रकाशक की भाँति पुस्तकों के प्रचार-प्रसार के लिए घुमक्कड़ प्रतिनिधियों को नियुक्त करता है और नव प्रकाशित पुस्तकों की सूचना विक्रेताओं तक नियमित रूप से पहुँचाता रहता है। प्रकाशन-व्यवसाय के लाभ के न रहते हुए भी उसे पुस्तकों के प्रचार के लिए प्रायः वही साधन जुटाने पड़ते हैं जो कि किसी प्रकाशक को; और प्रचार के इन साधनों का व्यय उसे अत्यधिक मात्रा में बिक्री करके और पूँजी के वर्ष में शीघ्रतर प्रत्यावर्तन से निकालना पड़ता है। छोटे पुस्तक-विक्रेता मुख्यतः उसके अनुष्ठान पर अपने व्यापार को आधारित करते हैं और छोटे व बड़े दोनों प्रकार के प्रकाशकों को उसका सहयोग आवश्यक रूप से अपेक्षित होता है। कम संख्या में प्रकाशन करने वाले कई प्रकाशक तो विदेशों में, और अपने देश में भी, इन्हीं थोक वितरकों पर किसी पुस्तक के कुल वितरण का दायित्व डालकर निश्चिन्त हो जाते हैं।

प्रकाशकों की भाँति थोक वितरक भी पुस्तक-विक्रेताओं से पुस्तकों की बिक्री की प्रतियोगिता में नहीं पड़ता। यदि वह इस प्रतियोगिता में अधिक कमीशन आदि देने के तरीकों को अपनाकर पड़ जाय तो शायद वह सफल हो तो सकेगा लेकिन थोक-वितरण के व्यापार में उसे फिर पुस्तक-विक्रेताओं के सहयोग की आशा नहीं रखनी चाहिए। थोक वितरक की मुख्य दिलचस्पी पुस्तकों की थोक बिक्री में ही होनी चाहिए; यदि परचून बिक्री की ओर वह झुकेगा तो उसे अपने व्यावसायिक संगठन को अन्ततः बदलना पड़ेगा। थोक और परचून व्यवसाय के संगठन के कार्यकर्त्ताओं के दृष्टिकोणों में, प्रचारित सूचीपत्रों के संयोजन आदि में, दूकान या कार्यालय में पुस्तकों को रखने और सजाने के ढंग में और अन्य अनेक पहलुओं में मौलिक भेद होते हैं और सफलतापूर्वक दोनों कार्य एक ही संस्था, एक ही स्थान से नहीं कर सकती। ब्रिटेन में इस समय पुस्तकों के थोक वितरण की एक बड़ी संस्था डब्ल्यू० एच० स्मिथ की है—यह संस्था परचून बिक्री के कार्य में भी अत्यन्त सफल हुई है; लेकिन परचून बिक्री की इसकी एक हज़ार के लगभग दूकानें कतई थोक-बिक्री नहीं करतीं। मुख्यतः इन्हीं परचून की दूकानों से प्राप्त लाभ पर डब्ल्यू० एच० स्मिथ द्वारा थोक वितरण का कार्य सम्पन्न किया जा रहा है जैसे कि हिन्दी में मुख्यतः अपने प्रकाशन से प्राप्य लाभ पर कुछ संस्थाएँ थोक वितरण के कार्य को चला रही हैं।

हिन्दी के प्रकाशक यदि पुस्तक-विक्रय की कला को और पुस्तकों के थोक वितरण की उपयोगिता और आवश्यकता को समझने लगेंगे और अधिक सहयोगपूर्ण दृष्टि अपनायेंगे तो हिन्दी पुस्तक-व्यवसाय तेज़ी से दृढ़तर और सफलतर होता चला जायगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशकीय मञ्च

अभी हाल ही में हिन्दी के कुछ प्रकाशकों ने मिलकर 'संयुक्त हिन्दी-प्रकाशक' नाम की एक संस्था हिन्दी की पुस्तकों की बिक्री पर दिये जाने वाले कमीशनों को बाँधने की दृष्टि से आयोजित की है, यद्यपि इसकी इलाहाबाद की बैठक के निर्णयों को अभी तक क्रियान्वित नहीं किया जा सका है। सबसे महत्त्वपूर्ण निर्णय पुस्तकालयों को किसी भी रूप में १२½ प्रतिशत से अधिक कमीशन न देने से सम्बन्ध रखता है।

'संयुक्त हिन्दी-प्रकाशक' के निर्णयों की प्रकाशकों एवं पुस्तक-विक्रेताओं तक सूचना पहुँचाने का कार्य किताब महल, प्रयाग के अध्यक्ष श्री श्रीनिवास अग्रवाल को सौंपा गया था। सितम्बर '५८ के अन्त में श्री अग्रवाल ने इन निर्णयों की रूपरेखा को दो परिपत्रों के रूप में प्रकाशकों तथा पुस्तक-विक्रेताओं के पास डाक द्वारा प्रेषित कर दिया।

* * *

श्री श्रीनिवास अग्रवाल अपनी संस्था किताब महल की ओर से 'तुंगश्रृंग' नाम की एक मासिक पत्रिका का सम्पादन व प्रकाशन भी करते हैं।

'तुंगश्रृंग' के अक्तूबर '५८ के अंक में किताब महल की ओर से एक निजी, नई संस्था के आयोजन की सूचना भी छपी है, जिसका नाम 'इण्डियन बुक क्लब' होगा। इस 'क्लब' का कोई भी व्यक्ति, पुस्तकालय अथवा पुस्तक-विक्रेता सदस्य हो सकता है। प्रकाशित विज्ञप्ति में किताब महल द्वारा प्रकाशित १४ पुस्तकों का नाम दिया गया है जिन्हें खरीदने पर सदस्यों को ५०% तक कमीशन दिया जायगा।

'संयुक्त हिन्दी-प्रकाशक' के निर्णयों के प्रचार के साथ-ही-साथ इसके आयोजक द्वारा इस प्रकार की विज्ञप्ति पुस्तक-विक्रेताओं, पुस्तकालयों तथा फुटकर ग्राहकों को भ्रांति में डालने वाली है और इस प्रकार के निर्णयों के कार्यान्वयन में गम्भीर सन्देह भी पैदा करती है।

* * *

किताब महल, प्रयाग की ओर से एक और भ्रामक विज्ञप्ति 'संयुक्त हिन्दी-प्रकाशक' के निर्णयों के साथ ही प्रचारित की गई है, जिससे उसे पढ़ने वाले को लगता है कि कमीशन-सम्बन्धी निर्णय करने के लिए जो प्रकाशक इलाहाबाद में इकट्ठा हुए थे, उन्हीं का वह सम्मिलित निर्णय है। संकेत किताब महल द्वारा 'बुक सेंटर' नाम की एक पुस्तक-विक्रय-संस्था के आयोजन की ओर है। इस विज्ञप्ति के शब्द हैं: "हाल ही में, पुस्तक के कमीशन के मसले को लेकर हम सदस्य लोग जब इलाहाबाद में मिले थे—हमने भी ऐसे ही एक 'पुस्तक-केन्द्र' का संगठन करने का निश्चय किया था।" प्रकाशकों से अपील की गई है कि वे इस 'पुस्तक-केन्द्र' की बिक्री और वापसी के आधार पर अपने प्रकाशनों की १२-१२ प्रतियाँ अतिरिक्त कमीशन तथा फ्री डिलिवरी की सुविधा के साथ इस 'पुस्तक-केन्द्र' को भेज दें।

बहुत-से प्रकाशकों ने **अखिल भारतीय हिन्दी-प्रकाशक संघ तथा संयुक्त हिन्दी प्रकाशक** से सम्बद्ध प्रकाशकों से इस योजना के बारे में अधिक जानकारी प्राप्त करनी चाही। अधिकारपूर्ण सूचनाओं के आधार पर यह कहा जा सकता है कि उपरोक्त दोनों संस्थाओं का किताब महल, प्रयाग के 'पुस्तक-केन्द्र' से लेशमात्र का सम्बन्ध भी नहीं है।

* * *

'इण्डियन कौंसिल ऑफ़ एग्रिकल्चरल रिसर्च' की प्रकाशन समिति ने ५ लाख रुपये की लागत से कृषि तथा पशु-विज्ञान सम्बन्धी श्रेष्ठ पाठ्य-पुस्तकों के प्रकाशन का कार्य आरम्भ करने का निर्णय किया है। पुस्तकों का मूल्य न लाभ, न हानि के आधार पर रखा जायगा।

* * *

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेखकीय मञ्च

न्यू यॉर्क की मैकमिलन कम्पनी ने उपन्यासों के लेखकों के लिए एक वार्षिक प्रतियोगिता की घोषणा की है। सर्वश्रेष्ठ उपन्यास के लेखक को ३७,५०० रुपये दिये जायँगे, जिनमें से १२,५०० रुपये पुरस्कार के होंगे तथा शेष २५,००० रुपये रायल्टी के हिसाब में अग्रिम स्वरूप समझे जायँगे। उपन्यासों की पाण्डुलिपियाँ मैकमिलन कम्पनी, ६०, फ़िफ़्थ एवेन्यू, न्यू यॉर्क-११, एन० वाई०, को ३१ मार्च, ५६ तक भेजी जानी चाहिएँ। पुरस्कार पाने वाले लेखक के नाम की घोषणा १५ मई, ५६ को कर दी जायगी। प्रतियोगिता में प्रत्येक राष्ट्र के निवासी भाग ले सकते हैं। जासूसी उपन्यासों की अतिरिक्त सब प्रकार के उपन्यास भेजे जा सकते हैं लेकिन यह आवश्यक है कि वे अंग्रेज़ी में पहले कहीं छपे न हों। पाण्डुलिपियों की शब्द-संख्या न तो ५० हज़ार से कम और न २ लाख से अधिक होनी चाहिए। पाण्डुलिपि कागज के एक तरफ़ डबल स्पेस के साथ टाइप की होनी चाहिए। पुरस्कार-प्राप्त उपन्यास के लेखक के साथ रायल्टी की दरें बाद में तय की जायँगी।

* * *

श्री प्रेमकुमार, सच्चिदानन्द, बलरामपुर होस्टल, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ के पास 'आंधी' (उपन्यास) तथा कुछ अन्य रचनाएँ प्रकाशनार्थ तैयार हैं, इच्छुक प्रकाशक उपरोक्त पते पर लिखें।

* * *

श्री प्रिंस सतीश प्रेमी, सूचित करते हैं कि उनका दूसरा कविता-संग्रह "बाहर आये न आयें" प्रकाशनार्थ तैयार है। प्रकाशन के इच्छुक सज्जन निम्न पते पर पत्रव्यवहार करें: मार्फत श्री सुरेन्द्रनाथ स्याल, मुहल्ला कानूनगो, पठानकोट।

* * *

श्री रामप्रकाश कपूर, मार्फत सत्यनारायण एण्ड कं०, बांस फाटक, वाराणसी के पास कुछ विभिन्न पाण्डुलिपियाँ प्रकाशनार्थ तैयार हैं। इच्छुक प्रकाशक लेखक से उपर्युक्त पते पर सम्पर्क स्थापित करें।

आंध्र की टेक्स्ट बुक कमेटी ने अपनी तीन-वर्षीय रिपोर्ट में कहा है कि उनके विचारार्थ भेजी गई कई पाठ्य-पुस्तकों में अध्ययन का अभाव तथा देश की बदलती राजनीतिक, सामाजिक तथा आर्थिक परिस्थितियों से अभिज्ञता देखने में आती है। अनेक में व्याकरण तथा काव्य-विन्यास जैसी भद्दी भूलों की भी भरमार रहती है, पुराने नक्शों का इस्तेमाल होता रहता है और गणित की पुस्तकों में गलत उत्तर तक छपे रहते हैं।

* * *

रायपुर के एक प्रकाशक श्री काशीप्रसाद सिन्हा ने मध्य-प्रदेश हाईकोर्ट में अपील दाखिल की है और चाहा है कि महाकोशल बोर्ड ऑफ़ सेकण्डरी एजुकेशन को १६५६ के सिलेबस में स्वीकृत पुस्तकें पढ़ाने के लिए मजबूर किया जाय। हाईकोर्ट पुस्तकों के राष्ट्रीयकरण को इससे पहले गैर-कानूनी घोषित कर चुकी है।

* * *

१६६०-६१ के सत्र से मद्रास की सरकार ने कक्षा १ से ३ तक के लिए तथा ५वीं कक्षा के लिए पाठ्यक्रम की पुस्तकों के प्रकाशन का निश्चय घोषित कर दिया है।

* * *

'विदर्भ बोर्ड ऑफ़ सेकण्डरी एजुकेशन' ने घोषणा की है कि बोर्ड को सबमिट की जाने वाली पुस्तकों की अन्तिम तारीख १५ दिसम्बर, '५८ तक बढ़ा दी गई है। प्रकाशकों को यदि २८ पाउण्ड का कागज न मिले तो वे पुस्तकें २४ पाउण्ड के कागज पर छाप सकते हैं।

* * *

गोहाटी विश्वविद्यालय ने अपना एक प्रकाशन-विभाग खोलने का निश्चय किया है जो विश्वविद्यालय की ओर से असमी भाषा की पुस्तकें प्रकाशित करेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशन-व्यवसाय का संगठन और उसकी रूपरेखा

कृष्णचन्द्र बेरी

अखिल भारतीय प्रकाशक संघ द्वारा पिछले मास दिल्ली में आयोजित सेमिनार में पढ़ा गया यह लेख व्यवसाय के व्यवस्था सम्बन्धी पहलुओं पर महत्त्वपूर्ण प्रकाश डालता है।

यह मेरा सौभाग्य है कि आपने मुझे इस विचार-गोष्ठी में "प्रकाशन-व्यवसाय का संगठन तथा उसकी रूप-रेखा" पर विचार प्रकट करने के लिए आमन्त्रित किया। मैं आपका आभारी हूँ।

हमारे देश में पुस्तक-व्यवसाय, विशेषत: हिन्दी-पुस्तक प्रकाशन-व्यवसाय का आरम्भ १९वीं सदी के प्रारम्भ से हुआ। भारतीय भाषा के अक्षरों में किताबों का छपना १८०० ई० के बाद से शुरू हुआ। १८वीं शताब्दी में देश और विदेश में भारतीय विषयों पर छपी योरोपीय भाषा की पुस्तकों में जहाँ-तहाँ भारतीय भाषा के शब्द भारतीय लिपियों में दीख पड़ते हैं। नागरी टाइप में पहली पुस्तक कब और कहाँ छपी, और इसका नाम क्या है, इस पर हिन्दी साहित्य के इतिहास में ठीक-ठीक कुछ भी नहीं लिखा गया है। जहाँ तक पता चल सका है, नागरी अक्षरों में १८०२ ई० में छपी "मिसकीन की मरसिया" ही पहली पुस्तक थी। यह फोर्ट विलियम कालेज के संरक्षण में कलकत्ता के हरकरू प्रेस में छपी थी। हिन्दी का पहला समाचार-पत्र 'दिग्दर्शन' १८१८ ई० में श्रीरामपुर के बैपटिस्ट मिशनरियों द्वारा प्रकाशित किया गया था।

मेरा विषय "प्रकाशन-व्यवसाय का संगठन और उस-की रूपरेखा" है, परन्तु मैं जो-कुछ भी कहूँगा वह हिन्दी-पुस्तक-व्यवसाय को दृष्टिगत रखकर ही होगा। हो सकता है कि कुछ बातों में भारत के अन्य भाषाओं की पुस्तकों के प्रकाशकों के दृष्टिकोण और मेरे विचारों में मतपार्थक्य हो, परन्तु मूल-मूल बातों में समस्त प्रकाशन-व्यवसाय की वही अवस्था है जो हिन्दी-प्रकाशन-व्यवसाय की है।

प्रकाशन-व्यवसाय पहले एक ऐसा व्यवसाय था जिस-को सामाजिक प्रतिष्ठा प्राप्त नहीं थी। प्रकाशन का कार्य करने वाले समाज में सम्मानित दृष्टि से नहीं देखे जाते थे। फलत: इसमें आरम्भ से ही बुद्धिवादी तथा धनिकवर्ग के लोग अधिक संख्या में नहीं आये और यह व्यवसाय या तो स्वान्त:सुखाय साहित्य में अभिरुचि रखने वालों ने उत्साहपूर्ण वातावरण में आरम्भ किया, या ऐसे लोगों ने जिन्हें कम पूँजी में कोई काम करना था और उन्होंने इसी व्यवसाय को चुना।

हर्ष का विषय है कि देश की स्वतन्त्रता के बाद इस व्यवसाय को सामाजिक मर्यादा प्राप्त हो चुकी है। समाज में प्रकाशक अब अपना स्थान रखते हैं।

समस्त विश्व में प्रकाशित पुस्तकों की संख्या को दृष्टि-गत करने पर पता चलता है कि भारत का प्रकाशन-व्यव-साय में चतुर्थ स्थान है। अच्छे पढ़े-लिखे लोग, धनी-मानी व्यक्ति तथा विभिन्न राज्य राजकीय स्तर पर प्रकाशन-व्यवसाय में दिलचस्पी लेने लगे हैं। ऐसी स्थिति में जो लोग वर्षों से प्रकाशन-व्यवसाय में काम करते चले आये हैं उनका भी अब यह कर्तव्य हो गया है कि वे इस व्यवसाय की उन्नति के लिए ऐसी रूपरेखा प्रस्तुत करें जिससे व्यवसाय समृद्ध हो और जनोपयोगी साहित्य का सर्जन-प्रकाशन हो।

अपने पत्रक (पेपर) को स्पष्ट करने के लिए मैं अपने विषय को दो भागों में विभक्त करूँगा।

(१) व्यापार पक्ष (व्यावहारिक तथा सैद्धान्तिक) और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे नये प्रकाशन

● **मैं नेहरू से मिला : ति० ३.५**

अनुवादक : मुनीश सक्सेना। के ल
लाप का अक्षरशः उद्धरण, क व स
पहलुओं पर श्री नेहरू के विचरेखा मि

● **लोक परलोक : उदयश ३.५०**

उत्तर प्रदेश में स्थित एक तीर्थलिक
जिसमें तेज़ी से बदलते हुए क व
की छाया स्पष्ट अंकित हुई है वाहिक
प्रकाशित होने पर यह उपन्यहले ही
हो चुका है।

● **दूधगाछ : देवेन्द्र सत्यार्थी : रु० ६.००**

लेखक का नवीनतम उपन्यास। संगीत इस उपन्यास की आत्मा है, और शास्त्रीय तथा फिल्मी संगीत में समन्वय का अन्वेषण इसका विकास-क्षेत्र। दक्षिण प्रदेश की पृष्ठभूमि पर लिखा गया यह उपन्यास पाठक के अन्तरतम को छू लेने की क्षमता रखता है।

गद्य-क
डॉ

● **हिन्दी भाषा का सरल व्याकरण :**
डॉ० भोलानाथ तिवारी : ३.५०

हिन्दी भाषा के विद्यार्थियों के लिए उपयोगी पुस्तक। अध्यापकों द्वारा इस व्याकरण की मुक्त कंठ से प्रशंसा की गई है।

कमलेश
ए स्वीकृ
न।

● **ओ अप्रस्तुत मन : भारतभूषण अग्रवाल रु० ४.००**

लेखक की नवीनतम कविताओं का संग्रह।

● **बनपाखी सुनो : नरेश .००**

लेखक की उत्कृष्ट कविताओं

● **लाल कनेर : रवीन्द्रनाथ ठाकुर : रु० २.००**

अनुवादक : आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी। रवि ठाकुर के उत्कृष्ट नाटक का विद्वत्तापूर्ण अनुवाद। 'मानव बनाम मशीन' समस्या का काव्यात्मक परीक्षण।

प्रसाद :

प्रसाद के
ने इस
या है।

राजकमल

राजकमल
प्रकाशन प्राइवेट लि॰ दिल्ली : इलाहाबाद : बम्बई :

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ला : ति० ३.५०

वसेना । के लम्बे वार्ता-
उद्धरण, क व सांस्कृतिक
रू के विरेखा मिलती है ।

: उदय ३.५०

त एक तीलिक चित्रण,
लते हुए क वातावरण
त हुई है रावाहिक रूप से
यह उपन्याहले ही सर्वप्रिय

गद्य-काव्य :

डॉ० पद्मसिंह शर्मा कमलेश : रु० ७.००

कमलेश का आगरा विश्वविद्यालय की पी-एच०
ए स्वीकृत प्रबन्ध । हिन्दी गद्य-काव्य का एकमात्र
न ।

: नरेश .००

कविताओं

साद : डॉ० भोलानाथ तिवारी : रु० ४.००

साद के काव्य-पक्ष का सर्वाङ्गपूर्ण अध्ययन । मान्य
ने इस पुस्तक को अपने विषय की सर्वश्रेष्ठ पुस्तक
या है ।

बम्बई : **मद्रास**

● हिन्दी लेखक चित्रावली : रु० १५.००

२५ मान्य हिन्दी लेखकों के चित्रों का विदेशी आर्ट पेपर पर छपा सुन्दर एलबम । प्रत्येक चित्र के नीचे लेखक व उसके साहित्य का संक्षिप्त परिचय दिया गया है । हिन्दी-क्षेत्र में इस प्रकार का पहला प्रयास ।

● आगामी प्रकाशन

- शिक्षा की पुनर्रचना : श्री के० जी० सैयदैन
- मध्यकालीन हिन्दी गद्य : हरिमोहन श्रीवास्तव
- अजन्ता के चित्रकूट : रायकृष्ण दास व आनन्द कृष्ण
- मध्यकालीन चित्रकला : रायकृष्ण दास व आनन्द कृष्ण
- रूपाजीवा : उपन्यास : डॉ० लक्ष्मीनारायण लाल
- ठुमरी : कहानी-संग्रह : फणीश्वरनाथ 'रेणु'
- चिदम्बरा : कविता-संकलन : श्री सुमित्रानन्दन पन्त
- रश्मिबंध : संकलन : श्री सुमित्रानन्दन पन्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(२) संगठन एवं सुझाव।

१. व्यापार-पक्ष (व्यावहारिक तथा सैद्धान्तिक)

प्रकाशन-व्यवसाय के व्यापार-पक्ष पर विचार करने के लिए उसे निम्न भागों में विभाजित करना होगा—

अ. प्रकाशकों के विभिन्न वर्ग।

ब. विभिन्न वर्गों की तुलनात्मक स्थिति।

स. बाजार तथा निकासी-व्यवस्था।

द. प्रकाशकों की व्यावहारिक कठिनाइयाँ तथा सम्बद्ध त्रुटियाँ।

प्रकाशकों के विभिन्न वर्ग

विभिन्न जाति वाले, विभिन्न मतों वाले, विभिन्न धर्मों वाले, ३७ करोड़ आदमियों के इस देश में प्रत्येक वर्ग के लोगों के लिए विभिन्न विषयों पर विभिन्न रुचियों के अनुकूल पुस्तकों की आवश्यकता है। विद्यार्थी पाठ्य-पुस्तकें चाहते हैं, पुस्तक-प्रेमी पाठक अपनी-अपनी अभिरुचि के अनुसार विभिन्न प्रकार की साहित्यिक पुस्तकें पढ़ना चाहते हैं।

अशिक्षित और अनपढ़ लोगों के प्रति समाज का जो उत्तरदायित्व है, उसके कारण लोक-कथाओं और लोक-गीतों का भी एक क्षेत्र बन गया है। देश की विभिन्न संस्थाएँ अपने-अपने प्रचार के लिए प्रचार सम्बन्धी साहित्य छापती हैं तथा देशी-विदेशी सरकारों ने भी कई कारणों से प्रकाशन का धन्धा अपना लिया है। इस तरह हमारे देश में निम्नलिखित ६ वर्गों की प्रकाशन-संस्थाएँ हो गई हैं:

१. पाठ्य-पुस्तक प्रकाशन संस्थान
२. साहित्यिक प्रकाशन संस्थान
३. धार्मिक प्रकाशन संस्थान
४. जन-साहित्य प्रकाशन संस्थान
५. प्रचार साहित्य प्रकाशन संस्थान
६. सरकारी प्रकाशन संस्थान

पाठ्य-पुस्तक प्रकाशन

हमारे देश में स्वतन्त्रता के बाद पाठ्य-पुस्तकों की माँग बढ़ गई है। फलतः इस क्षेत्र में काफी संख्या में प्रकाशक आ गये हैं। प्रारम्भ में हिन्दी के इस क्षेत्र में इंडियन प्रेस, रामनारायण लाल, खड्ग विलास प्रेस, पुस्तक भण्डार आदि प्रमुख संस्थाएं थीं। अब तो इस क्षेत्र में अनुमानतः चार सौ से अधिक हिन्दी के प्रकाशक हैं। इनमें एक तरह की अस्वस्थ व्यापारिक प्रतिद्वन्द्विता चल रही है। जैसे-जैसे अधिक लोग इस क्षेत्र में आते गये, वैसे-वैसे व्यापारिक प्रतिद्वन्द्विता भी बढ़ती गई। पहले जब कम लोग इस क्षेत्र में थे, तब मनमाने ढंग से प्रकाशन होते थे। अधिकतर पुस्तकों का स्तर उतना अच्छा न था जितना आज पाया जाता है। हिन्दी के राष्ट्र भाषा हो जाने के बाद इस क्षेत्र में अधिक प्रकाशकों का होना आवश्यक भी है, क्योंकि हमें हिन्दी में उच्च कक्षाओं तक की समस्त पाठ्य-पुस्तकें शीघ्र ही प्रकाशित करनी हैं।

पाठ्य-पुस्तकों के प्रकाशकों के विरुद्ध प्रायः शिकायतें सुनी जाती रहीं, यथा पुस्तक स्वीकृत हो जाने के बाद अच्छे कागज़ का उपयोग न होना, अच्छी छपाई न होना और समय पर बाजार में पुस्तकें न पहुँचाना। फलतः सरकार ने इस क्षेत्र में प्रवेश करने का विचार किया और पाठ्य-पुस्तकों का राष्ट्रीयकरण करने का भी निश्चय कर लिया जो वस्तुतः मुक्त व्यवसाय की सर्वमान्य लाभप्रद प्रवृत्तियों के प्रतिकूल है और एकतरफा भी।

पाठ्य-पुस्तक प्रकाशकों का एक ऐसा भी वर्ग है जो स्वस्थ और सुन्दर पाठ्य-पुस्तकें प्रकाशित कर रहा है।

साहित्यिक प्रकाशन

साहित्यिक प्रकाशनों का कार्य लगभग ५० वर्ष से आरम्भ हुआ है। इस श्रेणी के प्रकाशक, पाठकों की रुचि के लिए रचनात्मक साहित्य, आलोचनात्मक साहित्य, वैज्ञानिक साहित्य, बाल साहित्य आदि का प्रकाशन करते हैं। हिन्दी में साहित्यिक प्रकाशनों का अग्रणी काशी का 'भारत-जीवन प्रेस' माना जा सकता है। बाबू रामकृष्ण वर्मा इसके संस्थापक थे। जनरुचि के साथ उन्होंने साहित्य-सेवा के विचार से अनेकानेक उपयोगी प्रकाशन किये थे। हिन्दी साहित्यिक प्रकाशन-व्यवसाय ने उनसे इस दशा में नया प्रकाश पाया। उसके बाद कलकत्ता, वाराणसी, लाहौर, इलाहाबाद, अजमेर, बम्बई, पटना में साहित्यिक प्रकाशनों की धूम-सी मची। साहित्य-सेवा के विचार से अनेकानेक प्रकाशन प्रकाशन-व्यवसाय के इस क्षेत्र में आ गये। उन दिनों उपन्यासों के अतिरिक्त कोई भी पुस्तक, कोई भी साहित्यिक कृति छापना निश्चय ही सेवा का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कार्य माना जाता था, क्योंकि पाठकों की रुचि गांधीजी के आन्दोलन के प्रभाव के कारण या तो राष्ट्रीय विषयों की पुस्तकों के प्रति थी, या कहानी-उपन्यासों के प्रति। अब तो साहित्यिक प्रकाशन करने वाली अनेकानेक संस्थाएँ हो गई हैं।

साहित्यिक प्रकाशन १६३० से १६४० तक जितना हिन्दी में हुआ, उसकी तुलना में १६४८ से १६५८ तक शत-प्रतिशत वृद्धि हुई है। अनेकानेक प्रतिभाओं ने हिन्दी में विभिन्न विषयों पर पुस्तकें लिखकर प्रकाशकों को दी हैं और इस प्रकार प्रकाशन-व्यवसाय हिन्दी के साहित्यिक क्षेत्र की श्रीवृद्धि कर रहा है।

धार्मिक प्रकाशन

हमारा देश धर्मप्रधान तत्वों से सदैव ही प्रभावित रहा है। केवल धार्मिक पुस्तकों का प्रकाशन करने वाले प्रकाशक इस विचारधारा से प्रभावित पाठकों के लिए प्रकाशन करते आये हैं। हमारे यहाँ खेमराज श्रीकृष्णदास गीता प्रेस जैसी प्रकाशन-संस्थाएँ धार्मिक पुस्तकों का ही प्रकाशन कर रही हैं। इनका व्यवसाय-क्षेत्र व्यापक है। अब इस क्षेत्र में अरविन्दाश्रम, रामतीर्थआश्रम, रामकृष्ण आश्रम आदि संस्थाओं ने भी प्रवेश किया है अनेकानेक अन्य व्यापारिक संस्थाएँ देश के विभिन्न भागों में, यथा वाराणसी, मथुरा, दिल्ली आदि स्थानों में, धार्मिक पुस्तकों का प्रकाशन कर रही हैं।

धार्मिक पुस्तकों के प्रकाशकों ने हिन्दू धर्म से सम्बद्ध पुस्तकें ही अधिक संख्या में प्रकाशित की हैं। वैसे आर्य-समाज, जैन-धर्म, बौद्ध-धर्म, ईसाई-धर्म, सिक्ख-धर्म, इस्लाम-धर्म पर भी हिन्दी में प्रकाशन हैं, परन्तु अधिकतर धार्मिक पुस्तकों के प्रकाशक हिन्दू-धर्म की पुस्तकें ही छापते हैं, क्योंकि इस धर्म के अनुयायियों की संख्या भारत में बहुत अधिक है और संस्कार स्वरूप 'रामायण', 'गीता', 'भागवत' आदि ग्रन्थों से उनका अत्यधिक गहरा मानसिक लगाव होने के कारण इनकी माँग निरन्तर बनी रहती है।

जनसाहित्य प्रकाशन

चाहे शिक्षित हो या अशिक्षित, साहित्य सभी के लिए आनन्द की वस्तु है। शिक्षित-वर्ग जहाँ साहित्यिक पुस्तकें पढ़कर आनन्द लेता है, वहाँ अशिक्षित-वर्ग लोक-कथाओं, किस्से-कहानियों, लोकगीतों और भजनों की पुस्तकें पढ़वाकर साहित्य का रसास्वादन करता है। इस कारण हमारे देश में जन-साहित्य का प्रकाशन करने वालों का एक बहुत बड़ा शक्तिशाली वर्ग है। जहाँ तक मेरी जानकारी है, यह वर्ग करोड़ों पाठकों से अपना सम्पर्क रखता है, जबकि साहित्यिक पुस्तकों के प्रकाशकों का क्षेत्र अभी भी बहुत ही सीमित है। यह ऐतिहासिक तथ्य है कि काशी जहाँ साहित्यिक प्रकाशकों का केन्द्र रहा है, वहीं जन-साहित्य के प्रकाशकों की मुख्य कार्यभूमि भी काशी ही रही है। जन-साहित्य के प्रकाशकों ने हिन्दी का एक लाभ अवश्य किया है और वह यह कि उन्होंने हिन्दी को बहुत-से नये पाठक दिये जो अब साहित्यिक प्रकाशनों को दिलचस्पी से पढ़ते हैं।

प्रचार साहित्य प्रकाशन

अनेक निजी मत, अपने विचार, अपने व्यवसाय को प्रचारित-प्रसारित और समृद्ध करने के लिए तत्सम्बन्धी साहित्य का प्रकाशन प्रचार-साहित्य का उद्देश्य रहा है। अनेक प्रकाशन-संस्थाएँ केवल प्रचार साहित्य ही प्रकाशित करती हैं। थियोसोफिकल सोसाइटी थियोसोफिस्ट मत के प्रचार के लिए ही पुस्तकें छापती है। बंगाल में ब्रह्म-समाज अपने मत के प्रचार के लिए ही साहित्य छापता है, कई बाइबिल प्रकाशित करने वाली संस्थाएँ भारत में ईसाई धर्म का प्रचार करने के लिए पुस्तिकाएँ छापकर बहुत कम मूल्य पर बेचती हैं। अनेक व्यापारिक कम्पनियाँ अपना विज्ञापन करने के लिये जनोपयोगी पुस्तकें प्रकाशित करती हैं और उन्हें नाम-मात्र के मूल्य पर बेचती हैं। व्यापारिक संस्थाओं में होमियोपैथिक दवा वालों के प्रकाशन, देशी दवाओं वालों के विज्ञापनयुक्त वैद्यक ग्रन्थ, साबुन बनाने वालों के प्रकाशन जो अपने साबुन का प्रचार करने के लिए आकर्षक रंगीन पुस्तकें लाखों की संख्या में छापकर बहुत ही अल्प मूल्य पर बेच देते हैं, प्रमुख प्रचार साहित्य प्रकाशन माने जा सकते हैं।

सरकारी सूचना विभाग लाखों की संख्या में विभिन्न विषयों की पुस्तिकाएँ छपवाते हैं और उन्हें मुफ्त वितरित करते हैं, या अल्प मूल्य लेकर बेचते हैं। राजनीतिक संस्थाएँ भी अपने विचारों का जनता में प्रचार करने के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिए प्रचार साहित्य छापती और बेचती हैं।

सरकारी प्रकाशन

हमारी प्रान्तीय तथा केन्द्रीय सरकारें स्वतः प्रकाशन का कार्य कर रही हैं। इस क्षेत्र में सरकारों का पदार्पण दो बातों को लेकर हुआ। सरकारी पक्ष पाठ्यपुस्तकों की राष्ट्रीयकरण की नीति को लेकर प्रकाशन-व्यवसाय में आया। दूसरी विचारधारा सरकार की यह रही कि ऐसे जनोपयोगी प्रकाशन उपलब्ध हों जो सरकार के मतानुसार स्वतन्त्र व्यवसायी न छाप सकते हों। अर्द्धसरकारी संस्थाओं तथा संस्थाओं को भी सरकार ने प्रकाशनों के लिए आर्थिक सहायता दी है। उत्तर प्रदेश, विहार, राजस्थान, मध्यप्रदेश की सरकारों के जो साहित्यिक प्रकाशन सामने आये हैं उनमें से कुछ सामान्य श्रेणी के हैं और कुछ विशिष्ट। जहाँ तक इन सरकारों द्वारा पाठ्यपुस्तकों के प्रकाशन का सम्बन्ध है, उत्तर प्रदेश की सरकार के शिक्षा-विभाग को छोड़कर, शेष सभी सरकारों के पाठ्यपुस्तकों के प्रकाशन का स्तर सामान्य प्रकाशकों के प्रकाशनों से नीचा है। यह आत्मप्रशंसा नहीं, किन्तु तथ्य है कि उत्तर प्रदेश में भी सरकारी पाठ्यपुस्तक-प्रकाशन-योजना प्रकाशकों के सहयोग के कारण ही सफल हुई है।

कई साहित्यिक प्रकाशन संस्थाएँ सरकारी अनुदान प्राप्त कर प्रकाशन-कार्य कर रही हैं; यथा काशी की 'नागरी प्रचारिणी सभा' द्वारा हिन्दी साहित्य का वृहद् इतिहास तथा विश्वकोष-जैसे महत्त्वपूर्ण ग्रन्थों का प्रकाशन सरकारी अनुदान के कारण ही सम्भव होगा। सरकारी पूँजी द्वारा संचालित बिहार राष्ट्रभाषा परिषद् के प्रकाशन भी अच्छे हैं। इस तरह से अनेक संस्थाएँ सरकार की सहायता से हमारे प्रकाशन-व्यवसाय के क्षेत्र में एक वर्ग के रूप में आ चुकी हैं, जिनका प्रभाव प्रकाशन-व्यवसाय के संगठन और स्वरूप पर पड़ चुका है।

विभिन्न वर्गों की तुलनात्मक स्थिति

अब तक मैंने प्रकाशकों के विभिन्न वर्गों का वर्णन किया है। इन सभी वर्गों के प्रकाशकों की अपनी-अपनी समस्याएँ हैं और अपनी-अपनी परिस्थिति। पाठ्यपुस्तकों के प्रकाशक पहले पुस्तक स्वीकृत कराने के लिए प्रयत्नशील होते हैं, फिर विद्यालयों में उनका प्रचार करते हैं। यह सही है कि तत्पश्चात् दो-चार वर्ष तक बिक्री के सम्बन्ध में उन्हें किसी विशेष परेशानी का सामना नहीं करना पड़ता, किन्तु यह विवादास्पद है कि पुस्तक को स्वीकृत कराने, उसका प्रचार करने तथा उसे उपलब्ध कराते रहने में उन्हें जितना धन लगाना पड़ता है और जो परिश्रम करना पड़ता है उसका उचित प्रतिफल उन्हें इस अवधि में प्राप्त हो जाता है। उनकी कठिनाइयाँ पुस्तक के अस्वीकृत होने पर या पुस्तक पर समुचित विचार न होने की दशा में तो बढ़ जाती ही हैं। यदि पुस्तक अनिवार्य रूप से स्वीकृत हुई तो उनको अच्छा लाभ जरूर हो जाता है, किन्तु विपरीत अवस्था में हानि की सम्भावना ही रहती है।

अन्य प्रकार के प्रकाशकों की तरह बाजार खोजने के लिए पाठ्यपुस्तकों के प्रकाशकों को बहुत अधिक परेशानी नहीं उठानी पड़ती। धार्मिक तथा जन-साहित्य के प्रकाशकों को भी अपना क्षेत्र बनाने में उपर्युक्त दृष्टि से अधिक परेशानी का सामना नहीं करना पड़ता। धार्मिक प्रकाशन का क्षेत्र देशव्यापी है और जन-साहित्य प्रकाशन का क्षेत्रीय। कुछ जन-साहित्य के प्रकाशन ऐसे भी होते हैं जिनकी बिक्री भारतव्यापी है।

प्रचार-साहित्य-प्रकाशन-संस्थानों के लिए बिक्री की समस्या कोई विशेष महत्त्व नहीं रखती, क्योंकि उनका मूल उद्देश्य व्यवसाय और उसकी श्रीवृद्धि नहीं, किन्तु प्रचार होता है। प्रकाशन-व्यवसाय और उसके स्वार्थों की दृष्टि से इनकी समस्याएँ नहीं के बराबर हैं।

सरकारी प्रकाशन-संस्थान स्वयं तो समस्याओं से मुक्त हैं, परन्तु साहित्यिक प्रकाशकों के लिए एक समस्या अवश्य बन गये हैं। इनके अनेक ऐसे प्रकाशन सामने आए हैं जिनके कारण सामान्य श्रेणी के प्रकाशक अन्यायपूर्ण प्रतिद्वन्द्विता के दुश्चक्र में फंस गए हैं। साहित्यिक प्रकाशकों के लिए भी बराबर यह भय बना रहता है कि यदि सरकार ने अनुदान के बल पर अपना ही प्रकाशन खरीद लिया तो उनके लिए कुछ भी नहीं रह जायगा। साथ ही सरकारी प्रकाशनों के मूल्य बहुतांश में लागत से भी कम होते हैं, जबकि सामान्य प्रकाशक ऐसा करने में अपने को असमर्थ पाता है।

साहित्यिक प्रकाशन संस्थानों की अपनी समस्याएँ हैं। इनके लिए व्यवसाय को संगठित करना सबसे अधिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आवश्यक है। इन पर देश में सत्साहित्य के प्रचार का दायित्व है, इन पर जनता के लिए रुचिकर स्वस्थ साहित्य प्रकाशित करने का दायित्व है और दायित्व है राष्ट्रभाषा हिन्दी की पद-मर्यादा के अनुकूल साहित्य के प्रकाशन का। देश की जनता को इस तरह का साहित्य इस वर्ग को प्रकाशित करके देना है जिससे साहित्यिक प्रकाशनों के प्रति पाठकों की रुचि बढ़े। साहित्यिक प्रकाशकों का यह इतिकर्तव्य है कि वे साहित्य के ऐसे लेखकों को खोज निकालें जो छिपकर साहित्य की अनवरत साधना कर रहे हैं। इनकी कृतियों को छापकर जनता में उसका प्रचार करें। साहित्यिक प्रकाशन संस्थानों के मार्ग में आर्थिक कठिनाइयाँ भी हैं, क्योंकि अधिक पूँजी लगाने पर भी इन्हें पाठक कम मिलते हैं। यदि प्रकाशकों के अन्य वर्गों के लिए संगठन का पचास प्रतिशत उपयोग है, तो इनके लिए शत-प्रतिशत।

बाज़ार तथा निकासी-व्यवस्था

व्यवसाय का मूलाधार हाट-व्यवस्था है। हिन्दी-प्रकाशन क्षेत्र में यह गम्भीर समस्या के रूप में हमारे सामने है, क्योंकि हिन्दी की नई पुस्तकों के लिए विक्रेता और पाठक अभी भी खोजने पड़ते हैं। विकास का निश्चित स्वरूप निर्धारित न होने के कारण प्रकाशक स्वयं ही पुस्तक-विक्रेता बनते हैं। इस प्रवृत्ति से नुकसान यह होता है कि प्रकाशक पुस्तक-विक्रेता से बराबरी करने लगता है। विक्रेताओं के लिए सहूलियतें बिल्कुल ही नहीं रह जातीं। नये लोग पुस्तक-विक्रय के व्यवसाय को अपनाने के लिए तैयार नहीं होते। विक्रेताओं के अभाव में हमारे नये प्रकाशन बाज़ार में नहीं पहुँच पाते, जबकि अंग्रेज़ी के प्रकाशन छपते ही कुछ दिनों के अन्दर सारे विश्व में पहुँच जाते हैं।

विक्रेताओं की भी समस्याएँ हैं। प्रकाशक यदि फुटकर बिक्री में कमीशन पर प्रतिबन्ध लगा सके तो निश्चय ही इस व्यवसाय के प्रति विक्रेताओं का आकर्षण बढ़ेगा। प्रकाशक यदि स्वत: अपना प्रकाशन न बेचकर विक्रेताओं द्वारा बेचें तो माल की निकासी की समस्या का हल निकल आ सकता है।

बाजार में माल की कमी के कारण माल की निकासी

भारत-रत्न स्वर्गीय डाक्टर भगवानदास जी की

प्रकाशित नवीनतम पुस्तक

वि वि धा र्थ

इस पुस्तक में डाक्टर साहब ने इधर के लिखे गये निबंध तथा समय-समय पर प्रकट किये गए विचारों को संकलित किया है। विविधार्थ उनकी ८९वीं वर्षगांठ पर जनवरी, १९५८ में प्रकाशित हुई थी। डाक्टर साहब की एक लम्बी भूमिका पुस्तक के आरम्भ में दी गई है। उच्च दार्शनिक विचारधारा से लेकर आजकल की सामान्य समस्याओं के विविध अंगों पर उन्होंने अपने विचार लिपिबद्ध किये हैं। यह पुस्तक विद्वान् तथा सामान्य व्यक्ति सबके लिए समान रूप से उपयोगी है। ४८० पृष्ठ की सजिल्द पुस्तक का मूल्य केवल ६ रुपये।

अधिकृत विक्रेता

कल्याणदास एण्ड ब्रदर्स, ज्ञानवापी, वाराणसी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में बाधा पहुँचती है। प्रायः देखा जाता है कि जो सरकारी अनुदान हिन्दी पुस्तकों की खरीद के लिए उपलब्ध होता है, हिन्दी पुस्तकें बाज़ार में न मिलने के कारण उसका उपयोग अंग्रेज़ी की ही पुस्तकें खरीदने में किया जाता है।

समुचित प्रचार का अभाव, अनियोजित प्रकाशन, कम पूँजीवाले प्रकाशकों का माल न बिकने की अवस्था में अधिक कमीशन देने की होड़, आदि त्रुटियाँ, हमारे बाज़ार को नष्ट करती हैं। इन कारणों से वस्तुस्थिति यह है कि नये प्रकाशक नव प्रकाशित अच्छी पुस्तक की एक हज़ार प्रतियाँ भी नहीं बेच पाते हैं। उन्हें रास्ता नहीं दिखाई देता कि वे इन कठिनाइयों का मुकाबला कैसे करें।

प्रान्तीय भाषाओं के साहित्य का बाज़ार तथा उनकी निकासी की व्यवस्था हिन्दी से कहीं अधिक अच्छी है। बंगला भाषा की पुस्तकों का बाज़ार एक महत्त्व रखता है। हिन्दी की तरह बंगला का क्षेत्र उतना बृहद् नहीं है, परन्तु हिन्दी का एक अच्छा नया उपन्यास यदि अधिक-से-अधिक ३००० बिकता है तो बंगला का नया उपन्यास १० हज़ार से ५० हज़ार तक बिक जाता है। बंगला में प्रकाशित उपन्यासों में 'साहब बीबी गुलाम' के गत ५ वर्षों में १५ संस्करण प्रकाशित हुए हैं और 'मरुतीर्थ हिंगलाज' नामक उपन्यास इस समय बाज़ार में काफ़ी प्रसिद्धि पा रहा है।

मराठी, गुजराती, गुरुमुखी पुस्तक-प्रकाशन-क्षेत्र में निकासी व्यवस्था हिन्दी से काफ़ी अच्छी है। यही दशा दक्षिण भारत की भाषाओं के प्रकाशनों की है। हमें इनकी निकासी के ढंग को देखना चाहिए और उनसे लाभ उठाना चाहिए।

कोई वजह नहीं कि हिन्दी का बाज़ार विस्तृत न हो। आवश्यकता केवल इस बात की है कि हम उन त्रुटियों को खोज निकालें जो बाज़ार के विस्तार में बाधक हैं। बाज़ार तथा निकासी के उपायों पर गम्भीरतापूर्वक विचार करने की आवश्यकता है।

प्रकाशकों की व्यावहारिक कठिनाइयाँ तथा त्रुटियाँ

भारत में विदेशों की अपेक्षा प्रकाशन-व्यवसाय की कठिनाइयाँ अधिक हैं और परिस्थितिजन्य भिन्न-भिन्न बाधाएँ भी प्रकाशकों के मार्ग में आती रहती हैं। विदेशों में प्रकाशन-संस्थाएँ धनीमानी व्यक्तियों द्वारा संचालित होती हैं। हमारे देश में सौ-दो-सौ की पूँजी से ही प्रकाशन का कार्य आरम्भ कर देने की हिम्मत रखने वाले साहसिक लोग भी हैं। परिणामतः उनके मार्ग में नाना प्रकार की बाधाएँ आती हैं। अस्तु, हम यहाँ पर प्रकाशकों की कतिपय कठिनाइयों का ज़िक्र करेंगे।

१. हिन्दी के प्रकाशन-व्यवसाय में सबसे बड़ी यदि कोई समस्या है तो वह है अच्छे पुस्तकविक्रेताओं की कमी। नये प्रकाशन चाहे कितने अच्छे क्यों न हों, बाज़ार में इसलिए नहीं पहुँच पाते कि पुस्तक-विक्रेता उसका महत्त्व ही नहीं समझते। मुझे आप यह कहने पर क्षमा करेंगे कि हिन्दी में अधिकतर पुस्तक-विक्रेता अशिक्षित या कम पढ़े-लिखे लोग हैं। उन्हें यह ज्ञात नहीं है कि अमुक पुस्तक किस विषय की है। यदि ग्राहक आते हैं और उनसे किसी विषय विशेष पर पुस्तकें माँगते हैं तो उन्हें यह बताना कठिन हो जाता है कि अमुक विषय की पुस्तक कहाँ से प्रकाशित हुई है, और कौनसी पुस्तक ग्राहक को लेनी चाहिए। हमारे हिन्दी के अधिकांश पुस्तक-विक्रेता पाठ्यपुस्तकें ही बेचते हैं। उनकी दृष्टि में साहित्यिक पुस्तकों को बेचना व्यवसाय का महत्त्वपूर्ण अंग नहीं है। या तो उन्हें पुस्तक उधार चाहिए या न बिकने की सूरत में वापसी की शर्त पर। ऐसी स्थिति में प्रकाशक के सामने दो मार्ग रह जाते हैं—या तो वे पुस्तक-विक्रेताओं को पुस्तक उधार दें और बिकने पर मूल्य लें या न बिकनेवाली पुस्तकें काफ़ी अवधि के बाद भी वापस ले लें। यहाँ एक खतरा भी है। ७५ प्रतिशत लेन-देन में प्रकाशक अरक्षित है। शायद ही २५ प्रतिशत ऐसे विक्रेता हैं जो बिकने पर भी मूल्य दें। यह देखा गया है कि विक्रेता या तो अपनी आर्थिक स्थिति की कमज़ोरी के कारण या किसी अन्य आदत के कारण भुगतान नहीं कर पाते। फलतः उधार देने पर भी प्रकाशन के प्रचार-प्रसार में बाधा उपस्थित होती है। कोई भी साहित्यिक कृति विक्रेताओं के ज़रिये शायद ही दो हज़ार से अधिक बिक पाती हो, बशर्ते वह पाठ्यपुस्तक न हो।

२. प्रकाशन-व्यवसाय में शिक्षित कार्यकर्ताओं का न होना भी इसकी समृद्धि में बाधक है। हिन्दी के प्रकाशन-गृहों में शिक्षित कार्यकर्ताओं का नितान्त अभाव है। कम पूँजी से प्रकाशन करने वाले अधिकतर हिन्दी-प्रकाशक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

सुशिक्षित कार्यकर्ताओं के अभाव में न तो नियोजित पद्धति से प्रकाशन कर पाते हैं, न समुचित विधि से प्रकाशनों का प्रचार-प्रसार ही। अव्यवस्था के कारण हम कार्यकर्ताओं के लिए कोई प्रलोभन या संरक्षण उत्पन्न नहीं कर पाते, जिससे कार्यकर्ता इस व्यवसाय में मन लगाकर कार्य करने के लिए आकृष्ट हों। परिणामतः ये कार्यकर्त्ता उपयोगी होने के स्थान पर अनुपयोगी सिद्ध होते हैं।

३. पश्चिम के देशों को लीजिये। यदि कोई प्रकाशन-सम्बन्धी सरकारी योजना होती है तो सरकार जिन समितियों का गठन करती है, उनमें प्रकाशकों को स्थान देती है। परन्तु हमारे देश में विशेषतः हिन्दी प्रकाशकों की सरकार द्वारा इतनी अधिक उपेक्षा हुई है कि आज नियोजित रूप से प्रकाशन के लिए प्रकाशक और सरकार का कोई पारस्परिक सम्बन्ध नहीं है। यहां तक कि हिन्दी के प्रकाशकों को इतना भी उपयोगी नहीं समझा गया कि सरकार जिन हिन्दी शब्दावलियों का प्रकाशन करवा चुकी है, उनकी एक-एक प्रति सबको नहीं तो कम-से-कम प्रमुख प्रकाशकों को भिजवा देती। इसे भी छोड़िये, इतना भी नहीं हुआ कि सरकार हमारे "अखिल भारतीय हिन्दी-प्रकाशक संघ" को भी प्रकाशन-सिद्धान्त से सम्बन्ध रखने वाली पुस्तिकाएँ भिजवाती। फलतः साहित्य के क्षेत्र में होने वाले अनुसंधानों से हिन्दी के अधिकांश प्रकाशक अनभिज्ञ-से रहे हैं और उन सुविधाओं का लाभ उठाने से भी वंचित रह गये हैं जिन पर अतिरिक्त व्यय का प्रश्न ही नहीं उठता।

४. हिन्दी के किसी प्रकाशन का यदि समुचित प्रचार-प्रसार किया भी गया और पुस्तक की माँग भी हुई तो पुस्तक स्थानीय विक्रेता के यहाँ उपलब्ध न होने के कारण बिकने से रह जाती है। यदि ग्राहक ने सीधे डाक से मँगाना चाहा तो अधिक पोस्टेज व्यय के कारण ग्राहक पुस्तक नहीं मंगाते, क्योंकि एक रुपये की पुस्तक के लिए एक रुपया ही डाक-व्यय देना पड़ता है।

५. हिन्दी-प्रकाशन-व्यवसाय में एक बड़ा ही दुःखजनक अभाव है लेखकों और प्रकाशकों में मधुर सम्बन्ध का न होना। बहुत से अच्छे लेखक स्वतः प्रकाशक बन गये हैं। इससे उन्हें भी कठिनाइयों का सामना करना

हिन्दी में
अपने ढंग का
पहला
और
अनूठा प्रकाशन

दशकोण

'रीडर्स डायजेस्ट'
द्वारा
सार-रूप में प्रकाशित
संसार की सर्वोत्तम
तथा
सबसे लोकप्रिय
दस पुस्तकों का
संकलन

पृष्ठ संख्या : ५०० मूल्य : ६·२५

एलाइड पब्लिशर्स
आसफ़ अली रोड, नई दिल्ली

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पड़ता है और प्रकाशकों को अच्छे लेखकों से हाथ धोना पड़ता है। लेखक इसलिए प्रकाशक बनते हैं कि प्रकाशक उनकी पुस्तकों का उतना प्रचार नहीं करते जितना वे चाहते हैं। प्रकाशक बनने के बाद लेखकों को भी उन कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है जो प्रकाशकों के सामने आती रहती हैं। प्रकाशक-वर्ग सचेत रहे तो वह लेखक के अनुभव का लाभ उठाकर, लेखक की प्रतिभा को विखण्डित होने से बचा सकता है और साथ ही भ्रम के फलस्वरूप उत्पन्न प्रकाशक-लेखक के बीच विद्यमान व्यवधान को भी दूर कर सकता है।

६. हमारे इस व्यवसाय को बैंकिंग की भी सुविधा प्राप्त नहीं है जब कि अन्य व्यवसायों को बैंकिंग की सुविधाएँ प्राप्त हैं।

७. इसमें सन्देह नहीं कि हिन्दी में बहुत अधिक संख्या में प्रकाशन हो रहे हैं। इसमें भी शक नहीं कि हिन्दी के पाठकों का क्षेत्र समस्त भारत में विस्तृत हो रहा है। यह भी सत्य है कि सरकार लाखों रुपयों की हिन्दी पुस्तकों की खरीद के लिए अनुदान दे रही है। परन्तु यह सब होने पर भी हिन्दी के पाठकों की संख्या में उस अनुपात से

वृद्धि नहीं हुई है जिस अनुपात से प्रकाशन बढ़ रहा है। ऐसी स्थिति में भय है कि यदि सरकार ने अनुदान देना बन्द कर दिया तो हिन्दी के प्रकाशनों की बिक्री का भविष्य अंधकारमय हो जायगा। शिक्षित पाठक प्रायः अंग्रेज़ी की पुस्तकें ही खरीदकर पढ़ते हैं। यों अंग्रेज़ी की ही पुस्तक पढ़ने में ज्ञान समझने का रोग साधारण पाठकों में भी कम नहीं हुआ है। हिन्दी पुस्तकें खरीदकर पढ़ने का आकर्षण अब तक उत्पन्न नहीं किया जा सका है। हिन्दी के प्रकाशकों को परिस्थितियों की यह एक चुनौती है और इस समस्या का समाधान खोज निकालना उनका व्यावसायिक कर्तव्य है।

८. पुस्तकों का राष्ट्रीयकरण करने का सरकार का मनसूबा स्वयं सजग न रहने की हमारी दुर्बलता का ही परिणाम है, जिसे हम अपने संगठन को शक्तिशाली बनाकर दूर कर सकते हैं।

९. हिन्दी में विज्ञान तथा टेकनॉलोजी की पुस्तकों की माँग तो हो रही है, परन्तु इन विषयों के लेखकों का नितान्त अभाव है। प्रायः प्रकाशक बहुत कठिनाइयों के बाद भी इन विषयों के योग्य हिन्दी लेखक नहीं खोज पाते।

१०. हिन्दी के अधिकतर प्रकाशकों के प्रति जिज्ञासु पाठकों की शिकायत रही है कि वे पत्रों का उत्तर ठीक से नहीं देते। बात कुछ अंशों में ठीक भी है, क्योंकि हिन्दी के अनेक प्रकाशक व्यवसाय के व्यावहारिक तथा सैद्धान्तिक पक्षों से प्रायः अनभिज्ञ हैं।

११. पुस्तकों की बिक्री में सेलटैक्स बहुत बाधा उपस्थित कर रहा है। केन्द्रीय सरकार ने पुस्तक-व्यवसाय पर सेलटैक्स न लगाने के औचित्य को स्वीकार किया है, किन्तु कुछ प्रान्तीय सरकारें सेलटैक्स लेकर हमारे व्यवसाय के मार्ग में बाधक हो रही हैं। इसका परिहार अभीष्ट है।

१२. कागज़ के अभाव में कागज़ के व्यापारी कृष्ण-मुखी (ब्लैक) व्यापार पर उतर आये हैं। फलतः स्वस्थ साहित्य सस्ते मूल्य में जनता के लिए सुलभ करना सम्भव नहीं हो रहा है।

१३. हिन्दी में पाठकों को विभिन्न विषयों पर अलग-अलग पुस्तकों की सूचियाँ नहीं प्राप्त हो पाती हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसके अभाव में हिन्दी प्रकाशक विभिन्न विषयों पर पुस्तकें छापकर भी बेचने में असमर्थ हो रहे हैं।

१४. प्रकाशकों के लिए ऐसी कोई व्यवस्था नहीं है जिससे उन्हें मौलिक तथा अनूदित साहित्य की पाण्डुलिपियों के चयन में सहायता मिले। इसी कारण हिन्दी के अधिकतर प्रकाशक देश के पाठकों को हिन्दी-पुस्तकों की ओर आकृष्ट नहीं कर पा रहे हैं।

१५. विविध कारणों से हिन्दी-प्रकाशकों का समुचित प्रचार नहीं हो पा रहा है।

१६. हिन्दी प्रकाशन-क्षेत्र को एक बहुत बड़ा खतरा सामने दिखाई दे रहा है। वह है विदेशी सरकारों द्वारा लागत-मूल्य से भी कम दामों पर हिन्दी पुस्तकें प्रकाशित करके भारतीय बाजारों में बेचना। हिन्दी में प्रायः पाठक वैसे ही पुस्तकें खरीदकर नहीं पढ़ते और जो दो-चार पुस्तकें खरीदते हैं, वे यदि ऐसी ही पुस्तकों तक सीमित रहे तो प्रकाशक-जगत् उनके सहयोग से भी वंचित रह जायगा। हिन्दी के प्रकाशक इस कठिनाई का सामना कैसे कर सकेंगे, यह एक विचारणीय विषय है।

१७. हमारे देश में प्रकाशन सम्बन्धी शिक्षा देने के लिए कोई भी शिक्षण-संस्था नहीं है। मुद्रण की शिक्षा देने का प्रयत्न सरकार द्वारा किया जा रहा है, किन्तु वह नगण्य है।

१८. हिन्दी के प्रकाशकों को पुस्तक-व्यवसाय-सम्बन्धी कानूनों, यथा कॉपीराइट ऐक्ट, लाइब्रेरी ऐक्ट, आदि की सूचना उपयुक्त रूप से इसलिए प्राप्त नहीं होती कि उन्हें ऐसी सामग्री अंग्रेजी में ही उपलब्ध होती है, हिन्दी में नहीं। राष्ट्रभाषा हिन्दी में इन सामग्रियों के उपलब्ध होने पर सम्भवतः हिन्दी प्रकाशक कानून-सम्बन्धी अपनी कठिनाइयों का स्वतः हल कर सकेंगे।

संगठन और सुझाव

प्रकाशन-व्यवसाय को संगठित करना नितान्त आवश्यक है। देश में गत १० वर्ष से विभिन्न प्रकाशक-संगठन इस दिशा में कार्य कर रहे हैं। बहुत हद तक उन्हें व्यवसाय के स्वार्थों की रक्षा करने में सफलता भी मिली है, परन्तु इतने संगठन के बावजूद भी हम अपने लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर पाये हैं।

प्रत्येक पुस्तकालय के लिए श्रेष्ठतम

नवम्बर मास के प्रकाशन

● उपन्यास

माधवी :	गुलशन नन्दा	४.५०
शान्ति संघर्ष और प्रेरणा :	सत्यप्रसाद पांडे	५.२५

● राजनीतिक

ऐटम और नेहरू :	बसन्तकुमार चटर्जी	३.००

● जीवनोपयोगी

आपका व्यक्तित्व :	आनन्दकुमार	४.००

● स्पोर्ट्स

क्रिकट :	पी० एन० अग्रवाल	१.२५

अक्तूबर मास के प्रकाशन

● स्पोर्ट्स

खेलें कैसे ? :	पी० एन० अग्रवाल	५.२५

● उपन्यास

तन के उजले, मन के काले :	जमनादास 'अख्तर'	३.२५
नसीम :	शौकत थानवी	३.५०

● विज्ञान

चन्द्रलोक (सचित्र) :	बसन्तकुमार चटर्जी	२.५०

● काव्य

ज़फ़र की गजलें :	नूरनबी अब्बासी	२.५०

सितम्बर मास के प्रकाशन

● उपन्यास

सूखे पेड़, सब्ज पत्ते :	गुलशन नन्दा	४.५०
आंचल में दूध, आँखों में पानी :	यादवेन्द्र शर्मा चन्द्र	५.००
ग़ज़ाला :	शौकत थानवी	३.७५

● काव्य

उर्दू की सर्वश्रेष्ठ गजलें :	सं० नूरनबी अब्बासी	२.५०

● कहानियाँ

दो गज जमीन :	टालस्टाय	३.००

व्यापारियों और लायब्रेरियों को विशेष सुविधा, बड़े सूचीपत्र और विवरण के लिये लिखिए :

नारायणदत्त सहगल एण्ड सन्ज़

दरीबा कलां, दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैंने ऊपर प्रकाशकों की अनेकानेक समस्याओं पर अपने विचार प्रकट किये हैं। जो समस्याएँ बताई गई हैं उनके समाधान भी हैं। उपरोक्त समस्याओं को सुलझाने के लिए आवश्यक है कि हम निम्नलिखित विधि से अखिल भारतीय प्रकाशक संघ को सम्पुष्ट बनायें। संघ की मज़बूती ही हमारे व्यवसाय को संगठित और लाभदायक बना सकती है। ऐसी स्थिति में दो पहलुओं को लेकर विचार करना है—

अ. संगठन की रूपरेखा।

ब. संगठन के कार्य।

संगठन की रूपरेखा

१. अखिल भारतीय हिन्दी-प्रकाशक संघ केन्द्रीय संस्था का कार्य करे। २ हिन्दी प्रकाशकों की सभी प्रान्तीय तथा अन्य संस्थाएँ इससे सम्बद्ध हो जायें। ३. प्रान्तीय संस्थाएँ प्रत्येक जिले में प्रकाशकों तथा पुस्तक-विक्रेताओं के सम्मिलित संगठन बनायें। ४. प्रान्तीय संगठन प्रान्तीय समस्याओं से और जिला संगठन जिले की समस्याओं से केन्द्रीय संघ को सूचित करते रहें। केन्द्रीय संघ समस्याओं के समाधान में उनकी यथासाध्य सहायता करें।

संगठन का कार्यक्षेत्र

संगठन का कार्यक्षेत्र दो भागों में विभक्त होना चाहिए—१. संगठन के निजी साधनों का कार्यक्षेत्र और २. सरकारी सहायता का कार्यक्षेत्र।

१. संगठन के निजी साधनों का कार्यक्षेत्र

१. सदस्यों को पाण्डुलिपि के चयन में सहायता पहुँचाना। २. ऐसे साहित्य का प्रकाशन करना जिससे प्रकाशन की समस्याओं पर प्रकाश पड़े। ३. बड़े-बड़े शहरों में पुस्तक प्रदर्शनियों का आयोजन करना। ४. संघ के तत्त्वावधान में नये प्रकाशकों को पुराने प्रकाशकों के यहाँ प्रकाशन-व्यवसाय-सम्बन्धी ट्रेनिंग प्राप्त करने की सुविधा दिलाना। ५. संयुक्त विज्ञापन-प्रणाली की व्यवस्था करना, ताकि नवीन प्रकाशनों की सूचना एक ही स्थान से देश-भर में पहुँच सके। ६. हिन्दी के विभिन्न विषयों पर पुस्तकों की पृथक्-पृथक् सूची प्रकाशित करना। ७. प्रान्तीय संगठनों के द्वारा जिलों में या कम-से-कम प्रान्तों की राजधानियों में ऐसी दुकानें खुलवाना जहाँ सभी प्रकाशकों का माल सुलभ हो सके। यह कार्य सहकारिता के आधार पर होना चाहिए। ८. पुस्तक-विक्रेताओं का केन्द्रीय संगठन बनवाना तथा उनकी समस्याओं पर विचार करना। ९. प्रकाशन का स्तर ठीक करने के लिए छपाई, डिज़ाइन, काग़ज़-सम्बन्धी खर्चों को आँक कर पुस्तकों के मूल्य का स्तर ठीक करना। १०. ऐसी व्यवस्था करना कि सदस्यों द्वारा हिन्दी का अच्छा प्रकाशन छपते ही कम-से-कम १०० प्रतियां अविलम्ब बिक जायें। ११. बुक सोसाइटी का निर्माण करना, जो प्रतिमास हिन्दी में प्रकाशित होनेवाले विभिन्न विषयों के सर्वश्रेष्ठ प्रकाशनों की घोषणा करे। इस समिति में लेखक, प्रकाशक तथा सरकार तीनों के प्रतिनिधि हों। १२. संघ का मासिक पत्र प्रकाशित करना जिसके द्वारा प्रान्तीय तथा जिलों की संस्थाओं की सूचना प्रकाशित होती रहे। यह पत्र नये प्रकाशनों के सम्बन्ध में भी प्रकाश डाले। १३. कमीशन-सम्बन्धी नियन्त्रण करना ताकि पुस्तक-विक्रेता लाभान्वित हों। १४. लेखक-प्रकाशक सम्बन्ध सुदृढ़ करने के लिए एक समिति का निर्माण करना, जिसमें लेखक और प्रकाशक दोनों के एक-एक प्रतिनिधि रहें। १५. प्रकाशकों को व्यवसाय-सम्बन्धी कानूनी बातों की सलाह देना, यथा रजिस्ट्रेशन, कॉपीराइट ऐक्ट, लाइब्रेरी ऐक्ट आदि। १६. व्यापार-विरोधी ऐसे तत्त्वों पर नियन्त्रण करना जो कि आदेश देकर भी पुस्तकें लौटा देते हैं। प्रकाशन-सम्बन्धी सरकारी समितियों में प्रकाशकों का प्रतिनिधित्व करना।

२. सरकारी सहायता का कार्यक्षेत्र

१. केन्द्रीय सरकार की सहायता से प्रकाशन-व्यवसाय-सम्बन्धी प्रशिक्षण संस्थाएँ खुलवाना। २. पोस्टेज, सेल्सटैक्स से सम्बन्धित मन्त्रालयों से मिलना। ३. पुस्तक-व्यवसाय से सम्बन्धित सामानों की प्राप्ति में सदस्यों की सहायता करना; यथा काग़ज़, मशीनरी के पार्ट मिलने की दिक्कतों को सुलझाना। ४. सरकार की सहायता से 'नेशनल रजिस्टर ऑफ पब्लिशर्स' विदेशों के ढंग का खुलवाना, ताकि सरकार के पास प्रकाशकों को प्रकाशन-व्यवसाय-सम्बन्धी सरकारी अनुसन्धानों की सूचना देने की सुविधा हो। ५. पुस्तकों के राष्ट्रीयकरण के विषय में विभिन्न

(शेष पृष्ठ १५२ पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ट्रेनिंग कक्षाओं तथा पुस्तकालयों के लिये अत्यन्त उपयोगी

भारतीय शिक्षा का संक्षिप्त इतिहास

लेखक
बंशीधर सिंह, एम० ए०
भूदेव शास्त्री, एम० ए०
मूल्य ४.५०

"प्रस्तुत पुस्तक में भारत की प्राचीन तथा अर्वाचीन शिक्षा-प्रणालियों का उचित एवं सामयिक मूल्यांकन किया गया है। वैदिक, बौद्ध, मुस्लिम, ब्रिटिशकालीन तथा स्वातन्त्र्योत्तर-कालीन शिक्षा को पृथक्-पृथक् अध्यायों में रखा गया है। प्राचीन काल से लेकर अद्यावधि जो शिक्षा-सम्बन्धी सुधार हुए हैं उनका संक्षेप में पर्यवेसण किया गया है। इसमें विभिन्न यूनिवर्सिटी कमीशनों, कमेटियों और उनकी रिपोर्टों का भी वर्णन है। पुस्तक सभी वर्ग के लोगों के लिए पठनीय एवं संग्रहणीय है।"

—अमृत बाज़ार पत्रिका, इलाहाबाद

कक्षाध्यापन एवं पाठ-सूत्र निर्माण

लेखक
बंशीधर सिंह, एम० ए०
भूदेव शास्त्री, एम० ए०
मूल्य ५.००

"प्रस्तुत पुस्तक कक्षाध्यापन की उपयोगिता को दृष्टि में रखकर लिखी गई है। इस प्रयास में लेखकद्वय को पर्याप्त सफलता मिली है। प्रशिक्षण-संस्थाओं के विद्यार्थियों के लिए यह पुस्तक अत्यन्त उपयोगी है। हिन्दी में ऐसी पुस्तक नहीं आती। इस पुस्तक को सामने लाने के लिए लेखक-प्रकाशक दोनों ही बधाई के पात्र हैं। पुस्तक का कागज़ और उसकी छपाई सुन्दर है।"

—भारत, प्रयाग

बुनियादी शिक्षा के सिद्धान्त

लेखक
मिलापचन्द्र दुबे
मूल्य ५.००

पं० जवाहरलाल नेहरू के मतानुसार स्वतन्त्र भारत में बुनियादी शिक्षा का बहुत ज्यादा महत्त्व है। प्रस्तुत पुस्तक में उस महत्त्व का दिग्दर्शन तथा बुनियादी शिक्षा के सिद्धान्तों का भली प्रकार परिचय कराया गया है। पुस्तक में अनेक फोटोग्राफ दिये गए हैं जिनसे बुनियादी शिक्षा-प्रणाली का क्रियात्मक रूप समझने में बहुत सहायता मिलती है।

समवायी शिक्षण

लेखक
मिलापचन्द्र दुबे
मूल्य ५.००

"...पुस्तक को पढ़ने से प्रतीत होता है कि लेखक को अपने विषय का केवल सिद्धान्तीय ज्ञान ही नहीं अपितु क्रियात्मक अनुभव है।... पुस्तक के उत्तरार्द्ध में विभिन्न विषयों के पाठसूत्र दिये गए हैं जो प्रशिक्षण विद्यालयों के छात्राध्यापकों के लिए बहुत उपयोगी सिद्ध होंगे।"

—हिन्दुस्तान, नई दिल्ली

इसी क्रम के दो प्रकाशन अगले माह में आ रहे हैं

- **अमेरिकी जन शिक्षा का स्वरूप**
  लेखक
  प्रो० एन० एस० चौहान
  प्रो० आर० पी० सिंह

- **अध्यापन सिद्धान्त एवं विशिष्ट पद्धतियाँ**
  लेखक
  बंशीधर सिंह, एम० ए०
  भूदेव शास्त्री, एम० ए०

गयाप्रसाद एण्ड सन्स, आगरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तक-परिचय

उपन्यास

अतृप्त : अभी हाल ही में **हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय ज्ञानवापी, वाराणसी** द्वारा प्रकाशित साहित्याचार्य 'मग' का नया उपन्यास है। ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर लिखी गई इस कथाकृति में प्रेम, वासना तथा साधना के संघर्ष-विघर्ष की रोचक कथा प्रस्तुत की गई है। वातावरण की सृष्टि, कथा-प्रसंगों की संघटना तथा चरित्र-चित्रण की दृष्टि से अपनी इस कृति में लेखक को पर्याप्त सफलता मिली है। उदयाश्व, जहाँनारा तथा मालती आदि के चरित्र बड़े मनोयोगपूर्वक चित्रित हैं। उपन्यास की सफाई-छपाई तथा मुद्रण-शैली अत्यन्त आकर्षक है। मूल्य ४ रु० ७५ न० पै०।

* * *

आधुनिका : लघु उन्यास, लेखक उग्रनारायण मिश्र, प्रकाशक, **ज्ञान विकास मन्दिर, जमालपुर**। क्राउन साइज़, पृष्ठसंख्या १३०, मूल्य ढाई रुपये। उपन्यास-शैली में एक प्रारम्भिक प्रयास है। कथा साधारण है, पात्र प्रायः काल्पनिक हैं।

* * *

लोक-परलोक : हिन्दी के सुप्रसिद्ध नाटककार तथा उपन्यास-लेखक पं० उदयशंकर भट्ट का नव प्रकाशित उपन्यास है। इस वातावरण-प्रधान उपन्यास में उत्तर प्रदेश के पश्चिमी भाग में गंगा तट पर स्थित एक तीर्थ ग्राम का मर्मस्पर्शी जीवन-चित्र प्रस्तुत किया गया है। यह ग्राम वास्तव में एक प्रतीक मात्र है। हमारे उन तीर्थधामों का जहाँ के जीवन में पण्डों, पुजारियों, मठाधीशों, साधुओं, संन्यासियों, भिखारियों, तीर्थ-यात्रियों आदि की ही प्रमुखता है। हमारे इन तीर्थधामों में कैसा कोढ़ फैला हुआ है और धर्म के ठेकेदार श्रद्धालु तीर्थकों की अन्धभक्ति का कैसा लाभ उठाते हैं इसका कच्चा चिट्ठा प्रस्तुत कर देने में भट्टजी ने तनिक भी संकोच नहीं किया है। कथा-प्रसंगों का संयोजन तथा चरित्र-चित्रण उच्च कोटि का है। चमेली के आत्म-बलिदान प्रसंग उपस्थित करके उपन्यासकार ने तीर्थधामों की कलुष कलिमा के मोचन का एक मार्ग सुझाया है। अपने आंचलिक उपन्यास 'सागर लहरें और मनुष्य' की तरह भट्टजी ने लोक-परलोक के रूप में भी हिन्दी-साहित्य को एक उत्कृष्ट कथा-कृति भेंट की है। इसका प्रकाशन हुआ है **राजकमल प्रकाशन दिल्ली, इलाहाबाद, बम्बई, पटना** से और मूल्य है ३ रु० ५० न० पै०।

* * *

छलना : श्री गुरुदत्त जी का नवीनतम उपन्यास है। श्री गुरुदत्त जी के उपन्यास सामाजिक और राजनीतिक मिले-जुले रहते हैं। इस उपन्यास में लेखक ने अपने विश्व-व्यापी दृष्टिकोण से विश्लेषण प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया है। उपन्यासकार ने साथ ही आधुनिक नारी के चरित्र तथा नर का मनोविश्लेषण किया है। दाम्पत्य जीवन को सुखमय बनाने वाले मार्ग की ओर भी इस उपन्यास में दिशा निर्देश हुआ है। धनीराम जैसा चरित्र श्री गुरुदत्त की विशिष्ट उपलब्धि है। मुखपृष्ठ का चित्र अत्यन्त सादा है। इसका प्रकाशन हुआ है **भारती साहित्य सदन नई दिल्ली—१** से और मूल्य ६ रुपये है।

* * *

मगधपति : लेखक श्री धूमकेन्तु; प्रकाशक **वोरा एण्ड कं० पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड बम्बई—२**, पृष्ठ संख्या २५८, मूल्य ५ रुपये। ऐतिहासिक उपन्यासों की माँग हिन्दी में बराबर बढ़ रही है। श्री धूमकेतु जी का यह उपन्यास इस दिशा में सफल प्रयास है। उपन्यास की कथावस्तु बौद्ध-कालीन मगधपति अजातशत्रु तथा उनके महामन्त्री वर्षाकर ने किस प्रकार गणतन्त्रों की अवहेलना कर सामन्तवाद को प्रश्रय दिया, से सम्बन्ध रखती है। यह कृति प्राचीन भारत के वैभव, विलास और शौर्य की चिरनवीन झाँकी प्रस्तुत करती है।

* * *

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेरी पति-विजय : गुजरात के प्रसिद्ध कथाकार श्री रमणलाल व० देसाई, का नव प्रकाशित उपन्यास है। लेखक ने कई वर्ष पौराणिक साहित्य का मन्थन कर 'शची पुलोमा नामक उपन्यास का प्रणयन किया। श्री श्यामलाल मैं० मेढ़ ने इसका अनुवाद 'मेरी पति-विजय' के नाम से प्रस्तुत किया है। पुलोमा नामक असुर की पुत्री—शची इन्द्राणी का विवाह देवेश्वर-इन्द्र के साथ कैसे हुआ, इसी पृष्ठभूमि पर यह उपन्यास आधारित है। सरल बोधगम्य शैली को ही इन्होंने अपने उपन्यास का माध्यम बनाया है। इस कृति को बम्बई सरकार की ओर से सर्वश्रेष्ठ उपन्यास घोषित कर पुरस्कार दिया गया है। पुस्तक का प्रकाशन हुआ है **वोरा एण्ड कं० पब्लिशर्स (प्राइवेट) लिमिटेड बम्बई–२** से; पृष्ठ संख्या ३७३; मूल्य ६) रुपये।

* * *

किसी एक की भ्रमण-गाथा : यह मराठी के प्रसिद्ध साहित्यकार **श्री गोपाल नीलकण्ठ दाण्डेकर** की कृति है। लेखक ने एक नवयुवक के राजनीतिक आन्दोलन में पड़कर किये गए भ्रमण तथा उसके तीखे तथा मीठे अनुभवों को संजोकर इस उपन्यास में रख दिया है। मराठी-भाषी लेखक का हिन्दी पर सुन्दर अधिकार है। कहीं भी दुरूहता दर्शित नहीं होती। प्रकाशक **महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा सभा, पूना** तथा मूल्य ४) रुपये है।

* * *

मेवाड़ का अरुणोदय : गुजराती के प्रसिद्ध स्वर्गीय लेखक रमणलाल व० देसाई का यह ऐतिहासिक उपन्यास है। यद्यपि इस कथावस्तु को लेकर अनेक उपन्यास लिखे गए हैं पर पात्र, कथा वस्तु तथा संवाद-योजना में लेखक की प्रतिभा का परिचय मिलता है। यही उपन्यास की विशेषता है। इसके अनुवादक हैं एम० एल० मुन्शी। उपन्यास का प्रकाशन हुआ है **वोरा एण्ड कं० पब्लिशर्स (प्राइवेट) लिमिटेड बम्बई–२** की ओर से और मूल्य है २) रुपये।

* * *

मेरा पहला प्यार : तुर्गनेव के दो प्रसिद्ध लघु-उपन्यासों, 'माई फ़र्स्ट लव' तथा 'आस्या' का अनुवाद; अनुवादक हैं श्री शिवदानसिंह चौहान तथा श्रीमती विजय चौहान। अनुवादक-द्वय ने दो पृष्ठों की भूमिका में इन दोनों उपन्यासों

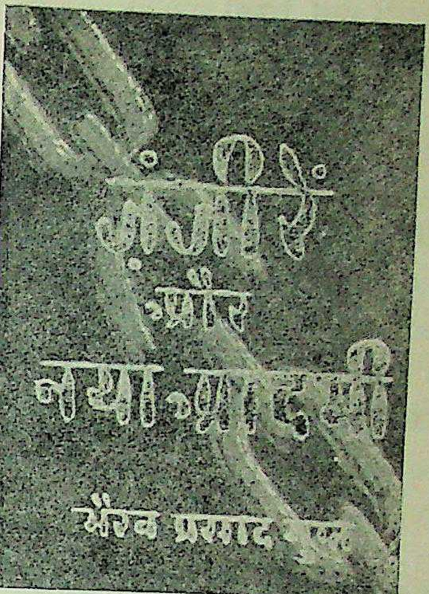

ज़ंजीरें और नया आदमी

भैरवप्रसाद गुप्त

उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा पुरस्कृत

गुलामी और पुरानी जागीरदारी-सामन्ती प्रथा की कहानी आज के भारतीय परिवेश में भैरव प्रसाद गुप्त ने कही है। गाँव की कहानी कहने में गुप्तजी को जो दक्षता प्राप्त है, वह उनकी रचनाओं और विशेषकर बहुश्रु उपन्यास 'गंगा मैया' से सिद्ध है। 'ज़ंजीरें और नया आदमी' उनका नया मार्का है।

क्राउन १/८ ● पृष्ठ ३७२ ● आकर्षक आवरण
मूल्य रु० ५.००

हंस प्रकाशन

९३, जीरो रोड, इलाहाबाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का पाठकोपयोगी विवेचनात्मक परिचय भी दिया है। **राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली** द्वारा प्रकाशित इस पुस्तक का मूल्य २) रुपये ५० नये पैसे है।

* * *

'लोकलाज' : श्री जयप्रकाश शर्मा का तीसरा उपन्यास है। इस उपन्यास में लेखक ने समाज के जिस मार्ग का तथ्य चित्रण किया है, वह हमारे लिए पठनीय है। सामाजिक स्वीकृतियों को उभारकर सामने लाने वाले लेखकों में श्री जयप्रकाश अपना स्थान बनाते जा रहे हैं। क्राउन साइज़ के १७० पृष्ठ का यह सजिल्द उपन्यास **सुशील कार्यालय, ४५६, खारी बावली दिल्ली,** से तीन रुपये में प्राप्त किया जा सकता है।

* * *

कविता

अतिमा : कविवर श्री सुमित्रानन्दन पंत की इसी नाम की कृति का दूसरा संस्करण **राजकमल प्रकाशन** द्वारा नई साज-सज्जा के साथ प्रकाशित किया गया हैं। 'अतिमा' में पंतजी की अप्रैल, ५४ से लेकर फरवरी, ५५ तक की ५५ रचनाएँ संग्रहीत हैं। कवि के अनुसार इस संग्रह में 'प्रकृति सम्बन्धी कविताओं के अतिरिक्त, अधिकतर ऐसी ही रचनाएँ संग्रहीत हैं जिनकी प्रेरणा युग-जीवन के अनेक स्तरों को स्पर्श करती हुई सृजन चेतना के नवीन रूपकों तथा प्रतीकों में मूर्त हुई है। डिमाई आकार की पृष्ठ-संख्या १४४, उत्तम छपाई, पूरे कपड़े की जिल्द, आकर्षक कवर, मूल्य ४ रुपये मात्र।

* * *

आठवां स्वर : श्री रामावतार त्यागी का नवीनतम कविता-संग्रह है। इसमें उनके ५८ गीत संग्रहीत हैं। त्यागी इस पीढ़ी के ज्वलन्त गीतकारों में अपना अन्यतम स्थान रखते हैं। इस संग्रह के प्रायः सभी गीतों में उनकी कल्पना तथा भावना साधना का सम्बल पाकर अत्यन्त ही निखरे हुए रूप में हमारे सामने आई है। डिमाई साइज़ के १२० पृष्ठ की यह सुमुद्रित और सजिल्द पुस्तक **फ्रेंक ब्रदर्स दिल्ली** ने प्रकाशित की है और वहीं से साढ़े तीन रुपये में मिल सकती है।

* * *

पद वन्दन : में श्री शान्तिस्वरूप 'कुसुम' के ४० गेय गीतों का संग्रह है। यह कवि कुसुम का दूसरा काव्य-संग्रह है। कुसुम के गीतों की विशेषता उनके पढ़ने तथा सुनने दोनों ही में है। ये गीत इस बात के प्रत्यक्ष साक्षी हैं। क्राउन साइज़ के ९८ पृष्ठ का यह सजिल्द संग्रह **त्रिवेणी प्रकाशन, इलाहाबाद** ने प्रकाशित किया है और वहीं से दो रुपये में मिलता है।

* * *

वीचि गान : श्री अभयकुमार यौधेय की ५२ कविताओं का संग्रह है। इसमें प्रेम, शृंगार, उद्‌बोधन और निर्माण आदि विभिन्न भावनाओं के गीत समाविष्ट हैं। क्राउन साइज के ९२ पृष्ठ का यह कविता संग्रह **भारत समाचार समिति, मेरठ** की ओर से प्रकाशित हुआ है और वहीं से १ रुपये ५० नये पैसे में मिल सकता है।

* * *

ओ अप्रस्तुत मन : हिन्दी के सुप्रसिद्ध तरुण कवि श्री भारत भूषण अग्रवाल की 'नयी' कविताओं का अभी हाल ही में प्रकाशित संग्रह है। इसमें १९४३ से १९५८ तक की उनकी छोटी-बड़ी कुल ८४ कविताएँ संग्रहीत हैं। इस संग्रह की कविताएँ हिन्दी-काव्य की नयी प्रवृत्ति और शैली की ही दृष्टि से महत्वपूर्ण नहीं हैं बल्कि इनमें अनुभूति की गहराई, सुललित शब्द-योजना तथा लयबद्धता सहज भावबोध की प्रक्रिया की सम्भावना बहुत अधिक बढ़ा देती हैं और इन्हीं गुणों के कारण सामान्य पाठकों के लिए उनका रस ग्रहण करना बहुत आसान है। भारतभूषण जी के इस संग्रह को अवश्य ही लोकप्रियता प्राप्त होगी इसमें सन्देह नहीं। सफाई, छपाई आवरण आदि सभी सुरुचिपूर्ण हैं। डिमाई आकार के १५१ पृष्ठों के इस सजिल्द कविता-संग्रह का प्रकाशन हुआ है **राजकमल प्रकाशन (प्रा०) लि० दिल्ली, इलाहाबाद, बम्बई, पटना, मद्रास** से और मूल्य है ४) रु०।

* * *

नारायणी : बिहार के सुप्रसिद्ध कवि श्री ब्रजकिशोर नारायण के लोकप्रिय कविता-संग्रह का नया परिवर्धित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुछ महत्त्वपूर्ण पुस्तकें

आज का भारतीय साहित्य

प्रस्तावना—डॉ० राधाकृष्णन्

यह ग्रन्थ साहित्य अकादेमी द्वारा 'कान्टेम्परेरी इंडियन लिटरेचर' के संशोधित संस्करण का हिन्दी अनुवाद है। इसमें प्रत्येक भारतीय भाषा की संक्षिप्त रूपरेखा उसी भाषा के अधिकारी विद्वान द्वारा दी गई है।

मूल्य ७.०० रु०

सुकवि समीक्षा

डॉ० दशरथ ओझा तथा

डॉ० विजयेन्द्र स्नातक

[हिन्दी के प्रमुख प्राचीन और अर्वाचीन कवियों का विवेचनात्मक अध्ययन]

साहित्य शैली में लिखा कवियों का यह परिचय पाठकों को मुग्ध करने में समर्थ है। समीक्षा के नीरस वातावरण से दूर रसलीन होकर वे इन कवियों का अध्ययन कर सकेंगे।

मूल्य ५.०० रु०

आज के उर्दू शायर और उनकी शायरी

सम्पादक—श्री प्रकाश पंडित

इस ग्रन्थ में उर्दू के २५ लोकप्रिय शायरों की जीवनी और उनकी बेहतरीन ग़ज़लों, नज़्मों, रुबाइयों, शेरों का संग्रह और साथ ही प्रत्येक शायर का कलात्मक पेन-स्केच दिया गया है।

मूल्य ८.०० रु०

संस्कृति के चार अध्याय

श्री रामधारीसिंह दिनकर

भूमिका—पं० जवाहरलाल नेहरू

यह ग्रन्थ भारतीय संस्कृति विषयक विश्वकोष है। सैकड़ों पुस्तकों के अध्ययन और चिंतन का सार इसमें सुलभ है। पंडित नेहरू ने प्रत्येक भारतीय लिए केइस ग्रन्थ का अध्ययन करना आवश्यक बताया है।

मूल्य १५.०० रु०

मनोविश्लेषण

अनु०—श्री देवेन्द्रकुमार वेदालंकार

[फ्रायड के महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ का हिन्दी अनुवाद]

आधुनिक मनोविज्ञान के महान् आचार्य फ्रायड के इस महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ का हिन्दी में यह प्रामाणिक अनुवाद है। हिन्दी माध्यम से मनोविज्ञान के अध्ययन में रुचि रखने वाले पाठकों के लिए यह पुस्तक उपयोगी सिद्ध होगी।

मूल्य १०.०० रु०

विश्व-साहित्य की रूपरेखा

डॉ० भगवतशरण उपाध्याय

इस अध्ययनपूर्ण ग्रन्थ में विश्व की प्रमुख २८ भाषाओं के साहित्यों का दिग्दर्शन कराया गया है। साहित्यकारों ने किन-किन परिस्थितियों में अपनी कृति का निर्माण किया, उनके देश पर उसका क्या असर हुआ—यह सब पढ़ते ही बनता है।

मूल्य १२.०० रु०

राजपाल एण्ड सन्ज़, कश्मीरी गेट, दिल्ली-६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तथा संशोधित संस्करण है। विषयान्तर होने के कारण कुछ पुरानी कविताएँ इसमें से निकाल दी गई हैं और कुछ नयी कविताएँ जोड़ दी गई हैं। कुछ अन्य कविताओं में साधारण संशोधन किये गए हैं। इसका पहला संस्करण जब प्रकाशित हुआ था तो केवल हिन्दी के वरिष्ठ आचार्यों, साहित्यकारों, पत्र-पत्रिकाओं आदि ने ही नहीं बल्कि सामान्य पाठकों ने भी इसकी भूरि-भूरि प्रशंसा की थी। वास्तव में श्री नारायण के काव्य में भावगाम्भीर्य के साथ-ही-साथ एक ऐसी सरलता भी मिलती है जिसके कारण उनकी कविताएँ जन-मानस को बरबस स्पर्श कर लेने की शक्ति रखती हैं। स्निग्ध प्रवाह, सुगम एवं सुललित शब्द-योजना के कारण ही उनकी एक अपनी अलग शैली दिखाई देती है। 'नारायणी' के इस नये संस्करण का हिन्दी-जगत् में समुचित स्वागत होगा ऐसी हमें आशा है। इसका प्रकाशन हुआ है **श्री अजन्ता प्रेस** (प्रा०) लि० पटना-४ से और मूल्य है २) रु० ५० न० पैसे।

* * *

सुहागन कौन ?

केवल विवाह हो जाने से ही स्त्री सुहागन नहीं बन जाती, (१) सो सुहागन कहलाये जो पिया मन भाये, जो पति को प्रसन्न रखने के २६ नियम जाने, (२) जो सास, ससुर जेठ ननद आदि से आदर पाने के १५ नियम जानती हो, (३) जो घर के प्रबन्धादि में ३३ कर्त्तव्यों का पालन करती हो, (४) जो हठी और कटु-भाषणी न हो, (५) जिसे सन्तान का पालन पोषण आता हो।

साधारणतया स्त्रियाँ इतनी बातें कहाँ जानती हैं। उन्हें 'पत्नी पथ-प्रदर्शक' पढ़ने को दें, तो वे सब गुणों की स्वामिनी बनकर सच्ची सुहागन कहलाएं। पति का भला इसी में है कि पत्नी को यह पुस्तक अवश्य पढ़ाए। हिन्दी, उर्दू, गुरुमुखी में मूल्य १।।) है।

पता—कविराज हरनाम दास बी० ए० एण्ड सन्ज़, गौरीशंकर मन्दिर (लाल किले के पास) चाँदनी चौक, दिल्ली-६

आषाढ़ के बादल : नवीन लेखक संघ द्वारा प्रकाशित 'आषाढ़ के बादल' उदीयमान कवियों की रचनाओं का संग्रह है। इस कविता में अनेक भावधाराओं, साहित्यिक प्रवृत्तियों तथा विविध शैलियों का दिग्दर्शन होता है। मूल्य १·५० न० पैसे।

* * *

सागर के सीप : श्री भारत भूषण के नवीनतम गीतों का संग्रह है। इसमें कवि के कुल ५१ गीत संकलित हैं जिनमें अनुभूति की गहराई की झलक मिलती है। इसका प्राप्ति-स्थान है—**आत्माराम एण्ड सन्स,** दिल्ली-६, तथा मूल्य है तीन रुपये आठ आने।

* * *

दो गीत : श्री नीरज जी का हिन्दी में अपना विशिष्ट स्थान है। प्रस्तुत पुस्तक में उनके दो गीत—'मृत्यु गीत' तथा 'जीवन गीत' संकलित हैं। इसके प्रकाशक हैं **आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली-६** और मूल्य है १ रुपया ८ आना।

* * *

टूटा हुआ आदमी : श्री सिद्धनाथ कुमार की कविताओं का नवप्रकाशित संग्रह है। प्रायः सभी रचनाओं की भाषा सरल, शैली सुबोध और भाव मर्मस्पर्शी हैं। कहीं-कहीं तीखे व्यंग्य की प्रखरता का भी आभास मिलता है। इस पुस्तक का प्रकाशन **दिल्ली पुस्तक सदन, दिल्ली, पटना,** ने किया है और यह वहीं से तीन रुपये में मिलता है।

* * *

जब निमोड़ा गाता है : में श्री रामनारायण उपाध्याय ने निमाड़ी लोकगीतों का सांस्कृतिक संकलन प्रस्तुत किया है। लेखक ने प्रारम्भ में निमाड़ी लोकगीतों का परिचय देकर उनकी विशद भूमिका प्रस्तुत की है और बाद में जन्म, विवाह, गौना, श्रृंगार और व्रत तथा उत्सवों के अवसर पर गाये जाने वाले विभिन्न गीत प्रस्तुत किये हैं। साथ ही लोरी और बच्चों के गीत भी दे. दिये गए हैं। क्राउन साइज के २३२ पृष्ठों का यह संग्रह **उषा प्रकाशन गृह यशवन्तगंज, इंदौर** ने प्रकाशित किया है और वहीं से चार रुपये में मिलता है। डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल की विशद भूमिका के अतिरिक्त इस पुस्तक पर महापंडित राहुल-सांकृत्यायन, रामनरेश त्रिपाठी, तथा डॉ० धर्मवीर भारती

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ादि अनेक विद्वानों की सम्मतियां भी प्रकाशित हैं।

* * *

नगीता : रामचरितमानस की शैली में गीता का पद्यानुवाद। अनुवादक, 'बच्चन'। प्रकाशक, **राजपाल एण्ड सन्स** दिल्ली। डिमाई आकार, पृ० स० ७६, मूल्य तीन रुपये। सिद्ध कवि बच्चन की 'जनगीता' मानस की शैली में लिखा हुआ गीता का अनुवाद है। जनयुग में जनगीता की चना सामयिक ही है। इसकी रचना-प्रेरणा के पीछे क आध्यात्मिक घटना है, अगर ऐसा सम्भव हुआ है तो स अतिव्यस्त भौतिक जीवन का भविष्य अति मंगलय है। पाठक जनगीता को गीता और रामायण की दृष्टि न पढ़कर केवल साहित्य की दृष्टि से पढ़ेंगे तो अच्छा होगा।

* * *

ोस्तों की शायरी : प्रकाशक ने पुस्तक के शीर्षक के साथ ह भी लिखा है—"नौजवानों की पसन्द के कुछ चुने हुए रों का संकलन," और संकलनकर्ता हैं, 'क़ातिल' नारसी ! गुलाबी रिबन से बँधे कवर पर एक नीमबन्द ाँखों वाली कमसिन की तस्वीर है, पीछे एक मस्जिद की मीनारें तथा पृष्ठभूमि में आधे चाँद पर बादल का ीना पर्दा आसमान में टंगा हुआ है। प्रत्येक पृष्ठ पर लकी स्याही से उमरखय्यामी स्टाइल का रेखाचित्र है। काशक हैं **भारतीय प्रकाशन मण्डल, वाराणसी**, मूल्य जिल्द का २ रुपये, सजिल्द का ढ़ाई रुपये।

* * *

द्व और नाचघर : बच्चन की कविताओं का नवीनतम ंग्रह जिसमें १९४४ से १९५७ तक मुक्त छन्द में लिखित नकी २८ कविताएँ दी गई हैं। 'मधुशाला' और "निशामन्त्रण' के कवि की नितान्त विभिन्न अनुभूतियों को ाणी देने वाली ये कविताएँ नये परिवेश में आयी हैं। च्चनजी के शब्दों में यह संग्रह "विशुद्ध काव्य-संग्रह है।" ृष्ठ संख्या १७६, सजिल्द, सुमुद्रित, मूल्य ३ रुपये मात्र।

* * *

बसन्त और पतझर : श्री विनोदचन्द्र पाण्डेय की अनुभूति की ६० कविताओं का संकलन। प्रकाशक **अनुराग प्रकाशन**, गोरखपुर। विक्रेता विश्वविद्यालय प्रकाशन, गोरखपुर, मूल्य १ रुपया ५० नये पसे।

* * *

हफ़ीज़ जालन्धरी : उर्दू के लोकप्रिय शायरों के जीवन और संकलन माला में **राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली** द्वारा यह नवीनतम पुस्तक है। यह माला वास्तव में लोकप्रिय हुई है और अन्य पुस्तकों की भाँति हफ़ीज़ के जीवन तथा कलाम का परिचय भी संग्राह्य है। मूल्य १ रुपया ५० नये पैसे।

* * *

कहानी

कल्पना : लेखक, उग्रनारायण मिश्र, प्रकाशक, **ज्ञानविकास मन्दिर, जबलपुर**। क्राउन साइज, पृष्ठ सं० ११८, मूल्य २)। प्रस्तुत पुस्तक दस कहानियों का संग्रह है। ये कहानियाँ पुरानी पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हैं। प्रायः कहानियों का स्तर भावुकतापूर्ण है और शैली अति प्राचीन है।

* * *

एक और अनेक

हिन्दी जगत् के सर्वप्रसिद्ध श्रेष्ठ उपन्यासकार
श्री गुरुदत्त की नवीन रचना

एक और अनेक

एक नवीन विषय पर अनुपम एवं अनूठा उपन्यास

एक और अनेक

अत्यन्त ही रोचक एवं श्री गुरुदत्त की अन्य २७
प्रकाशित रचनाओं के समान अन्यतम

एक और अनेक

पढ़ने योग्य, आपके पुस्तकालय की शोभा तथा शुभ
अवसरों पर भेंट में देने योग्य

भारती साहित्य सदन

३०/९० कनॉट सरकस, नई दिल्ली-१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजकमल द्वारा प्रकाशित पंत-साहित्य

रश्मिबंध

श्री सुमित्रानन्दन पंत के ४० वर्ष के (१९१८-१९५८) कवि-जीवन के कृतित्व में से कवि द्वारा स्वयं किया गया संचयन, सुबोध, नई भूमिका के साथ। १५ नवम्बर '५८ को प्रकाशित होगा।
मूल्य २ रुपये ५० नये पैसे।

चिदम्बरा

पंतजी की प्रतिनिधि-कविताओं के पहले संकलन : 'पल्लविनी' के बाद की पिछले २० वर्ष की उत्कृष्ट कविताओं का नया संकलन, लम्बी विवेचनात्मक भूमिका के साथ। डिमाई आकार के लगभग ५०० पृष्ठ। नवम्बर के अन्त तक प्रकाशित होगा।

अतिमा

दूसरा, सुमुद्रित संस्करण। मूल्य ४ रुपये। प्रकाशित हो गया है।

पल्लव

नया संस्करण। मूल्य ४ रुपये।
१५ नवम्बर को प्रकाशित होगा।

राजकमल
प्रकाशन प्राइवेट लि:
दिल्ली, बम्बई, इलाहाबाद, पटना, मद्रास

ऊँची नीची लहरें : शाह नसीर फ़रीदी द्वारा लिखित करुणारस में डूबी हुई, अथवा सामाजिक विषमताओं पर व्यंग्य से भरी हुई, अथवा ऐतिहासिक पृष्ठभूमि की १४ कहानियों का संग्रह है। डॉ० रामविलास शर्मा के शब्दों में इनमें "कल्पना ज्यादा यथार्थ कम, घटनाएँ ज्यादा चरित्र-चित्रण कम है। अनेक रसों में सफलता इस कहानी-संग्रह को महत्त्वपूर्ण बनाने के लिए काफ़ी है।" क्राउन आकार के १३२ पृष्ठ, सजिल्द पुस्तक, मूल्य २ रुपये; प्रकाशक : **रामप्रसाद एण्ड सन्स, आगरा।**

* * *

कुप्रीन की कहानियाँ : प्रसिद्ध रूसी साहित्यिक अलेक्ज़ेंडर ईवानोविच कुप्रीन की ८ लम्बी कहानियों का यह संग्रह **पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस (प्रा०) लिमिटेड, नई दिल्ली** ने प्रकाशित किया है, अनुवादक हैं श्री निर्मल वर्मा। कुप्रीन की कहानियों में रूसी जीवन के वैविध्य का चित्रण सूक्ष्मता और सहानुभूति से होता है और संग्रह की ये कहानियाँ इसकी पुष्टि करती हैं। डिमाई आकार के ३१२ पृष्ठ, सजिल्द, आकर्षक रंगीन कवर, मूल्य ६ रुपये, ५० नये पैसे।

* * *

नेकी और बदी तथा अन्य कहानियाँ : रूस के महान् कथाकार साल्तीकोव शेद्रीन की सात उत्कृष्ट कहानियों के संग्रह का श्री नरोत्तम नागर द्वारा प्रस्तुत किया गया हिन्दी-रूपान्तर है। समाज के थोथे आदर्शों तथा विकृतियों का निर्दयतापूर्ण भण्डाफोड़ करने में शेद्रीन अत्यन्त पटु हैं। इस संग्रह में उनकी कुल उन्नीस कहानियाँ संग्रहीत हैं, जिनमें से महामूर्ख, बाज—कलाकारों का संरक्षक, भालू-राज में, दो पड़ोसी, गवर्नर का जोश आदि सामन्ती-व्यवस्था की विकृतियों का नग्न-चित्र प्रस्तुत किया गया है और अन्य कहानियों, जैसे भिन्न सुजान, बलिदानी खरगोश, आदर्शवादी क्रूसा आदि में थोथे आदर्श की आड़ में दब्बूपन और कायरता को छिपाने के प्रयास को निरावरण किया गया है। सरसता और मौलिक व्यंग्य की तीक्ष्णता इन कहानियों की प्रमुख विशेषता है। सफ़ाई, छपाई तथा मुद्रण-शैली आदि सभी कुछ सुरुचिपूर्ण एवं आकर्षक है। इसका प्रकाशन हुआ है **पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस (प्रा०) लि० नई दिल्ली—१** से और मूल्य है ४) रु०।

* * *

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वार कब गिरेगी : डॉ० ब्रजमोहन गुप्ता का नवीनतम हानी-संग्रह। इसमें १२ कहानियाँ संग्रहीत हैं जो वैज्ञानिक पृष्ठभूमि को लेकर लिखी गई हैं। ये कहानियाँ हानी के क्षेत्र-विस्तार में सहायक होंगी। इसका प्रकाशन **मजीवी प्रकाशन इलाहाबाद–१** से हुआ है और मूल्य है २ रुपये ५० न० पै०।

* * *

ोसी का घटवार : में शेखर जोशी की १० कहानियों का ंग्रह प्रस्तुत किया है। इनमें कुछ औद्योगिक हैं और कुछ र्वतीय जीवन पर आधारित हैं। कहानियाँ रोचक हैं। ४६ पृष्ठ की इस पुस्तक का प्रकाशन **नया साहित्य काशन, इलाहाबाद** ने किया है और मूल्य तीन रुपये है।

* * *

कुलिंग : इस नवीन कथा-संग्रह में १५ कहानियाँ संकलित । लेखक हैं **श्री तिलकसिंह परमार**। इसमें लेखक ने १८५७ स्वातन्त्र्य-संग्राम को ही अपनी कहानियों का केन्द्रबिन्दु ना है। प्रकाशक हैं **वीणा प्रकाशन, लखनऊ**। मूल्य जिल्द १.५० रु० तथा सजिल्द २.०० रु०।

* * *

ची नीची लहरें : श्री शाह नसीर फ़रीदी की १४ नवीन कहानियों का संग्रह है। इसकी प्रशस्ति में डॉ० नाबराय और डॉ० रामविलास शर्मा जैसे आलोचकों ने खक की कहानी-कला के प्रति बड़ी-बड़ी आशा से लित पंक्तियाँ लिखी हैं। लेखक क्योंकि उर्दू से हिन्दी आए हैं, अतः उनकी कहानियों में भाषा का चटचटापन रिलक्षित होता है। **रामप्रसाद एण्ड सन्स, आगरा** की र से प्रकाशित क्राउन साइज़ के १३२ पृष्ठ का यह जिल्द संग्रह दो रुपये में मिलता है।

* * *

मीनें और शरीफ : श्री हर्षनाथ की १२ राजनीतिक, र्थिक और सामाजिक कहानियों का संकलन है। इसका काशन **सरस्वती मन्दिर, वाराणसी** ने किया है और इन हानियों में हमें अपने समाज का सच्चा स्वरूप दृष्टिगत ोता है। क्राउन के ११५ पृष्ठ का यह सजिल्द संग्रह दो पये में प्राप्य है।

* * *

हिन्दी-जगत् को अभिनव भेंट

सटक सीताराम

ले० प्रो० संसारचन्द्र

कुछ सम्मतियाँ

"प्रो० संसारचन्द्र ने 'सटक सीताराम' की रचना करके हिन्दी साहित्यिकों तथा पाठकों का ध्यान साहित्य के इस अपूर्ण अंग की ओर आकर्षित किया है। पुस्तक अवश्य ही रोचक और पठनीय है।"

—योजना

"इस पुस्तक के लेखक प्रो० संसारचन्द्र बधाई के पात्र हैं।........यह बताना अनावश्यक न होगा कि इस पुस्तक के सफल होने का बहुत कुछ कारण लेखक द्वारा उपयुक्त भाषा का प्रयोग है।"

—ट्रिब्यून

"प्रस्तुत संग्रह के निबन्ध बड़े ही हल्के-फुल्के ढंग को हमारे रोज़मर्रा के जीवन पर व्यंग्य करते हैं और गुदगुदाते हैं। 'सटक सीताराम' से हिन्दी के पाठकों का पर्याप्त मनोरंजन होगा, इसमें सन्देह नहीं।"

—प्रकाशन समाचार

लेखक ने हास्यरसपूर्ण निबन्धों की सृष्टि कर एक बड़े अभाव की पूर्ति का स्तुत्य प्रयास किया है—इसमें सन्देह नहीं। हिन्दी जगत् में इस पुस्तक का अवश्य अभिनन्दन होगा।

और अब आप भी पढ़ें—

ओरिएण्टल बुकडिपो

नई सड़क, दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नाटक

जगत गुरु : आदि शंकराचार्य के जीवन पर आधारित सम्पूर्ण नाटक। लेखक, लक्ष्मीनारायण मिश्र। प्रकाशक, **कौशाम्बी प्रकाशन, दारागंज, इलाहाबाद**। डबल क्राउन, पृ० सं० १३६, मूल्य २। पठन-पाठन की दृष्टि से मिश्रजी का यह नाटक अत्यन्त सफल है। गांधीजी के विचारों के अनुसार आदि शंकराचार्य बौद्ध धर्म के शत्रु न थे, बल्कि बौद्ध धर्म के सुन्दरतम तत्त्वों को आत्मसात करने वाले महान् व्यक्ति थे—इसी दर्शन-बिन्दु को लेकर नाटक लिखा गया है।

* * *

मन के बन्धन : गाल्र्सवर्दी के प्रसिद्ध नाटक का हिन्दी अनुवाद। अनुवादक, डॉ० रांगेय राघव, प्रकाशक, **शिक्षा भारती, दिल्ली-६**। क्राउन साइज के १३६ पृष्ठ, मूल्य दो रुपये। तीन अंकों में विभक्त प्रस्तुत नाटक समस्यामूलक एवं दुखान्त नाटक है। नाटक का अनुवाद संतोषजनक ढंग से हुआ है। इस अनुवाद से गाल्र्सवर्दी के एक उत्कृष्टतम नाटक पढ़ने का अवसर प्राप्त होता है।

* * *

जन कवि जगनिक : लोक कवि जगनिक के जीवन पर आधारित एक सम्पूर्ण नाटक। लेखक, कुँवर चन्द्रप्रकाश सिंह। प्रकाशक, **राष्ट्रधर्म प्रकाशन, लखनऊ**। क्राउन साइज़, १२३ पृष्ठ, मूल्य २ रुपये। चार अंकों में सम्पूर्ण यह नाटक पठन-पाठन के लिए लिखा गया है और रंगमंच पर प्रस्तुत करने के लिए। इससे निःसन्देह जन-कवि जगनिक के व्यक्तित्व एवं तत्कालीन समाज का काल्पनिक चित्र खिंच जाता है।

* * *

रत्नावली : संस्कृत के महान् कवि तथा नाटककार महाकवि श्री हर्ष विरचित सुप्रसिद्ध ऐतिहासिक नाटक का श्री शरण द्वारा प्रस्तुत किया गया हिन्दी रूपान्तर है। श्री हर्ष ने अपने इस नाटक में कौशम्बी-नरेश महाराज उदयन तथा सिंहलेश्वर विक्रमबाहु की कन्या रत्नावली के प्रणय-प्रसंग के आधार पर एक अत्यन्त रोचक कथानक की सृष्टि की है। अनुवादक ने मूल लेखक की नाट्यशैली तथा आशयों की रक्षा का सफल प्रयास करके प्रशंसनीय कार्य किया है। आरम्भ में कृतिकार तथा उसकी कृति के सम्बन्ध में संक्षिप्त टिप्पणी और अलग से पूरे नाटक का कथासार दे देने से रत्नावली के इस हिन्दी संस्करण की उपयोगिता और भी बढ़ गई है। इसका प्रकाशन हुआ है **पी० सी० प्रकाशन, करोल बाग, नई दिल्ली** से और मूल्य है २) रु० ५० न० पै०।

* * *

डॉ० रांगेय राघव ने महान् नाटककार शेक्सपियर के अनेक नाटकों का अनुवाद कर उसे हिन्दी पाठकों के लिए सुलभ बना दिया है। इधर उन्होंने शेक्सपियर के नाटक—(The Taming of the Shrew) 'परिवर्तन' के नाम से, तथा (Love's Labours Lost) 'निष्फल प्रेम' और (The comedy of errors) का 'भूल-भूलैयाँ' के नाम से सफल अनुवाद किया है। प्रकाशक हैं **राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली**। क्रा० १६ पेजी, मूल्य सबका एक समान अर्थात् २ रुपये है।

* * *

आलोचना, निबन्ध

सूर साहित्य का सांस्कृतिक अध्ययन : सूर-साहित्य के मर्मज्ञ विद्वान् डॉ० प्रेमनारायण टण्डन ने 'सूर काव्य' के आधार पर सूरकालीन भारतीय समाज की साँस्कृतिक विचारधारा का संक्षिप्त परिचय देने का सफल प्रयास किया है। अभी तक हिन्दी में अपनी तरह का पहला प्रयास है। इस ग्रन्थ में वातावरण-परिचय, खानपान-वर्णन, व्यवहार की सामान्य वस्तुएँ, सामान्य लोक-व्यवहार, पौराणिक विश्वास, धार्मिक विश्वास, सामान्य विश्वास, पर्वोत्सव, संस्कार, कलाकौशल, आदि से सम्बन्धित शब्दावली के सूर के पदों में से सोदाहरण संकलन करके उस पर वांछित स्थानों पर सांकेतिक टिप्पणियाँ दी गई हैं। अनुसंधान कर्ताओं तथा जिज्ञासु पाठकों के लिए पुस्तक बड़े काम की है। इसका प्रकाशन हुआ है **हिन्दी साहित्य भण्डार, गंगाप्रसाद रोड, लखनऊ** से और मूल्य है ५) रु०।

* * *

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नन्ददास की गोपी भक्ति : श्री वल्लभाचार्यजी द्वारा दीक्षित एवं अभिमंत्रित होकर नन्ददासजी ने कृष्ण-लीला गान में ही अपने को निमज्जित कर दिया। उन्होंने आत्मविभोर हो जिस आध्यात्मिक रस की सरिता बहाई वह आज भी उद्दाम वेग से भक्तों के मन को आलोड़ित करती रहती है। नन्ददासजी द्वारा रचित १६ ग्रन्थों में 'रासपंचाध्यायी' और 'भ्रमर गीत' श्रेष्ठ काव्य-ग्रन्थ हैं। उनके 'भ्रमर गीत' में हमें दार्शनिकता तथा गोपियों की भक्ति भावना का पूर्ण रूप से दिग्दर्शन होता है। इस कृति के प्रकाशक **प्रयाग दत्त शुक्ल हैं।**

* * *

मेघदूत : महाकवि कालिदास की अमर कृति का पद्य में अनुवाद है, जिसे श्री केरानी प्रसाद चौरासिया ने प्रस्तुत किया है। अनुवाद में मूल की आत्मा को सुरक्षित रखने का प्रयास किया गया है। छन्दबद्ध रचना को लयवान मुक्त छन्द में करके उसे लेखक ने लोच-भरे शब्दों में गूँथा है। इसे प्रकाशित किया है **अशोक प्रकाशन मन्दिर, इलाहाबाद** ने और मूल्य है २·५० न० पै०।

* * *

भारतीय संस्कृति के उपादान : लखनऊ विश्वविद्यालय के नृतत्व विभाग के अध्यक्ष डॉ० डी० एन० मजुमदार ने इस पुस्तक में भारतीय नृतत्व के मौलिक तथ्यों को सरल शैली में साधिकार व्यक्त किया है। 'प्रजाति और संस्कृति', 'सामाजिक संगठन', 'कबीली और 'ग्राम्य जीवन'—शीर्षक तीन मुख्य खण्डों में १४ विभिन्न विषयों पर विचार किया गया है। अन्त में सहायक पुस्तकों की सूची तथा पारिभाषिक शब्दावली भी दी गई है। पुस्तक एन्थ्रोपॉलोजी के विद्यार्थियों के लिए बहुत उपयोगी है क्योंकि इस विषय पर हिन्दी में पुस्तकों का प्रायः अभाव है। **एशिया पब्लिशिंग हाउस, बम्बई, कलकत्ता, मद्रास, नई दिल्ली** इसके प्रकाशक हैं; डिमाई आकार के २१८ पृष्ठों की इस सजिल्द सुमुद्रित पुस्तक का मूल्य १२ रुपये है।

* * *

इतिहास

भारतीय संस्कृति और इतिहास : लखनऊ विश्वविद्यालय के प्राच्य इतिहास विभाग के डॉ० बैजनाथ पुरी द्वारा लिखित यह पुस्तक भारतीय संस्कृति और इतिहास का प्रामाणिक विहंगावलोकन करती है। पुस्तक ३१ अध्यायों में बँटी है : 'सिन्धु घाटी से सरस्वती तक' शीर्षक प्रथम अध्याय से आरम्भ करके वैदिक, जैन तथा बौद्ध-कालीन संस्कृतियों का संक्षिप्त विवेचन करते हुए विदेशियों से सम्पर्क की कहानी कही गई है। 'कौटिल्य युग', 'सम्राट अशोक और उनका धर्म', 'वैदिक पुनरुत्थान', 'दक्षिण भारत तथा सीलोन', सम्राट् कनिष्क और महायान धर्म', 'गुप्तकालीन सभ्यता और कालिदास', 'हर्ष युग', 'उत्तर-मध्यकालीन संस्कृति', 'विदेशियों का राज्यस्थापन', 'मध्यकाल में भारतीय संस्कृति', इस पुस्तक के कुछ अन्य अध्यायों की सामग्री की ओर संकेत करते हैं। तत्पश्चात् अकबर कालीन सांस्कृतिक सम्मिश्रण से लेकर नेहरू युग तक सांस्कृतिक इतिहास का उल्लेख किया गया है। अन्तिम अध्यायों में मुख्य साहित्यिक धाराओं, नाटक, नृत्य, संगीत नवीन विचारधाराओं, औद्योगीकरण तथा पंचवर्षीय योजनाओं, मुख्य राजनीतिक विवादों, राष्ट्रभाषा के प्रश्न तथा शिक्षा, विज्ञान एवं दर्शन आदि की वस्तुस्थिति की ओर संकेत किया गया है। क्राउन आकार की पृष्ठसंख्या २५२, सजिल्द, मूल्य ५) रुपये मात्र। पुस्तक **भारतीय विद्या भवन, इलाहाबाद** की ओर से प्रकाशित हुई है और इसके वितरण का एकाधिकार **राजकमल प्रकाशन** के पास है।

* * *

हमारे युग का इतिहास : जी० पी० गूच की प्रसिद्ध पुस्तक 'हिस्ट्री आफ़ अवर टाइम' का श्री पी० एस० माथुर द्वारा किया गया अनुवाद। पुस्तक में १८८५ से लेकर १९१४ तक के इतिहास का सर्वेक्षण किया गया है। अंग्रेजी में यह पुस्तक काफ़ी ख्याति पा चुकी है, और हिन्दी में इस विषय के छात्र भी इसे उसी समान उपयोगी और ग्राह्य पायेंगे। डिमाई आकार के १०६ पृष्ठ की इस सजिल्द पुस्तक का मूल्य ५ रुपये है तथा इसके प्रकाशक **गया प्रसाद एण्ड सन्स, आगरा** हैं।

* * *

दाराशिकोह : डॉ० कालिकारंजन कानूनगो, अध्यक्ष इतिहास-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय द्वारा लिखित इसी नाम की अंग्रेजी पुस्तक के द्वितीय संस्करण का अनुवाद। औरंगजेब के भाई दाराशिकोह का ऐतिहासिक जीवन वृत्त जिसमें साथ-साथ १७वीं शती के भारत का सांस्कृतिक जीवन भी झलक उठता है। दाराशिकोह ने हिन्दू धर्म और इस्लाम के आध्यात्मिक तत्त्वों के सम्मिश्रण का वैसा ही प्रयास किया था जो इससे पहले कबीर ने १५वीं तथा अकबर ने १६वीं शती में किया था। डिमाई आकार के २०३ पृष्ठ, सजिल्द, मूल्य ८ रुपये। प्रकाशक, **गया प्रसाद एण्ड सन्स, आगरा।**

* * *

मराठों का इतिहास : सुप्रसिद्ध इतिहासज्ञ श्री गोविन्द सखाराम सर देसाई के बहु विख्यात ग्रंथ "Main Currents of Maratha History" का श्रीमती रामेश्वरी देवी द्वारा प्रस्तुत किया गया प्रामाणिक हिन्दी रूपान्तर है। मराठों के विषय में अंग्रेज इतिहासकारों ने बड़ा भ्रम फैलाया था। प्राय: उन्हें एक लुटेरी, अनाचारी एवं कलह-प्रिय जाति के रूप में चित्रित किया गया था। देसाईजी ने अपने इस ग्रन्थ में मराठी के मौलिक स्रोतों की सहायता से अपने तर्कों की पुष्टि करते हुए यह सिद्ध किया है कि मराठे एक जीवित राष्ट्र थे और उन्होंने दुनिया के सामने वीरता, शौर्य, देश-प्रेम, उदारता, शासन-पटुता, नीति-निपुणता एवं धर्म-परायणता का अद्भुत उदाहरण प्रस्तुत किया है। हिन्दी साहित्य की श्रीवृद्धि करने वाले इस उत्कृष्ट अनूदित ग्रन्थ का प्रकाशन करके **दि अपर इण्डिया पब्लिशिंग हाउस, लिमिटिड, लखनऊ** ने सचमुच एक प्रशंसनीय कार्य किया है। मूल्य ६·००।

* * *

बाल-साहित्य, प्रौढ़-साहित्य

कंथक : यह बाल-कथा-संग्रह **राजकमल प्रकाशन** द्वारा प्रकाशित किया गया है; ६ कहानियाँ हैं—सुचित्रित। सजिल्द मूल्य १ रुपया ४० नये पैसे।

* * *

रस मलाई दो भाग : श्री अलख द्वारा लिखित छोटे-छोटे बच्चों के लिए कविता में कहानी की सचित्र पुस्तक। प्रकाशक **गौतम पुस्तक भण्डार, कलकत्ता।** मूल्य प्रत्येक भाग का ७५ नये पैसे।

* * *

एडिसन : पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस (प्रा०) लिमिटेड, नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित बाल-जीवनी माला में बेतार के आविष्कारक एडिसन की रोचक शैली में लिखी गई जीवनी। मूल्य १ रुपया ५० नये पैसे।

* * *

पशु जगत् के कुछ चमत्कार : श्री कान्तिकिशोर भारतीय द्वारा नवसाक्षरों के लिए लिखित इस पुस्तक में कुछेक विचित्र पशुओं का वर्णन दिया गया है। प्रकाशक—**राजकिशोर प्रकाशन, इलाहाबाद.** मूल्य १ रुपया।

* * *

भरहुत : हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी की ओर से "भारत की शिल्प-कथाएँ" नाम की एक माला प्रकाशित हो रही है जिसमें श्री जगदीशचन्द्र द्वारा 'भरहुत' पर लिखी गई यह प्रथम पुस्तक है। कहानी के रूप में भरहुत के शिल्प और प्रयोजन को समझाया गया है। मूल्य १ रुपया २५ नये पैसे।

* * *

वीर सिपाही, जादू नगरी, राबिन हुड : शिक्षा भारती, दिल्ली ने अंग्रेजी की प्रसिद्ध पुस्तकों का तरुण पाठकों के लिए संक्षिप्त रूपान्तर प्रस्तुत किया है। प्राय: सभी कथाएँ सचित्र हैं तथा सभी की भाषा सरल है। तीनों पुस्तकें श्री **श्रीकान्त व्यास** द्वारा लिखी गई हैं। इसके वितरक हैं **राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली।** मूल्य प्रत्येक का १ रुपया ५० नये पैसे।

* * *

चार फरार : नवसाक्षर वाङ्मय प्रतियोगिता में भारत सरकार द्वारा पारितोषिक-प्राप्त पुस्तक है। कहानीकार हैं **यदुनाथ थत्ते।** प्रस्तुत पुस्तक में लेखक ने स्वातन्त्र्योपरान्त कुछ गाँवों में किस प्रकार की एक नई जागृति तथा नये उत्साह की बिजली कौंध गई है उसी का विवरण दिया है। पुस्तक का प्रकाशन महाराष्ट्र राष्ट्र सभा प्रकाशन, पूना २ ने किया है और मूल्य है केवल १० आने।

* * *

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रत्येक पुस्तकालय में संग्रह करने योग्य पुस्तकें

कोश

बृहत् हिन्दी कोश	सम्पादक कालिकाप्रसाद : लेदर क्लाथ राजवल्लभ सहाय जिल्द मू०	२५.००
	मुकुन्दीलाल श्रीवास्तव चमड़े की जिल्द	३२.००
ज्ञान शब्दकोश	सम्पा० मुकुन्दीलाल श्रीवास्तव	१५.००
पारिभाषिक शब्दकोश	सम्पा० मुकुन्दीलाल श्रीवास्तव	४.००

राजनीतिक पुस्तकें

भारतीय राजनीति—विक्टोरिया से नेहरू तक	रामगोपाल एम० ए०	११.००
राष्ट्रीयता और समाजवाद	आचार्य नरेन्द्रदेव	११.००
अन्तर्राष्ट्रीय विधान	डॉ० सम्पूर्णानन्द	११.००
चीन कल और आज	के० एम० पणिक्कर	५.००
राजनीतिशास्त्र	प्राणनाथ विद्यालंकार	४.५०
जापान की राजनीतिक प्रगति	अनु० लक्ष्मणनारायण गर्दे	५.५०
चीन और भारत	अम्बिकाप्रसाद वाजपेयी	१.५०

धर्म और दर्शन

सूफ़ीमत साधना और साहित्य	रामपूजन तिवारी	११.००
विश्व के धर्म प्रवर्तक	रघुनाथसिंह एम० पी०	६.५०
वैज्ञानिक अद्वैतवाद	स्व० रामदास गौड़ एम० ए०	२.२५
चिद्विलास	डॉ० सम्पूर्णानन्द	५.००
दर्शन का प्रयोजन	डॉ० भगवानदास	३.५०
नीतिशास्त्र	सुश्री शान्ति जोशी	८.००

पत्रकारिता

पत्र और पत्रकार	माननीय पं० कमलापति त्रिपाठी तथा पुरुषोत्तमदास टण्डन 'पत्रकार'	६.५०
भारतीय पत्रकार कला	सम्पादक रौलेण्ड ई० वूल्सले	६.५०
समाचारपत्रों का इतिहास	पं० अम्बिकाप्रसाद वाजपेयी	६.५०
आधुनिक पत्रकार कला	रा० र० खाडिलकर	४.००

मनोविज्ञान

शिक्षा मनोविज्ञान	हंसराज भाटिया	४.५०

भ्रमण

हालैण्ड में पचीस दिन	रा० र० खाडिलकर	३.००
आर्याना	रघुनाथसिंह एम० पी०	३.००

इतिहास

भारतवर्ष का इतिहास	एक इतिहास प्रेमी	८.००
पश्चिमी यूरोप, प्रथम भाग	अनुवादक छविनाथ पाण्डेय एम० ए०, एल-एल० बी०	४.५०
गांधी हत्याकाण्ड	सम्पादक विहंगम	५.००
आज़ाद हिन्द फौज और उसके तीन अफ़सरों का मुकदमा	३५० पृष्ठों की ऐतिहासिक पुस्तक	२.००

संस्मरण

जेल के वे दिन	विजयालक्ष्मी पंडित	२.५०
कुछ स्मरणीय मुकदमे	श्री कैलाशनाथ काटजू	८.००
मेरे बचपन की कहानी	श्रीमती नयनतारा सहगल	६.००

साहित्य

वक्रोक्ति और अभिव्यंजना	रामनरेश वर्मा एम० ए०	४.५०
गीतिकाव्य	प्रो० रामखेलावन एम० ए०	५.५०
तुलसीदास और उनका युग	डॉ० राजपति दीक्षित	८.००
सामयिकी	शान्तिप्रिय द्विवेदी	४.००
धरातल	शान्तिप्रिय द्विवेदी	२.७५
कल्पलता	आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी	२.५०

कथा साहित्य

उलूकतन्त्र	बलदेवप्रसाद मिश्र	२.००
शव साधन	बलदेवप्रसाद मिश्र	२.५०
तूफान	सर्वश्रेष्ठ कहानी-लेखकों की कहानियों का संग्रह	२.५०

उपन्यास

पुनर्जीवन	महात्मा टालस्टाय	६.५०
कर्त्तव्याघात	देवनारायण द्विवेदी	४.५०
नूतन ब्रह्मचारी	स्वर्गीय पं० बालकृष्ण भट्ट	०.६३
देशभक्त और देशद्रोही		२.५०
बयालीस	प्रतापनारायण श्रीवास्तव	४.५०
गेंजी की कहानी	मुरासाकी शिकाबू	४.५०

आदर्श जीवन चरित्र

सरदार पृथ्वीसिंह	राहुल सांकृत्यायन	४.००

विज्ञान

विज्ञान की प्रगति	भगवतीप्रसाद श्रीवास्तव	३.५०
विज्ञान के चमत्कार	भगवतीप्रसाद श्रीवास्तव	२.७५
परमाणु शक्ति	भगवतीप्रसाद श्रीवास्तव	२.७५
घरेलू बिजली	भगवतीप्रसाद श्रीवास्तव	४.००
सरल विज्ञान	भगवतीप्रसाद श्रीवास्तव	१.०६

ज्ञानमण्डल लिमिटेड, वाराणसी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

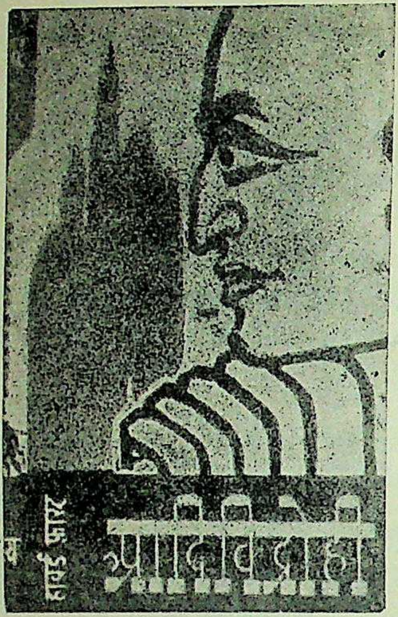

आदिविद्रोही

भारत सरकार द्वारा पुरस्कृत वर्ष का सर्वश्रेष्ठ अनुवाद

वह एक अन्धकार-युग था जब ईसा से ७३ वर्ष पूर्व, रोम के एक गुलाम स्पार्टकस ने आजादी का सपना देखा था और इतिहास में पहली बार संगठित विद्रोह किया था। तत्कालीन रोमन समाज की पृष्ठभूमि में उसी आदिविद्रोही की रोमांचकारी कहानी प्रसिद्ध अमरीकन यहूदी लेखक हावर्ड फ़ास्ट ने अपनी अनुपम शैली में कही है। अनुवाद किया है अमृतराय ने। विश्व-साहित्य की यह महान् कृति, जो अब संसार की ८२ भाषाओं में अनूदित हो चुकी है, जिस पुस्तकालय में नहीं है वह पुस्तकालय सूना है।

डिमाई १/८ ● पृष्ठ ४०० ● दुरंगा आवरण

मूल्य रु० ६.५०

हंस प्रकाशन

९३, जीरो रोड, इलाहाबाद

हमारे देश में प्रौढ़-साहित्य की अत्यन्त आवश्यकता है। इस कमी की पूर्ति होनी चाहिए। इधर **बोरा एण्ड कम्पनी पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड बम्बई-२** ने इस प्रकार की पुस्तकों का प्रकाशन किया है—(१) **सागर में उजाला,** (२) **सपनों के विधाता।** इन पुस्तकों में मनुष्य के पुरुषार्थ की प्रकृति पर विजय दरशायी गई है। भाषा सरल तथा शैली सुगम होने के कारण नवसाक्षरों के लिए पुस्तकें अत्यन्त उपयोगी हैं। मूल्य प्रत्येक का ७० न० पै० है।

* * *

संत ज्ञानेश्वर : बोरा एण्ड कं० पब्लिशर्स प्रा० लि० बम्बई, २ द्वारा प्रकाशित संत ज्ञानेश्वर महाराष्ट्र के प्रसिद्ध संत की चित्रमय जीवन-गाथा है। छोटे बच्चे और नवसाक्षरों को चित्र की मदद से पढ़ाने में यह पुस्तक सहायक होगी। रंगीन छपाई तथा गेट अप सुन्दर है और मूल्य ९० न० पै० हैं।

* * *

केरल की लोक-कथाएँ : में श्री ज्ञानेन्द्रकुमार भटनागर द्वारा लिखित केरल की लोक-कथाएँ संग्रहीत हैं। इसका मुद्रण और प्रकाशन अच्छा हुआ है। बच्चे इसे बड़े चाव से पढ़ेंगे। **आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली** द्वारा प्रकाशित यह पुस्तक १ रुपये आठ आने में मिलती है।

* * *

भारत के नृत्य : कथकली : भारत की विभिन्न नृत्य-शैलियों को सुबोध कथा के रूप में प्रस्तुट करने के प्रयास की ओर पहला पग इस प्रकाशन द्वारा लेखक श्री जगदीशचन्द्र तथा प्रकाशक **हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय,** वाराणसी ने उठाया है। आर्ट पेपर पर छपी इस पुस्तक में अनेक चित्र हैं। मूल्य १ रुपया २५ नये पैसे।

* * *

प्रौढ़ शिक्षा के लिए उपयोगी विज्ञान साहित्य : हिन्दी में विज्ञान सम्बन्धी लोकप्रिय साहित्य के प्रकाशन की ओर इधर हाल में ही ध्यान दिया जाने लगा है। **राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली** ने 'ज्ञान-विज्ञान माला' के नाम से कुछ पुस्तकें प्रकाशित की हैं जो अमरीका में प्रकाशित एक प्रामाणिक ग्रन्थमाला की पुस्तकों का अनुवाद हैं। सभी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कें सचित्र हैं; सरल भाषा में पाठक को अपना विषय झा देती हैं। पुस्तकों की छपाई-सफ़ाई अच्छी है, मूल्य क का २) रुपये हैं। इस माला में ये पुस्तकें प्रकाशित चुकी हैं: (१) एटम की कहानी, (२) समुद्र की नी, (३) मौसम की कहानी, (४) रसायन की नी, (५) वायुयान की कहानी, (६) टेलीफोन की नी तथा (८) कोलम्बस। प्रत्येक पुस्तक पर अलग-ग आकर्षक कवर दिया गया है। इस माला की अन्य कें भी प्रकाशक द्वारा शीघ्र ही छप रही हैं।

* * *

विविध

हरू से मिला : पेरिस की 'राजनीतिक अध्ययन संस्था' क्चरर श्री तिबौर मॉंड ने श्री जवाहरलाल नेहरू से त आकर चार मुलाकातें कीं। इन मुलाकातों की बात- के प्रत्येक शब्द को टेप रेकार्ड कर लिया गया था **राजकमल प्रकाशन** द्वारा प्रकाशित प्रस्तुत पुस्तक में चार मुलाकातों को हूबहू दर्ज किया गया है। "मैं से मिला" को श्री जवाहरलाल नेहरू की नई पुस्तक ाना जा सकता है, क्योंकि इसके १५३ पृष्ठों की ग्री का बहुलांश उन्हीं के अपने शब्दों में है। श्री नेहरू यक्तित्व को, उनका निर्माण करने वाली परिस्थितियों प्रभावों को, भारत की वर्तमान दशा तथा उसके व्य की आशाओं एवं सम्भावनाओं को, विश्व की पेचीदा याओं को श्री नेहरू के दृष्टिकोण से समझने के लिए पुस्तक अतीव उपयोगी तथा संग्रहणीय है। मूल्य पये ५० नये पैसे।

* * *

क-वर्गीकरण कला : हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग पुस्तकालयाध्यक्ष श्री द्वारकाप्रसाद शास्त्री द्वारा लिखित तकालय-विज्ञान सम्बन्धी चौथी पुस्तक जिसमें विषय सिद्धान्त और प्रयोग दोनों पक्षों का सरल विवेचन या गया है। पुस्तकालयों एवं पुस्तकालय-विज्ञान के द्यार्थियों के लिए आवश्यक रूप से संग्राह्य-पुस्तक। ाशक **हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी;** डिमाई

कथासाहित्य की नई दिशा

आंचलिक उपन्यासों के रस-सिद्ध लेखक

श्री बलभद्र ठाकुर की नवीन कृति

आदित्यनाथ

कुल्लूघाटी के हँसते-खेलते और नाचते-गाते चित्र : पहाड़ी नदी के प्रवाह जैसी वेगवती कहानी : धर्म और पाखण्ड की अनोखी धूपछाँह। इस मास का अभिनन्दनीय प्रकाशन

मूल्य ५ रुपये ५० न० पै०

राष्ट्रभारती की कथा-माला में हमारे अन्य मुख्य

उपन्यास

नष्ट नीड़	उषादेवी मित्रा	४.५०
जीवन की मुस्कान	,, ,,	४.००
वचन का मोल	,, ,,	३.००
भँवर जाल	कृष्णचन्द्र 'भिक्खु'	३.५०
धुआँ और लपटें	श्रीचन्द्र अग्निहोत्री	३.००
रात अँधेरी है	महेन्द्रनाथ एम० ए०	४.००
चित्रकार	श्रीराम शर्मा 'राम'	४.००
टेढ़ी रेखाएँ	श्रीराम शर्मा 'राम'	४.००
पत्थर पानी	यादवचन्द्र जैन एम० ए०	८.००
रेत का महल	कृष्णचन्द्र एम० ए०	४.००
प्रबल परीक्षा	बीरेन्द्रसिंह यदुवंसी	३.५०
एक था शहर	ताजवर सामरी	६.००
सन्ध्या राग	ए० एन० कृष्णराव	३.५०
आदमखोर	नानकसिंह	५.००
खम्माँ अन्नदाता	यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र'	४.००
शिल्पी	कमल शुक्ल	५.००
राजदूत मूल लेखक जुले बार्न, अनु० जगन्नाथ शर्मा		४.००
आह क्यू चीन के प्रेमचन्द 'लुहसु' की अमर कृति		२.००
जादूगरनी जार्ज सैण्ड: अनु० गोपालकृष्ण कौल		४.००
महामूर्ख दास्ताएंवस्को: अनु० शिवदानसिंह चौहान		८.००
बुजदिल स्टीफैन ज्वीग, अनु० शिवदानसिंह चौहान		६.००

कहानियाँ

युक्लिप्टिस की डाली	कृष्णचन्द्र एम० ए०	२.२५
भूमि-दान	,, ,,	३.००
पानी का पेड़	,, ,,	३.००
चांदी के तार	महेन्द्रनाथ	३.२५
शिकार की कहानियां	बालकृष्ण एम० ए०	२.००

नेशनल पब्लिशिंग हाउस

९६, दरियागंज, दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आकार, पृष्ठ संख्या १५४, सजिल्द, मूल्य ५ रुपये।

* * *

मन की मौज : लेखक, पं० हरिशंकर शर्मा, प्रकाशक, **गया प्रसाद एण्ड सन्स,** क्राउन साइज, पृष्ठ संख्या १३२, मूल्य ढाई रुपये। व्यंग-विनोद सम्बन्धी ग्यारह निम्बन्धों का संग्रह। शर्माजी पुरानी पीढ़ी विशेषकर महावीर प्रसाद द्विवेदी के समय के लेखक हैं। प्रस्तुत संग्रह व्यक्तिगत रागद्वेष, ईर्ष्या, कटुता आदि तत्त्वों से मुक्त निबन्धों का है। भाषा-शैली उचित ही है।

* * *

धरती का स्वर्ग : जार्ज मारडिकियन की पुस्तक का संक्षिप्त हिन्दी रूपान्तर। रूपान्तरकार का नाम नहीं दिया गया है। प्रकाशक, **भारती प्रकाशन मण्डल वाराणसी;** क्राउन, पृ० सं० १७६, मूल्य २ रुपये। प्रस्तुत पुस्तक एक ऐसे युवक की आत्म-कथा है, जो बीस वर्ष की आयु में तुर्क जेल से भागकर अपने सतत संघर्षों से बहुत बड़ा आदमी बना। लेखक अमेरिका के जीवन-दर्शन के प्रति अत्यन्त आस्थावान दीखता है, जभी उसने अमेरिका को 'धरती का स्वर्ग' कहा है।

* * *

हिन्दी-साहित्य का सर्वप्रथम
मौलिक उपन्यास
स्व० ला० श्रीनिवास दास कृत

परीक्षा-गुरु

यह पुस्तक प्रायः ३० वर्ष बाद नई रूप-सज्जा में पुनः प्रकाशित की गई है। हर एक पुस्तकालय में यह ऐतिहासिक महत्त्व की पुस्तक होना आवश्यक है।

३५० पृष्ठ की पूरे कपड़े की जिल्द वाली पुस्तक का मूल्य रु० ६.२५ मात्र।

पुस्तकालयों को डाक खर्च सहित रु० ६.२५ में।

ज्ञान प्रकाशन
८१, चावड़ी बाज़ार, दिल्ली-६

चलो चलें मंगरॉठ में उत्तर प्रदेश के मंगरॉठ ग्राम में सन्त विनोबा की पद-यात्रा के फलस्वरूप हुई, सर्वोदय क्रान्ति का चित्र खींचा गया है। भूदान आन्दोलन के सामाजिक प्रभाव के अध्ययन करने वाले पाठकों के लि पुस्तक उपयोगी है। इसके लेखक हैं श्री कृष्णदत्त भट्ट प्रकाशक हैं, **अखिल भारतीय सर्व सेवा संघ प्रकाशन** मूल्य ०·७५ रुपये।

* * *

भूदान पोथी : प्रौढ़ोपयोगी पुस्तक के रूप में लिखी है और अब तक प्रकाशित पाठ्य-पुस्तकों से भिन्न है लेखिका की सामाजिक जागरूकता, प्रत्येक पंक्ति में झलक है। सुभद्रा गांधी द्वारा लिखित यह पुस्तक **अखिल भारतीय सर्व सेवा संघ प्रकाशन** द्वारा प्रकाशित की गई है। मू ०.२५ नये पैसे है।

* * *

अखिल भारतीय सर्व सेवा संघ प्रकाशन, काशी ने बिनोवा भावे की दो नई पुस्तकें प्रकाशित की हैं। लो **नीति** में बिनोवाजी के लोक-नीति सम्बन्धी विचारों संकलन है। पुस्तक तीन खण्डों में विभक्त है—प्रथम प्राचीन भारतीय परम्परा; द्वितीय में वर्तमान राज्य-नी चुनाव, कानून, लोक-सत्ता आदि का विस्तृत विवेच तृतीय में सर्वोदयी दृष्टिकोण से शासनमुक्त समाज कल्पना की गई है। २२० पृष्ठ की इस पुस्तक का मू केवल रु० १·२५ है। दूसरी स्तक **सौम्य सूत्र** है। उनव मराठी पुस्तक "गीता प्रवचन" के सूत्रों का संस्कृत अनुव ही टीका सहित इस पुस्तक में दिया गया है। इसमें लेख ने धर्मयोग, भक्ति योग तथा ज्ञान योग आदि विषयों प विचार प्रकट किये हैं। ७६ पृष्ठ की इस पुस्तक का मूल ०·३७ मात्र है।

* * *

(पृष्ठ १३६ का शेष)

सरकारों से वार्तालाप करना और ऐसा मार्ग निकाल जिससे सामान्य प्रकाशक व्यवसाय से वंचित न हों
६. साहित्यिक प्रकाशन करने वाली सरकारों को इस बा के लिए राजी करना कि वे ऐसा ही प्रकाशन करें जो सामा प्रकाशकों की परिधि के बाहर हो और जिनकी खपत क हो तथा उपयोगिता अधिक।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आगामी मास के प्रकाशन

राष्ट्रीय प्रकाशन मण्डल, पटना

म सेवक, उनका प्रशिक्षण, श्री ब्रजविहारी पांडे
म सेविकाएँ, उनका प्रशिक्षण, श्री ब्रजविहारी पांडे

इंडिया पब्लिशिंग हाउस लि०, लखनऊ

रत और विश्व, श्री एस० राधाकृष्णन्
ज्ञान के नये चरण, श्री वी० एन० त्यागी
कार्बनिक रसायन भाग १, श्री पंचानन् डे, श्री ष्णुदयाल श्रीवास्तव

ाराम एण्ड सन्स, दिल्ली

र किनारे, श्री नीरज
बजे रात, श्री विष्णु प्रभाकर, एकांकी संग्रह
ले पंख, श्री रामानन्द दोषी, कविता-संग्रह
धर्म और आ० विज्ञान, श्री मुनि नगराज
हीद राजगुरु, सं० श्री बनारसीदास चतुर्वेदी
ाहित्य की समस्याएँ, श्री शिवदानसिंह चौहान

न्द पुस्तक भवन, वाराणसी

शीर्वाद, श्री साधुराम शुक्ल, उपन्यास
ोम के पति, श्री शौकत थानवी, अनु० हृदयेश सिंह, पन्यास
ात्म समर्पण, लमगोड़ा, नाटक
क्षत नारी, श्री चन्द्रकान्त काकोडकर, अनु० श्री ार० आर० सर्वटे

ओरिएण्टल बुक डिपो, दिल्ली

—डॉ० श्यामा प्रसाद मुकर्जी : एक जीवनी, श्री बलराज मधोक
—श्रमदान, श्री इन्द्रसेन भावुक, बाल नाटक
—अलबेली कहानियाँ, श्री श्रीचन्द्र जैन, बाल कहानी
—गुंजन का अनुगुंजन, प्रो० हरिश्चन्द्र बत्रा, आलोचनात्मक

गंगा पुस्तकमाला कार्यालय, लखनऊ

—ताई तथा अन्य कहानियाँ, पु० मु०, श्री विश्वम्भरनाथ शर्मा 'कौशिक'
—प्रसाद और उनका साहित्य, डॉ० अम्बिकाप्रसाद वाजपेयी
—विधाता का विधान, पु० मु०, श्री प्रतापनारायण श्रीवास्तव
—उठते कदम, श्री श्रीराम शर्मा 'राम'

ज्ञान प्रकाशन, दिल्ली

—परीक्षा गुरु, पु० मु०, स्व० ला० श्रीनिवास दास
—मन्दिर दीप, पु० मु०, श्री ऋषभचरण जैन

नवयुग ग्रन्थ कुटीर, बीकानेर

—नये एकांकी, श्री शम्भूदयाल सक्सेना
—नया हल, श्री शम्भूदयाल सक्सेना
—नया खेत, श्री शम्भूदयाल सक्सेना
—नया गांव, श्री शम्भूदयाल सक्सेना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी साहित्य संसार, दिल्ली

—**साहित्यालोचन-सिद्धान्त**, पु०मु०, डॉ० मनमोहन गौतम

नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली

—**सूरज की धूप**, श्री मदनमोहन मनारिया

—**बुद्ध वैभव**, श्री भगवतशरण उपाध्याय

—**कोई कुछ कह गया**, श्री कमल शुक्ल

बम्बई प्रकाशन प्राइवेट लि०, बम्बई

—**निर्माण का देवता**, श्री विनोद रस्तोगी

—**मुक्ति के पथ पर**, श्री दत्त भारती

भारतीय ज्ञानपीठ, वाराणसी

—**पार उतरि कहँ जइहौ**, श्री प्रभाकर द्विवेदी, यात्रा-विवरण

—**शायरी के नये मोड़, भाग २**, श्री अयोध्या प्रसाद गोयलीय

—**कनुप्रिया**, डॉ० धर्मवीर भारती

कविराज हरनाम दास बी० ए० की
सन् १९२५ से विख्यात रचनाएँ

विवाहित आनन्द (१९२४ से साढ़े चार लाख बिक चुकी है) हिन्दी, उर्दू १।); पंजाबी, गुजराती, मराठी १॥); अंग्रेजी २); तेलगू २।); सस्ता संस्करण हिन्दी ।॥), उर्दू १)।
पत्नी पथ-प्रदर्शक (१९२३ से तीन लाख बिक चुकी है) हिन्दी, उर्दू, पंजाबी १॥)।
केवल भोजन द्वारा स्वास्थ्य (१९२३ से तीन लाख बिक चुकी है) हिन्दी १।); उर्दू, पंजाबी १॥)
स्वास्थ्य शिक्षा (एक लाख बिक चुकी है) हिन्दी, उर्दू १॥)।
गर्भवती, प्रसूता और बालक (एक लाख बिक चुकी है)
जीवन-यात्रा (उतार-चढ़ाव; फूल और कांटे)—नई रचना १॥)।
यौवन रक्षा हिन्दी, उर्दू =); पंजाबी ≡)।

पता—**कविराज हरनाम दास बी० ए० एण्ड सन्ज़,**
गौरीशंकर मन्दिर (लाल किले के पास) चाँदनी चौक, दिल्ली-६

PHARMACY AND PUBLICATIONS
सुखदाता
KAVIRAJ HARNAM DAS B.A. & SONS. DELHI

भारतीय प्रकाशन मण्डल, वाराणसी

—**झलकियाँ**, श्री जी० पी० श्रीवास्तव

—**जीवन एवं साहित्य**, डॉ० रामचरण महेन्द्र

राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, इलाहाबाद, बम्बई

—**रश्मिबन्ध**, श्री सुमित्रानन्दन पन्त

—**चिदम्बरा**, श्री सुमित्रानन्दन पन्त

—**रूपाजीवा**, उपन्यास, डॉ० लक्ष्मीनारायण लाल

राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली

—**दाग : जीवनी और संकलन**, सम्पा० श्री सरस्वती सर 'कैफ़'

—**मोमिन : जीवनी और संकलन**,

—**कलंक**, अनु० श्री आशुतोष

—**रहस्य रोमांच की कहानियाँ**, एडगर ऐलन पो०, अनु राधानाथ चतुर्वेदी

—**विचार तरंग**, प्रो० दीवानचन्द शर्मा

साहित्य प्रकाशन, दिल्ली

—**इन्साफ़**, पु० मु०, श्री यज्ञदत्त शर्मा

—**भुनिया की शादी**, पु० मु०, श्री यज्ञदत्त शर्मा

—**प्रसाद साहित्य और समीक्षा**, डॉ० रामरतन भटनागर

—**चौक घंटाघर**, श्री सत्यपाल आनन्द, उपन्यास

—**एक अकेला प्यार**, श्री यज्ञदत्त शर्मा, कविता

हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी

—**चन्द्रशेखर**, बंकिम साहित्य का बालोपयोगी रूपान्तर

—**मृणालिनी**, बंकिम साहित्य का बालोपयोगी रूपान्तर

—**कृष्णकान्त का वसीयतनामा**, बंकिम साहित्य का बालोपयोगी रूपान्तर

—**पाकिस्तान**, श्री राजकुमार

—**राष्ट्रमण्डल**, श्री राजकुमार

—**दो राहें**, श्री लीला अवस्थी, उपन्यास

हिन्दी भवन, इलाहाबाद

—**मुलावती**, पं० बलभद्र ठाकुर, उपन्यास

—**रेलगाड़ी कैसे बनी ?**, श्री जगपति चतुर्वेदी

—**आज का आदमी**, पं० उदयशंकर भट्ट, एकांकी संग्रह

—**नेताजी**, डॉ० गोपीनाथ तिवारी, एकांकी संग्रह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अक्तूबर मास के प्रकाशन

आलोचना, कोश, निबन्ध

आचार्य लौंगिनुस, अनु० डा० नगेन्द्र, **काव्य में उदात्त भाव**, १३२, क्रा०, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली ३.५०
दशरथ ओझा डॉ० व विजयेन्द्र स्नातक डॉ०, **सुकवि समीक्षा**, २५०, डि०, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली ५.००
धर्मचन्द्र तथा बलदेव कृष्ण, **सिद्धान्तालोचन**, पु० मु०, २७३, क्रा०, ओरिएण्टल बुक डिपो, दिल्ली ४.५०
धीरेन्द्र वर्मा डॉ० व अन्य, **हिन्दी साहित्य कोश**, ९०३, रायल, ज्ञानमण्डल लि०, वाराणसी २०.००
भारत भूषण सरोज, **पृथ्वीराजरासो के दो अध्याय**, २००, क्रा०, हिन्दी साहित्य संसार, दिल्ली २.५०
रामेश्वरलाल खण्डेलवाल डॉ०, **हिन्दी कविता में प्रेम और सौन्दर्य**, ५००, डि०, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली

उपन्यास

गिरिजाशंकर पाण्डेय, **अठारह वर्ष बाद**, २१२, क्रा०, आनन्द पुस्तक भवन, बनारस ४.००
गुरुदत्त, **एक और अनेक**, ३९४, क्रा०, भारती साहित्य सदन, नई दिल्ली ६.००
गुरुदत्त, **विडम्बना**, पु० मु०, ४००, क्रा०, भारती साहित्य सदन, नई दिल्ली ६.००
ना० सी० फड़के, **इशारा**, २३०, क्रा०, बम्बई प्रकाशन प्राइवेट लि०, बम्बई ४.००
प्रेमचन्द, **मनोरमा**, पु० मु०, २०८, क्रा०, सरस्वती प्रेस, इलाहाबाद ३.००
बलभद्र ठाकुर, **आदित्यनाथ**, ३३१, क्रा०, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली ५.५०
मानिक वन्द्योपाध्याय, अनु० प्रबोधकुमार मजूमदार, **कठपुतलियों का इतिहास**, २२५, डि०, सरस्वती प्रेस, इलाहाबाद ५.००
रामानन्द सिंह 'विमल', **अर्चना**, ११२, क्रा०, पूनम प्रकाशन, मुक्तापुर (बिहार) १.५०
रामानन्द सिंह 'विमल', **दो मज़ार**, ५४, क्रा०, पूनम प्रकाशन, मुक्तापुर (बिहार) ०.६२
विष्णु प्रभाकर, **निशिकान्त**, पु० मु०, ३२०, क्रा०, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली ५.५०
शान्तिप्रिय द्विवेदी, **चारिका**, १२४, क्रा०, राष्ट्रीय प्रकाशन मन्दिर, लखनऊ २.५०
सूर्यकान्त जोशी, **अजनबी**, १६०, क्रा०, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली २.५०

कविता, गद्यगीत, शायरी

नीरज, **आसावरी**, ८६, डि०, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली २.५०
मोहनलाल गुप्त, **अरबी न फारसी**, १६०, क्रा०, मधु प्रकाशन, वाराणसी २.५०
रवीन्द्रनाथ टैगोर, अनु० दयालकृष्ण शर्मा, **प्रेमी का उपहार**, १६०, क्रा०, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली ३.००
'राहगीर' सम्पा०, **आधुनिक भोजपुरी गीत और गीतकार**, १६०, ड० डि०, मधु प्रकाशन, वाराणसी ५३.०
सम्पतिराय भटनागर, **अन्तिम गीत**, ७३, क्रा०, नवयुग ग्रन्थ कुटीर, बीकानेर २.५०
सरस्वती सरन कैफ़, **'ज़ौक़' जीवनी और संकलन**, १२०, क्रा०, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली १.५०
सरस्वती सरन कैफ़, **'मीर' जीवनी और संकलन**, १२०, क्रा०, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली १.५०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

११२१५६

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहानी

खलील जिब्रान, घाटी की परियाँ, १६०, क्रा०, हिन्दी साहित्य संसार, दिल्ली ३.१२

जी० पी० श्रीवास्तव, कम्बख्ती की मार, पु० मु०, १३२, ड० क्रा०, भारतीय प्रकाशन मण्डल, वाराणसी २.५०

शौकत थानवी, अनु० हृदयेश सिंह, छलांग, १२८, क्रा०, आनन्द पुस्तक भवन, वाराणसी २.००

सम्पतिराय भटनागर, जुल्मों की कहानियाँ, १००, क्रा०, नवयुग ग्रन्थ कुटीर, बीकानेर २.००

नाटक व एकांकी

रामचरण महेन्द्र डॉ०, यज्ञ का शाप, ३२, ड० क्रा०, भारतीय प्रकाशन मण्डल, वाराणसी १.००

'लमगोड़ा', प्रणय पल, १०० डि०, आनन्द पुस्तक भवन, बनारस १.५०

'लमगोड़ा', बाबा की सारंगी, १००, क्रा०, आनन्द पुस्तक भवन, बनारस २.००

शम्भूदयाल सक्सेना, नया बैल, २०, क्रा०, नवयुग ग्रन्थ कुटीर, बीकानेर १.००

शम्भूदयाल सक्सेना, बापू ने कहा था, १५६, क्रा०, नवयुग ग्रन्थ कुटीर, बीकानेर ३.००

शम्भूदयाल सक्सेना, मेघदूत, ११२, क्रा०, नवयुग ग्रन्थ कुटीर, बीकानेर २.५०

बाल-साहित्य—प्रौढ़-साहित्य

अन्ने टेरी ह्वाइट, अनु० केशवसागर, सितारों की कहानी, १३८, क्रा०, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली २.००

ईवान रे, अनु० हरिश्चन्द्र विद्यालंकार, मौसम की कहानी, १२४, क्रा०, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली २.००

चार्ल्स डिकेन्स, कैदी की करामात, १००, क्रा०, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली १.५०

चार्ल्स डिकेन्स, डेविड कॉपरफील्ड, १००, क्रा०, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली १.५०

जगन्नाथ प्रसाद मिश्र, महान् मनीषी, १७०, क्रा०, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली ३.००

जहूरबख्श, मोहन का चरखा, १८, क्रा०, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली ०.२५

देवीदयाल चतुर्वेदी 'मस्त', हवा महल, ४८, कापी साइज़, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली १.२५

नन्दलाल चत्ता, सचित्र मनोरंजक लोक-कथाएँ (दूसरा भाग), ४८, कापी साइज़, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली १.२५

प्राणनाथ वानप्रस्थी, चन्द्रशेखर आज़ाद, ५६, क्रा०, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली ०.५०

प्राणनाथ वानप्रस्थी, सम्राट् अशोक, ५६, क्रा०, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली ०.५०

प्राणनाथ वानप्रस्थी, सरदार भगतसिंह, ५६, क्रा०, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली ०.५०

मोहन, पृथ्वी के पड़ोसी, ३४, क्रा०, बम्बई प्रकाशन प्राइवेट लि०, बम्बई १.२५

मोहनलाल गुप्त, देश हमारा, ३२, कापी साइज़, मधु प्रकाशन, वाराणसी १.२५

राचेल कारसन, अनु० आनन्द प्रकाश जैन, सागर की खोज, १५०, क्रा०, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली २.००

रामप्रताप सक्सेना, सचित्र, बघेलखण्ड की लोक-कथाएँ, ५२, कापी साइज़, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली १.२५

वीरबाला श्रीमाली, सितारों तक, कापी साइज़, नवयुग ग्रन्थ कुटीर, बीकानेर १.००

शम्भूदयाल सक्सेना, राजकुमारियों की कहानियाँ, ४०, कापी साइज़, नवयुग ग्रन्थ कुटीर, बीकानेर १.००

शेखर, चाचा नेहरू, ४८, क्रा०, नवयुग ग्रन्थ कुटीर, बीकानेर १.००

सतीश, सचित्र जौनसार-बाबर की लोक-कथाएँ, ५२, कापी साइज़, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली १.२५

विविध

आर० आर० खडिलकर, गणित चमत्कार, १६२, क्रा०, आर० आर० खडिलकर, ब्रह्मघाट, वाराणसी ४.००

राहुल सांकृत्यायन, कुमाऊँ, ३५६, रायल, ज्ञानमण्डल लि०, वाराणसी १५.००

शिवकरण छंगाणी, शारीरिक शिक्षा, ३००, क्रा०, नवयुग साहित्य सदन, बीकानेर ५.००

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने पुस्तकालयों को समृद्ध बनाइये

- हिन्दी में सत्साहित्य का प्रणयन और सुलभ तथा सस्ते मूल्य में प्रकाशन 'सस्ता साहित्य मण्डल' की विशेषता है। सन् १९२५ से 'मण्डल' का सतत् यही प्रयास रहा है।
- सन् १९५७ और १९५८ में प्रकाशित 'मण्डल' की पुस्तकों का परिचय नीचे दिया जाता है। ये पुस्तकें पुस्तकालयों के लिए आवश्यक हैं।
- इन्हें आप अपने स्थान के पुस्तक-विक्रेता से माँगिये। वहाँ न मिलें तो हमें लिखिये—

१. आत्मकथा (राजेन्द्रप्रसाद) ८.००
—यह आत्मकथा ही नहीं है, बल्कि भारत के स्वाधीनता-संग्राम का इतिहास है। सरदार पटेल के शब्दों में—"जो कोई इस पुस्तक को पढ़ेंगे वे इसमें जीवन को उन्नत बनाने वाली प्रेरणा प्राप्त करेंगे। कोई भी देश-प्रेमी इसे बिना पढ़े न रहे।"

२. विश्व-इतिहास की झलक : संक्षिप्त (जवाहरलाल नेहरू) ६.००
—विश्व-इतिहास के लोक-प्रसिद्ध ग्रन्थ का संक्षिप्त संस्करण।

३. देश-सेवकों के संस्मरण (गांधीजी) १.२५
—गांधीजी द्वारा लिखे अनेक भारतीय नताओं तथा सेवकों के संस्मरण। बड़े ही रोचक, हृदयस्पर्शी तथा प्रेरणादायक।

४. युगधर्म (हरिभाऊ उपाध्याय) १.७५
—आज की अनेक महत्त्वपूर्ण समस्याओं पर सारगर्भित विचार। इन्हें पढ़कर एक नई दिशा मिलती है, बहुत सी गुत्थियाँ सुलझ जाती हैं।

५. बापू के पत्र (सं० का० कालेलकर) १.२५
—स्व० जमनालाल बजाज तथा बजाज-परिवार के नाम लिखे गांधीजी के महत्त्वपूर्ण चित्र।

६. स्मरणांजलि (सं० का० कालेलकर) २.५०
—स्व० जमनालाल बजाज के विषय में विभिन्न व्यक्तियों द्वारा लिखे संस्मरणों का संग्रह।

७. मेरे संस्मरण (ग० वा० मावलंकर) २.००
—गांधीजी के सम्पर्क के रोचक तथा भावपूर्ण संस्मरण।

८. भारत सावित्री (वासुदेवशरण अग्रवाल) ३.५०
—महाभारत की कथाओं का सुन्दर, रोचक और शिक्षाप्रद परिचय।

९. प्राकृतिक चिकित्सा के चमत्कार (महावीरप्रसाद पोद्दार) २.२५
—रोगों के कारण व उनके निवारण के उपाय तथा रोगियों के अनुभव।

१०. मील के पत्थर (रामवृक्ष बेनीपुरी) २.००
—देशी-विदेशी महापुरुषों के भावपूर्ण संस्मरण एवं रेखाचित्र।

११. अठारह सौ सत्तावन (श्रीनिवास बालाजी हर्डीकर) २.५०
—१८५७ के स्वातन्त्र्य-संग्राम का विस्तृत विवरण।

१२. सन्त सुधासार : संक्षिप्त (वियोगी हरि) ५.००
—सन्तों की बानियों का संग्रह। कठिन पदों के अर्थ। विनोबाजी की सारगर्भित भूमिकासहित।

१३. कांग्रेस का संक्षिप्त इतिहास (पट्टाभि सीतारमैया) ५.००
—आजादी की लड़ाई का प्रामाणिक इतिहास।

१४. केरली साहित्य दर्शन (रत्नमयी देवी) ४.००
—दक्षिण के सबसे सुन्दर और रमणीक प्रदेश केरल और उसके प्राचीन एवं अर्वाचीन साहित्य का परिचय कराने वाला अपूर्व ग्रन्थ।

१५. उत्तराखण्ड के पथ पर (यशपाल जैन) २.००
—केदारनाथ तथा बदरीनाथ का सजीव और रोचक यात्रा वृत्तान्त। अनेक चित्र।

१६. रामायण-कालीन समाज (शांतिकुमार, नानूराम व्यास) ४.००
—महर्षि बाल्मीकि की रामायण में उल्लिखित समाज का विशद विवेचन। अनेक चित्र।

१७. रामायणकालीन संस्कृति (शांतिकुमार, नानूराम व्यास) ४.००
—बाल्मीकि रामायण में वर्णित संस्कृति का सारगर्भित विवेचन।

उपरोक्त तथा अन्य पुस्तकों के लिए 'मण्डल' का विस्तृत सूचीपत्र एक कार्ड लिखकर मंगा लीजिए।

सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारत सरकार द्वारा

शिक्षण संस्थाओं, ग्राम पंचायतों, स्कूल लायब्रेरियों, कम्यूनिटी प्रोजेक्टों, टैकनिकल इन्स्टीट्यूटों, सामाजिक व शासकीय संस्थाओं द्वारा अपनाया जाने वाला उच्चतम साहित्य यहाँ से लीजिए।

देहली में पुस्तकों की बड़ी दुकान

हमारी प्रकाशित टैकनिकल, इण्डस्ट्रियल तथा अन्य सभी प्रकार के साहित्य की पुस्तकों के अतिरिक्त

भारत के प्रायः सभी प्रमुख हिन्दी प्रकाशकों द्वारा प्रकाशित उत्कृष्ट तथा उपयोगी समीक्षात्मक साहित्य, उपन्यास, कहानी, नाटक, एकांकी, जीवन-चरित्र, आत्म-कथाएँ, ग्रामोपयोगी, महिलोपयोगी, नवयुवकोपयोगी, समाज-शिक्षण, प्रौढ़-साहित्य, मनोविज्ञान, शिक्षा-विज्ञान, इतिहास राजनीतिक विज्ञान, वनस्पति-विज्ञान, जन्तु-विज्ञान, भौतिक-विज्ञान, रसायन-विज्ञान, नीति-विज्ञान, संगीत-विज्ञान, तर्क-शास्त्र, समाज-शास्त्र, धार्मिक तथा अध्यात्म साहित्य और ज्योतिष सम्बन्धी तिजारती, तिब्बी, डाक्टरी, आयुर्वेदिक, होम्योपैथिक, जन्त्र-मन्त्र-तन्त्र, पूजापाठ, बालोपयोगी और स्त्रियोपयोगी तथा साथ-साथ हर प्रकार के उपन्यास, कहानियाँ आदि आकर्षक पुस्तकें आपको हमारे यहाँ सुविधा से मिलेंगी। हिन्दी में हर एक विषय की पुस्तक के लिए हमें लिखें।

हमारे प्रकाशन के बिना आपकी लायब्रेरी निश्चित रूप से अधूरी और आपका साहित्य विशेष रूप से अधूरा है और विशेषकर टैकनिकल, इण्डस्ट्रियल तथा एग्रीकलचरल साहित्य, जिसकी आज के समय में सबसे अधिक आवश्यकता है, विशेष रूप से प्रकाशित किया गया है। आप अपने संग्रह को पूर्ण और साहित्य-रुचि को पूर्ण करने के लिए अपने शहर के मुख्य पुस्तक-विक्रेता से हमारे निश्चित मूल्य पर हमारे प्रकाशन प्राप्त करें इसके अतिरिक्त हमें सीधा भी लिख सकते हैं—

हिन्दी की पुस्तकों का वृहद् सूचीपत्र केवल पच्चीस नये पैसे के टिकट डाक खर्च के लिए भेजकर मुफ्त मँगाइये

आवश्यक सूचना—हिन्दी के साथ-साथ हमारे यहाँ उर्दू तथा गुरुमुखी की भी हर प्रकार की पुस्तकें हर समय तैयार मिलती हैं।

लायब्रेरियों तथा पुस्तक-विक्रेताओं को पर्याप्त कमीशन

गवर्नमेण्ट आर्डर सप्लायर

देहाती पुस्तक भण्डार, चावड़ी बाजार, दिल्ली

PHONE : 20030

लोकल ग्राहकों को फोन द्वारा माल सप्लाई करने का पूरा प्रबन्ध है।

श्री देवराज, मैनेजिंग डाइरेक्टर, राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, दिल्ली के लिए श्री गोपीनाथ सेठ द्वारा नवीन प्रेस, दिल्ली में मुद्रित।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Compiled
1999-2000

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar